णमोकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं

णमो सिद्धाणं

णमो आइरियाणं

णमो उवज्झायाणं

णमो लोए सव्वसाहूणं

प. पू. सद्धर्म प्रवर्तक चारित्र चूड़ामणि श्री 108 आचार्यरत्न बाहुबली महाराज जी

की

जन्म जयंती निमित्त

[illegible] लेकर शुभ दिन आया मंगल [illegible] सजाओ
योगीराज की जन्म जयंती सब मिल आज [illegible]ओ
इस युग के तीर्थंकर हो तुम हर पल बढ़े [illegible]
इनके गुणगान की महिमा दुनियां ने गाई

जय जैनाचार्य

सम्पादिका द्वय

पू. श्री आर्यिका श्रुतदेवी माताजी
पू. श्री आर्यिका सुज्ञानी माताजी

प्रकाशक

श्री जिनश्रुत ग्रंथमाला, धर्मनगर, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

ग्रन्थ :

जय जैनाचार्य

प्रेरणास्त्रोत्र :
प. पू. उपाध्याय श्री 108 शांति सिंधुजी महाराज

सम्पादिका द्वय :
पू. श्री आर्यिका श्रुतदेवी माताजी
पू. श्री आर्यिका सुज्ञानी माताजी

निर्देशिका :
क्षु. राजमती माताजी, गुलाब वाटिका

सह सम्पादिका :
ब्र. समीक्षा दीदी

प्रबन्ध सम्पादक :
ब्र. धर्मचन्द शास्त्री, प्रतिष्ठाचार्य
अध्यक्ष-भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत् परिषद
गुलाब वाटिका, लोनी रोड, दिल्ली

सहयोगी :
सरिता जैन 'साहिल', दिल्ली

प्रथमावृत्ति : 1069
सन् 2000

प्रकाशक :
श्री जिनश्रुत ग्रन्थमाला, धर्मनगर

मुद्रक :
सुनील पैकेजिंग इंडस्ट्रीज्
26/19, गली नं. 12, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली-32
फोन : 011-2247275, 2217475, 2427275
स्वास्तिक पैकेजिंगस्
506, पटपड़ गंज इंडस्ट्रीयल स्टेट, दिल्ली-92
फोन : 011-2169300 फैक्स : 011-2434649

प्राप्ति स्थान:
श्री 1008 धर्मनाथ तीर्थंकर तीर्थ स्वामी तपोवन
धर्मनगर, ता.-शिरोल, जि.-कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
फोन : 02322-22092, 22137

प. पू. चारित्र चक्रवर्ती समाधि सम्राट आचार्य श्री 108 शांतिसागर जी म

पूज्याति पूज्यैर्यतिभिस्सुवं
संसार गंभीर समुद्र सेतुं।।
ध्यानैक निष्ठं गरिमा गरिष्ठं।
आचार्यवर्यं प्रणमामि नित्यम्।।

प. पू. आचार्य श्री 108 पायसागर जी महाराज
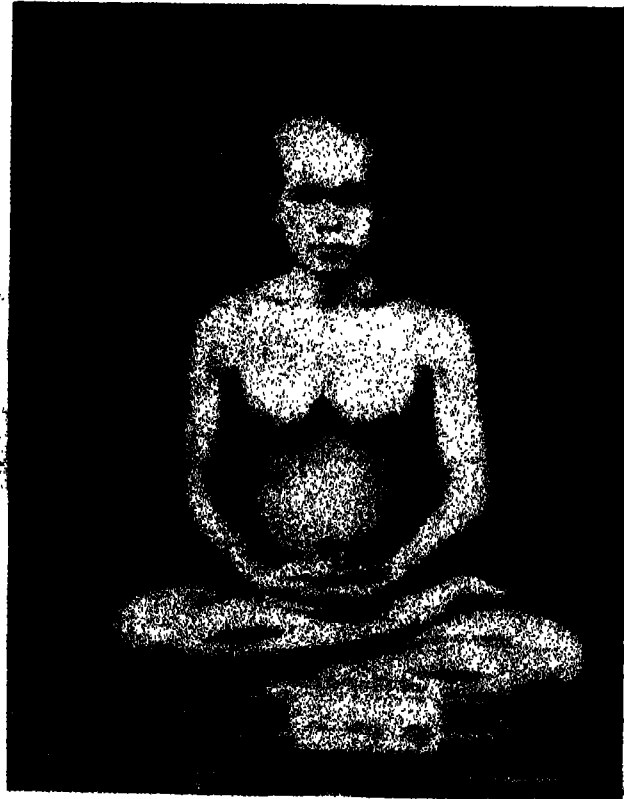
प. पू. आचार्य श्री 108 जयकीर्ति जी महाराज

प. पू. भारत गौरव विद्यालंकार योगीन्द्र चूड़ामणि आचार्यरत्न श्री 108 देशभूषण

श्रीमद् दिगम्बर नरेन्द्र नमोऽस्तु तुभ्यं।
पाप प्रणाशकर भव्य नमोऽस्तु तुभ्यं॥
सूरि प्रधान गुरुवर्य नमोऽस्तु तुभ्यं।
श्री देशभूषण यतीन्द्र नमोऽस्तु तुभ्यं॥

नमोऽस्तु

परमपूज्य

सद्धर्म प्रवर्तक

शांतमूर्ति

सरल स्वभावी

करुणा निधी

शांति सुधामृत के दानी

जिनमंदिर, जीर्णोद्धार के प्रेरणा-श्रोत

भाग्य-विधाता

मुक्तिमार्ग दर्शक

पतित जनों के पालक

जीवन दाता

समदृष्टा

वात्सल्य के धनी

क्षमा के सागर

मधुर मुस्कान से सुशोभित

चारित्र चूडामणि

इस युग के महान साधक

जिन आराधना के प्रेरणा-स्त्रोत

अद्वितीय संत बाल ब्रह्मचारी

गुरुदेव आचार्यरत्न बाहुबली जी महाराज के

चरण कमलों में

शत-शत

नमोऽस्तु!

नमोऽस्तु!!

नमोऽस्तु!!!

प. पू. सद्धर्म प्रवर्तक, चारित्र चूड़ामणि, वात्सल्य रत्नाकर,
आचार्यरत्न श्री 108 बाहुबली जी महाराज

विपरीत परिस्थिति में भी जो सदा मुस्कराते हैं।
जिनके तप को देख कर्म भी भाग जाते हैं॥
भर रहे जो हमारी खाली ज्ञान गागर को।
बार-बार नमन है इन आचार्य बाहुबली सागर को॥

श्री त्रिलोकमंडल जिनपूजा विधान के समय श्री क्षेत्र कोथली (जि. बेलगांव) में दि. 26 जून 1980 के दिन दोपहर 2 बजे "प. पू. भारत गौरव आचार्यरत्न श्री 108 गुरुदेव देशभूषणजी महाराज अपने शिष्य प. पू. श्री 108 बाहुबलीजी मुनि महाराजजी को 'आचार्य' पद प्रदान करते हुए।

जैन धर्म के महान प्रभावक आचार्य

आचार्य श्री 108 शुभचन्द्राचार्य

आचार्य श्री 108 वदिराज स्वामी

आचार्य श्री 108 पूज्यपाद स्वामी
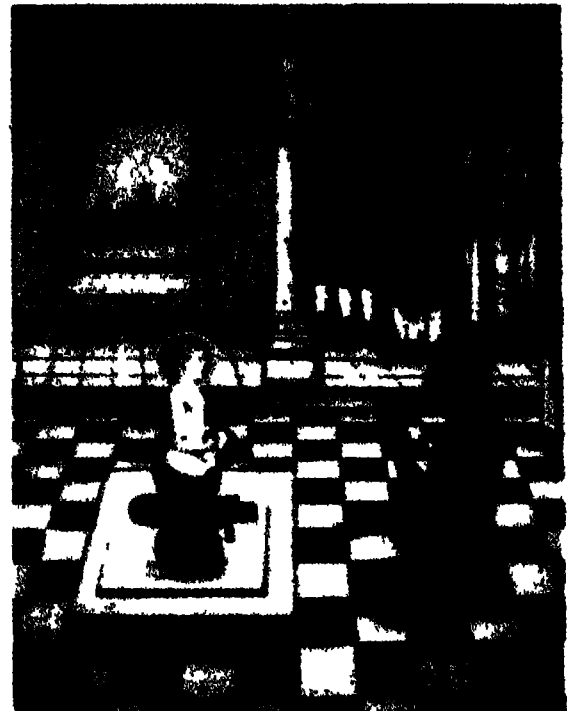
आचार्य श्री 108 समंतभद्र स्वामी

आचार्य श्री 108 मानतुग स्वामी

आचार्य श्री 108 उमा स्वामी
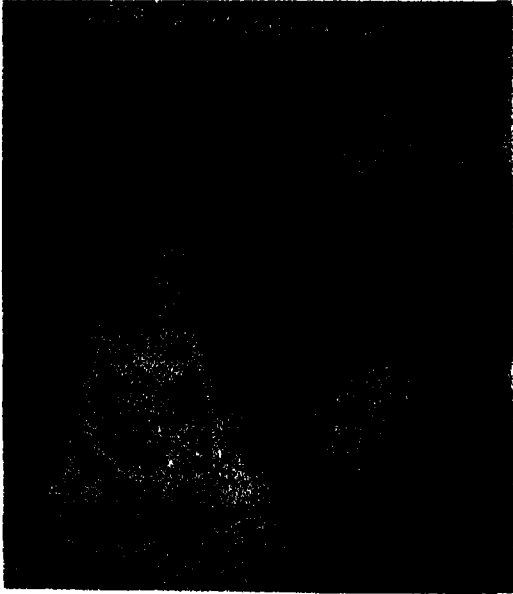
आचार्य श्री 108 जिनसेन स्वामी

आचार्य श्री 108 विद्यानन्द स्वामी

तुम्हं गुणगणसंथुदि अजाणमाणेण जो मया वुत्तो।
देउमम बोहिलाहं गुरुभत्तिजुदत्थओ णिच्चं॥

प. पू. श्री 105 आर्यिका श्रुतदेवी माता
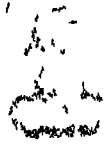
दिनाक
18 नवम्बर, 2000

स 8-एम एच / 2000

प्रिय श्री जैन जी,

भारत के राष्ट्रपति श्री के आर नारायणन जी को यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि 16 दिसम्बर 2000 को 'अढाई द्वीप विधान' व आचार्यश्री बाहुबली जी महाराज के जन्म दिवम के अवमर पर "जय जैनाचार्य" ग्रथ का प्रकाशन किया जा रहा है।

राष्ट्पति जी इम प्रकाशन की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाए प्रषित करते है।

आपका,

(प्रेम प्रकाश कौशिक)

श्री आशीष जैन
1747, कूचा लट्टू शाह,
दरीबा कला, चादनी चौक,
दिल्ली 110006

गुरवे बाहुबली आचार्य, गुणरत्नैरलंकृतं।
आयुरारोग्य लाभाय, शुभ भाव समर्पिता।।

पू. श्री 105 आर्यिका सुज्ञानी माताजी

संसार में पतित थी गुरु ने उठाया।
अज्ञान की तिमिर था गुरु ने मिटाया॥
आचार्य है तरण तारण वीतरागी।
बाहुबली गुरुवर जय हो तुम्हारी॥

बा. ब्र. समीक्षा दीदी

सम्पादकीय

पू. श्री आर्यिका श्रुतदेवी माताजी

मेरे गुरुदेव

मंगलमय गुरु आशीष से, मंगलमय हो काम।
मंगलमय आशीष दो, मंगल हो मम काम॥

सम्यग्दर्शन मूलं ज्ञानस्कंधं चारित्र शाखाढ्यं।
मुनिगण विहगाकीर्णं आचार्य महाद्रुमं वन्दे॥

जिसका मूल सम्यग्दर्शन है, सम्यग्ज्ञान रूप स्कन्ध है, चारित्ररूपी शाखाएं हैं तथा मुनिगण रूपी पक्षी जिनके आश्रय में रहते हैं ऐसे आचार्यरूपी महाकल्पवृक्ष को मैं करबद्ध होकर प्रणाम करती हूं।

यस्त्यक्त्वा तृणवद्, बाह्यमन्तरं च परिग्रहणम्।
उदास्ते तत्पदांभोजं पर्युपास्ते जगत्त्रयी॥

जिसने राज्य को तृण तुल्य समझ छोड़ दिया है तथा बहिरंग और अंतरंग परिग्रह का परित्याग कर राग तथा द्वेष रहित उदासीन वृत्ति प्राप्त की है, उस महात्मा के चरण कमल की तीनों लोक पूजा करता है।

परमात्मा पद की प्राप्ति में निरन्तर प्रयत्नशील अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, करुणा आदि श्रेष्ठ गुणों से समलकृत इन परमहस आचार्यदेव की कौन विवेकी हृदय से अभिवन्दना न करेगा?

सारा जगत इन्द्रियों और भोगों का गुलाम बन रहा है। उसे सच्चा मार्गदर्शन दिगम्बर जैन जितेन्द्रिय तपस्वी, करुणा और वात्सल्य से युक्त दिगम्बराचार्य बाहुबली गुरु के द्वारा प्राप्त हो रहा है। उनके दिगम्बरत्व में सत्य प्रतिष्ठित है और प्रवृत्तियों मे स्वावलम्बन, अहिंसा, अपरिग्रह तथा दया प्रतिष्ठित है। विषम ऐसे कलिकाल में आचार्यश्री ने अपनी अनुकम्पा से, मधुर उपदेश से लाखों जीवों को विशेष रूप से दक्षिण महाराष्ट्र, कर्नाटक के जीवों को मिथ्या मार्ग से दूर कर सन्मार्ग पर लगाया है।

इन संत के मन में तथा प्रवृत्तियों में अहिंसा और करुणा का निवास है, समस्त विश्व उनके चरणों में श्रद्धा के सुमन समर्पण करता है। विश्व के अंधकार को दूर कर प्रकाशदाता सूर्य को सभी संप्रदाय के मानव तथा अन्य प्राणी महत्व प्रदान करते हैं, इसी प्रकार अविद्या के अंधकार को दूर कर सम्यग्ज्ञान का पवित्र प्रकाशदाता दिव्याचरण समन्वित संत-आचार्यदेव भी विश्व पूज्य है।

श्री जिनसेनाचार्य ने महापुराण में संतों का महत्व कहा है-

मुष्णाति दुरितं दूरात् परं पुष्णाति योग्यताम्।
भूयः श्रेयोनुबन्धाति प्रायः साधुसमागमः॥

साधु का समागम दूर से ही पाप को दूर कर देता है। उससे व्यक्तिगत योग्यता की अभिवृद्धि होती है तथा उसके द्वारा महान कल्याण की प्राप्ति होती है। ऐसे महापुरुष की स्तुति करने का अवकाश मुझे मिला है।

स्तुति किसे कहते हैं?

गुणस्तोकं सदुल्लंघ्य तद्बहुत्वकथा स्तुतिः।
आनंत्यात्ते गुणावक्तुमशक्यास्त्वयि सा कथम्॥

गुणों का अतिक्रम करके वर्णन करना स्तुति कहलाती है। परन्तु गुरुदेवश्री तो अनन्त गुणों के भण्डार हैं, उनके गुणों का वर्णन करना मुझ अल्पज्ञ के लिए कैसे शक्य हो सकता है? फिर भी जहां सूर्य का प्रकाश नहीं वहां दीप के टिमटिमाते प्रकाश से भी कार्य चल सकता है।

आचार्यश्री का पावन जीवन चंदन के समान सुरभित है। तवकृत उपकार इस धरती पर नगण्य है। जैसे आकाश स्थित तारों को गिनने का प्रयास कोई अज्ञ ही करेगा, ज्ञानी व्यक्ति इस अज्ञता को क्यों करेगा, ठीक उसी प्रकार गुरु गुणानुवाद का प्रयास भी उसी प्रकार की अज्ञता समझना चाहिए।

आप चन्दन सम शीतल हैं। चंदन स्वयं को हानि देने वाले का हितकारी होता है। जलाये जाने पर भी चन्दन अपने सौरभ से प्रत्येक के हृदय तथा मस्तिष्क को आनन्द प्रदान करता है। चन्दन वृक्ष समान आप सबका कल्याण कर रहे हैं।

नीतिकार ने नीति ग्रंथों में कहा है -

मूलं भुजंगैः शिखरं प्लवंगैः शाखा विहंगैः कुसुमानि भृंगैः।
नास्त्येव तच्चंदन पादपस्य यन्नाश्रितं सत्वभरैः समन्तात्॥

चन्दन का कोई एक भी अंग नहीं है, जो जीवों को आश्रय न देता हो, देखिए चन्दन के मुख में सर्प रहते हैं, शिखर पर बन्दर उछलकूद मचाते हैं, शाखाओं पर पक्षीगण विश्राम करते हैं और पुष्पों का आश्रय सौरभ प्रेमी भ्रमर लिया करते हैं। इसी प्रकार मेरे गुरुदेव के द्वारा सभी जीवों को सुख तथा शांति-शीतलता प्राप्त हो रही है। अतः आप चंदन वृक्ष समान हो। जो अपने को काटने वाले की कुल्हाड़ी के मुंह को भी सुरभि सम्पन्न बना देते हैं।

चन्दन वृक्ष सादृश आप में अनेक विशेषतायें विद्यमान हैं। चन्दन के वृक्ष पर बैठे हुए पक्षीगण मधुर गान करते हैं। इसी प्रकार लाखों करोड़ों व्यक्ति सारे भारतवर्ष में इन मनस्वी महात्मा की महिमा को प्रतिपादन करते हैं। चन्दनवृक्ष के मूल में बड़े-बड़े भुजंग लिपटे रहते हैं, इसी प्रकार अनेक दुष्ट जन इनके समीप में रहते हुए अपने दुष्ट स्वभावानुसार डसने का कार्य भी जारी रखते हैं। उन निकृष्ट व्यक्तियों के प्रति भी आपके विशाल अन्तःकरण में वात्सल्य और करुणा का भाव रहता है। आचार्यश्री हमेशा दुष्ट स्वभाव वाले व्यक्तियों को देखकर सोचते हैं कि 'पाप कर्म के उदय से इनकी

बुद्धि विपरीत बन रही है, इन्हें सुबुद्धि मिले, इनका कल्याण हो और शांतिपथ को पकड़े।' आप शत्रु को भी अपना अमृतमय आश्रय प्रदान करते हैं।

गुरुदेव! आप पृथ्वी सम क्षमाशील हो। करुणा के सागर हो। आपके अद्वितीय गुणों का गान करने के लिए सौधर्म इन्द्र भी समर्थ नहीं हैं, फिर हम अल्पज्ञानी आपका गुणगान कैसे कर सकते हैं। फिर भी..... आपकी एकमात्र भक्ति ही हम शिष्यगणों को प्रेरित कर रही है। आप जैसे निस्पृही संत को इससे क्या लाभ? लाभ तो हमारा है। स्तवन-गुणगान से आपका क्या उपकार होगा? उपकार या अनुपकार से आपको प्रयोजन भी क्या? उपकार तो हमारा होगा। स्व-पर हितकारी सन्तराज के सद्गुणों को लिपिबद्ध करना समुद्र में मोतियों को गिनने के समान अशक्य है।

गुरुदेव परमशास्त्रं त्राता भ्राता पिता च माता च।
गुरुदेव परममित्रं प्राणाश्च गुरुर्हि शिष्यस्य॥

गुरुदेव आप ही मेरे लिए सर्वस्व हो। आप ही मेरे लिए परम शास्त्र हैं। आप ही रक्षक हो, आप ही भ्राता, पिता-माता, मित्र हो और आप ही मेरे प्राण हो। जगत् में गुरु छूटने पर भी शिष्य की मुक्ति संभव है पर गुरुभक्ति जिसकी छूटेगी उसे नियम से मुक्ति नहीं मिलती। गुरु को हृदय में धारण करने वाला भक्त होता है और उनसे दीक्षा लेने वाला शिष्य होता है भक्त केवल चरण ही छूता है पर शिष्य गुरु के आचरण को छूता है।

माता भी किसी कारणवश पुत्र के विरुद्ध हो सकती है, किन्तु गुरु कदापि किसी काल में भी अहितकारी नहीं हो सकते। कभी कभी बाहर से कठोर बन जाते हैं पर नारिकेल फल की भांति भीतर से तो आप कोमल ही रहते हैं। जैसे मां की गोद में शिशु निर्भय-निश्चिन्त होकर बैठता है। उसी प्रकार हम जैसे शिष्य भी गुरु के आंचल में निर्भय निश्चिन्त होकर रहते हैं क्योंकि हमारे रक्षक आप स्वयं ही हैं। आपने हमें केवल दुःखों से छुटकारा नहीं दिया अपितु दूसरों के आंसू पोछने के लिए अनुकम्पा रूपी वस्त्र प्रदान किया है। आप तो हमारे लिए कल्पतरु हैं, गुलाब वाटिका में लोग सुगन्ध की याचना नहीं करते, वह स्वयं ही मिल जाती है।

मैं तो अल्पज्ञा हूं इस विशाल ग्रंथ का सम्पादन करना मेरे लिए अशक्य है, अतिभारारोपण ही है। फिर भी शक्त्यनुसार अपनी बुद्धि अनुसार इसे सुन्दर, सरस तथा उपयोगी बनाने का प्रयत्न कर रही हूं।

मैं उन विद्वान-भक्तिवानों के प्रति आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने अपनी लेखनी को आचार्यश्री के गुणानुवाद से पवित्र कर अपने जीवन को सफल कर लिया।

श्री 105 आर्यिका सुज्ञानी माताजी जिन्होंने हमें विशेष रूप से सहयोग दिया है, उनकी मातृभाषा हिन्दी होने से विशेष रूप से उनका सहयोग मुझे मिला है। मैं उनकी गुरुभक्ति तथा उदारता के लिए हृदय से धन्यवाद मानती हूं।

राज्यनेता, देशनेता, श्रद्धालु गुरुभक्त आदि पुरुष धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने विनयांजलि, भावोद्गार, शुभ संदेश आदि लिखकर अपने जीवन को पवित्र बनाया है।

ब्र. समीक्षा के श्रम को विस्मृत नहीं किया जा सकता जिन्होंने इस ग्रन्थ की विशाल सामग्री जुटाने में हमें पूर्ण सहयोग दिया है।

ब्र. धर्मचन्द्र शास्त्री जी ने इस ग्रंथ के संशोधन करने में अर्थात् इस कृति को सुन्दर आकार देने में बहुत बड़ा प्रयास किया उन्हें समय न होने पर भी गुरुभक्ति के कारण अपना पूरा समय निकाल कर उन्होंने ग्रंथ का संशोधन किया।

इचलकरंजी निवासी श्री गुणधर उपाध्ये, दिल्ली निवासी श्रीमान विनेश जैन उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता, श्रीमती सरिता साहिल, श्री सुखानंद जैन तथा सिवनी निवासी श्री सुनील बाझल, राजेश जैन (बागड़), बेलगांव निवासी श्री धर्मू कलमणी आदि लोगों का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ है, ये सभी आशीर्वाद के पात्र हैं तथा सभी दातारों को पुनः पुनः आशीर्वाद है जिन्होंने अपनी नश्वर-चंचल लक्ष्मी को गुरुभक्ति में समर्पित कर धन्यवाद को प्राप्त किया है, उन्हें आशीर्वाद है।

'जय जैनाचार्य' इस महान ग्रन्थ को भक्तिवश होकर पूर्ण करने का प्रयत्न किया है, फिर भी संयोजन में, शुद्धिकरण में, आभार प्रदर्शन करने में त्रुटि रहना स्वाभाविक ही है। अतः ज्ञानी जन त्रुटियों का संशोधन कर मुझे अनुगृहीत करें मेरी यही विनम्र प्रार्थना है।

अन्त में सद्धर्म प्रवर्तक, चारित्र चूड़ामणि, वात्सल्य रत्नाकर, परम पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री के पावन चरण कमलों में सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्तिपूर्वक त्रियोग शुद्धिपूर्वक शतशः नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!

भवसागर में भटक रही थी, गुरुवर ने सन्मार्ग दिखाया।
कुंभकार के सादृश्य हमको, साधक का आकार दिया॥
समयसार का सार बताके, जन-जन का उद्धार किया।
'नमोऽस्तु' गुरु बाहुबली आचार्य को जिसने यह उपकार किया॥

सम्पादकीय

पू. श्री आर्यिका सुज्ञानी माताजी
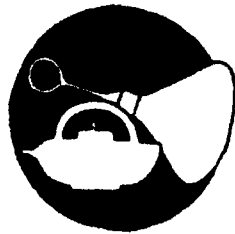
प्रणति

भारतवर्ष पवित्र भूमि है। यह संतों और ऋषियों की भूमि है। यहां सदा से वीतराग साधुओं की मान्यता सर्वोपरि रही है। राजा सांसारिक भोग के प्रतीक हैं और साधु (महाराज) त्याग के प्रतीक हैं। त्याग के चरणों में भोग पड़ा है। त्यागी बड़ी से बड़ी वैभव राशि से भी बड़ा है। क्योंकि जिस वैभव में वैभवशाली आज भी पड़ा हुआ है, उसको तुच्छ समझकर त्यागी पहले ही उसे ठुकरा चुका है। इसलिए असीम वैभवशाली राजा भी अकिंचन साधु के चरणों में नतमस्तक होता है। साधु का त्याग राजा के वैभव से भी महान है। जगत राजा की पूजा करता है, किन्तु राजा दिगम्बर साधु को पूजता है। जगत में राजा को बड़ा माना जाता है, किन्तु राजा अपने से भी साधु को बड़ा मानता है।

ऐसे सर्वस्व त्यागी दिगम्बर सदगुरुओं की महिमा अचिन्त्य है। भारत के कण-कण में दिगम्बर साधुओं के चरणों की धूलि समाई हुई है। शास्त्रों में कहा है।

स्पष्टा यत्र मही तदङ्घ्रि कमलैस्तत्रैति सत्तीर्थतां।

अर्थात् उनके चरण-कमलों से जहां भी जमीन छू जाती है, वही स्थान तीर्थ बन जाता है।

हमारे चरित नायक आचार्यरत्न बाहुबली महाराज भी एक तीर्थ ही हैं। जिन्होंने जन्म लेकर इस गौरवमयी धरती को अत्यधिक गौरव प्रदान किया।

इस सत्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि पूर्वाचार्यों ने अपने महान प्रभावक व्यक्तित्व और अगाध पाण्डित्य के द्वारा जैनधर्म की जिस मशाल को अपनी उत्तवर्ती पीढ़ी को सौंपा था, उस मशाल को पू. आचार्यश्री ने अपने समर्थ हाथों में ले रखा है। अर्थात अपने निष्कलंक चारित्र द्वारा एक प्रकार से पुनर्जीवित कर रहे हैं और जन-जन के मानस में त्याग की प्रेरणा जागृत कर रहे हैं।

'गुरु बिन कौन बतावे बाट' गुरु का दर्शन, समागम, सान्निध्य बड़े पुण्य से मिलता है। 'पुण्य पुंज बिन मिलहिं न संता'। चा.च. आचार्य श्री शांतिसागर महाराज जी ने आगम सम्मत मुनि परम्परा को पुष्ट किया और लोक में दिगम्बरत्व की दुन्दुभि बजाई। उनके आचार्य पद का गुरुत्तर भार वहन करने वाले परम्परागत चतुर्थ पट्टधर आचार्यरत्न प.पू. श्री 108 देशभूषण जी महाराज के परम अग्रगण्य शिष्योत्तम प.पू. पंचम पट्टधर आचार्यरत्न बाहुबली जी महाराज हैं जो अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व, आगमोक्त चर्या, सरल स्वभाव के कारण जन-जन के आराध्य बने हुए हैं। साधु संतों के गुणानुवाद से अन्तकरण को ऐसी अद्भुत प्रेरणा प्राप्त होती है कि मनुष्य अपने जीवन को ऊपर उठाता है। ऐसी दिव्य विभूतियों का सान्निध्य बड़े भाग्य से मिलता है। बाल-ब्रह्मचारी, चारित्र चूड़ामणि, सद्धर्म प्रवर्तक, आचार्यरत्न श्री बाहुबली जी महाराज ऐसी ही दिव्य विभूतियों में से एक हैं।

आचार्यश्री! आपको तो स्तुति से भी प्रयोजन नहीं और निंदा से भी प्रयोजन नहीं। आपके लिए दोनों बराबर हैं। पर हमें आपके गुणकीर्तन से लाभ अवश्य है। नीतिकार ने कहा भी है -

चंदनं शीतलं लोके चंदनादपि चंद्रमा।
चन्द्र चंदनयोर्मध्ये, शीतला साधु संगतिः॥

आचार्यश्री जी धर्मरत्न के धारक महातीर्थ हैं। यही कारण है कि उनके सान्निध्य में परम शांति का अनुभव होता है। स्व-पर उपकारी संतराज के उपकारों को लिपिबद्ध करना समुद्र में मोतियों को गिनने के समान अशक्य है। कहा भी है-

वृद्धि व्रजाति विज्ञानं, यशश्चरित्र निर्मलम्।
प्रयाति दुरितं दूरं महापुरुष कीर्तनात्॥ पद्मपुराण

अर्थात् आप संयम रूपी शाश्वत स्वर्ण मुकुट से शोभित हैं। जिसकी चमक-दमक शाश्वत है। इसे न कोई छीन सकता है, न लूट सकता है। इसकी जगमगाहट का अवलम्बन ले भव्य जीव अंधकार से प्रकाश की ओर लौटते हैं और संयम वंदना से संयमधारी बनकर शील सौरभ से सुवासित होते हैं।

जब निराश, हताश मनुष्य आपके पास आता है तो दर्शन, वंदन एवं आशीर्वाद प्राप्त कर नवीन स्फूर्ति ग्रहण करता है। यह है आपके दर्शन का विलक्षण प्रभाव। आपकी इस दिव्य कांति की आधारशिला है आपका सत्चारित्र। क्या सागर की लहरों को कोई गिन सकता है? क्या आकाश के तारों की कोई गिनती हो सकती है? फिर मैं तो एक अल्पज्ञ आर्यिका आपके गुणों का कैसे बखान कर सकती हूं? बस मेरी तो यह बाल चेष्टा मात्र है।

निरीक्षितुं रूपलक्ष्मी, सहस्राक्षोऽपि न क्षमः।
स्वामिन् सहस्रजिऽपि, शक्तो वक्तुं न ते गुणान्॥

अर्थात् आपके अनंत गुण राशिओं का बखान कैसे कर सकती हूं?

आपने जैनेश्वरी दीक्षा लेकर भगवान आदिनाथ की परम्परा का अनुसरण किया तथा उसी मार्ग पर अनेकों जीवों को अग्रसर कर रहे हैं। पू. आचार्यश्री का जीवन निकट से देखने को मिला। सरल, शांत, निस्पृहि आदि अनेक गुणों से ये युक्त हैं। पू. आचार्यश्री ने मुझे महाव्रत देकर (स्त्री पर्याय का उत्कृष्ट पद याने आर्यिका पद देकर) मेरे जीवन का उद्धार किया।

"गुरु की महिमा वरणी न जाये, गुरु नाम जपो मन वचन काय।"

ऐसे प.पू. वीतरागी संतों के दर्शन करने का सौभाग्य भारत वर्ष के अनेकों भव्यों को प्राप्त हो रहा है। पू. आचार्यश्री ने दक्षिण से उत्तर, पूर्व से पश्चिम संपूर्ण भारत में पद विहार कर जिनधर्म की प्रभावना की है। विशाल संघ के साथ दक्षिण भारत से तीर्थराज सम्मेद शिखर की ओर हजारों श्रावक-श्राविकाओं के साथ विहार करते हुए, अनेकों जगह पर धर्मोपदेश देकर, स्व-पर कल्याण करते हुए आज भी भारत वर्ष की राजधानी महानगर दिल्ली में चातुर्मास कर रहे हैं।

पू. आचार्यश्री की मैं बहुत उपकारी हूं जिन्होंने मुझ जैसी तुच्छ बालिका को महाव्रत देकर कृतार्थ किया।

पू. आर्यिका श्रुतदेवी माताजी की गुरुभक्ति का वर्णन मैं अपनी जिव्हा से करने में असमर्थ हूं। बस उनकी गुरुभक्ति का ही प्रतिफल ही प्रस्तुत ग्रंथ का प्रकाशन समझिये। 'जय जैनाचार्य' इस ग्रंथ के प्रकाशन के लिए माताजी ने बहुत परिश्रम लिया है, जिस कार्य का प्रयास सन् 1986 से माताजी कर रही हैं। वह आज भारत की राजधानी में फलीभूत हो गया।

श्री ब्र. धर्मचन्द शास्त्री जी ने अपना समय निकालकर प्रस्तुत ग्रंथ का संशोधन कर इसे सुन्दर आकार देने का बहुत बड़ा काम किया है। मैं उनकी बहुत बहुत आभारी हूं।

अंत में सद्धर्म प्रवर्तक, चारित्र चूड़ामणि, आचार्यरत्न श्री 108 बाहुबली महाराज जी के पावन चरण कमलों में सिद्ध-श्रुत-आचार्य भक्ति पूर्वक त्रिवार शतशः

नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!

प्रबन्ध सम्पादकीय
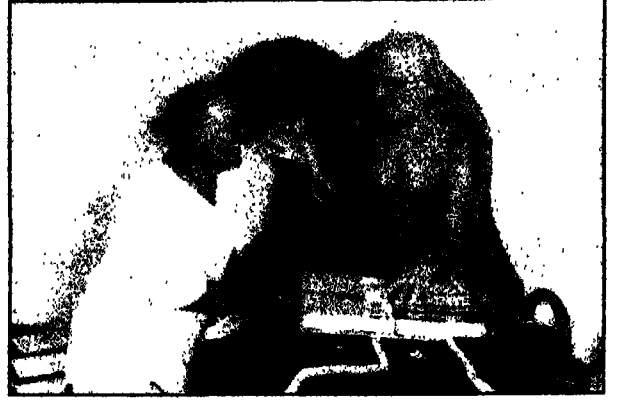
भारतीय संस्कृति की अनेक शाखाएं हैं। जीवन और जगत के बारे में विविध प्रकार से विचार होता रहा है। विचार की प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं हुई पुराने विचारों के सामने नए प्रश्नों ने पुनर्विचार की समस्या पैदा की। इसी दबाव में नवाचार हुआ। नए-नए विचारों की उद्‌भावना हुई।

जिनके साथ मन विवाद करने का करे उन्हें 'साधु' कहते है। जिनसे कुछ प्राप्त करने का मन करें उन्हें 'महात्मा' कहते हैं। जिनके पास बैठकर प्रश्न करने का मन करे उन्हें 'ऋषि' कहते हैं। जिनके पास बैठकर उठने का मन न करे उन्हें 'मुनि' कहते हैं और जिनके पास बैठकर कुछ सीखने का मन करें उन्हें 'सन्त' कहते हैं। मुनि समाज के लिये आदर्शभूत है तो जिनशासन की शान भी है। मुनियों, आचार्यों के द्वारा प्राणी मात्र का कल्याण होता है। इन्हीं के उपदेशों से समाज में सदाचार परोपकार, नैतिकता, वैराग्यता आदि का ज्ञान प्राप्त होता है। अतः साधु जनों को 'धरती के देवता' कहे तो कोई अतिश्योक्ति नहीं।

शास्त्र पढ़कर जो बोलता है वह पण्डित है और जो सत्य पाकर जीवन में अचरित करता है वह साधु है। पंडित जीभ से बोलता है साधु जीवन से बोलता है। ऐसे ही पदयात्री एवं करपात्री संतों की भारतवर्ष में सुदीर्घ परम्परा रही है। जैन साधु इस परम्परा के देश के समाज के प्राणियों के उन्नायक रहे हैं। जो आनन्द में जीते हैं, आनन्द को ही पीते हैं। आनन्द ही जिनका प्रसाद है। आनन्द ही जिनका आशीर्वाद है तथा जिनकी उपस्थिति से ही आनंद की अभिव्यक्ति होती है। ऐसे आचार्य श्री बाहुबली सागर जी महाराज उस बिरले सन्तों में से एक है।

परभाव निराकरण पूर्वक स्वभाव में सभी सन्त प्रतिष्ठित हुये हैं और एतदर्थ तप के साथ गुरु भक्ति का भी सहारा किया है।

पू. आर्यिका श्री 105 श्रुतदेवी माताजी ने प.पू. श्री आचार्यरत्न, वात्सल्य रत्नाकर, बाहुबली सागर महाराज जी का जीवन वृत्त को एक भक्ति यात्रा की अनुभूतियों को लिपिबद्ध कर ग्रन्थ का रूप दिया है। ये रचनाएं, विचारों और सिद्धान्तों का ही संप्रेषण नहीं करती अपितु काव्योचित्त सरणि से पाठक को भावासिक्त भी करती है।

प्रस्तुत 'जय जैनाचार्य' ग्रन्थ को 5 भागों में बांटा गया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ पांच खण्डों में विभक्त किया गया है। प्रथम खण्ड में मुनिराजों, व्रती, श्रावकों, श्रेष्ठी वर्ग, राजनेता तथा आचार्यश्री के भक्तों द्वारा आचार्यश्री के दीर्घ जीवन की मंगलकामना की गई।

दूसरे खण्ड में आचार्यश्री का बाल्यकाल से अब तक की सचित्र जीवन झांकी प्रस्तुत किया गया है। प.पू. आचार्यरत्न, भारतगौरव के सम्पूर्ण भारतवर्ष में पद विहार पर विचरण किया, विहार में जीवन के अनोखे संस्मरण हृदय पटल पर थे, उनको लिपिबद्ध कर पू. आर्यिका माता श्री 105 श्रुतदेवी जी पू. आ. सुज्ञानी माताजी एवं ब्र. समीक्षा दीदी का अधिक परिश्रम, लगन, निष्ठा एवं गुरुभक्ति से लेखन किया है। जो ज्ञानवर्धक तथा वैराग्यवर्धक है।

तृतीय खण्ड में आचार्यश्री का चितन्वन लिपिबद्ध किया गया है। आचार्यश्री एकान्त में चिन्तन किया करते थे तथा महावीर की वाणी को भक्तों के लिये शुभ भावना से लिखते थे वह कुछ डायरियों से संकलित कर लिया गया है।

चतुर्थ खण्ड में आचार्यश्री की भक्ति गीतों, स्तोत्र, आरती, भजन एवं मुक्तक के माध्यम से प्रस्तुत अल्प समय में एकत्र करने का प्रयास किया गया है।

अन्त में आचार्यश्री का उदबोधन नामक खण्ड प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत ग्रंथ में निहित विषय वस्तु का श्रेय एवं दायित्व पू. माताजी द्वय को जाता है। अल्प समय में इतना बड़ा कार्य किया। यह कार्य सराहनीय है। साथ में ब्र. समीक्षा जी का कार्य भी स्तुतनीय है कि श्रावकों आदि से सम्पर्क कर इस ग्रन्थ को मूर्त रूप देने में सबसे बड़ा संबल रहा। इस कार्य को पूर्ण करने में ब्र. समीक्षा जी का मैं आभारी हूं। सभी भक्तों का जिन्होंने अपने विचारों को लिखकर ग्रन्थमाला की कड़ी को लिपिबद्ध करने में सहयोग दिया। उनका भी आभारी हूं।

अल्प समय में इस 'जय जैनाचार्य' ग्रन्थ का प्रकाशन गुरुओं के आशीर्वाद से ही संभव हो सका। समयाभाव के कारण अत्यन्त सावधानी के बावजूद मुद्रण सम्बन्धी त्रुटियां रह जाना सम्भव है। विज्ञ पाठक गण सुधार कर पढ़ें। इस पावन ग्रन्थ के प्रकाशनार्थ जिन-जिन ने तन मनधन से सहयोग दिया है। उनके प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूं।

संयम, सौरभ, साधना, जिनको करे प्रणाम।
त्याग तपस्या तीर्थ का बाहुबली है नाम॥

अन्त में प.पू. आचार्यरत्न वात्सल्य मूर्ति श्री बाहुबली सागर जी के चरणों में शत् शत् अभिनन्दन करता हूं। वीर प्रभु से कामना करता हूं कि आप शतायु होकर जिनधर्म की प्रभावना करते हुये हमें मंगल आशीर्वाद देते रहे।

ब्र. धर्मचन्द शास्त्री (प्रतिष्ठाचार्य)
अध्यक्ष-श्री भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत परिषद
जैन मंदिर, गुलाब वाटिका, लोनी रोड, दिल्ली
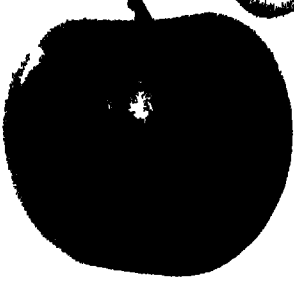
अनुक्रमणिका
प्रथम खण्ड
मंगल कामना
द्वितीय खण्ड
व्यक्तित्व
तृतीय खण्ड
आचार्यश्री का चिन्तन
चतुर्थ खण्ड
आचार्य भक्ति
पंचम खण्ड
उद्बोधन
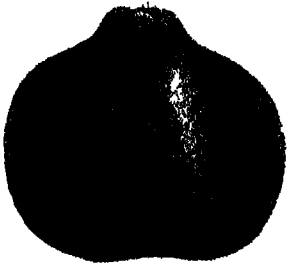
मंगलाचरण
अरिहंत
आचार्य
साधु मंगलं,
ॐकार उत्तमा
श्री सिद्ध उत्तमा
उपाध्याय उत्तमा
ॐ शरणं,

जय जैनाचार्य

प.पू.आ. श्री सुबलसागर जी महाराज

ॐ

नमः सिद्धेभ्यः

वाणी कर्म कृपाणी द्रोणी संसार जलधि संतरणे।
वेणी जितघनमाला जिनवन्दनाम्भोज भासुरा जीयात्"॥

करीब पाँच सौ साल पहले अकबर बादशाह के समय सर्व धर्म सम्मेलन में जैन धर्म का झंडा फहराये हुए प० पू० श्री 108 स्वर्गीय विद्यासागरजी (अकिवाटकर) का स्थान, भारत की राजधानी दिल्ली में दीक्षाबन्धु प० पू० श्री 108 आचार्यरत्न बाहुबली मुनि महाराजजी अपने विशाल संघ के साथ वर्षायोग कर रहे हैं, स्वर्गीय प० पू० श्री 108 भारत गौरव आचार्यरत्न देशभूषण जी मुनि महाराजजी ने कई चातुर्मास दिल्ली में किये थे। **"शेर के बच्चे शेर ही होंगे"**-इस सूक्ति के अनुसार शिष्य प्रवर श्री 108 आचार्यरत्न बाहुबली मुनि महाराजजी अपने विशाल संघ के साथ वर्षायोग कर रहे हैं। पंचम काल में हुंडक काल दोष से 'जंगल में मंगल-शहर में दंगल'-फिर भी दिल्लीवाले महानुभाव लोग इस चरितार्थ को समाप्त कर विशाल संघ की सेवा में तत्पर है। सत्पात्र दान देने से, शेषान्न सेवन करने से, धर्मानुरागी भव्य जीवों को परंपरा से मुक्ति मिलती है। औषधदान से निरोग शरीर, अभयदान से निर्भयत्व व शास्त्रदान से केवलज्ञान प्राप्त होता है। शास्त्र स्वाध्याय करने वाले धर्मात्मा दानी लोग संघ के निमित्त से ग्रन्थ प्रकाशन का कार्य कर रहे है। यह समाचार सुनकर हमें बहुत ही आनंद हुआ। इसी प्रकार धर्म परंपरा, संघ परंपरा की प्रणाली अक्षुण्ण रहे साथ ही साथ प० पू० श्री 108 आचार्यरत्न बाहुबली मुनि महाराजजी के संघ के निमित्त से खूब-खूब अच्छी तरह से धर्म प्रभावना हो तथा दीर्घायु हो इस शुभकामना के साथ प्रति नमोऽस्तु-3 तथा संघस्थ का त्रिभक्तिपूर्वक त्रिकाल त्रिवार नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु!

शान्ति! शान्ति!! शान्ति!!!

मंगल शुभाशीर्वाद

आचार्य अभिनन्दन सागर जी महाराज
षष्टम् पट्टाचार्य
(आचार्य शान्तिसागर जी महाराज परम्परा)

यह जानकर हर्ष हुआ कि परम पू. आचार्य श्री बाहुबली सागर जी महाराज का 'जय जैनाचार्य' ग्रन्थ प्रकाशित होने जा रहा है। प्रकाशन समिति तथा प्रकाशकों को मेरा मंगल आशीर्वाद।

पू. आचार्य श्री बाहुबली सागर जी महाराज आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज की तरह धर्म प्रचार पूरे भारत वर्ष में कर रहे हैं तथा आगे भी करते रहें यही मंगल कामना है।

मेरी भी मंगल कामना

समाज के पुण्योदय से ही निर्ग्रंथ जैनाचार्यो के दर्शन होते हैं, वैय्यावृत्ति व सेवा का पुण्य लाभ होता है। इस साल भारत की राजधानी दिल्ली वालों का महान पुण्योदय है कि एक महान 'आचार्यरत्न' की सेवा का पुण्य लाभ मिल रहा है। चातुर्मास कराने का मौका मिल रहा है, साधु सन्तों की सेवा का मौका पूर्वभव के विशेष पुण्योदय से मिलता है।

आचार्यरत्न बाहुबली जी महाराज एक विशेष साधुरत्न है।

एक अच्छे तपस्वी व साधक हैं, बाल ब्रम्हचारी है। आचार्यरत्न देशभूषण जी महाराज के प्रमुख शिष्यों में से एक है। आपका बहुत बड़ा संघ है। अनेक भव्य जीवों को शिक्षा-दीक्षा देकर मोक्षमार्ग पर लगाया है व लगा रहे है। आपके द्वारा जिनशासन की बहुत ही प्रभावना हो रही है। आचार्य देशभूषण जी महाराज ने आपको अपना पट्टधर बनाने के लिए ही बालाचार्य पद पर स्थापित किया। आचार्य देशभूषणजी की समाधि के बाद आप आचार्यरत्न बने। आपका बहुत अच्छा प्रभाव है। अगर आचार्यरत्न देशभूषणजी महाराज की परंपरा सुरक्षित रह सकती है, तो आपके समान परम शिष्यों से ही रह सकती हैं। आप एक योग्य शिष्य है, अच्छे ज्ञानी है, अच्छे प्रवक्ता है। आपके श्रावकों में अनेक प्रमुख शिष्य वर्ग है, जो सतत तन-मन-धन से चतुर्विध संघ की सेवा करते हैं। वर्तमान में सांगली-इचलकरंजी के पास धर्मनगर नामक क्षेत्र का निर्माण, तथा भोज में भी शांतिसागर स्मारक क्षेत्र निर्माण किया। श्रावकों द्वारा धन कमाया हुआ तीर्थ निर्माण कर सद् उपयोग कराते है। आपका अच्छा प्रभाव है। इस प्रकार एक आदर्श तपस्वी के लिए 'जय जैनाचार्य' नामक ग्रंथ प्रकाशित कर रहे है, यह एक बहुत अच्छा कार्य है, अवश्य करों, गुरूओं का जितना भी गुण गाया जाय उतना ही पुण्य वर्द्धन का कार्य है। इस कार्य के लिए मेरी मंगल कामना है। इस कार्य में जिन जिन भक्तों का योगदान है उन सब को मेरा आर्शीवाद है।

आचार्यरत्न बाहुबलीजी महाराज दीर्घायु हो, ऐसी मेरी मंगल शुभ कामना है।

अंत में आचार्यरत्न बाहुबली महाराजजी को मेरा प्रति नमोऽस्तु!

गणाधिपति गणधराचार्य
कुन्थुसागर

धर्मदीप आचार्य श्री

प.पू. प्रातः स्मरणीय आचार्यरत्न श्री 108 बाहुबली महाराज जी के पावन चरण कमलों में सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्ति पूर्वक त्रियोग शुद्धि से शतशः

नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!

पू. आचार्य श्री बाहुबली महाराज जी व मेरा लगभग 25 वर्ष का सम्पर्क है। जब आचार्य श्री बाहुबली महाराज देशभूषण महाराज के संघ में थे तब मैं भी संघ में था। आचार्य श्री अत्यन्त सरल स्वभावी, वात्सल्यमूर्ति, परम शान्त साधुराज हैं। संघ में आप सबके चहेते थे। आचार्य देशभूषण महाराज जी के तो आप लाडले शिष्य थे। गुरुदेव की आपने मन से सेवा की। गुरु की बात का कभी उल्लंघन नहीं किया गुरु सेवा, विनय और आज्ञा का प्रतिफल ही आपको आचार्यपद से गुरुदेव ने भूषित कर दिया।

आचार्य देशभूषण महाराज जी के बाद आप ही मेरे गुरुदेव हैं। देशभूषण महाराज जी की प्रतिमूर्ति आपमें हम देखते हैं। अब आप ही मेरे सर्वस्व हो। मैं सरलमना आचार्य श्री के दीर्घ जीवन हेतु वीर प्रभु से प्रार्थना करता हूं तथा भावना करता हूं कि उनकी छत्र छाया चतुर्विध सघ को चिरकाल तक प्राप्त होती रहे।

गुरु श्रद्धेय पू. मुनि श्री 108 गुणभूषण जी
(आचार्यरत्न देशभूषण जी संघस्थ)

भवाब्धि तारक गुरुदेव!
तव पादौ मम हृदये

प.पू. उपाध्याय श्री 108 शांतिसिंधुजी

परमपूज्य सद्धर्म प्रवर्तक, बाल ब्रह्मचारी गुरुदेव आचार्यरत्न बाहुबली महाराज जी के चरणों में सिद्ध भक्ति, श्रुतभक्ति, आचार्य भक्ति पूर्वक त्रियोग शुद्धि सहित शतशः नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!

रत्नत्रय विशुद्धः सन पात्रस्नेही परार्थकृत।
परिपालितधर्मो हि भवाब्धेस्तारको गुरुः॥

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्ररूप रत्नत्रय से विशुद्ध होने वाले, पात्र जनों पर स्नेह रखने वाले, परोपकार करने वाले, धर्म की रक्षा करने वाले तथा संसार रूपी समुद्र से तारने वाले आप सूर्य के समान तेजस्वी, चन्द्रमा के समान शीतल, दैदीप्यमान, समुद्र के समान धीर-गम्भीर, सिंह के समान पराक्रमी, हित-मित मधुर भाषी और वात्सल्य की मूर्ति हो।

गुरु-शिष्य का सम्बन्ध आस्था और प्रेम का पवित्रतम सम्बन्ध है। गुरु शिष्य पर शासन नहीं चलाते किन्तु शिष्य स्वयं उनके अनुशासन में चलता है। कल्याणपथ पर अधिकारपूर्ण शासन नहीं, प्रेमपूर्ण अनुशासन ही कार्यकारी होता है।

गुरुदेव आप तो शान्तिदूत हो। क्योंकि आंखों में निःस्वार्थ प्रेम, मुख-मण्डल पर निश्चल मुस्कान, अन्तःकरण में अगाध अनुभव, हृदय में अपरिमित-करुणा, आचरण में निर्मलता, शिशु जैसी निर्विकार मुद्रा में ब्रह्मचर्य का दिव्य-तेज और जीवन में अहिंसा रूपी अमृत-रस का अस्तित्व ही आपको शांतिदूत प्रमाणित करता है।

आपने अपने शिष्यों को उच्चारण से नहीं उच्च आचरण से सुशोभित किया है। इसलिए तो आपके शिष्य समय को नष्ट न करते हुए पापों को नष्ट कर रहे हैं। आपने हमारे जीवन में संयम की सुवास उत्पन्न किये हो।

अतः हम जिनेन्द्र प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि आपका हित उपदेश पाकर हम सरीखे अबोध शिष्यों को जब तक शाश्वत अजरामर सुख प्राप्त न हो जाए, तब तक आपके चरण कमल हमारे हृदय में विराजमान रहें। आपकी कीर्ति-ध्वजा युग-युग तक फहराती रहे, आपको दीर्घायु लाभ हो, यह हम सब संघस्थ शिष्यों की ओर से भावना है।

प.पू. उपाध्याय श्री 108 शांतिसिंधुजी महाराज (संघस्थ)

जैन धर्म ही सनातन धर्म कैसे?

प० पू० आचार्यरत्न श्री देशभूषण महाराजजी के तथा प० पू० आचार्य श्री सुबलसागर जी के संघस्थ पर मुनि श्री वरदत्तसागर महाराज -

जैन धर्म किसी व्यक्ति विशेष के मस्तिष्क की उपज नहीं, यह वस्तु के प्राकृतिक मौलिक रूपरेखा को प्रस्तुत करने वाला वह सिद्धान्त है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन को सर्वांगीण विकास की ओर ले जाता है। जैन धर्म के सनातन होने में मूलकारण उसकी निर्दोष सैद्धान्तिक दृष्टि है। यथा-वस्तु का मौलिक स्वभाव कभी नष्ट नहीं होता है। जीव का स्वभाव चैतन्य है, अग्नि स्वभाव उष्णता है, जल का स्वभाव शीतल है। द्रव्य से इन गुणों का अत्यंत अभाव किसी भी परिस्थितियों में नहीं होता है। तथा जल का स्वभाव शीतल है। अतः उबलते हुए जल को भी अग्नि पर डाले तो वह शीतल स्वभावी होने के कारण अग्नि को बुझाता है, जलाता नहीं। पर संयोग से युक्त गुणों के विकार संभव है। पर गुणी से गुण का अभाव नहीं होता है। यह दृष्टि भी जैन धर्म को सनातन सिद्ध करती है।

प्रत्येक भव प्राणी में अपनी आत्मा को परमात्मा बनाने की शक्ति मौजूद है। जैसे- मिट्टी योग्य प्रक्रिया से घड़े का रूप धारण कर लेती है, उसी प्रकार योग्य पुरुषार्थ से भव्य पुरूष अपनी आत्मा को परमात्मा, पतित से पावन, कंकर से शंकर, अभिशाप से वरदान बना सकता है, इस सर्वोत्तम तथ्य को रखने के कारण भी जैन ज्योतिर्मय प्रकाश पुन्ज की भाँति अनादिकाल से जीवों का मार्गदर्शन करने में सक्षम रहा है तथा सनातन धर्म कहलाने का अधिकारी भी है।

जैन धर्म के सनातन होने का एक कारण यह भी है कि यह धर्म किसी व्यक्ति विशेष या घटना विशेष से संबंधित न होकर जब जीवों से संबंधित है। यह जैन धर्म सार्वभौमिक, सार्वकालिक, त्रैकालिक सत्य है। सार्वभौमिक उसे कहते हैं जो हर प्राणी के लिये उपयोगी, हितकर, सुखकर और दुःख उन्मूलक हो। जैन धर्म के अनुसार प्रतिपादित जो भी नीतियां हैं, धर्म भावनाएं हैं, सिद्धान्त हैं सब विलक्षण और परम हितकारी हैं। यथा-जैन धर्म में धर्म का स्वरूप-"उत्तम खमादि दसविहोधम्मो-वत्थुसहावो धम्मो" उत्तम क्षमादि गुणों की परिपालना वस्तु का स्वभाव ही उसका धर्म है। उत्तम क्षमा आदि आत्मिक गुण है, उनको प्रगट करने का प्रयास करना धर्माचरण है।

क्षमा से आत्मा की शुद्धि होती है। क्षमा शक्ति की जननी है। क्रोध दुःख का मूल है, इस तथ्य को हर देश, हर क्षेत्र और हर काल के जीव स्वीकार करते हैं। क्रोध से अशान्ति और कलह बढ़ता है, क्षमा से शान्ति मिलती है, इस सत्य को कौन स्वीकार नहीं करेगा। इस प्रकार भूत भविष्य और वर्तमान तीनों कालों में क्षमादि गुणों की उपयोगिता सिद्ध होने यह सार्वभौमिक और त्रैकालिक है और निर्बाध रूप से सनातन धर्म के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित होता है। ऐसे सार्वभौमिक सत्य को प्रस्तुत करने के कारण जैन धर्म सनातन धर्म सिद्ध होता है।

स्याद्वाद और अनेकान्तवाद जैन धर्म की आधारशिला है। यह भी जैन धर्म को दीर्घजीवी बनये रखने में मुख्य कारण है। अनेकान्तवाद वह सिद्धान्त है जिसके अनुसार प्रत्येक वस्तु सामान्य विशेषात्मक है। सामान्य शब्द गुणों का सूचक है और विशेष शब्द पर्याय का बोधक है।

अन्वयिनो गुणाः व्यतिरेकिणः पर्यायाः।

चैतन्य शक्ति तथा ज्ञान दर्शनादि गुण है, तथा मनुष्य तिर्यंच देव नारकी आदि अवस्थाओं को पर्याय कहते है। चैतन्य तथा ज्ञान दर्शन आदि आत्मा के गुण है।

व्यातिरेक का अर्थ - ध्रौव्यपने को न छोड़ते हुए परिवर्तनशीलता का नाम व्यतिरेक है। यथा-मनुष्य अपनी आयु पूर्ण होने पर देव गति में गया। मनुष्य और देव दोनों भिन्न पर्याय है। जो मनुष्य है वह देव नहीं किन्तु दोनों अवस्थाओं में वही जीवात्मा मौजूद है अतः जीवत्व अपेक्षा मनुष्य और देव दोनों में एकत्व भी है। इस अकाटय अनुसंघनीय सत्य को प्रस्तुत करने के कारण भी जैन धर्म की समानता अक्षुण्ण रूप से जीवित मानता है और भविष्य में भी जीवित रहेगा।

बौद्ध वस्तु को सर्वथा क्षणिक मानता है ?। सांख्यवादी प्रत्येक वस्तु को कूटस्थ नित्य बताते है। नैयायिक और वैशेषिक भी वस्तु के अन्दर सामान्य और विशेष दोनों गुणों के एक साथ परस्पर सापेक्ष स्वीकार नहीं करते। अतः प्रत्यक्ष, अनुमान, युक्ति और तर्क की कसौटी पर उनकी सिद्धि नहीं हो पाती है। और असिद्ध होने के कारण उन्हें सनातन कहने में बाधा आती है। ब्रह्म तथा शिव के उपासक ब्रह्मा द्वैतवादी का सिद्धान्त भी युक्ति, तर्क तथा अनुमान से असिद्ध होने के कारण नहीं हो सकता है। जैन सिद्धान्त प्रत्यक्ष परोक्षदि, सभी प्रमाणों से अबाधित है अतः उसके अनुमान होने से कोई बाधा नहीं आती है।

जिससे अविनाशी स्थाई सुख की प्राप्ति होती है वहीं धर्म सनातन हो सकता है। क्षुधा, तृषा, जन्म, जरा मृत्यु. अरति, खेद, रोग, शोक आदि दोषों से जिसका जीवन घिरा है वह न तो स्वयं सुखी है और न दूसरों को सुखी कर सकता है उसे परमात्मा भी नहीं कह सकता है। उसकी उपासना ने उपासक के जीवन में स्थाई सुख की स्थापना असंभव है।

यदि हमें सनातन धर्म की खोज करनी है तो हम उनकी उपासन करें जिन्होनें अपनी साधना से तपस्या से कर्म कासिमा को दूर कर शुद्धत्मा स्वरूप को प्राप्त किया है, पूर्ण स्वतंत्र पा लिया है। पंच परमेष्ठी की आराधना से सनातन धर्म हमारे जीवन में प्रगट हो सकता है। जो इंद्रियों की दासता से जीव को मुक्त करता है वहीं धर्म सनातन है।

इच्छाओं और आकांक्षाओं को जागृत करने में मोहनीय कर्म का उदय निमित्त है। अरिहन्त और सिद्ध परमेष्ठी के क्षुछा वेदना नहीं होती, उनके मोहनीय और असाता कर्म की उदय का अभाव है। उन्हें औषधि रूप आहार की भी आवश्यकता नहीं, क्योंकि, रोग, आधि व्याधि का उनके अभाव होता है। अरहंत और सिद्ध के पसीना मल मूलादि अपवित्रता का उत्पादन न होने से सुगन्धित माला आदि की भी आवश्यकता होती है। उनके दर्शनावरण एवं मोहनीय कर्म का अभाव है। अतः मदु शय्यासन की भी आवश्यकता नहीं होती है। अरहंत और सिद्ध अवस्था में समस्त इच्छाओं का अभाव हो जाता है अतः इच्छा पूर्ति के लिये वाह्य सामग्रियों की आवश्यकता नहीं होती है। इन्द्रियों की दासता का अभाव हो जाने से वहां पूर्ण स्वातंत्र्य होता है। ऐसे पूर्ण स्वातंत्र्य की प्राप्ति जिससे हो वही धर्म सनातन कहलाने का अधिकारी है।

सभी आपत्तियों का निर्मूल नाशकर जीवन में सर्वोदय की स्थापना करने वाला तीर्थ-जिनधर्म ही है। अकृत्रिम चैत्यालयों में विराजमान जिनबिम्ब भी जैन धर्म की सनातनता को प्रगट करने में पूर्ण सक्षम है। अन्ततः उन पंक्तियों के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि मात्र जैन धर्म ही सनातन है। जैन धर्म को सनातन मानने में युक्ति, तर्क, अनुमानादि से प्रत्यक्ष परोक्षादि किसी प्रमाण से बाधा नहीं आती है। अन्यत्र अनेक बाधायें उपस्थित होती हैं।

वे पक्तियां हैं -

जीतो पांचों इन्द्रियां, जिनमें भरा विकार।
प्रिय से छोड़ो मोह फिर, त्याग यही क्रमवार॥
आकर है सुखरत्न का, सागर जैसा त्याग।
चिरसुख की यदि भावना, करो सदा अध त्याग॥
एक वस्तु की कामना, बनती बीज समान।
जन्म सफल जो जीव को, करती सतत दान॥ (कुरल काव्य की टीका)

जन्म सफल जो जीव को, करती सतत दान॥ (कुरल काव्य की टीका)

इस प्रकार जैन धर्म को ही सनातन धर्म के रूप में स्वीकार कर भव्य प्राणियों को आत्महित में लगना चाहिए।

ऐसे सनातन जैन धर्म की रक्षा आचार्यों के द्वारा ही होती है तथा जैन धर्म का प्रसार प्रचार करने वाले आचार्य ही होते हैं। इस बीसवीं शताब्दी प्रथम आचार्य दक्षिण भारत के कर्नाटक प्रान्त के बेलगांव जिले के भोज ग्राम के प्रथम आचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शांतिसागर महाराज जी हुए।

जिस प्रकार युग के आदि में भगवान ऋषभदेव हुए तो इस बीसवीं शताब्दी के आदि में आचार्य शांतिसागर जी हुए।

युग के आदि में धर्मसूर्य प्रकाशित हुआ और बीसवीं शताब्दी के आदि में चारित्रसूर्य प्रकाशित हुआ। आत्म विकास को प्रकाशित करने वाले ये दो ही सूर्य इस धरातल पर प्रकाशमान हुए।

चक्रवर्ती के यहां चक्ररत्न पैदा होने पर उसे दिग्विजय के लिये चलना आवश्यक था और वह चक्ररत्न आयुध शाला में उत्पन्न हुआ था परन्तु चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शांतिसागर जी के जीवन में रत्नत्रयरूपी चक्ररत्न उत्पन्न हुआ।

चक्रवर्ती षट्खण्डों का राज्य करता है और आचार्य शांतिसागर जी ने पांच इंद्रिय और मन इन षट खण्डों पर राज्य किया था।

चक्रवर्ती षटखण्डों में दिग्विजय के लिये प्रयाण किया परन्तु आचार्य श्री ने भारतवर्ष में ही धर्म की (दिग्विजय) विजय प्राप्त की।

चक्रवर्ती तो बारह होते हैं परन्तु चारित्र के चक्रवर्ती एक ही हुए वे हैं आचार्य शांतिसागर जी।

इन्हीं आचार्य श्री की परम्परा में बेलगांव जिले के अनेक आचार्य हुए उनमें से आचार्यरत्न देशभूषण महाराज जी एक ऐसे आचार्य हुए वास्तविक भारत देश के भूषण ही थे जैसा नाम वैसा ही काम। जिनवाणी की रक्षा के लिये सतत प्रयत्नशील थे। जिन्होंने अनेक ग्रन्थों का सरल भाषा में हिन्दी अनुवाद करके जन जन तक पहुंचाकर धर्म का प्रसार-प्रचार किया। अनेक तीर्थों की रक्षा की। उन्हीं के पथ-चिन्हों पर आचार्यश्री के पट्टशिष्य आचार्यश्री बाहुबली जी महाराज जैसे साधु धर्मप्रभावना कर रहे हैं तथा सर्वत्र आज भी अनेक आचार्य, मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक, क्षुल्लिकाएं उन्हीं की आज्ञानुसार धर्म का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

इसी प्रकार पंचम काल के अंत तक इसी प्रकार से धर्म की रक्षा, प्रचार-प्रसार चतुर्विध संघ के द्वारा ही होती रहेगी। इसलिये वे महान आचार्य हम सब के लिये अत्यन्त हितकारी पूजनीय-आदरणीय हैं।

अगर कली नहीं होती तो फूल नहीं होते।
अगर पाप क्रियाएं नहीं होती तो मंदिर नहीं होते।
गुरुदेव सच्चे भक्तों सुन लो,
अगर आचार्य शांतिसागर नहीं होते तो यह मुनियों का हरा भरा बगिया नहीं होता।

अनगार दीक्षा गुरु

प.पू. चारित्र चूड़ामणि, आचार्यरत्न श्री 108 बाहुबली जी महाराज के चरण कमलों में सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्ति पूर्वक त्रिवार नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!

आचार्यश्री के चरण सान्निध्य में ही मुझे अनगार दीक्षा प्राप्त करने का पुण्य अवसर प्राप्त हुआ। गुरुदेव के सान्निध्य में रहकर मैंने इनके आदर्शमय जीवन से बहुत कुछ प्राप्त करने का प्रयत्न किया है।

आचार्यश्री परमशांत, निस्पृही, लौकिक आडम्बरों से सर्वथा दूर, आगमानुसार मुनिचर्या में निरन्तर प्रवृत्त हैं, राजा व रंक सभी में सम दृष्टि एवं निर्लेपवृत्ति रखने वाले इतने विशाल संघ का संचालन करते हुए कभी भी आप में आकुलता नहीं दिखाई दी। निर्भयता एवं आगम रक्षा की भावना आपके जीवन में कूट-कूट कर भरी हुई है।

मैं इन परमोपकारी गुरुवर्य के चरणों में त्रिधा-त्रिकाल श्रद्धा भक्ति से शत-शत नमोऽस्तु करते हुए आपके आशीर्वाद की कामना करता हूं तथा वीर प्रभु के चरणों में भावना भाता हूं कि गुरुवर्य दीर्घजीवी होवें तथा आपका आशीर्वाद हमें सदा प्राप्त होता रहे।

प.पू. प्रवचन परमेष्ठि श्री 108 अर्हदबली जी
(संघस्थ)

क्षुल्लिका राजमति माताजी

कुशल आचार्य

स्वभाव न बनता है न बिगड़ता है, वह तो प्रवाह रूप में चला जाता है। सरिता का जल प्रवाहित रहता ही है, हां मार्ग अवश्य बदलता रहता है। जल है तो बहेगा ही। इसी प्रकार परम्पराएं चलती रहती हैं। पर निमित्तक पदार्थों-क्रियाओं में उत्थान पतन विकास-अविकास होते हैं। नाम भी बदल जाते हैं। पर चलते अवश्य हैं। महाराष्ट्र में जन्म लिया तथा आचार्यरत्न देशभूषण जी महाराज का सान्निध्य मिला तथा आज उन्हीं के पदचिन्हों पर चल कर गुरु का नाम रोशन कर रहे हैं। मैं पू. आचार्य बाहुबली जी महाराज को लगभग 40 वर्ष पूर्व श्रावक ब्रह्मचारी अवस्था से जानती हूं। वे संघ में रहकर धर्मसाधना करते करते आगे बढ़े तथा क्रमशः क्षुल्लक, मुनि, बालाचार्य पद को प्राप्त करते हुए आचार्यपद पर सुशोभित हैं।

आपका मृदु स्वभाव जन मानुष को अपनी ओर आकर्षित करता है। आप अपने संघ का कुशलता पूर्वक संचालन कर रहे हैं। आप गुरु के समान पद प्रतिष्ठा प्राप्त करें यह हमारी भावना है। आपके चरणों में सिद्ध, श्रुत, आचार्यभक्ति पूर्वक नमोऽस्तु करती हूं।

क्षुल्लिका राजमति माताजी
(प. पू. आचार्यरत्न देशभूषणजी संघस्थ)
गुलाब वाटिका, लोनी रोड, दिल्ली

संस्मरण

असीम वात्सल्य के धनी पू. आचार्यश्री

असीम वात्सल्य का खजाना बिखेरने वाले परमपूज्य आचार्यरत्न बाहुबलीजी महाराज सम्पूर्ण विश्व भर में विख्यात एक विशाल संघ के रूप में उभरे। जैसा कि इन श्रमणराज का नाम है वैसी ही छवि मैंने उनकी साधना और तप को अपने अंतः चक्षु से स्वयं देखा। जनवरी माह वर्ष 2000 से चर्चा का विषय था कि आचार्यरत्न श्री बाहुबली महाराज का विशाल संघ कोल्हापुर से तीर्थराज सम्मेद शिखर जी की ओर रवाना हो रहा है, उस समय में मैं सिवनी से 72 कि.मी. दूर धनौरा ग्राम में था। जैसे ही मैंने धनौरा में सुना कि संघ मुक्तागिरी से निकलकर नागपुर तक आ गया है तभी से मेरे मन में उथल-पुथल होने लगी थी कि कब ऐसे दिगम्बर श्रमणराज के दर्शन प्राप्त होगें और दर्शन कर मैं अपने आपको धन्य मानूंगा।

एक दिन जैसे ही दैनिक संवाद कुंज नाम का दैनिक अखबार देखा तो उसमें लिखा था कि रविवार 13/2/2000 को आचार्यरत्न बाहुबलीजी महाराज का नागपुर नाका से नगर प्रवेश होना है। जैसे ही मैंने आहार चर्या के पहले अखबार देखा तो मैं बैचेन हो गया। मैंने लोगों से कहा कि मैं आहार के उपरान्त तुरन्त सिवनी रवाना हो जाऊँगा। श्रावकों ने कहा कि महाराजजी सामायिक के बाद बिहार ठीक रहेगा। तब मैंने भी हां बोलकर सामायिक के बाद जाने की स्वीकृति दे दी। ठीक दोपहर के एक बजे मैनें सिवनी के लिए बिहार कर दिया।

भोमा से दो तीन कि.मी. निकलने के पश्चात् मेरे दाहिने पैर में मोंच आ गयी। तकलीफ के कारण पैर से चलते नहीं बन रहा था। मैं बार-बार यही सोचता था कि यह मेरे ही पाप का कर्म का उदय है जो गुरू दर्शन में इतनी सारी अड़चने आ रही है। और फिर सुनने में यह भी आया कि आचार्य महाराज का विहार कल हो जायेगा। किन्तु मेरा भी सकंल्प पक्का था कि मैं भी सिवनी जाकर ही सांस लूंगा।

करीब एक घंटे बाद एक जीप आई। वह जीप थी सिवनी की। जिसमें समाज के 15-20 नवयुवक थे उन्होंने चलने में सहायता की। 72 कि.मी. की यात्रा सिवनी में 14/2/2000 को सोमवार के दिन शाम 6.30 पर पूर्ण हुई। मैं सीधे आचार्य महाराज के दर्शन करने ऊपर धर्मशाला के हॉल में पहुंचा। तब किसी ने बताया कि आचार्य महाराजजी छत पर गए है। 2 मिनट प्रतीक्षा के बाद आखिर वह स्वर्णिम क्षण आ ही गया। जिसके लिये मैं इतनी कष्ट पद यात्रा करते धनौरा से सिवनी आया था। आचार्य महाराज नीचे आये और वहीं पास में लगे हुये तखत पर बैठ गये। तब मैंने तीन परिक्रमा पूर्वक आचार्य श्री की आचार्य वंदना की, तब तो मेरे शरीर का रोम-रोम पुलकित हो रहा था। तब मैं अपने पुण्य का बखान नहीं कर पा रहा था। वंदना करने के उपरांत जब मैंने आचार्यश्री के चरण छूकर नमोऽस्तु किया तब उन्होंने मुझे पिच्छी से तीन बार आशीर्वाद दिया। आचार्यश्री की चरण वन्दना के पश्चात मैंने उनसे भी रत्नत्रय व स्वास्थ्य के बारे में पूछा। तद् उपरान्त आचार्यश्री ने मुझसे भी रत्नत्रय व स्वास्थ्य के बारे में पूछा और फिर श्रावकों से मेरे रुकने सम्बंधी व्यवस्था करने को कही। उस समय मैंने एक साथ 28 साधू और साध्वियों के दर्शन करने का लाभ प्राप्त किया।

दूसरे दिन सामायिक के उपरांत मैं फिर से आचार्यश्री से कुछ शिक्षात्मक सूत्र पाने के लिए गया तब महाराजजी ने कुछ सूत्र दिये थे जो इस प्रकार थे -

1. जिन शासन की सदैव प्रभावना करते हुये अपने संयम का पालन करना।

2. अकेले रहने की अपेक्षा किसी एक को साथी बनाकर रखना।

3. आगम और अध्यात्म का सदैव पठन-पाठन करते हुये दूसरों को भी धर्ममार्ग पर लगाना।

शिक्षा देने के बाद करीब तीन बजे आचार्यश्री का उपदेश हुआ। उसमें उन्होंने बताया कि श्रावकों को प्रातःकाल उठकर अपने आराध्य देवता का मनन करना चाहिए जिससे उसका यह नरतन सफल हो। आचार्यश्री इस तरह उपदेश करके श्रावकों को समझा रहे थे जैसे एक पिता अपने इकलौते पुत्र को समझाता है।

प्रवचन के अंत में मैंने आचार्यश्री की तीन परिक्रमा पूर्वक चरण वंदना कर नमोऽस्तु की। करीब चार बजे समस्त आचार्य संघ का बिहार सिवनी से उत्तर दिशा की ओर हो गया। मैं आचार्यश्री को गुरूकुल तक विदाई देने गया। संघ के आगे-पीछे महाराज के साथ चल रही गाड़ियां 401, ट्रक, ट्रैक्स, कमांडर, मारूतिकार आदि 25 गाडियाँ 300 श्रावकों को लेकर चल रही थी। वात्सल्य का इतना असीम सागर एक तो मैंने आचार्यश्री विमलसागर जी महाराज के पास देखा था। दूसरा दृश्य मैंने आचार्य बाहुवली महाराज के पास देखा।

'इति शुभम् - पुनः दर्शन'

ऐलक विज्ञान सागर
सिवनी (म.प्र.)

दिन-सोमवार, दिनांक 24/4/2000

पू. श्री श्री श्री श्रुतयोगी स्वर्गीय श्री
जिनसेन भट्टारक पट्टाचार्य महास्वामी
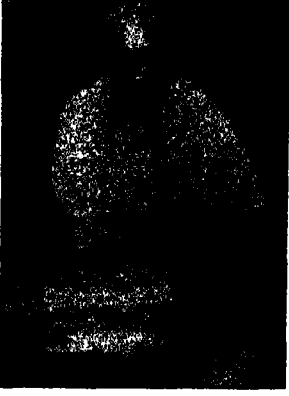
॥ श्री आदिनाथाय नमः ॥

प्रेरणा दायक मम् गुरुदेव

हे गुरु तेरे गुण गौरव की गाथा,
मैं पामर क्या लिख पाऊंगा।
जैसे चांद चमकता आकाश बीच,
मैं बौना क्या छू पाऊंगा॥

आचार्य परमेष्ठी पद को प्राप्त करके आप विशाल चतुर्विध संघ का नेतृत्व कर रहे हैं, अद्यतन मुनिवर्ग में प्रख्याततम आचार्य हैं। चा.च. आचार्य श्री शांतिसागर महाराज जी के पंचम पट्टाधीश हैं और भारत गौरव आचार्यरत्न देशभूषण महाराज जी के अग्रगण्य शिष्योत्तम हैं; आगम का गहन अध्ययन और चरणानुयोग प्रतिपादित चारित्र का दृढ़ता से पालन करना आपकी विशेषता है।

आपका एवं स्वर्गीय जिनसेन भट्टारक महास्वामी जी(पूर्व निवासी नांद्रे) का बहुत घनिष्ठ संबंध रहा। आप दोनों गुरु बंधु हैं। आचार्यरन्त देशभूषण महाराज जी के संघ में आप दोनों क्षुल्लक अवस्था में साथ में ही रहते थे। आपके गुरुदेव आचार्यरत्न देशभूषण जी ने सभी शिष्यों में से केवल आप में ही आचार्यत्व के गुणों को ज्ञात कर आपको ही आगमोक्त विधि के साथ सुमुहूर्त पर 26 जून 1980 के दिन स्वहस्त से कोथली क्षेत्र (कर्नाटक) में त्रिलोक विधान के बीच गणधर वलय विधान कर 'आचार्यरत्न' पद से भूषित कर दिया और क्षुल्लक श्री वासुपूज्य जी में मठ, जैन शासन को सम्हालने की क्षमता देखकर कोल्हापुर पिनगोंड़ी, जिनकंची आदि मठों के अधिपति श्री जिनसेन भट्टारक महास्वामी जी के पद से भूषित किया।

जब भी जहां भी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हो, विधि विधान हो या दीक्षादि कार्यक्रम हो, आप भट्टारक श्री जिनसेन महास्वामी जी को बुलाये बिना नहीं रहते।

तथा मेरा भी एक प्रकार से अहोभाग्य समझो, क्योंकि आपके उत्स्फूर्त प्रेरणा से एवं मेरे गुरुदेव स्वर्गीय श्रुतयोगी जिनसेन भट्टारक महास्वामी जी के धार्मिक शिक्षण से मैं प्रतिष्ठाचार्य के रूप में सबकी नजरों में आ रहा हूं। आप दोनों गुरुओं का मेरे ऊपर बहुत बड़ा उपकार है। मैं कभी उऋण नहीं हो सकूंगा।

आज जहां भी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हो या विधि विधान हो आप मेरी जरूर याद करते हैं, यही सबसे बड़ी बात है। गुरु के हृदय में स्थान पाना आसान नहीं है। मैं बड़ा भाग्यवान हूं, मुझे गुरुदेव के हृदय में स्थान मिला। मैं एक अज्ञ बौना मनुष्य हूं, पर मुझ बौने को आकाश के बीच चमकने वाले चांद को स्पर्श कराने में आप ही की प्रेरणा है।

पू. आचार्यश्री की जीवन गाथा प्रकाशित करने की स्वर्गीय भट्टारक जी की तीव्र तमन्ना थी, पर योग नहीं आया। अतः मैं उनकी ओर से ही गुरुदेव आचार्यश्री के चरण कमलों में सुमनांजलि अर्पित कर प्रार्थना करता हूं कि चिरकाल तक आपके हृदय में मुझ बौने को स्थान मिले और आपकी दीर्घकालीन छत्रछाया में श्रमण संघ, श्रमण परम्परा अक्षुण्ण रूप से चलती रहे।

इसी शुभ कामना के साथ आचार्यश्री के चरणों में शत शत नमोऽस्तु!

इति भद्रं भूयात्। वर्धतां जिनशासनम्॥

गुरुभक्त श्रीमान् भरत कुमार भू. उपाध्ये
प्रतिष्ठाचार्य-नांदणी

पू. श्री श्री श्री जगद्गुरु पट्टाचार्य लक्ष्मीसेन महास्वामी जी

मंगल कामना

प.पू. आचार्यरत्न श्री 108 बाहुबली जी मुनि महाराज जी की जीवन गाथा (चरित्र) प्रकाशित कर रहे हैं यह एक ऐतिहासिक कार्य है। आचार्यश्री ने स्वयं आत्मसाधना करते हुए धर्मप्रभावना की है ऐसे महान तपस्वी साधु का भारत की राजधानी दिल्ली जैसे ऐतिहासिक शहर में चातुर्मास हो रहा है। यह सबके लिए गौरव का विषय है। आचार्यश्री के चरणों में हमारा शत-शत वंदन है। सभी कार्य कर्ताओं को हमारा मंगल आशीर्वाद है।

इति भद्रं भूयात्। वर्धतां जिनशासनम्।

महास्वामी श्री लक्ष्मीसेन जैन मठ
शुक्रवार पेठ, कोल्हापुर

॥ श्री पार्श्वनाथाय नमः ॥

पू. श्री श्री श्री मज्जगद् गुरु देवेन्द्रकीर्ति भट्टारक

विनयांजलि

परम पूज्य आचार्यरत्न श्री बाहुबली महाराज के जीवन चरित्र ग्रन्थ का प्रकाशन होने का समाचार जानकर हमें अत्यन्त प्रसन्नता हुई। जो अत्यन्त समयोचित एवं श्रावक समाज को धर्म जागृति में विशेष उपयोगी सिद्ध होगा।

प्रातः स्मरणीय आचार्य कुंदकुद के बाद आर्ष मार्ग को यथारूप आगे बढ़ाने वाले अनेक दिग्गज आचार्यों में आचार्य श्री शान्तिसागर महाराज का नाम व योगदान इतिहास प्रसिद्ध है ही। ऐसे ही प्रभावशाली आर्ष मार्ग रक्षक आचार्यश्री देशभूषण महाराज के परम शिष्य आर्ष मार्ग प्रभावक आचार्यरत्न श्री बाहुबली महाराज द्वारा खास कर दक्षिण भारत में जैन धर्म प्रचार-प्रसार में विशेष मार्ग दर्शन प्राप्त हो रहा है। आचार्य श्री अपने संघ सहित कई बार श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर जी यात्रा कर चुके हैं। उनका विहार जहां भी होता है, वहां की जनता में विशेष रूप से धर्म जागृति होती है। उनके ही प्रेरणा से कोल्हापुर के पास 'धर्मनगर' नाम से एक नवीनतम तीर्थस्थान का भी निर्माण हो चुका है तथा आर्ष मार्ग रक्षक साहित्य का भी प्रकाशन हो रहा है।

भगवान श्री 1008 पार्श्वनाथ तथा जगन्माता श्री पद्मावती देवी के कृपानुग्रह से पूज्य आचार्यरत्न श्री बाहुबली महाराज का एवं संघ का रत्नत्रय बहुकाल तक सकुशल बना रहे। इस वर्ष उनका दिल्ली चातुर्मास विशेष धर्म प्रभावना पूर्वक सम्पन्न हो। इसी शुभ कामना के साथ 'आचार्यरत्न श्री बाहुबली महाराज का जीवन चरित्र' पुस्तक प्रकाशन करने वाले श्रावक समाज को हमारा शुभाशीर्वाद एवं शुभ संदेश।

इति भद्रं भूयात्। वर्धतां जिनशासनं।

परम पूज्य स्वस्ति श्री श्री श्री श्रीमज्जगद् गुरु देवेन्द्रकीर्ति भट्टारक
पट्टाचार्यवर्य महास्वामी जी। श्री होंबुज जैन मठ (कर्नाटक)

॥ श्री गोम्मटेश बाहुबली जिनदेवाय नमः ॥

पू. श्री श्री श्री कर्मयोगी चारूकीर्ति भट्टारक जी

जीवन समर्पित

श्रमण परम्परा के समर्थक तथा जिन्होंने अपनी पद यात्रा करते हुए इस भूमि को पावन किया है, तथा निर्ग्रंथ मार्ग को प्रशस्थ करने में जीवन समर्पित किया है। ऐसे परम पूज्य आचार्यरत्न बाहुबली जी की जीवन गाथा लिखने का प्रयास सफल हो यही प्रभु से प्रार्थना है। अन्त में परम पूज्य आचार्यरत्न बाहुबली जी महाराज के चरणों में त्रिवार नमोऽस्तु कहें।

इति भद्र भूयात। वर्धतां जिनशासनं।

भवदीय

प.पू. जगद्गुरु कर्मयोगी स्वस्तिश्री
चारूकीर्ति भट्टारक महास्वामी जी
श्रवणबेलगोला, जैन मठ (कर्नाटक)

SWASTI SRI BHANUKEERTHI
BHATTARAKA SWAMIJI
SRI DIGAMBARA JAINA MUTT
SRI KSHETHRA KAMBADAHALLY-571802

शुभ संदेश

'णमो आइरियाणं' पंच परमेष्ठियों मे आचार्यश्री का तीसरा स्थान (पद) है। वे अपने 36 गुणों का पालन करते हुए, संघ के सभी साधुओं को मोक्षमार्ग पर चलने का रास्ता दिखाते हैं। भव्य जीवों को दीक्षा देकर उनका उद्धार करते हैं केवल इतना ही नहीं किसी प्रकार प्रमादवश दोष लगे हों तो उन्हें प्रायश्चित आदि भी देते हैं। जो सदैव भव्यात्माओं को उपदेश देकर सन्मार्ग पर लाते हैं ऐसे आचार्य परमेष्ठी के चरणों में मेरा शत शत नमोऽस्तु!

वर्तमान में प्रातः स्मरणीय आचार्यरत्न श्री 108 शान्तिसागर महाराज जी (भोज) ने रुकी हुई मुनि परम्परा को पुनर्जन्म दिया। ये वर्तमान युग के प्रथम आचार्य है। इनके बाद श्री 108 पायसागर जी महाराज, श्री 108 जयकीर्ति जी महाराज और श्री 108 देशभूषण जी महाराज आचार्य हुए। इनके द्वारा भी बहुत धर्म प्रभावना हुई। आचार्य देशभूषण महाराज जी के अनेक शिष्य मुनि बने। इनमें से बाहुबली आचार्य भी एक हैं। ये आचार्य श्री देशभूषण महाराज जी के पट्ट शिष्य थे। इन्होंने छोटी उमर में ही आचार्यश्री से भरपूर ज्ञान पाया और उन्हीं से मुनि दीक्षा लेकर इनके उत्तरधिकारी बने। पू. आचार्यश्री स्वकल्याण के साथ परकल्याण भी कर रहे हैं। उत्तर से दक्षिण तक इनका ही बोलबाला है।

अपने गुरु के साथ उन्होंने अनेक क्षेत्रों की यात्रा कर संपूर्ण भारत विहार किया। इस वर्ष भी उन्होंने अपने विशाल संघ को ले सम्मेद शिखर यात्रा की। यात्रा करते करते लाखों भव्यात्माओं को उपदेश दे उन्हें मोक्षमार्ग में लगाया। जैनी तो क्या अजैनियों पर भी इनका विशेष प्रभाव पड़ता है।

इनकी शिष्या पू. आर्यिका श्रुतदेवी माताजी गुरुदेव का जीवन चरित्र लिखकर गुरु भक्ति को समर्पण करते हुए अपने जीवन को सफल मानते हुए गुरु ऋण चुका रही हैं। इस ग्रंथ में मुझे भी जो दो शब्द लिखने का मौका मिला। वह मेरा परम सौभाग्य है।

आचार्यश्री के चरणों में त्रिवार नमोऽस्तु करते हुए मैं यही शुभ भावना व्यक्त करता हूं, आप शतायु होकर हम जैसे अज्ञानियों को सदैव मोक्षमार्ग दिखाते रहें। हम स्वार्थी हैं। आप तो सारे जगत के पालन हारे हैं। जगत हितैषी गुरुदेव के चरणों में पुनः पुनः नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!

मेरे जीवन के निर्माता

ब्र. समीक्षा दीदी (संघस्थ)

प.पू. चारित्र चक्रवर्ती समाधि सम्राट आचार्य श्री शांतिसागर महाराज जी के चतुर्थ पट्टाधीश भारत गौरव आचार्यरत्न देशभूषण महाराज जी के पट्टशिष्य पंचम पट्टाधीश सद्धर्म प्रवर्तक, वात्सल्यमूर्ति, तपोनिधि, बाल ब्रह्मचारी प.पू. विद्यावारिधि आचार्यरत्न श्री बाहुबली जी महाराज के दर्शन करने का प्रथम सौभाग्य सन् 1986 जन्म स्थान सिवनी (म.प्र.) में मिला। पू. वीतरागी के चरणों में मेरा मस्तक बरबस झुक गया। परम शांत ऋषिराज का प्रथम दर्शन ही दृष्टि निर्मलता का कारण बना। उसी समय मुझे क्षत्र चूड़ामणि का श्लोक मन में स्मरण हो आया कि -

गुरुभक्ति सती मुक्त्यै, क्षुद्रा किं वा न साधयति।
त्रैलोक्यऽमूल्य रत्नेन, दुर्लभः किमु तुषोत्करः॥

अर्थात् गुरुभक्ति से जब मुक्ति प्राप्त होती है तो क्या उससे क्षुद्र पदार्थों की प्राप्ति नहीं हो सकती? जैसे अमूल्य रत्न से तीन लोक की सम्पत्ति प्राप्त होती है तो उससे धान्य का छिलका प्राप्त नहीं हो सकता? अवश्य ही प्राप्त हो सकता है। इन्हीं विचारों ने मन को प्रेरित किया कि अनादि काल से संसार के दुःखों से संतप्त मुझ छद्मस्था को इन गुरुदेव की भक्ति और इनके चरण सान्निध्य में ही संसार समुद्र से पार होने का मार्ग प्राप्त हो सकता है। अतः मैंने निर्णय किया कि अब इन परम गंभीर एवं शांत सरल परिणामी गुरुवर की सन्निधि में ही अपना जीवन सार्थक करना है। पू. आचार्यश्री का जीवन त्यागमय है। आचार्यश्री का वात्सल्य मुझे मिला। तथा संघ में आने का अवसर प्राप्त हुआ। पू. आचार्य श्री चतुर्विध विशाल संघ का बड़ी ही कुशलता पूर्वक संचालन कर रहे हैं। आचार्यश्री ने अब तक अनेकों जीवों का अणुव्रत - महाव्रत देकर कल्याण किया है और कर रहे हैं। उनमें से मैं भी एक अणुव्रती हूं। पू. आचार्यश्री के निकट रह करके मुझे आगे बढ़ने में आचार्यश्री रूपी महान जहाज का सहारा मिला है। आज गुरुदेव के चरण कमल नहीं मिलते तो ना जाने मैं कहां भटकती। एक जगह कविवर ने कहा है-

आचार्य मेरे प्यारे दे दो हमें सहारे,
इस टूटी जिंदगी के बस आप ही किनारे,
सूरज हो इस धराके हमको उजाला दे दो,
तुम ज्ञान के हो सागर भक्ति का प्याला दे दो,
दिल कह रहा है हमसे, महावीर हो हमारे। आचार्य मेरे प्यारे ....
चरणों की धूल से ही हर भाग जगमगाया
जो पास तेरे आया चंदन उसे बनाया
अब जिंदगी हमारी, है हाथ में तुम्हारे। आचार्य मेरे प्यारे ....

बंधुओं गुरु की भक्ति सम्यक्त्व है, गुरु के उपदेश से प्रगट हुआ ज्ञान सम्यग्ज्ञान है और उनका चारित्र सम्यक् चारित्र है, जिनके बिना कभी निर्वाण नहीं हो सकता। पू. गुरुदेव आचार्यश्री सचमुच वाक्‌सिद्धि के धनी हैं। वे सहज ही जो बोलते हैं, वह हो ही जाता है। मैं आपको अपना प्रत्यक्ष अनुभव बता रही हूं - एक बार माताजी केशलोंच करने वाली थीं, उनकी तबियत खराब थी कमजोरी आ गई थी, गर्मी के दिन थे। उपवास सहन होते नहीं थे अतः उन्होंने आचार्यश्री से कहा-'गुरुदेव!' मैं केशलोंच रविवार के दिन करना चाह रही हूं, केशलोंच अच्छे से हो और उपवास आकुलता रहित हो, यही आशीष तव चरणों में मांग रही हूं।' आचार्यश्री सहज ही बोल पड़े-'तुम जब केशलोंच करोगी, तब बारिस हो जायेगी। केशलोंच, उपवास निराकुल रूप से हो जायेगा। विकल्प मत करो।

रविवार का दिन अभी दूर था, चार पांच दिन के बाद रविवार आ गया। उस दिन प्रातः केशलोंच हो गया। दोपहर के 12 बजे तक निरभ्र आकाश था और क्या आश्चर्य-अचानक इतनी बारिस हुई कि जिसकी सीमा नहीं, दो घंटे पानी बरसा और मौसम बदल गया। उसी समय माताजी को याद आ गया-'हां, मेरे तारणहार गुरुदेव ने मुझे बताया था-तुम जिस दिन केशलोंच करोगी उस दिन बारिस होगी। यह केवल एक ही उदाहरण नहीं, ऐसे बहुत सारे उदाहरण हैं।

वाक्‌सिद्धि के धनी, महोपकारी संत के पावन चरणों में उनके दिव्य जीवन की कामना करते हुए वीर प्रभु से प्रार्थना करती हूं कि आचार्य श्री शतायु होकर मेरे जीवन का मार्ग प्रशस्त करते रहें। अंत में मेरे जीवन के निर्माता प.पू. गुरुदेव आचार्यरत्न बाहुबली महाराज जी के चरणों में श्रद्धाभक्ति पूर्वक, सिद्ध, श्रुत, आचार्यभक्ति पूर्वक त्रिकाल नमोऽस्तु-3 करती हूं।

मंगल कामना

MESSAGE

Dear Sri D.B. Kalmani

I am happy to note that you will publish a Souvenir on the occasion of "Chaturmasya" of H.H. Pujya Acharya Ratna Bahubali Muni Maharaj at New Delhi. Hope the book will be enlightening highlighting his achievements.

I wish the publication of the book all success.

Thanking you,

(D. VEERENDRA HEGGADE)
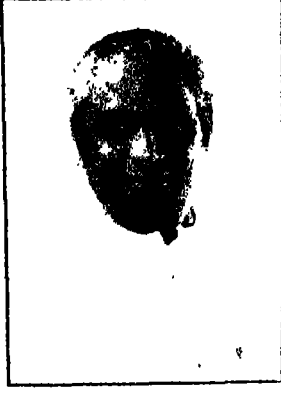
कल्लाप्पा आवाडे
माजी संसद सदस्य
(लोक सभा)
38, गुरुद्वारा रकाबगंज रोड,
नई दिल्ली-110001
दूरभाष : 011-3737816

शुभ संदेश

श्री 108 आचार्यरत्न बाहुबली मुनि महाराज का व्यक्तित्व अनेक गुणों से मण्डित है। आप परमित भाषी तथा रत्नत्रय विभूषित हैं। आपने अपने प्रवचन द्वारा साधक एवं सामान्य लोगों के जीवन का कल्याण किया है। गृहस्थाश्रम में रहकर लोग अपने जीन में सुख, शांति तथा निरामय आनन्द की प्राप्ति कर सकते हैं यह बात उन्होंने उपदेशामृत से लोगों तक पहुंचायी है। संस्कार से जीवन का उत्थान करने के लिए आचार्यश्री के जीवन का आदर्श अपनाना जरूरी है। इसलिए मुनिश्री महाराज का जीवन ग्रंथ 'जय जैनाचार्य' प्रकाशित हो रहा है यह बहुत ही आनन्द की बात है। यह ग्रंथ केवल साधकों को ही नहीं सभी लोगों के लिए मार्गदर्शक बनेगा। इसमें कोई संदेह नहीं।

इस अवसर पर मेरी शुभ कामनाएं!

श्रीमान् कल्लाप्पा आवाडे
इचलकरंजी
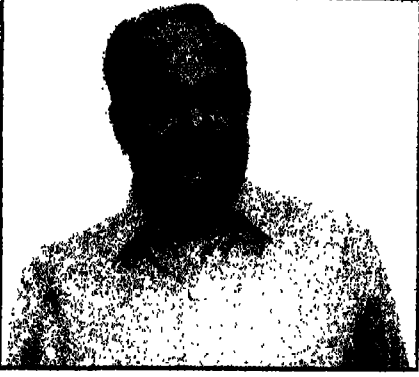
राज्यमंत्री
वस्त्रोद्योग, आदिवासी विकास
आणि
विशेष सहाय्य
महाराष्ट्र शासन
मंत्रालय, मुम्बई-400032

शुभ संदेश

प.पू. आचार्यरत्न श्री 108 बाहुबली मुनि महाराज की 'जय जैनाचार्य' जीवन गाथा प्रकाशित हो रही है। इस बात का मुझे संतोष है।

आचार्यश्री मुनि महाराज का मंगलमय जीवन वात्सल्य, धर्मप्रेम, प्रगाढ़ करुणाभाव और अदम्य क्षमता से भरा हुआ है। अनेक लोग इनके सान्निध्य का सौभाग्य प्राप्त कर अपना जीवन निहाल कर चुके हैं। लोगों को आपने सदुपदेश देकर उनके जीवन का उद्धार किया है।

आपके जीवन ग्रंथ की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभ कामनाएं।

भवदीय,

श्रीमान् प्रकाश आवाडे
इचलकरंजी
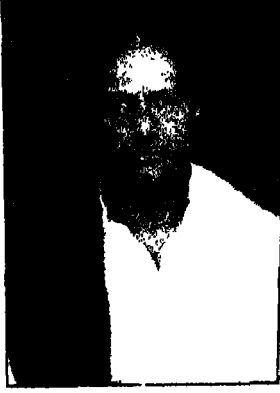
EX. MINISTER OF STATE
(INDEPENDENT CHARGE)
FOR RURAL DEVELOPMENT
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI-110001

MESSAGE

I am very glad to know that the book depicting the life story of Param Poojya Acharyaratna Shri 108 Bahubali Muni Maharaj is being published.

With the advent of Science and Technology, when the whole world is becoming Crazy of Material happiness and becomming restless, Man has lost all his mental peace and forgotten his inner strength to come out this miserable life. Dharma is slowly getting polluted and Man is not able to make any difference between Virtue and Vice.

To liberate from agony and mental slavery Swamiji is embracing all who come in his vicinity and showing the path of eternal happiness.

I am fortunate to have Darshan of Swamiji and listen to his preachings and I wish others also to get blessings by Swamiji.

BABAGOUND PATIL

मंगल भावना

प.पू. वात्सल्य रत्नाकर सद्धर्म प्रवर्तक आचार्यरत्न श्री बाहुबली मुनिराज के पवित्र चरणों में कुसुमांजलि को समर्पण करते हुए मुझे अमित आनन्द हो रहा है।

आप में अनेकों विशिष्ट गुण हैं जिनके कारण आप जगत्पूज्य हैं। आपके मधुर धर्मोपदेश से कितने ही लोगों का जीवन सुधर गया। प्रत्येक गांव-गांव का मिथ्यातम दूर हो गया। सम्यक् ज्योति प्रत्येक गांव गांव में, घर घर में प्रज्जवलित हो गई।

आपने अनेकों प्रान्तों में विहार करके जैन-जैनेतर लोगों में भी जैन धर्म का प्रभाव डाला। प्रवर्तमान भगवान महावीर स्वामी की 25वीं शताब्दी के महोत्सव में आप अपने गुरुदेव आचार्यरत्न देशभूषण जी के साथ थे।

आपने धर्मनगर जैसे अनेक स्थान को जंगल में मंगल बनाया। आपका दर्शन मुझे हमेशा मिलता रहता है। मैं श्री जिनेन्द्र भगवान से आपके स्वास्थ्य, दीर्घायुष्य एवं रत्नत्रय की कुशलता हेतु प्रार्थना करती हूं एवं कामना करती हूं कि वे चिरकाल तक अपने अमृतोपम प्रवचनों से समाज व राष्ट्र का निरंतर हित करते रहें।

पू. गुरुदेव आचार्यश्री के चरणों में हमारा एवं हमारे परिवार की ओर से बारम्बार नमोऽस्तु।

भवदीय

श्रीमती सरोजनी बाबासाहेब खंजीरे

माजी अमदार

इचलकरंजी, जिला-कोल्हापुर

MESSAGE

Dear Sri D.B. Kalmani

I am happy to note that you are publishing a book on the life and achievement of H.H. Acharyaratna Bahubali Muni Maharaj during his Chaturmasya at New Delhi.

Hope it will highlight his preachings and will be resourceful.

I wish your venture all success.

Thanking you,

MATASHRI RATHNAMMA HEGGADE

MESSAGE

The Very presence of His Holiness Param Poojya Shri Acaharya Ratna Bahubali Muni Majaraj to Belgaum from time to time gave me an occasion to have his blessings. By his blessings myself and all my family members, have been moving in the right path and enjoying health. wealth and happiness.

Poojya Shri Acaharya Ratna Bahubali Muni Maharaj is observing coming chaturmas in Delhi which would give the great opportunity to the citizens of Delhi to remodel their future by his blessings.

Let Delhi and people around have his blessings during his stay their.

D.N. ANKLE
Belgaum

MESSAGE

Religion is the basic need of every man. Particularly Jainism is the light of the whole world and the preachings of the principles of Jainism by holy people like Param Poojya Shri Acaharya Ratna Bahubali Muni Maharaj have kept alive the preaching of our Terrthankaras even during these days of scientific, Technical and Political revolutions.

Even the western countries are learning lessons from Jainism and Param Poojya Shri Acaharya Ratna Bahubali Muni Maharaj is one such light of the religion spreading rays throughout the world.

The observance of Chaturmas by his holiness at Delhi the capital city of India will spread more and more light of Jainism throughout the world. I am very much pleased to know that the book depicting the life history of Param Poojya Shri Acaharya Ratna Bahubali Muni Maharaj.

B.B. TURMANDI
Belgaum

Belgaum-590 002

MESSAGE

It gives me a great pleasure to know about the publishing of a book on life history, in honour of his holiness. Param Poojya Shri Acaharya Ratna Bahubali Muni Maharaj during the coming chaturmas in Delhi.

His holiness Param Poojya Shri Acaharya Ratna Bahubali Muni Maharaj is the founder of 'Dharma Nagar' which has turned to be a religious kshetra and is showing the path of Jainism and its meritorious principles to the people in the South India. As a member of Deshabhushan Digambar Jain Trust, Kothali-Kuppanwadi, I had the occasion to be associated with preaching of his holiness Param Poojya Shri Acaharya Ratna Bahubali Muni Maharaj which has caused many changes in my life.

I along with my family members pray the days of coming chaturmas shall be the events of blessings to all the people of Delhi and around.

D.B. Kalmani,
Belgaum

MESSAGE

I am very much pleased to know that a book of life history is coming up on the eve of ensuing chaturmas being observed by his holiness Param Poojya Shri Acaharya Ratna Bahubali Muni Maharaj in the capital city Delhi.

His holiness is the light of Jainism and has elevated the religious life of Belgaum citizens in the general and in Jains, in particular, during his Chaturmas observed in Belgaum three times.

I pray almighty Jinendra to infuse in his Holiness strength to spread more light to show the right path to the people of Delhi.

A.L. KALMNI
बेलगांव (कर्नाटक)

दक्षिण भारत जैन सभा
37, महावीर नगर, सांगली-416416

राष्ट्रवादी काँग्रेस पक्ष
प्लाट नं. 5, पार्वती सहकारी गृह निर्माण
संस्था लि. यड्राव, जयसिंगपुर
कोल्हापूर (महा.)

संदेश

स्वस्तिश्री बाल ब्रह्मचारी, सद्धर्म प्रवर्तक आचार्यरत्न श्री 108 बाहुबली गुरूदेवकों बार बार नमस्कार करता हूँ।

यह खुशी की बात है कि, आचार्यरत्न श्री बाहुबलीजी महाराज के जीवन चरित्र पर आधारित "जय जैनाचार्य" पुस्तक प्रकाशित होने जा रही है। मैं इस पुस्तक की सफलता के लिए अपनी शुभ कामनायें भेजता हूँ।

आपके गुणों का वर्णन करना सूर्य के सामने दीपक दिखाना है। आपके व्दारा लाखों जैनों व अजैनों का सच्चा कल्याण हुआ है। अगणित लोगों को आपने संयम, सदाचार तथा त्याग के मार्ग में लगाया है।

मैंने देखा है कि, अपार जन समुदाय आचार्य श्री के जीवन और उपदेश से आलोकित होता रहा है। मेरे पास इतने शब्द नही है कि मैं गुरूदेव के प्रति यथार्थ में अपनी कृतज्ञता को व्यक्त कर सकूं।

परमात्मा से प्रार्थना है कि ये महामानव महर्षि साधुराज चिरकाल तक जीवित रहें और उनकी कृपा तथा दया दृष्टी हम पर सदा बनी रहे।

"जय जैनाचार्य" पुस्तक के माध्यम से, आचार्यरत्न बाहुबली महाराजजी के विचार महाजीवों तक पहुंच जाऐंगे ऐसी उम्मीद रखता हूँ।

शामराव पाटील
यड्रावकर

संदेश

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि परम तपस्वी, वात्सल्य रत्न, परम पूज्य आचार्यश्री 108 बाहुबली जी महाराज के जीवन परिचय पर आधारित 'जय जैनाचार्य' ग्रंथ संघस्थ माताजी द्वारा तैयार करके प्रकाशित कराया जा रहा है।

आपने गुरु महान् तपस्वी परम पूज्य आचार्यश्री 108 देशभूषण जी महाराज के पद चिन्हों पर चलते हुए आपने अनेक तीर्थों के जीर्णोद्धार के लिये लोगों को प्रेरित किया तथा अनेक लोगों को मोक्षमार्ग की ओर प्रेरित किया। आप बहुत ही सरल परिणामी हैं। सज्जातित्व में विश्वास रखते हैं तथा आर्ष परम्परा की रक्षा में कटिबद्ध हैं।

आशा है कि समस्त जैन समाज ऐसे महान तपस्वी आचार्यश्री का जीवन परिचय पढ़कर उससे प्रेरणा लेकर धर्म मार्ग पर अग्रसर होगी।

निर्मल कुमार सेठी
अध्यक्ष
(श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा)

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि पूज्य आचार्य श्री के जीवन दर्शन पर एक विशाल ग्रंथ "जय जैनाचार्य" प्रकाशित होने जा रहा है। मैने आचार्य श्री के दर्शन किये उनके जीवन चरित्र से मैं बहुत ही प्रभावित हुआ।

मेरी आचार्य श्री जी को दीर्घायु हेतु शुभ कामनायें।

नेता
कांग्रेस (इ) दल एवं विपक्ष के नेता
दिल्ली नगर निगम

आपका
राम बाबू शर्मा

प्रणमांजलि

परम पूज्य प्रातः स्मरणीय तपोनिधि आचार्यश्री 108 बाहुबली सागर जी महाराज वर्तमान युग के प्रमुख आचार्य हैं। वात्सल्य मूर्ति आचार्य श्री राष्ट्रसंत गुरुदेव आचार्यश्री 108 देशभूषण जी महाराज के परम शिष्य हैं। कर्नाटक राज्य में श्रीक्षेत्र कोथली एवम् शांतिगिरी गुरुदेव आचार्यश्री देशभूषण जी महाराज की कल्पना, मार्ग निर्देशन व आशीर्वाद तथा पूज्य आचार्यश्री बाहुबली सागर जी महाराज के कठिन परिश्रम का ही सुफल है।

मैं देवाधिदेव 1008 श्री जिनेन्द्र भगवान से प्रार्थना करता हूं कि आचार्यश्री चिरायु हों तथा आचार्यश्री व उनका संघ समस्त भारत में मंगल विहार करता हुआ प्राणीमात्र का कल्याण करता रहे।

आचार्यश्री के पावन श्री चरणों में मैं दक्षिण भारत जैन सभा, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, महाराष्ट्र, मेरे समस्त परिवार एवं मेरी ओर से शत् शत् वन्दन करता हूं।

आर. के. जैन
अध्यक्ष
दक्षिण भारत जैन-सभा

आदर्श सन्त

परमपूज्य आचार्यरत्न श्री 108 बाहुबली महाराज जी के चरण कमलों में त्रिवार नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु।

आपके मुनिसंघस्थ आर्यिका श्रुतदेवी माताजी ने आपके जीवन-दर्शन पर ग्रंथ निर्माण करने का निश्चय कर लिया है। यह आनन्ददायी खबर सुनकर मैं हर्षोल्लासित हुआ।

आपका इस साल का चातुर्मास दिल्ली के लाल मंदिर में होने वाला है। यह सुनकर मन और भी प्रसन्न हुआ। आपके मुनि त्यागी गणों का ध्यान धारना निश्चित रूप से यशस्वी होगी। इसमें शंका की कोई गुंजाइश नहीं। आपका मुनिधर्म और रत्नत्रयपूर्ण तपश्चर्या से समाज में धर्म प्रभावना निश्चित होगी।

इस जीवन दर्शन ग्रंथ के माध्यम से भी धर्मोपदेश तथा धर्मप्रभावना की शिक्षा एक आदर्श जीवन ग्रंथ बनेगी। मैं आशा करता हूं कि इस ग्रंथ के रूप में मुनि संघ के जिनशासन संबंधी एक संग्राह्य ग्रंथ बने।

फिर एक बार पूज्य महाराज जी और संघ के अन्य त्यागियों को नमोस्तु! नमोस्तु!! नमोस्तु!!!

भवदीय

चंद्रकांत कागवाड माजी अध्यक्ष

बेलगांव

दक्षिण भारत जैन सभा

37, महावीर नगर, सांगली (कर्नाटक)

साधक विजयी

वीसवीं सदी में आर्ष परंपरा की रक्षा करने का महान कार्य प्रातःस्मरणीय आचार्य श्री शांतिसागर महाराज जी ने किया। उनकी परम्परा में चौथे-भारत गौरव, आचार्यरत्न श्री 108 देशभूषण महाराज जी के परम शिष्य, वात्सल्य रत्नाकर आचार्यरत्न श्री 108 बाहुबली महाराज जी, भारत वर्ष में विहार करते हुए, श्रमण संस्कृति की रक्षा करने की प्रेरणा अपनी मधुर वाणी और ओतप्रोत प्रवचन शैली से कर रहे हैं।

रुकड़ीवासी बलवंत-अक्कताई ने दिनांक 16.12.1932 में संभव कुमार को जन्म दिया। संभव कुमार से स्वयंभू बनने के लिये 1962 में संयम धारण करके सन् 1967 में श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला की त्याग प्रतीक भ. बाहुबली प्रतिमा के सान्निध्य में क्षुल्लक दीक्षा ली। मराठी, कन्नड़, हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी भाषा के साथ संस्कृत प्राकृत, अर्धमागधि, व्याकरण, छंदशास्त्र पर प्रभुत्व से जिनवाणी के समर्थ साधक बनकर सन् 1974 में तारंगा में मुनिदीक्षा और 1980 में आचार्य पद गुरु से प्राप्त किया।

भ. महावीर जी की वीतरागता, आचार्य कुंदकुद जी की आध्यात्म दृष्टि, अकलंक देव की तर्कशक्ति, गुरु के सान्निध्य में निरंतर शास्त्र अभ्यास करके वर्तमान की अधर्म, अशांत, अस्तर्य जन-मन को आप आत्म कल्याण का मार्ग दिखा रहे हैं। आप संघस्थ शिष्यवृंद को जिनवाणी की दीक्षा और श्रमणों को रत्नत्रय प्राप्ति की शिक्षा देकर स्व-पर कल्याण कर रहे हैं। ऐसे महान आचार्यश्री का चरित्र उनकी शिष्या आर्यिका श्रुतदेवी माताजी प्रकट कर रही हैं। इस चरित्र ग्रंथ नवयुग की सुखाभास भव्य जीवों के रत्नत्रय प्राप्ति में मार्गदर्शी बन जाए। इस अवसर पर आचार्य श्री के चरणकमल पर नतमस्तक होकर जिनेन्द्र संस्कृति की रक्षा के लिए उन्हें शत-शत वर्ष की आयू कामना करते हुए त्रिवार नमोस्तु करता हूं।

अ.अ. नेमण्णावर
अधिवक्ता-बेलगांव, कर्नाटक

शुभ संदेश

परम पूज्य सद्धर्म प्रवर्तक, आचार्यरत्न गुरूदेव श्री बाहुबली मुनि महाराजजी का जीवन चरित्र प्रकाशित होने जा रहा है यह सुनकर मुझे अमित आनंद हो रहा है।

आप ज्ञान-दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य रूप पंच आचारों को निरतिचार पालन करते हुए श्रीमज्जिनदेव, जिनशासन और जिन चैत्य तथा चैत्यालयों की परम प्रभावना करते हुए तथा जैन समाज के अज्ञान अंधकार को दूर हटाते हुए सूर्य के समान शोभायमान हो रहे है। आपके तपस्या की महिमा से समाज रूप गगन मंडल में चन्द्रमा के समान भव्य जनों के हृदय कमल को हर्षित कर रही हैं।

आपकी धवल कीर्ति दक्षिण-उत्तर में सर्वत्र है। आपकी प्रेरणा से भोज, धर्मनगर आदि स्थानों पर संस्थाएँ खुल गई है।

आपके द्वारा लाखों जैन-अजैनों का सच्चा कल्याण हुआ है। परमात्मा से प्रार्थना है कि ये महामानव महर्षि शिरोमणी आचार्य देव चिरकाल तक जीवित रहें और उनकी कृपा तथा दया दृष्टि हम पर सदा बनी रहें।

विनीत

पी. ए. पाटील (पोपट पाटील)

अधिकारी, कागवाड

मु.पो. उगार बुद्रुक, जि.-बेलगांव (कर्नाटक)

संदेश

यह खुशी की बात है कि प. पू. श्री 108 आचार्य रत्न बाहुबलीजी मुनि महाराज के जीवन चरित्र पर आधारित "जय जैनाचार्य" यह पुस्तक प्रकाशित होने जा रही है।

गुरूदेव आचार्य श्री बाहुबली महाराज द्वारा महान धर्म प्रभावना एवं साधु संतों का निर्माण हुआ है।

आज उनका बौद्धिक और आधात्मिक विकास देखकर मैं बहुत प्रभावित हूँ। उनकी उन्नतिका कारण उनका निर्मल ब्रम्हचर्य तपस्या, ज्ञान की सतत आराधना और महान् पुण्य का उदय है।

पू. आचार्य श्री जब हमारे बगीचे में 25 नोहम्बर 1999 को हमारी दत्त शुगर फैक्टरी में सामायिक (ध्यान) करने आये तब हमारी भूमि पवित्र हो गई।

आचार्य श्री ने मुझसे कहा-"हम संघ सहित आपके बगीचे में आकर बैठ गये।"

तब मैंने आचार्यश्री से कहा-"नही स्वामीजी, यह सब स्थान आपका ही है। ऐसे संतों के चरण जहाँ भी पड़ते है वह क्षेत्र पुनीत हो जाता है।

मैं आचार्यरत्न बाहुबली महाराज जी की दीर्घायु की कामना करते हुए उनके चरणों में कोटी-कोटी वंदन करता हूँ।

आप्पासाहेब उर्फ सा. रे. पाटील, चेयरमैन
श्रीदत्त शेतकरी सहकारी साखर कारखाना,
जि.-शिरोल, जि.-कोल्हापूर (महाराष्ट्र)

संदेश

प. पू. चारित्र चूड़ामणि, सद्धर्म प्रवर्तक श्री 108 आचार्यरत्न बाहुबली मुनि महाराज का ज्ञान-ध्यान-तपोनुरक्त जीवन की मंगल गाथा 'जय जैनाचार्य' के प्रकाशन का मंगल वृत्त अवगत कर अतीव विद्वान साधुराज है। आपकी मर्मस्पर्शी वाणी का श्रोतओं पर महान् प्रभाव पड़ता है। आप स्वयं में एक सजीव संस्था है। समाज के लौकिक तथा पारलौकिक कल्याण के लिए अनेकों संस्थाएँ आपके सदुपदेश से स्थापित हुई है। अनेक श्रेष्ठ अग्रगण्य पूज्य त्यागीराज आपके द्वारा दीक्षा प्राप्त कर आज जन-जन का कल्याण कर रहे है।

परम पूज्य आचार्यरत्न बाहुबली महाराजजी का वरदहस्त चिरकाल तक समाज एवं देश पर बना रहे, यही श्री वीर प्रभु से विनम्र प्रार्थना है।

आचार्य श्री के चरणों में अपनी भावभरी भक्ति के फूल चढ़ाकर अपने को धन्य मानता हूँ।

शरद रामगोंडा पाटील
Ex. M.L.A.
विशेष कार्यकारी अधिकारी अ. क्र. 6
कुपवाड (सांगली) (महाराष्ट्र)
दि. 4 दिसम्बर, 1999

संदेश

मुझे यह प्रसन्नता है कि प. पू. वात्सल्य रत्नाकर, आचार्यरत्न बाहुबली मुनि महाराजजी का मंगलमय जीवन गाथा 'जय जैनाचार्य' प्रकाशित हो रहा है।

आप अपने द्वारा जन साधारण में ज्ञान और चारित्र की ज्योति जगाते रहते है। आप तेजस्वी योगी, दूरदर्शी और महान ज्ञानी साधुराज है। आपका हृदय विशाल और उदार है। आप बड़े साहसी है। धर्म प्रभावना हेतु आपको अपने कष्ट की तनिक भी परवाह नहीं रहती। आपका जीवन अत्यंत मधुर है। आपके सानिध्य में जो आता हैं उसे आप बड़े प्रेम से अपनाते है। आप ने अपने प्रारम्भिक जीवन से ही जिस त्याग, लगन व निष्ठा से जनमानस को सन्मार्ग पर चलने एवं सत्कर्म करने की प्रेरणा दी, वह एक आदर्श है।

मैं श्री आचार्यरत्न बाहुबली महाराजजी की दीर्घायु की कामना करते हुए ग्रन्थ के सफल प्रकाशन क लिए अपनी शुभ कामना भेजती हूँ।

देशभक्त रत्नाप्पाण्णा कुंभार पंचगंगा
सहकारी साखर कारखाना लि.
गंगानगर-इचलकरंजी, जिल्हा-कोल्हापुर

सौ. रजनी वि. मगदूम
चैयरमेन

संस्थाओं के प्रणेता-मेरे गुरुदेव

प. पू. आचार्यरत्न श्री 108 बाहुबली महाराज जी के नाम पर 'जय जैनाचार्य' यह ग्रंथ प्रकाशित होने जा रहा है। यह सुनकर अत्यानंद हो गया।

इस खंडप्राथ छिन्न विछिन्न अतिप्राचिन भारत देश में एक गौरवशाली सांस्कृतिक परंपरा है। इस सांस्कृतिक परंपरा में जैन धर्म यह अतिप्राचीन तथा अहिंसा का संदेश देने वाला है। जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर जी ने इस धर्म का पुनरूज्जीवन किया। और इस वर्तमान काल में धर्म की रक्षा का कार्य आर्ष परंपरा के अनुसार दिगम्बर मुनियो ने ही किया है।

आचार्य श्री 108 शांतिसागर मुनि महाराज जी ने मुनि परंपरा शुरू की उसी परंपरा में देशभूषण महाराजजी तथा परम पूज्य आचार्यरत्न श्री 108 बाहुबली मुनि महाराजजी ने यह परंपरा संवर्धित की।

समाज धर्म को एक नई दिशा नई प्रेरणा देकर मुनि परंपरा के माध्यमों से समाज धर्म का संवर्धन करने का कार्य बाहुबली महाराज जी ने किया।

"समता सर्व भूतेषु संयमे शुभ भावना" इस तत्व का मूर्तीमंत आचरण यह आचार्य श्री की विशेषता है। सत्य, शील, सेवा, प्रेम और अचौर्य इस पंच सूत्री का पाठ बाहुबली महाराज जी ने जनता को दिया है।

मानवता शांती पथ दर्शन जैसे उपक्रम के माध्यम से उन्होंने राष्ट्रीय कार्य किया। ऐसे राष्ट्रसंत धर्म गुरू से आर्शीवाद लेकर 1) श्री धर्मनाथ जिल्हा नागरी सह० पतसंस्था मर्यादित जयसिंगपुर 2) श्री धर्मवृक्ष लागवाड व संवर्धक सह० संस्था मर्या. निमशिरगाँव 3) आचार्यरत्न बाहुबली सह० वाहतूक व पर्यटन संस्था मर्या. धर्मनगर, निमशिरगाँव आदि संस्थाओ का निर्माण कार्य हमने किया। वह उन्हीं की प्रेरणा तथा आर्शीवाद है। ये संस्थाएं समाज जीवन के अविभाज्य अंग बन चुके है।

आचार्य श्री बाहुबली महाराजजी के बहुमुखी व्यक्तित्व को तपश्चर्या का रूप प्राप्त हुआ है। उनका व्यक्तित्व अतुलनीय है। इनका प्रेरणा से तथा आर्शीवाद से अनेकानेक जीवों का कल्याण ही हुआ है।

'जय जैनाचार्य' नामक कल्याणकारी उपक्रम को हमारी हार्दिक शुभ कामनाएं।

धन्यवाद

आपका कृपाभिलाषी

श्री अशोक आ. पाटील

निमशिरगाँव, जिला-कोल्हापुर

गुरु दर्शन का प्यासा

परम पूज्य 108 आचार्यश्री बाहुबली महाराज जी के चरणों में त्रिवार नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!

आचार्यश्री बाहुबली जी महाराज सरलता एवं शांति के बाहुबली हैं इनके दर्शन करते ही महान आत्म शांति प्राप्त होती है। हम सब की जिनेन्द्र देव से यही प्रार्थना है कि भव-भव में ऐसे महान 108 आचार्य श्री बाहुबली जैसे गुरुओं के चरणों की सेवा एवं धर्मलाभ मिलता रहे।

आचार्यश्री के दर्शन की प्यास बुझती ही नहीं 2-4 माह ही होते हैं कि घर से कोई न कोई सदस्य आचार्यश्री के दर्शन का प्यासा हो जाता है। आचार्यश्री चाहे धर्मनगर हो चाहे और कहीं पता लगाकर पहुंच कर दर्शनलाभ, धर्मलाभ, आशीर्वाद लाभ जरूर प्राप्त करते हैं। यह क्रम घर के तीनों बच्चों, बहुओं और लड़कियों, दामादों तथा मेरा हरदम बनता रहता है।

यह दर्शनलाभ हमारे परिवार को करीब बारह-तेरह साल से निरंतर प्राप्त हो रहा है। यह हमारे सबका परम सौभाग्य एवं महान धर्म प्रभावना का पुण्य का कारण है।

आचार्यश्री बाहुबली महाराज की प्रेरणा से कर्नाटक से शांतिरथ यात्रा सन् 1986 में मध्य प्रदेश पहुंची तो हमारे सब साथियों को मध्य प्रदेश में रथ यात्रा की पूरी जवाबदारी आचार्यश्री ने सौंपी। जिसका संचालन उनके आशीर्वाद से सफलतापूर्वक किया एवं एक बोली की एकत्रित हुई निधि से भोज में मध्य प्रदेश के नाम से एक सभागृह बनवाया गया जो एक यादगार रहेगा। आचार्यश्री के चरणों में एवं समस्त मुनिसंघ के चरणों में बारम्बार

नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!

विनीत
आचार्यश्री के भक्त
सिंघई जवाहरलाल एवं राजेश, चक्रेश
मुकेश जैन एवं समस्त परिवार
10 ईश्वरनगर, सूरत (गुजरात)

मनोगत

3 मार्च 2000 का मंगल प्रभात। परम पूज्य आचार्यश्री बाहुबली सागर जी के संघ का सतना में शुभागमन। वर्षों के बाद मैं आचार्यश्री का दर्शन कर रहा था। आचार्यश्री के साथ सर्वश्री मुनिश्री अर्हदबली जी, मुनिश्री धर्मभूषण जी, मुनिश्री धर्मसेन जी, मुनिश्री चित्रगुप्त जी और मुनिश्री समाधिगुप्त जी इस विहार में चल रहे हैं। दो मुनिराज तो अत्यन्त वृद्ध हैं। पूज्य आर्यिका मुक्तिलक्ष्मी जी, शान्तिमती जी, जिनदेवी जी, श्रुतदेवी जी, निर्वाणलक्ष्मी जी, मुक्तिकान्ता माताजी, धर्मेश्वरी माताजी, सुज्ञानी माताजी, निष्पापमती जी और धर्ममती जी ये दस आर्यिका माताजी, आठ क्षुल्लक एवं चार क्षुल्लिकाओं को मिलाकर अट्ठाईस साधकों का यह विशाल संघ सिद्धक्षेत्र सम्मेदाचल की यात्रा के लिये विहार कर रहा है। लगभग दो सौ पचास सेवाभावी श्रावकों और श्राविकाओं से संचालित यह मंगल विहार ऐतिहासिक और स्मरणीय प्रसंग बनकर समाज को प्रभावित करता है। निकट अतीत में सतना में इतने बड़े मुनिसंघ का आगमन नहीं हुआ था।

मुनिमार्ग के पुनरोद्धारक और बीसवीं शताब्दी के महानतम आचार्य चारित्र चक्रवर्ती पूज्यश्री शान्ति सागर जी की एक शाखा में आचार्य पाय सागर जी, आचार्य जयकीर्ति जी और आचार्य देशभूषण जी के बाद पांचवें आचार्य के रूप में संघ का अनुशासन करने वाले बाहुबली सागर जी एक अनुभव सम्पन्न अनुशास्ता हैं। वे अपनी अकम्प समता भावना और साधर्मी वात्सल्य के लिये विशेष रूप से जाने जाते हैं। संघ में सभी साधक उन्हीं के द्वारा दीक्षित हैं और उनमें अपने आचार्य के प्रति समर्पण की गहरी भावना विद्यमान है। संघ में चल रहे श्रावक-श्राविकाओं की सेवा-परायणता तो पग-पग पर प्रगट दिखाई देती है। इस प्रकार इस विशाल मुनि संघ के दर्शन करके ऐसी अनुभूति होती है, जैसे हम समता, समर्पण और सेवा की त्रिवेणी की धारा में अवगाह कर रहे हों। यह एक ऐसा अनुभव है जिस पर कोई भी श्रावक गर्व कर सकता है।

इस कलिकाल में भी भगवान महावीर की परम अहिंसक और निस्पृह साधना-पद्धति को जीवन में उतार कर, मानव समाज के सामने आदर्श प्रस्तुत करने वाले संतों के प्रताप से ही आज तक जैन संस्कृति की ज्योति प्रज्जवलित दिखाई देती है। ऐसे आचार्य भगवन्तों का गुणगान और उनके जीवन-वृत्त का लेखन तथा प्रकाशन 'धर्म-प्रभावना' का कार्य है। इससे चारित्र-पालन की परम्परा को बल मिलता है और संयम के प्रति साहस तथा विश्वास जागता है अतः ऐसे प्रयास सराहनीय हैं।

पूज्य आर्यिका श्रुतदेवी और सुज्ञानी माताजी ने आचार्यश्री का यह जीवन वृत्त संकलित किया है। हमें विश्वास है कि इस कृति का अधिकाधिक प्रचार होगा और हिन्दी पाठकों तक भी यह शीघ्र पहुंचाई जायेगी। भक्तों को इस 'गुरु-गुण-गान' के माध्यम से स्व-पर कल्याण की प्रेरणा मिलती रहे इस भावना के साथ पूज्य दोनों माताजी के प्रति हम कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

शान्ति सदन, सतना संत चरणानुरागी

3 मार्च 2000 **नीरज जैन**, सतना

परम पूज्य के प्रति मन के उदगार

परम पूज्य आचार्य रत्न 108 श्री बाहुबली महाराज के अभी वर्तमान यात्रा के दौरान दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। धन्य हो गये नयन आपकी शांति मुद्रा को देखकर आपके पास से उठने का मन नहीं होता।

आपके संघ की शिखर जी यात्रा का पढ़ाव करनी में था तथा आपको सीधे रीवा होकर आगे जाना था बहुत विनय हमनें सतना होकर रीवा जाने की करी आपने उसे हम सब श्रावकों की मुक्ति देखते हुये सरल मन से स्वीकार किया यही आपकी सरलता एवं धर्मी के प्रति वात्सल्य भाव है।

सभी साधुओं त्यागियों श्रावकों के पैर एक दम छिल गये हैं गर्मी में गमन करने में बहुत कष्ट है गर्मी भी दिन दिन बढ़ रही है सम्मेद शिखर पहुंचने की जल्दी हैं क्योंकि संघ को धर्म नगर से निकले हुए आज 3 माह हो गये है फिर आपने सतना आकर जो हम पर करूणा की है वह आपकी उदारता का परिचय है।

सभी साधुओं मुनियों आर्यिकाओं एवं क्षुल्लक जी तथा चतुर्विध संघ में जो अनुशासन हमे 5 दिन से देखने मिला वह आपकी अुनशासन प्रियता को बतलाता है।

कटनी और सतना में हुये दोनों प्रवचनों को हमने सावधानी से सुना है जैनागम का रहस्य सरल शब्दों में शुद्ध हिन्दी भाषा में आप कहते हैं तथा भव्य जीवों को कल्याण के मार्ग में लगाते हैं संयम के प्रति श्रावकों को आर्कर्षित करते हैं, श्रावक के छह आवश्यक करने को बार बार प्रोत्साहित करते हैं यही आपकी संयम साधना तथा उपगूहन, धर्म प्रभावना अंग है।

वर्तमान विषय काल में देव हैं नहीं-शास्त्र बोलते नहीं उन्हें श्रावक अपनी कषायांश के साथ अपने अपने अनुसार अर्थ करते हैं ऐसे समय में आप गुरूओं के द्वारा ही कल्याण का मार्ग-मोक्ष का मार्ग चलना है और ऐसे संत भी विरले हैं जिनमें आपका स्थान भी आदर के साथ लिया जाता है।

हे तपोमूर्ति हे आराधक हे राष्ट्र संत आप सरल, अुनशासन प्रिय, वात्सल मूर्ति समता-ममता युक्त, उदार आप अपनी यात्रा मंगल पूर्वक पूरी करके आगे निरंतर बढ़ते रहे तथा वर्तमान पर्याय की मंगल यात्रा सर्वोत्तम सल्लेखना धारण करके शीघ्र अपनी पयार्ये पूरी करके सिद्ध शिला में विराजमान होवें ऐसी हम सभी की कामना है।

आपके संघ का रत्नत्रय कुशल होवे ऐसी पवित्र भावना से त्रय बार नमोस्तु ....

सिद्धार्थ कुमार जैन-सतना

S/o श्री स्व पं. जगन्मोहन लाल शास्त्री कटनी

शत् शत् नमोऽस्तु

मन के भाव तथा किसी के प्रति श्रद्धामयी उद्गारों की अभिव्यक्ति मौखिक तथा लिखित दो रूपों से की जा सकती है। प.पू. आचार्यश्री 108 बाहुबली सागर महाराज जी के प्रति अपनी गुरुनिष्ठा को व्यक्त करने के लिए प.पू. आर्यिका श्रुतदेवी माताजी ने आचार्यश्री के जीवन परिचय को जिस ढंग से प्रस्तुत किया, वह निश्चय ही सराहनीय कार्य है।

मैं अनुमान लगा सकती हूं कि प.पू. माताजी को तथ्यों को संग्रहित करने में कितने वर्ष लगे होंगे। उनके इस महान कार्य में अपना तुच्छ सहयोग देकर मैं कृतार्थ हो गई। उनके ही कारण मुझे आचार्यश्री जैसे धर्म प्रणेता गुरुवर के दर्शन हुए।

उद्गारों को व्यक्त करूं, शब्द मिलते ही नहीं।
सच्चे गुरु मिल जाएं जिन्हें, उनका जीवन स्वर्ग यहीं॥

अन्त में प.पू. माताजी को मेरा शत् शत् नमन् -

गुरुभक्ति और श्रद्धा आपकी, है सबसे अनुपम।
कर जोड़कर करते आपका, हार्दिक अभिनन्दन॥

पू. आचार्य श्री को शत् शत् नमोऽस्तु करते हुए मंगल कामना करती हूं कि आचार्यश्री शतायु होकर धर्म की प्रभावना करें।

सरिता जैन 'साहिल'
शास्त्री नगर, दिल्ली

परोपकाराय सतां विभूतयः-प.पू. आचार्यश्री

छत्तीस गुण समग्गे पंच विहाचार करण संदरिसे।
सिस्साणुग्गह कुसले धम्माइरिए सदा वंदे॥

परम पूज्य प्रातः स्मरणीय भारत गौरव परम्पराचार्य परमेष्ठी स्वस्ति श्री 108 देशभूषण महाराज श्री के परम अग्रगण्य शिष्य प. पू. प्रातः स्मरणीय चारित्र चूड़ामणि वात्सल्य मूर्ति आचार्य श्री 108 बाहुबली महाराजजी के चरणों में त्रिवार नमोऽस्तु।

पू. आचार्य श्री जी का परिचय मुझे बहुत पहले से है। हमारे बेलगांव में तो आज तक कितने त्यागियों ने चातुर्मास किया लेकिन पू. आचार्य श्री का समाज पर जो प्रभाव पड़ा वैसा प्रभाव आज तक किसी का भी नहीं पड़ा।

आचार्य श्री की अमोघ, रसाल, हृदय संग्राही, सरल वाणी ही सबका मन आर्कषित कर लेती है।

'चित्रं जैनी तपस्याहि स्वैराचार विरोधिनी, आचार्य श्री वादी सिंहसूरी ने 'क्षत्रचूड़ाणि' में कहा है-जैन तपश्चर्या ही स्वैराचार का विरोध करने वाली है। बचपन में ही संसार भोगों को लात मारकर आत्म कल्याण करना एक प्रकार की महान कला है। और इस कला को वही अपनाता है जो भेदज्ञानी व निरासक्त है। प. पू. श्री आचार्यरत्न बाहुबली महाराज जी ऐसी आत्मकला को आत्मसात करने वाले 'महान कलाकार' है।

पू. आचार्य श्री के विहार से संपूर्ण कर्नाटक व महाराष्ट्र प्रांत में रहने वाला जैन समाज जागृत हो गया। पू. आचार्य श्री की अमोघवाणी से नाना चमत्कार हुए-कभी देव दर्शन न करने वालों ने अपनी इच्छा से देव दर्शन करने का नियम ले लिया। व्यसनी लोग निर्व्यसनी हो गये। धर्म व समाज से दूर रहने वाले मंदिर के अंदर आकर बैठने लगे। कंजूस से कंजूस व्यक्ति ने दान देने की कला सीख ली। गुरू दर्शन करने में शरमाने वाला व्यक्ति उनके आगमन की प्रतिक्षा करने लगा। स्वाध्याय नहीं करने वाले स्वाध्याय में लीन होने लगे। आपस में कलह करने वाले कलह करना भूल गये। संयम को नाम रखने वाले संयम पालन करने लगे। ऐसे एक नहीं हजारों चमत्कार हो गये। ये केवल लेखनी का वर्णन ही नहीं अपितु सत्य स्थिति है।

पू. आचार्य श्री के उपदेश से हजारों तरूणों ने जैन धर्म की महिमा जान ली। कर्नाटक व महाराष्ट्र प्रांत का बच्चा-बच्चा पू. आचार्य श्री को जानता है। आचार्य श्री की छत्र छाया सदैव हम पर रहें। यही वीर प्रभु से करबद्ध प्रार्थना।

"इति भद्रं भूयात्"

श्रीमान पं. बाहुबली उपाध्ये-शास्त्री
अनगोल-बेलगांव (कर्नाटक)

अभिव्यक्ति

प. पू. आचार्य श्री 108 बाहुबली सागर मेरे मन के मस्तिष्क पर अंकित वह प्रथम स्थान है जिनसें दस वर्ष की अवस्था में उतरे दिल्ली प्रवास के दौरान मैंने उनसे साक्षात्कार किया। उनके सानिध्य में धर्म की शिक्षा प्राप्त की तब मैंने जाना धर्म क्या हैं? स्वाध्याय क्या हैं? यह इन्सान के लिये क्यों जरूरी हैं? इत्यादि। उस समय बालमन पर गुरूवर की एक ऐसी अमिट छवि बन गई जो आज तक बरकरार रही।

एक लम्बे अरसे तक गुरूवर का दर्शन नहीं हो सका। जब पूरे पच्चीस वर्ष बाद मैं अपने पति श्री विनेश कुमार तथा पुत्र अंकित के साथ आचार्य श्री के दर्शनार्थ गई तो रोम-रोम पुलकित हो गया। एक लम्बे अन्तराल के बाद भी गुरूवर ने मुझे पहचान लिया। गुरूवर का दर्शन करके मेरा जीवन सफल हो गया। उसी समय मन में एक ललक जाग्रत हुई कि कितना अच्छा हो यदि आचार्य श्री का चातुर्मास दिल्ली में हो............। गुरूवर के आर्शीवाद से मेरी इच्छा पूर्ण हुई। आचार्य श्री ने वर्ष 2000 के चातुर्मास के लिये दिल्ली आने की स्वीकृति दे दी।

बाहुबली गुरूवर को पाकर, जीवन धन्य हुआ मेरा।
दिल्ली वासी गर्व करो, अब होगा नया सवेरा॥

गुरुभक्त-संघपति
श्रीमान विनेश कुमार जैन
श्रीमती सुनीता जैन
मास्टर अंकित जैन-दिल्ली
(कार्यालय) 3264298 (दुकान) 3921512 (निवास) 3915790

जंगल में मंगल करने वाले मेरे गुरुदेव

प्रातः स्मरणीय, सद्धर्म प्रवर्तक, वात्सल्य रत्नाकर, चारित्र चूड़ामणि आचार्यरत्न बाहुबली महाराज जी के व्यक्तित्व का दर्शन करते समय मन में अनेक प्रकार की भावनाएं उभरती है।

आचार्य श्री श्रमण परम्परा के जगमगाते नक्षत्र हैं, दीप स्तंभ है। आपका विहार जहां भी होता है, वह वसुन्धरा तीर्थ-क्षेत्र का रूप लेती है। अभी जिस स्थान पर धर्मनगर बना है, वह स्थान श्मशानवत् निर्जन था। जहां लोग आने-जाने के लिए भी डरते थे। परन्तु आज इसी स्थान में "जंगल में मंगल" हो गया।

आचार्य श्री के चरण जिस दिन इस भूमि पर पड़े, तब से उस भूमि का उत्थान ही हो गया। इस क्षेत्र में सवा ग्यारह फुट धर्मनाथ भगवान की प्रतिमा लायी गयी। उसके साथ ही शांतिनाथ भगवान की प्रतिष्ठित मूर्ति को यहां विराजमान किया गया। आचार्य श्री व संघस्थ त्यागियों के रहने के लिए पहले टेंट ही थे, फिर धीरे-धीरे बाँस की झोपड़ियां बन गई। वेदी का काम शुरू हुआ न हुआ, तब तक ही उस क्षेत्र पर दीक्षा विधान आदि अनेक कार्यक्रम विशाल रूप से सम्पन्न हुए।

देखते ही देखते त्यागी निवास, चौंके हेतु कमरे आदि बन गये। भगवान धर्मनाथ की प्रतिमा वेदी पर विराजमान हो गई। तेरह दिन की अभूतपूर्व पंचकल्याणक प्रतिष्ठा भव्य रूप से सम्पन्न हुई। देव, शास्त्र, गुरू का भव्य जिनालय लोकाकाश के आकार में कुछ ही दिनों में खड़ा हो गया। दो सुंदर रथ, ऐरावत हाथी (कृत्रिम) भी पू० आचार्य श्री की प्रेरणा से ही इस क्षेत्र के लिए बनाये गये।

यात्रीगण, दर्शनार्थीयों के लिए हमेशा ही निशुल्क भोजन की व्यवस्था है।

इतने कम दिनों में इतने विशाल क्षेत्र की निर्मिती होना एक आश्चर्य जनक बात है।

इस नयनरम्य क्षेत्र में हमेशा धार्मिक विधि विधान होते ही रहते है। धर्मनाथ भगवान की प्रतिष्ठा होकर जब पाँच वर्ष पूर्ण हुए। उस समय 16 दिनों का विशेष कार्यक्रम धर्मनगर में आयोजित किया गया। 15 दिन विविध विधान सम्पन्न हुए और सोलहवें दिन लक्ष दीपोत्सव का कार्यक्रम रखा गया। एक लाख दीप एक अलग ही प्रकार के बनाये गये। कृत्रिम हाथी अपनी सूंड में कमल धारण किए हुए है। उस कमल में दीप प्रज्जवलित किए गए। लक्ष दीपोत्सव के समय एक ऐसी चमत्कारिक घटना घटी-जिस दिन लक्ष दीपोत्सव का कार्यक्रम था, उस दिन चारों तरफ बारिश के साथ ओले बरस रहे थे, लेकिन धर्मनगर में उस समय बिल्कुल भी बारिश नहीं थी। एक साथ लाख दीपों के प्रकाश से पूरा क्षेत्र जगमगा रहा था। भयंकर हवा चलने पर भी एक भी दीप बुझा नहीं, यही गुरूदेव की महान तपस्या का प्रभाव था।

इस प्रभावशाली दीपोत्सव के समय एक भी जीवों की उत्पत्ति भी नहीं हुई। ऐसे अहिंसामयी दीपोत्सव को देखने लाखों लोग वहां उपस्थित थे।

तपस्या के धनी, दयामूर्ति मेरे गुरूदेव का ऐसा प्रभाव है कि किसी भी प्रकार के विघ्न सामने आते ही नहीं। यदि आते भी हैं तो बिना किसी प्रकार का फल दिये ही अपने आप दूर से ही भग जाते है।

किसी भी कार्यक्रम की रूपरेखा जब गुरूदेव हमारे सामने रखते हैं। तब हमें यही शंका आती-इसमें सफलता मिलेगी या नहीं? उस समय गुरूदेव का एक ही शब्द 'वचने किं दरिद्रता'-जाओ काम में लग जाओ। गुरूदेव के आशीर्वाद से सचमुच ही कठिन से कठिनतम कार्य भी सफल हो जाते। अंत में मैं गुरूदेव के चरणों में कुछ सुमन अर्पित करना चाहता हूं।

अज्ञान अंधकार हटाने, बाहुबली गुरूदेव यहां आए है।
हम गिनती लगा सकते नहीं इन्होंने कितने दीप जलाए हैं।
इन दीपों को आंधी तुफान भी कुछ न कर सकेगें।
क्योंकि ये बाहुबली गुरूदेव की माटी में से निकलकर आये हैं।

भगवान श्री महावीर से करबद्ध प्रार्थना है कि विश्व की वर्तमान यह महान विभूति दीर्घायु हो ताकि हम संसारी प्राणियों को उनका-दिग्दर्शन बार-बार प्राप्त होता रहे। उनके चरण कमलों में कोटिशः नमोऽस्तु करता हुआ अपनी विनयांजलि अर्पित करता हूं।

धर्मनगर अध्यक्ष

श्रीमान् वीरगोंडा पाटील-जयसिंगपुर

मेरे गुरूदेव - श्रमण संस्कृति के दीप स्तंभ

प. पू. आचार्यरत्न बाहुबली जी महाराज एक परम तपस्वी निस्पृह साधु हैं। जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन स्व-पर हित में लगा दिया है। आपके द्वारा अनेक भव्य जीवों का उद्धार हुआ है। उन्हें धर्म का मार्ग दिखाकर जिन धर्म पर श्रद्धा निर्माण की है। जिस क्षेत्र तथा गावं में आपका पर्दापण अथवा चातुर्मास हुआ, वहां आपके दिव्य प्रभाव से अनेक धर्मोपयोगी महान-महान कार्य सम्पन्न हुए जिसमें विशेष उल्लेखनीय है-'अतिशय क्षेत्र धर्मनगर। यहां पर देव-शास्त्र-गुरू निवास निर्माण, वृद्ध त्यागी तपोवन का निर्माण, गुरूकुल आदि निर्माण।' अतः आप श्रमण संस्कृति के दीप स्तंभ हो। ऐसे आचार्य श्री बाहुबली महाराज जी को शत शत वंदन करते हुए उनके दीर्घ यशस्वी जीवन की कामना करता हूं।

धर्मनगर के ट्रस्टी

श्रीमान कुंथीलाल पाटनी-इचलकंरजी

वात्सल्य मूर्ति-वात्सल्य रत्नाकर

प. पू. सद्धर्म प्रवर्तक आचार्य रत्न बाहुबली महाराज वात्सल्य की साक्षात् मूर्ति है। गुरूदेव! आपकी वात्सल्यता के कारण ही हजारों जैन-अजैन भक्त आपके पावन पवित्र चरण कमलों में शरणागति प्राप्त करके अपने को धन्य समझते है। आपका सानिध्य प्राणी मात्र को पवित्र बनाता है। आपका घोर विरोधी, विघ्न संतोषी उद्दंडता पूर्वक दहाड़ता हुआ कदाचित आता भी है तो वह भी आपकी सौम्य छवि, मुस्कराता चेहरा तथा अद्वितीय वात्सल्य को देखकर दूर से ही शांत हो जाता है, प्रश्नोत्तर तो दूर की बात।

ऐसे वात्सल्य रत्नाकर की चरण रज पाकर मैं अपने को धन्य समझता हूं, मेरा जीवन सफल हो गया। मैं देवाधिदेव वीर प्रभु से प्रार्थना करता हूं कि ऐसे वात्सल्य रत्नाकर इस वसुन्धरा पर चिरायु रहे। हमारे जैसे असंयमी जीवों को अपने उपदेशामृत से संयम में लगाते रहे यही गुरूचरण में भावपूर्वक त्रिधा नमोऽस्तु कर सुमनांजली अर्पित करता हूं।

धर्मनगर के ट्रस्टी

श्रीमान महावीर माणगांवे जयसिंगपुर

मेरे जीवन के खेवटिया

परम पूज्य प्रातः स्मरणीय सद्धर्म प्रवर्तक, वात्सल्य देवता, गुरूदेव आचार्यरत्न बाहुबली महाराज जैन सिद्धांतों के प्रतिपालक एंव इस कलिकाल में जैनधर्म की प्रभावना के पुंज है।

जिन्होंने कितने ही भव्य जीवों का कल्याण किया है, जिनके समक्ष राजा-रंक, अमीर-गरीब, शत्रु-मित्र का भेदभाव न हो, जो सब पर अर्थात् एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय प्राणियों पर सदा-सर्वदा वात्सल्य दृष्टि रखते हों, ऐसी महान आत्मा की यशोगाथा लिखना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है।

आचार्य रत्न देशभूषण महाराज जी के संघ में जब गुरूदेव थे, तब से मैं गुरूदेव से परिचित हूं। नव निर्मित क्षेत्र धर्मनगर की निर्मिति के समय और भी इनके निकट आ गया। पहले मुझे द्रव्य (पैसे) का उपयोग कैसे करना, कहाँ इसका व्यय करना। इसका कुछ भी ज्ञान नहीं था। मैं कहीं भी इस द्रव्य का व्यय करता था। लेकिन जब से गुरूदेव ने सही मार्ग दिखाया तब से मेरे पैसे का सद् उपयोग होने लगा। आचार्य श्री के प्रति और भी श्रद्धा बढ़ती चली गई। अगर मैं एक दिन भी गुरूदेव का दर्शन नहीं करूं तो आज का दिन बेकार हो गया, ऐसा मुझे महसूस होता है। गुरूदेव ने मुझे सबसे पहले धर्मनगर में "श्री सिद्धचक्र विधान" के प्रमुख इन्द्र बनने की आज्ञा दी। मेरा भाग्य मैं इन्द्र बन गया। कुछ दिन बीतने के बाद जब भगवान श्री 1008 धर्मनाथ की "न भूतो" ऐसी भव्य एवं दिव्य-पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई, उसका भी सौधर्म इन्द्र पद मुझे ही मिल गया, यह मेरा अहोभाग्य।

धर्मनगर में जब भी कोई कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। तब गुरूदेव की आज्ञा हो जाती है, 'गुणधर! आप यह कार्य करो' उनकी आज्ञा शिरसावंद्य मानकर मैं कार्य में लग जाता। अढ़ाई द्वीप विधान के समय आचार्य देव की इच्छा थी-ग्रंथों में जैसा अढ़ाई द्वीप का वर्णन हैं, वैसी ही रचना यहां होनी चाहिए। गुरूदेव की आज्ञा तो हो गई लेकिन मुझे इस बारे में गहन ज्ञान नहीं था। मिट्टी, पत्थर, ईंट आदि सामान आ गया। शुरू में मेरे मन में कुछ शंका आयी कि इस कार्य में इतना खर्च करने से क्या फायदा? मैंने गुरूदेव से पूछा आप अढ़ाई द्वीप की इतनी बड़ी रचना क्यों करवा रहे है। आचार्य श्री का अति निर्मल ज्ञान। वे मुनष्य के मुख को देखकर ही उसके अन्तःकारण में घुमड़ती भावनाओं का सहज ही अनुमान लगा लेते हैं। उन्होंने झट् से मुझे बुलाया और कहा-'गुणधर! तुम्हारे मन में शंका आ रही है। अभी पैसा जरूर खर्च होगा लेकिन आगे सब कुछ ठीक होगा। जाओ, निःशंक होकर काम करो।' इतना कह वे मंद-मंद मुस्कराने लगे।

उनके ओजपूर्ण गंभीर चेहरे तथा शांत वाणी से निकले उपर्युक्त वाक्यों ने मेरे मन की परतों पर अंकित प्रश्नों की तह को छू लिया। अब मुझे और विश्वास हो गया कि मेरे प्रश्नों का समाधान यही सिद्ध पुरूष कर सकते है। प्रश्नों के सामाधान तो अर्जित ज्ञान के द्वारा सहज ही दिये जा सकते हैं, लेकिन व्यक्ति के अंतर छिपे रहस्यों की जानकारी देना एक व्यक्ति के लिए कैसे संभव है? क्या इनके पास कोई दैविय शक्ति है? यदि है तो इन्होंने किससे और कैसे प्राप्त की? धन्य-धन्य आपकी महिमा।

आचार्य श्री से अढ़ाई द्वीप के बारे में जानकारी प्राप्त कर मैंने काम शुरू कर दिया। इस कार्य की पूर्णता होने से लगभग तीन महीने लग गये। काम करने वाले हम तीन ही व्यक्ति थे। मैं, श्री आण्णासाहेब रांगोली कर पाटील और धनपाल केटका`। गुरूदेव के आशीर्वाद से अढ़ाई द्वीप की रचना जैसी की वैसी ही हो गई। बीचोबीच जम्बूद्वीप, इसके अंदर पर्वत, नदी, सात क्षेत्रों की रचना, लवण समुद्र, धातकी खंड, कालोदधि समुद्र, पुष्करार्ध द्वीप, मानुषोत्तर पर्वत, पंचमेरू पर्वत आदि की रचना सुमेरू पर्वत के मध्य में सूर्य-चन्द्र, नवग्रह, नक्षत्र आदि का भ्रमण। अढ़ाई द्वीप की यह रचना देख सभी का मन हर्षाता था। विधान शुरू हुआ। उस समय मुझे ऐसा लगा इतना बड़ा काम मेरे हाथों से कैसे हो गया? हाँ, इसके पीछे बहुत बड़ी दैवीय शक्ति है वह है 'गुरूदेव'।

ये गुरू बाहुबली आचार्य सबका कल्याण करेगें।
मुझको है विश्वास कि ये कुछ नव निर्मित करेगें।
जब जब पाप बढ़ेगा जग में, राख होगें भू पर,
तब तब आप धरा पर आकर, श्री गुरू बाहुबली आचार्य, भगवान बनेगें।

इसी दैविय शक्ति के कारण ही मेरा लड़का संतोष कुमार मरते मरते बच गया। मेरा लड़का पानी की मशीन जोड़ने के लिए दूसरे गांव गया था। उस काम में उलझ जाने के कारण आते समय रात्रि हो गयी। वह अकेला ही था। स्कूटर में अकेले देख चार गुंडो ने संतोष की गाड़ी का बल्ब फोड़ दिया। और सिर पर व हाथ पर लाठी से प्रहार किया। उसी समय धर्मनगर से आयी हुई गाड़ी आगे जा रही थी। गाड़ी की लाईट का प्रकाश इनके ऊपर पड़ते ही वे चारों चोर वहां से भाग गये। संतोष ने जोर-जोर से चिल्लाया गाड़ी रोको, गाड़ी रोको। उसकी आवाज सुन ड्राईवर ने गाड़ी रोक दी। संतोष ने उन्हें उक्त घटना बताई और वहीं बेहोश हो गया। उन्होंने संतोष को गाड़ी में बिठा लिया। थोड़ी देर बाद होश आने पर उन्होनें कहा-हम भी आचार्य श्री बाहुबली महाराज के अनन्य भक्त है, तुम चिंता मत करो। हम तुम्हें तुम्हारे घर पहुंचा देगें।

जब मुझे मालूम चला, मेरे लड़के के ऊपर इतना बड़ा संकट आया था और वह भी पू. आचार्य श्री के आशीर्वाद से टल गया। तब मैंने वहीं से पू. आचार्य श्री व समस्त संघ को त्रिवार नमोऽस्तु किया और ऐसी भावना भायी हे गुरूदेव! आपकी छत्र छाया सदैव हमारे ऊपर रहें।

बीच भंवर फंसी हुई हमारी नाव को उस पार लगाने वाले आप ही सच्चे खेवटियां हो। आपकी कृपा से ही हम निहाल हो गये।

आचार्य श्री के चरणों में अपनी विनयांजलि समर्पित करते हुए जिनेन्द्र भगवान से प्रार्थना करता हूं कि आचार्य श्री दीर्घायु हो। आपके मंगल विहार से भारत भूमि का चप्पा-चप्पा हरा-भरा बना रहे, यही मंगल कामना करके विराम लेता हूं।

धर्मनगर ट्रस्टी

श्रीमान गुणधर भूपाल उपाध्ये-इचलकरंजी

तप के महान पर्वत (आचार्य बाहुबली महाराज)

भारत गौरव आचार्यरत्न श्री 108 देशभूषणजी महाराज जी का संघ देहली से बम्बई होते हुए कोथली की तरफ विहार कर रहा था, उस समय सन् 1972 के दरम्यान मुझे संघ के साथ बम्बई से कोथली तक पैदल विहार करने का योग आया और उसी समय संघ के अन्य साधुओं में से श्री आचार्यरत्न 108 बाहुबली महाराज जी के सागर रूपी वात्सल्य से मेरा तन, मन उनकी तरफ आकिर्षत होते रहा और उसी समय से गुरुदेव के चरण में सेवा की प्रीति बढ़ती गयी। जैसे जैसे गुरुदेव के साथ समय का सहवास बढ़ता गया, एक बात निश्चित रूप से ध्यान में आने लगी-गुरुदेव के तप में यत्किंचित ही शिथिलता न होने के कारण और दृढ़ मन से तप की साधना करने के कारण गुरुदेव तप के एक महान पर्वत हैं। तप की बहुत सारी शक्ति उनमें मौजूद है। फिर भी स्वभाव में ना गर्व है, ना राग है, सिर्फ वात्सल्यता ही वात्सल्यता है।

मुझे याद है सन् 1996 में मेरे स्व. पिताजी माणिकचन्द जी अपने वृद्धत्व के कारण काफी बीमार थे। उन्हें अस्थिमा का काफी दौरा पड़ा था। उन्हें सोलापुर के अस्पताल में अॅडमीट किया था। डॉक्टर के कहने से उनके जीवन का अंतिम समय था और वे भी आचार्य बाहुबली महाराज जी के बहुत निस्सिम भक्त थे, बीमारी में ही बार बार बोल रहे थे, मुझे गुरुदेव की अंतिम दर्शन की तीव्र इच्छा है। मैं इसी हालत में उन्हें जाकर मिलना चाहता हूं। डॉक्टर को यह बात कहने के कारण कुछ समय बाद शरीर में थोड़ी स्थिरता मिलते ही गुरुदेव के दर्शन को ले जाने की अनुमति दी। उस समय गुरुदेव संघ के साथ बाबानगर (विजापुर) के तरफ विहार में थे। अस्पताल से हम लोग गाड़ी करके सीधे बाबानगर पहुंचे।

गुरुदेव के दर्शन पाकर पिताजी का मन फूला उठा। बड़ी भक्ति भाव से आनंदता के साथ उन्होंने गुरुदेव के चरण छूकर दर्शन लिया और गुरुदेव से प्रार्थना की 'गुरुदेव मैंने मेरा सारा जीवन अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थिति में बीता है। अब बच्चे लोग बड़े हो गये हैं। मेरे जीवन की अंतिम इच्छा है, जिस महान ग्राम पेनूर नगरी में मेरा सारा जीवन बीता है, मेरे मकान के सामने भगवान पार्श्वनाथ का विशाल मंदिर है। उसी मंदिर के दर्शन पाकर मैं जीवन में धन्य धन्य हो गया हूं। मेरी अंतिम सिर्फ एक ही इच्छा है, मेरे बच्चों के हाथों से उस मंदिर के सामने भव्य मानस्तंभ की निर्मिति हो जाए। मुझे आशीर्वाद दे दो।' गुरुदेव ने हम सभी बच्चों को नजदीक बुलाया और कहा मुझे पता है, आप लोगों की आर्थिक स्थिति मध्यम स्वरूप है। फिर भी मैं आप लोगों को आशीर्वाद देता हूं, यहां से अपने गांव जाओ और पिताजी के तीव्र इच्छा के अनुसार मानस्तंभ की निर्मिति के कार्य को तुरंत शुरू करो। आपको कुछ भी बाधा न आयेगी। आपका कार्य हमखास सफल होगा।

गुरुदेव का आशीर्वाद लेकर हम लोग गांव आ गये और तुरंत ही मानस्तंभ के निर्मिति कार्य को जुलाई 96 में शुरुआत की और देखते देखते ही सिर्फ 4 महीनों में मानस्तंभ निर्माण हो गया और गुरुदेव के पवित्र चरण कमलों की उपस्थिति में ही उस महान मानस्तंभ का 28 दिसम्बर 96 में पंचकल्याणिक बहुत बड़ी उत्सवता के साथ शुरू हुआ। हमारे पेनूर ग्राम में सिर्फ 3 जैन के मकान होने के बाद भी 24 पिंछी के विशाल संघ की उपस्थिति में पंचकल्याणिक बहुत ही धूमधाम से शुरू हुआ। दक्षिण प्रांत के हर गांव से जैन श्रावक-श्राविका सम्मिलित हुए थे। यही गुरुदेव की तप और ज्ञान की महानता हम जीवन भर मानते हैं।

पंचकल्याणिक बड़ी ही सज धज कर शुरू था और अचानक एक दिन पिताजी को अस्थिमा का बहुत बड़ा अॅटैक आ गया। तुरंत उन्हें पंढरपुर स्थित अस्पताल में अॅडमिट करना पड़ा। तबियत बहुत ही सीरियस थी। समय-समय के अनुसार दर्द का दौर बढ़ता गया और रात को 11 बजे डॉक्टर का फोन हम लोगों को आया आपके पिताजी अत्यन्त

सीरियस हो चुके हैं। अंतिम क्षण बीत रहे हैं। आप सभी संबंधी लोग तुरन्त अस्पताल पहुंच जाओ। मैं भागते-भागते ही प्रथम गुरुदेव की गुफा में पहुंचा। गुरुदेव से प्रार्थना की गुरुदेव सुबह 6 बजे का मूर्ति विराजमान का मुहूर्त है और पिताजी की तबियत बहुत ही सीरियस है। डॉक्टर का कहना है कि वे कुछ ही समय के साथी हैं। क्या करें? गुरुदेव ने 1 मिनट आंखें बंद कीं और बाद में कहा-गाड़ी लेकर पंढरपुर जाओ और पिताजी को गाड़ी में बिठाकर ले आना उन्हीं के हाथों से मूर्ति विराजमान हो जायेगी। आप कुछ भी चिन्ता न करो। आनन्द के साथ जाकर उन्हें ले आओ। कुछ समय गुरुदेव की यह वाणी हमें अजनबी लगी, लेकिन हमें पता था गुरुदेव दृढ़ तप के महान पर्वत हैं। उनके तप में एक महान शक्ति है। जो हमारे कार्य को निश्चित सफल बना सकती है। हम लोग गाड़ी से तुरन्त पंढरपुर अस्पताल में पहुंचे। डॉक्टर उन्हें सभी प्रकार की ट्रीटमेंट देकर उन्हें धोके के बाहर करने की कोशिश कर रहे थे लेकिन पिताजी का शरीर साथ नहीं दे रहा था।

जैसे ही हम लोगों ने गुरुदेव के आशीर्वचन की बात उनके कानों में दोहराई वैसे ही उनके शरीर में फरक आने लगा। बीमारी का दौर कम होने लगा और कुछ समय में ही उन्होंने पूछा पूजा अच्छी चल रही है ना, मैं भी पूजा में शामिल होना चाहता हूं। डॉक्टर भी आश्चर्यता के साथ पिताजी की ओर देखने लगे। उनके शरीर में काफी अच्छी स्वस्थता आयी थी। सुबह 4 बजे हम पिताजी को लेकर गाड़ी से पूजा मंडप में पहुंचे। जाते ही गुरुदेव के चरण का आशीर्वाद लिया। गुरुदेव को भी मन ही मन आनन्द हुआ। पूरी रात गंभीर बना हुआ पूजा मण्डप सगेसोयरे बड़े आनन्द से झूम उठे, नाचने, गाने लगे प्रभु के गुण गाने लगे। सुबह ठीक 6 बजे पिताजी से खुद गुरुदेव का सहारा लेकर 1008 पार्श्वनाथ भगवान की चतुर्मुख विशाल मूर्ति को उठाकर अपने कंधों पर लिया और हम बच्चों के सहायता के साथ पूजामण्डप से लेकर 500 फीट की दूरी पर मंदिर के सामने स्थित मानस्तंभ में 21 फुट ऊंचाई की सीढ़ियां चढ़कर भगवान को बड़े आनन्द के साथ विराजमान किया।

मेरे मन में उसी समय प्रश्न उठे। हमारे परिवार की आर्थिक स्थिति इतनी सामान्य होने के बाद भी सिर्फ 6 महीनों में यह महान और विशाल कार्य कैसे निर्माण हो सका? कुछ घंटों ही पहले जो व्यक्ति पूर्णरूप से सीरियस था जीवन के अंतिम क्षण गिन रहा था, उसी व्यक्ति में इतनी सारी शक्ति निर्माण होकर अपने कंधों में मूर्ति को लेकर भव्यता के साथ विराजमान कर दी यह शक्ति कहां से निर्माण हुई?

जिस पेनूर ग्राम में जैन कुल के सिर्फ तीन मकान कुल मिलाकर सिर्फ 20 श्रावक होते हुए भी 24 पिंछी का 7 दिन भव्यता के साथ आहारदान, 100×100 फीट का श्रावकों से पूरा भरा हुआ महान पण्डाल इस विशालता के साथ यह पंचकल्याणिक महानता से कैसी निर्माण हुई?

मैं तो मानता हूं, महान तप साधना से यह महान शक्तियों ने ही अपना निर्माण किया हुआ महान कार्य है। जो अपने सामान्य रूप से श्रावकों की दृष्टि में लाकर अपने ही में बना हुआ महान तप पर्वत है।

ऐसे महान मेरे गुरुदेव वात्सल्य रत्नाकर आचार्यरत्न श्री 108 बाहुबली महाराज जी को मेरा त्रिवार नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!

धर्मनगर के ट्रस्टी
रमेश कोठारी
पंढरपूर

चतुर्थकालीन संत-मेरे गुरूदेव

"विषयाशावशातीतो निरारम्भो परिग्रहः।
ज्ञान ध्यानस्तपोरक्तस्तपस्वी स प्रशस्यते॥"

प. पू. संमत भद्राचार्य का यह श्लोक मेरे गुरूदेव के लिए युक्ति युक्त है। मेरे गुरूदेव रत्नत्रय से सम्पन्न हैं। इनके जैसे दयालु, सहनशीलता के धनी संत इस युग में अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। कोई सा भी उपसर्ग, संकट आने दो, उसको सहन करना आप परम कर्त्तव्य समझते है। धर्मनगर संस्था ऊपर उठने तक अनेकों विघ्न आते रहे, विघ्न संतोषी अपना काम करते रहे परन्तु आचार्य श्री का एक ही वाक्य-"आने दो संकट, पीछे मुड़ना नहीं, पीछे मुड़कर देखने वाला कभी आगे नहीं बढ़ता। अपना काम करते रहो, विघ्न अपने आप भग जायेगें।"

धर्मनाथ भगवान की पंचकल्याण प्रतिष्ठा के समय भी दुष्ट लोगों ने अनेक तरह से प्रतिष्ठा, बंद करने का प्रयत्न किया तो भी मेरे गुरूदेव की तपस्या के सामने उनका कार्य निष्फल हो गया और *'न भूतो'* ऐसा तेरह दिन का पंचकल्याणक महोत्सव सम्पन्न हुआ। विघ्न संतोषी लोग देखते ही रह गये।

आपके सानिध्य में दुर्जन भी आ गये तो सज्जन होकर ही जाता है। इतना ही नहीं आपकी निकटता से भक्तजन इन्सान बनने के साथ ही साथ भगवान बनने की कला सीख लेते हैं। अतः मैं बार-बार सबसे कहता हूं कि-'चतुर्थकाल के मुनिराज को मैं पंचमकाल में देख रहा हूं।' अतः मैं कहता हूं-

जिनकी सुन्दर देह दिगम्बर वीतरागता की आकार।
जिनवाणी का सार बताने आये गुरू बाहुबली सागर॥
कथनी करनी को सम करके आतम बगीचा सींच रहे।
जैन धर्म की अजेय रथ को निज कंधों से खींच रहें॥

आचार्य श्री द्वारा लाखों जीवों का उपकार हुआ है। ऐसे दिगम्बराचार्य श्री बाहुबली महाराज जी की यशोगाथा लिखना गौरव की बात है। गुरू गुणगान के माध्यम से दिगम्बर मुनियों की महिमा का जन जन को परिचय प्राप्त होगा। इसी मंगल कामना के साथ आपके दीर्घायु की कामना करता हूं। पू. आचार्य श्री के चरण कमलों में कोटिशः नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!

धर्मनगर ट्रस्टी
श्री रविन्द्र आप्पासाहेब देवमोरे-इचलकरंजी

पुण्य पुरूष-मेरे गुरूदेव

परम पूज्य वात्सल्य रत्नाकर, गुरूदेव आचार्यरत्न बाहुबली महाराज एक पुण्य पुरूष है। आपकी सरलता, निर्भीकता, तपस्विता एवं विद्वता आज जैन समाज के लिए गौरव की बात है।

मुझे तो गुरूदेव की आज्ञा शिरोधार्य मानना ही मालूम है। उसी कारण आज मेरा जीवन भी पतित से पावन बन गया। आपसे मैं 25 साल पहले से परिचित हूं। आपकी अद्‌भुत कर्म-कठोरता और संघ-संचालन- कुशलता अनुकरणीय एवं प्रशसनीय है। आपकी वाणी से सरलता-मधुरता टपकती है।

मैं अल्पज्ञ, गुरू गुण का वर्णन नहीं कर सकता फिर भी पू. बाहुबली गुरू जैसा गुरू, दयावान, समतावान, वात्सल्यधारी न हुआ और न होगा। श्री वीर प्रभु से प्रार्थना है कि ऐसे मेरे गुरू दीर्घायु हो। जब तक सूर्य चन्द्रमा है तब तक इनका प्रकाश सभी के लिए मिलता रहे यही मेरी भावाज्जलि हैं।

गुरू सेवक धर्मनगर के ट्रस्टी
श्री आण्णासाहेब कोले-धर्मनगर

समता, वात्सल्यता और करूणा की मूर्ति-मेरे गुरूदेव

शस्यशामला भारत वसुन्धरा पर समय-समय में ऐसे देदीप्यमान रत्न हुए है, जिनकी ज्योति से वसुन्धरा जगमगा ही नही रही है अपितु आने वाली पीढ़ी के लिए अंधेरे में ज्योति निराश में आशा की किरण है। ऐसे महापुरूषों की रत्नावली में एक-दो रत्न नहीं हुए है, अनेक रत्न हुए हैं। रत्नों की इस श्रृंखला में एक विलक्षण रत्न है-"परम पूज्य सद्धर्म-प्रवर्तक, चारित्र चूड़ामणि, वात्सल्य रत्नाकर आचार्यरत्न बाहुबली जी।" 'यथा नाम तथा गुण' के अनुसार आप धीर, गंभीर, स्पर्शा दर्शी, मृदुभाषी, सुदीर्घ दर्शी, विद्वान, निपुण साधक हो।

एक बार की बात है-कड़कड़ाती धूप थी, भयंकर गर्मी थी। ऐसी गर्मी के समय गुरूदेव का विहार शुरू था उसी रास्ते से एक आदमी बैलगाड़ी में अनाज भरकर अपने घर ले जा रहा था। तीव्र ताप के कारण बैल चलने में असमर्थ थे। उस पर सवार आदमी एक ओर रवि किरणों से संतप्त था तो दूसरी ओर भूख प्यास से व्याकुल। बैलों की मंद गति से वह क्रोधित हो बैलों को जोर-जोर से ताड़ने लगा। तड़ाक की आवाज से ही करूणाधारी गुरूदेव का शरीर सिंहर उठा। आचार्य श्री उस दुख को देख अधीर हो उठे। वे किस प्रकार द्रवित हुए इसका वर्णन शब्दों में करना असंभव है।

आपका दिव्य जीवन समस्त प्राणी मात्र के-कल्याण के लिए ही है। एकता, संगठन और परस्पर मैत्री पर आप अत्यधिक बल देते है। आप में एक चुम्बकीय शक्ति है। ब्रह्मचर्य अवस्था से लेकर अभी तक मुझे आपका सान्निध्य मिला। आपके अति निकट रहने का सुवर्ण अवसर मिला। विहार में तो मैं हमेशा आपके साथ ही रहा।

आपकी प्रेरणा से ही 'त्यागी तपोवन धर्मनगर क्षेत्र' का निर्माण हुआ। अब वहां 108 फुट का तीर्थंकर स्तूप निर्मित हो रहा है। वह भी आपके आशीर्वाद से जल्दी से जल्दी बन जायेगा। बस मुझे आपको देखते ही गुरु देशभूषणाचार्य की याद सताती है। आप तो उनकी प्रतिमूर्ति लेकर जन-जन का कल्याण कर रहे हैं। ऐसे अद्वितीय साधक आचार्य श्री शतायु हो ऐसी पवित्र भावना के साथ उन वीतरागी सन्त के चरणों में शत शत नमन।

धर्मनगर ट्रस्टी

श्री धन्यकुमार मे वंके-मुम्बई

ज्योतिर्मय व्यक्तित्व-
मेरे गुरूदेव

परम पूज्य, वात्सल्य रत्नाकर, ध्यानी-ज्ञानी, आचार्यरत्न बाहुबली महाराज जी इस युग के महान आचार्य है।

उदात्त अन्तःकारण से युक्त होना, अत्यंत गंभीर होना, सुस्थिर चित्त होना, सहनशीलता, दुःखी दर्शन से अधीर हो उठना, क्षमाशीलता, निरभिमान, व्यवहार कुशलता आदि गुण आपके व्यक्तित्व को प्रातः स्मरणीय बनाते है।

आचार्य श्री ने हम-जैसे अनगढ़ मानवों को गढ़ाकर महामानव बनने की प्रेरणा प्रदान की। आपका जीवन कितना दिव्य है। कितनी भव्य भावनाओं से आप परिपूर्ण है। हृदय के कण कण में आर्शीवाद के उदात्तभाव भरे हुए है। कितना ज्योतिर्मय और तेजस्वी व्यक्तिमत्व है। आपने हमारे अन्धकाराच्छादित जीवन को सम्यक् ज्ञान प्रकाश दिया। उच्च से उच्चतर बनने बनाने की प्रेरणा प्रदान की। आपकी यह उच्चतर ज्योति हमेशा हमारे लिए सन्मार्ग दर्शक बनी रहे ऐसी वीर प्रभु से करबद्ध प्रार्थना कर आपके चरणों में कोटिशः शत शत नमन करता हूं।

गुरू भक्त

श्रीमान् रविकीर्ति रा. पाटील भोज

मेरे जीवनदाता

प. पू. सद्धर्म, प्रवर्तक, वात्सल्य रत्नाकर आचार्य रत्न बाहुबली महाराज जी जीवन गाथा पू. माताजी लिख रही है, यह सुनकर मुझे अतीव प्रसन्नता हुई।

गुरूदेव के गुणों को लिखना मुझ जैसे अल्पज्ञ के लिए असंभव काम है, फिर भी मैं लिखने का प्रयत्न कर रहा हूं।

गुरूदेव का प्रथम दर्शन मुझे सन् 1980 में बोर गांव निषिधिका में मौजी बंधन संस्कार के समय हुआ था। मेरे बच्चों को मैं मौजी बंधन संस्कारार्थ ले गया था। गुरूदेव ने बच्चों पर संस्कार तो डाल ही दिये, परन्तु बच्चों से ज्यादा संस्कार मेरे ऊपर हो गये। उस दिन से मैं गुरू का अनन्य भक्त हो गया। गुरूदेव के वात्सल्य से मेरा मन उनकी तरफ आकर्षित होने लगा। 1982 में गुरूदेव का चातुर्मास हमारे हुपरी ग्राम में हुआ। वह चातुर्मास अविस्मरणीय हो गया। हुपरी के श्रावक चातुर्मास के पहले केवल चाँदी का उद्योग करना इतना ही जानते थे। धर्म की ओर किसी का भी ध्यान न था। गुरूदेव के मधुर उपदेश से धीरे-धीरे पूरी समाज धर्म की तरफ मुड़ गया। हुपरी में श्री सिद्धचक्र विधान होने वाला था। उस समय गुरूदेव ने हम सबको कहा 'इस हुपरी नगरी को चंदेरी बनाना है।' बस गुरूदेव की वाणी सुनते ही हुपरी नगरी दुल्हन के समान सज गयी।

हुपरी के कुछ श्रावक व्यापार निमित्त गांव से कुछ दूर रहने हेतु चले गये। वहां भी जिनमंदिर की नींव पू. आचार्य श्री की प्रेरणा से डल गयी। कुछ ही दिनों में विशाल मंदिर निर्माण हो गया। उस नगर का नाम आचार्य श्री ने चाँदी नगर रख दिया। शांति कुंथ-अरहनाथ भगवान की प्रतिमा मंदिर में विराजमान होने के लिए आ गई। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा भी बड़े ही ठाट बाट से सम्पन्न हुई। इस प्रतिष्ठा में सौधर्म इन्द्र का पद गुरू आर्शीवाद से मुझे ही मिल गया।

गुरूदेव के आर्शीवाद से मुझे प्रत्येक कार्य में सफलता मिलती गई। गुरू प्रसाद से मेरा धन 'दिन दुगुना रात चौगुना' बढ़ता गया। मेरे पिताजी भी गुरूदेव के अनन्य भक्त थे, लेकिन मेरा वैभव देखने मेरे पिताजी नहीं रहे। अब गुरूदेव ही मेरे पिता है। अतः गुरूदेव के विशाल संघ को तीर्थराज सम्मेद शिखर जी यात्रा करवाने के भाव मन में आ गये। प्रतिवर्ष गुरूदेव से प्रार्थना करता रहा। गुरूदेव भी मेरे भावों की परीक्षा करते रहे। सन् 1999 में आचार्य श्री चातुर्मास में गरग (धारवाड) में थे। वहां भी मैं श्रीफल चढ़ाने हेतु गया। गुरूदेव के चरण पकड़कर मैंने प्रार्थना की-'इस बार मुझे सेवा करने का मौका दीजिये।' आचार्य श्री ने मेरी प्रार्थना सुन ली। और मेरे हाथ में आर्शीवाद का श्रीफल दे दिया। उस समय मेरे आनंद का पारावार नही था।

3 दिसम्बर के शुभ मुहुर्त पर मैं और फलटण निवासी श्रीमती कस्तूर बाई नेमचंद मेथा आचार्य श्री के विशाल संघ सहित धर्मनगर से शिखर जी यात्रा हेतु रवाना हुई। भव्य जुलुस के साथ-बड़े वैभव के साथ आनंदपूर्वक यात्रा की शुरूआत हुई। संघ में 28 त्यागी थे। 17 चौंके आहारदान आदि सेवा में थे। सेवा करने वाले लगभग 300 लोग थे। साथ में 25-30 गाड़िया थी। यह पूरा वैभव गुरूदेव के पुण्य से ही हमें प्राप्त हुआ था। जहां जहां गुरूदेव के चरण पड़ते, वहां वहां धर्म की ही गंगा बह रही हो ऐसा महसूस होता था। अपूर्व धर्म प्रभावना होती रही। जगह-जगह लोगों ने हमें बड़े प्रेम से सम्मानित किया। जंगल में जहां हमारा पड़ाव पड़ता, वहां तो ऐसा लगता जैसे एक छोटा सा नगर ही बस गया। उस नगर का नाम 'बाहुबली नगर' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इस प्रकार सभी क्षेत्रों के दर्शन करते हुए यह संघ 25 मार्च 2000 के शुभ मुहुर्त पर तीर्थराज अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठी जिस स्थान से सिद्ध भये, ऐसे अनादि निधन सिद्धक्षेत्र सम्मेद शिखर जी पर आ पहुंचा। वह दिन तो मेरे जीवन का सबसे मूल्यवान दिन था। जिस दिन गुरूदेव के साथ वंदना हो गई। मेरा जीवन सफल हो गया। भव भव का पाप धुल गया। इस पुण्य कार्य में मेरी मां का एवं मेरी धर्मपत्नी का बहुत बड़ा हाथ है।

बस गुरूदेव की सेवा का सौभाग्य मुझे हमेशा मिलता रहे। गुरूदेव दीर्घायु हो, ऐसी वीर प्रभु से प्रार्थना कर उनके चरणों में कोटी कोटी नमोऽस्तु करता हूं।

संघपति-गुरूभक्त

श्रीमान् आण्णासाहेब बलवंत सेंडूरे-हुपरी

मेरे गुरूदेव एक दीप स्तंभ

प. पू. गुरूदेव आचार्यरत्न बाहुबली मुनि महाराज जी की जीवनगाथा माताजी लिख रही है, यह सुनकर मुझे बहुत आनंद हुआ।

कौन व्यक्ति गुरू गुणगान कर सकता है? स्वर्ग के बृहस्पति को अशक्य है वह मेरे समान मनुष्य क्या गुणगान करेगा। फिर भी गुरूभक्ति से ओत प्रोत हुआ मैं अज्ञानी अपनी तोतली भाषा से गुरू गुणानुवाद करने का प्रयत्न कर रहा हूं।

मेरे गुरूदेव एक दीपस्तंभ है, जिससे मिथ्यात्व रूपी अंधकार दूर होकर सब जगह सम्यक् ज्योत प्रज्वलित हो रही है।

जब से आचार्य देव का चातुर्मास हमारे गांव में हुआ तब से गुरूदेव मेरे हो गये और मैं गुरूदेव का हो गया। मेरे ऊपर अगर किसी भी प्रकार की आपत्ति आ भी गयी तो बस गुरूदेव का स्मरण करने से दुगर्म आपत्ति तुरंत ही टल जाती है। पू. गुरूदेव के आर्शीवाद से ही मैं इस पद पर आ पहुंचा हूं। उनमें इतना वात्सल्य भरा हुआ है, इतने सरल भोले बाबा है, कभी भी इनके हृदय में मायाचार नहीं दिखेगा। कभी वे किसी को दुःखी नही देख सकते। हमेशा सबके हृदय का दर्द दूर करना ही उन्हें मालूम है। उनका चेहरा हमेशा प्रसन्न खिला हुआ कमल सदृश रहता है।

पू. गुरूदेव का आर्शीवाद एक अमृत है। वह अमृत जिन्हें मिलता है। वह अपने जीवन में मालामाल हो जाता है। इसलिए मैं सबसे बार-बार कहता हूं-आचार्यरत्न बाहुबली गुरूदेव के समान वात्सल्य और किसी में नही मिलेगा। ऐसे गुरू मिलना भी बहुत दुर्गम है।

पू. गुरूदेव चलते-फिरते तीर्थ है। जहां भी आपके चरण पड़ते हैं वह स्थान मंगलमय हो जाता है। प्रत्यक्ष उदाहरण भोज में शांति सागर स्मारक, कोथली क्षेत्र, धर्मनगर क्षेत्र आदि कितने ऐसे क्षेत्र है जहां पर आज लाखों प्राणी आकर पुण्य कार्य कर रहे है। जिनमंदिर निर्माण, जिर्णोद्धार आदि सर्वत्र प्रेरणा से ही हो रहे है। कोल्हपुर, सांगली, बेलगांव, सोलापुर, सातारा, धारवाड आदि जिलों में आपका नाम बच्चा-बच्चा जानता है। इन सभी स्थानों में विहार कर आपने सभी जीवों का जिर्णोद्धार किया। सबके मन का मिथ्यात्व रूपी अंधकार दूर कर उन्हें सुज्ञान से प्रकाशित किया। धर्म की ज्योत को घर-घर में पहुंचाया। सभी को जिनमंदिर का मार्ग दिखाया।

गुरूदेव का विहार प्रत्येक स्थान पर चिरकाल होता रहे, उन्हें दीर्घायु मिले ऐसी वीर प्रभु से प्रार्थना कर उनके चरणों में कोटी कोटी नमोऽस्तु करता हूं।

गुरू भक्त

श्रीमान् महावीर शंकर गाट-हुपरी

श्रमण परम्परा के जगमगाते नक्षत्र आचार्यश्री बाहुबली जी महाराज

परम पूज्य प्रातः स्मरणीय गुरुदेव आचार्यरत्न बाहुबली महाराज जी श्रमण परम्परा के जगमगाते नक्षत्र है। मेरे पिताजी आपके परम भक्त थे।

आपका दिव्य जीवन समस्त लोक कल्याण के लिए ही है। अहम् आप में कभी नहीं दिखा, न ही दिखा क्रोध। दूसरों की निंदा करना, दोष देखना मानो आप जानते ही न हो। लड़ाई-झगड़े देखकर आपका हृदय पिघल उठता है। आप किसी को दोषी नही देख सकते।

लड़ाई-झगड़े में यदि कोई वाक्-कटुता या गाली-गलौज को कारण बताता तो आप कहते 'सहनशील बनो', जिसके पास जो होगा वह वही देगा। जिसके पास गाली होगी, कटु वाणी होगी तो वह वही देगा, अमृतमय वाणी से बरसायेगा? जिसके पास पत्थर होगें वह आम कहां से देगा? अतः आपको जो भी चीज जिस रूप में प्राप्त हो उसे पाकर प्रसन्न रहिये।' ऐसी गुरुदेव की वाणी सुनकर हृदय प्रसन्न हो उठता है। आप श्रमण परम्परा के तेजस्वी प्रतिनिधि है। आपकी अद्‌भुत अनुशासनता और संघ-संचालन-कुशलता अनुकरणीय एंव प्रशसनीय है। आपके प्रति समस्त समाज की दृढ़ श्रद्धा एवं परम भक्ति है।

बेलगांव में आचार्यश्री का चातुर्मास करवाने का मेरे पिताजी ने बहुत प्रयत्न किया। आचार्यरत्न देशभूषण महाराज जी के तो वे अनन्य भक्त थे। उन्हें आचार्यश्री हमेशा कहते थे-'जयपाल अप्पन्नावर तो सिंह के समान है।' उन्हीं की सिंह गर्जना से हमें यहां पांच बार चातुर्मास करना पड़ा।

आज मेरे पिताजी नहीं हैं, मैं उन्हीं की ओर से गुरुदेवश्री के चरणों में भावांजलि अर्पित कर रहा हूं।

ऐसे गुरूवर परम दयालु के चरणों में, मैं अपने में-आत्मज्योति जागृति के लिए कोटि-कोटि नमन करता हूं।

गुरू भक्त

श्रीमान् राजेन्द्र जयपाल अप्पन्नावर

बेलगांव

मेरे श्रद्धा केन्द्र-मेरे गुरूदेव

जहां भी परम पूज्य गुरूदेव आचार्यरत्न बाहुबली महाराज जी का चातुर्मास होता है, मैं वही पहुंच जाता हूं। सब जगह विहारों में मैं उनके साथ ही रहता। उनके साथ रहने से मुझे नयी-नयी बातों का अनुभव हुआ, कई चीजे देखने को मिली। वे सदैव हमें रास्ते में अनुभव की बातें बताते, कथा-कहानी सुनाते, कभी आत्मा और जड़ का भेद समझाते, तो कभी संसार की असारता के बारे में बताते। वे कभी-कभी तत्वों की चर्चा करते। हम 15-15 मील का रास्ता सहज की तय कर जाते। थकान-भूख-प्यास मालूम ही नहीं पड़ती, बहुत ही आनंद आता है।

कोल्हापुर जिले का छोटा सा गांव हैं रूई, जहां प्रायः साधु त्यागी पधारते रहते है। मुस्कराता चेहरा, सुन्दर सौम्य प्रभावशाली व्यक्तित्व को देखते ही आँखे टिक गयी, हाथ नमन के लिए जुड़े तो कुछ क्षण के लिए जुड़े ही रह गये। प्रथम दर्शन ने ही मन को अभिभूत कर लिया। वे है, परम पूज्य गुरूदेव-आचार्यरत्न बाहुबली जी। किशोरावस्था में ही उनके प्रवचनों से मन वैराग्य-भावना में रंग गया। शीघ्र ही भावना साकार भी हो गयी। जैसे-जैसे दिन बीतते गये, गुरूदेव श्री के अगणित गुणों से में कुछ गुणों को जानने समझने की बुद्धि आती गयी। वे मेरे श्रद्धा केन्द्र है और रहेंगे। हमारा गांव तो आपके चरण रज से पुनीत हो गया है। आपके चातुर्मास की याद मैं कभी भूल नहीं सकता।

अंत में मैं इन परमोपकारी आचार्यश्री के चरणों में त्रिधा-त्रिकाल श्रद्धा भक्ति से त्रिवार नमोऽस्तु करते हुए आप शतायु होकर आपकी छत्रछाया हमें दीर्घकाल तक प्राप्त होती रहे।

गुरु चंचरिक

श्री राजकुमार मुरचिट्टे-रूई

"जग विख्याता मेरे गुरूदेव"

इस वसुन्धरा पर सदा ऐसे महान पुरूष अवतरित हुए है जिन्होंने मनुष्य जन्म को स्व पर कल्याण में लगाकर अपनी आत्मा को परमात्मा बनाने की राह ग्रहण की है।

'पावनानि हि जयन्ते, स्थानान्यपि सदाश्रयाता' अर्थात् संतजनों के आश्रय से सामान्य स्थल भी तीर्थस्थल हो जाते है।

परम पूज्य वात्सल्य रत्नाकर, गुरूदेव, आचार्यरत्न बाहुबली महाराज जी का पितृवत् वात्सल्य मुझे मिलता रहा। उन्हीं के आर्शीवाद से एवं प्रेरणा से फलटण में मेरी मां ने समवशरण मंदिर निर्माण करवाया, पू. आचार्य श्री के अधिनेतृत्व में ही महान पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। सन् 1989 में फलटण में आचार्य श्री ने अपने विशाल संघ सहित चातुर्मास किया, उस समय बृहत 29 दिन का त्रिलोक मंडल विधान सम्पन्न हुआ। इस विधान में प्रमुख सौधर्म इन्द्र का पद हमें ही प्राप्त हुआ। धर्मनगर क्षेत्र में पू. आचार्य श्री की प्रेरणाा व आर्शीवाद से जो 'न भूतो' ऐसा अढ़ाई द्वीप विधान हुआ, उस समय भी पू. आचार्य श्री के आर्शीवाद से हमें त्रिलोकेन्द्र पद प्राप्त हुआ।

आचार्य श्री के विशाल संघ को तीर्थराज सम्मेद शिखर जी हेतु ले जाने की कई सालों से मेरी मां की इच्छा थी। इस वर्ष उन्होंने मेरी मां की इच्छा पूरी कर दी। 3 दिसम्बर 1999 के शुभ दिन द्वय संघपति व 300 श्रावक श्राविका सह, आचार्य श्री ने विशाल संघ सहित अपना विहार प्रारंभ किया।

विहार में गुरूदेव के चरण जहां पड़ते वह भूमि धन्य हो जाती। मानो एक नगर ही बसा है ऐसा प्रतीत होता था। गुरूदेव के पितृवत वात्सल्य के कारण संघ के साथ जो भाविक आते थे, उसमें से कुछ चौंके लगाते, कुछ लोग चौंके में पानी लाते, कुछ लोग संघपति के साथ आगे पीछे की जगह देखने जाते, कुछ आचार्य श्री व अन्य त्यागियों के साथ चलते थे। चलता-फिरता 'बाहुबली नगर' साथ ही था। विहार में अजैन-लोग दिगम्बर मुनि को देखकर अचम्बित हो जाते। कोई नागा बाबा कहता, कोई कुछ कहता, कोई प्रणाम करता। आचार्य श्री सबको समान आर्शीवाद देकर मंगल देशना भी देते।

25 मार्च 2000 को आचार्य श्री अपने विशाल संघ सहित तीर्थराज सम्मेद शिखर जी पधारे। 26 मार्च को आचार्य श्री के विशाल संघ व संघपति सह सभी श्रावक श्राविकाओं ने शाश्वत में स्थित सभी कूटों की मन, वचन, काया पूर्वक वंदना की। सभी ने प्रत्येक टोंक पर अभिषेक-पूजा, स्तुति-स्तोत्र पढ़ते हुए आनंद से दर्शन कर अपना जीवन सफल बनाया। गुरूदेव के कारण ही आज मेरा जीवन सफल हो गया।

इस 'जय जैनाचार्य' ग्रन्थ समर्पण के पावन प्रसंग पर मैं परम पूज्य आचार्य श्री के चरणों में शत शत नमन करती हूं तथा मंगल कामना करती हूं कि दीर्घकाल तक इसी प्रकार आप विश्व में धर्मध्वजा फहराते रहें।

ज्ञान गंगा से भरकर लाये तुम रत्नत्रय की गागर।
जुग जुग जिओ इस धरती पर मेरे गुरू बाहुबली सागर॥

संघपति-गुरूभक्ता

कु. स्नेहल नेमचंद मेथा-फलटण

परम उपकारी मम् गुरू

प.पू. गुरूदेव आचार्यरत्न बाहुबली मुनि महाराज जी के चरणों में मेरा शत शत नमोऽस्तु!

मेरे पिताजी श्री जम्बूराव सौदत्ते पू. आचार्य श्री के अनन्य भक्त थे। आचार्य शांतिसागर, आचार्य रत्न देशभूषण महाराज जी की उन्होनें बहुत सेवा की थी। हमेशा वे कोथली क्षेत्र में चौंका लगाते थे। हम छह भाई। सभी पर उन्होनें धर्म के संस्कार डाले। पू. आचार्य श्री का जब 1992 में हुपरी चातुर्मास हुआ तब से हमारी आस्था उनके प्रति और भी बढ़ गई।

भोज में गुरूदेव की प्रेरणा से जो शांतिसागर स्मारक बना हैं। उसमें भी मेरे पिताजी ने दान राशि देकर सहयोग किया है।

पू. शांति सागर महाराज जी की तपस्या का परिचय देने के लिए पू. आचार्य श्री ने 'मानवता पथ दर्शन रथ विहार' पूरे देश में करवाया। इस कार्य में पू. गुरूदेव ने मुझे भी कुछ सेवा का मौका दिया। रथ प्रस्थान के समय कर्नाटक-महाराष्ट्र के मंत्री आमदार, प्रतिष्ठित लोग भोज में एक ही स्टेज पर उपस्थित थे। मेरे पिताजी भी इस कार्य में अग्रसर थे।

पू. आचार्य श्री ने इस भाग में बड़े-बड़े स्मारक, संस्थायें आदि खुलवाकर जगह जगह धर्म प्रभावना की है। जहां तहां जिनमंदिर निर्माण, जिर्णोद्धार, त्यागी निवास, मंगल कार्यालय इन्हीं की प्रेरणा से बने हैं आपकी वात्सल्यता के कारण कोई भी कार्य करने के लिए मानव तैयार हो जाता है। 1985 में मेरे पिताजी ने आचार्य संघ की सम्मेद शिखर यात्रा करवाई। हमारे पिताजी के कारण हम पतित से पावन बन गये।

क्षुल्लक दीक्षा धारणकर उन्होनें अंत में समाधि साध ली। धर्मनगर क्षेत्र में मेरी मां ने भगवान धर्मनाथ की सवा ग्यारह फूट की विशाल प्रतिमा विराजमान की। मेरे पिताजी ने गुरूचरणों में अपना जीवन सफल बना लिया। मेरी मां अभी भी इतनी वृद्ध होकर नित्य आहार दान करती है। धर्मनगर क्षेत्र में रहकर वह अपना जीवन धर्म ध्यान में ही बिताती है। यह सब गुरूदेव का उपकार है।

आपके आर्शीवाद से ही हम पतित से पावन बन गये। हमें हमेशा आपका उपदेश मिलता रहे यही वीर प्रभु से प्रार्थना करते है।

गुरू भक्त

श्रीमान श्रीकांत जंबूराव सौदत्ते-हुपरी

आत्म सुधार करो, जीवन थोड़ा है

जिस पुष्प में सुगंध होगी, वहां भ्रमर स्वतः आकर गुंजारव करने लगते है। प. पू. आचार्यरत्न बाहुबली मुनिराज का जीवन भी पुष्प के सदृश है। संयम की सुरभि से सुगंधित है, ब्रह्मचर्य से उनका मुख ओज-तेज से अनुपूरित है। अतः इसी कारण श्रद्धालु जन भ्रमर की तरह स्वतः ही आकृष्ट हो जाते है। विशुद्धता के भाव से किए गए महापुरूषों के दर्शन अनंत भवों की श्रृंखला के उच्छेद करने वाले होते है।

आप हमेशा बोलते है- 'आत्म सुधार करो, जीवन थोड़ा है' आपकी वचन सिद्धि तो ऐसी है जैसे पत्थर की लकीर।

इन गुणों के सागर, गुरूदेव आचार्य श्री के चरणों में शत शत वंदन।

सौ. कांता श्रीपाल आवटे
इचलकरंजी

मेरे गुरूवर आकाशदीप

प. पू. गुरूदेव आचार्यरत्न बाहुबली महाराज जी को जब से मैं देखता आ रहा हूं, तब से आचार्य श्री ने लाखों लोगों को मांस भक्षण आदि व्यसनो का त्याग करा दिया है।

ऐसे महाउपकारी सद्गुरू इस वर्तमान काल में बहुत कम मिल पाते हैं। जो स्वयं सत् चारित्र शीतला की भूमिका पर आरूढ़ होकर धर्म से पतोन्मुख हुए को उठाने में और उठे हुओ को सन्मार्ग दिखाने में हमेशा रत रहते है। धर्म का स्तंभ इन्हीं महापुरूषों से टिका है। ये संसार सागर में डूबते हुये जीवों को उसी प्रकार सहारे है जैसे-भटके हुए निशा-यात्री के लिए 'आकाशदीप'।

मेरे गुरूवर आकाश दीप की तरह दीर्घायु हो, यही वीर प्रभु से प्रार्थना।

नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!

श्री पद्माण्णा बा. हेरवाडे
दिगम्बर जैन समाज के चेअरमन-रूई

चिरस्मरणीय चातुर्मास

प्रातः स्मरणीय-अहर्निश वंदनीय-सदा स्तवनीय परम पूज्य गुरूदेव आचार्य रत्न बाहुबली महाराज जी का अकलूज नगर में चातुर्मास करने की हम अकलूज वासियों की तीव्र तमन्न थी। लेकिन उन करूणा सागर का चातुर्मास का योग मिलना बहुत भाग्य का था।

सचमुच अकलूजवासी महाभाग्यवान थे, जिससे गुरूदेव के चातुर्मास का योग हमें मिला। गुरूदेव के आगमन से अकलूज नगर में हर्षोल्लास का सागर ही उमड़ आया। जिनमंदिर में जहां देखो तहां श्रावकों की भीड़ ही भीड़ दिखाई देने लगी। आचार्य श्री की दुकान शुरू हो गयी, आचार्य श्री की दुकान में अध्यात्मिक माल बिकन लगा। संघस्थ आर्यिका माताजीओं ने सभी को भरपूर ज्ञान दिया।

चातुर्मास में रक्षाबंधन, दीक्षा समारोह, अनेक प्रकार के मनोरंजन कार्यक्रम, धार्मिक परीक्षायें आदि अनेकानेक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। पर्यषण पर्व में तो उपवास वालों की संख्या बढ़ती चली गई। दशलक्षण के 10 उपवास, पंचमेरू के 5 उपवास, रत्नत्रय के 3 उपवास करने वालों की संख्या कम से कम 100 थी। दीपावली के बाद 'न भूतो' ऐसा 'सर्वतोभद्र विधान' सम्पन्न हुआ। उसी समय 'अखिल भारतीय जैन अल्प संख्यक सम्मेलन' आयोजित किया गया।

सभी कार्यो में हमें सफलता मिली। क्योंकि आचार्य श्री में ऐसी मधुरता है जिससे दुष्ट भी सज्जन बन गये, विपरीत बुद्धि वाले समतावादी बन गये। आचार्य श्री की वाणी में इतनी मधुरता है कि हमारे समाज में जो वाद विवाद था, वह हट गया। जैसे नदियों का संगम होता है वैसे ही इधर परस्पर विरोधी लोगों का विरोध दूर हो संयम हो गया।

गुरूदेव के महान उपकारों के हम सदैव ऋणी रहेंगे। आचार्य श्री की छत्र छाया सदैव हमारे ऊपर रहे, आप दीर्घायु होकर इस पृथ्वी तल पर हमेशा धर्म प्रभावना करते रहे। ऐसी वीर प्रभु से प्रार्थना करके हम अकलूजवासी ऐसे पावन चरणों में शत शत नमोऽस्तु करते है।

गुरू भक्त

श्री प्रद्युम्न कुमार गांधी एवं समस्त चातुर्मास समिति

अकलूज (सोलापुर)

मेरे हृदयेश्वर आचार्य श्री

प. पू. गुरूदेव आचार्यरत्न बाहुबली मुनि महाराज जी के चरणों में मेरी और से एवं मेरे परिवार की ओर से कोटी कोटी नमोऽस्तु।

गुरूदेव का परिचय मुझे तो बचपन से ही है। मैं जब छोटा था तब मेरी मां चौंका लगाती थी और मेरे पिताजी पड़गाहन करने के लिए खड़े होते थे तो गुरूदेव का पहला आहार हमारे ही घर होता था। मेरे माता-पिता इतने भक्तिभाव से चौंका लगाते थे कि उसका फल तुरन्त ही उन्हें मिलता था। गुरूदेव के आर्शीवाद से मेरे पिताजी ने श्रावक धर्म का उत्कृष्ट रूप से पालन करते हुए अंत में क्षुल्लक दीक्षा धारणकर सल्लेखना पूर्वक समाधि साध ली। दिगम्बर व्रत अंगीकार करने की तीव्र भावना हेतु भी वे रोगमय शरीर के कारण महाव्रती नहीं बन पाये। समाधि के पूर्व मन में दिगम्बर मुनि होने की तीव्र भावना जागी लेकिन गुरूदेव की अनुपस्थिति में वह भावना वैसी की वैसी रह गयी। गुरूदेव का स्मरण करते करते अंत में उन्होनें अपने प्राणों का विसर्जन कर दिया। मेरी माता ने भी यही मार्ग स्वीकार किया। पू. आचार्य श्री के साथ रहकर उत्तम श्राविका के व्रत पालते हुए वे पुण्य कमा रही है।

प्रतिदिन आज भी आहार दान देकर अपना जीवन सफल बना रही हैं।

गुरूदेव के आर्शीवाद से हम मालामाल हो गये। मेरी पत्नी सौ. सुरेखा भी गुरूदेव की बचपन से ही अनन्य भक्ता है। बस गुरूदेव का आर्शीवाद हमेशा मेरे परिवार के ऊपर रहे। इस भूतल पर चिरकाल तक वे धर्म प्रभावना करें। यही मेरी वीर प्रभु से प्रार्थना हैं।

गुरू भक्त

श्रीमान् देवकुमार जंबूराव सौंदत्ते-हुपरी

कल्याण केन्द्र के संस्थापक-मेरे गुरूदेव

परम पूज्य गुरूदेव आचार्य रत्न बाहुबली महाराज का जैन संस्कृति के संरक्षण तथा प्रचार में महान् योगदान है। आपकी प्रेरणा से हजारों लोग सन्मार्ग की ओर लगे हुए है। प्राणीमात्र की कल्याण की भावना-आपमें सदैव रहती है। आपकी मर्म स्पर्शी वाणी का श्रोताओं पर विशेष प्रभाव पड़ता है। आप स्वयं में एक सजीव संस्था है। आपके सदुपदेश से अनेकों संस्थाएं सस्थापित हुई। 1990 में एक ऐसी संस्था स्थापित हुई, जिसका नाम 'तीर्थंकर तीर्थ त्यागी तपोवन धर्मनगर' रखा गया। जहां पर वृद्ध त्यागी अपना संयम निरतिचार रूप से पालन कर रहे है। खास तौर पर यह क्षेत्र वृद्ध त्यागियों के लिए ही बनाया गया है। कितने ही वृद्ध साधुओं ने यहां रहकर धर्मध्यान कर अपनी समाधि साध ली। इतना ही नही, वहां हमेशा 'बाल धर्म संस्कार शिविर होते रहते है। उस शिविर में प्रतिवर्ष 500/600 बच्चों सुसंस्कारित होते है।

पंडित वर्गो को भी यहां ज्ञान (पूजा पाठ अभिषेक संबंधी) मिलता हैं। वृद्ध व्रती श्रावक अपने आत्मा कल्याण कर रहे हैं।' इतना ही नहीं समन्वय साधक गुरूदेव ने समाज में समन्वयवादी वातावरण बनाने में काफी प्रयत्न किया। इससे सभी को प्रेरणा लेना चाहिए और ऐसे मधुर कार्यो को करना चाहिए। जिससे भगवान महावीर का नाम गौरवमयी बने, तब ही महावीर शासन में जन्म लेने की सार्थकता है।

धर्मनगर ट्रस्टी

श्री बुधराज सेठी-इचलकरंजी

जीवन्त तीर्थ मेरे आचार्य देव

साधुनां दर्शनं पुण्यं, तीर्थभूता हि साधवः।
कालेन फलते तीर्थं, सद्यः साधु समागमः॥

प.पू. शांतमूर्ति, वात्सल्य रत्नाकर, सद्धर्म प्रवर्तक, बाल ब्रह्मचारी, आचार्यरत्न बाहुबली जी महाराज को जीवन्त तीर्थ की उपमा दी जाय तो कुछ अतिश्योक्ति नहीं होगी। जड़भूत तीर्थ तो समय आने पर फल प्रदान करते हैं किन्तु सद्‌गुरुओं का समागम तत्क्षण ही उत्तम-शुभ फल प्रदान करता है। निर्ग्रंथ दिगम्बर गुरुओं का समागम तो इह-परलोक में सुख प्रदान करता है तथा श्रद्धा का आधार केन्द्र है। आचार्यश्री इस युग के परम प्रकाशस्तंभ हैं, श्रमण संस्कृति के श्रेष्ठ उपासक और रत्नत्रय के प्रकाशपुंज हैं। महाराष्ट्र-कर्नाटक के कोने-कोने में मिथ्यात्व रूपी अंधकार छाया था उस मिथ्यातम को आचार्यश्री ने अपने उपदेशामृत से दूर किया। जहां जिनमंदिर नहीं थे वहां आपने प्रेरणा देकर मंदिरों की निर्मिती की, जीर्णोद्धार, त्यागी निवास, अनेक प्रकार की संस्थायें आपकी प्रेरणा से खुल गयी हैं। अतः आपको मैं जीवन्त तीर्थ की उपमा देता हूं।

हमारा नगर तो आपके चरण रज से ही सुजलाम् सुफलाम् हो गया है। आपके चातुर्मास की याद हम कभी भूल नहीं सकेंगे। अंत में मैं इन परमोपकारी गुरुदेव के चरणों में त्रिधा-त्रिकाल श्रद्धा भक्ति से शत-शत नमोऽस्तु करते हुए आपके आशीर्वाद की कामना करता हूं तथा वीर प्रभु के चरणों में भावना भाता हूं कि गुरुदेव दीर्घजीवी होवें तथा आपका आशीर्वाद हमें हमारे समाज को प्राप्त होता रहे।

गुरुभक्त
श्रीमान् रावसाहेब आ. पाटील
माजी नगराध्यक्ष
एवं जैन समाज-कुरूंदवाड

मेरे आराध्य गुरुदेव

प.पू. वात्सल्य रत्नाकर, सद्धर्म प्रवर्तक, आचार्यरत्न श्री 108 बाहुबली जी महाराज के पावन चरण कमलों में त्रियोग शुद्धि पूर्वक शतशः नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!

आपकी गौरव गाथा को मैं अज्ञ-पामर प्राणी क्या लिख पाऊंगा। जिस प्रकार आकाश के बीच चांद चमकता है उस चांद को मैं बौना कैसे छू पाऊंगा।

आचार्य परमेष्ठी पद को प्राप्त करके आप विशाल चतुर्विध संघ का नेतृत्व कर रहे हैं। आपका तप-तेज-ज्ञान और यश उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है, इसमें कोई संदेह नहीं कि आचार्य परमेष्ठी में आगम के अनुसार जितने गुण होने चाहिए, वे समस्त गुण आपमें विद्यमान हैं।

मुझे आपका सर्व प्रथम दर्शन कुरुंदवाड में ही हुआ था। आज 25 साल से मैं आपसे परिचित हूं। केवल परिचय ही नहीं बल्कि अत्यन्त निकट सम्बन्ध हो गया है। आपके सम्पर्क में जो व्यक्ति एक बार भी आ गया वह आपकी सौम्यमूर्ति को विस्मृत नहीं कर सकता। आपकी मधुर वाणी तथा सौम्य छवि ने जन जन के हृदय में अपना स्थान बना लिया है। आपकी सरलता व भद्रता ने देश और समाज पर मानो जादू कर दिया है। आपकी अमृतवाणी के मधुर स्रोत से पत्थरवत् हृदय वाले लोग भी तृप्त हो जाते हैं।

आपकी सेवा करने में मुझे अपूर्व आनन्द का अनुभव होता है। कई बार मैंने आचार्यश्री के साथ विहार किया। पू. आचार्य श्री 1980 में श्रवणबेलगोला की ओर विहार किये तब आचार्य श्री प्रतिदिन 70/75 कि.मी. दूरी तक विहार करते थे। साथ में चलने वाले श्रावक तीन टाईम में अलग-अलग श्रावक बदल जाते थे, एक टाईम में चलने वाले श्रावक थक जाते थे लेकिन आचार्य श्री के चेहरे में थकान की सिकर नहीं दिखती थी।

जब आचार्य श्री श्रवणबेलगोला पहुंच गये तब तो एलाचार्य विद्यानंदी जी, आचार्य विमलसागर जी के संघस्थ त्यागीवृन्द आदि 543 त्यागी आचार्य श्री के आगवानी के लिए आये थे। बहुत ही भव्य स्वागत हो गया था।

प.पू. गुरुवर्य परम शांत, सरल स्वभावी, निस्पृह एवं ख्याति-पूजा से दूर रहते हुए हम लोगों का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। आपकी सेवा करने में एवं आपके चरण सान्निध्य में बैठने में अपार शांति मिलती है।

बस, आप ही मेरे आराध्य गुरुदेव हो।बस आपकी छत्रछाया हमें दीर्घकाल तक प्राप्त होती रहे।

गुरुभक्त
श्री बाबासाहेब ने. पाटील
कुरुंदवाड

मेरे भोले बाबा का आशीर्वाद

मेरे ससुरजी श्री बाबूराव आगरे परम पूज्य गुरूदेव आचार्यरत्न बाहुबली महाराज के परम भक्त है। उनके कारण ही मैं भी गुरूदेव का अनन्य भक्त बना। वैसे तो हमारा पूरा परिवार गुरूदेव की भक्ति में रंगा हुआ है। अगर मुझे 15 दिनों में एक बार गुरूदेव का आर्शीवाद नहीं मिला तो मैं बैचेन हो जाता हूं। उनके आर्शीवाद से ही मैं इतने उत्तुंग शिखर पर जा पहुंचा। मेरे गुरूदेव बहुत भोले-बाबा है। उनका हृदय दया से ओत प्रोत है। उनका हाथ जीव कल्याण के लिए हमेशा ऊपर रहता है। मेरे भोले बाबा का आर्शीवाद एक ऐसा अमृत है जिसे बार बार पीने पर भी तृप्ति नहीं हो पाती, मन में सदैव यह बात रहती है कि इसके पश्चात् फिर कब आचार्य श्री के दर्शन होगें। उनके चरण कमल छोड़कर अलग होने को मन नहीं मानता। बस मैं वीर प्रभु के चरणों में यही विनती करता हूं कि ऐसे पू. आचार्य देव बाहुबली महाराज जी का चरण सानिध्य हमें हमेशा मिलता रहे। ऐसे जगत उपकारी, सरल स्वभावी मेरे भोले बाबा के चरणों में कोटि कोटि नमोऽस्तु........।

गुरू भक्त

श्री जयपाल द. चिंचवाडे-सांगली

मेरे आप्पा के सुधारक ऋषिराज

मेरे आप्पा का नाम - आप्पासाहेब पाटील। वे कुरुंदवाड के रहने वाले। वे एक बिगड़े हुए इन्सान थे। आप्पा जी के कारण परिवार के सभी सदस्य काफी परेशान रहते थे। क्योंकि वे शराब बहुत पीते थे।

आज वे बीस साल पहले प. पू. आचार्यरत्न श्री बाहुबली महाराज जी का संघ हमारे कुरुंदवाड़ में चातुर्मास के लिए आया था। हमारे घर में आचार्य श्री का आहार हुआ। उस समय आप्पा जी ने उनके दर्शन किये। पू. आचार्य श्री ने उनके हाथ में कमंडलु दे उन्हें मंदिर तक ले गये और वहां बहुत कुछ समझाया। वैसे मेरे आप्पा जी समझदार थे, वे भूतपूर्व नगराध्यक्ष थे, नगर के लोग उनसे डरते भी थे। उनकी सभी स्थानों में बहुत प्रतिष्ठा थी। आचार्य श्री के समझाने से मेरे आप्पाजी ने हमेशा के लिए शराब पीना छोड़ दिया और वे गुरूदेव के अनन्य भक्त बन गये। आज मेरे आप्पा जी इस दुनिया में नही हैं, अतः उनकी ओर से आप्पा जी के सुधारक ऋषिराज को दीर्घायु हो, ऐसी वीर प्रभु से प्रार्थना कर गुरूदेव के चरणों मे शत नमन करता हूँ।

श्री दादासाहेब आप्पासाहेब पाटील
कुरुंदवाड

जीवों का जिर्णोद्धार करने वाले मेरे गुरूदेव

प्रातः स्मरणीय गुरूदेव आचार्यरत्न बाहुबली मुनि महाराज क्षुल्लक अवस्था में औखाड आये थे। औखाड गांव कुरूंदवाड के नजदीक ही है। उस समय हमें धर्म के बारे में कुछ भी जानकारी नहीं थी। औखाड पंचकल्याणक के समय जब आचार्य श्री वहां आये तब हमने उन्हें नगर में पधारने के लिए आमंत्रण नहीं दिया। तत्पश्चात्-नृसिंहवाडी में नूतन जिन मंदिर निर्माण करने हेतु अनेकों बार आचार्य श्री वहां आये। उस समय हमें उनका सानिध्य प्राप्त हुआ। उनके सानिध्य में रहकर हमें सच्चे धर्म का मर्म प्राप्त हुआ। इसी बीच कुरूंदवाड के जिनमंदिर की प्रतिष्ठा करने का प्रस्ताव निश्चित्त हुआ। समाज के सभी लोग मिलकर भारत गौरव आचार्यरत्न देशभूषण महाराज जी के पास पहुंचे, गुरुदेव के चरणों में हम सभी ने प्रार्थना की-पू. बाहुबली महाराज जी को प्रतिष्ठा हेतु हमारे यहां भेजने की कृपा कीजिए। आचार्य श्री ने हमारी विनती स्वीकार कर ली और गुरूदेव बाहुबली महाराज को हमारे कार्य श्री सफलता हेतु भेजन दिया गुरूदेव का आगमन हम भव्यों के लिए आनंद का कारण बन गया। आचार्य श्री के मुस्कराहट भरे चेहरे ने हम नगर वासियों के मन को जीत लिया। नवयुवक मंडल जो सप्त व्यसनों में लिप्त था, उनका मुंह फिर गया। सबकी दौड़ बस आचार्य श्री की ओर। व्यसन छूट गये, कुकर्म छूट गये, नीति बदल गयी। आचार्य श्री ने सभी को सन्मार्ग दिखाया। तदनन्तर सन् 1977 के चातुर्मास का सौभाग्य हमें ही मिला। उस चातुर्मास से हमारा भाग्य खुल गया। चातुर्मास के अंतराल में बहुत कुछ कार्यक्रम सम्पन्न हुए। मिथ्यात्व में डूबा हुआ समाज सन्मार्ग पर आ गया। केवल जैनी ही नही अजैनी भी गुरूदेव के चरणों के दास बन गये। कुरूंदवाड का चातुर्मास अर्थात् जीवों का जिर्णोद्धार समझना। इस चातुर्मास की कई उपलब्धियां रही जो आज भी उनकी स्मृति को ताजा कर देती है। पूरे नगर के जैन-अजैन, बच्चे से बूढ़े तक सब लोग आचार्य श्री को जानते है। इतना ही नहीं, वे सब लोग आज भी 'अपने महाराजजी' ऐसा बोलते हैं;

आपके द्वारा आज नगर-नगर गांव-गांव में महती धर्म-प्रभावना हो रही है। आपके प्रयास से श्री धर्मनाथ तीर्थंकर तीर्थ त्यागी तपोवन धर्मनगर संस्था वृद्धिगत को प्राप्त हो रही है। अनेकों स्थानों पर जिनमंदिर, जिर्णोद्धार आदि कार्य से आप धर्म महिमा को चतुर्गुणी कर रहे है।

आप चिरकाल तक धर्मप्रभावना करते हुए इस पृथ्वी पर विचरण करते रहे है। आपके द्वारा सभी जीवों का कल्याण होता रहे।

इसी मंगल कामना के साथ आपके चरण कमलों में मेरा शत-शत नमन है।

जिनवाणी महिला मंडल-अध्यक्ष
सौ. विजया रावसाहेब पाटील-कुरूंदवाड
समस्त कुरूंदवाड समाज

आदर्श मेरे गुरूदेव

परम पूज्य वात्सल्य रत्नाकर आचार्य रत्न बाहुबली महाराज जी श्रमण संस्कृति के उद्धारक आदर्श गुरूदेव है। फलटण नगर में आपेक जन्म दिन समारोह के दौरान (16 दिसम्बर 1999) जो बड़ी धूमधाम से धर्म प्रभावना हुई थी, उसको आज भी भूला नहीं जा सकता। जब आपने अपने विशाल संघ सहित फलटण में प्रवेश किया, तब मुझे ऐसा लगा, चा.च. आचार्यश्री शांतिसागर महाराज जी का ही फिर से आगमन हो गया हो। आचार्यश्री शांतिसागर महाराज जी के संघ को बाम्बे के संघपति सम्मेद शिखर जी को लेकर गये थे। उसको बीते हुए अब 70/72 वर्ष हो चुके हैं। उसके बाद इस वर्तमान परिस्थिति में आपका ही इतना विशाल संघ हम सबको देखने मिला, केवल देखने ही नहीं मिला बल्कि इतने विशाल संघ का संचालक आप कैसे करते हो, यह देखकर मैं अचम्भित हो गया। भारत के कोने में धर्म, धर्मायतन, जिनालय, त्यागी भवन आदि के संवर्द्धन हेतु समाज को आप से सदैव मार्ग दर्शन, उद्बोधन, प्रेरणा आदि प्राप्त होता रहता है। आप सदैव साम्य भाव से जीव मात्र के कल्याण में तत्पर रहते है। अपने शरीर की चिन्ता न करके दयाभाव से प्राणी मात्र का उपकार कर रहे है। एक बार भी जिसने इस महान आत्मा का दर्शन कर लिया उसकी इच्छा पुनः पुनः आपके प्रति जाने की स्वतः हो आती है। वीर प्रभु से मैं करबद्ध प्रार्थना करता हूं कि यह महान आत्मा दीर्घायु हो। उनके चरण कमलों में कोटिशः नमोऽस्तु करता हुआ अपनी विनयाञ्जलि अर्पित करता हूं।

गुरूभक्त

श्रीमान आनंदलाल (बाबुभाई) दोशी
एवं समस्त दिगम्बर जैन समाज-फलटण

सत्पथ दर्शक-मेरे गुरूदेव

परम पूज्य प्रातः स्मरणीय, वात्सल्य रत्नाकर गुरूदेव आचार्यरत्न बाहुबली मुनि महाराज के व्यक्तित्व का दर्शन करते समय मन में अनेक प्रकार की भावनाएं उभरती है। आचार्य श्री की महिमा को शब्दों में बांधना मुझ जैसे अल्पज्ञ के लिए कठिन है।

जिन्होनें भूले भटकों को अपनाया, प्रत्येक के घर-घर में मिथ्यात्व था, उस मिथ्यात्व को हटाया, मधुर उपदेश देकर मन के मिथ्यात्व को वमन कराया। सत्पथ का मार्ग दिखाया। उनके उपकार के हम ऋणी है। सबसे ज्यादा मिथ्यात्व हमारे तीन जिलों में (कोल्हापुर, सांगली, बेलगांव) है। आपके वात्सल्यमयी मधुर उपदेश से इन तीनों जिले के कोने कोने में मिथ्यात्व का अंश मात्र भी नहीं रहा। प्रत्येक घर-घर में जाकर, बोरी भर भर मिथ्या देवों को बाहर ले आये। उनका विसर्जन किया। कोई कोई लोग मिथ्या देवों के विसर्जन करने में डरने लगे तो आचार्य श्री उन्हें समझाते हुए कहते-'आप डरो मत, ये देव आपका कुछ भी नहीं बिगाड़ेगें, बिगाड़ेगें तो हमारा, क्योंकि हमने इनका विसर्जन किया है। आप तो निश्चित रहो और अपना जीवन सुखमय बिताओ।'

ऐसा आर्शीवाद दे आचार्य श्री सभी को धीरता देते थे। हमारे नगर का प्रत्यक्ष उदाहरण-हमारे नगर में सभी जैनियों के घरों में गणेश जी एवं सत्य नारायण की पूजा होती थी। गुरूदेव के चातुर्मास से सभी घरों में गणेश जी आना बंद हो गये। सत्य नारायण की पूजा होना भी बंद हो गई। मिथ्या देवों के स्थान पर जिनेन्द्र देव माने वीतराग भगवान की पूजा होने लगी।

गुरूदेव की कृपा से सभी का जीवन सुधर गया। जैसे फूलों की सुगंध फैलती है। वैसे गुणवान पुरूषों की कीर्ति स्वयं फैल जाती है। आज वे सत्पथ दर्शक मेरे गुरूदेव दक्षिण भारत के हर एक के हृदय में आदर से विराजमान है। मैं आचार्य श्री को नमन करता हुआ भगवान से प्रार्थना करता हूं कि आचार्य श्री युगों युगों तक संसारी प्रणियों को समीचीन मार्ग का दिग्दर्शन कराते रहें।

ॲड श्री रामगोंडा न.चौगुले-कुरूंदवाड

आपका व्रत वापिस ले लो

जब आचार्य श्री का चातुर्मास हमारे कुरूंदवाड नगर में हुआ था, तब मैं छोटा था अर्थात् आठवीं कक्षा में पढ़ता था। मेरी बहन सुरेखा को आचार्य श्री के प्रति बहुत लगन लग गई थी। इसी चातुर्मास अर्थात् 1977 में उनकी वैराग्य कली खिल गई, परन्तु अभी अंकुर प्रस्फुटित नहीं हुआ था। जब नृसिंहवाडी में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई तब मेरी दीदी छप्पन कुमारिका बनी थी। उनकी तो खोज चालू थी कहां जाऊँ, कैसे पाऊँ हमेशा के लिए मेरे गुरूदेव के चरण कैसे मिलेगें? बस इसी उधेड़-बुन में समय बीतता गया और इसी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में उन्होंने सोचा-'बिना सम्यज्ञान के शांति कहाँ? चलो ज्ञान के लिए आचार्यरत्न देशभूषण महाराज जी के संघ में चलें'-क्योंकि आचार्य श्री अपने संघ सहित पंचकल्याणक के लिए नृसिंहवाडी में आ पहुंचे थे, इन्हीं आचार्य श्री के अग्रगण्य पट्टशिष्य विशाल हृदयी, गोरा चेहरा, मधुर मुस्कान, धर्म ध्यानी, स्वर्ण के समान पीत वर्ण, तेजस्वी कांति के धारक महाचार्य श्री गुरूदेव बाहुबली महाराज के चरणों में मेरी बहिन पहुंच गयी।

उन महानिधि के दर्शन कर आजीवन ब्रम्हचर्य व्रत की याचना की। आचार्य देव बोले-'मेरे गुरूदेव के पास कल सुबह व्रत ले लेना। हमारे घर में यह कुछ भी मालूम नहीं था। व्रत लेने के चार दिन बाद घर में पता चला। मेरी मां तो मोह से अनुरक्त थी। वह शोकाग्नि में तड़फने लगी। सुकुमार मुनि की माता के समान वह गुरूदेव के पास आ पहुंची। और बोली-'गुरूदेव, आपने मेरी लड़की को जो व्रत दिया है वह वापिस ले लीजिए, उसके बदले में मैं कुछ दान दे दूंगी लेकिन आप अपना व्रत वापस ले लीजिए। आचार्य श्री ने मेरी मां को बहुत मधुर शब्दों में समझा दिया और दिया हुआ व्रत वैसा ही रहने दिया। आज मेरी बहन ने गुरू चरणों में रहकर आर्यिका व्रत धारण कर लिया। आज वे "श्रुतदेवी माताजी" के नाम से प्रसिद्ध है। आज माताजी धर्म का डंका कोने कोने में बजा रही हैं, यह गुरूदेव की ही कृपा का प्रसाद है। आचार्य श्री की अनुकम्पा से ही आज हमारे परिवार के सभी सदस्यों के हृदय में समीचीन धर्म विराजमान है। ऐसे स्व-पर कल्याण में रत गुरूदेव दीर्घ काल तक धर्म प्रभावना करें। इसी शुभ भावना के साथ आपके पावन चरणाम्बुज में मैं और मेरे परिवार की ओर से शत शत नमन।

श्री कुमार धनपाल पाटील कुरूंदवाड

थोर आत्मा-मेरे गुरूदेव

परम पूज्य आचार्यरत्न बाहुबली मुनि महाराज जी एक थोर आत्मा है, पूर्णता वीतरागी हैं। उन्होनें अपनी धर्मदेशना से बहु वर्ग को सन्मार्ग दिखाया।

जगत के प्राणियों को दुःखी देखकर उनके कल्याण की कामना करना, यह शुभोपयोग-पुण्य परिणाम है। श्री परम पूज्य-गुरूदेव के समीप प्रतिदिन सैकड़ो दुःखी-व्यक्ति आते है और उन्हें वे पंच परमेष्ठी के नाम का स्मरण करते रहने का उपाय बताते है। यद्यपि यह णमोकार मंत्र प्रत्येक, उपदेश दाता बता सकता है परन्तु आचार्य श्री तपस्वी हैं। उनकी वाणी में जो अतिशय है। उसी के प्रभाव से भक्तजनों को लाभ होता है, सुख साता मिलती है।

'मां कश्चिद् दुखभाग भवेत्' कोई दुखी न रहे इस दृष्टि से-आचार्य श्री दूर दूर से अपने पास आने वाले लोगों का समाधान करते हैं। ऐसे वात्सल्य मूर्ति आचार्यश्री के चरणों में नमन करते हुए उनके दीर्घ जीवन की कामना करता हुआ, श्रद्धा सुमन समर्पित करता हूं।

श्री शरद कलघटगी-हातकणंगले

मातृ वात्सल्य दाता-मेरे गुरूवर

बाहुबली महाराज को कोटि-कोटि प्रणाम।
गुरूवर की भक्ति चाहूं मैं हर सुबहों और शाम॥
काज आपका कर चलूं चाहूं ना आराम।
नाम आपका सदा रटूँ जब तक घट में प्राण॥

असीम वात्सल्य दिवाकर, वात्सल्य की असीम सीमाओं को समेटकर जन जन में उसकी महक को बिखेरने वाले प्रणेता आचार्य श्री बाहुबली महाराज जी के चरणों में कोटी कोटी नमन।

हमने जब पहली बार आचार्य श्री के दर्शन किए, तभी आचार्य श्री के दिवाने हो गये। जो भी आपके दर्शन करता है, उसका हृदय मानो प्रफुल्लित हो उठता है। तथा उसे ऐसा लगता है कि शांति के अलावा और कुछ भी नहीं है। जहां पर रागद्वेष, मोह तथा कषायों से परे होकर जन जन में धर्म का संचार एवं शांति का अनुभव होता है। तथा जो सातिशय पुण्य का कारण बनकर सम्यक् दर्शन रूपी ज्योति प्रज्वलित करने वाला है ऐसे गुरूवर का बखान हम कहां तक करें, ये कार्य तो मानों सूर्य को दीपक दिखाने के समान है।

सागर की तरह गंभीर, पुष्प की तरह कोमल, चंद्रमा की तरह शीतल एवं शांति देने वाले, सूर्य के समान तेजस्वी आभा, ज्ञान, उपसर्ग परिषह सहने वाले कर्मठयोगी, उपसर्ग विजेता तथा आकाश की तरह असीम गहराईयों में फैला हुआ वात्सल्य ऐसे योगियों को योगीराज, योगिश्वर सदा जयवंत रहे तथा आपका आर्शीवाद सदा हमें प्राप्त होता रहे, आपकी प्रेरणा से हम सदा ऐसे कार्य करते रहे जिससे जिनधर्म, जिनशासन धर्म ध्वजा अनंत वर्षो तक कायम रहे।

आपका मातृवत् वात्सल्य भरा उपदेश सुनकर हमारी दोनों बहनों ने अपना आत्म कल्याण का बाना धारण किया।

ब्र. सरिता दीदी को तो आर्यिका (महाव्रती) बनाकर आपने स्त्रीलिंग पर्याय छेदने का अमोघ अस्त्र दिया। और ब्र. समीक्षा दीदी को सप्तम प्रतिमा देकर जीवन पवित्र किया।

हमे हमारे परिवार की ओर से आचार्य श्री से यही विनम्र प्रार्थना करते है कि-'हे आचार्य भंते! हमे भी ऐसी ही शक्ति प्रदान करो कि हम भी आपके उपदेश से जीवन को पवित्र बना लें। इसी प्रार्थना के साथ-

श्री सुनील बाझल, साधना बाझल, श्री सुधीर बाझल, आभा बाझल
श्री सुबोध बाझल, मंजू बाझल, सौ. सुनीता सुशील कुमार जैन
व समस्त बाझल परिवार सिवनी, जबलपुर

आप केवल बाहुबली ही नहीं 'सागर' भी है

संचित था जिनमें जग का, अनुपम वैभव भोलापन।
त्याग तपस्या की मूरत यह अदभुत है इनका जीवन॥
विश्व विभूति अकिंचनता में, वहां छिपी थी अनुपम।
वास एक लघु क्षुद्र में करता था वह प्रभु अर्चन॥

जैसे सागर मन्थन से अमृत की धारा है निकली।
वैसे ही हिंसा बर्बरता से, मुक्त अहिंसा कली खिली॥
जग जीवन की दुखस्या उनको दुखमय है खलती।
सत्यमूर्ति श्री गुरूवर मेरे विश्व विजेता बाहुबली॥

विश्व के घट भी हो जाते मिलके महा सुधामय।
ऐसे सन्तो की शरण को पाके तुच्छ होते है उच्चाशय॥
रहता नहीं दुर्भाव न कोई वहा किसी के मन में।
शूल विहीन फूल खिलते है उस अपूर्व उपवन में॥

सच्चा बना सन्त का बाना, गंगाजल सी बानी।
सत्साहस संकल्प शक्ति के हे जगबंधु सेनानी॥
शून्य देश में अलख जगाते आचार्य बाहुबली जी।
तुम कृति नहीं कृतिकार विश्व के ये गुरूवर की कहानी॥

मौन साधक, तपस्वी वात्सल्य मूर्ति आचार्य श्री 108 बाहुबली सागर जी महाराज के चरणों में कोटि कोटि बांर बार प्रणाम। तीर्थराज सम्मेद शिखर जी के पथ पर अग्रसर हो सौभाग्य से आचार्य श्री का सिवनी आगमन की वह पुनीत घड़ी सन् 2000 की सिवनीवासियों के भाग्य में बसी थी। श्री चौबीसों तीर्थंकरों एवं अनादिकाल की मुनि परम्परा निवर्हन करने वाल आचार्य श्री बाहुबली जी का नागपुर आगमन हुआ नगर की गलियों में तोरणद्वार एवं जिस गली से महाराज का आगमन हुआ नगर की जिस गली से महाराज जी की आगवानी होनी थी किसी उत्सव सा वातावरण था किन्तु आचार्य श्री का ध्यान आगे बढ़ते पथ पर था, और कदम आगे बढ़ रहे थे जैसे सिवनी के गंगन चुम्बी कलश युक्त शिखर अपनी और खींच रहे हो। मंदिर के निकट आते आते जन सैलाव इस कदर बढ़ गया कि दर्शन तक दुलर्भ लगने लगे किन्तु जरा भी शिकन माथे पर नही आयी आपके। बड़े बाबा (भगवान पार्श्वनाथ जी) के सम्मुख अपना शाश्वत प्रणाम कर ससंघ ने मानों अपना सिवनी आना सार्थक मान लिया।

आचार्य श्री ने अपनी यात्रा धर्मनगर से प्रारम्भ की थी और धर्मनगर को तीर्थ क्षेत्र के रूप में परिणीत करने के लिए आपने इस वीराने में अपना पर्याप्त समय दिया और अपनी समस्त चर्चाओं को जारी रखा मुझे भी धर्म नगर जाने का सौभाग्य तो (श्रवण बेलगांव की यात्रा) मिला किन्तु मेरे असाता कर्म के उदय से आचार्य के दर्शन ना मिल सके तभी से मन में जिज्ञासा बलवती थी और इस इच्छा को विराम तब मिला जब उनके दर्शन सिवनी के निकट ग्राम शीलादेही में हुए। उनके मुख मण्डल में विलक्षण तेज था अदभुत शांति से सुसज्जित उनका शरीर अंग प्रत्यंग तथा आत्मा थी मैंने उन्हें प्रणाम किया। आचार्य श्री ने अत्यन्त सहज भाव से अपनी पिच्छिका से आशीष दिया। वात्त करने की बहुत चाह थी किन्तु न जाने क्यूं चाहकर भी कुछ नहीं कह पाया। जबकि लोग आते अपनी जिज्ञासा का

समाधान त्वरित समाधान पा लौटते, मैं मौन खड़ा देखता रहा उनके समीप बड़े प्रेम भक्ति और आत्मीयता से सभी आते थे उन सबको देखकर महाराज ने कहा ये सब हमारे मित्र है।

आचार्य श्री का स्वभाव सरल, मृदुल रहा है बालक हो युवा हो या सभी से बड़े ही स्नेहपूर्वक मिलते और हर्षित होते, सिवनी में प्रवचन के दौरान कार्यक्रम का संचालन मैं कर रहा था अतः सहस ही मैंने आर्यिका के प्रवचन का आग्रह आचार्य श्री से किया आचार्य श्री ने अपने प्रवचन के पूर्व आर्यिका सुज्ञानी माता जी से कहा-मैं उनके इस गुण पर बलिहारी हो गया। मेरा मन उनके वात्सल्य भाव से भाव विभोर हो उठा।

14 फरवरी सन् 2000 को प्रातः अपनी नित्य क्रिया हेतु जंगल जाते समय (शौच क्रिया हेतु) किसी से साधारण सा प्रश्न किया जिसका आपने इतनी गहन चिन्तन पूर्ण तथ्य के माध्यम से उत्तर दिया जिससे निश्चित ही यह सिद्ध हो गया कि आप बाहुबली ही नहीं "सागर" भी है। संसार प्रसिद्ध सागर में खारा पानी रहता है किन्तु इस सागर में प्रेम भरा मधुर जल विद्यमान है जिसका पान करने से संसार की तृषा मिटती है।

आचार्य श्री बाहुबली सागर जी का व्यक्तित्व किताब की तरह है जिसके जितने पृष्ठ पलटते जाओं हर पृष्ठ में नया अध्याय प्रारम्भ होता है। मैंने उनको देखा तो उन्हें यह उपमा दिया कि-"सूर्य की नैसर्गिक ज्योति का सौन्दर्य पहाड़ों और जंगलो में स्वत्रः दिखायी पड़ता है उसी प्रकार आचार्य श्री की तपस्या तप साधना का अपरम पार कोष आमजनों में बिखेरते दिखते है, बिजली की ज्योति के सुन्दर बनाने के लिए आप भले ही अपने कांच के टुकड़े भिन्न-भिन्न रंगों में रंगे और उनका भिन्न-भिन्न आभूषणों से भक्ति करे किन्तु सूर्य की ज्योति इन कृत्रिम आभूषणों का तिरस्कार करनी है, वाणी की सार्थकता इसी में है कि वह आकाश में बांधकर मनुष्य को उस स्थान पर चढ़ा दे जहां से कि वाणी का उदगार हुआ है अतः आपकी वाणी साधना भी उच्चादर्श है। आपने अपने वाणी को उच्च कुल की पुत्री माना है, जो सत्तत्त साधना रत्त है भारतवर्ष के इस परिवर्तन काल में आचार्य श्री की तरह उपासकों की आवश्यकता है जो अपनी वाणी से अहिंसा प्रेम सदभावना एकता का बाद देश भर में भर दे। आप नगर ग्राम जंगल और पहाड़ों से घृणित दुर्बलता और निर्वीयता को निकाल महाशक्ति की मूर्ति जनता के हृदय में स्थापित कर उसके पवित्र पूजन के लिए गान कर रहे है आपको देख कर यह दोहा याद आता है।

सिंहन के लहडे नहीं, हसन की नहिं पात।
लालन की नहिं वोरियाँ, साधु न चले जमात॥

सिंहो के झुण्ड नहीं होते सारे जंगल में सिंह एक ही होता है, हंस भी सब जगह पक्ति बांधकर नहीं दौड़ते फिरते-कहीं मानसरोवर के समीप कोई एक दिखलायी दे जाता है लालों की बोरियाँ नहीं भरी जाती लाल कोई देहरादून का बासमती चाँवल नहीं जो बोरियों में भरकर कही भी भेजा जावें और साधुओं के झुण्ड भी देखे नहीं जाते, जब कई शताब्दी बीत जाती है तब ऐसा संयोग निर्मित्त होता है किन्तु आचार्य श्री ने अपने संघ में न केवल साधुओं को अर्पित आर्यिकाओं को भी अपने आशीष के छाया तले रख असम्भव को सम्भव कर दिया।

आपका हर गुण, जीवन, युग युग तक जगत को आध्यात्मिक प्रकाश तथा उज्जवल आचार के लिए प्रबल प्रेरणा प्रदान करे। इसी भावना के साथ शत शत नमन।

संजय जैन "संजू"
वरघट रोड, पावर हाऊस के निकट
सिवनी (म.प्र.)

जैन शासन की ध्वजा फहराने वाले-आचार्य श्री

परम पूज्यनीय विश्व वंदनीय, परम दयालु, परम हितैषी, वात्सल्य प्रेम के जादूगर, मेरे दिल में समाये हुए गुरूवर 108 आचार्य श्री बाहुबली सागर जी महाराज के पुनीत पवित्र चरणों में बारम्बार नमोऽस्तु-नमोऽस्तु-नमोऽस्तु।

"सच है अभी तक सिर्फ आचार्य श्री के निर्मल व्यक्तित्व के बारे में सुना ही था लेकिन मेरे व समस्त समाज के विशेष पुण्योदय से गुरूदेव का साक्षात् दर्शन पूजन का सौभाग्य सिवनी में मिल गया गुरूदेव का व समस्त संघ का मेरे हृदय में हमेशा एक इतिहास का नया अध्याय जुड़ गया, इतने बड़े आचार्य पद पर आरूढ़ रहने पर भी गुरूदेव का जो प्यार वात्सल्य सरलता, हंसता हुआ सौम्य मुख मंडल मैंने देखा मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि इस पंचमकाल में भी चतुर्थकालीन आचार्य परमेष्ठी अपना समोश्वरण लगाये हुए जैन शासन की ध्वजा लहरा रहे है और हम जैसे राह में भटके हुए लोगों को धर्म की राह बता रहे हैं। जैसा गुरूदेव का नाम है वैसा ही उनका बाहुबल तप त्याग चारित्र की फुलवारी से चारों ओर अपनी सुगंध बिखेर रहा है।" मैंने गुरूदेव की एक विशेषता अद्भुत देखी कितना भी दुखी, पीड़ित मानव अपनी समस्या लेकर पास आया मात्र गुरूदेव के दर्शन व आर्शीवाद से उसने अपनी मनोकामना पूर्ण कर अपनी खाली झोली भरकर ले गया गुरूदेव सिद्ध वचन के धनी है वचन सिद्धि उनके रोम रोम में कण कण में विराजमान है" वीर प्रभु से यही फरीयाद करता हूं "कि गुरूदेव की आर्शीवाद की छत्रछाया हमेशा मुझ जैसे अज्ञानी जीव पर बनी रहे एवं मेरे गुरूदेव युग युग तक जयवंत रहे इन्हीं भावनाओं के साथ "गुरू चरण में गुरू शरण में कौन रहता है वो है हम। श्रद्धा भी क्या होती है पूछो मेरे दिल से, रोम रोम पुलकित होता गुरूवर से मिलके। हमें छोड़कर कहीं जाना नहीं, गुरू चरण.........। मेरे गुरुवर वटवृक्ष की तरह चारित्र से सुशोभित होकर महकते रहे बस यही कामना करता हूं।

गुड्डु
आपका चरण चंचरीक संजय
सिवनी (म.प्र.)

धर्मप्रभावना का पावन प्रसंग

परम पूज्य भारत गौरव आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज के परम शिष्य आचार्यरत्न बाहुबली सागर जी महाराज चतुर्विध संघ सहित धर्मनगर कोल्हपुर से तीर्थराज सम्मेद शिखर जी चंपापुर आदि सुप्रसिद्ध जैन तीर्थों की वंदना हेतु विहार करेगें, यह समाचार सिवनी नगर वासियों को जब प्राप्त हुए थे, तभी से यहां के धर्म प्रेमी भक्त आचार्य श्री के भव्य स्वागत कर अपने को धन्य करने के लिए उत्साहित थे। दिनांक 13 फरवरी 2000 को वह अविस्मरणीय हर्षमय क्षण उपस्थित हुआ जब आचार्य श्री अपने विशाल संघ सहित सिवनी नगर में प्रवेश किया। आचार्यश्री एवं संघ के भव्य स्वागत में जय जय गुरूदेव के नारे गुंजापमान होने लगे थे। नागपुर नाके से लेकर गांधी चौक शुक्रवारी स्थित बड़े दिगम्बर जैन मंदिर तक आकर्षक भव्य बंदनद्वार एवं स्वागत बेनर लगे हुए थे। सुमधुर भक्तिगीत एवं बैण्ड बाजे की मधुर आवाज, बच्चों, युवकों, पुरूषों एवं महिलाओं द्वारा जय जयकार के नारों द्वारा भव्य स्वागत एवं हर्ष की अभिव्यक्ति, मंगलमय घृत दीपक द्वारा आचार्य श्री की आरती एवं चरण पखार कर भक्तगण अपने को धन्य एवं गौरवन्वित महसूस कर रहे थे।

भव्य दिगम्बर जैन मंदिर के लिए संपूर्ण भारत में सुप्रसिद्ध सिवनी नगर जहां पर सुप्रसिद्ध विद्वान विद्वत्रत्न पं. सुमेरूचन्द्र दिवाकर (पूज्य दादाजी) का जन्म हुआ था एवं जिन्होनें, चारित्र चक्रवर्ती, जैन शासन आदि महान ग्रंथ लिखकर सिवनी का नाम गौरान्वित किया ऐसी धर्ममय सिवनी नगरी में विशाल धर्मसभा को अपनी मंगलमय वाणी द्वारा सिंचित करते हुये आचार्य श्री ने कहा कि "आज से लगभग 100 वर्ष पूर्व दिगम्बर जैन मुनियों के दर्शन दुर्लभ से हो गये थे लेकिन दक्षिण भारत में चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शांतिसागर जी जैसी महान विभूति हुई, जिनके द्वारा धर्म की अभूतपूर्व प्रभावना हुई, उनकी ही परंपरा में भारत गौरव आचार्य रत्न श्री देशभूषण जी महाराज हुये एवं उनकी ही कृपा से हम आज संयम के पथ पर चल रहे है।" आचार्य श्री ने आगे कहा कि "सिवनी में ही जन्मी आर्यिका सुज्ञानी माताजी संयम के पथ पर चलकर आत्मकल्याण कर रही है जो सौभाग्य की बात है।" इस धर्मसभा में अनेक ग्रंथो के प्रमाण प्रस्तुत करते हुए उन्होंने श्रावकों को देव पूजा आदि षट् आवश्यक कर्मो को करने की प्रेरणा प्रदान की । इस विशाल यात्रा में बालाघाट, छिंदवाडा, धंसौर आदि निकटवर्ती स्थानों से आकर लोगों ने धर्मलाभ प्राप्त किया। आचार्य श्री बाहुबली सागर जी महाराज के महान व्यक्तित्व को मैं अपने इन शब्दों में व्यक्त करता हूं -

वात्सल्य भाव से युक्त सदा, आचार्य बाहुबली सागर,
रत्नत्रय की ज्योति जगा, दया धर्म के बने प्रकाशक।
सत्य पथ पर कदम बढ़ा, गुरूवर हुये धर्म प्रभावक,
आत्मकल्याण में ध्यान लगा, संयम त्याग के सच्चे साधक॥

दिनांक 15 फरवरी 2000 को वरिष्ठ पत्रकार गोविंद नेमा ने सपरिवार आकर आचार्य श्री को प्रणाम किया तथा विशाल धर्मसभा में घोषणा करते हुए कहा कि "मैंने आचार्य श्री की प्रेरणा से नाम सीलादेही में अपने फार्म हाऊस में मछली पालन केन्द्र के निर्माण का विचार हमेशा के लिये त्याग दिया है एवं मैं उस स्थान का उपयोग अहिंसामय कार्यो के लिये करूंगा तथा जब भी साधुओं का वहां आगमन होगा मैं उस स्थान पर उन्हें ठहरने के लिए व्यवस्था करूंगा तथा उस स्थान को 'आचार्य बाहुबली सागर विहार' के रूप में विकसित करूंगा।" इस प्रकार एक जैनेत्तर व्यक्ति अहिंसा पथ का पथिक बना।

आचार्य श्री के ससंघ सिवनी आगमन से वास्तव में जो धर्म प्रभावना हुई वह चिरस्मरणीय रहेगी। मैं आचार्य श्री के प्रति अपनी विनयांजलि व्यक्त करता हूं तथा ये पंक्तियां श्रद्धासुमन के रूप में व्यक्त करता हूं-

धर्मनगर से तीर्थराज सम्मेद शिखर जी हेतु किया विहार।
धर्म प्रभावना करते-करते सिवनी पधारे गुरूवर महान॥
धर्म मार्ग का सद् उपदेश दिया, किया हम सभी पर उपकार।
धर्ममय हुई सिवनी नगरी, आचार्य श्री को मेरा शत-शत प्रणाम॥

गुरू चरण भक्त
डॉ. रवीन्द्र दिवाकर, डॉ. आर. के. दिवाकर
Asstt. Prof. of Commerce, Govt. P.G. College, Seoni (M.P.)

॥ॐ नमः॥

सन्मार्ग दर्शक-मेरे गुरुदेव

स्व-पर कल्याणकारी, स्वार्थ साधनाके इस युगमें परमार्थ और आत्माराधन में लीन परम तपस्वी, सन्मार्ग दर्शक परमपूज्य आचार्यरत्न बाहुबली महाराज महाविश्व की अनुपम विभूति है।

'जैसा गुरु वैसा शिष्य'-भारत गौरव परमपूज्य आचार्यरत्न देशभूषण महाराज जी की प्रतिमूर्ति लेकर आये हुए भारत की महान विभूति, वात्सल्य के धनी आचार्यरत्न बाहुबली महाराज जी स्व-कल्याण करते हुए जन-कल्याण एवं मिथ्यामार्ग से भव्य जीवों को पराङ्मुख करते हुए, मोक्षमार्गोन्मुख करते हुए, रत्नत्रय धर्म की प्रभावना करते हुए पावन भारतभूमि के कोने-कोने में पहुंचकर भव्य जनों का उद्धार कर रहे हैं।

आचार्यश्री के मेरे गांव में (गरग) आने से पहले वहां के सम्पूर्ण जैन समाज ने शैव (लिंगायत) धर्म की ओर मुंह फेर लिया था। आचार्यश्री के चरण पड़ते ही मिथ्या अंधकार दूर हो गया। आचार्यश्री के वचनामृत से वहां का समाज आचार्यश्री की ओर आकर्षित होने लगा। जिनको जैन मंदिर का रास्ता मालूम नहीं था, जो उदक-चंदन नहीं जानता था, जो व्यसनों में लिप्त था, वह समाज सुधर गया।

धारवाड़ जिले में जैन दिगम्बर गुरुओं का आना बहुत कम था। अतः दिगम्बर गुरुओं को लाने की मेरी बहुत तमन्ना थी। बहुत जगह खोज किया। आखिर बेलगांव के श्रावकों के द्वारा पता चला-'धर्मनगर में पू. आचार्यश्री विराजे हैं।' उसी समय मैं कुछ श्रावकों को लेकर धर्मनगर आ गया। धर्मनगर के ट्रस्टी तो गुरुदेव को वहीं धर्मनगर में ही चातुर्मास कराने का हठ पकड़े थे। पर जब मैंने धारवाड़ जिले की दयनीय अवस्था की कहानी सुनायी तो गुरुदेव ने स्वयं ही आने का निर्णय ले लिया। हम तो इतने हर्षित हुए-जहां हमने सूर्य की किरणों की इच्छा रखे थे पर हमारा सौभाग्य समझो, खुद सूर्य ही मिल गया।

उस सूर्य के प्रकाश से ही धारवाड़ जिले का अज्ञान अंधकार दूर हो गया। इतना ही नहीं मेरे भाई का सुपुत्र श्री अशोक कुमार ब्रह्मचारी बन गया। उसकी उम्र 19 वर्ष की है। वह आज आचर्यश्री के वात्सल्य से प्रभावित होकर क्षुल्लक दीक्षा लेकर क्षु. श्री सिद्धसेन बन गया और साथ ही मेरा मन भी अब संसार से उचट गया। वैसे तो आजकल मैंने मेरा पूरा जीवन समाज सेवा में लगा दिया था। गांव में श्री कुलभूषण महाराज जी की प्रेरणा से 'जयकीर्ति विद्यालय' खुल गया। प्राथमिक और हाईस्कूल तथा साथ ही अनाथ गरीब छात्रों के लिए होस्टेल भी खुल गया।

पू. आचार्यश्री के चातुर्मास से मेरा मन अब संसार से हट गया। अतः रक्षाबंधन के दिन हम दोनों पति-पत्नी ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया। पश्चात् आचार्यश्री दिल्ली में चातुर्मास के लिए पधारे तब मैं दर्शन के लिए आया था। फिर मुझे संयम में आगे बढ़ने की भावना प्रगट हो गयी, मैंने आचार्यश्री से प्रार्थना किया। आचार्य देव ने मुझे वर्षायोग स्थापना के दिन सप्तम ब्रह्मचर्य प्रतिमा देकर मेरा जीवन सफल किया।

गुरुदेव का सान्निध्य जन-जन को दीर्घकाल तक मिलता रहे। आपके ही समान सफल मुनिचर्या का पालन कर सकूं यही आपसे आशीर्वाद चाहता हूं।

गुरुभक्त-पी.सी. कुरकुरी एम.ए.
चेयरमैन, जयकीर्ति विद्यालय गरग (धारवाड़)

सौभाग्य के क्षण

प.पू. गुरुदेव आचार्यरत्न श्री बाहुबली जी महाराज के जीवन का प्रत्येक क्षण उच्च साधना का परिचय देता है, क्योंकि मिथ्यान्धकार से ग्रसित जीवों को आप अपने अन्तर आलोक से प्रकाश प्रदान करने में सूर्यवत् सिद्ध हुए हैं। इसी मिथ्यान्धकार में हमारा शिरटी गांव भी ग्रसित था।

1983 का समय था। उस समय गुरुदेव आचार्यश्री का आगमन हमारे गांव में हो गया। एक भी श्रावक मंदिर नहीं आता था, गुरुदेव के मिठास वाणी से श्रावकों में धर्म के प्रति रुचि बढ़ने लगी। धीरे-धीरे मंदिर आने लगे। प्रवचन में भीड़ होने लगी। उस समय आचार्यश्री ने सब श्रावक-श्राविकाओं को दशलक्षण व्रत, षोडशकारण व्रत आदि देकर मिथ्या तम को दूर किया। अब मंदिर में ऐसी भीड़ रहती है, कदम रखने की जगह नहीं रहती। सब पति-पत्नी मिलकर भाद्रपद में जब पूजा करते हैं तब ऐसा लगता है हम स्वर्ग से आये इन्द्र-इन्द्राणी हों। जब दस साल व्रत के बीतने के बाद व्रत उद्यापन करना था उस समय आचार्यश्री अपने विशाल संघ सहित तीर्थराज सम्मेद शिखर जी की ओर विहार करने का तय किया। मेरे गांव के श्रावक मुझसे कहने लगे-आचार्य श्री शिखरजी जा रहे हैं, कौन जाने वापिस फिर कब आयेंगे, पता नहीं। अतः अभी जाने से पहले ही व्रत उद्यापन कर लिया तो अच्छा होगा। बस-विचार होते ही पूरा समाज इकट्ठा हो गया और आचार्यश्री के पास जा पहुंचा। उस समय आचार्यश्री कर्नाटक में धारवाड जिले के अन्तर्गत गरग गांव में चातुर्मासार्थ थे।

हम सब श्रावक वहां पहुंच कर गुरुदेव से प्रार्थना की, बहुत बार आना-जाना करने के बाद हमें गुरुदेव का आशीर्वाद मिला। आशीर्वाद का श्रीफल मिलते ही पूरा गांव आनंद से झूम उठा। शिरटी गांव अलका नगरीवत् सज गई। छोटा सा व्रत उद्यापन का कार्यक्रम पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का रूप ले लिया। बड़े धर्म प्रभावना के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हो गया।

इसी शिरटी गांव के खेत में शिरटी के कुछ श्रावक अपने-अपने खेतों में रहने लगे थे वहां से देव दर्शन के लिए मंदिर नहीं था। पू. आचार्यश्री 1983 में जब हमारे गांव में थे तब एक दिन जंगल जाने के निमित्त से वहां खेत में पहुंच गये। वहां एक गृहस्थ अर्थात् शराब पीने वाला गतारे अपने घर के सामने गोबर गैस के लिए गड्ढा खोद रहा था। उसी समय गुरुदेव का आगमन वहां हुआ। वह गतारे गुरुदेव को देखते ही अपना काम छोड़कर दर्शन करने गया। आचार्य श्री उनसे सहज बोल पड़े-'क्यों गतारे कुआं खेद रहे हो'' उसने कहा-नहीं, गोबर गैस के लिए गड्ढा खोद रहा हूं गुरुजी।

आचार्यश्री-'अरे, यह पाप का बोझ क्यों उठा रहे हो, जाओ यहां अपने आप ही कुआं खुद जायेगा।'

वह मन ही मन विचार करता रहा-'आचार्यश्री के मुख कमल से ऐसे वचन क्यों निकले।' वह पुनः काम में लग गया। लगभग पांच फूट खुदाई के बाद एक झरे से पानी आता दिखाई दिया। झरों को देखते ही उनको ऐसा लगा जैसे उनके पैरों के नीचे की जमीन खिसक रही हो। गुरुदेव के मुख से निकला वचन सत्य हो गया, वह गोबर गैस का गड्ढा, गड्ढा न बनकर कुआं बन गया।

उस दिन से गतारे ने शराब पीना छोड़ दिया और गुरुदेव का अनन्य भक्त बन गया और अपने ही खेत में घर के सामने पू. आचार्य श्री की प्रेरणा से ही जिनमंदिर, मानस्तंभ, शिखर, त्यागी निवास आदि का निर्माण किया। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न हुई। इस प्रतिष्ठा के सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य भी उन गतारे जी को ही प्राप्त हुआ था।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के समय इसी कुएं का पानी बहुत काम में आया। खेतों में भी इसी पानी का उपयोग होने लगा। गुरुदेव के आशीर्वाद से उनको अपूर्व ऐश्वर्य की प्राप्ति हुई और उन्होंने गुरुदेव के पास ही आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया। थोड़े ही दिनों में सप्तम प्रतिमाधारी बन संघ में रहने लगे और कुछ महीनों बाद ही आचार्यश्री ने क्षुल्लक दीक्षा देकर उनका जीवन कृतार्थ कर दिया। वह अभी 'क्षुल्लक शांतिसेन जी' के नाम से प्रसिद्ध हैं।

पू. आचार्य श्री के मधुर उपदेश से लाखों जीव तिर गये और तिर रहे हैं। बस मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि आप दीर्घायु होकर विश्व में जैन धर्म की प्रभावना करते रहें।

गुरुभक्त श्री जिनपाल सूर्यवंशी
सौ. विमल जिनपाल सूर्यवंशी
शिरटी

भावाञ्जलि

प.पू. शांतमूर्ति, आचार्यरत्न श्री 108 बाहुबली जी महाराज एक महान तपस्वी एवं जैनधर्म के एक दीप्तिमान प्रवर्तक हैं। आपकी सरलता प्रत्येक छोटे बालक से लेकर बूढ़े तक को धर्म में आस्था रखनेके लिए आकर्षित करती है। आपके बेलगांव के चातुर्मास से ही हम बच्चे धर्म मार्ग में लग गये और आज आपके ही निमित्त से या आपकी प्रेरणा से बेलगांव में अनेकानेक सत्कार्य सम्पन्न हो गये। बेलगांव में आपके पांच बार चातुर्मास हो गये तो भी तृप्ति नहीं हुई। आपकी वात्सल्य मय शान्त मुद्रा को देखकर अपार शांति का अनुभव होता है।

मैं इस पुण्य बेला में आप श्री के चरणों में नमोऽस्तु करते हुए यह भावना भाता हूं कि मुझे आपके चरण सान्निध्य में रहने का अवसर मिले।

गुरु चंचरिक

श्री राजेन्द्र गंगाधर जक्कन्नावर

बेलगांव

स्व-पर कल्याणक आचार्यश्री

प.पू. गुरुदेव, सरल स्वभावी, आचार्यरत्न बाहुबली जी महाराज के सम्बन्ध में कुछ कहना सूर्य को दीपक दिखाना है। आचार्यश्री अपूर्व त्याग, सरलता, सौम्य, करुणा आदि सद्गुणों के भंडार हैं। ऐसे महापुरुषों के कीर्तन, गुण-स्मरणादि कल्याण कारक व पाप हारक होते हैं।

भारत देश धर्म प्रधान देश है। यह तीर्थंकर एवं संतों की खान है। ऐसे सन्त जो निस्पृह वृत्ति को धारण कर स्व-पर का कल्याण करते हैं, एसे सुष्ठु कार्य करते हुए जो संयम धारणा करते हैं। ऐसे ही सन्त पुरुष हैं आचार्यश्री, जो स्व-कल्याण के साथ-साथ, परोपकार में लगे हैं, जो हमें मिथ्यात्व के अंधेरे से हटाकर सम्यक्त्व रूपी उजाले को दिखाते हुए उसे अंगीकार करा देते हैं। जिनके रोम-रोम में वात्सल्य रस भरा हुआ है, प्राणी मात्र के हृदय में जो बसे हुए हैं, ऐसे वात्सल्यमूर्ति, करुणासागर, योगीराज न कभी हुए हैं, न हैं, न ही होंगे।

पूज्य आचार्यश्री के पावन चरणों में शत-शत नमोऽस्तु।

गुरुभक्त
श्री रतन पायाप्पा रामगोंडा
बेलगांव

गुरु पूर्णिमा पर गुरु चरण वंदना का लाभ

श्री विमल जैन आत्मज स्व. सि. दशरथ लाल जी कटनी म.प्र. विगत 1993 से हृदय रोग से पीड़ित चल रहे थे। जबलपुर शहर के ख्याति लब्ध हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. वी.डी. तिवारी एवं डॉ अनुपम श्रीवास्तव ने चिकित्सा करते हुए 1993 में टी.एम.टी. सहित जांचकर राय दी एन्जियोग्राफी एवं बाईपास सर्जरी की। डॉ. अनुपम श्रीवास्तव ने चिकित्सा करते हुए 1999 में टी.एम.टी. सहित जांच करते हुए वही राय दुहराई।

चिकित्सा चलते समय डॉ. श्रीपाल ड्योढिया ने (पनागर वालों ने) संबंधी होते हुए चिकित्सा चलते हुए राय दी। महामंत्र पाठ एवं गुरु पूर्णिमा पर गुरु चरणों की वंदना करके चरणामृत पान करो।

दिनांक 14.7.2000 को दोनों भक्तों ने सपत्नीक दिल्ली यात्रा प्रारम्भ की। दिनांक 15 जुलाई को भक्तों ने पू. गुरुदेव श्री 108 आचार्यरत्न बाहुबली मुनिराज के दर्शन लिए।

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर गुरुभक्तों ने अपना कार्यक्रम करने हेतु आशीर्वाद चाहा, आशीर्वाद प्राप्त कर भक्तों ने धर्मशाला में रात्रि विश्राम किया दिनांक 16.7.2000 को गुरु पूर्णिमा एवं चन्द्रग्रहण योग था, भक्तों ने 11 बजे गुरु चरणों का अभिषेक कर चरणामृत पान किया, जिनवाणी सम्मत मंत्र पाठ एवं हवन कार्य विधिवत सम्पन्न किया।

सोमवार को दिल्ली नगर के हृदय रोग अस्पताल एसकार्ट अस्पताल में विमल का परीक्षण प्रारम्भ हुआ। सभी प्रकार की जांच हुई। दिनांक 21.7.2000 को रिपोर्ट चिकित्सकों ने देखी ओर कहा कि हृदय में कोई खराबी नहीं है।

जानकर भाव विभोर भक्तों ने यह घटना सभी सधर्म बन्धुओं के समक्ष 21.7.2000 को गुरु आरती के पूर्व कही। गुरुदेव का कक्ष जयकारों से गुंजायमान हुआ।

श्री विमल जैन
पनागर (म.प्र.)

चारित्र नायक

जिस प्रकार भूगर्भ में छिपी हुई अतुल सम्पदा के प्रगट होने पर अन्वेषक को जो खुशी होती है, उसी प्रकार की खुशी की अनुभूति प.पू. उग्रतपस्वी बा.ब्र. सद्धर्मप्रवर्तक, आचार्यरत्न पंचम पट्टाचार्य श्री बाहुबली महाराज जी की जीवनगाथा सम्बन्धि 'जय जैनाचार्य' ग्रंथ प्रकाशित हो रहा है, यह सुनकर मुझे खुशी हुई।

आचार्यश्री का जीवन चरित्र, उनकी तपोसाधना तथा संस्मरण भूगर्भ में छिपी हुई अतुल सम्पदा के समान ही अब तक अप्रकट रहा है। आचार्यश्री ख्याति से सदैव ही दूर रहकर अपनी आत्मसाधना के साथ भव्यजनों के उद्धार में ही सदा लीन रहे।

जिनके जन्म से हमारा रूकड़ी नगर पवित्र हो गया, न जानने वालों को भी रूकड़ी नगर का पता चला, आज यहां की रज को पवित्र समझकर अपने मस्तक पर लगाकर खुद को धन्य मानते हैं। इसी भूगर्भ में छिपे हुए थे हमारे 'चारित्र नायक'। जब इस भूगर्भ की सम्पदा बाहर प्रगट हो गई, तब उस सम्पदा की कीमत का पता चला।

पारस पत्थर से स्पर्श हो जाने पर धातु के स्वर्ण में परिवर्तित हो जाने के समान ही बचपन से मैं उनकी सत्संगति में आ जाने से अज्ञान और मिथ्यात्व के अन्धकार से निकल कर स्वर्ण समान मेरा जीवन उज्ज्वल बन गया।

आप गृहस्थावस्था से अत्यन्त सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। आपका बचपन से ही अत्यन्त शान्त परिणामी एवं संतोष वृत्ति पूर्ण जीवन था। आप अल्प आरम्भी और अल्प परिग्रही थे। आप ब्रह्मचारी ही रहे। आपके सहपाठी जैन-अजैन दोनों प्रकार के थे। उन सहपाठियों में से मैं भी एक अजैन सहपाठी हूं। लेकिन मुझे आपने अपने समान बना लिया। आपके निकट रहने को बहुत मिला। आपके निकट रहकर मेरा आचरण जैनियों के समान हो गया। मैं बचपन से ही आपके साथ रहा, लेकिन मेरी नजरों में आज तक आपने कभी होटल या बाहर की चीज नहीं खायी, बल्कि हम लोगों को भी नहीं खाने दिया।

आपने अपने सहपाठियों को अपने आचरण से सन्मार्ग दिखाया। गरीबों के सहारा आप ही थे। धार्मिक क्षेत्र में आपका ही कदम आगे रहता था। आपने अनेक प्रकार के नाटक लिखे, स्वयं किये एवं उनके दिग्दर्शक भी बने, राजकीय क्षेत्र में भी आपने प्रवेश किया, लेकिन आपका इन किसी में भी मन नहीं लगा। आप मुझे हमेशा वैराग्य की बातें बताते थे, तब मुझे ऐसा लगता था आप कहीं दीक्षा न लें। लेकिन जो होना था वह हो ही गया। एक दिन आपने हमारे रूकड़ी नगर को, सभी सहपाठियों को, अपने माता-पिता आदि परिवार को छोड़कर आचार्यरत्न देशभूषण महाराज जी के संघ में पदार्पण कर ही लिया। इस दिन का दुःख मैं इस लेखनी से कैसे लिख पाऊंगा। पूरा नगर दुःख में डूबा था। मेरी तो स्थिति बहुत ही अलग हो गयी थी।

आपको फिर घर वापिस बुलाने बहुत बार मैं भुजबली भाई आदि के साथ आया, लेकिन आपने तो संसार के प्रति ऐसी पीठ दिखाई फिर संसार में वापिस न आने की। आपने अपने गुरुदेव के चरणों में रहकर बहुत कुछ आध्यात्मिक ज्ञान पा लिया। ब्रह्मचर्य, क्षुल्लक, मुनि एवं आचार्यपद भी आपको अपने गुरुदेव ने ही प्रदान किया। आप चतुर्विध संघ के कुशल नायक हैं। सरलता, सौम्यता, तपस्या, ज्ञान एवं उच्च चारित्र निष्ठा की दृष्टि से जैन आचार्यों में आपका स्थान महत्वपूर्ण है। धर्म व संस्कृति की उन्नति की आपके मन में बड़ी अभिलाषा है। मैं उन महोपकारी के चरणों में कोटि-कोटि नमोऽस्तु करते हुए यही कामना करता हूं कि वीतरागी, निस्पृह, लोकोपकारी आचार्य महाराज दीर्घायु हों और उनके द्वारा जिनशासन की महती प्रभावना होती रहे।

गुरुसेवक
श्री शंकर कुंभार (गुरुजी)
रूकड़ी

कल्पतरु

विमल गंगा का जल मन-शरीर को पवित्रता व शीतलता प्रदान करता है, चन्द्रमा विश्व को शीतलता प्रदान करता है। वसंत ऋतु सोई हुई प्रकृति को नव जीवन प्रदान करती है। वर्षा का जल झुलसती हुई पृथ्वी को तृप्ति प्रदान करता है ऐसी ही भावनाओं को संजोए हुए भौतिकता प्रधान जगत में पापों में उलझे हुए ज्ञान विहीन प्राणियों को सन्मार्ग पर चलने के लिए कोल्हापुर जिले के रूकड़ी नगर में ज्ञान दिवाकर रूपी प.पू. आचार्यरत्न बाहुबली महाराज जी का उदय हुआ।

मेरे पिताजी (मोनाप्पा) हमेशा मुझे कहते थे-आपको बचपन से ही सादा जीवन पसंद था। आपकी उम्र छोटी होकर भी आप हमेशा बड़े लोगों में रहा करते थे। शुरू से ही आपको धर्म के प्रति रुचि थी। रूकड़ी में त्यागी आने का समाचार मिलते ही आप उनकी सेवा के लिए सहर्ष हाजिर रहते थे।

एक बार, जब कोल्हापुर में भारत गौरव आचार्यरत्न देशभूषण महाराज जी अपने विशाल संघ सहित पधारे थे, उस समय त्यागियों के आहार के लिए रूकड़ी से शुद्ध दूध लेकर जाते थे। बचपन से ही साधु सेवा, समाज सेवा, गरीबों की सेवा करने में आपकी बहुत रुचि थी। आप रूकड़ी में जब तक थे तब तक साधुओं की सेवा वगैरह करते थे। पिताजी के साथ आप दशधर्म आदि व्रत करते थे।

पिताजी कहते थे-'संभव कुमार जब तक था तब तक तो हमारे गांव में कुछ धर्म था, अब संभव के संघ में चले जाने से-संन्यास धारण करने से फिर हमारा गांव अज्ञान अंधकार में डूब गया।'

रूकड़ी ज्ञान दिवाकर ने पूरे विश्व को प्रकाशित करने के लिए भारत गौरव आचार्यरत्न देशभूषण जी के संघ में प्रवेश किया और मिथ्यात्व अंधकार को दूर कर अपनी ज्ञान रश्मि से सबके मन को प्रकाशित किया।

आपने संघ में प्रवेश करते ही आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर संयम की ओर अपना कदम बढ़ाया। कुछ ही दिनों में आचार्यश्री के सान्निध्य में आपने संसार की अनित्यता को समझकर संयम की ओर दूसरा कदम बढ़ाते हुए सप्तम ब्रह्मचर्य प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये। जब वैराग्य दृढ़ हुआ तो गोम्मटेश्वर श्रवण बेलगोला क्षेत्र पर क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण कर ली और आपने गुरुदेव के पास अनुपम गुणों की निधि को प्राप्त किया। आप आचार्यश्री के लाडले शिष्य थे। संघ में सभी के चहेते थे। कुछ वर्षों पश्चात् आपने आचार्यश्री से तारंगा में मुनिदीक्षा धारण की। आपमें आचार्य के 36 गुणों को देख आपके गुरुदेव ने आपको 26 जून 1980 में आचार्यपद का भार सौंप दिया। आप चतुर्विध संघ के कुशल नायक बन गये।

आचार्यपद पर प्रतिष्ठित होने के पश्चात् आपकी वाणी का प्रभाव जन मानस पर अधिक पड़ने लगा। आचार्यश्री शांतिसागर जी की परम्परा में पंचम पट्टाचार्य पद पर अधिष्ठित होकर आचार्य परम्परा में आपने चार चांद लगाये हैं। आपके द्वारा बहुत धर्म प्रभावन हो रही है। वर्तमान युग में आगम कथित मुनिचर्या का निर्दोष पालन एवं संघ को एकसूत्र में निबद्ध रखने की आपमें अपूर्व क्षमता है।

मैं प.पू. आचार्यश्री के चरणों में नमोऽस्तु करते हुए विनयांजलि अर्पित करता हूं तथा आप दीर्घायु रहकर आपकी कल्पतरु सदृश छत्र छाया में श्रमण संघ चारित्र की अभिवृद्धि करता रहे।

श्री आदिनाथ मोनाप्पा चौगुले
रूकड़ी-कोल्हापुर

आराधनीय मेरे गुरुदेव

सन् 1980 में प.पू. गुरुदेव आचार्यरत्न बाहुबली जी महाराज हमारे अकलूज नगर में भगवान अनंतनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हेतु आये थे। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा शुरू थी। भगवान अनंतनाथ जी का केवलज्ञान कल्याणक का दिन था और उसी दिन जिनमंदिर जी के बाजू में श्वेताम्बर मंदिर में श्वेताम्बर साधु की सल्लेखना शुरू थी। अब वे साधु कुछ ही समय के थे। तब हम सब लोग प.पू. आचार्यश्री के पास पहुंचे और पूछा-'आचार्यश्री, श्वेताम्बर साधु कुछ ही समय के हैं। हम भगवान को वेदी पर विराजमान करने वाले हैं, उसी समय कुछ हुआ तो क्या करें ?'

पू. आचार्यश्री कुछ क्षण आंखें बंद कर बैठ गये और झट से बोल पड़े-'भगवान् विराजमान होने तक उन्हें कुछ नहीं होगा। आप निश्चिन्त रहें।' आचार्यश्री के मुख से बात निकली और हो भी गया वैसा ही। भगवान वेदी पर विराजमान करने के बाद समाधि हो गयी।

ऐसे बहुत कुछ अनुभव मैंने लिया है। तभी तो आचार्यश्री मेरे लिए वंदनीय हैं, पूजनीय हैं, आराधनीय हैं। प.पू. आचार्यश्री की मंगल देशना सम्पूर्ण प्राणीमात्र को चिरकाल तक मिलती रहे, ऐसी कामना करते हुए उनके पावन चरण कमलों में हम दोशी परविार की ओर से शतशः नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!

गुरुभक्त
श्री शीतल माणिकचंद दोशी एवं परिवार
अकलूज

मोक्षमार्ग प्रदीप

प.पू. गुरुदेव आचार्यरत्न बाहुबली महाराज जी की जीवनगाथा प्रकाशित होने जा रही है, यह सुनकर हमें बहुत आनन्द हुआ।

हमारे माता-पिताजी के सुसंस्कार से ही हमें आचार्यश्री के सहवास में बहुत समय तक रहने को मिला। जब हम आचार्यश्री के साथ विहार करते थे, तब हम कितना चलते थे इसका ख्याल भी नहीं रहता था। फंसे हुए इस रंगीली दुनिया में महोपकारी पू. आचार्यश्री के हस्तावलंबन से हम बच गये।

जिनके केवल पावन पवित्र दर्शन से प्राणीमात्र को आत्मशांति मिलती है, तो उनके सहवास से क्या होता होगा? पू. आचार्यश्री एक तेजस्वी प्रतिमा हैं, करुणा के महासागर हैं, दिव्य ज्ञान रूपी रत्नों से भरा हुआ खजाना ही समझो।

आत्म स्वरूप की प्राप्ति एवं अध्यात्मिक तत्व का प्रसार ही जिनका लक्ष्य है, पू. आचार्यश्री की दिव्य वाणी से प्रगट हुए जिनामृत को जिसने प्राशन किया वह निश्चित मोक्ष का धारक बनता है। पू. आचार्यश्री ने अपने मधुर उपदेश से अज्ञान अंधकार में पड़े हुए जीवों को सन्मार्ग रूपी प्रकाश देकर श्रेयोमार्ग दिखाया तथा आगे भी दिखा रहे हैं।

पू. आचार्यश्री के चरण जिस धरती पर पड़े वह धरती मानो पावन तीर्थ का रूप लेती है। आज कोल्हापुर-सोलापुर हाईवे रोड पर श्री धर्मनाथ तीर्थंकर तीर्थ त्यागी तपोवन धर्मनगर क्षेत्र पू. आचार्यश्री की प्रेरणा से निर्मित हुआ है। वृद्ध-असमर्थ त्यागियों के लिए अप्रतिम क्षेत्र है।

प.पू. भारत गौरव आचार्यरत्न देशभूषण महाराज जी के संघ में, क्षुल्लक अवस्था में जब आचार्यश्री थे तब उन्होंने जयपुर-चूलगिरी क्षेत्र निर्माण करवाया और 1980 में प.पू. आचार्यरत्न बाहुबली महाराज जी ने हमारे अकलूज नगर में भ. अनंतनाथ जी की प्राण प्रतिष्ठा करवाई तथा साथ ही भ. महावीर कीर्ति स्तम्भ एवं प्याऊ बनवाने की भी प्रेरणा दी एवं नवयुवकों की संघटना अर्थात बाहुबली सेना स्थापित करवाई।

पू. आचार्यश्री ने अनेकों स्थानों में जिनमंदिर निर्माण, जीर्णोद्धार आदि महान कार्य किये। फलटण, अकलूज, म्हसवड, धर्मनगर आदि अनेकों स्थानों पर विधि-विधान आदि कराकर जिनधर्म की ध्वजा फहराया। जैन संस्कति को देशभर में प्रचार किया। 1997 के अकलूज चातुर्मास में पू. आचार्यश्री का ममतामयी वात्सल्य, सरल स्वभाव देखकर हमारे अकलूज नगर वासियों ने इन्हें 'वात्सल्य रत्नाकर' पद से भूषित किया।

ऐसे महोपकारी योगराज के दीर्घायु की कामना करते हुए हमारे दोशी परिवार की ओर से उनके पावन चरण कमलों में शतशः नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!

गुरुभक्त श्री सुनील हिराचंद दोशी एवं परिवार, अकलूज

भाव-समर्पण

तप की अग्नि से उद्भूत, ओजमयी मुस्कुराहट लिये, हाथों को हवा में उठाकर आशीष देते हस्त-युगल, चिलचिलाती धूप में अनवरत बढ़ते हुए दो कदम और दो कदमों के पीछे अनेकों अनुशासित-ऐसे प्रथम दर्शन की बेला में जिनका त्याग हृदय की गहराइयों तक उतर कर अंतर्मन को भिगो गया था।

वे प्रातः स्मरणीय, पूज्य आचार्यरत्न श्री बाहुबली स्वामी के माला में मोती के मानिन्द संघ सहित दिल्ली प्रवेश पर अभिभूत अन्य श्रावकगणों की भांति हमारा मन भी गुरु सामीप्य के लिये लालायित हो उठा। दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले पर स्थित लाल मंदिर में चातुर्मास कर रहे, आमंत्रणों की भीड़ से घिरे हुए करुणासिक्त मुनिराज ने चातुर्मास के अन्तराल ही पर्वराज दशलक्षण पर्व पर निर्माण-विहार पधारने के, हमारे संकोच सहित किये गये सविनय आमंत्रण को करुणासिक्त स्वीकृति दी तो हृदय-कमल उल्लसित हो नृत्य करने लगा।

सीमित श्रावकों की नगरी निर्माण विहार में गुरु का संघ सहित पदार्पण पाकर, उनकी चरण-रज धोकर माथे से लगाई तो जैसे दो बूंद जल पूरे तन-मन को भिगो गया।

बीच में विराजित आचार्यश्री दायें हाथ पर विराजित मुनिसंघ व बायें हाथ पर रत्नमाला सम सुशोभित आर्यिकाएं, ब्रह्मचारिणी दीदियां साक्षात जिनेन्द्रदेव के लघु-समोसशणवत् प्रतीत होता हुआ जिनालय का भव्य-भवन स्नेहासिक्त, करुणासिक्त गुरु व गुरु-संघ के संयममय ओजस्वी वाणी में हृदयस्थ हुए आशीर्वचन, निर्मल, सरल मुस्कान जैसे हर एक को अभिभूत करती हुई सी आचार्यश्री व समस्त संघस्थ मुनि आर्यिकाएं इतने सरल, निश्छल व पवित्र कि सभी उनका सामीप्य व आशीर्वाद पाने को उमड़े पड़ रहे थे। आल्हादित जनसमूह देखकर लगता था, मानो लोहे की मंडी में पारस का व्यापारी आने पर सभी अल्पसमय में स्वयं को स्वर्णमयी कर लेना चाहते हैं।

आहारचर्या की महत्वपूर्ण बेला, जहां श्रावक साधु का सर्वाधिक सामीप्य व अंतरंगता प्राप्त करता है, वहां भी एक होड़ सी लगी रही। संघस्थ मुनि-आर्यिकाओं के चरण-कमल अपनी कुटिया तक पड़ जायें, हर एक आतुर था और सभी को मिला गुरुओं का सामीप्य, आशीर्वाद व मुस्कानों से तृप्त हुआ मन हर श्रावक का।

प्रतिदिन प्रातः जागने से शैया की बेला तक पूजा-विधान, जप-पाठ व धार्मिक वातावरण की रचना करते हुए गुरु के सामीप्य के मात्र पन्द्रह दिन हवा के पंख लगाकर उड़ गये। जहां से समय उधार लिया था, वहीं तक चले गुरु-संघ के साथ निर्माण विहार के श्रावक गण। उसी ऐतिहासिक लाल मन्दिर छज्जूमल की धर्मशाला तक ....

पर यही नहीं थम गये हैं हमारे ये कदम। गुरु-चरणों की रज लेने जा पहुंचेंगे बार-बार वहीं, जहां के रज-कण गुरु के चरणों से स्पर्श पा रहे होंगे और अपनी सच्ची भक्ति से जीत लेंगे गुरु का मन। एक बार फिर से लिवा लाने को निर्माण विहार जिनालय की नगरी तक।

क्षीरोदधि से गुण गंभीर
मुक्ति रमा के ठाड़े तीर
गृहबंधन को त्याग दिया
पर
अंतर्मन में जग की पीर॥

आशा 'सुमन'
अध्यक्षा-जैन मिलन (महिला) प्रीति विहार

पूज्य आचार्यश्री के चरणों में शब्द पुष्पांजली

प.पू. प्रातः स्मरणीय आचार्यरत्न श्री 108 बाहुबली महाराज जी के पावन चरण कमलों में त्रियोग शुद्धि पूर्वक त्रिवार नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!

प.पू. आचार्यश्री की जीवन गाथा सभी जीवों को मालूम होने के लिए 'जय जैनाचार्य' ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है। खुशी की बात है।

'संत न होते संसार में तो जल जाता यह संसार'

ऐसे कहा जाता है यह सत्य भी है। क्योंकि आचार्यश्री जैसे संत हैं इसलिए तो संसार बचा हुआ है।

पूज्य आचार्यश्री जी का कार्य भी उनके नाम की तरह ही है। जिनके बाहु में बल है ऐसे बाहुबली तो महाबलशाली हैं। पूज्य आचार्यश्री का सन् 1996 का चौमासा सांगली नगरी में संपन्न हुआ। वह एक ऐतिहासिक चौमासा हो गया। पूज्य आचार्यश्री के उपदेश, आदेश और आशीर्वाद से कई लोगों ने दशलक्षण व्रत, कई लोगों ने अनंत व्रत लिया और वो अभी तक निरंतर चल रहा है।

मुनि शरदजी कर्वे जैसे अनेक लोग भक्त बन गये। अनेक लोगों ने व्यसनों का त्याग कर दिया। यह सब पूज्य आचार्यश्री के आशीर्वाद से ही हुआ है।

अतः हम जिनेन्द्र प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि ऐसे महान पूज्य आचार्यश्री को दीर्घायु प्राप्त हो।

परम पूज्य आचार्यरत्न श्री 108 बाहुबली महाराज जी के पावन चरण कमलों में त्रियोग शुद्धि पूर्वक त्रिवार नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!

मा. अशोक आ. पाटील
चेयरमैन सो,
रा.व. दावड़ा दिगम्बर जैन बोर्डिंग
34, महावीर नगर, सांगली-416416
संचालक
दि रत्नाकर बैंक लि. कोल्हापुर

पूज्य आचार्यश्री के चरणों में आप-बीती

मानव स्वभाव की तृप्ति यदि वर्तमान के सुख में हो जाये तो शायद विश्व में अशान्ति ही न हो। ऐसा सभी लोग जानते है और कहते भी है किन्तु कभी-कभी यह अतृप्ति भी अर्न्तात्मिक सुख का कारण भी बन जाती है, यह हमनें तब जाना-जब उपाध्याय गुरू श्री गुप्तिसागर जी मुनि महाराज के बोध कराने पर आचार्य शिरोमणि बाहुबली सागर मुनि महाराज के दिल्ली आगमन पर 7 जुलाई 2000 को प्रातःकाल से ही बड़े उत्साह के साथ हमने **निर्माण विहार जैन तीर्थ क्षेत्र वीरोदय** में अनेक स्वागत की तैयारियां शुरू कर दी। सुबह से ही पलक-पांवड़े बिछाये अपार जनसमूह, वाद्य-ध्वनि और आसमान गुंजाते जय-जयकार के नारों के बीच आचार्य श्री ने ससंघ निर्माण विहार में प्रवेश किया।

धन्य हुए हम सबके नयन, जुड़ गये हाथ, झुक गये माथे आचार्य श्री के चरणों में। और उनकी अमृत-वाणी जब कानों में पड़ी तो आत्मा की तड़प मिटती चली गई। लगा कि प्यासी धरती को पानी की दो बूंद मिली हो। लेकिन उन दो बूंदों से तृप्त हो न हो सकी हमारी प्यास और उसी अतृप्ति-भाव से गुरु के सामीप्य की लालसा दिनों-दिन और ज्वलन्त होती चली गई। यह ज्वलन्त पिपासा कैसे शान्त हो? एक ही उपाय था कि आचार्य श्री ससंघ निर्माण विहार पर कृपा दृष्टि करें।

सीमित परिचय, सीमित-साधन व शंकालु मन (कि किस तरह निर्वाह कर पायेगें मुनि संघ का, हमें कुछ भी तो ज्ञान नहीं) के कशमकश के बीच गुरूजी से अपने मन की बात कहने में हमारी सहायता की थोड़ी सी भक्ति की कसौटी पर कसने के बाद ही आचार्य श्री ने मुस्कराते हुए, निर्माण विहार जिन मन्दिर तक पधारने की स्वीकृति दे दी। इसमें विशेष श्रेय श्री अरुण जी का रहा।

हमारी ही तरह बहुत मन शंकालु थे। आचार्य श्री के पास भी पहुँचे पर कोई भी शंका उन्हें विचलित न कर सकी।

वो शुभ दिन भी आया जब आचार्य जी का 1 अगस्त 2000 को श्रद्धेय संघ के साथ, निर्माण विहार जिनमन्दिर में दशलक्षण पर्व पर, धर्म प्रभावनार्थ आगमन हुआ गुरूजी के आगमन पर मन्दिर के प्रांगण भी श्रद्धालु श्रावकों की अथाह भीड़ को समेटने में स्वयं को असमर्थ पा रहा था। प्रतिदिन प्रवचनों की अमृत-वर्षा में सराबोर श्रावक-गण सब कुछ जैसे भूल से गये थे।

मुनियों की आहार बेला में पड़गाहन का दृश्य आज भी आंखों को आनन्दाश्रु से भिगो देता है। ऐसे सरल, ऐसे मुस्कराते हुए गुरू संघ के दर्शन, सबको भाव-विभोर कर रहे थे।

ऐसे गुरू जो कठिन से कठिन व गहरी से गहरी बात को भी इतनी आसानी से हृदयंगत करा दें कि आभास भी न हो कि त्याग व धर्म-साधना कांटो की इतनी कठिन शैया है। और इसी के चलते हमारे जीवन की सबसे सुखद व यादगार पहलू-

प्रथम दिन ही आचार्य श्री के आहार-दान का अवसर प्राप्त होने की खुशी को हम संभाल भी न पाये थे कि महाराज जी के कठिन नियम आहारदान से पहले शुद्ध जल का नियम (जिसकी कल्पना शायद हमनें की ही नहीं थी)ने हमें उदास कर दिया। हमें अपने पर विश्वास न था कि इतनी कठिन नियम हम अपने जीवन में पूर्ण कर पायेगें। भावनाओं के सागर में गोते लगा ही रहे थे कि आचार्य श्री की एक दृष्टि ने सबके मन बदल कर रख दिये। हमें भी आचार्य श्री को आहार-दान कर अपने को धन्य मान रहे थे।

धर्मानुरागी श्रावकों के लिये यह साधारण सी बात होगी, पर हमारे जीवन की एक अमूल्य घटना ही आचार्य श्री से हमने नियम लिये और उन्हें निभाने का आत्मिक बल भी उन्हीं से प्राप्त किया।

पंद्रह दिन में ही माताओं व स्नेहमयी ब्रहमचारिणी बहनों ने सभी को धर्मबंधन के इस पौधे को, सरल दुलार रूपी जल से इस तरह सींचा कि आजीवन हम अपने मन-आत्मा से उन्हें विस्मरण नहीं कर पायेगें। चाहते हैं, हमें अपने जीवन में उनका सामीप्य और वात्सल्य प्राप्त होता रहे। हम कहीं भी रहे गुरू चरण जहां भी विराजमान होंगे, हमारे हृदय में होंगे।

श्रद्धेय आचार्य श्री के लिये कथा कहूं। कही पढ़ी हुई दो पंक्तियां याद आ रही है -

"त्यागमय जीवन बनाया, त्याग कर संसार को
ऐसे ही गुरू भगवंत को, शत-शत नमन हर बार हो।"

'नमोऽस्तु'

विनीत
कुलदीप राम कुमार जैन
नरेन्द्र कुमार जैन

विस्मरणीय क्षण

अज्ञान तिमिरांधानां ज्ञानाञ्जन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः॥

पू. आचार्यश्री के दर्शन का पहला प्रसंग हमें कुरुंदवाड नगर में आया। वहां के नगराध्यक्ष श्री रावसाहेब पाटील और उनकी धर्मपत्नी सौ. विजया पाटील ने हमें व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया था। इस कार्यक्रम में मैं और स्व. पं. नरेन्द्र कुमार जी भिसीकर वहां उपस्थित थे।

पू. राजुलमती माताजी ने पू. आचार्यश्री के सान्निध्य में सल्लेखना व्रत धारण किया था। माताजी की वैयावृत्य वात्सल्य पूर्वक करने का आदेश परम कारुण्य मूर्ति आचार्यश्री ने अपने संघस्थ सभी त्यागियों को दे दिया। आचार्यश्री की कृपा से उनकी अत्यन्त शांत रूप से, निराकुलता पूर्वक समाधि हो गई।

उसी समय प.पू. भारत गौरव आचार्यरत्न देशभूषण जी महाराज जी ने उन्हें 'बालाचार्य पद' से गौरान्वित किया था। पश्चात् उनका स्वतंत्र विहार तीर्थयात्रा निमित्त हुआ।

श्राविकाश्रम संस्था नगर सोलापुर के श्राविकाश्रम में धर्म शिक्षण के लिए पू. आचार्यश्री ने संघस्थ बुद्धिमान, मेधावी, ब्रह्मचारिणी कन्या (कु. सुरेखा, नूतन) को आदेश दिया। यहां पर रहकर उन्होंने अत्यन्त उत्साह पूर्वक अध्ययन किया। 5 साल के अन्दर ही आचार्यरत्न बाहुबली महाराज जी के परीस स्पर्श से जिनका जीवन सुवर्णवत् (आर्यिका दीक्षा लेकर) हो गया। नाजुक कोमल कलियां संघ में वैराग्य ज्ञान की प्रखर किरणों से उन्मूलित हो रही थी। उनके दर्शन के निमित्त से हम भोज ग्राम गये। उस समय वहां आचार्य शान्तिसागर मानवता शांति पथ रथोत्सव था। अभूतपूर्व धर्म प्रभावना देखकर मन प्रसन्न हो गया।

पुनः तीसरी बार दर्शन करने का मौका समाधि सम्राज्ञी पू. अजितमती माताजी की सल्लेखना के समय बारामती में आया। पू. आचार्यश्री जी की कृपा दृष्टि हमारे ऊपर सदैव है।

इस वर्ष दिल्ली चातुर्मास के दौरान हमें पुनः महान तपस्वी, वात्सल्य दिवाकर गुरुदेव के दर्शनों का लाभ मिला। पू. आर्यिका श्रुतदेवी माताजी ने अत्यन्त कष्ट लेकर 'जय जैनाचार्य' ग्रंथ लिखा वह बहुत सराहनीय है। गुरु समागम मिलना बहुत कठिन है। नीति वाक्य में कहा गया है -

चंदनं शीतलं लोके, चंदनादपि चंद्रमा।
चंद्र चंदनयोर्मध्ये शीतलः साधु समागमः॥

संचालिका
बा.ब्र.प्रा. सुश्री विद्युल्लत्ता बेन शहा
श्राविका संस्था नगर, श्राविकाश्रम, सोलापुर

आचार्यरत्न बाहुबली महाराजजी के चरणों में विनंयाजली

सम्यक् प्रभावनकरं गुणरत्न सिंधु, सद् बोधवृत्त परमो ज्वलंच।
वात्सल्य पुंज मचलं नयन अभिराम, सुरि नमामि सततं गुरू बाहुबलीम्।।

सर्वोदयी संत बालयति, संत शिरोमणि, युगप्रमुख, धर्मरत्न, ज्ञानयोगी, चारित्र दिवाकर, सिद्धांत रत्नाकर, तीर्थोद्धारक, श्रमण संस्कृति संवर्धक आदि अनेक उपाधियों से अलंकृत आचार्यरत्न श्री 108 बाहुबली महाराज जी दिगम्बर जैन मुनियों की इस जीवंत परम्परा का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसने श्रमण संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी ने दक्षिण से उत्तर और पूरब से पश्चिम तक संपूर्ण देश में ससंघ विहार कर आगमानुकूल आडम्बर विहिन तथा मूल परम्परा के मानदंडों के अनुरूप जैन संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए महनीय प्रयत्न किया। इसी उज्जवल परम्परा में आचार्यश्री पायसागर जी, आचार्यश्री जयकीर्तिजी, आचार्यश्री देशभूषण जी से दीक्षित शिष्यों में से एक शिष्य विलक्षण प्रतिभा के धनी, स्याद्वाद केसरी, धर्म प्रभावक, वात्सल्य रत्नाकर आदि पदवियों से विभूषित आचार्यरत्न श्री बाहुबली महाराजजी का नाम लिया जाता है।

सभी जीवों के अभ्युदय की उत्कट भावनाओं के साथ तन्मूलक आचरण भी होने के कारण भक्तों में आपकी प्रसिद्धि सर्वोदयी संत के रूप में भी है। अहिंसा, करुणा, दया आदि सार्वजनीन गुणों से आकर्षित होकर, महाराज श्री का जहां वास्तव्य होता है, वहां पर महाराष्ट्र, कर्नाटक एवं उत्तरीय प्रांतों के हजारों जैन-जैनेतर भाई एक चुंबकीय आकर्षण की तरह उनके दर्शनार्थ एवं भव सागर से उतारने वाणी को सुनने के लिए पहुंचते हैं। महाराजश्री भी अपनी ममतामयी मुखमुद्रा से सभी आगत भक्तों को आत्मीयता का अनुभव कराते हैं। आचार्यश्री का समग्र जीवन वाणी में स्याद्वाद, विचारों में अनेकांत और आचरण में निस्पृहता को लिए हुए, आत्मकल्याण के साथ, जन-जन के कल्याण के लिए समर्पित हैं।

आचार्यश्री की सुविद्य सुशिष्या पूज्य आर्यिका श्री श्रुतदेवी माताजी गुरुवर आचार्यश्री बाहुबली महाराज जी के दीपस्तंभ वत् जीवन चरित्र पर 'जय जैनाचार्य' ग्रंथ प्रकाशित कर रही हैं। इसका हमें बहुत ही आनंद होता है। धर्म की प्रभावना के लिए एवं समाज को प्रेरणा देने के लिए ऐसे ग्रंथों की परम आवश्यकता है।

गुरुं विना न कोऽप्यास्ति, भव्यानां भवतारकः।
मोक्षमार्ग प्रणेता च सेव्योऽतः श्री गुरु सताम्॥

आचार्यश्री के चरणों में विनयांजलि अर्पण करते हुए बस इतना ही कहना पर्याप्त है कि

बाहुबली आचार्य के गुण को गाते हैं।
उनके चरणों की रज पाकर पावन होते हैं॥

गुरुभक्त बाबू भाई गांधी

अकलूज

व्यक्तित्व

मध्यलोक अनेक द्वीपों व समुद्रों से घिरा है। मध्यलोक में ढ़ाई द्वीप से ऊर्ध्वलोक याने सिद्धालय पहुँचने का सीधा रास्ता है। मध्यलोक की यह विशेषता, मनुष्य को कर्मबन्धन से मुक्त करके ऊपर उत्थान की ओर ले जाती है। तो दूसरी ओर उसकी अवनति करके पाताल का रास्ता भी दिखाती है। मध्यलोक के बीचों बीच विशाल जम्बूद्वीप है। जो जामुन के वृक्षों से सुसज्जित है। इसीलिए इसे जम्बूद्वीप कहते है। उसके दक्षिण भाग में भरत क्षेत्र नामक विशाल भूखण्ड हैं जो षट्खण्डों में बंटा हुआ है। पांच म्लेच्छ और एक आर्यखण्ड के नाम से सर्वविदित है। भरत क्षेत्र सदाचार की मर्यादा से रक्षित एक अनुपम क्षेत्र है। इसके आर्यखण्ड में ज्यादातर सज्जन, सदाचारी, सरल मानव धार्मिक श्रावकों का वास है। अनादि काल से यहां कई महापुरूष अवतरित हुए है। जिन्होंने हमें सम्पत्ति स्वरूप अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह तथा स्याद्वाद की शिक्षा दी है। जो आगे आने वाली संतति के लिए ऐसे सिद्धान्त रत्न है। जिनको हृदय में बसा लेने से आत्मा का कल्याण हो जाता है।

जम्बूद्वीप का कहें क्या हाल
इसकी महिमा बड़ी विशाल
मध्यलोक के बीच बसा
दक्षिण का भरत क्षेत्र नाम पड़ा
जो षट्खण्डों में बंटा हुआ,
म्लेच्छ खण्ड तो पांच हुए
जिनकी हम क्या बात कहें
आर्य खण्ड में जन्मे महापुरूष
जिनकी चर्चा करता हर युग।

भारत की मूल संस्कृति कुलकरों की संस्कृति है। यहां पर प्रारम्भ से ही शासकों, राजा, प्रजा, साधुओं व सभी के लिए परिणामों को निर्मल रखने पर जोर दिया गया है। अध्यात्म विद्या इस धर्म प्रधान देश की मूल देन है। प्रारम्भ में कल्पवृक्षों के द्वारा जीवन यापन होता था। नाभिराय-मरूदेवी के काल में लोग कल्पवृक्षों के सहारे सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते थे। तीर्थंकर ऋषभदेव नाभिराय के पुत्र थे।

शनैः-शनैः जीवन आधार रूपी कल्पवृक्ष समाप्त होने लगे, प्रजा के सामने जीवन की प्रबल समस्या थी। तब राजा वृषभदेव ने असि, मसि, कृषि, वाणिज्य, शिल्प और कला इन षट् कर्मों की शिक्षा जनता को दी। इस कारण वे युग विधाता कहलाए। कृषि के कारण शाकाहार को बल मिला। 'कृषि करो या ऋषि बनो' यह-भगवान वृषभ की अमूल शिक्षा थी। समय अपनी तीव्रता के साथ चलता रहा। प्रथम तीर्थंकर वृषभदेव से चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का काल आ गया। भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव के अब तक 2500 वर्ष हो चुके है। लेकिन मानव को सच्ची दिशा तथा सत्पथ निर्देशक का कार्य करने वाला कोई भी महानुभाव अवतारित नहीं हुआ। वर्तमान में मानव मन कमजोरियों का दास बन गया है।

सूर्योदय

जैन धर्म के इतिहास पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि तीर्थंकरों ने अपने जन्म द्वारा उत्तर भारत की भूमि को पवित्र किया तथा निर्वाण द्वारा उसे सिद्धक्षेत्र (तीर्थस्थल) का दर्जा भी दिलाया। किन्तु उनकी धर्ममयी देशना रूप अमृत

जय जैना
द्वितीय
ण्ड
व्यक्तित्व
जिनके तप तेज के आगे सूरज फीका पड़ जाता है।
जिनकी त्याग तपस्या लखकर श्रमणसंघ भी झुक जाता है।।
जिनके जीवन की हर चर्या मूलाचार की श्रुत गाथा।
आचार्यश्री की जीवन गाथा पढ़कर जग झुका रहा अपना माथा।।

का पान कर महत्वपूर्ण वीतराग रस भरे शास्त्रों का निर्माण करने वाले धर्मधुरन्धर आचार्यों ने दक्षिण भारत को अपने जन्म से श्रुत तीर्थ बनाया। वर्तमान में तीर्थंकर रूप धारण करने की क्षमता रखने वाले जिन धर्म प्रभावक आचार्य रत्नों ने पुनः अपने पावन जन्म से दक्षिण महाराष्ट्र प्रान्त को पावन बनाने का महान संकल्प लिया।

भारत की अहिंसामयी-भूमि पर जब हिंसा का तांडव नृत्य हो रहा था, जीवों की निर्मम बलि चढ़ाई जा रही थी। तब महावीर रूपी सूर्य उदित हुआ और उसने हिंसा रूपी घनघोर काली रात को अहिंसा रूपी प्रकाशवान दिन में बदल दिया। काल के प्रभाव से युगधर्म बदलता गया। वीर निर्वाण के करीब 2500 वर्ष बाद की स्थिति में मानव मानव का दुश्मन बना हुआ है। हिंसा, झूठ, अनैतिकता, दुराचार आदि का बोलबाला है। ऐसे समय में सत्पथ-प्रदर्शक महापुरूषों ने न्यायनीति की शिक्षा देकर सच्चा मार्ग दिखाया है। इस सत्पथ प्रदर्शनधारा में महाराष्ट्र प्रान्त के रूकड़ी नगर, कोल्हापुर जिले में एक प्रकाश पिण्ड माता के गर्भ में आया। गर्भ ठहरते ही माँ को तीर्थ वन्दना, साधुदर्शन, दिगम्बर मुनियों को आहार देने की प्रबल इच्छा होने लगी।

उन्हीं दिनों रूकड़ी में प्लेग फैल गया। बालकू तात्या अपने परिवार सहित अपने खेत में रहने के लिए चले गये। अक्का माता कभी आराम नहीं करती थी हर वक्त काम में ही लगी रहती थी। उनके उदर में पल रहा बालक चंचलवृति का होने से वह अपनी माँ को भी शान्त नहीं रहने देता था।

सूर्य अस्त होने जा रहा था, शीतल वायु मंद-मंद गति से बह रही थी। वातावरण में शुभ्रता एवं शीतलता का स्पर्श बना हुआ था। वह रात सभी रातों से अलग थी। उस रात वीरभास्कर का उदय हुआ, जो अंधकार में पड़े लोगों को दैदीप्यमान प्रकाश पुंज प्रदान करने के लिए इस धरातल में उतरने के लिए आतुर था।

सुन्दर बलशाली बालक को अक्का मां ने जन्म दिया। वह बालक ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो स्फटिक मणि के गृह के मध्य में सुशोभित निश्चल दीपक। जन्म लेने वाला यह आठवां पुत्र देवकी-वसुदेव के आठवें पुत्र कृष्ण की भांति ही था। उसके जन्म लेने से समस्त परिवार आनन्दित हो गया तथा धर्म तथा धन की वृद्धि होने लगी। जन्म लेते ही वह बालक मानो अपनी माता को सम्बोधित करके कह रहा था कि 'हे मां! तू चिन्ता मत कर मैं सारे विश्व में जैन धर्म का झण्डा फहराऊंगा।'

16 दिसम्बर 1932 मार्गशीर्ष वदी तृतीया पुष्य नक्षत्र पर वीर बालक का जन्म हुआ।

'नीचे जमीं और ऊपर है अम्बर
बड़ा शुभ दिन था सोलह दिसम्बर।'

16 तारीख सूचित करती है कि यह वीर पुरुष दर्शन विशुद्धि आदि सोलह भावनाओं की आराधना करेगा। 12वां महीना (दिसम्बर) सूचित करता है कि बारह अनुप्रेक्षाओं का चिन्तन करके वैराग्य रूपी कली को उन्मूलित करेगा।

भविष्य का ज्ञान

जिन मंदिर में पंडित के पास जाकर बालकू तात्याजी ने कुण्डली बनवाकर ग्रह दिखवाए। पंडित जी असमंजस में पड़ गए और बोले-'ऐसे उत्तम ग्रह! मैं निश्चय नहीं कर पा रहा हूं कि यह भाग्यशाली बालक परम प्रभावक योगी बनेगा या कोई अन्य असाधारणता प्राप्त करेगा।'

उजला गौर वर्ण, सौम्य सुघड़ गोल चेहरा, सुडौल नासिका, तेजोमय नेत्र, सुगठित देह, मुख पर व्याप्त प्रसन्नता की स्निग्ध छाया से सम्पन्न बालक को देखकर कोई भी संवेदनशील हृदय ऐसा नहीं था जो बालक के प्रति आकर्षित न हो। उस बालक का जन्म बलवन्त राव जी के खेत में हुआ था, वह खेत 'भट' के नाम से प्रसिद्ध था। खेत में एक झोंपड़ी थी जिसके पास एक कुआं था। ऐसे नैसर्गिक एवं सुरम्य वातावरण में इस बालक का जन्म हुआ। जिस तरह तीर्थंकर बालक को मेरुपर्वत पर जन्माभिषेक के लिए लेकर गए थे उसी तरह इस वीर बालक का जन्म भी भीड़भाड़ से दूर अत्यन्त निर्मल स्थान (खेत) में हुआ।

'दुनिया की भगदड़ से हटकर
जन्में खेतों में गुरुवर।'

दक्षिण में सियार की गर्जना को शुभ मानते हैं। बालक के जन्म से कुछ समय पूर्व सियार के गर्जने की आवाजें आ रही थीं। सियार की आवाज सुनकर शुश्रुषा करने वाली बाई कहती है कि-"अक्का कोल्हे कुई चे निमित्त शुभ आहे, हा मुलगा पुढ़े आपल्या माता-पिता चे नाव उज्जवल करेलं।"

बम्बू से शम्भू

बालक के जन्म के समय का आनन्द मेरे इस जड़ पुद्गल भाषा वर्गणा से बने हुए शब्दों से मैं क्या कह सकती हूं जिन्होंने यह आनन्द प्राप्त किया है उसका अनुभव भी उन्हीं को प्राप्त हुआ होगा। एक कहावत यह भी है कि-'बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद' कहने का अर्थ है कि उस दिन का आनन्द तो उन्हीं के लिए है जो वहां स्वयं उपस्थित थे। बचपन से ही यह बालक इतना हष्ट-पुष्ट था कि सभी लोग उसे प्यार से बम्बू-बम्बू कहने लगे। शनैः-शनैः यह नाम बम्बू से शम्भू में बदल गया और शम्भू से सम्भव कुमार में परिवर्तित हो गया। 'यथा नाम तथा गुण' वाली कहावत बालक के नाम ने चरितार्थ कर दी। सम्भव नाम तो स्वयं सार्थक ही है।

'माता-पिता का प्यारा बम्बू
आगे चलकर बन गया शम्भू
शम्भू से वो सम्भव हो गए
आचार्य बनकर धर्म में खो गए।'

'सं सुखं भवति येभ्यस्ते संभवाः' जो सुखी है वही सम्भव है। और 'शंभव' माने 'शं सुखं भवति अस्माद् भव्यानां इति शंभवः।' 'शं' माने सुख जो भव्य लोगों को सुख का मार्ग दिखाता है वह सम्भव है। 'पूत के पांव पालने में ही पता लग जाते हैं।' यह बात बालक पर शैशवास्था से ही लागू होने लगी। बालक के जन्म से पूर्व घर की स्थिति सामान्य थी लेकिन जन्मोपरान्त धीरे-धीरे घर का उत्थान होने लगा।

सौ. चन्द्राक्का (मंझली बहिन) से ज्ञात हुआ कि जब बालक एक महीने का था तब अक्का मां उसे आम के झाड़ में झूला बांधकर उसमें सुलाती थी तो ऐसा लगता था जैसे बालक झाड़ के साथ खेल रहा हो।

आकाश रूपी झूले में सूर्य के समान बालक झूलता देखकर तात्या जी अक्का मां से बोले-'हे देवी पालने में ऐसा लग रहा है कि जैसे तीर्थंकर बालक झूल रहा हो।' ऐसा सुनकर अक्का को असीम आनन्द की अनुभूति हुई।

बालक सम्भव कुमार चाचा जी का प्राणाधार, चाची जी का लाडला, पिता जी का दुलारा, परिजनों का प्यारा बालक को सारे कुटुम्बी, पड़ौसी स्नेहवश 'बम्बू-बम्बू' नाम से पुकारते थे। बालक सौम्य शान्त और बहुत ही सुन्दर था। सभी का प्यार अपने आप उमड़ पड़ता था।

बालक बम्बू धीरे-धीरे बड़ा हो गया और अपने तोतले शब्दों के द्वारा पूरे परिवार को आकर्षित करने लगा। अक्का मां अपने बालक को बैठे-2 जय-2 बोलना सिखाती थीं। तो वह नटखट बालक जोर-2 से ताली बजाकर 'जय-जय' बोलता और खिलखिलाकर हंसता था। माता-पिता भाव विभोर होकर बालक्रीड़ाएं देखते रहते थे।

'कभी वो हंसता कभी खिलखिलाता
कभी वो नटखट ताली बजाता
जय-जय करके शोर मचाता
माता-पिता का मन हर्षाता।'

यह पुण्यात्मा जीव बचपन से ही असाधारण गुणों का भण्डार था। इनका परिवार बड़ा सन्तोषी तथा जिनेन्द्र का अप्रमित भक्त था। यह अलौकिक बालक सबका मन मोह लेता था। जो भी इसे देखता वह इन्हें पराक्रम तथा प्रतिभा का पुंज कहता था। अपने मधुर व्यवहार करुण कोमल भाव और कांतिमय अप्रतिम सौन्दर्य के कारण वह बचपन से ही परिवार व समाज के प्यारे हो गए।

परिवार

सम्भव कुमार के चार भाई तथा चार बहिनें थीं। उनका भी जैसा नाम वैसा काम था। बहिनों का नाम क्रमशः हीरादेवी, तारादेवी, चन्द्रादेवी और सुन्द्रा देवी था एवं भाईयों के नाम क्रमशः भुजबली, देवाप्पा, नाभिराज, शामराव आदि थे। सभी भाई बहिन धार्मिक भाव से ओत-प्रोत थे।

हीरा, तारा, चन्द्रा, सुन्द्रा
बहिनें चार प्यारी
उनके गुणों के कहने क्या
वो थीं बड़ी न्यारी
भुजबली, देवा, नाभि, शाम
भाई थे ये चार
धर्म को लेकर उनके भी थे
उज्जवल सुन्दर विचार।'

श्रीमान् मोनाप्पा चौगुले ने बताया कि-'बालकू तात्या जी नित्य देवदर्शन के साथ शाम को शास्त्र-भजन वगैरह करते थे। वो सिर्फ दो कक्षा तक ही पढ़े थे परन्तु नित्य नियम से मोड़ी लिपि में णमोकार मंत्र लिखा करते थे। वे सदैव उत्तम चर्या के पात्र थे। बचपन से ही कट्टर सम्यक्त्वी थे। वे नीति सम्पन्न उदारवेता मानव थे। अपने खेत से जो भी फसल आती थी उसे सर्वप्रथम जिनमंदिर में चढ़ाते थे तदनन्तर घर में उपयोग करते थे। वो रुकड़ी गांव में धार्मिक एवं प्रतिष्ठित थे।

अक्का मां भी सीधी सादी
पति परायण भारतीय नारी
पिता तात्या थे गुणवान
धर्म में रहती उनकी जान।

कड़वे ककड़ी से बम्बु का बुखार उतर गया

एक दिन घर में सोए हुए उस नन्हें-मुन्ने बालक बम्बु की ओर बलवन्त प्रसाद जी ऐसे एकटक देख रहे थे कि आसपास क्या हो रहा है इसका ख्याल बिल्कुल नहीं था। परन्तु अचानक ही अक्का मां ने आकर देखा कि वह धुरन्धर बालक बुखार और दस्त में समाया हुआ है और फिर भी मुस्करा रहा है क्योंकि बम्बु के जीवन में कभी भी रोने का प्रसंग आने वाला ही न था। तो इस थोड़े से बुखार से वह रोयेगा ही क्यों?

दवाखाना न होने से पहले घरेलू औषधियों का ही उपयोग होता था। बालक का बुखार कम नहीं हो रहा था। माता-पिता, भाई, बहिन सभी लोग घबरा रहे थे। मां रात में बार-बार उठकर दीपक लेकर उसको देखती। उस समय वह बच्चा केवल नमक-मिर्ची खाने की जिद करता था। मां भी उसकी हठ को पूर्ण करती थी।

एक दिन साढ़े तीन वर्षीय बम्बू को बुखार आ गया मां उसे आंगन में लेकर बैठी थी। सामने से तायाक्का (पड़ोसिन) ककड़ी-सब्जी वगैरह लेकर अपने घर जा रही थी। वह बालक ककड़ी खाने के लिए जिद करने लगा। उसकी जिद देखकर पड़ोसिन ने उसे एक ककड़ी दे दी। ककड़ी पाकर वह आनन्दित हो उठा और उसे खाना प्रारम्भ कर दिया। ककड़ी के दो तीन टुकड़े खाने के बाद उसे फेंक दिया क्योंकि ककड़ी कड़वी थी। थोड़ी देर बाद उसका सम्पूर्ण शरीर फूल गया। ऐसी दशा देखकर मां घबड़ा गई। रात भर बच्चे को लेकर णमोकार मंत्र पढ़ती रही। सूर्योदय होने पर बम्बू को धूप में लिटा दिया। जैसे-जैसे प्रभात के सूर्य की किरणे उसके शरीर को छूती गई वैसे-वैसे बम्बू का फूला शरीर सामान्य होता गया और कुछ ही देर में पूर्ण निरोगी अवस्था प्राप्त हो गई। इसके अलावा इन्हें फिर कोई रोग नहीं हुआ। भविष्य में उन्हें कभी दवाई या इन्जेक्शन की जरूरत नहीं पड़ी।

वह कड़वी ककड़ी ही उस बालक के बुखार को कम होने में निमित्त बन गई। ऐसा होने से घर में सब आनंदित हो गए एक जगह कहा है कि-'सौभाग्यं हि-सुदुर्लभम्' सौभाग्य महापुण्य से प्राप्त होता है और उसी में 'सौभ्रात हि दुरासदं' अच्छा सुगुणी भाई मिलना भी दुष्कर है। इन भाई बहिनों का सौभाग्य ही है कि बम्बू के समान सगुणी भाई मिला।

पांच वर्ष के बाद

नन्हा बम्बू पांच वर्ष का हो गया। बोलने में बहुत गम्भीर एवं चातुर्य पूर्ण स्वभाव था। वह अपने पिताजी को 'तात्या' तथा मां को आऊ' नाम से पुकारते थे। एक दिन विचार किया गया कि अब बम्बू को स्कूल भेजना चाहिए। और अच्छा मुहूर्त देखकर उसे प्रायोगिक विद्या मन्दिर स्कूल में दाखिल करा दिया। वह रोज नियम से स्कूल जाते तथा अपना काम समय पर पूरा करते थे। उनकी बुद्धि अकलंक स्वामी की तरह तेज थी। गुरूजी एकबार जो भी पढ़ाते थे वह उन्हें झट याद हो जाता था।

श्रीमती हीरा (बड़ी बहन) से हमे ज्ञात हुआ कि अक्का मां अपने सब बच्चों को पास में बैठाकर उन्हें अच्छी-अच्छी कहानियां सुनाती थी। चोरी करने से कौन सा पाप लगता है, राजा के द्वारा उन्हें कौन सी सजा मिलती है। व्यसन से कितने लोगों का जीवन बर्बाद हो गया, इसके बारे में कथा बताती थी। दूसरे जीवों को दुःख देने से, चोरी करने से, झूठ बोलने से, व्यभिचार करने से, परिग्रह ज्यादा जोड़ने से कौन सा पाप होता है, उन्हें क्या सजा मिलती है। इस प्रकार सभी बच्चों को अनेकों प्रकार के उद्‌बोधन तथा कथाएं सुनाती थी। तथा बच्चों को सभी पापों तथा व्यसनों से दूर रहने को कहती थी।

'माता सुनाती रोज कहानी, बच्चे सुनते गौर से वाणी।
पाप का फल तो होता बुरा, सच की राह चलना सदा॥'

आद्य एवं सच्ची शिक्षिका

अक्का मां कहानी सुनाती, बच्चे ध्यान से सुनते। लेकिन सम्भव कुमार के मस्तिष्क में विचारों का द्वन्द्व छिड़ जाता-लोग पाप क्यों करते हैं? देव उन्हें सजा नहीं देते होंगे क्या? उनको पाप का डर नहीं लगता होगा? मां की शिक्षा बच्चों ने औषधि के रूप में पी ली। इसीलिए उनके बच्चे आजीवन सप्त व्यसनों से दूर रहे।

बालक शम्भू को मां से सात्विक रूप तथा पिता से मिठास विरासत में मिली। उनका स्वभाव सरल एवं विनय पूर्ण था। उनमें अग्नि तत्व की प्रखरता, जल तत्व की सरसता थी जो लोक कल्याण एवं जनकल्याण में परम आदर्श बनकर प्रकट हुई।

अक्का मां के एक-एक शब्द शम्भू ने अपने हृदय में स्वर्ण अक्षरों में अंकित कर रखे थे। मां को अक्षरी ज्ञान नहीं था लेकिन अनुभव हर क्षेत्र का था। मराठी में कहते है-'अनुभव हीच खात्री'। माता अक्का विदुषी धर्मपरायण मितभाषी, पति सेवा तत्पर, पुण्यशीला थी। वह सदैव जिन सेवा में संलग्न रहती थी। हमेशा त्यागियों को आहार देकर पुण्य कमाती थी।

'अक्का मां थी विदुषी नारी
धर्म में अपनी उम्र गुजारी
अक्षर ज्ञान भले नहीं था
पर अनुभव का भण्डार बड़ा था।'

दिगम्बरत्व के दर्शन की पिपासा सन् 1944

शम्भू ने जैन मुनि देखे नहीं थे सिर्फ सुन रखा था कि जैन मुनि 'दिगम्बर' वेश में होते है। एक दिन पता चला कि रूकड़ी के जिन मंदिर में परम पूज्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज ससंघ पधारें हुए है। तथा मंदिर के प्रागंण में आचार्य श्री का केश लोच होना था। दर्शनार्थ जन समुदाय उमड़ रहा था। बालक शम्भू अपने पिता बालकू तात्या जी के साथ आचार्य श्री के दर्शन को चल पड़े। उनके मस्तिष्क में विचारों का प्रवाह बढ़ रहा था-गुरू कैसे होंगे? वे नग्न कैसे रहते होंगे? क्या उन्हें सर्दी-गर्मी का अहसास नहीं होता होगा?

केशलोंच करते हुए एक विशाल काय प्रशान्त तेजस्वी वीतराग दिगम्बर छवि को स्तम्भित हो किंकूर्तव्यविमूढ़ बालक निर्निमेष पलकों से-निहारता रहा। मन मयूर नाच उठा। मानो भविष्य में अपने को सजाने की कल्पना में ही डूब गया हो। एकाएक उस नन्हीं सी जान ने आचार्य श्री को केशलोंच करते देख वह स्वयं अपने हाथों से अपने बालों को उखाड़ने लगे। यह देखकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। जब शान्ति सागर महाराज जी ने देखा तो वह बहुत प्रभावित हुए। फिर उन्होंने अक्का मां को बुलाकर दसलक्षण व्रत करने के लिए कहा लेकिन उन्होंने असमर्थता जताई। तब महाराज जी ने उन्हें समझाकर कहां-'अक्काबाई'। कैसा भी प्रसंग आने दो लेकिन यह महान व्रत मत छोड़ना, अपने हाथों की दस अंगुलियों को दस बादाम समझना और अपने मस्तक को नारियल समझकर भक्ति भाव से पूजा करना, उसी से तुम्हारे सब कष्ट दूर हो जाएगें।'

पूज्य आचार्य श्री का आशीर्वाद था कि अक्का मां को दशलक्षण पूजा के समय कभी भी किसी भी प्रकार की बाधा नहीं आयी।

शान्ति दिगम्बर, तेजस्वी छवि, जल में चमक रहा ज्यों रवि।
प्रभावमयी गुरूदेव को देखा, आगा पीछा कुछ नहीं सोचा॥
हाथों में बालों का पकड़कर, खींच दिया शम्भू ने कसकर।
सबको हुआ अचम्भा भारी, वाह-वाह करती जनता सारी॥

मौजी बन्धन (यज्ञोपवीत संस्कार)

हवा पानी की उचित मात्रा के कारण एक बीज अंकुरित होकर शनैः-2 विशाल वृक्ष में परिवर्तित हो जाता है। उसी प्रकार कौन-2 से संस्कार तथा कौन-सी शिक्षा बालक के चारित्रिक विकास के लिए आवश्यक है यह निर्णय ज्यादातर मां को ही लेने होते है। इसलिए अक्का मां ने रूकड़ी के जिनमंदिर में भुजवली, देवाप्पा, नाभिराज, शामराव, सम्भव कुमार का मौजी बन्धन संस्कार करवाया था इसलिए मां को 'आद्य गुरू' के रूप में सम्बोधित किया जाता है। और ऐसी माताओं की आचार्य श्री प्रशंसा करते है। जैसे-समयसारादि ग्रन्थकार कुन्द कुन्दचार्य की मां बालक कुन्द-2 को झूले में सुलाकर आध्यात्मिक गीत सुनाती थी तभी वह बालक आगे चलकर 'कुन्दकुन्द आचार्य' बन गए। उसी प्रकार अक्का मां ने सम्भव कुमार को बचपन से ही सुसंस्कारित किया। इसलिए वो भी आगे जाकर आदर्श एवं पूज्यनीय 'आचार्य रत्न' बन गए। और अक्का मां उनकी आद्य एवं सच्ची शिक्षिका बन गई।

बालक सम्भव 'सादा जीवन उच्च विचार' पर ही ज्यादा ध्यान देते थे। वो हमेशा स्कूल जाते वक्त खादी के कपड़े, गांधी टोपी, खाकी हॉफ पेन्ट ही पहनते थे। दीन-गरीब विद्यार्थियों को देखकर शम्भू को बहुत दुःख होता था। उनके पास जो कुछ भी होता था वह उसे गरीबों को बांट देते थे। इसीलिए शायद वो दिगम्बर मुनि बन गए।

सा विद्या या विमुक्तये

धार्मिक शिक्षा मानव जीवन के उत्थान की आधार शिला है। प्राचीन समय में स्कूल व कॉलेज नहीं होते थे। माता-पिता बच्चों को घर पर ही लोक व्यवहार सम्बन्धी शिक्षा देते थे, बाद में गुरूकुलों में जाकर शिक्षा प्राप्त करना भारतीय संस्कृति थी, वहां पर बच्चों को सदाचार तथा नैतिक-मूल्यों की शिक्षा दी जाती थी। वर्तमान में यह पद्धति नहीं है। आज किताबी ज्ञान का बाहुल्य है लेकिन सदाचार सम्बंधी शिक्षा का सर्वथा अभाव हो गया है। फलतः व्यक्ति नैतिकता से बहुत दूर चला गया है। 'णाणं पयासओ' भगवती आराधना ग्रन्थ में **शिवकोटि** आचार्य ने लिखा है-'ज्ञान का प्रकाश करो।' प्राचीन समय में सच्ची शिक्षा प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को परिश्रम करना पड़ता था। सच्चा विद्यार्थी विद्या प्राप्त करने के मार्ग में आने वाले कष्टों को सहर्ष झेलता था। विनय युक्त हो निष्प्रमादी होकर ज्ञानार्जन करता था। विद्या मात्र ख्याति, पूजा या प्रसिद्धि का अंग नहीं है अपितु रोम-रोम में शालीनता तथा सदाचार को भर देती है। वर्तमान में हालात बदल गये हैं-आज का विद्यार्थी विद्या प्राप्त करने के लिए किन्चित मात्र भी कष्ट नहीं उठाना चाहता। आचार्य लिखते है-'सुख से प्राप्त किया गया ज्ञान विपत्ति आने पर विस्मृत हो जाता है।' शास्त्रों में विद्वानों ने विद्यार्थी में निम्न गुणों का होना आवश्यक बताया था-

"काक चेष्टा, वको ध्यानं स्वान निद्रा तथेपि च।
अल्पाहारी, गृह त्यागी, विद्यार्थी पंच लक्षणं॥"

बाहुबली आश्रम में धार्मिक एवं लौकिक शिक्षण सन् 1945

सम्भव कुमार बाल्यकाल से ही मितभाषी थे। कठोर वचन उनके मुख से कभी नहीं निकले, उन्होंने किसी भी जीव को कभी दुख नहीं दिया। छोटी मूर्ति होकर भी वह विशाल दृष्टि रखकर विचार करते थे। उनकी बुद्धिमता, चातुर्यता तथा लगन देखकर उनके माता-पिता ने अध्ययनार्थ अपने लाडले बम्बू को निष्ठुर बन बाहुबली (कुंभोज) आश्रम में प० पू० 108 गुरुदेव समन्तभद्र मुनि महाराज जी की छत्र छाया में पढ़ने के लिए भेज दिया। क्योंकि योग्यमाता-पिता का कर्तव्य हैं सन्तान को सम्यक् ज्ञानी बनाना।

सम्भव की उम्र सिर्फ 11 वर्ष की थी। यह सच है कि सुखार्थी को विद्या नहीं मिलती और विद्यार्थी को सुख नहीं मिलता। सुखार्थी विद्या को छोड़ दें, या विद्यार्थी सुख को छोड़ दे। धन्य है योग्य माता-पिता की योग्य सन्तान। उन्होंने आश्रम में पू० संमत भद्र महाराज जी से धार्मिक शिक्षा प्रथम भाग से लेकर द्रव्य संग्रह, रत्न करंड श्रावकाचार, जैन सिद्धान्त प्रवेशिका, सागार धर्मामृत, क्षत्रचूड़ामणि आदि ग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त किया। सम्भव कुमार आश्रम में एक साहसी निर्भय, सदाचारी, सम्यक् श्रद्धानी के रूप में जाने जाते थे। इस आश्रम की विशेषता है कि अनेक विद्यार्थी धार्मिक शिक्षण पूरा कर अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन कर रत्नत्रय की साधना में लग गए और आज भी लगे हुए है।

रूकड़ी में केवल लौकिक शिक्षा ही मिलती थी लेकिन आश्रम में लौकिक शिक्षण के अलावा आत्म कल्याण करने का शिक्षण भी मिला। शायद इसी वजह से शम्भू के मन में वैराग्य का बीज उत्पन्न हुआ। अपने कार्यों में मेहनत व लगन की वजह से आश्रम में वे हीरे की भांति चमकने लगे। उस हीरे को पू० महाराज जी ने धार्मिक तत्व रूपी पहलू में डाल दिया। महाराज जी के उपदेशों से प्रभावित होकर उन्होंने छानकर पानी पीना तथा रात्रि भोजन का त्याग कर दिया। वह जान गए थे कि जैन धर्म यथार्थ है। यदा-कदा आश्रम में नाटक वगैरह भी होते थे।

शम्भू के आश्रम में चले जाने के बाद अक्का मां हर वक्त उसे याद करती रहती। कहती-मेरे बेटे को वापस ला दो पता नहीं वह किस हाल में होगा? लेकिन पिता जी ममता की मारी मां को कैसे समझाते कि उसके बेटे के भविष्य को सुन्दर बनाने के लिए उसका आश्रम में होना जरूरी है। परन्तु पुण्य बलवान होने के कारण प० पू० समंतभद्र महाराज की छत्र छाया में सम्भव कुमार विद्या अध्ययन करने लगे।

वे स्कूल में बहुत होशियार थे। शिक्षा फूल के समान न होकर अग्नि के समान तेज है। अर्थात् जिस प्रकार अग्नि को स्पर्श करने से हाथ जल जाता है उसी प्रकार शिक्षा ग्रहण करते समय यदि कष्टों का सामना होता है तो वह शिक्षा बहुत आदरणीय होती है। मुझे यहां बहिनाबाई चौधरी (मराठी कवियत्रि) के शब्द याद आ रहे है-'अधि हाताला चटका मग मिले, भाकर' बिल्कुल ऐसा ही सम्भव कुमार का जीवन था। उन्होंने आश्रम में अत्यन्त कष्ट से शिक्षण प्राप्त किया तभी तो वे इतने महान आचार्य बन गए।

'जो कांटों में खिलेगा वह फूल बनेगा
जो कष्टों को सहेगा वह भगवान बनेगा॥'

शम्भू को केवल पढ़ाई की भूख लगी थी। एक प्रकार की जिद से उन्होंने अपनी बुद्धि को कसौटी पर घिसकर तीव्र कर लिया। अर्थात् वे बाहुबली में उत्तम रूप से शिक्षण प्राप्त करने में लगे थे। लेकिन नसीब को यह मन्जूर न था उनकी पढ़ाई देखने के लिए शम्भू के पिताजी विद्यमान नहीं रहे।

पिताजी की समाधि सन् 13/10/49

पिताजी की समाधि के समय शम्भू 15-16 वर्ष के थे। उनकी धार्मिक आस्था अन्तःकरण से सम्बन्धित थी वो हर वक्त चिन्तन करते रहते थे। मेरा भी सल्लेखना पूर्वक अन्त में मरण होगा क्या? तात्या जी ने घर में सबसे कह दिया कि जब मेरा अन्तिम समय आ जाए तब मुझे णमोकार मंत्र सुनाना, जिससे मेरा भव सुधर जाए। तथा मेरे मरने पर कोई रोना नहीं। और उनके अन्तिम समय यही हुआ-दो तीन शास्त्री पंडित को बुलाकर उन्हें अन्तिम उपदेश दिया गया और बाद में सल्लेखना लेकर उन्होंने मौन धारण कर लिया तथा णमोकार मंत्र बोलते-बोलते उनकी समाधि हो गयी। उनकी मृत्यु के एक घण्टे तक कोई नहीं रोया। दिन में ही उनका अन्तिम संस्कार किया गया।

तात्या जी सन्त के समान आचरण करते थे। रूकड़ी गांव के लोग कहते थे कि इनकी आयु की डोर जल्दी टूट गई, नहीं तो ये भविष्य में दीक्षा लेकर अवश्य ही अपना आत्मकल्याण करते। बालकू तात्या अपनी पत्नी पर छोटे-छोटे बच्चों तथा घर का भार छोड़कर स्वयं दुनिया के बन्धनों से मुक्त हो गये। शम्भू के सिर पर पितृ वात्सल्य की छाया उठ गई। उसके बालमन में प्रश्न कुलबुलाने लगे-प्रतिपल मौत क्या हैं? मौत क्यों हैं? मौत को कैसे जीता जाये। घर एवं खेत की देखभाल बड़े भाई करते थे। बाहुबली से शम्भू को घर वापस बुला लिया गया। तथा आगे गांधी हाई स्कूल रूकड़ी में दाखिला करा दिया।

उनके बड़े भाई ने उसके लिए एक किराने की दुकान खुलवा दी। लेकिन वैराग्य की ओर आकर्षित शम्भू का मन सांसारिक क्रियाओं में नहीं लगा।

शम्भू की उदारता

गरीब व्यक्ति से वह सामान के कम पैसे लेते थे या पैसे लेते ही नहीं थे। इसीलिए उनकी दुकान में गरीबों की बहुत भीड़ रहती थी। सम्भव कुमार जी किसी भी व्यक्ति को कुछ भी उधार दे देते थे और उसकी सूची अपने भाई को दे देते थे। भाई उनकी उदार प्रवृति होने की वजह से कभी गुस्सा नहीं करते थे।

एक दिन शाम के लगभग चार बजे थे। दुकान पर शम्भू ने देखा कि एक दिगम्बर मुनि सामने से जा रहे है। शम्भू ने दौड़कर उनके चरण स्पर्श कर लिए। यह देख पड़ोस में रहने वाली बूढ़ी मां ने कहा-'अरे शम्भू! तुमने उस नंगे स्वामी के दर्शन कैसे कर लिए।' शम्भू ने कहा-"अरे दादी मैं भी एक दिन ऐसा ही बनूंगा।" बूढ़ी मां अश्रुपूर्ण नेत्रों से आश्चर्य के साथ शम्भू को देखने लगी।

प० पूज्य आचार्य शान्ति सागरजी महाराज का द्वितीय दर्शन

सम्भव कुमार 10-11 वर्ष के थे, तब आचार्य पूज्य श्री 108 शान्तिसागर महाराज जी रूकड़ी से कुम्भोज (बाहुबली) की ओर जा रहे थे। जब शम्भू को पता चला तो वह भी पूज्य आचार्य श्री जी के पीछे-पीछे चल पड़े। आचार्य श्री आगे-आगे और सम्भव कुमार पीछे-पीछे।

आचार्य श्री बाहुबली पहुंच गए। वहां पहुंचने पर धर्मशाला में आचार्य श्री जी का आहार हो रहा था। कुछ लोग चौरंग उठाए हुए महाराज जी की प्रतीक्षा में थे। प्रत्येक व्यक्ति सोच रहा था कि महाराज यहां पधारेगें। अपनी अमृत वाणी से सबको कृतार्थ करेगें। इतने में ही महाराज जी दरवाजे से सीधे बाहर आए और कुम्भोज की ओर चल पड़े। चैत्र मास

की दुपहरी धूप में महाराज जी आगे बढ़ रहे थे और पागलों की ही तरह जनता उनके पीछे-पीछे दौड़ रही थी। सम्भव कुमार जी उनके पीछे-पीछे भागने लगे। सभी श्रावक आपस में चर्चा करने लगे कि यह बच्चा रूकड़ी से साथ में ही आ रहा है, यह अभी छोटा है इसे इसके घर भेज देना चाहिए। लेकिन उसने किसी भी श्रावक की बात नहीं मानी। पैरों के तलुवे जल रहे थे किन्तु मन में अपार श्रद्धा होने से वह आचार्य श्री के साथ कुंभोज तक आ ही गया। और उसी दिन रास्ते में उसे पू० आचार्य जी के चरण स्पर्श करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

मुनि के पीछे तेज धूप में, शम्भू आगे बढ़ता जाता।
मुनिवर के दर्शन कर, उसका अन्तर्मन हर्षाता॥

सामायिक का समय होने तक वह आचार्य श्री जी के पास बैठा रहा, बाद में वह अपने घर आ गया। घर आकर उसके मन में बार-बार विचार आता कि मैं घर लौटकर क्यों आ गया? इस प्रकार के अनेक विचार उनके मन में आने लगे।

1948 की बात हैं जिस दिन महात्मा गांधी का खून हो गया था उसके दूसरे दिन सम्भव और उसका छोटा भाई अपनी बहिन के घर (नांदणी से) रूकड़ी की ओर पैदल ही आ रहे थे, उसी समय रास्ते में (कबनूर के पास)-पुलिस वालों ने इन दोनों को ब्राह्मण के बच्चे समझकर पकड़ लिया। बाद में पूर्ण जानकारी मिलने पर कि ये ब्राह्मण नहीं बल्कि जैन है तो उन्हें छोड़ दिया। घर आने पर उनके पैरों में छाले पड़ गये। क्योंकि पहली बार वो इतनी दूर पैदल चले थे।

एक बार सम्भव कुमार जी अपनी बहिन को लेकर रूकड़ी की ओर आ रहे थे। बैलगाड़ी में उनके जीजाजी भी थे उन्होंने जीजाजी से कहा कि 'आज मैं गाड़ी चलाऊँगा।' जीवन में पहले कभी उन्होंने बैलगाड़ी चलाई नहीं थी, लेकिन उस दिन उनके मन में बैलगाड़ी चलाने की जबरदस्त भावना जाग्रत हुई। फलस्वरूप वो यड्राव से रूकड़ी तक गाड़ी चलाकर लाए। सबको यह देखकर आश्चर्य हुआ।

अभिनय के प्रति सहज लगाव

शंकर कुम्हार बचपन का साथी होने के कारण सम्भव कुमार के अत्यधिक निकटस्थ था। वह प्रत्येक कार्य में सहभागी रहता था। शाम के समय दोनों मित्र नदी के किनारे एकान्त स्थान में बैठकर तरह-तरह की वार्तालाप करते थे। कभी धर्म, कभी राजनीति तो कभी नाटकीय रचना सम्बन्धी बातें इनकी चर्चा का विषय रहती थी।

सम्भव कुमार जी कभी-कभी छोटे-छोटे बच्चों को नाटक सिखाते थे उन्होंने 'बाल तरूण मण्डल' नाम से एक समिति बनाई। जिसमें विजय पवार (वर्तमान में डॉक्टर), बाबा साहेब मनेर, बाशु मुल्ला आदि अनेक बच्चे थे। वो सभी धर्मों के बच्चों को प्रोत्साहित करते थे उनके गुणों को विकसित करने में वो सिद्ध हस्त थे। नाटक, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि में बच्चों की योग्यता देखकर ही पात्र बनाते थे। पात्रों का अभिनय वो स्वयं करके दिखाते थे। सम्भव कुमार जी इन सबके अलावा बच्चों की पढ़ाई पर विशेष ध्यान देते थे।

शम्भू स्वयं नाटककार थे उनके मित्र शंकर कुम्हार, शान्तिनाथ चौगुले, बाबुराव डिग्रजे, चम्हार, नाई, भोसले, सुनार, बाबु, सदाशिव, अब्दुल सतार पटेल, मुहम्मद चाबूक स्वार वगैरह सभी नाटक करने में उनकी मदद करते थे। शामु पाटील विशेष रूप से सहकार्य करते थे।

यद्यपि इनकी मित्र मण्डली में सभी सम्प्रदाय के लोग थे। सम्भव जी ने सभी को अपने जैसा बनाया लेकिन स्वयं उनके समान नहीं बने। इन्होंने सभी को सदैव सत्पथ पर चलने की प्रेरणा दी। प्रत्येक व्यक्ति इनके सम्पर्क में आते ही सात्विक वृत्ति वाला एवं व्यसन रहित हो जाता था। इनके मण्डल का नाम 'लोकप्रिय मण्डल' था।

सम्भव कुमार जी जिस नाटक की रचना करते थे वह अत्यन्त गूढ़, मार्मिक एवं जीवन को नवीन मार्ग दर्शाने वाली होती थी। एक बार 'कुटुम्ब' नाटक में अब्दुल सतार पटेल को हीरो एवं बाबुराव डिग्रजे को खलनायक का पात्र मिला। दोनों ने बड़ा ही सजीव अभिनय किया। नाटक समाप्त होते ही जनता में हलचल मच गई। बाहर आने पर लोगों ने खलनायक को चप्पल मारकर तथा हीरो को फूलों का हार पहनाकर स्वागत किया। जनता को नाटक बहुत पसन्द आया यह देखकर सम्भव कुमार जी को अत्यन्त हर्ष हुआ। पात्रों के सही चयन के कारण नायक तथा खलनायक की भूमिका इतनी वास्तविक तथा प्रशंसनीय हो सकी।

'सम्भव पात्र चुनकर बनाते, हावभाव सब करके दिखाते।
अभिनय में थी रुचि भारी, प्रशंसा करती जनता सारी॥'

सम्भव जी जिस कार्य को करने की मन में ठान लेते थे वो पूरा करते थे और सफल भी होते थे। प्रथम श्रेणी में भी प्रथम स्थान प्राप्त करना इनके जीवन का पवित्र कलात्मक कार्य रहा है। इनकी बुद्धि का असाधारण क्षयोपशम और लोकोत्तर प्रतिभा सर्वधर्म के प्रमुख पुरुषों को चकित करती थी। यद्यपि ये महापदाधिकारी तो नहीं थे लेकिन फिर भी बड़े-2 अधिकारी, व्यापारी आदि सभी प्रतिष्ठित लोग भी उनके पास आकर ज्ञान निधि प्राप्त करते थे। वे अपने सद्गुणों के कारण सर्वलोक प्रिय थे।

इनके द्वारा रचित नाटक

कोण कुणाचे, वनमाला, राजा सत्यंधर, वाहवा, भगवान महावीर (हिन्दी), क्षणभंगुर (हिन्दी), क्षणभंगुर (कन्नड़) आदि अनेक नाटकों की रचना की है। सोन्याचा संसार, कुटुम्ब, नाव लौकिक, मुंबईची माणसं, दसरा उजाडला इत्यादि नाटक करवाने में इन्हें विशेष सफलता प्राप्त हुई।

'वाहवा' नाटक को सर्वाधिक सफलता प्राप्त होने पर इसे फाइनल के लिए पूना भेजा गया। सम्पूर्ण लेखन में केवल एक ही वाक्य सुधारकर इसको सेंसर बोर्ड ने पास कर दिया। अर्थात इस नाटक को आम लोगों को टिकिट लगाकर दिखाने की स्वीकृति मिल गई। परन्तु सम्भव के घर छोड़ने के बाद इसका सर्टीफिकेट घर आया था।

उन्होंने अनेकों नाटक रचाये एवं स्वयं किए भी। परन्तु उनके मन में सदैव एक ही शल्य लगी रहती थी कि नाटक तो आखिर नाटक ही है। उसमें शाश्वत कुछ भी नहीं है। परन्तु शाश्वत सुख को प्राप्त करने के लिए मैं यथाजात रूपधारी कब बनूंगा?

एक बार शम्भू कुमार ने बातों ही बातों में अपने मित्र से कहा-मित्र! मैंने अपने जीवन में अनेकों कार्य किए उसमें से तीन कार्यों को मैंने चुन लिया है। सर्वप्रथम राजनीति में प्रवेश किया परन्तु उसमें झूठ, रिश्वतखोरी, अत्याचार, भ्रष्टाचार का ही अत्यधिक जोर होने से उस कार्य में शाश्वत सुख नहीं मिल पाया।

द्वितीय मैंने नाटकीय कार्य में भी भाग लिया परन्तु उसमें भी शाश्वतता प्राप्त नहीं हुई। अब तो केवल एक ही मार्ग रह गया है वह है संन्यास का। इसी से आत्मा का अन्वेषण किया जा सकता है। यही परमात्मा तक पहुंचने का श्रेष्ठ मार्ग है। यही कल्याण मंदिर का सोपान है तथा यही शाश्वत सुख की प्राप्ति का उत्तम साधन है।

सम्भव कुमार के इन आश्चर्यकारी शब्दों को सुनकर उनके मित्र दंग रह गए। उन्होंने विचार किया शम्भू उम्र में इतना कम होने के बावजूद इतना महान चिन्तक है, जीवन के लिए अद्भुत कर दिखाने वाली बात दिखाई देती है सम्भव कुमार में। सदाचार समन्वित और प्रतिभा अलंकृत इनका जीवन यथार्थ में सौरभ सम्पन्न सरोज के समान था और उनके समान ही वे जलतुल्य वैभव से अपने अन्तःकरण को पूर्ण तथा अलिप्त रखते थे।

किसी ने ठीक ही कहा है 'कथनी से करनी श्रेष्ठ है।' यह बात शम्भू के जीवन की महान विशेषता है वे जो कहते थे वह कार्य पूर्ण करके ही दिखाते थे। सम्भव कुमार की दृष्टि बहुत विशाल थी कहते भी हैं-'उन्नतं मानसं यस्य भाग्यं तस्य समुन्नतं' जिसका मन ऊंचा है उसका भाग्य भी ऊंचा रहता है। बिल्कुल ऐसा ही सम्भव कुमार जी के साथ था। वे जिस कार्य को करते थे उसमें उन्हें यश की ही प्राप्ति होती थी। जिस प्रकार लोहे को पारस का स्पर्श होते ही लोहा सोना बन जाता है ठीक उसी प्रकार जो व्यक्ति सम्भव जी के सम्पर्क में आता था वह भी सद्गुणी हो जाता था। उनको देखकर शराबी, जुआरी आदि व्यक्ति घबरा जाते थे और पिछले ही पैर उनके रास्ते से हटकर छिप जाते थे। बच्चों से लेकर बड़ों तक सभी उनके सामने गलत काम करने से डरते थे। तथा सभी महिलाएं भी मर्यादा से ही उनसे बात करती थीं। सम्भव जी कभी किसी को डांटते नहीं थे फिर भी सभी उनके व्यक्तित्व को देखकर स्वयं ही घबरा जाते थे।

'गलत काम जो कोई करता, सम्भव जी के नाम से डरता।
उनका सम्पर्क राह दिखाता, पारस की तरह कंचन बनाता॥'

बाल्यकाल से ही वो वृद्धों सदृश्य गम्भीर और विवेकी थे। इससे लगता है कि ये जन्मान्तर के महापुरुष इस जगत के लोगों को धर्मामृत पान कराने के लिए बाल शरीर धारण कर इस भूमि में अवतरित हुए हैं और सम्पूर्ण भव्यों का कल्याण करने वाले वीर पुरुष होंगे।

सम्भव कुमार अत्यन्त धैर्यवान थे और दूसरों को भी धीर देते थे तथा बहुत ही मितभाषी थे किसी को अपशब्द कहना उन्हें अभीष्ट नहीं था। उनका स्वभाव अत्यन्त मधुर था जिस प्रकार शक्कर को किसी भी रूप में खाओ वह मीठी ही लगती है। उसी प्रकार इनका सम्बन्ध प्रत्येक व्यक्ति के प्रति सौम्य था। रोते हुए को भी हंसाने की कला में वे सिद्धहस्त थे। सम्भव कुमार में ही नहीं बल्कि उनके सभी भाइयों में भी परोपकारिता की भावना बहुत थी। कोई भी भाई अनैतिक रास्ते से कमाए धन को उचित नहीं मानते थे न्यायोपार्जित धन से ही अपना भरण पोषण करते थे।

सन् 1960 में इन्होंने सम्पूर्ण भारत की तीर्थयात्रा की, उनके साथ शंकर कुम्हार, रामा कुरणे आदि भी थे। जब सभी सम्मेद शिखर पर चढ़ रहे थे तब रामा कुरणे को पर्वत पर चढ़ना नहीं हो पा रहा था। तब सम्भव ने ही उन्हें अपने कन्धों पर उठाकर यात्रा करवाई थी। अर्थात् उनका दयामय जीवन लोगों को उनकी ओर आकर्षित करता है।

अन्याय के प्रति घृणा

सम्भव जी अन्याय की दुनिया से बिल्कुल परे थे। वे दूध का दूध पानी का पानी कर देते थे। इसीलिए एक बार उन्होंने ग्राम पंचायत के सेक्रेटरी एवं सरपंच द्वारा किए गए काले कृत्य का भण्डाफोड़ कर दिया था। झूठ उनके आगे टिक नहीं पाता था। कपट मायाचारी मूलतः ही उनसे कोसो दूर रहती थी। गांव में कोई अन्याय का मसला सामने आता तो लोग सम्भव जी के पास ही चले आते। उनके तर्क के आगे सबका सिर झुक जाता था।

साहस वृत्ति

एक बार रूकड़ी गांव में एक मुस्लिम महिला पागल हो गई। वह मस्जिद के ऊपर चढ़कर जोर-2 से चीखने चिल्लाने लगी। उसके चीखने की आवाज सुनकर गांव के सभी लोग एकत्रित हो गए और उस दृश्य को देखकर मौज मस्ती करने लगे। कोई कहता कि यदि वह बाई ऊपर से गिर गई तो उसकी हड्डी पसली भी नहीं बचेंगी। कोई कहता जाकर उसे नीचे ले आओ। ऐसा सभी बोल रहे थे लेकिन किसी भी व्यक्ति की इतनी हिम्मत नहीं हुई कि उस बाई को कोई नीचे ले आए। यह बात धीरे-2 सम्पूर्ण गांव में फैल गई। उस समय सम्भव जी कुछ जरूरी काम में लगे थे फिर भी इस घटना की खबर सुनकर भागते-2 घटनास्थल पर आए। उस बाई को देखकर सम्भव जी का हृदय करुणा से सराबोर हो गया। वे शीघ्र ही मस्जिद पर चढ़ गए और उसे नीचे ले आए।

'पागल हुई मुसलमान बाई
मस्जिद पर चढ़कर चिल्लाई
लोग खड़े बस देख रहे थे
नीचे से उसे रोक रहे थे
सम्भव दौड़े-2 आए
करुणा का वो सागर लाए
झट मस्जिद के ऊपर चढ़कर
प्राण बचाए आगे बढ़कर।'

इसके अतिरिक्त और भी एक घटना के बारे में मुझे लोगों से ज्ञात हुआ। रूकड़ी गांव में एक बड़ी नदी है उस नदी में एक व्यक्ति का पैर फिसल गया। सब लोग उस व्यक्ति को देखकर कहने लगे-अरे! यह व्यक्ति मर जाएगा इसको कोई बाहर निकालो। परन्तु बाहर निकाले कौन? उसी समय सम्भव कुमार को उक्त घटना की खबर मिली। वह दौड़ते हुए नदी के किनारे आए। जहां वह व्यक्ति पानी में गोते खा रहा था। ऐसा दृश्य देखकर सम्भव कुमार ने आगे पीछे का विचार किये बगैर नदी में कूद गए तथा उस डूबते व्यक्ति को पकड़ लिया। पेट में पानी भर जाने की वजह से उसका शरीर भारी हो गया था। वैसे भी वह सेहत में ठीक था। सम्भव कुमार ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगाकर उसको संभाल लिया। सम्भव का सहारा उस व्यक्ति के लिए जलदेवता के समान बन गया और उस व्यक्ति का प्राण रक्षण हो गया। उसे ऐसा लगा जैसे कि घनघोर अंधकार में किसी को सूर्य की सुनहरी किरणें प्राप्त हो गई हों।

इस प्रकार के साहसिक कार्यों में शम्भू सबसे आगे रहते थे। उनके परामर्श के बिना लोग कोई भी कार्य शुरू नहीं करते थे। वह जो भी कार्य करते थे वह सभी के लिए पूर्व दिशा ही बन जाती थी। अर्थात सभी लोग उनके विचारों को आनन्द से सम्मति देते थे। उनका धैर्य असाधारण था, वे दया, शान्ति, वैराग्य-नीति तथा सत्यजीवन के सिन्धु थे।

हास्यप्रद घटना

सम्भव जी स्वभाव से मूलतः ही सरिता के जल की भांति निर्मल थे। वे बच्चों के साथ बच्चे जैसे ही बन जाते थे तथा वृद्धों के साथ वृद्ध जैसे तथा अपने मित्रों के बीच वह सदैव हास्य विनोद की बातें करते थे।

शान्तिनाथ सम्भव कुमार के मित्र थे। उनकी शादी के कुछ समय बाद उसे कन्यारत्न की प्राप्ति हुई। सभी मित्रों ने शान्तिनाथ से कन्यारत्न की प्राप्ति की खुशी में दो किलो जलेबी की मांग की। उस दिन शान्तिनाथ ने बात टाल दी। जब

भी सभी उससे जलेबी की जिक्र करते वह कह देता-हां हां खिलाऊंगा। लेकिन कई दिन निकल गए वह जलेबी नहीं लाया। एक दिन सब मित्रों ने उससे कहा-'देखो तुम्हें हम लोगों की एक बात तो माननी पड़ेगी। या तो तुम हमें दो किलो जलेबी लाकर दो नहीं तो हम तुम्हारी बेटी को ले जाऐंगे।' शान्तिनाथ सहज ही बोल उठा-'हां-हां लड़की को ही ले जाओ।'

सुबह शम्भू शान्तिनाथ के घर गये। मित्र घर पर नहीं था। केवल उसकी पत्नी घर पर थी। अपने पति के मित्र को देखकर उसने अपनी बेटी को बिना किसी हिचक के शम्भू की गोदीमें दे दिया और स्वयं रसोई घर में नाश्ता लाने के लिए चली गई। शान्तिनाथ को मजा चखाने के लिए मौका पाते ही शम्भू बिना बताए लड़की को लेकर वहां से अपने घर आ गए। शान्तिनाथ की पत्नी शम्भू तथाअपनी बेटी को कमरे में न पाकर बड़ी हैरान हुई। आखिर नन्हीं सी जान को लेकरवह कहां और क्यों चले गए? फिर सोचा भी थोड़ी देर में दे जाऐंगे। यह सोचकर खामोश बैठ गई। उधर वह नन्हीं बालिका सब मित्रों के मध्य आराम से खेलती रही। उन लोगों ने उसे दूध वगैरह पिला दिया।

सारा दिन निकल गया, शान्तिनाथ की पत्नी की घबड़ाहट बढ़ती गई उसने कोहराम मचाना शुरू कर दिया। जब शान्तिनाथ घर आए तो उसने रो-रोकर सारा वृतान्त सुनाया। शान्तिनाथ समझ गए और मित्रों के पास पहुंचकर अपनी बेटी को मांगने गये तो सम्भव कुमार बोले-'जलेबी लाओ और बेटी को ले जाओ।' अन्त में हार मानकर उन्हें दो किलो जलेबी लानी ही पड़ी।

सम्भव का था शान्त स्वभाव
हास्य विनोद से भी था लगाव
शान्तिनाथ थे उनके मित्र
जिनका स्वभाव बड़ा विचित्र
उनके हुई इक सुन्दर कन्या
सब मित्र बोले-जलेबी खिलाओ
मिलकर खुशी साथ मनाओ
उसने आना कानी की
बात टाल दी जलेबी की
फिर सबने मिल योजना बनाई
घर से बच्ची को लिया उठाई
मित्र दौड़ा-दौड़ा आया
जलेबी अपने साथ में लाया।

इस प्रकारकी एक और हास्यप्रद घटना है। एक बार सम्भव कुमार अपनी दुकान पर बैठे थे। उनके एक मित्र (सुनार) दूध लेकर उनकी दुकान पर आए और बोले मेरी बेटी को बहुत तेज बुखार है डॉक्टर ने गाय के दूध के लिए कहा है, इसलिए दूध लेकर जा रहा हूं। मुझे एक जरूरी काम से बाजार जाना है। तब तक इस दूध को तुम्हारी दुकान में रख जाता हूं लौटते समय ले जाऊंगा। मित्र के जाते ही सम्भव ने दूध उसके घर भिजवा दिया। मित्र को वापस आता देख खाली गिलास मुंह से लगाकर सम्भव जी दूध पीने का नाटक करने लगे। वह मित्र दौड़ते-2 आया और दूध न पीने का अनुरोध करने लगा। लेकिन सम्भव ने जब खाली गिलास दिखाया तो मित्र को लगा कि इसने वास्तव में दूध पी लिया

है। मित्र कहने लगा-'अब मैं बच्ची के लिए गाय का दूध कहां से लाऊं? ऐसा कहकर अत्यन्त उदास होकर पुनः गिलास लेकर दूध लेने चला गया। बड़ी मुश्किल से जाकर फिर से गाय का दूध मिला और उस दूध को लाकर टेबल पर रख दिया। तो सम्भव ने इस बार सच में ही वह गिलास झट से उठाया और पूरा दूध पी लिया। बेचारा वह मित्र चिल्लाते ही रह गया लेकिन कुछ कर नहीं पाया। अब मैं क्या करूं? वह सोचने लगा घर पहुंचने पर मां मुझ पर नाराज होगी। इससे वह घर नहीं जाना चाह रहा था। परन्तु शम्भू ने कहा-'तुम घर जाओ।' परन्तु वह दिनभर घर नहीं गया और शाम को ही घर गया।

घर में प्रवेश करते ही मां ने कहा-'तू दिन भर कहां रहा? इतनी देर क्या करता रहा?'

मित्र ने निराश होकर कहा-'कुछ नहीं मां! मुझे दूध नहीं मिल पाया था इसलिए मैं घर नहीं आया था।'

पत्नी बोली-'अरे आप ऐसा क्यों कह रहे हो। दूध तो हमें समय पर ही मिल गया था। आपने ही तो भेजा था।'

मित्र आश्चर्य से उन लोगों को देखने लगा और सहसा ही उसके मुंह से निकल पड़ा-'आं दूध मिल गया। अरे! रे! सम्भव ने दूध न पीकर घर भेज दिया।' वह बड़े असमंजस में पड़ गया। सम्भव के प्रति उसका मन श्रद्धा से भर गया। इस प्रकार उन्होंने अनेक प्रकार के खेल किए। परन्तु सभी लोग उनकी इस हास्य प्रवृत्ति से सदैव आनन्दित ही होते थे। लेकिन ऐसे समय में भी वे सन्मार्ग से च्युत नहीं हुए।

रूकड़ी के सन्त तुकाराम

परोपकारिता, दयाभाव, व्रताचरण, उनके जीवन के प्रमुख अंग थे। गरीब बच्चों की वो हर तरह से सहायता करते थे। उन्हें अन्नदान, वस्त्रदान, साहित्यदान सभी नियमित देते थे। वह नहीं चाहते थे कि कोई भी बच्चा अपने अभावों के कारण पढ़ाई को छोड़ने को मजबूर हो।

बाबुराव डिग्रजे ने हमें बताया कि-'सम्भव के कारण ही आज मैं इस पद पर हूं। क्योंकि उस समय एस.एस.सी. का फार्म भरने के लिए मेरे पास पैसे नहीं थे। मैं बिल्कुल निराश होकर बैठा था। उस दिन सम्भव ने मुझसे पूछा-'मित्र! तुम्हें क्या हो गया। तब मैंने अपनी परिस्थिति उन्हें बता दी।' उन्होंने मुझसे कहा-'मित्र तुम निराश मत हो पैसों का इन्तजाम मैं करता हूं।' शम्भू ने उस दिन फार्म के पैसे भर दिए और मुझे आज सर्विस मिल गई। उनकी वजह से ही आज मैं इस पद पर कार्यरत हूं। नहीं तो मेरी हालत क्या होती पता नहीं। पूर्व स्मरण करते हुए वह मित्र आज हमारे सामने भरे गले से सब कुछ बयान कर रहा था। उनके सारे मित्र उनके बताए हुए रास्ते पर आज भी चल रहे हैं।

सत्पुरुष की करुणावृत्ति द्वारा परार्थ के साथ स्वार्थ की सिद्धि भी हुआ करती है। इसलिए तो ये करुणा के धारी आज स्वतः भी सुखद एवं शीतल छाया में आनन्दित है। 'क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु' सभी जीवों का कल्याण हो ऐसी भावना से सदा ओत-प्रोत थे।

रूकड़ी गांव में जाकर आज हमने प्रत्यक्ष देखा, अनुभव किया कि आज भी सम्पूर्ण रूकड़ी नगर ऐसे सत्पुरुष की गौरव गाथा याद करते हैं वे कहते हैं कि हमारे यहां का सूर्य चला गया, हमारे गांव का रत्न चला गया, करुणा का सागर चला गया।

शंकर कुम्हार का कहना है कि सम्भव कुमार के सन्त होने से रूकड़ी गांव में बहुत बदलाव आया है। आज उनके द्वारा विश्व के समस्त प्राणियों को सन्मार्ग रूपी प्रकाश प्राप्त हो रहा है। वास्तव में सम्भव कुमार को रूकड़ी के 'सन्त

तुकाराम' कहना अतिशयोक्ति नहीं है। इनकी पावन प्रेरणा से इनके सम्पर्क में आया हुआ कोई भी व्यक्ति कुमार्ग पर नहीं गया। चाहे वह अन्य जाति का भी क्यों न हो।

सम्भव जी के अन्तःकरण में करुणा का सरोवर है। इसीलिए तो प्रत्येक व्यक्ति उसमें डुबकी लगाने की चेष्टा करता है। उसमें तैरकर अपना जीवन उज्जवल करने का प्रयत्न करता है। उनके गुणों का स्मरण करके आज भी रूकड़ी ग्राम के वासी (मित्र मंडल, वृद्धवर्ग, तरुणवर्ग, बालकवर्ग) उनकी स्तुतिकरने में असमर्थ हैं। उनकी गौरवगाथा बताकर वो अपने को धन्य मानते हैं।

सन् 1961 में पान सेतु का बांध अत्यधिक बरसात होने से फूट गया। जिससे पूना शहर में चारों ओर हाहाकार मच गई। करोड़ों लोग निराधार हो गए। उनके घर-द्वार, धन-धान्य आदि सब कुछ पापकर्म के उदय से विनाश हो गया। इस घटना को सुनकर सम्भव कुमार अपने समस्त मित्रों को साथ लेकर सम्पूर्ण रूकड़ी गांव में जाकर प्रत्येक घर से उन निराश्रितों की सहायता के लिए अनाज, वस्त्र, पैसे आदि एकत्रित किए और स्वतः पूना जाकर उन लोगों की सहायता की।

पूना जाते समय गांव के समस्त नागरिकों ने इनको विशेष रूप से बड़े आनन्दपूर्वक विदाई दी। सम्भव कुमार की बचपन से ही एक विशेषता यह थी कि वे दीन दुःखी जीवों को देखकर करुणा से ओत-प्रोत हो जाते थे। उन जीवों के लिए मनमें रक्षण रूपी आकुलता हो उठती थी। इसलिए वे सदैव ऐसे जीवों का रक्षण करने को तत्पर रहते थे।

'सम्भव के अन्तर्मन में
करुणा का था सागर विराट
दीन दुखी जीवों के लिए
तत्पर रहते दिन हो या रात।'

वे रूकड़ी गांव में सभी के लिए 'अकारण बन्धु' थे। सभी जगह उनके पुण्य और उनके उत्तम गुणों की चर्चा सदैव होती थी। वे वास्तव में लोकोत्तर महापुरुष हैं।

मित्रों पर प्रभाव

सम्भव कुमार का आध्यात्मिक आकर्षण अद्‌भुत था। उन्होंने मित्रों के अन्तःकरण को बलवान चुम्बक की भांति अपनी ओर आकर्षित किया था।

सदाशिव मछुआरा उनका मित्र था सम्भव के सान्निध्य में आने पर उसने मछली पकड़ना एवं खाना बन्द कर दिया। उसने हमें बताया कि उनके पुण्य चरण सान्निध्य तथा उनके आदेश, उपदेश के अनुसार प्रवृत्ति करने से हम सभी मित्रों को आत्मिक शान्ति और लौकिक समृद्धि मिली है और आज वे 'धर्म सूर्य' बन गए।

इस मनस्वी नररत्न के दर्शन की जब भी मधुर स्मृति आती है तब हम आनन्द विभोर हो उठते हैं। आंखों के सामने पूर्व का दृश्य सामने आ जाता है और मन रोमांचित हो जाता है। उनका तपस्वी जीवन आज भी मन को चकित करता है। उनकी वाणी सभी को शान्ति और आनन्द प्रदान करती है।

सात्विक जीवन

सम्भव जी सदैव 'सादा जीवन उच्च विचार' में विश्वास रखते थे। वे सदैव खादी के वस्त्रों का उपयोग करते थे, उसमें भी ज्यादातर सफेद कपड़े ही पहनना उन्हें पसन्द था। अपने जीवन में केवल एक दो बार ही मित्रों के कहने पर

पैंट-शर्ट पहनी है। पैरों में कभी भी चप्पल-जूते का उपयोग नहीं किया। नंगे पैरों से ही वो सभी जगह जाते थे। उनका खानपान भी बिल्कुल सादा था। परन्तु खाते समय स्वच्छता का वह पूरा ध्यान रखते थे। उनका भोजन मर्यादित था वे अभक्ष्य पदार्थ नहीं खाते थे। खाद्य पदार्थ यदि खुला हुआ रखा है तो वे उसी समय उस वस्तु का त्याग कर देते थे। भले ही वह वस्तु कितनी ही पौष्टिक क्यों न हो। उनकी ऐसी त्याग प्रवृति देखकर घर के सभी लोग बहुत घबराते थे।

सम्भव के जीवन का सार
सादा जीवन उच्च विचार
स्वच्छता का रखते ध्यान
खादी पहनना उनकी शान।

सम्भव कुमार को उनकी मां, बहिन, भाभी सभी लोग बहुत ध्यान से सोध-2 कर खाना परोसते थे। उनके भोजन करने के बर्तन भी अलग थे अगर कोई बच्चा उनके बर्तन ले भी लेता था तो घर के सभी लोग कहते थे कि यह बर्तन शम्भू चाचा के हैं लेना नहीं। तो उस समय वह बच्चा भी झटसे वे बर्तन उसी स्थान पर रख देता था। कहने का तात्पर्य यह है कि शम्भू को व्यवस्थित एवं स्वच्छता से रहने की आदत बचपन से थी। वे बिस्तर पर नहीं सोते थे, बासा भोजन, बासी कोई भी चीज नहीं खाते थे, पानी छानकर पीना, रात्रि में खाने का परित्याग आदि क्रियाएं वो बचपन से ही करते थे। वे घरमें साधु सदृश ही थे। इसीलिए सभी कहते थे यह बड़े होकर स्वामी बनेगा क्या ?वे एकान्त प्रिय थे। उनका ग्रहवास जल से भिन्न कमल की वृत्ति का स्मरण कराता था।उनमें किसी प्रकार का व्यसन नहीं था, चंचलता या हठधर्मिता का सर्वथा अभाव था। वे सागर के समान गम्भीर थे तथा उनकी स्मरण शक्ति असाधारण थी।

सीधे सच्चे और बुद्धिमान
सम्भव तो थे गुणों की खान
जमीन पर बिस्तर लगा के सोते
रात में खाना कभी न खाते
चप्पल जूतों के बिन जाते
सबको अपने जैसा बनाते।

साधु सेवा

जब कभी रूकड़ी में दिगम्बर मुनि आते तो सम्भव कुमार अपने घर उनका चौका लगवाते। सुबह जल्दी जागकर आंगन से लेकर रास्ते तक झाड़ू लगाकर स्वच्छ कर देते थे और अपनी मां को समझाकर कहते-'मां! घर स्वच्छ रखो नहीं तो महाराज जी का अन्तराय हो जाएगा।' त्यागियों के आहार की व्यवस्था, सेवा, वैयावृत्य करना, त्यागियों को यदि दूसरे गांव जाना हो तो कमण्डल, शास्त्र वगैरह लेकर पैदल ही जाते थे। सम्भव कुमार को शायद बचपन से ही विनय, सेवा आदि विरासत में मिली थी।

मुनियों के प्रति इनकी बड़ी श्रद्धा थी। एक बार सन् 1960 में प. पूज्य श्री 108 भारत गौरव आचार्यरत्न देशभूषण महाराज जी का चातुर्मास संघ सहित माणगांव (रूकड़ी के पास) में हुआ। उस समय सम्भव कुमार रोजाना प.पू. महाराज जी के प्रवचन सुनने के लिए रूकड़ी से माणगांव जाते थे और दुकान नाभिराज, दरी के भरोसे पर छोड़ जाते थे। लेन, देन, व्यापार आदि में वे पूर्ण विरक्त थे। वे कुटुम्ब के झंझटों में नहीं पड़ते थे इस प्रकार की उनकी निस्पृहता थी। धर्म

के प्रति रुचि होने के कारण उनका असली व्यवसाय संयम की साधना था। घर का व्यापार तो नाममात्र था। उस समय उनके परिणाम विशेष संयम की ओर ही बढ़ने लगे। वे अष्टमी-चतुर्दशी का व्रत करते थे।

'मुनियों के प्रति थी श्रद्धा अपार,
त्यागियों को देते आहार।
अक्सर करते रहते उपवास
संयम ही बस आता रास।'

दयाभाव

सम्भव कुमार जी के मन में करुणा हरवक्त लोकपाल की भांति खड़ी रहती थी। वह सभी जीवों के लिए समान भाव से अपना वात्सल्य बिखेरते रहते थे चाहे वह मानव हो या पशु। एक गरीब व्यक्ति ने खूब जी तोड़ मेहनत करके अपनी छोटी सी झोपड़ी बनाई। परन्तु दुर्भाग्य से उस झोपड़ी में एक दिन आग लगगई। वह गरीब बर्बाद हो गया, उसकी दुनिया समाप्त हो गई थी। सम्भव कुमार ने अपने समस्त मित्रों सहित सम्पूर्ण गांव की मदद से उस व्यक्ति का संसार पुनः बसा दिया। उनका दयामय जीवन प्रत्येक क्षेत्र में दिखाई देता था। उनके हृदय में करुणा के साथ-2 वात्सल्य भी भरपूर था।

शम्भू अपनी दुकान से जब खाना खाने घर जाते थे तो रास्ते में एक बिल्ली उनके इन्तजार में बैठी रहती थी जैसे ही शम्भू को देखती वैसे ही उनके पीछे-2 घर तक जाती थी। घर में बाहर उसे दूध भात खाने को दिया जाता खाकर वह शम्भू के पास पुनः दुकान तक जाती। यह उस बिल्ली का रोजाना का क्रम था। एक दिन शम्भू को वह बिल्ली नजर नहीं आई। थोड़ी देर ढूढ़ने के बाद उनकी नजर उस बिल्ली पर पड़ी। वह एक वृक्ष के नीचे पड़ी थी, उसका शरीर बुखार से तप रहा था। वह बहुत बीमार थी शम्भू ने जैसे ही देखा वह बिल्ली के पास गए और उसके कान में महान अपराजित णमोकार मंत्र सुनाया। णमोकार मंत्र सुनते-2 उसके प्राण निकल गए। अन्त में मानव के समान ही उसका अन्तिम संस्कार किया। ऐसी अनेकों घटनाओं ने सम्भव कुमार के जीवन पर प्रकाश डाला। उनके सुविकसित जीवन में आज भी ये गुण विद्यमान हैं।

ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा सन् 1950

सम्भव कुमार ने अनेकों बार राजनीति में भाग लिया। अनेक राजकीय कार्यों को अपने हाथ में लेकर सफल भी किया। परन्तु सच्चा आनन्द, सच्चा सुख नहीं मिला। सन् 1950 में बाहुबली (कुम्भोज)में पढ़ते-पढ़ते 15-16 वर्ष की उम्र में उन्होंने प्रतिज्ञाकी कि-'मैं आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करूंगा। इतनी छोटी उम्र में स्वयं को अपने मनको विषय-कषाय से दूर करना कोई सामान्य बात नहीं है। इतना महान कार्य करने का विचार किसके मन में आता है? परन्तु सम्भव का जीवन पवित्र निर्मल था। इसलिए संसार में सबसे भिन्न कार्य करने का विचार उनके मन में आया।

कभी-कभी अपने मित्रों के बीच बात करते हुए वह कहते थे-देखो शादी तो सभी करते हैं संसार तो प्रत्येक व्यक्ति ही बसाता है। लोग नाटक में, राजनीति में भी भाग लेते हैं। ये सभी संसार में आश्चर्यकारक नहीं है। जीवन में आश्चर्यजनक अवस्था केवल एक ही है वह है संन्यास धारण करना। 'निस्परिग्रहत्व रूप दिगम्बर जिनमुद्रा ही धारण करना मोक्ष महल की प्रथम सीढ़ी है।'

सम्भव कुमार के शब्द सुनकर मित्र सोचते-इतनी कम उम्र में इतने बड़े-2, ऊंचे विचार क्यों कर रहा है? क्या इसको वास्तव में ही संन्यास धारण करना है?

शम्भू एक बार मित्रों के साथ शिखरजी की यात्रा को गए थे। जब वे लोग मधुवन में पहुंचे उस समय रात का समय था। शम्भू जी को वहुत बुखार चढ़ गया था। लेकिन सुबह उनको शिखर जी पर दर्शनके लिए चढ़ना था। काफी बुखार होने पर भी वो सुबह उठे, स्नान करके, शुद्ध वस्त्र पहनकर अष्टद्रव्य लेकर वन्दना के लिए निकल पड़े।

धीरे-2 बैठ-बैठकर पहाड़ पर चढ़ना उन्होंने प्रारम्भ किया। बुखार के कारण वह बहुत अशक्त हो गए थे लेकिन फिर भी मन ही मन भगवान का स्मरण करते हुए चढ़ रहे थे। जैसे ही वे गौतम गणधर की टोंक पर पहुंचे वैसे ही एक आश्चर्य चकित घटना यह हुई कि भगवान के चरणों में पहुंचते ही उनका सम्पूर्ण बुखार उतर गया और उन्हें अपार शान्ति हुई। सच्ची भक्ति ही चिन्मय, प्रासादों के हृदयों को खोलती है। अन्तरात्मा की कलियों को खिलाती है, संसार में गिराने से बचाती है। एक जगह कहा भी है-

हम भक्ति के फूल चढ़ाएं
और निष्ठा के दीप जलाएं
सांसों की हर एक तान पुकारे
ये पुण्य का अवसर है।
मन एक मंदिर है
भगवान की जिसमें
होती है पूजा
ये भक्ति भरा घर है।

पापों के काटने के लिए पुण्य की तलवार का हाथों में होना नितान्त आवश्यक है तथा पुण्य को काटने के लिए वीतरागता की जरूरत है। परन्तु इस वीतरागता को विकसित करने के लिए मन में भक्ति रूपी फूल और निष्ठा रूपी दीप की ज्योति को जो पुण्यवान जलाता है, उसे उसके महान पुण्य का अवसर समझना चाहिए। शम्भू को भी यह महान अवसर प्राप्त हुआ तभी तो वे शान्तिपूर्वक सभी चरण पादुका के दर्शन आनन्द से करते हुए नीचे आ गए और उनका शरीर पूर्ण स्वस्थ हो गया।

नीचे आने पर उन्होंने अपनी अस्वस्थता से स्वस्थता तक के बारे में अपने मित्रों को बताया तो सभी आश्चर्य करने लगे और उन्होंने सम्भव से कहा-'अरे शम्भू! तुम्हारे इस निर्भीकपने को देखकर ऐसा लगता है कि तुम अपने जीवन में बहुत होनहार मय बनकर इस जगत का कल्याण करोगे।'

एक बार इन्होंने पूरे देश की यात्रा की लेकिन कभी भी होटल में खाना नहीं खाया। उनके मित्र खाते थे लेकिन वो फल वगैरह खाकर ही रहते थे तथा कभी भी बिना छना पानी नहीं पिया। उन्होंने जीवन में कभी भी कुदेवों के सामने मस्तक नहीं झुकाया।वे तो एक महान व्यक्ति होने वाले थे, उनका मस्तिष्क कुदेवों के आगे कैसे झुक सकता था।

सम्भव जी जैन धर्म के कट्टर सम्यक्त्वी थे। वे प्रतिक्षण विचार करते ये जिनेन्द्र देव-वीतराग प्रभु पूर्णिमा के चन्द्र की भांति हैं और दिव्य ध्वनि चन्द्र प्रकाश के समान हैं जो सभी जीवों को शीतलता प्रदान करती है।

जिनेन्द्र प्रभु की भक्ति में इतनी शक्ति है कि उससे सभी प्रकार की कार्यसिद्धि क्षणभर में हो जाती है। समाधि भक्ति में कहा है-

'एकापि समर्थेयं जिनभक्ति दुर्गतिं निवारयितुम्'

अर्थात एक जिनभक्ति ही दुर्गति निवारण के लिए समर्थ है।

आचार्य श्री देशभूषण जी का रूकड़ी आगमन

तीन साढ़े तीन बजे के करीब एक श्रावक आया और मोनाप्पा चौगुले को बताया-आपके गांव में प.पू. भारत गौरव आचार्यरत्न देशभूषण महाराज जी ससंघ पधार रहे हैं। जैसे ही मोनाप्पा चौगुले ने यह खबर सुनी वैसे ही शीघ्र यह खबर सम्भव कुमार के पास भेज दी। इस खबर को सुनकर वह बहुत आनन्दित हुए और उसीसमय अपने कार्य को छोड़कर साइकिल उठाईऔर उस तरफ चल दिए जिस रास्ते से आचार्यश्री का संघ आ रहा था। सम्भव कुमार को जैसे ही आचार्यश्री दिखे वैसे ही उन्होंने साइकिल को वहीं पर छोड़ा और दौड़ते-दौड़ते आए। आचार्यश्री उनकी भक्ति को देखकर बोले-'बेटा तुम्हारा नाम क्या है?' तो वे आनन्दित होकर बोले-'महाराज जी मेरा नाम सम्भव है।' महाराज जी बोले-'तुम्हारा नाम तो बहुत सुन्दर है।' सम्भव को देखते ही महाराज जी के मन में उनके प्रति करुणा भाव उत्पन्न हो गए। वे सहज ही बोल उठे-'इसकी भक्ति देखकर मेरा अन्तःकरण सहज ही इसकी ओर आकर्षित हो रहा है। इसे कुछ न कुछ लाभ अवश्य ही मिलना चाहिए।'

रास्ते भर सम्भव कुमार आचार्यश्री के साथ अनेकों प्रकार की चर्चा करते हुए मंदिर तक आ गए। बातों-2 में ही कब मंदिर आ गया यह किसी को भी मालूम नहीं हुआ। सम्भव जी आचार्यश्री के रहने की सारी व्यवस्था करके अपने घर चले गए। परन्तु वह दिन उनके लिए अन्य दिनों से अलग था। अब सम्भव कुमार का न तो कुछ कार्य में ही मन लगता था न तो अच्छी तरह से खाने में ही। वे सुबह, दोपहर, शाम पूरे दिन ही आचार्य श्री के सानिध्य में तन-मन-धन से अपना समय बिताने लगे।

ऐसा करते-करते 15 दिन कैसे निकल गए यह मालूम ही नहीं पड़ा। इतने में ही आचार्य श्री के विहार का दिन निश्चित हो गया। और आचार्य श्री ससंघ माणगांव की ओर विहार कर गए आचार्य श्री के जाने के बाद किसी भी कार्य में उनका मन नहीं लगता था वे सदैव उदास रहते थे। क्योंकि उन्हें पूज्य देशभूषण महाराज जी के दर्शन से ही अपूर्व निधि प्राप्त हुई थी। सम्भव कुमार ने उन्हें आध्यात्मिक जादूगर के रूप में देखा। वैराग्य का बीज उनके मन में प्रारम्भ से था। महाराज जी के सम्पर्क ने उनकी भावना में प्राण फूक दिए। उनके मन में अनेक विचार तरंग के समान उथल-पुथल करने लगे। वे सोचने लगे संसार में फंसने का उपक्रम सभी करते हैं यथार्थ में वास्तविक शान्ति का बीजारोपण तब होता है जब अन्तःकरण में यह भावना हो कि-इस संसार में कुछ भी सुख नहीं है। देखो तो त्यागियों का जीवन कितना निर्मल, पवित्र होता है। एक छोटे बालक की तरह निरागस। ऐसा जीवन मुझे भी प्राप्त होगा क्या? इस प्रकार के अनेकों विचार उनके मन में घर करके बैठ गए। वे बार-बार विचार करते..... मैं क्या करूँ? अपना गुरू किसे बनाऊँ जो मुझे सन्मार्ग दिखाकर मेरा कल्याण कर सके। जो नर से नारायण बना सके। ऐसे गुरू की खोज में उनका मन प्रत्येक समय दौड़ने लगा। क्योंकि गुरू की महिमा तो अकथनीय हैं-

'गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पांव।
बलिहारी गुरू आपकी, गोविन्द दियो बताय॥

इस दुनिया में गुरू तो हजारों मिल जाते है लेकिन कंकर से शंकर बनाने वाले गुरू इस जगत में विरले ही मिलते है।

चंदा कहूं तो उसमें दाग है
सूरज कहूं तो उसमें आग है।
आचार्य श्री ही एक अनुपम जहाज है।

मुझे कब ऐसे गुरु की प्राप्ति हो जाएगी जो मुझ जैसे अज्ञानी जीव को तारेगे। ऐसे गुरू की खोज में वे सदैव लगे रहते थे। कुंभोज (बाहुबली) में पू0 समन्तभद्र महाराज की छत्रछाया में रहने से उनके वैराग्य को दृढ़ता मिल गई और बाद में पू0 देशभूषण महाराज जी को देखकर उनका वैराग्य उत्थान की ओर बढ़ गया। देशभूषण महाराज जी का संघ जिस स्थान पर होता सम्भव कुमार जाकर सदैव दर्शन करके आते। जिस प्रकार कमल जल में रहकर ही उससे सदा भिन्न ही रहता है उसी प्रकार सम्भव कुमार भी घर में रहते थे। संसार के प्रति उनका मन सदैव भयभीत रहता। तथा वैराग्य दिनों दिन बढ़ता ही जा रहा था।

शम्भू का यह व्यवहार देखकर घर के लोग घबराने लगे। मां की आंखो से अश्रुधारा बहने लगी। वे हर वक्त सोचती रहती कि मेरे बच्चे को क्या हो गया, वह हमेशा उदास क्यों रहता है। अगर इसका विवाह कर दिया जाए तो शायद उसका मन घर की तरफ झुक जाए। पर समस्या यह थी कि शम्भू के सामने विवाह का प्रस्ताव रखे कौन? तब मां ने अपने बड़े बेटे भुजबली को बुलाया 'और कहा बेटा अब तू ही शम्भू को समझा तथा उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रख दें।' परन्तु भुजबली ने कहा 'मां-मां शम्भू की उम्र अभी केवल 19-20 वर्ष की ही है। तो मैं कैसे उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखूं। ऐसा कहना अभी हमारे लिए शोभा नहीं देता फिर भी यदि हम उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखेगें तो वह इस प्रकार की बात सुनकर घर छोड़कर ही न चला जाए।' लेकिन मां का मन नहीं माना और उसने शम्भू को बुला लिया।

सभी भाई एवं मां शाम के वक्त बैठे थे। इधर-उधर की चर्चा करते-करते सबसे बड़े भाई भुजबली ने मंद-मुस्कान बिखेरते हुए शम्भू से पूछ ही लिया-शम्भू! अब तुम युवावस्था में प्रवेश कर चुके हो अब तुम्हें अपने कंधों पर गृहस्थ आश्रम के भार को वहन करना है।

सम्भव ने अपने भैय्या के ऐसे शब्दों को सुनकर हाथ जोड़कर कहा-"भैय्या! जब मैं बाहुबली (कुंभोज) में पढ़ता था तब मैंने मन ही मन आजीवन ब्रह्मचर्य में रहने की प्रतिज्ञा कर ली है।"

इतने में मां बोल पड़ी-"अरे बेटा! तू आज कैसी बाते कर रहा है।..हमने तुमसे कितनी आशाएं बांध रखी है क्या तुम हमारे सारे अरमानों पर पानी फेर दोगे।" ऐसा कहते-कहते मां का गला रूंध गया और आंखे भर आई। मां को रोता देख शम्भू ने ढाढस देते हुए कहा-'मां, मैंने तो जीवन भर के लिए नियम ले रखा हैं, आप चिन्ता क्यों करती हो, आपका बेटा जैन धर्म का झण्डा फहराने का संकल्प ले चुका है। इसीलिए आपको तो प्रसन्न होना चाहिए।' 'देखो, संसार में सभी माताएं अपने पुत्रों का विवाह रचाकर घर बसा लेती है, और मोह बढ़ाकर उसी में ही फंसी रहती है। बिरली ही ऐसी माताएं होती है जिनके पुत्र धर्म के मार्ग में चलकर दूसरों को भी मोक्षमार्ग का दिग्दर्शन कराते है। उन माताओं की तो आचार्य श्री भी प्रशंसा करते है।'

तब मां ने कहा-'तू कितना निर्मोही बन गया हैं? तेरे वियोग को हम कैसे सहन कर सकेंगे?' ओह....... बिना बहु के और छोटे-छोटे बच्चों के यह घर कैसे हरा भरा दिखेगा। विधाता ने यह क्या कर डाला? मेरी इच्छाओं पर यह कैसा-वज्रघात हो रहा है........।'

मां पुनः शम्भू के सिर पर हाथ फैरते हुए बोली-'प्यारे पुत्र तू मेरी बात मान। तू जैसी कन्या चाहता है वह वैसी ही सुलभ है। तेरे लिए तो पता नहीं कितने लोग अपनी-अपनी कन्याएं देने की चर्चा कर रहे है।'

मां की बात सुनकर शम्भू बोले-'मां! संसार में यह मोह ही इस जीव को अनादिकाल से भ्रमण करा रहा है। आप सोचो तो सही, आपने इस अनन्त संसार में किसको पुत्र रूप से जन्म नहीं दिया है और किसकी माता नहीं हुई है। तो क्या मां बेटे का सम्बन्ध चिरस्थायी हैं? शाश्वत है? क्या जिनके पुत्रों ने विवाह करके घर को हरा भरा कर रखा है, उनकी माताएं पूर्णतः सुखी है? और यदि सुखी भी है तो कितने दिनों के लिए। पुनः उन्हें मृत्यु का सामना तो करना ही पड़ता है। तब यहां का सम्बन्ध यहीं तो समाप्त हो जाता है। और क्या आपने सुकौशल की माता सहदेवी का उदाहरण नहीं सुना हैं मां आप स्वयं विदुषी हो, आपने ही तो मेरे पर धर्म के अमिट संस्कार डाले है। पुनः मैं क्या आपको शिक्षा देने के लिए साहस कर सकता हूँ। अतः आप लोग मेरे विवाह की जिद छोड़ दे। और ऐसा आशीर्वाद दो कि मैं अखण्ड ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए धर्म की प्रभावना में अपनी सर्व शक्ति लगा दूँ।

शम्भू के देखे रंग ढ़ंग
रहते अक्सर मुनियों के संग
मां को देख चिन्ता हुई
उससे विवाह की बात कही

★ ★ ★

बोली, बेटा शादी कर लो
घर में खुशियां तुम भर दो
सम्भव बोले प्यारी मां
मैंने ब्रहमचर्य व्रत लीना
शादी की तो अपनी ना-ना

★ ★ ★

धर्म का नाम बढ़ाऊगां
लोगों को समझांऊगां
शाश्वत नहीं यहां कुछ भी
मुझको आशीर्वाद दे जननी।

तत्पश्चात् वातावरण शान्त हो गया। उसके बाद भुजबली बोले-'शम्भू! देखो सदा से अपनी सनातन परम्परा यह रही है कि पहले विवाह करके ग्रहस्थ आश्रम को चलाना। उसमे धर्म, अर्थ और काम इन तीनों पुरूषार्थों का विधिवत् उपयोग करना उसके बाद वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करके अपना कल्याण करना चाहिए। तुम्हारी उम्र ब्रह्मचर्य जैसे कठोर व्रत को ग्रहण करने की नहीं हैं। अभी तुम विवाह करो और अपना घर सम्हालो। फिर आगे भविष्य में दीक्षा का विचार कर लेना।' भैय्या सूक्ति तो यही है-

'प्रक्षालनात् हिं पंकस्य दूरात् अस्पर्शनं वरम्' अर्थात् कीच में पैर रखकर धोने से अच्छा है कि कीचड़ में नहीं फंसना चाहिए। अर्थात् विवाह करके बन्धन में फंसकर पुनः छोड़ना और फिर ब्रह्मचर्य व्रत लेकर तपश्चरण करना इसकी अपेक्षा ग्रहस्थ आश्रम में नही फंसना ही श्रेयस्कर है।' शम्भू का सटीक तर्क सुनकर भाई भुजबली चुप हो गए।

अक्का मां अपने पुत्र का दृढ़ निश्चय देखकर मोह के निमित्त से कुछ क्षण तक उदास होकर बैठ गई। इतने में ही भुजबली बोले-'अच्छा शम्भू! जो तुम्हारा निर्णय हो चुका हैं उसमें मैं बाधक नहीं बनना चाहता हूं।' पुनः अपनी मां की ओर देखते हुए बोले-'मां! तुम भी मोह छोड़कर इसके सत्कार्य की सराहना करो और अपना सौभाग्य समझो की तुम्हारा लाड़ला बेटा जैन धर्म की रक्षा में अपना सर्वस्व समर्पण करने के लिए दृढ़ संकल्प ले चुका है।' मां ने कहां-'पहले तुमने विवाह का प्रस्ताव ठुकरा दिया उससे हमको बहुत कष्ट हुआ। फिर भी तुम्हारा मुंह देखकर हमने जैसे तैसे-संतोष कर लिया। ओह...... अब तुमने हमारी आंखों से भी ओझल होने का भी सोच लिया है......। क्या तू अब मुझे जिन्दगी भर रुलाना ही चाहता है।'

शम्भू बोला-'नहीं मां नहीं! आप ऐसा क्यो सोच रही हो, जब तुम्हारा पुत्र धर्म की ध्वजा चारों ओर फहरायेगा तब आपके दुःखाश्रु नहीं आएंगे। प्रत्युत हर्षाश्रु ही आएगें। और आप अपने को धन्य समझेगी। मा आप केवल मोह के वश होकर ही ऐसा सोच रही है। अरे! भला आप जैसी वीर प्रसूता' माता की सन्तान होकर मैं कष्टों से घबराने वाला नहीं हूं। मैं तो कष्टों का आह्वान करके उनसे टक्कर लूंगा और मिथ्यातम का विध्वंस करके अपने जैन शासन को विश्व व्यापी बनाऊंगा। जैन धर्म में वो शक्ति है कि शरण में आने वाले मनुष्य क्या पशुपक्षी भी अपनी आत्मा को परमात्मा बना चुके हैं।' शम्भू मां को समझाते हुए बोले-

जैन धर्म की शक्ति अनन्त
जिसके होते त्यागी सन्त
जग में शाश्वत नहीं कुछ भी
धन जन सब रह जाएगा यहीं।

★ ★ ★

धर्म की शरण में जो आया
भव सागर से वो तर पाया
माता अब तुम क्या सोचे
मोह माया के बन्धन झूठे।

इस प्रकार चर्चा करते-करते बात बहुत अधिक बढ़ चुकी थी। भुजबली ने बात समाप्त करते हुए मां से कहा-'मां क्यों न इस बात को यही समाप्त किया जाए। क्योंकि जितना अधिक हम इस बात को बढ़ायेगें शम्भू का वैराग्य उतना ही दृढ़ होता जाएगा।'

भुजबली की बात सुनकर मां कुछ देर के लिए स्तब्ध हो गई और अन्त में अपने मन को कठोर करते हुए केवल इतना ही कहा-'बेटा, अब तुमने पक्का इरादा कर ही लिया है तो कहती हूं कि जहां भी जाना हो जाओ। परन्तु धर्म के ऊपर कभी भी आंच मत आने देना तथा वीर शासन में जैसा कहा है वैसे ही तत्व का अध्ययन करना, आचरण करके धर्म की बहुत बड़ी प्रभावना करना। यही मेरी इच्छा है।'

मां के ऐसे मधुर वचनों को सुनकर सम्भव कुमार के आनन्द का पार नहीं रहा। उनका मन अत्यन्त आनंदित-होकर मंद स्मित हो अन्दर ही अन्दर पुलकित हो उठा। और हर्ष के वशीभूत होकर मां के चरणों को स्पर्श करते हुए कहा-'मां आपका आशीर्वाद मैं कभी नहीं भूलुंगा। आपके आशीर्वाद से मैं दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करते जाऊंगा। इस आशीर्वाद रूपी अतुल्य वचनों को मैं अपने हृदय रूपी मनमंदिर में रत्नरूपी ज्योति से सदैव प्रज्जवलित करते रहूंगा।' कहते भी है-जन्मभूमि जन्ममाता, एवं दीक्षा गुरू स्वर्ग से भी ज्यादा श्रेष्ठ होते है। दिन पे दिन वैराग्य की छटा खिलने लगी।

सद्‌गुरू की खोज

वे प्रतिपल विचार करने लगे कि आत्म कल्याण एवं तत्वज्ञान करने के लिए मैं किस गुरू की शरण में जाऊं। जो मुझे अन्त तक सम्हालकर मेरी इस संसार रूपी नैय्या को पार करने में खेवटिया का काम कर सकें।

गुरू का अन्वेषण करते-करते उनकी दृष्टि शान्त, विचारशील, विशाल दृष्टि, गम्भीर मुद्रा, उदार वृत्ति, भद्र परिणामी प० पूज्य श्री 108 भारत गौरव आचार्य रत्न देश भूषण मुनि महाराज के ऊपर स्थिर हो गई। इनके चरण कमलों में रहकर मेरा आत्म कल्याण उत्तम प्रकार से हो जाएगा। इस प्रकार का निश्चय करके वे ग्रह-त्याग के बारे में सोचने लगे कि मैं कब इस घर को छोड़ कर गुरू के चरणों में स्थान पाऊँगा। क्योंकि-

'ज्ञान गुरू ही देते सच्चा
गुरू महाउपकारी हैं
क्या बताऊं गुरू की महिमा
इन की महिमा न्यारी है।'

सम्भव सोचने लगे कि भविष्य काल का पलभर भी भरोसा नहीं है। प्रत्येक समय मृत्यु दरवाजे पर खड़ी है। संसार एवं शरीर के स्वभाव का विचार वो हर समय करते रहते थे अर्थात् उनके मन में संवेग भाव की जागृति हो गई थी। यह संसार वास्तविक अनित्य है, अशरण हैं, दुःख रूप है, इस संसार में मैं अकेला हूं और सुख-दुख का कर्ता एवं भोक्ता मैं ही हूं। फिर मैं इस छोटे से जीवन में क्या दंद-फंद करूं। मैं अपनी इस रत्नरूपी आत्मा को इस संसार रूपी गढ्ढ़े में नहीं डालूंगा। इस आत्मा को एक न एक दिन परमात्मा से जरूर मिलाऊंगा। क्योंकि धन, दारा (स्त्री) कीर्ति से इस जीव को कभी भी शान्ति नही मिलेगी। स्वयं के ज्ञान, दर्शन में संतुष्ट हुआ आत्मा कभी भी प्रमादी नहीं बनता है। जो प्रमादी बनता है वह निश्चित ही असंयत बनता है। कहते भी हैं-'संयम के बिना एक पल भी व्यर्थ न जाने देना।' क्योंकि -

संयम सुख का साधन है
संयम मुक्ति देता है
संयम धर्म ही इस प्राणी को
पदवी ऊंची देता है।

संभव कुमार के अन्तः चक्षु में संयम झलकने लगा और उन्हें आत्म कल्याण करने के लिए प्रेरित करने लगा।

एक बार शम्भू किराने की दुकान का सामान लेने के लिए कोल्हापुर गए थे, वहां उन्हें पता चला कि पू० आचार्य श्री देशभूषण महाराज जी किणी में हैं। उसी समय उन्होंने सामान को पैकिंग करके श्रीमान रोटे की दुकान में रख दिया और तत्काल किणी की बस में बैठकर चले गए। दूसरे दिन बड़े भाई ने पता लगाया कि शम्भू अभी तक क्यों नहीं

आया ? वो चिन्ता में पड़ गए। कोल्हापुर पहुंचते ही पता लगा कि शम्भू सामान रखकर पू० आचार्य श्री के पास किणी गया है। वे उसी समय वहां गए। लेकिन किणी से आचार्य श्री जी का विहार हो गया था। विहार करते-करते आचार्य श्री जी का संघ सातारा जिले में 'अतीत' गांव में पहुंच गया। पता लगाते-लगाते बड़े भाई वहां पहुंच गए और वहां से शम्भू को पकड़कर घर ले आए। शम्भू मुनियों की सेवा बड़ी श्रद्धा से करते थे। उनका साथ उन्हें प्रिय लगता था-

सेवा करते साधु संघ की
करते प्रभू का ध्यान
इनकी भक्ति से होता है
आतम का कल्याण।

गृह-त्याग-28 फरवरी 1962

भुजबली अतीत गांव से शम्भू को जबरदस्ती ले आए लेकिन घर आकर उनका मन नहीं लग रहा था। घर में ही नहीं अपितु पूरा रूकड़ी गांव ही उन्हें शून्यवत लगने लगा। उनका मन बार-बार पूज्य आचार्य श्री को याद करके रो रहा था। वे सोचने लगे मैं कैसे घर से निकलूं ? क्या करूं ? कहां जाऊं ? क्योंकि घर में रहकर मेरा जीवन पूर्ण अंधकार मय हो जाएगा। आत्म ज्योति जगाने के लिए सदगुरू चरण ही दुनिया में सबसे श्रेष्ठ है। केवल गुरू चरणों में ही मुझे सच्चा सुख मिल सकता है।

गुरु की सेवा उनकी भक्ति
सच्चे सुख को देती है,
रखते है जो श्रद्धा इसमें
दुख उनका हर लेती हैं।

ऐसे अनेक प्रकार के विकल्पों से उनका मन त्रस्त हो गया था। उन्होनें सोचा अब मैं यह प्रस्ताव घर के लोगों के समक्ष रख दूंगा, चाहे इसके पीछे कुछ भी संकट क्यों न सहन करना पड़े।

सम्भव ने मां भाई सभी को बुलाकर कहा-'अब मुझे बन्धन में मत बांधों मैं अब इस बन्धन में नही रह सकता। मुझे आप सभी घर से जाने की स्वीकृति दे दीजिए।' मां एवं भाइयों ने बहुत समझाया लेकिन शम्भू ने किसी की भी नहीं सुनी।

भाई ने कहा-'देखो शम्भू! पहले गृहस्थ धर्म स्वीकार-करो बाद में दीक्षा लेकर अपना कल्याण करना ही मानव जीवन की सार्थकता है। तीर्थंकरों ने भी तीस वर्ष तक घर में रहकर भोगों को भोगा। तत्पश्चात् दीक्षा लेकर अपना कल्याण किया।'

सम्भव की हठ के आगे किसी के शब्द उन्हें सही नहीं लगे। मां उनकी हठ देखकर रूदन करने लगी। उस दृश्य का वर्णन मैं शब्द वर्गणा के द्वारा नहीं कर सकती।

रो-रो के मां आलाप करें
नयनों से अश्रु धारा बहे
जाने की मैं, कैसे कह दूं

कलेजे पे पत्थर कैसे रख लूं
नौ महीने तुझे कोख में पाला
खुद जागी पर तुझको सुलाया
मुंह में देती एक-एक निवाला
कितनी मुश्किल से मैनें पाला
बदले में तूने मुझको रूलाया
जरा तरस भी तुझको न आया।

मां का विकल्प सुनकर सम्भव की आंखों से स्नेह एवं वात्सल्य फूटने ही वाला था तभी उन्होंने मोह की तरफ पीठ कर ली और मन को कठोर करके मां को समझाते हुए बोले-'आप लोग दुःख मत करो। धैर्य धारण करो। मां दुनिया में बिना त्याग के कुछ भी नहीं है।

त्याग किया बादल ने जल का
ऊंचा बादल बन पाया
सागर नीचा रह गया जग में
त्याग नहीं वह कर पाया।

इसलिए मां मुझे आशीर्वाद दो कि मैं त्यागमय जीवन व्यतीत कर आत्म ज्योति जला सकूं। बादल की तरह ऊपर उठ सकू।' ऐसे वचनों को सुनकर उनकी मां की आंखों से सतत् अश्रुधारा बहने लगी। हाथ पैर कांपने लगे उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे उनके पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई हो। होंठ थर-थर कांप रहे थे। अन्त में सभी को समझाकर जाने का दिन निश्चय कर ही लिया।

28 फरवरी 1962 को गृहत्याग करके अपने गुरु आचार्य श्री 108 देशभूषण महाराज जी के चरण कमलों में सच्चे सुख की प्राप्ति के लिए चल पड़े। सम्भव तो बस यही कहते थे -

देशभूषण गुरु के चरणों से
मुझको बड़ा ही प्यार है,
उन जैसे मुनियों से ही
टिका हुआ संसार है।

उन्हें छोड़ने के लिए (रेलवे स्टेशन तक) पूरा रूकड़ी गांव गया था। मां बेचारी दुःख के सागर में निमग्न हो गई थी। फिर बाल हठ के सामने कुछ न कर सकी। भाई वगैरह भी सम्भव को रोकने के लिए असमर्थ हो गए। सम्भव ने तो अपना मन सुमेरू पर्वत की तरह अचल बना लिया था।

सभी लोग स्टेशन पहुंचे वैसे ही उनके भानजे (जयगोंडा) की आंखों से अश्रुधारा बहने लगी। और वे जोर-जोर से हिचकी ले लेकर रोने लगे। इस दृश्य को देखकर वहां उपस्थित सभी की आंखें भीग गईं। वातावरण पूर्ण बदल गया। लेकिन शम्भू का हृदय तो आनन्द से नाच रहा था।

गुरु के चरणों में जाने से
सम्भव मन ही मन खुश होते है।
उनके विछोह में सब प्रियजन
फूट-फूट कर रोते है।

सम्भव ट्रेन में बैठ गए थोड़ी देर में गाड़ी ने रूकड़ी गांव को अलविदा कह दिया। सम्भव के चले जाने के बाद सभी को ऐसा लगने लगा जैसे उन्होंने एक मूल्यवान रत्न को खो दिया हो। सभी लोग गांव वापस आ गए। मां की अवस्था तो विचित्र सी थी। उन्हें ऐसा लग रहा था मानों सारी पृथ्वी घूम रही हो। शरीर का सारा खून निचोड़ लिया हो। शक्तिहीन होकर एकदम पागल सी हो गई थी। सभी से बस यही कहती -

मेरा शम्भू कहां गया
उसको पास बुला दो
पास नहीं बुला सकते तो
बस इक झलक दिखा दो॥

नन्हा वीर-अपूर्व धैर्य

रूकड़ी नगर में ही नहीं बल्कि सारे हिन्दुस्तान में मिथ्यात्व रूपी अंधकार फैला हुआ था उसे दूर करने के लिए सम्भव रूपी सूर्य सारे विश्व को प्रकाशवान करने के लिए निकल पड़ा। जैसे किसी पक्षी का पंख टूट जाने पर वह निराधार होकर भयभीत हो जाता है ठीक उसी प्रकार रूकड़ी के सभी गरीब लोगों को स्थिति हो गई थी क्योंकि उनको आधार देने वाला, धैर्य देने वाला, युग वीर, सम्भव उनको छोड़कर चला गया। सम्भव का आगमन अब पुनः होने वाला नही था क्योंकि वह तो रूकड़ी नगर तथा चिंचवाड़े परिवार को उज्जवल करके यति धर्म स्वीकार करने के लिए निकल पड़े। उनके मित्रों को तो लगने लगा कि कोई मूल्यवान वस्तु खो गई है। सम्पूर्ण रूकड़ी नगर को यति धर्म का पाठ पढ़ाकर स्वयं सम्भव उसे स्वीकार करने चले गए। जो व्यक्ति सद्गुणी होता है वह सबके मत को हरने वाला होता है-

गुणवानों की कीर्ति सुपावन
फैल स्वयं ही जाती है।
देख गुणों को जनता उसके
दर्शन को ललचाती है।

सम्भव कुमार में करुणा और संवेदना इतनी प्रखर थी कि उनकी आंखें दूसरे का दर्द देखकर बरबस छलछला पड़ती थीं। दूसरे की पीड़ा के आगे वह अपनी पीड़ा भूल जाते थे। परहित उनका परमार्थ था। वह एक ऐसी सेवा पर आए हुए है जहां स्वार्थ और परामर्श एकाकार हो उठते हैं।

परम अहिंसा धर्म जगत में,
सच्चे सुख का साथी है
परहित में संलग्न मनुष्य को
मुक्ति मिल ही जाती है।

अज्ञान, प्रमाद, दोष जब भी किसी का होता तब उनकी आंखें बरस पड़ती थी। माता जैसे अपनी सन्तान पर क्रोध नहीं कर पाती और उसका आंचल वात्सल्य में भीग उठता है वैसा ही सम्भव के सन्दर्भ में होता था।

प्रारम्भ से ही सम्भव वैराग्य एवं निष्कामता के पनघट थे। 18 वर्ष की कच्ची उम्र में भी वह सुकरात की तरह जिज्ञासु और प्रसिद्ध थे। प० पूज्य आचार्य श्री देशभूषण जी ने जब उनसे प्रश्न किये तब उन्होंने जो उत्तर दिए वह इतने सटीक थे कि उन्हें लीक से हटकर फैसला देना पड़ा। वास्तव में जो लोक संकल्प के धनी होते है। वे ही युगान्तर लाते है।

संकल्पों पर डटने वालो
युग परिवर्तन कर देता है
उनकी गाथाएं जन-जन में
नित नव जीवन भर देता है।

सम्भव भविष्य दृष्टा थे, उनके सामने धर्म और आध्यात्म की आने वाली पीढ़ी को आकार देने का महत्वपूर्ण प्रश्न था।

सम्भव कुमार आचार्य रत्न देशभूषण महाराज श्री के सानिध्य में आ गये। अत्यन्त भक्ति पूर्वक वंदन करते हुए बोले-'गुरुदेव! आप मुझे अपने चरण रूपी कल्पवृक्ष की छाया दीजिए और मुझे कृतार्थ कीजिए।'

आचार्य श्री ने कहा-'बेटा मैं तुम्हें मोक्ष मार्ग दिखाऊंगा। परन्तु उससे पहले गृहस्थ मार्ग में ग्यारह प्रतिमा है। उन प्रतिमाओं का अच्छी तरह पालन करना पड़ेगा। यह दीक्षा का राजमार्ग है। उसके बाद ऐलक पद धारण करना तदंनतर कर्मों की लड़ियां जिससे झट टूट जाती हैं ऐसा वह सर्वश्रेष्ठ मुनिपद धारण करके मोक्ष रूपी मंजिल को प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करना। संभव गुरु के रूप में आचार्य श्री को पाकर बहुत खुश थे।

देशभूषण महाराज को पाकर
धरती अम्बर नाच उठे
जय-जय श्री गुरूवर की
कहकर सम्भव झूम उठे।

आचार्य श्री का संघ अत्यन्त विशाल था। संघ के सभी त्यागी इस बालक को देखकर बहुत आनन्दित हुए। 18 वर्ष का लड़का वैराग्य की ओर सिंह की भांति उछाल मार रहा था। आचार्य श्री के प्रति सम्भव की भक्ति भावना सभी त्यागियों को आश्चर्य चकित कर रही थी। आचार्य श्री 108 देशभूषण महाराज को वे अपना गुरु मानकर संघ में रहने लगे, और कहते -

सोलह सुख सन्तों की
सेवा से मिलते है।
इनकी सेवा से ही
मोक्ष के द्वार खुलते है।

कुछ दिनों बाद घर के लोग सम्भव को बुलाने आए। जिस प्रकार बीज के अंकुर आने में हवा, पानी, धूप, मिट्टी, खाद उपकारी होते है उसी तरह सन्त समागम भी जीवन निर्माण में सहायक सिद्ध होता है। शम्भू पर विशुद्ध वातावरण

का प्रभाव पड़ा। उनके वर्ताव हावभाव और शब्द प्रयोग में संन्यास की सुगन्ध आने लगी। बड़े भाई शम्भू का बर्ताव देखकर घबरा गए। बोले-'शम्भू! तू घर चल, मां की हालत बहुत दयनीय है, मुझसे देखी नहीं जातीं।'

सम्भव बोले-'मैं नहीं आऊंगा।' वह हिमालय सा अडिग हो गया। बड़े भाई का शम्भू पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा। फिर पुनः बोला-"भैय्या, मैं नही आऊंगा। आप घर लौट जाइए। अपना समय बर्बाद मत कीजिए।' बड़े भाई उसे देखते रह गए। क्योंकि उसकी प्रतिज्ञा आध्यात्म और वैराग्य के नए-नए आयाम खोज रही थी। उसका तन-मन मनन मन्थन की प्रक्रिया से गुजर रहा था। सभी को ऐसा लगा कि सम्भव रूकेगा नहीं संयम धारण अवश्य ही करेगा।

यह उम्र। यह ज्ञान! इसको रोकना असम्भव है इस बालक की विनय शीलता, शालीनता, दृढ़ता सभी आए हुए लोग विस्फटिक नेत्रों से देख रहे थे। सब चकित थे। शम्भू में न कोई हठ था न कोई झगड़ा फसाद, न रोना धोना था यदि कुछ था तो परिपक्वता की ओर पग उठाए वैराग्य भाव। लेकिन भाई का हाल बुरा था वह बार-बार कह रहे थे 'संयम कोई गुड़िया का खेल नहीं है। तू जिद मत कर। संयम मोम के दांतो से लोहे के चने चबाने जैसा दुष्कर है। अरे शम्भू तू क्या जाने संयम किस चिड़िया का नाम है। तुम घर चलो। मां को तुम्हारी शादी करने की इच्छा है।' शम्भू ने कहा-'यह सब गलत है, मैं अपनी अन्तः प्रेरणा से ही संयम स्वीकार कर रहा हूं। मुझे मृत्यु पाने वाली पत्नी नहीं चाहिए मैं ऐसी अमर सत्य पवित्र पत्नी को वरूंगा जो न कभी मरेगी और न कभी मुझे छोड़ेगी।' रूकड़ी से आए हुए लोगों में से एक व्यक्ति ने कहा-'बेटा! क्या तुम संन्यास लोगे..।'

'जी!' सम्भव ने पूरे आत्म विश्वास के साथ कहा! 'विवाह क्यों नहीं करोगे।'

'मैनें संसार की व्यर्थता और संन्यास की महत्ता को जान लिया है' शम्भू ने विनय के साथ कहा।

बड़ों का आदेश मानना, धर्म नहीं है क्या? उस व्यक्ति से एक न्यायाधीश की भांति तथ्यों की छानबीन करनी चाही।

'धर्म क्यों नहीं है। पहले धर्म तो आज्ञा पालन ही है। किन्तु उसकी भी तो मर्यादा है।' इतना परिपक्व उत्तर सुनकर वह व्यक्ति स्तब्ध हो गया। शम्भू के यथार्थ मूलक संयत, संतुलित, सारभूत उत्तर ने उसे अचम्भे में डाल दिया।

'दीक्षा के बाद यदि मन विवाह की ओर झुका तो क्या करोगे।' उस व्यक्ति ने पुनः प्रश्न पूछा।

'मेरे हृदय में विवाह के लिए क्षणभर भी आर्कषण नहीं है बीज बिना वृक्ष की कल्पना निराधार ही होगी।' बड़ी संयम वाणी से शम्भू ने जवाब दिया।

'बेटा सब बता दो। तुझे किसी ने सिखाया पढ़ाया तो नहीं है।' उस व्यक्ति ने धीमी आवाज में पूछा।

'नहीं मैं अपनी अन्तः प्रेरणा से ही संयम धारण करने आया हूं।' शम्भू ने दृढ़ता के साथ कहा। शम्भू से सवालों का जवाब पाकर वह व्यक्ति सबके मुखातिब होकर बोला-'शम्भू को किसी ने बहकाया नहीं। इसकी अन्तःप्रेरणा ही इसे त्याग संयम के मार्ग पर ले जा रही है। यह सामान्य बालक नहीं है। देवांशी बालक है। इसको अपने दृढ़ निश्चय से विचलित करना सम्भव नहीं है। इसलिए भुजबली मेरी प्रार्थना है कि इसके मार्ग में रुकावट न बनें। बल्कि धर्म के लिए शम्भू को सहर्ष अर्पित कर दे।'

जय घोष से गगन गूंजने लगा मोह पर अमोह की विजय, भोग पर त्याग की विजय। लोगों के हर्ष का बांध टूट-पड़ा। शम्भू ने संयम और त्याग की पगडण्डी पर अपने पग आगे बढ़ा दिए। अन्त में शम्भू के भाई को निराश होकर रूकड़ी वापस जाना पड़ा।

सन् 1971 में भारत गौरव आचार्य श्री देशभूषण जी के साथ क्षु. श्री बाहुबली जी ने इन मूर्तियों को निकालने में पूर्ण सहयोग किया

देशभूषणाचार्य गुरुवर, शिष्य की ओर निहार रहे।
बाहुबली निज बाहुबल से, अपने केश उखाड़ रहे।।
(मुनि दीक्षा के समय केशलोंच करते हुए क्षु. बाहुबली जी)

जड़ वैभव को त्याग कर निज वैभव को पाया।
देशभूषण जी से दीक्षा ले यथाजात रूप आया।।
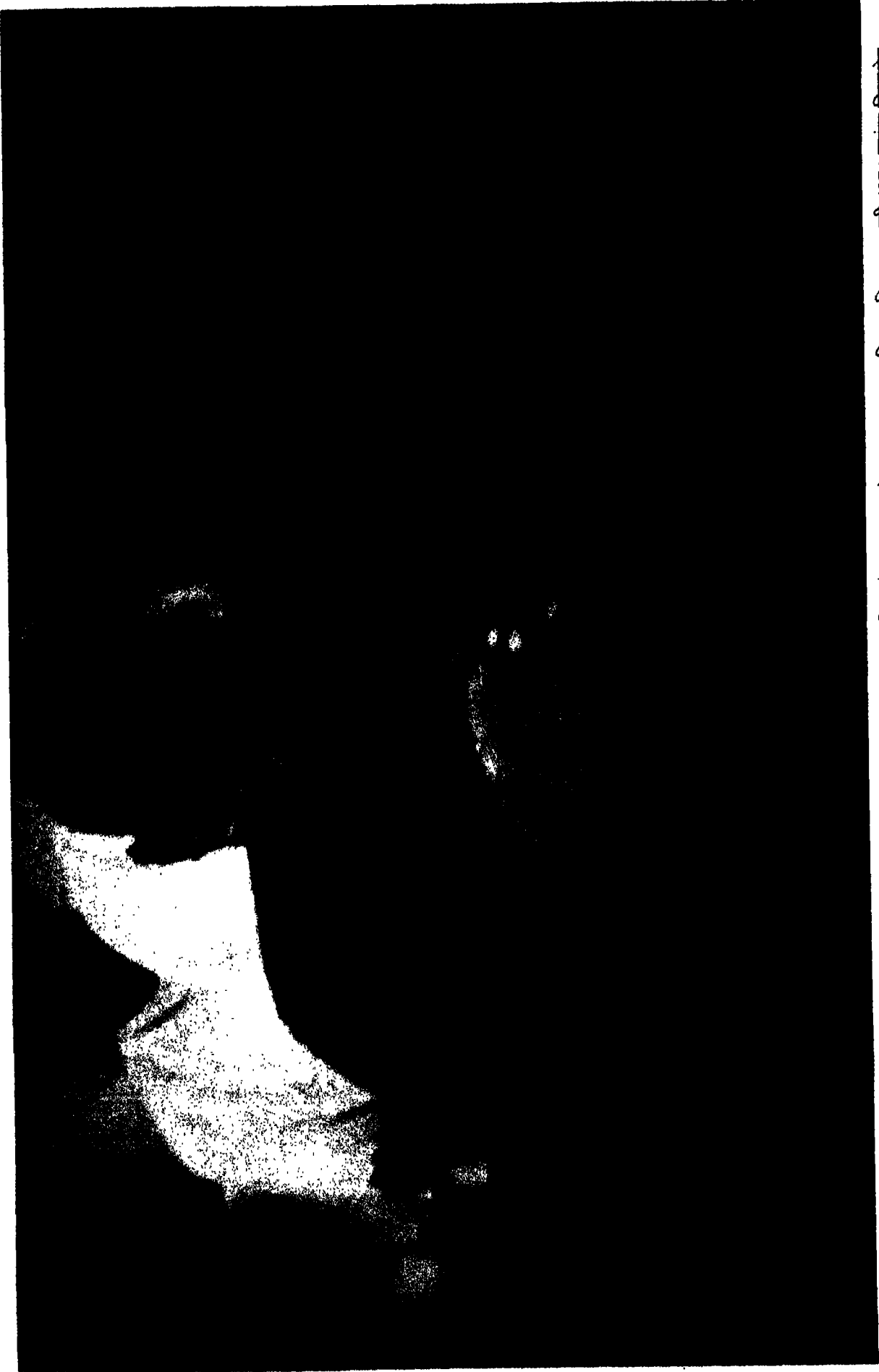
प.पू. भारत गौरव आचार्यरत्न देशभूषण महाराजजी पू.क्षु. श्री बाहुबली महाराजजी को जैनेश्वरी दिगम्बर दीक्षा के संस्कार करते हुए माघ कृष्ण प्रतिपदा, दि. 28 फरवरी 1974 तारंगा सिध्दक्षेत्र
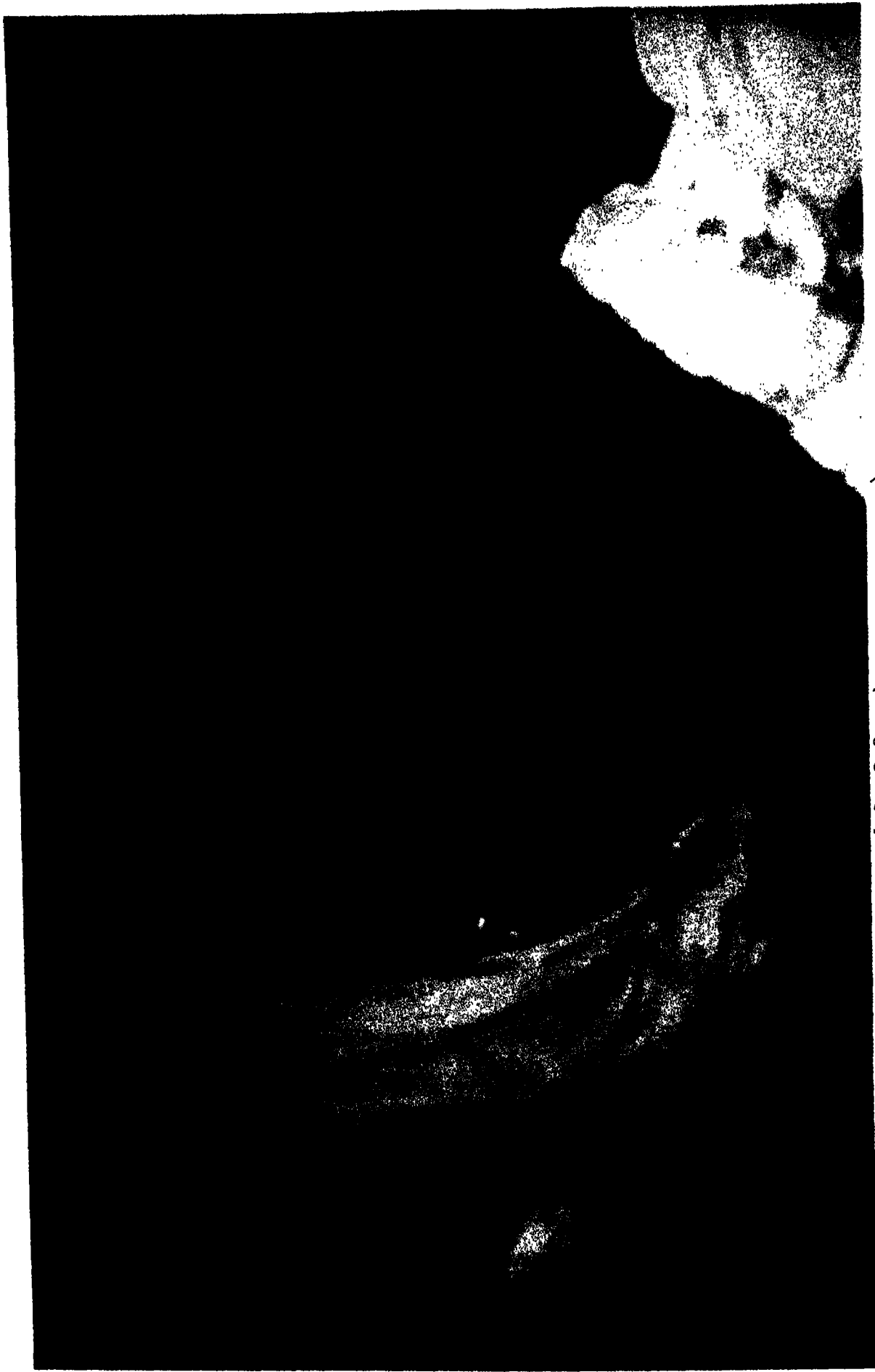
प.पू. आचार्य श्री मुनिदीक्षा के समय वस्त्र त्याग करते हुए।

मुनि श्री बाहुबली जी महाराज मुनि दीक्षा लेने के उपरान्त तथा जय जयकार करते हुए श्रावक गण

जैसे ही ली मुनि दीक्षा तारंगा सिद्धक्षेत्र में।
करने चले भाव-वंदना, पूज्य गुरु मुनिवेश में।।

तीर्थों उद्धारक तुम हो, उन्नायक कहलाते हो।
जंगल में मंगल कर देते, खुद तीरथ बन जाते हो।।
(कोथली क्षेत्र निर्माण हेतु आचार्य श्री देशभूषण जी अपने शिष्य पू. बाहुबली महाराजजी के साथ बालुर्मोस में रत्नविधि से प्रतिदिन कोथली आना-जाना करते थे।)

छाया बनकर अब चला, गुरुवर आपके साथ।
तुम्हीं मेरे पितु हो, सदा झुकाता माथ।।

कोथली क्षेत्र के उन्नायक पू. बाहुबली जी भूमि निरीक्षण करते हुए

पूर्व अवस्था की जन्मदात्री माता आक्काबाई के साथ पू. आचार्य जी

हिंडलगा जेल में उपदेश देते हुए पू. आचार्यश्री जी के साथ मुनिश्री बाहुबली जी महाराज

हिंडलगा जेल में उपदेश देते हुए पू. आचार्यश्री जी के साथ मुनिश्री बाहुबली जी महाराज

देशभूषणाचार्य गुरु संग, दिल्ली में गुरु बैठे हैं।
सबके दिल पर राज करें, ये ऐसे गुरुजन बैठे हैं।।

गुरु चरणों में बैठकर सद्ज्ञान प्राप्त करते हुए मुनि श्री बाहुबली जी महाराज

भूतपूर्व नगराध्यक्ष श्री अप्पासाहब पाटील (कुरुंदवाड) गुरु आशीर्वाद से तर गये

अखिल भारतीय दिगंबर जैन शास्त्री परिषद 54वें अधिवेशन प. पु. त्यागी व भट्टारक सम्मेलन, फलटण दि. 29/12/76 से 3/1/77

जैनों की काशी फलटण में आचार्य रत्न देशभूषण जी के साथ मुनि बाहुबली जी के सानिध्य में अखिल भारतीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद में आर्ष परम्परा के प्रचुर प्रकांड विद्वान श्रीमान् जोतीचंद कोठारी पंडित जी व्याख्यान देते हुए

सन् 1977 कुरुंदवाड चातुर्मास में केशलोंच समारंभ के समय सोलापुर श्राविकाश्रम की संचालिका बा. ब्र. प्रा. विद्युल्लता बेन एवं आर्ष परम्परा के न्याय विषय के प्रकांड विद्वान पंडित श्रीमान् नरेन्द्र कुमार भिसीकर जी व्याख्यान करते हुए

कांच का मंदिर नृसिंहवाड़ी, गुरुवर जिसे निहार रहें।
कंचन आभाहारी गुरु से, जो खुद रत्नत्रय धार रहें।।
(पु. आचार्य श्री की प्रेरणा से निर्मित नृसिंहवाड़ी त्रिभुवन लाल कांच मंदिर)

सन् 1977 कुरुंदवाड चातुर्मास में पू. आचार्य श्री, पू. मुनि श्री तपस्वी विहितसागर महाराज, ब्र. सुरेन्द्र जी (उपाध्याय मुनि श्री शांति सिंधुजी) एवं श्रावक आदि

केशलोंच गुरु कर रहे, इन्द्रिय सुख सब त्याग।
मुख मुद्रा पर झलक रहा, करुणामय वैराग्य।।
शिरढोण चातुर्मास 1978 में केशलोंच करते हुए पू. आचार्यश्री

अपूर्व धर्मकार्य ॐ महान् पुण्य बंध

दिनांक 25 जून 1980 से 2 जुलाई 1980 तक

-: त्रिलोक जिन पूजा विधान:-

-और-

दिनांक 26 जून 1980 के दिन दोपहर ठीक 2 बजे शुभमुहूर्तपर

श्रीकुमार, बालब्रह्मचारी,

...बालाचार्य पद प्रदान समारोह...

परम पूज्य भारत गौरव धर्मनेता आचार्यरत्न 'श्री 108 देशभूषण महाराजजी' के करकमलोंद्वारा परम पूज्य मुनि 'श्री 108 बाहुबली महाराजजी' को बालाचार्य पद प्रदान किया जायेगा।

प्रात: पंचामृताभिषेक, भक्तामर, गणधर वलय विधान
दोपहर-2 बजे पद प्रदान समारोह,
इस पुण्य अवसर पर पधारकर जिन भक्तीका लाभ उठाये ऐसी नम्र विनती है।

शुभ स्थान- श्री देशभूषण आश्रम, कोथळी-कुपनवाडी (ता. चिकोडी, जि. बेलगाम)

भोज में शांतिसागर महाराज के स्मारक की नींव खोदते हुए श्रावकगण, प्रेरणा स्रोत पू. आचार्यश्री बाहुबलीजी मुनि महाराज व मुनि श्री महाबलजी महाराज

आचार्य श्री के साथ मुनि श्री बाहुबली जी, मुनि श्री चन्द्र सागर जी, मुनि श्री कुलभूषण जी
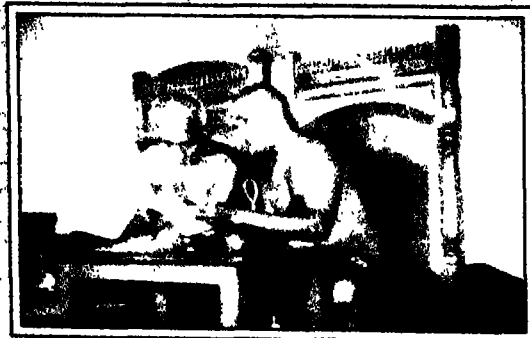
भोज चातुर्मास में मुनि श्री महाबल जी महाराज से शास्त्र चर्चा करते हुए बालाचार्य बाहुबली जी महाराज

बालाचार्य श्री बाहुबली जी के साथ भोज निवासी श्रीमान् सेठ जम्बूराव सौंदत्ते एवं श्रीमान् धनपाल चौगुले आदि।

आचार्य श्री अबोध बालिका (वसुंधरा बा. पाटील कुरुंदवाड) को आशीर्वाद देते हुए

पिहीताश्रव मुनिवर जी पूज्य गुरुवर संग बैठे हैं।
सिद्धि साधक हैं अपने भीतर अनंत गुण समेटे हैं।

कुरुंदवाड चातुर्मास (1977) समाप्ति के बाद मंगल विहार
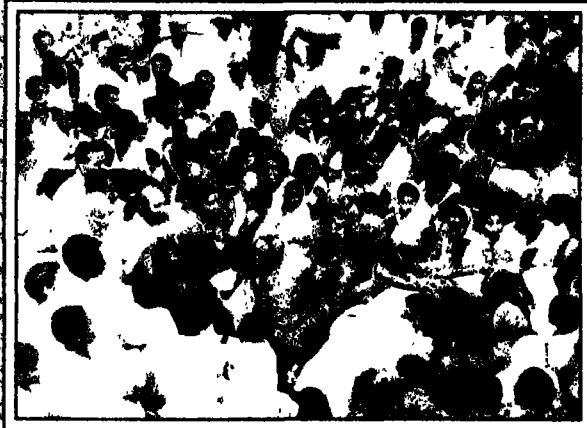
आर्यिका राजुलमती माताजी के पार्थिव शरीर की शोभायात्रा कुरुंदवाड
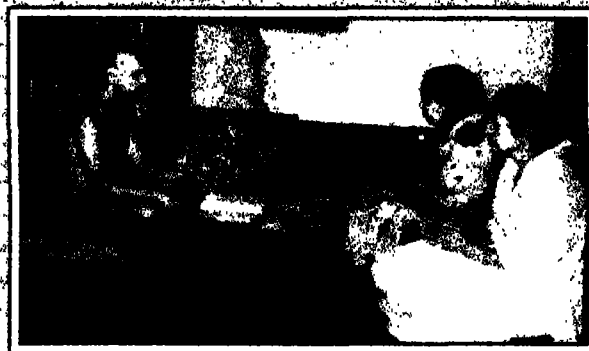
कुरुंदवाड में आर्यिका राजुलमती माताजी का सल्लेखना महोत्सव कराते हुए पू. आचार्यश्री
सल्लेखना माँ राजुलमती की, गुरुवर देखो करा रहे।
मृत्यु ऊपर विजय कराकर, लाखों को गुरुतार रहे।।

गर्भाधान क्रियामात्रन्युनौ हि पितरौ गुरूः

इधर शम्भू का शिक्षण प्रारम्भ हो गया। आचार्य श्री अपने लाड़ले शिष्य को छहढाला, जैन सिद्धान्त प्रवेशिका, रत्नकरंड श्रावकाचार, पुरूषार्थ सिद्धयुपाय, द्रव्य संग्रह, तत्वार्थ सूत्र जी वगैरह छोटे-छोटे ग्रन्थों को पढ़ाने लगे। धर्म का मूल तत्व की नींव क्या है। इस विषय में पूज्य आचार्य श्री ने सम्भव कुमार को पूर्ण रूप से परिपक्व कर दिया। सम्भव हर वक्त कहते-

जो हर्ष तुम्हारे आतम में
गुरुवर सदा रहता है
वो हर्ष हमें भी दे दो गुरुवर
सम्भव तुमसे कहता है।

'गर्भाधान क्रियामात्रन्युनौ हि पितरौ गुरुः' केवल जन्म देने का प्रश्न अलग रख दिया तो गुरु माता-पिता के समान परमपूज्य है। माता-पिता तो केवल जन्म ही देते हैं और बपचन से पालन पोषण कर बड़े करते हैं। परन्तु गुरु इहलोक, परलोक तथा मानव जन्म का कल्याण कर, धर्म का उपदेश देकर सतपथ का मार्गदर्शक होने से वंद्य है।

ज्ञान गुरु जी देते हैं
गुरु के बिना नहीं है ज्ञान
ज्ञान गुणों की खान है
सम्यक् ज्ञान प्रधान।

शास्त्र विरुद्ध आचरण रूपी ताप को दूर करने वाले गुरु महाराज के मुख रूपी हिमालय पर्वत से झरने वाला वचन रूपी सरस चन्दन का स्पर्श विरले ही पुण्यवान को प्राप्त होता है। उन विरले पुण्यवान की श्रेणी में सम्भव कुमार भी हैं। आचार्य श्री का एक-एक वाक्य अनुभव की कसौटी पर कसा होने से हित, बुद्धि एवं वात्सल्य रस होने से हृदय में गहरा बैठता चला जाता है। हमेशा वे कहते थे कि साधु जीवन में प्रमाद का क्या काम? आत्मज्ञान प्राप्ति के लिए आत्म साधना एवं आत्म शुद्धि करने के लिए साधु जीवन धारण करना चाहिए। अतः आत्म शुद्धि की चिन्ता करो यदि शुद्धि होगी तो सिद्धि स्वतः प्राप्त हो जाएगी। उनका सरल, सरस एवं सारगर्भित उपदेश केवल साधुओं में ही होता था। वे बड़ों के प्रति विनयभाव, सेवा भावना एवं कषाय मंदता की विशेष प्रेरणा देते थे।

गुरुदेव के ऐसा बोधामृत उपदेश ने शम्भू के जीवन में चार चांद लगा दिए वह कहते-

गुरुवर के दर्शन करते ही
जीवन में आनन्द आता है
सुनकर जिनकी वाणी को
अज्ञान तिमिर मिट जाता है।

गुरु के सान्निध्य में सम्भव का जीवन बहते हुए पानी की तरह स्वच्छ, शुद्ध, निर्मल और पवित्र हो गया। 1955 से 1961 तक वे गुरु के पास आकर अध्ययन आदि करते थे। आगे 1962 से गुरु के सान्निध्य में रहकर ध्यान, अध्ययन सेवा

करने लगे। छोटी सी उम्र में ही गुरुदेव ने सम्भव के ऊपर समस्त भार सौंप दिए। देशभूषण जी ने कोल्हापुर में शुक्रवार पेठ में जैन मठ में मूर्ति बिठाने का संकल्प लिया था। यह संकल्प पूर्ण करने का कार्य सम्भव के हाथ में सौंप दिया। जयपुर से मूर्ति लाकर कोल्हापुर में विराजमान करने का कार्य पूर्ण करने के लिए शम्भू ने आचार्यश्री से हां कह दी।

सम्भव बड़े उत्साह से आदिनाथ भगवान की विशाल प्रतिमा जयपुर से ले आए। मूर्ति की प्रतिष्ठा के लिए बम्बई जाकर अनेकों प्रकार की पत्रिकाएं छपवाईं। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा धूम-धाम से सम्पन्न करवाई। तदनन्तर कोल्हापुर जिनसेनमठ में, अब्दुल लाट में, माणगांव में, गुरु आज्ञा से धर्म जाग्रति का कार्य किया। सम्भव इन सब कार्यों को करते हुए भी सदैव स्वाध्याय में रत रहते थे। कभी-कभी आचार्यश्री कहते थे-हमने तुम्हें जो कुछ भी पढ़ाया वह सभी याद करके हमें सुनाना। सम्भव कुमार केवल नीचे सिर करके मुस्कराते हुए चले जाते थे और सभी श्लोकों को याद करते थे। इसलिए तो उनका जीवन 'सोने में सुहागा' की तरह उज्जवल हो गया। सम्भव कभी भी अपने गुरु से दृष्टि मिलाकर बात नहीं करते थे। हमेशा दृष्टि झुकाकर बातें करते थे। उन्हें जग में अपने गुरु से सुन्दर और श्रेष्ठ कोई नहीं लगता था-

'देख के रूप आपका गुरुवर
हमको ऐसा लगता है
आप जैसा सुन्दर नहीं कोई
हमें धरा पर लगता है।'

न हि वीर्य गुप्तानां भीति : केसरिणामिव सन् 1962

धीरे-धीरे सम्भव कुमार के वैराग्य में निखार आने लगा। सम्भव को आगे प्रतिमा वगैरह लेने की तीव्र इच्छा होने लगी। साथ ही वह सोचते जब मैं धीरे-धीरे सीढ़ी चढ़ना प्रारम्भ करूंगा तभी मुझे वह सर्वश्रेष्ठ मुक्ति रूपी रमा की प्राप्ति हो जाएगी, अन्यथा नहीं। एक दिन वह गुरु के सामने अपनी इच्छा व्यक्त करते हुए कहते हैं-'हे गुरुदेव! आप मुझे सप्तम् ब्रह्मचर्य प्रतिमा दे दीजिए जिससे मैं अपने व्रताचरण का पालन करते हुए अपना जीवन उज्जवल कर सकूं।' सम्भव के ऐसे वचन को सुनकर आचार्यश्री आश्चर्य चकित होकर बोले-'बेटा! तू अभी छोटा है। तुझसे अभी इतने कठिन व्रतों का पालन नहीं होगा। क्योंकि अभी तुम्हारे द्वारा बहुत विशाल धार्मिक काम होने वाला है और उन कार्यों को करने के लिए तुम्हें जयपुर, बम्बई, दिल्ली आदि स्थानों पर जाना पड़ेगा। स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। आचार्यश्री के वचनों को सुनकर सम्भव थोड़ी देरके लिए चुप हो गए फिर बोले-'आचार्यश्री आप मुझे प्रतिमा दे दीजिए। भले ही मेरे प्राण निकल जाएं परन्तु व्रताचरण से च्युत नहीं होऊंगा।'

'न हि स्ववीर्य गुप्तानां भीतिः केसारिणामिव' जो व्यक्ति आत्मनिर्भर रहता है उसे सिंह समान किसी का भय नहीं रहता है। उनकी आत्मनिर्भरता देखकर प.पू. आचार्यश्री जी ने 1962 में सम्भव कुमार को संसार समुद्र पार करने के लिए महान सप्तम प्रतिमा (ब्रह्मचर्य प्रतिमा) अमृतहस्त द्वारा प्रदान कर दी।

'ब्रह्मचर्य प्रतिमा धारण करके
जीव मुक्ति को पाते हैं
सप्तम प्रतिमा धारण किए बगैर
संन्यासी नहीं बन पाते हैं।

जयपुर चूलगिरी क्षेत्र

एक बार जयपुर में एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर प.पू. आचार्यश्री देशभूषण महाराज जी को सामायिक करने के भाव हो गए। तो वे अपने लाड़ले शिष्य शम्भू से बोले-'शम्भू! आज क्यों न इस महान पर्वत पर बैठकर सामायिक करें।' ऐसा विचार कर गुरु और शिष्य दोनों पर्वत पर सामायिक के लिए जाते हैं। पर्वत को देखते ही उस स्थान पर एक सुन्दर सा क्षेत्र बनाने की कल्पना आचार्यश्री के मन को बार-बार प्रेरित करने लगी। आचार्यश्री ने अपने मन की बात अपने शिष्य के सामने प्रगट की और कहा-'शम्भू मेरे मन में यहां एक सुन्दर क्षेत्र बनाने की कल्पना का उदय हुआ है क्यों न इस कल्पना को पूर्ण किया जाए। उस समय कुछ श्रावक भी साथ में थे। विशेषकर राणा परिवार, राधेलाल, वाणबाला, केदारभाई, रत्नलाल राणा आदि। इस पर्वत पर कुछ न कुछ होना चाहिए। ऐसा विचार करने के बाद उन श्रावकों के कान में यह बात डाल दी और थोड़े ही दिन में इस कार्य की शुरुआत हो गई। मूर्ति बनवाने के लिए भी आर्डर दे दिया गया। आचार्यश्री ने पुनः कोथली की ओर बिहार कर दिया। कोथली जाने के बाद आचार्यश्री वहां से समय-समय पर जयपुर शम्भू को भेजते रहे ताकि कार्य शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण हो सके। मूर्ति विराजमान करने का कार्य, पंचकल्याणक पूजा करने का कार्य आदि बड़े-बड़े कार्य पूर्ण करने का भार आचार्यश्री ने अपने शिष्य पर डाल दिया। शनैः शनैः अत्यधिक अल्प दिवसों में ही यह क्षेत्र बनकर पूर्ण तैयार हो गया। आज यह क्षेत्र जयपुरमें 'चूलगिरि' के नाम से प्रख्यात है। इस क्षेत्र की निर्मिती में क्षु. राजमती माताजी का भी विशेष श्रम प्राप्त हुआ है।

सन् 1963 व 64 में दिल्ली चातुर्मास

दिल्ली में पूज्य आचार्यश्री का संघ सहित चातुर्मास हो गया। वहां उस समय अनेक विद्वान पंडित जी भी स्वाध्याय के समय आते थे। उनके सान्निध्य में रहकर सम्भवकुमार ने बहुत अध्ययन किया। विशेषकर जीवकाण्ड, जैनेन्द्र व्याकरण आदि ग्रन्थों का अध्ययन किया और भी विशेष ग्रन्थ जैसे-धवला, महाधवला, महाबंध, कषाय पाहुड वगैरह ग्रन्थों का बहुत गहन अध्ययन किया।

गुरुमुख से अमृतवाणी सुनकर शम्भू अत्यधिक भाव विभोर हो गये तथा आचार्यश्री से कहने लगे कि-'गुरुदेव! क्यों न आत्मकल्याण कर अपना जीवन उज्जवल किया जाए।' आचार्यश्री ने कहा-'बेटा तुम्हारे आचरण में पूर्ण परिपक्वता आ गई है। लेकिन शरीर दिन व दिन क्षीण हो गया। देखो तुम अभी शारीरिक शक्ति को मत खोना। क्योंकि इसी के द्वारा तुम्हें भविष्य में बड़े-बड़े कार्य करना है। आज्ञाकारी शम्भू बोला-'गुरुदेव जैसा आप कहेंगे मैं वैसा ही करूंगा।'

सन् 1965 में अयोध्या नगरी

पवित्र, शुद्ध, निर्मल ऐसी भूमि जहां पर प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ प्रभु का जन्म हुआ। तद्भव मोक्षगामी बलदेव, रामचन्द्र, नारायण, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न आदि महापुरुषों का भी अवतरण हुआ था। ऐसी विशाल नगरी में आचार्यश्री ससंघ पधारे। उस समय अयोध्या नगरी में लोग पूजा धर्म से भ्रष्ट हो रहे थे फिर से उन लोगों में धर्म की कली खिलाने के लिए अर्थात् प्रेरित करने के लिए आचार्यश्री निमित्तभूत हो गए। वहां पर श्री 1008 आदिप्रभु की अत्यन्त विशाल मूर्ति की प्रतिष्ठा करके विराजमान कर दिया। इस कार्य को पूर्ण करने का श्रेय भी ब्रह्मचारी सम्भव कुमार को ही था। सम्भव का अध्ययन एवं तत्वज्ञान देखकर गुरुदेव ने विचार किया कि अब इसे आत्म उन्नति के मार्गपर लगाना चाहिए। अयोध्या से आचार्यश्री ससंघ श्रवणबेलगोला की ओर विहार कर गए। सम्भव कुमार गुरुसेवा, संघस्थ त्यागियों की सेवा करते फिर आचार्यश्री का कमंडल लेकर उनके साथ-साथ छाया बनकर चलते थे।

संगत से ही बनते साधु, संगति से ही भगवान है।
करते जो संगति मुनियों की, वो ही पुरुष महान हैं॥

उस समय संघ में ब्रह्मचारी भाई बहुत थे-ब्र. सम्भव कुमार (आचार्यरत्न बाहुबली जी), ब्र. विद्याधर जी (आचार्यश्री विद्यासागर जी), ब्र. जिनगोडा (क्षु. श्री जिनसेन भट्टारक जी), ब्र. पुखेराम (स्व. आचार्य ज्ञानभूषण जी) आदि।

'तं गोम्मटेशं पणमामि नित्यम्'

संघ में ब्र. सम्भव उत्साह का कारण थे। संघ जहां उतर जाता वहां त्यागी वृन्दों का आहार, दर्शन, भोजन आदि करके फिर आगे बढ़ते। मार्ग में हेमवर्ण वाले, पके-2 धान के खेत थे और ईख के लहलहाते खेत थे। संघ की सेवा करने वाले श्रावकों को किसान लोग उदारतापूर्वक ईख तोड़-तोड़ कर दे रहे थे। पके-2 धान के गुच्छों को लेकर आसमान में उड़ने वाले तोतों का दृश्य बड़ा ही मोहक था। आसमान का नीला रंग, तोतों का हरा रंग, धान के गुच्छों का पीला रंग ये सब रंग सजीव गीत काव्य के सदृश्य थे। भावुक सम्भव प्रकृति की इस रमणीयता में तल्लीन होकर बीच-बीच में गोम्मटेश स्तुति गाने लगते। संघ के साथ सम्भव के भावावेश से मंत्रमुग्ध हो उसकी प्रशंसा करते। चौके वालों का प्यारा सम्भव, सबके प्रति आदरभाव रखता था।

सात-आठ महीने तक पैदल चलने के बाद आचार्यश्री का संघ श्रवणबेलगोला के नजदीक आ गया। छः सातमील की दूरी से ही मंद मुस्कान वाले दयालु दिगम्बर बाहुबली सबका स्वागत करते हैं। उडपि में वेणु गोपाल ने जाति पाति के कट्टर लोगों को कारागार से मुक्त होकर भक्त कनकदास के लिए पीछे की खिड़की से दर्शन दिया था। उस भगवान को खिड़की की तलाश करनी पड़ी। परन्तु गोमटेश्वर को ऐसी कोई कठिनाई नहीं थी। वे पर्वताग्र में खड़े होकर स्मरण करने वाले अपने भक्त वृन्द की मंदस्मिती के साथ दर्शन देते हैं। छः सात मील की दूरी पर सर्वत्र जलपूर्ण तालाब हैं। उनमें विकसित पंकज पर सदा भ्रमरों का गीत गुंजायमान होता रहता है। तालाबों के पीछे हरियाली और सामने अरुण पर्ण वाली पृथ्वी शोभायमान है। चन्नराय पट्टण श्रवणबेलगोल तक का मार्ग ऐसा सुखद सुन्दर है मानो वह परमात्मा के सान्निध्य में चलने वाला रस सेतु हो।

ब्र. सम्भव कुमार बाहुबली के भव्य और दृढ़ आकार को देखकर आत्म विस्मृत हुए। भगवान बाहुबली का यह सान्निध्य नास्तिक को भी आस्तिक बनाकर भक्ति सागर में डुबो देता है। ऐसा महिमान्वित है वहां का वातावरण। साधु बनने को उत्सुक ब्र. सम्भव, इस वृहद शिल्प कला के सामने निर्निमेश नेत्रों से देखने लगा तब उसको प्रतीत हुआ। मानो गगन पथ में देवतागण अपने गर्व को छोड़कर जिनमूर्ति के दर्शन के लिए आये हों और मानवों का समूह उस परमात्मा के दर्शन के लिए भूमि से उठकर ऊपर चले आ रहे हों। देव दुन्दुभी बजने लगी। इस प्रकार ब्र. सम्भव की विनम्र भक्तिकी धारा नीरव होकर बहने लगी। उस अपूर्व दर्शन से उनका मन प्रसन्न हो गया-

सम्भव ने देखी प्रतिमा विशाल
अजीब हो गया उनका हाल
मुख से कुछ नहीं कहा गया
मन मयूर फिर नाच उठा।

सम्भव भगवान से प्रार्थना करने लगे-'हे भगवान! मैं कब बन जाऊ आप समान।'

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारूण्य भावेन रक्ष-रक्ष जिनेश्वर॥
नहि त्राता नहि त्राता नहि त्राता जगत्त्रये।
वीतरागात्परो देवो न भूतो न भविष्यति॥
याचे ऽहं याचे ऽहं जिन तव चरणा विंदयोर्भक्तिं।
याचे ऽहं याचे ऽहं पुनरपि तामेव तामेव॥

इस प्रकार सम्भव कुमार भगवान बाहुबली की भक्ति में इतना अधिक लवलीन हो गये कि उन्हें बाहर कुछ भी ध्यान नहीं रहा। भक्ति करते समय उन्हें नवनीत आनन्द की प्राप्ति हो रही थी। इस प्रकार का चिन्तन करते-करते वे ससंघ नीचे आ गए और विश्राम करने लगे।

स्वप्न दृष्टान्त से भविष्य में उज्जवलता

ब्र. सम्भव कुमार बाहुबली भगवान के अनुपम रूप का चिन्तन करते- करते निद्रादेवी की गोद में सो गया। गहरी निद्रा में उन्होंने एक अत्यन्त मनोहर स्वप्न देखा। एक भयंकर सिंह दौड़ते हुए आ रहा है। उसे देखकर सभी लोग भाग रहे हैं। सम्भव सबको भागते देखकर सबसे कहता है-"भैय्या! आप लोग क्यों घबरा रहे हैं, आप लोग मत डरो यह तिर्यन्च प्राणी हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा।" देखिए सम्भव कुमार की स्वप्न में भी आत्मनिर्भरता। क्षत्रचूडामणि में कहा है-'भविष्य में जो भी शुभाशुभ होता है उसका फल स्वप्न में पहले ही ज्ञात हो जाता है।' सम्भव भी भविष्य में एक महायोगी पुरुषोत्तम होने वाले थे। सिंहवत् तेजपुंज, कर्मों को जीतने वाले थे। इसलिए स्वप्न के द्वारा उन्हें पहले ज्ञात हो गया था।

साधु बनके विचरूं वह घड़ी कब आएगी

दूसरे दिन सम्भव आचार्यश्री के चरणों में पहुंच गये। 'आओ वत्स, निसंकोच आओ' आचार्यश्री ने कहा। उनके शब्द सुनकर शम्भु के सारे शरीर में भक्ति रस का संचार हो गया। लेकिन उसके पीछे भय मिश्रित गौरव का घेरा था। भगवान बाहुबली की मूर्ति के सामने वह जिस प्रकार मग्न होकर खड़े थे वैसे ही पू. आचार्यश्री के सामने उसका शरीर स्वयमेव नतमस्तक हुआ। गुरुदेव के चरणों को स्पर्श किया। पू. गुरुदेव के सात्विक तेज से सम्भव का और भी वैराग्य दृढ़ हो गया। सम्भव नीचे नजर किये मौन बैठे रहे।

'वत्स, किस कारण से असमय में आए हो....।' उन्होंने पूछा तथा पास बुलाकर उसके शरीर पर हाथ फेरते हुए कहा-'बहुत व्यथित दिखते हो, निर्भय होकर अपनी इच्छा प्रकट करो।' उनके हाथों के स्पर्श से शम्भू को ऐसा लगा मानो वह माता की गोद में हो। पहले का भय दूर हो गया। उसने कहा-'गुरुदेव! मेरे जीवन का ध्येय आपके समान यथाजात दिगम्बर व्रत धारण करने का है, इसलिए मैं आपके चरणों में आया हूं।' सम्भव ने अपने मन की बात बता दी। पू. आचार्यश्री ने मन में विचार किया-'जो रत्न स्वयं ही आ गया है वह श्रेष्ठ रत्न ही है। पर अभी इतनी छोटी उम्र में मुनि दीक्षा नहीं क्षुल्लक दीक्षा देकर उसकी धूलि धूसरिता दूर करनी चाहिए। उसको ठीक करने पर वह जंगम जिनमूर्ति के रूप में चिरकाल भासमान रहेगा।' उन्होंने शम्भू से कहा-'वत्स, मैं तुम्हें दीक्षा तो दूंगा परन्तु अभी तक जो भी धर्म कार्य तुम करते आए हो और संघ का भार संभालते आए हो तो दीक्षा लेने के बाद भी संभालना पड़ेगा। अतिचार रहित रहना पड़ेगा

तो हम तुम्हें शुभ मुहूर्त, शुभ नक्षत्र देखकर क्षुल्लक दीक्षा शीघ्र ही देंगे।' सम्भव ने विनम्र होकर निवेदन किया-'गुरुदेव! मेरे कर्म की श्रृंखला आप ही दूर करने के लिए मार्गदर्शक हैं।' आचार्यश्री बोले-'वत्स, समवसरण की रचना नवरत्नों से हुई है पर उसका मूल्य तभी है जबकि उसमें जिनेश्वर विराजमान हो। अतएव गुरु श्रद्धा, निष्ठा व्रत और नियमाचरण के द्वारा तपस्या करो। पहले क्षुल्लक बनो तत्पश्चात् भगवत् कृपा हो तो दिगम्बर मुनि बनो।'

भगवान बाहुबली का लघुनन्दन सन् 1967

फाल्गुन शुक्ल त्रयोदशी सन् 1967 में भगवान बाहुबली के प्रांगण में बहुत विशाल जन समुदाय के समक्ष ब्र. सम्भव कुमार की चिर प्रतीक्षित संघर्ष भरी क्षुल्लक दीक्षा का कार्यक्रम सम्पन्न हो गया। भगवान के समान अत्यन्त धैर्यवान, गम्भीर, बलवान आदि गुणों से सम्पन्न होने के कारण सम्भव कानाम 'बाहुबली' रख दिया। जयघोष से गगन गूंजने लगा। मोह पर विजय, भोग परत्याग की विजय-लोगों के हर्ष का बांध टूट-टूट कर पड़ रहा था। गोमटेश्वर में फिर से मंगलतूर्य बज उठे। बाजे गाजे, गीत शुरू हुए। लेकिन क्षुल्लक बाहुबली जी अब सुनने को खाली नहीं थे। वे सोच रहे थे-'मेरी दीक्षा केवल मनोरंजन की वस्तु नहीं होनी चाहिए। आत्मोद्धार का मार्गदर्शक होना चाहिए। तपस्या के बिना महाव्रति बनना संभव नहीं हो सकता। गोमटेश्वर के समान मुझमें भी आत्मबल आना चाहिए।' पू. गुरुदेव ने मंत्रोपदेश देते हुए कहा-'वत्स, तपस्या करते समय प्रारम्भ में मन उचट जाएगा। कुछ तत्वज्ञान हो जाए तो आत्मानुसंधान की व्यग्रता बढ़ेगी। जब तक देह से ममता रहेगी तब तक भवरोग अधिक होता जायेगा। देह को शत्रु समझे तो व्रत ठीक से चल सकेगा। विषय सुख को कार्कीटक विष समझने से तपस्या में सिद्धि मिलेगी। अन्यथा दुःख से विमुक्ति नहीं मिलेगी तब तक मन को शान्ति प्राप्त नहीं होगी। तुम आत्मरक्षक ही नहीं कलात्म रक्षक भी होंगे।'

बाहुबली की वृहद् मूर्ति को अपने हृदय मंदिर में समाहित करके उसी का ध्यान करो। इस साधना के बाद परमात्मा के गुणों का चिन्तवन करो। अन्त में परमात्मा और आत्मा को एक मानकर निर्भेद-भक्ति की साधना करो।

'दृष्टि नासिकाग्र में स्थित हो, मन को ललाट पर स्थिर रखो। अन्य इन्द्रियों को कछुएँ की भांति स्तब्ध करो। धीरे-2 सांस लो। पल्यंकासन, चन्द्रासन, भद्रासन आदि में अपने अनुकूल आसन लगाकर तपस्या करो। नदी तट, तालाब का किनारा, समुद्रतट, जिनालय, अरण्य गुफायें और श्मशान भूमि तपस्या के लिए अनुकूल स्थान है।' गुरुदेव ने समझाया।

क्षुल्लक श्री बाहुबली उसदिन उपवास कर भद्रबाहु गुफामें तपस्या के लिए बैठे। दक्षिणमें आए अन्तिम श्रुतकेवली भद्रबाहु ने चन्द्रगिरि की एक गुफा में बैठकर तपस्या की थी। क्षु. बाहुबली महाराज जी ने भी तपस्या के लिए वही स्थान चुना। वहां वे उत्तराभिमुख हो पल्यंकासन लगाकर बैठे। उच्च स्वर में पंच नमस्कार महामंत्र का उच्चारण करने लगे-'णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।' मंत्रघोष से गुफा गूंज उठी।

भद्रबाहु गुफा में क्षु. बाहुबली जीका योगाभ्यास तीव्र गति से चल रहा था क्रमशः वे आध्यात्मिक राज्य के सोपानों पर चढ़ते गए। जब वे मन को स्थिर कर देते तब प्रकाश भूयिष्ठ हो वह रोमांचित हो आता। श्रीजी अन्तर्मुख हो ध्यान मग्न बैठे थे। वे बाह्य अंगों को भूलकर आत्म सुख में लीन थे। वर्षा की बूंदाबूंदी के समय जैसे लोग घर में सानन्द रहते हैं। वैसे ही क्षु. बाहुबली जी लौकिकता से दूर रागद्वेष से विमुक्त होकर आत्मज्ञान लोक में विहार करने लगे। वे भेदविज्ञान की हथौड़ी से देह का भेद कर मन मंदिर में विमलात्मा की स्थापना कर ध्यानमग्न बैठे थे। अब उन्हें शरीर का मोह नहीं रहा। आत्मसाधना के साथ-साथ ही गुरु सेवा, संघस्थ त्यागियों की सेवा करने लगे।

श्रवणबेलगोला के गोम्मटेश्वर अलविदा-अलविदा

दीक्षा के बाद आचार्यश्री ने विहार का प्रस्ताव किया। जल फिर बरसने लगा। बहता पानी और रमता जोगी कभी गंदले नहीं होते। पूर्ण स्वच्छ बने रहते हैं। श्रवणबेलगोला की जनता उदास खड़ी थी। क्षु. बाहुबली ने संयम की पगडण्डी पर अपने पग डाल दिए। वह प्रस्थान के लिए आगे बढ़ आए। हे श्रवणबेलगोला के गोम्मटेश्वर अलविदा-अलविदा। जन मानुष का समूह आचार्यश्री के साथ-साथ चल पड़ा-

'विहार समय जो भी सन्तों के,
साथ में उनके जाते हैं।
श्रद्धा भक्ति कर सन्तों की
अपना भाग्य सराहते हैं।'

अतिशय क्षेत्र स्तवनिधि में पहला चातुर्मास 1967

क्षुल्लक श्री बाहुबली महाराज जी का पहला चातुर्मास पू. आचार्यश्री के सान्निध्य में 1967 में स्तवनिधि क्षेत्र पर सम्पन्न हुआ था। जैन साधु के लिए आचार और विचार दोनों ही समान रूप से महत्वपूर्ण होते हैं। पूज्य क्षुल्लक जी नित्य प्रातः 3 बजे उठते। साधु आचार का परिपालन, स्वाध्याय भक्ति, गुरुसेवा, आहार, विहार और पठन पाठन का क्रम चलता। जैन ग्रन्थों का अप्रमत अवलोकन तो आपके लिए अनिवार्य था ही। किन्तु हर पल वाचन, मनन, चिन्तन करते थे। वस्तुतः पू. बाहुबली जी महाराज की गुरुभक्ति अप्रमित, अद्वितीय थी। गुरु सेवा में रत रहते हुए भी आपने खूब अध्ययन किया।

चातुर्मास में स्तवनिधि के प्राचीन जिनमन्दिर का जीर्णोद्धार कराया। चातुर्मास के प्रारम्भ में ही वर्षायोग स्थापना के समय कोथली तक जाने की मर्यादा थी। क्योंकि कोथली एवं कुप्पन वाड़ी इन दोनों गांव के बीचमें जिन मन्दिर निर्माण करने का विचार था। उसी निमित्त से प्रतिदिन आचार्यश्री एवं क्षु. बाहुबली महाराज सुबह 7 बजे स्तवनिधि से निकलकर कोथली में 9:30 बजे पहुंचकर आहार-सामायिक करके नूतन क्षेत्र निर्मिती के स्थान पर शाम को 4 बजे तक रहते थे। वहां से फिर स्तवनिधि के लिए प्रस्थान करते। पूरे चातुर्मास में गुरु शिष्य का ऐसा ही क्रम चलता रहा। क्षु. बाहुबली जी ने कोथली क्षेत्र में जिन मंदिर के निर्माण का कार्य सामने रहकर पूर्ण किया। विशाल जिन मंदिर बन गया। गगन चुम्बी उतुंग शिखर, घनघोर बादलों के बीचमें पूर्णिमा के चन्द्रवत, वर्तमान में भी शोभायमान हो रहा है। भ. आदिनाथ की विशाल शुभ्र मूर्ति की पू. आचार्यश्री के अधिनेतृत्व में एवं क्षु. बाहुबली जी के मार्गदर्शन से पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। वहीं गरीब अनाथ बच्चों के लिए गुरुकुल का निर्माण किया गया एवं त्यागियों के आहारदान के लिए अनेकप्रकार की सुविधाएं की गईं। उसी क्षेत्र में लौकिक ज्ञान के लिए एक हाई स्कूल खुलवाया। जो अभी भी यहाँ देशभूषण हाई स्कूल के नाम से प्रख्यात है। आसपास के देहात (गांव) के बच्चे इसी स्कूल में पढ़ते हैं।

कोथली श्री शान्तिगिरि क्षेत्र का उद्गम

एक बार गुरु-शिष्य दोनों जंगल जा रहे थे। अचानक क्षु. महाराज जी की दृष्टि सहसा सामने खड़े विशाल पर्वत पर जा टिकी और उनके मन में एक सुन्दर क्षेत्र निर्मित करने की कल्पना जाग्रत हुई। सच भी है-'जिसका भाग्य प्रबल होता है उसका मन भी उन्नत होता है।' क्षु. श्री ने आचार्य श्री के चरणों में नम्रिभूत होकर अपनी कल्पना का निवेदन

किया। पूज्य आचार्यश्री ने उनकी कल्पना पर विचार किया फिर बोले-'बाहुबली! तुमने जो सोचा वह कल्पना अतिउत्तम है। लेकिन इसको पूर्ण करने का भार तुम्हें ही सम्हालना पड़ेगा। तो मुझे तुम्हारी बात मंजूर है।' उसी समय से वह शुभकार्य प्रारम्भ हो गया। इस कार्य के निमित्त पू. आचार्य श्री क्षु. बाहुबली महाराज जी को दिल्ली, बम्बई, जयपुर, कलकत्ता वगैरह बड़े-बड़े शहरों में भेजते थे। प्रवास करते समय आपके कभी-2 दो-तीन उपवास तो सहज हो जाते थे। कभी-2 बम्बई में बी.बी. पाटील, जयगोंडा पाटील, धन्यकुमार मेलवंके (घाट कोपर), गौतमचन्द्र जैन भिवंडी, हसमुखलाल जैन बोरीवली बम्बई, धरमु कलमणी बेलगांव आदि के यहां प्रवास के समय आपका आहार होता था। पू. आचार्यश्री देशभूषण महाराज जी के मार्गदर्शन से एवं क्षु. बाहुबली महाराज जी के कठिन परिश्रम से कोथली क्षेत्र निर्मित हुआ। इसी बीच साडवली में नूतन जिर्नमंदिर निर्माण करके पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करवायी। सभी को वीतरागी देव का दर्शन होने लगा। धन्य-धन्य बाहुबली महाराज। साडवली में एक ही आवाज गूंज उठी-

'जब तक सूरज चांद रहेगा,
बाहुबली महाराज का नाम रहेगा।'

आधुनिक रेवती राणी

साडवली की पंचकल्याण प्रतिष्ठा करके आपने कोल्हापुर जिले में शिरोल तहसील में 'औरवाड' एक छोटा सा गांव है वहां मुस्लिम समाज अधिक है तथा जैन समाज के मात्र 21 घर हैं। ऐसे गांव में आ गए। वहां 'सुशिला मेलवंके' अत्यन्त गुरुभक्ता थी। उनको पू. आचार्य देशभूषण जी 'आधुनिक रेवती राणी' कहते थे। क्योंकि उनमें गाढ़ सम्यक्त्व था एवं गुरुभक्ति अपार थी।

एक दिन आप उनके घर आहार को गए। चौके में एक कील पर मूंगा की माला लटक रही थी। सहसा आपकी नजर पड़ गई और मन में विचार आया ऐसी माला से जाप करना चाहिए। पर उन्होंने कुछ कहा नहीं। दूसरे दिन पिल्लम्मा (सुशिला मां) मूंगा की माला लेकर आयी और बोली-महाराज जी! ये माला ले लो। मेरे सपने में किसी ने आकर बताया बाहुबली जी महाराज को यह माला चाहिए। उनको क्यों नहीं दी।' इसलिए मैं आपको माला देने आई हूं। आप इस माला से महामंत्र की जाप करें यह मेरी भावना है। वह आश्चर्यान्वित हो गए कल एक विचार माला के बारे में आया और आज मेरे हाथ में माला आ गई।

औरवाड में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा

श्री बाबुराव आगरे (गुरुभक्त) औरवाड में एक श्रावक था जिसमें श्रावकोचित एक भी गुण नहीं वह रातदिन शराब के नशे में मस्त रहता था। गुंडगिरी भी बहुत करता था। औरवाड गांव नृसिंहवाड़ी के बिल्कुल पास में है। वहां आचार्य महाराज जी का संघ आ गया। वह गृहस्थ देखकर अचंभित हो गया। एक दिन प्रवचन सुनने आया। उस दिन का प्रवचन बड़ा मार्मिक था-अहिंसा के बारे में आपने ऐसा बताया कि-बाबुराव आगरे गद्‌गद् हो गया-किसी को कष्ट नहीं देना, यह अहिंसा का एक पहलू है। दूसरों की सेवा करना, दूसरों को उपदेश देकर मिथ्यात्व दूर करना सप्त व्यसनों से दूर करना, गरीबों का दुःख दूर करना, तड़पते हुए लोगों के आंसू पोंछना, उन्हें सही मार्ग में लाना यह अहिंसा का दूसरा पहलू है। यह सुनकर वह आपके चरणों में आकर साष्टांग नमस्कार करके अपने सप्त व्यसनों को त्याग कर वह सच्चा गुरुभक्त बन गया। वहां के जिन मंदिर का जीर्णोद्धार कर बाबुराव आगरे इन्होंने सौधर्म इन्द्र का पद पा लिया। पंचकल्याणक पूजा बड़े धूमधाम से हो गई। अब वह गृहस्थ इतना अनन्य भक्त बन गया कि उनका पूरा परिवार गुरु के चरणों में समर्पित है। इतना

ही नहीं उनके दामाद उद्योगपति श्री जयपाल दत्तु चिंचवाड़े सांगली इनकी तो पू. बाहुबली महाराज पर इतनी श्रद्धा है कि अगर एक महीना दर्शन नहीं मिले तो उनकी आत्मा रोने लगती है। आचार्य श्री के आशीर्वाद से उनका पूरा परिवार सन्मार्ग में लग गया है और धन सम्पत्ति से भी सुखी है।

श्री त्रिभुवनलाल जिन मंदिर का निर्माण-नृसिंहवाड़ी

नृसिंह वाड़ी बहुत छोटा गांव है। जहां ब्राह्मण समाज अधिक है और दत्त मंदिर से वह जग प्रसिद्ध गांव बन गया था। वहां जैन समाज के मात्र 9 घर थे। एक जिन मंदिर था लेकिन कुछ व्यवस्था नहीं थी। जो 9 घर थे वे भी दत्त के अनुयायीनुसार चल रहे थे। उन पर पूरे ब्राह्मणों के संस्कार थे। अनुजे, रूकड़े, चौगुले बरगाले वगैरह महाराज जी के पास आने लगे। जिन मन्दिर में तो कोई जाता नहीं था। कुरुंदवाड के नेमा पंडित आकर भगवान के ऊपर पानी डालकर जाते थे। न मंदिर में साफ सफाई करते थे और न ही भगवान को स्वच्छ रखते थे। मंदिर के सामने कुत्ते गंदा करके जाते थे उसको साफ करने वाला कोई नहीं था। मंदिर जर्जर हालत में था। उस समय पू. बाहुबली महाराज ने रूकड़े, अनुजे, चौगुले आदि को बुलाकर जिन धर्म की तथा जिन मंदिर की दशा बताई। वो लोग बोले-'महाराज जी हम केवल 9 लोग हैं। हम क्या कर सकते हैं। महाराज जी बोले-सब कर सकते हो, अगर भाव हों तो सब कुछ हो सकता है। एक जगह ले लो और वहां नया मंदिर बनवा लेना। पास में ही कुरूंदवाड़ नगर है उससे कुछ मदद ले लेना।

कुरूंदवाड़ के नगराध्यक्ष गावपाटील श्री रावसाहेब पाटील एवं उनके सहकारियों को बुलवाया उनसे विचार विमर्श हुआ और एक रोड पर ब्राह्मण पुजारी की जगह थी वह लेने का निश्चय किया गया और जगह भी ले ली।

भव्य बन्धुओं! कृष्णा पंचगंगा का संगम स्थान एक प्रेक्षणीय स्थान ऐसी जगह में त्रिभुवन लाल जिन मंदिर का निर्माण हो गया। *धन्य है त्यागमूर्ति बाहुबली जी की जनमानस में त्यागमयी भावना को जागृत करने की अपूर्व अर्न्तदृष्टि।*

वे सचमुच इस युग के शिव थे। जिन्होंने कष्टों का विषपान किया पर अपने कष्टों को महसूस नहीं होने दिया।

सम्भव बन गए बाहुबली
चर्चा होती गली-गली
जहां-2 प्रवचन सुनाते
अपनी छाप छोड़कर जाते
मंदिरों का निर्माण कराते
जैन धर्म को आगे बढ़ाते।

हमने प्रत्येक बार कुछ न कुछ नयापन तथा ताजापन देखा। उस निरागस सम्पूर्ण परिवेश में। वे हमेशा कहते हैं-'हम निर्ग्रन्थ रूप के साधक हैं मन की ग्रन्थियों का भेदन करने के लिए हम साधनरत हैं। हमारे रास्ते में कई बाधाएं आती हैं। जैसे-2 इन बाधाओं पर विजय प्राप्त की जाती है वैसे-वैसे मन की गांठें खुलती जाती हैं। अतः ये विषमता हमारे लिए सुख के कारण हैं। ये अभिशाप नहीं वरदान है इन्हें अपनाकर हमें उदास नहीं प्रफुल्ल होना है और यह सब कुछ आपने करके दिखाया।

बेलगांव चातुर्मास 1968

इतिहास का निर्माण वर्तमान के कार्यों से होता है ये जिनालय आदि इतिहास की पृष्ठभूमि का निर्माण करेंगे।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग भवेत॥

संसार के समस्त प्राणियों की निरोगता एवं कल्याण भावना से ओत-प्रोत जिनका जीवन है। बेलगांव में ससंघ चातुर्मास किया। वहां रहकर कोथली का विशाल नूतन जिन मंदिर, गुरुकुल, हाई स्कूल, प्रेस, शास्त्र-ग्रन्थों का प्रकाशन आदि करके वहां का स्थान उन्नत बना दिया। सच ही कहा गया है-

'चातुर्मास जिस नगर में
ऋषि मुनियों के होते हैं।
पावन हो जाती वह नगरी
भूत प्रेत नहीं रहते हैं॥'

कोल्हापुर चातुर्मास सन् 1969

पू. आचार्यश्री के आशीर्वाद से आपने इतने बड़े-2 कार्य करवाए तथा स्वयं भी किए। लेकिन अपने नाम के लिए या ख्याति, लाभ प्रतिष्ठा के लिए कभी भी अनुमोदना नहीं दी। आपका तो केवल इतना ही ध्येय था कि सदैव धार्मिक क्षेत्रों की वृद्धि हो। इसको पूरा करने के लिए आप सदैव आगे रहे।

कोल्हापुर (शाहुपुरी) में श्री 1008 नेमिनाथ जिन मंदिर में गोपालदास फन्सरी ने चांदी का रथ बनवाया। जो प्रत्येक पंचकल्याण प्रतिष्ठा महोत्सव में 'श्री विहार' के समय ले जाते हैं। क्षुल्लक अवस्था में होते हुए भी आपने अपने जीवन में बहुत ऐसे विशाल कार्य करवाए।

कोथली चातुर्मास सन् 1970

आपके सिर पर फिर नया काम आ गया। जयपुर, दिल्ली, कलकत्ता से मूर्ति मंगवाना। नयन रम्य पर्वत पर 21 फुट की शान्तिनाथ भगवान की मूर्ति, 19 फुट की श्री चन्द्रप्रभु एवं भगवान महावीर की मूर्ति जयपुर से मंगवाई। विदेह क्षेत्रस्थ बीस तीर्थंकरों की प्रतिमा लाए। उसी के साथ रत्न, पन्ना, वैडूर्य आदि की अनेक मूर्तियाँ मंगवाई। सब प्रकार की तैयारी उन्होंने स्वयं की। सामने खड़ा हुआ पर्वत श्री जी को देखकर हंस रहा था। क्योंकि उनका रूप बदलने वाला था उस पर्वत के प्रत्येक पत्थरों को पू० बाहुबली जी का स्पर्श होने वाला था।

सन्तों के जीवन से हम सबर ले। सन्त अपने ज्ञान को बांटता है अपने अनुभवों को बांटते हैं और अपनी अन्तिम सांस तक जनता की सेवा करते है। महापुरूष के संसर्ग में आने से उनके बतलाए हुए मार्ग पर चलने से अपनी आत्मिक उन्नति होती है। सन्त तो रोग की दवा बतलाने वाले है पर दवा को खाने और परहेज रखने का काम तो आपका है। सन्तों की वाणी और उपदेश राम बाण की तरह होते है परन्तु उस औषधि को देखकर हजम तो अपने को करना है।

जो महान आत्माएं होती है
वो ज्ञान सुधा बरसाती है
उनकी वाणी इन्सा को
मुक्ति की राह दिखाती है।

सच है गहनों को तिजोरी में रखने से श्रृंगार नहीं होता। श्रृंगार के लिए तो उन्हें धारण करना पड़ता है। पुस्तकों में लिखे महावाक्यों को पढ़ने मात्र से उद्धार नहीं होता वरन् उनको आत्म सात करना पड़ता है। पूज्य बाहुबली जी बोलते हैं-'मेरे पास तो सन्तो की वाणी रूपी प्याऊ है। गिलास भर-भर कर पानी पीना और पिलाना मेरा काम है। उसे पीकर हम सब अपना जीवन सुधारे। आध्यात्म को अपनावे और मुक्ति के मार्ग पर बढ़ते चलें।'

महाराष्ट्र में रत्नागिरी जिले में 'देवरूख' खारेपाटन तरफ विहार हुआ। वहां तो जैनियों को यह मालूम भी नहीं था कि हम जैन है। क्षु० बाहुबली जी ने वहां जाकर देखा सब जगह मिथ्यात्व का साम्राज्य फैला था जिनमंदिर नहीं था। इसलिए वहां के लोग जैन भाई भी अजैनों जैसा व्यवहार कर रहे थे। मिथ्यात्व का साम्राज्य देखकर उनको बड़ा दुख हुआ। पू. गुरूदेव आचार्य श्री की आज्ञा लेकर अपने ईष्ट देवता वीतराग भगवान का स्वरूप बताकर-मैं कौन हूं।' इसका परिचय कराया।

पहनने का वस्त्र यदि मैला हो जाए तो आप ले कर क्या करते हैं? साबुन और पानी से धोकर स्वच्छ बनाते हैं। तत्व ज्ञान भेदविज्ञान भी ऐसा ही साबुन है जो समता रूपी जल के साथ आध्यात्मिक शुद्धि में उपयोगी होता है। अपनी मधुर वाणी से लोगों के मन के मिथ्यात्व रूपी भूत को भगा दिया। जन-जन में आपका नाम गूंजने लगा। अहिंसा के महान पुजारी बन गए। वहां मंदिर नहीं था। इसलिए उपदेश देकर लोगों की सोई हुई आत्मा को उन्होंने जगाया। तथा मंदिर का भी निर्माण करवाया।

गुलाबी नगरी जयपुर सन् 1971

आचार्य महाराज जी का संघ विहार करते-करते जयपुर आ गया। जयपुर को पिंक सिटी या गुलाबी नगर भी कहते है। एक समय यहां जैनियों की संख्या सबसे अधिक थी। एक समान गुलाबी पत्थरों के उन्नत मकान, बाजार, दुकानें होने से यह गुलाबी नगरी कहलाती है। यहां दिगम्बर जैन मंदिरों की संख्या लगभग 150 व 100 चैत्यालय है। जयपुर की चौबीसी भारत में प्रसिद्ध है। कालडेरा का महावीर भगवान का मंदिर व सोनिया के पार्श्वनाथ जी का मंदिर विशेष चर्चित है।

आचार्य श्री संघ सहित जब नगर में आ गए उस समय के स्वागत का वर्णन मैं अपने जड़ पुद्गल वर्गणा से क्या लिख सकती हूं। क्रमानुसार स्थापना विधि सम्पन्न हुई। बस आचार्य श्री की दुकान चालू हो गयी ग्राहकों की कोई कमी नहीं है इनके लिए।

जिस दिन आचार्य श्री का मंगल प्रवेश नगर में हुआ। उस दिन पू० बाहुबली महाराज श्री ने अपने प्रवचन में बताया था-

1. *दुकान पर बिना कीमत के माल बिकता है।*
2. *माल सस्ता होगा, सुन्दर और टिकाऊ होगा।*
3. *माल ऐसे मिलेगा, जब चाहो तब मिलेगा, दिन में मिलेगा, रात में मिलेगें। सुबह मिलेगा, शाम को मिलेगा जब चाहो तब मिलेगा।*

ग्राहकी चालू हो गई, चातुर्मास मे विविध कार्यक्रम तथा सिद्धचक्र विधान सम्पन्न हुआ। आचार्य श्री अपने शिष्य को लेकर खानिया में चूलगिरी पर जाते थे। जहां आचार्य श्री की प्रेरणा से एवं पू० बाहुबली के मार्ग दर्शन क्षेत्र बन गया

था। पर्वत की शोभा अतिरम्य है। पर्वत पर विशाल महावीर जिनबिम्ब, यक्ष, यक्षणियों सहित चौबीसी प्रतिमाएं, चरण चिन्ह आदि व आदिनाथ प्रभु की विशाल प्रतिमा आदि वन्दनीय है।

परम पावन मंगल भूमि सांगानेर

चातुर्मास-वर्षायोग समाप्त हुआ और फिर संघ का विहार शुरू हो गया। पू० बाहुबली जी तो छाया के समान पू० आचार्य श्री के साथ रहते थे। जयपुर से विहार कर आचार्य श्री संघ सहित परम पावन मंगल भूमि सांगानेर पधारे।

वहां की विषमता-नीचे तलघर में छोटी-छोटी रत्नमाणिक, पन्ना वगैरह की जिन प्रतिमाएं है वहां जाकर हर कोई दर्शन लाभ नहीं ले सकता है। केवल दिगम्बर आचार्य, त्यागी मुनि ही वहां से उन प्रतिमाओं को ऊपर ला सकते है।

पू. बाहुबली महाराज में बड़े उत्साह का संचार हुआ। तब एक बार नीचे तलघर में जाकर जिन प्रतिमाओं का दर्शन करूं। और ऐसा हो भी गया पू० आचार्य श्री अपने लाडले शिष्य क्षु० बाहुबली जी के साथ नीचे तलघर में पहुंचे और जिन प्रतिमाओं को ऊपर ले आए। पांच दिन रखकर महामस्तकाभिषेक, महाशान्ति मंत्र करके फिर जहां की तहां रख आए।

सांगानेर में सबसे पहले प० पू० आचार्य शान्तिसागर जी आए थे। और उन्हीं के द्वारा सबसे पहले जैन प्रतिमाएं निकाली गई थी। उसके बाद आचार्य देशभूषण जी एवं पू० बाहुबली जी ने निकाली। उसके बाद आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज ने निकाली। पहले सांगानेर की इतनी प्रसिध्दि नहीं थी जो अतिशयता पहले हो चुकी थी वहीं आज भी है। बस फर्क इतना है कि अब उसकी प्रसिध्दि बहुत हो चुकी है।

श्री महावीर क्षेत्र के दर्शन

आचार्यश्री के संघ का वहां से विहार हो गया और पद्मपुरा होते हुए महावीर जी आए। महावीर जी का मेला प्रसिद्ध है। जैन-अजैन सभी लोग आकर प्रभू महावीर की पूजा, भक्ति, विशेष रूप से व्यक्त करते है। भगवान महावीर की इस रथयात्रा की शोभा देखने दूर-दूर से लोग आते है। यह मेला चैत्र सुदी तेरस से वैशाख वदी दूज तक चलता है। आचार्य महाराज ससंघ प्रतिदिन मूल नायक भ. महावीर का अभिषेक देखते थे।

भारत की राजधानी दिल्ली में-सन् 1972

भगवान महावीर का 25सौवां निर्वाण महोत्सव (संसद भवन में)

आचार्य श्री का विहार शुरू हो गया। दिल्ली के श्रावक नारियल लेकर गुरू चरणों में आ गए। श्रीफल भेंट करके प्रार्थना की-'हम आपका चातुर्मास दिल्ली में करना चाहते है। कृपया स्वीकृति दीजिए।'

आचार्य श्री मुस्कराएं-'दिल्ली वालों की बहुत इच्छा थी और उनकी भावना को जानकर ही हमने दिल्ली का निर्णय लिया। इस वर्ष हमारा चातुर्मास दिल्ली में ही होगा।' आचार्य श्री का आशीर्वाद मिलने से दिल्ली के श्रावक फूले नहीं समाए।

दिल्ली का चातुर्मास स्वर्णाक्षरों में अंकित करने के समान हो गया। जब चातुर्मास के लिए आचार्य श्री ने ससंघ राजधानी में प्रवेश किया तो लोगों के रोम-रोम से आनन्द टपकने लगा। लोगों ने गौरवपूर्ण जुलूस द्वारा आचार्य श्री के संघ

के प्रति भक्ति व्यक्त की। बड़े-बड़े प्रतिष्ठित तथा विचारशाली नागरिक तथा उच्च अधिकारी लोग आचार्य श्री के दर्शनार्थ आने लगे। तथा वो आचार्य श्री से अनेकों प्रश्न करते तथा समाधान प्राप्त कर हर्षित होते थे।

आचार्य श्री के शब्दों का बड़ा प्रभाव था। तपस्या से वाणी का प्रभाव बहुत अधिक हो जाता है। जैन तथा अजैन सैकड़ों, हजारों लोगों ने शराब तथा मांस खाने का त्याग कर दिया तथा कईयों ने व्रत ले लिये। अग्नि में संतप्त किया गया स्वर्ण विशेष दीप्तिवान होता है। उसी प्रकार तपाग्नि द्वारा जीवन, वाणी, विचार तेजोमय तथा दिव्यतापूर्ण होते हैं।

युवक सम्राट

ऐसे समय में भगवान महावीर का 2500 वाँ निर्वाण महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाने का निश्चय किया गया। भगवान महावीर के मूलभूत सिद्धान्त सारे देश में प्रसिद्ध करने के भाव उमड़ पड़े क्योंकि पंचम काल में हिंसा का तांडव नृत्य सब जगह हो रहा था। लेकिन इस अहिंसामयी देश को कसाई वालों ने बर्बाद कर दिया। भारत की इस पवित्र धरती पर आज हजारों की संख्या में कसाईखाने है देश के सभी महानगरों में निर्यातोन्मुख कसाईखाने खुल गए है। उनको बन्द करने के लिए पू० बाहुबली जी महाराज ने नवयुवको को बुला कर इकट्ठा किया और सबके हाथ में अहिंसा की ध्वजा दी जिससे अहिंसा का नारा राजधानी में गूंजने लगा। शुरू-शुरू में संख्या कम थी लेकिन जब सब जगह ध्वजा फहराने लगी तब भीड़ भी बहुत हो गई। हाई स्कूल एंव कॉलेज के सब तरूण बच्चों का इतना उत्साह बढ़ गया कि दिल्ली में एक विशाल जुलूस निकाला गया हर बच्चे के मुंह पर पू० बाहुबली महाराज का नाम गूंजने लगा और वो 'युवक सम्राट' पद से विभूषित हो गए।

संसद भवन में

उसी समय आचार्य श्री ने 2500 वाँ भगवान महावीर का निर्वाण महोत्सव मनाने का अलग से प्रयास जारी किया। जैन धर्म के कुछ प्रतिष्ठित लोगों को बुलाकर इस बार निर्वाण महोत्सव संसद भवन में मनाने का विचार बताया। उस समय प्रधानमंत्री श्रीमती इन्द्रा गांधी थी उनको पू० आचार्य श्री की बात बहुत अच्छी लगी। उन्होनें सभी नेताओं को बुलाकर भगवान महावीर का निर्वाण महोत्सव संसद भवन में मनाने का निश्चय किया।

प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने 14/9/72 में संसद भवन में प० पू० आचार्य देशभूषण जी, पू० बाहुबली महाराज जी, श्वेताम्बर गुरू, प्रतिष्ठित श्रावक, नेता वर्ग आदि 57 लोगों को आमन्त्रित किया और भगवान महावीर स्वामी का 2500वाँ निर्वाण महोत्सव सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य श्री एवं पू० बाहुबली जी ने धार्मिक उपदेश दिया।

विश्वधर्म की जननी अहिंसा है। महाविनाश की आशंका से भयाक्रान्त विश्व को अहिंसा ही बचा सकती है। आततायी हिंसा का सामना करने में सिर्फ अहिंसा ही समर्थ है। हिंसा, अनास्था, अविवेक और असहिष्णुता की परिणति है। जबकि अहिंसा का मूलमंत्र आस्था, विवेक और समता से उत्पन्न होता है। विश्व में फैले विनाश के घटा-टोप के बीच सिर्फ अहिंसा की जीवन पद्धति ही मानव समाज को महाविनाश से बचा सकती है। अहिंसा का अर्थ भीरूता नहीं वीरता है।

भगवान महावीर की अहिंसा क्षत्रिय की अहिंसा है किसी कायर की नहीं। आज देश में जो हिंसा का दौर शुरू हुआ है वह बड़ा ही खतरनाक संकेत है। मांसाहार व नशे की प्रवृतियां जिस गति से बढ़ रही है। वह अमानवता का प्रतीक है। मांसाहार घोर पाप है। क्रूर कर्म है। इससे बचें। यह वो देश है जहां राजा शिवि ने एक पक्षी को बचाने के लिए अपने

प्राणों को अर्पण कर दिया था और देश के शासक और नागरिक आज अपनी उदरपूर्ति व क्षणिक स्वाद की खातिर निरपराध बेजुबान-मासूम-प्राणियों की हत्या करके उनका मांस खा रहे हैं यह दुर्भाग्य पूर्ण व शर्मनाक बात है। मनुष्य जन्मतः शाकाहारी है।

दुनिया का पुराने से पुराना धर्मशास्त्र कहता है कि अहिंसा, करुणा और दया से बढ़कर अन्य कोई धर्म नहीं है। अहिंसा विश्व का सर्वोपरि धर्म है। जैन कोई जाति नहीं हैं जैन एक आचरण है एक जीवन दर्शन है, अहिंसा पर विश्वास रखने वाला हर व्यक्ति जैन है।

अहिंसा केवल एक व्रत नहीं, वह एक समग्र जीवन दर्शन हैं। हमारी संस्कृति अहिंसा, त्याग और सत्य की संस्कृति है। हिंसा पर न तो हमारा विश्वास कभी था और न है। भगवान महावीर के अहिंसा सिद्धान्त के आधार से ही महात्मा गांधी ने देश को आजाद कराया। सिर्फ जैन धर्म का ही नहीं विश्वधर्म का मूलभूत आधार ही अहिंसा परमो धर्म है। मन, वचन, काय से और कृत-कारित-अनुमोदना से भी प्राणी को कष्ट न हो यह जैन धर्म का मूलमंत्र है।

विनय मोक्ष का महाद्वार

पू० बाहुबली का विनय गुण चन्द्रमा की चांदनी के समान उन्हें सदैव सुशोभित करता था। उनमें एक विशेष आदत थी कि वे बड़े-बड़े कार्य पूरे कर लेते थे। लेकिन मेरी पूजा, ख्याति हो इस भावना से वे सदैव दूर रहते थे। केवल इन कार्यों में ही नहीं बल्कि आहार वगैरह के लिए जाते समय भी संघस्थ सभी त्यागियों के निकलने के बाद ही खुद निकलते थे। लेकिन उनका पुण्य ही इतना प्रबल था कि सभी श्रावक यही चाहते थे कि मेरे घर पू० बाहुबली जी का एक बार आहार अवश्य हो जाए। इसलिए चौके वाले श्रावक 'महाराज जी' हमारा चौका खाली है, हमारा चौका खाली है' ऐसी प्रार्थना करके उन्हें अपने घर आहारार्थ ले जाते थे। प्रत्येक स्थान पर वे सहज ही आदर के पात्र बन जाते थे। वास्तव में उनकी साधना उज्जवल जीवन की द्योतक है।

सर्पराज से मित्रता

सन् 1972 में प.पू. भारत गौरव आचार्यरत्न देशभूषण जी महाराज अपने विशाल संघ सहित भारत की राजधानी दिल्ली में चातुर्मास कर रहे थे। तब प.पू. आचार्यरत्न बाहुबली जी महाराज क्षुल्लक अवस्था में थे।

पू. आचार्यश्री देशभूषण जी महाराज एक दिन दरियागंज के मन्दिरजी में दर्शन हेतु चले गए। क्षुल्लक श्री बाहुबली जी महाराज आचार्यश्री के साथ नहीं गए क्योंकि वे अपने निवास स्थान में ही स्वाध्याय कर रहे थे। उसी समय एक भयंकर सर्प अन्दर कमरे में आ गया और सीधे जिनवाणी के ऊपर आकर फन फैलाकर बैठ गया। तब बाहुबली जी महाराज ने सर्प से कहा-'हे सर्पराज! जिनवाणी माता के ऊपर बैठना आपको शोभा नहीं देता, यह आपका स्थान नहीं है।' तब सर्प ग्रन्थों के ऊपर से नीचे उतर कर चौकी पर बैठ गया। फिर उनसे महाराज जी बोले-'सर्पराज, इस चौकी पर जिनवाणी विराजमान करते हैं, आपका यह भी स्थान नहीं है और आपको सामने बैठे हुए कोई देखेगा तो डर जायेगा।' तब सर्प चौकी से उतर कर दरवाजे के पीछे एक कोने में बैठ गया। तब महाराज जी ने उससे कहा-'हां, बिल्कुल ठीक जगह पर बैठ गये। अब आपको कोई कुछ नहीं कहेगा, आराम से बैठ जाइए।'

थोड़ी ही देर में आचार्य श्री दर्शन करके पधारे और आते ही अपने शिष्य बाहुबली जी से कहा-'क्यों बाहुबली, आपके पास देव आया था ना? चला गया क्या?' ऐसा बोलते ही सर्प वहां से झट से निकल गया।

पाठकगण, भयंकर नागराज को देखकर कौन नहीं डरेगा? अच्छे-2 लोग डर जाते हैं। लेकिन हमारे चारित्र नायक ऐसे धीर-वीर थे, उस सर्पराज से भी मित्रता बना ली और उससे बाते करते रहे। धन्य-धन्य गुरुदेव आपकी धीरता। जहां भयंकर सर्प भी मित्र हो गया हो तो शत्रु भी आपका क्या कर सकता है? ऐसे महापुरुष का कोई शत्रु भी बाल-बांका नहीं कर सकता।

जयपुर चातुर्मास सन् 1973

वेदना और विषमता के तीखे कांटों में आप की साधना का गुलाब सदा मुस्कुराता रहा। आपकी महक बिना किसी भेदभाव के सबको सब काल बराबर मिलती रही। कोई भी दुखियारा आपके सानिध्य में आता तो सुख का अनुभव करता। थकाहारा आता तो ताजगी बटोरता, निराश और दिशाहारा आता तो आस्था का आलोक मुट्ठी में भर अपने गंतव्य की ओर बढ़ता। ऐसा नहीं कि वे कोई जादू-टोना करते, भभूत या प्रसाद देते। आपकी साधना में और व्यक्तित्व में, वाणी और दृष्टि में ही कुछ ऐसा प्रभावपूर्ण माधुर्य और करूणाभाव छलकता हैं कि सम्पर्क में आने वाला व्यक्ति अभिभूत हुए बिना नहीं रहता।

साधना का अमिट तेज और दर्शन का अगाध पण्डित्य लिए हुए भी आप सहज, सरल एवं मितभाषी हैं। आपके प्रत्येक शब्द से मृदुता गौर निर्मलता टपका करती है। आध्यात्मिक उपदेश सुनते समय अनुभव होता था कि मानो अनुभूति की सीपी तपकर शब्द मुक्ता आलोक विकीर्ण कर रहे है। आप सदा अप्रमत्त भाव से अपनी साधना में लीन रहते। आपने अपने जीवन में भगवान महावीर का उपदेश चरितार्थ कर लिया। सच तो यह है कि आप स्वयं 'समय' में अर्थात् आत्मा में स्थित हैं इसलिए आप जीते जागते सामायिक हैं।

बाहुबली गुणों का हैं भण्डार,
जनता करती उनसे प्यार।
बताते वो जीने का सार
मन में आए न बुरा विचार॥

पू० आचार्य श्री की जन्म जयन्ती

महापुरुषों के आदर्शों को जीवन में उतारना ही सच्ची जन्म जयन्ती है। पू० आचार्य श्री के भक्त खण्डाका का परिवार था। वे लोग बहुत जोर-शोर से जन्म जयन्ती मनाते थे।

दिल्ली चातुर्मास सन् 1974

इस बार का चातुर्मास बड़े जोर-शोर से हो गया। लेकिन अब इस चातुर्मास में पू० बाहुबली महाराज जी को अपने शरीर पर लंगोटी भी भारी लगने लगी। अहिंसाव्रत के प्रिय क्षुल्लक जी को लंगोटी और ऊपर का दुपट्टा भी शूल की तरह चुभने लगा।

भाले न समता सुख कभी नर,
बिना मुनि मुद्रा धरैं।
धरि नगन पर नगन ठाडै,
सुर असुर पायनि परै॥

पू० बाहुबली जब भी सामायिक में बैठते तो अन्दर में पूर्ण शान्ति का अनुभव नहीं पाते। चिन्तन की अजस्रधारा बहती रहती थी-क्या कारण है कि मुझे शान्ति नहीं मिल रही हैं? दुपट्टा-लंगोटी भी शान्ति में बाधक रही। षष्ठ-सप्तम गुणस्थान के झूले में झूलने की लगन जिन्हें लगी है ऐसे ध्यानी की कीर्ति दशों दिशाओं में फैलने लगी। दो विद्वान योगियों का दिल्ली राजधानी में चातुर्मास अपनी एक अनोखी छाप बिछा गया था। फूल निकल गए किन्तु हर दिल दिमाग में वह खुशबू आज भी है। गुरू शिष्य दोनों की प्रखर प्रतिभा से सारा नगर धर्म मार्ग की ओर बढ़ चुका था। उस समय बोया गया बीज आज फल प्रदान कर रहा है।

वैराग्य की खुशबू

मैंने एक बार आचार्य श्री को पूछा-'आचार्य श्री वैराग्य का आपको कौन सा निमित्त मिला। साधु बनने के लिए आपको प्रेरणा कहां से प्राप्त हुई। पुराणों में वर्णन आता हैं आदिनाथ भगवान को नीलांजना की मृत्यु होने से वैराग्य हुआ-किसी को सफेद बाल देखने से, किसी को उल्का पात होने से वैराग्य हुआ आपको किस निमित्त से वैराग्य हुआ?

आचार्य श्री ने मुझसे कहा-'हमारा वैराग्य तो नैसर्गिक है ऐसा लगता है कि यह हमारा पूर्वजन्म का संस्कार है घर परिवार मे हमारा मन शुरू से ही नहीं लगा। मन में हमेशा वैराग्य की भावना विद्यमान रहती थी। हृदय बार-बार गृहवास के बन्धन को छोड़ दीक्षा धारण करने के लिए स्वयं उत्कंठित होता था।'

यह उचित ही है कि तत्व ज्ञानी मोक्षाभिलाषी आत्म शान्ति के लिए बाह्य कारणों की प्रतीक्षा नहीं करते हैं।

मुनि दीक्षा समारोह 26 फरवरी 1974 श्रीतारंगा सिद्धक्षेत्र

दिगम्बर दीक्षा लेना साधारण बात नहीं है यदि निर्ग्रन्थ पद लेकर निर्दोष रीति से इसका पालन न किया जाये तो जीव गिरकर नीचे पद को पाता है। इसलिए असमर्थ आत्मा इसे धारण न करके शक्ति के अनुसार संयम लेती है। महाव्रत का धारण करना तलवार की धार पर चलने से भी कठिन है। ज्ञान और वैराग्य विभूषित मोक्षाभिलाषियों को यह पुष्प शय्या सदृश अल्हाद होती है किन्तु दुर्बल आत्मा को यह शर शैय्या के समान संक्लेश पैदा करती है।

पू० बाहुबली ने अपनी आत्मा को आठ वर्षो से निर्ग्रन्थ दीक्षा हेतु तैयार कर लिया था। माघ कृष्ण प्रतिपदा दिनांक 26 फरवरी 1974 शाम को 4 बजकर 11 मिनट में दिगम्बर व्रत के संस्कार शुरू हो गए। केशलोंच प्रारम्भ किया गया गुरूदेव आचार्य श्री का पूरा ध्यान अपने लाडले शिष्य के ऊपर था। केशलोंच सम्पन्न हुआ। दिगम्बर महाव्रत के संस्कार शुरू होने से पहले गुरूदेव के चरणों में दीक्षा याचना एवं क्षमा याचना हुई। पू० बाहुबली जी की दीक्षा देखने पण्डाल खचाखच भरा हुआ था। सभी लोगों की अनुमोदना लेने के लिए पू० बाहुबली जी खड़े हो गए। जैसे ही उनके चन्द्रमुख से वाणी निकली वैसे ही जन समुदाय बिल्कुल शान्त हो सुनने लगा-"भव्य जीव हो, आज तक हम अज्ञानता में भटक रहे है इस मानव जन्म को व्यर्थ मत खोना। यह कर्म जंजीरो से कसकर बंधा हुआ है। उसे तोड़ने के लिए यह महाव्रत ही शस्त्र के समान है इसलिए आज मैं कर्मरूपी जंजीरों को तोड़ने के लिए पुरुषार्थ करने खड़ा हुआ हूं। आप लोग भी इसी रास्ते पर आकर जंजीरों को तोड़ो। मैं आज दिगम्बर दीक्षा ले रहा हूं, आप लोग मुझे दीक्षा के लिए अनुमोदना दीजिए और मेरे द्वारा कभी भी जाने अनजाने में आपका मन दुखा हो तो आप लोग मुझे क्षमा कीजिए। जिनेन्द्र भगवान के प्रसाद से एवं मेरे गुरु के आशीर्वाद से इस पद की प्रतिष्ठा की, मैं सदैव रक्षा करूंगा उसमें कदाचित प्राण जावें तो भी मुझे उसकी परवाह नहीं है।" सभी भक्त गणों की साधु-साध्वियों की अनुमोदना लेकर दीक्षा समारोह शुरू हो गया।

निःपरिग्रह होने का समय आ गया। पू० बाहुबली खड़े हो गए और अपने ऊपर जो लंगोटी-दुपट्टा था उसको झट से निकाल दिया। बाह्य एवं अभ्यंतर परिग्रहों को तज दिया। और वैराग्य सागर में डूब गए। उनके पीछे संयम, सदाचार तथा सत्य का अपार बल समाया हुआ था। उन्होंने दिगम्बर मुद्रा धारण कर ली।

निःपरिग्रह होने का समय आ गया। पू. बाहुबली खड़े हो गए और अपने ऊपर जो लंगोटी-दुपट्टा था उसको झट से निकाल दिया। बाह्य एवं अभ्यंतर परिग्रहों को तज दिया और वैराग्य सागर में डूब गए। उनके पीछे संयम, सदाचार तथा सत्य का अपार बल समाया हुआ था। उन्होंने दिगम्बर मुद्रा धारण कर ली।

उस समय वैराग्य का चित्रण अवर्णनीय था हजारों भव्य स्त्री पुरूष जय जयकार कर रहे थे। जब इस नैसर्गिक मुनि जीवन वाली आत्मा ने चिर कांक्षित पवित्र मुद्रा धारण की थी तो गुरूदेव ने इनके गुणों को देखकर इनका नाम 'बाहुबली' ही रखा।

'बाहुबली' में शिक्षा पाकर 'बाहुबली' में दीक्षा ली।
'बाहुबली' बन कर्म काटने अन्तर इच्छा जागृत की॥
'बाहुबली' ही दर्शन जिनका, 'बाहुबली' ही अर्चन है।
आचार्यश्री गुरु 'बाहुबली' को, बार-बार मम वंदन है॥

क्षुल्लक अवस्था में जिनमुद्रा धारी नहीं कहे जाते थे। थोड़ा सा परिग्रह इन्हें संयता-संयत गुणस्थान से ऊंचा नहीं उठने देता। यथाजात मुद्रा धारण करते ही ये संयत हुए और इन्होने सर्वप्रथम अप्रमत संयत गुणस्थान पर आरोहण किया। कारण देश संयमी जब महाव्रत धारण करता है तब भावों में अद्भुत निर्मलता होने से वह सातवें गुणस्थान को प्राप्त करता है। पश्चात् अन्तमुहूर्त के परिणामों में कुछ प्रमत्तपना संज्वलन कषायजन्य आता है तब छठवां गुणस्थान होता है। वह भी अन्तमुहूर्त रहता है और फिर निर्मलता अप्रमत्त स्थिति को प्राप्त कराती है-

26 फरवरी 1974 को
बाहुबली की दीक्षा हुई
पहले सम्भव खड़े हुए
जनता के सम्मुख गए
उन्होंने बताया दिगम्बर का सार
चारों तरफ थी भीड़ अपार
केशलोंच सम्पन्न हुआ
फिर लंगोटी दुपट्टा त्याग दिया
धारण कर लिया दिगम्बर वेश
जिनकी चर्चा करता देश।

शान्त छवि

पू० बाहुबली जी ने आकाश रूपी वस्त्र को धारण कर लिया क्योंकि दिगम्बर का प्रत्येक शब्द यह सम्बोधन करता है कि दिग्-दिशा। अम्बर-वस्त्र बाह्य परिग्रह के साथ-साथ ही वे अन्तरंग परिग्रह का त्याग का भार से रहित होकर वे निष्परिग्रही बन गए। भारत गौरव श्री 108 आचार्य रत्न देशभूषण महाराज जी शायद भविष्य दृष्टा थे तभी तो उन्होंने

अपने शिष्य का नाम बाहुबली रखा था। 'बाहुबली' का अर्थ है जिसकी भुजाओं में अत्यन्त बल हो जो किसी भी शत्रु के द्वारा कभी भी पराजित नहीं होता दिगम्बर दीक्षा के बाद भी पू० आचार्य श्री जी ने उन्हें पुनः उसी नाम से यानि 'बाहुबली' नाम से विभूषित कर दिया। सारी जनता श्री 108 बाहुबली मुनि महाराज जी की जय-जयकार लगाने लगी। जय-जयकार की ध्वनि से सारा आकाश गूंजने लगा। पू० श्री 108 बाहुबली मुनि महाराज जी शांत छवि को देखकर आकाश में मंगल गीत सहज ही गूंजने लगे'

शान्त ये मूरत तेरी, दिल में समायी रे
हित उपदेशी वाणी मन को ये भायी रे
परम दिगम्बर मुद्रा अब चित्त धार के
जय-जय बोलो सब बाहुबली संत की।

जब तीर्थंकर भगवान का इस धरा पर जन्म हुआ उस समय तीनों लोक के सभी जीवों को एक क्षण के लिए सुख शान्ति प्राप्त होती है उसी प्रकार जब इस बालक का जन्म इस धरा पर हुआ था तब समस्त रूकड़ी नगरी आनन्दित थी। उसी भव्यात्मा ने इस वीतराग मुद्रा को धारण कर सभी जीवो को धर्म का पाठ पढ़ाया।

दक्षिण तरफ विहार

प० पू० श्री 108 मुनि बाहुबली महाराज जी की मुनि दीक्षा होते ही पू० आचार्य श्री का विहार हो गया। गर्मी के दिन शुरू हो गए। पू० आचार्य श्री की तबियत ठीक न होने से उनको डोली से ले जाते थे। गुरूदेव की डोली के साथ नवदीक्षित मुनिराज थे। नवदीक्षित मुनिराज के ऊपर संघ का पूरा भार पड़ा हुआ था ऊष्ण परिषह को सहते हुए बाहुबली जी मुनिराज गुरू की छाया बनकर विहार कर रहे थे। ऐसी कड़ी गर्मी में रोज डोली के साथ 60 कि०मी० विहार करते थे। लेकिन गुरू की नजर अपने लाड़ले शिष्य पर थी। दीक्षा के तुरन्त बाद ही विहार शुरू हो गया था। शिष्य को तकलीफ न हो इसलिए वो बार-बार पूछते-'बाहुबली! कितना चलोगे? ये डोली वाले भी नहीं रुक रहे हैं। ऐसी कड़क धूप में अग्नि बरस रही है तुम्हें तकलीफ हो रही होगी।'

पू० बाहुबली शिष्य कहते-'नहीं गुरूदेव! आपकी छाया मेरे मस्तक पर है तो मुझे कोई तकलीफ नहीं है। आप चिन्ता मत कीजिए।'

रास्ते में कई छोटे बड़े गांव-शहर मिलते वहां के लोग बाहुबली मुनिराज को देखकर अचम्भित हो जाते थे-इस यौवन में विषयवासना को तिलांजली देकर नग्न होना कोई मामूली बात नहीं है लोग उनके पास दौड़कर आते। उन लोगों को बाहुबली मुनिराज बड़ी सीधी, सरल, चुस्त भाषा में उनके सामने कथाओं का खजाना उलीच देते। उनकी धीर गम्भीर वाणी सुनकर लोग खुद को धन्य समझते। आचार्य श्री का संघ कोथली के पास पहुंचा। अनेक जगह पर भक्तगणों ने बड़े-बड़े कार्यक्रम रखकर बाहुबली मुनिराज का स्वागत किया। सभी लोग कौतुक करते कि इतनी कम उम्र में कैसे दीक्षा ले ली। उनकी निर्ग्रन्थ छवि देखकर लोग खुद को भाग्यशाली समझते थे। खुद अध्ययन मनन करना जितना आसान है उतना दूसरे को अध्ययन कराना आसान नहीं है। हमारे चारित्र नायक में अद्‌भुत वाग्मिता के साथ ही अध्ययन की भी विलक्षण शक्ति थी उन्होंने पाण्डित्य के बल से ही नहीं बल्कि आचरण से अपने जीवन का निर्माण किया था। दूसरों को अपना बनाने की जो कला उनमें थी उसी ने उन्हें एक सफल अध्यापक के रूप में प्रकट किया।

उनका अध्ययन करने का एक अलग ही तरीका था कोई भी व्यक्ति यह कभी नहीं जान पाता था कि महाराज जी पढ़ाते है या स्वयं पढ़ते है। वाणी में कोई दर्प नहीं, कोई गर्व नहीं, सत्ता का दंभ नहीं, व्यवहार में अहंकार की कोई झलक नहीं। सब कुछ साफ सुथरा निर्मल बहता पानी, उगता सूरज।

गुरू सानिध्य में कोथली चातुर्मास सन् 1975

पू0 बाहुबली जी की मुनि दीक्षा होते ही गुरू सानिध्य में प्रथम चातुर्मास सन् 1975 में कोथली में ही हो गया। पू0 मुनि श्री की गुरू सेवा पर इतनी असीम श्रद्धा थी कि वर्तमान में ऐसा शिष्य मिलना ही कठिन है। जब पू0 गुरूदेव आहार चर्या को निकलते थे तब बाहुबली मुनिराज स्वयं अपने गुरुदेव के हाथ पैर धोते थे। उनका आहार होने तक गुरु जी के पास ही खड़े रहकर बताते रहते थे कि क्या देना है, क्या नहीं। रात में सोने से पहले सेवा करके ही सोते थे। वे वहीं गुरु के चरणों में ही सो जाते थे। क्योंकि आचार्य श्री रात में कभी-कभी लघुशंका के लिए उठते थे। बाहुबली मुनिराज झट से उठकर कमंडलु लेकर साथ में जाते थे। धन्य है उनकी गुरु भक्ति की भावना। शास्त्र विरुद्ध आचरण रूपी ताप को दूर करने वाले गुरु महाराज जी के मुख रूपी मलय पर्वत से झरने वाला वचन रूपी सरस चन्दन का स्पर्श विरले ही पुण्यवान को प्राप्त होता हैं और यह सौभाग्य पू0 बाहुबली जी को प्राप्त हुआ है।

पू0 बाहुबली महाराज अत्यन्त उदार एवं व्यवहार में समन्वय वादी समताशील थे। उन्होने धर्म को संप्रदाय, जाति और क्रिया कांड से जोड़कर मानव की सद्वृत्तियों के उन्नयन और चेतना के ऊर्ध्वीकरण से जोड़ा। मानव जीवन मिल जाना एक बात है और उसे देवत्व में परिणत करना दूसरी बात है। मानवीय सद्गुणों के उन्नयन से ही यह सम्भव होता है। अपने आचरण की पवित्रता, चित्त की निर्मलता और आत्मशक्ति के प्रस्फुटन द्वारा उन्होंने यह साक्षात कर दिखाया।

प्रत्येक स्थान पर जिन मंदिरों के जीर्णोद्धार, जहां मंदिर नहीं है वहीं जिन मंदिरों की नवनिर्मिती एवं पचंकल्याण प्रतिष्ठा महोत्सव करते थे। कोल्हापुर जिले में शिरोल तहसील में ब्राह्मणों के धर्म से प्रचलित हुआ सन्त स्थान नृसिंहवाडी (कुरूंदवाड के नजदीक) इस गांव में जैनों के घर कुल 9 हैं जब पू0 बाहुबली महाराज जी क्षुल्लक अवस्था में थे तब औरवाड में जिन मंदिर के जीर्णोद्धार के निमित्त से बार-बार वहां आया जाया करते थे, औरवाड को आना हो तो नृसिंहवाड़ी के ऊपर से ही जाना पड़ता था, उस समय बार-बार मन में आता था कि यहां जिन मंदिर बहुत पुराना है और टूट गया है और कहीं जगह भी नहीं थी। फिर एक ब्राह्मण जगह देने के लिए तैयार हो गया किन्तु उसकी पत्नी तैयार नहीं थी तो भी वहां के श्रावक लोगों ने बहुत कुछ प्रयास करके वह स्थान प्राप्त कर लिया।

थोड़े दिन बाद उस स्थान पर मंदिर बनवाने की नवनिर्मिती निश्चित की गई। जिन मंदिर निर्माण की शुरूआत हो गई, पू0 बाहुबली मुनि महाराज जी के मन में ऐसा था कि वह मंदिर न भूतो होना चाहिए इसलिए जयपुर, अजमेर के कलाकारों को बुलवाया गया। और आदिनाथ भगवान, शान्तिनाथ भगवान, महावीर भगवान इन तीनों भगवानों की प्रतिमाएं-विराजमान करनी थी। इसलिए मूर्तियों के लिए ऑर्डर दे दिया गया। जब मूर्तियां आ गई तब बाहुबली मुनिराज कोथली से नृसिंहवाड़ी आ गए। कुरूंदवाड से नृसिंहवाड़ी तक ट्रौली में नई मूर्तियों का जुलूस निकालकर भारी प्रभावना से वहां तक ले गए। तभी से बाहुबली महाराज जी का नाम कोल्हापुर जिले में प्रख्यात हो गया।

पहले इतना किसी से परिचय नहीं था, परन्तु धीरे-धीरे कुरूदंवाद मजरेवाड़ी, शिरढ़ोण आदि स्थान के लोग पूज्य श्री जी की ओर आकर्षित होने लगे।

मजरेवाड़ी में भव्य केशलोंच

मजरेवाड़ी के भक्त गणों ने पू0 बाहुबली मुनि महाराज जी का केशलोंच समारोह रखा। वहां घोर तपस्वी पिहिता-श्रव मुनिराज रहते थे उनका भी केशलोंच था। पू0 मुनि श्री की उम्र छोटी होने से उनके घुंघराले बाल इतने घने थे कि केश उखाड़ते समय खून की धारा बह रही थी। लेकिन चेहरे पर रत्तिभर उदासी या खिन्नता नहीं दिखी। धन्य-धन्य गुरूदेव।

गुरू सानिध्य में बेलगांव चातुर्मास सन् 1976

पू0 बाहुबली महाराज जी ने गुरु सानिध्य में ही सन् 1976 में बेलगांव चातुर्मास किया। गुरु सानिध्य में रहने से उन्हें एक तरफ गुरू का मार्गदर्शन मिला दूसरी ओर मातृत्व प्यार। भौतिकता के पंक में फंसे लोगों को आध्यात्म की ओर प्रेरित करने के लिए उन्होंने बहुत प्रयत्न किया क्योंकि आज का युग संत्रास, कुण्ठा, निराशा और वितृष्णा का युग है। धर्म के नाम से सभी लोग दूर जा चुके है। नए-नए अस्त्र-शस्त्रों का आविष्कार होने के बाद भी व्यक्ति असुरक्षित एवं भयाक्रान्त है। वह क्षण प्रतिक्षण तृष्णा के पीछे दौड़ने के कारण परेशान है। ऐसी दशा में उन्हें धर्म की ओर लगाने के लिए नवयुवक मुनिराज बाहुबली जी विशेष व्यक्तित्व तृष्णा रूपी अंधकार में भटकते हुए व्यक्तियों के लिए प्रकाश स्तम्भ के समान बन गए।

इस कलयुग में ऐसा कौन सा नवयुवक होगा जो मधुर-मधुर पंचेन्द्रिय विषय वासना को छोड़कर यहां आ जाएगा। लेकिन ये महाप्रभावशाली मुनिराज सभी को अपनी जीवन साधना से यह संदेश देते हैं एवं दे रहे हैं कि-'अरे बन्धुओं! तृष्णा से पीड़ित मत होवो। केवल अपना जीवन- 'करिष्यामि करिष्यामि और मरिष्यामि मरिष्यामि' इतना ही नहीं अपितु भगवान महावीरस्वामी के समान हमें भी अपना जीवन सफल बनाना चाहिए। क्योंकि उन्होंने भी इस मानव पर्याय को पाकर संयम रूपी खड्ग हाथ में लेकर वासना रूपी शत्रु को जीत लिया एवं सिद्ध शिला में विराजमान हो गए। उनके जैसा प्रयास यदि हमने भी किया तो हमें भी यह अवस्था एक न एक दिन अवश्य ही प्राप्त होगी।

जो व्यक्ति मानव पर्याय पाकर भी इसे आलम्य, इन्द्रिय, भोग, वैर, विरोध आदि में गंवा देते हैं वह जीवन की बाजी हार जाते हैं। परन्तु जो प्रज्ञाशील, संयमी होते हैं वह तप, संयम और जितेन्द्रियता में रमण करता हुआ जीवन संग्राम में सच्ची विजय प्राप्त कर लेता है। हम जो जन्म मरण के फेरे में भ्रमण कर रहे हैं वह तो कीड़े मकोड़े भी प्राप्त करते हैं। हमारी मृत्यु मांगलिक होनी चाहिए। अर्थात मृत्यु से नहीं डरना चाहिए। यदि उससे आलिंगन करना सीख लिया तो समझो मृत्यु पर हमने विजय प्राप्त कर ली।

मृत्यु को वही व्यक्ति मांगलिक बना सकता है जो आत्मवीर हो तथा बाहरी उत्तेजनाओं के प्रति क्रियाशील न हो। विषम परिस्थितियों के बीच में भी प्रसन्नचित्त एवं समभावी बना रहे। जिसकी दृष्टि में सुख-दुख, सम्पत्ति, विपत्ति का कारण बाहर नहीं उसके अन्दर है। जिसके मन में किसी के भी प्रति घृणा-द्वेष और प्रतिहिंसा का भाव न हो बल्कि प्राणी मात्र के लिए प्रेम रस छलकता हो। उनका जीवन ही अमर प्रतीक बनता है।

इस प्रकार पू. महाराज जी प्रत्येक व्यक्ति को मार्गदर्शन देकर उन्हें धर्म की ओर आकर्षित करने का कार्य पूर्ण चातुर्मास भर करते रहे। क्योंकि वहां के लोग धर्म के नाम पर शून्य थे लेकिन थोड़े ही समय में प्रत्येक व्यक्ति ने धर्म का अर्थ समझकर सप्त व्यसनों का त्याग कर, मिथ्यात्व को त्याग कर अपना जीवन गुरु सेवा में ही समर्पित कर दिया।

वास्तव में पूज्य बाहुबली मुनि महाराज जी अद्भुत क्षमाभाव, समता भाव, माधुर्य, करुणा, सेवा और वात्सल्य आदि गुणों से ओतप्रोत थे। तभी तो उनका संदेश सभी जीवों के लिए शीघ्र ही लागू हो जाता है।

बेलगांव में चातुर्मास था उसी समय अतिशय क्षेत्र कोथली जो भारत गौरव श्री 108 आचार्यरत्न देशभूषण महाराज जी की जन्मभूमि है वहां आचार्य श्री की प्रेरणा से शांतिगिरी का कार्य एवं नीचे गुरुकुल, आदिनाथ मंदिर, देशभूषण हाई स्कूल, प्रेस आदि का काम पू. आचार्य श्री ने बहुत ही सुचारु रूप से पूर्ण कराया। भ. आदिनाथ मंदिर के सामने कोल्हापुर निवासी रोटे बन्धुओं ने उत्तुंग मारबल पत्थर का मान-स्तंम्भ बनवाया और चौमासा होते ही उसका भव्य पंचकल्याण हो गया।

इस कोथली क्षेत्र के अधिनायक पू. बाहुबली मुनि महाराज जी को कहा जाए तो कोई गलत नहीं है क्योंकि यहां का प्रत्येक पत्थर अणु-अणु 'बाहुबली जी' का नाम पुकारता है।

जब-2 बाहुबली मुनिराज नृसिंहवाड़ी, औरवाड जाते थे तो रास्ते में कुरूंदवाड नगर का एक चक्कर लग ही जाता था, लेकिन वहां के लोग महाराज जी को अपने गांव आने के लिए आमंत्रित नहीं करते थे। जब नृसिंहवाड़ी में जिनमंदिर बनाने की शुरुआत हो गई, नूतन मूर्ति आ गई तब कुछ कार्यकारी लोग धर्म की ओर बढ़ने लगे। महाराज बाहुबली जी ने अपने उपदेशों से उन्हें धर्म की ओर आकर्षित कर लिया। तब उनके गांव में भी कुछ धार्मिक कार्यक्रम करने की चर्चा होने लगी।

वहां के जिन मंदिर में मूलनायक पार्श्वनाथ भगवान की बहुत छोटी मूर्ति थी और शिखर में भगवान की प्रतिमा नहीं थी। इसलिए वहां के पंचों को सूचित कर विशाल भामण्डल सहित शुभ्र पत्थर की पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा लाने के लिए प्रेरित किया। भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा आ गई।

जैनों की काशी फलटण नगरी में 29.12.76

अखिल भारतीय जैन शास्त्री परिषद एवं त्यागी भट्टारक सम्मेलन

आचार्यश्री ने अपने विशाल संघ सहित फलटण की ओर विहार किया। क्योंकि वहां अखिल भारतीय जैन शास्त्री परिषद और त्यागी भट्टारक सम्मेलन होने वाला था। जिसका अधिनेतृत्व आचार्यश्री और पू. मुनिराज जी को करना था। दस बारह दिनों में आचार्यश्री का संघ फलटण पहुंच गया। फलटण नगर को जैनों की काशी बोलते हैं। वहां के श्रावक आचार्यश्री जी के संघ को लम्बी दूरी से लेने आए। जय-जयकार की ध्वनि गूंजने लगी पू. आचार्यश्री का भव्य स्वागत हुआ। घर-2 द्वार-2 श्रावकों ने आचार्य श्री का दूध, दही, जल से पाद प्रक्षालन किया। पुष्पवृष्टि पूरे जलूस में होती रही। आचार्यश्री का विशाल संघ श्री भगवान पार्श्वनाथ के मंदिर में ठहरा।

उस समय 40-50 त्यागी इकट्ठे हो गए। उसमें गलतगा के विद्वान श्री सिद्धसेन मुनिराज, सुबलसागर मुनिराज आदि उपस्थित थे। एक स्टेज पर त्यागियों का समुदाय देखकर चतुर्थकालीन दृश्य आंखों के सामने आ जाता था। वहां के महाविद्वान, मर्मज्ञ, आर्ष परम्परा के कट्टर विद्वान पंडित जी मोतीचन्द कोठारी थे। बादल होते ही मयूर जैसे नृत्य करते हैं वैसे ही आचार्य श्री जी का संघ देखते ही तत्वचर्चा करने का उत्साह बढ़ गया।

29.12.76 को सम्मेलन शुरू हो गया। जहां-तहां से लोग आए और आर्ष परम्परा के विद्वान पंडित जी मोतीलाल जैन कोठारी ने मंगलाचरण किया और तत्व चर्चा शुरू हो गई। गहन तत्व चर्चा करते-2 छः दिन कैसे निकल गए पता

ही नहीं चला उस तत्व चर्चा में पू. मुनि श्री बाहुबली महाराज जी अग्रगण्य थे। रात में पंडित वर्गों में चर्चा होती थी। 30.1.77 तक सम्मेलन था। सम्मेलन होते ही आचार्यश्री ससंघ विहार कर गए। संघ जहां-तहां रुकते हुए मिरज, सांगली, होते हुए जयसिंगपुर में पहुंच गया।

कुरूंदवाड के श्रावकों को समाचार प्राप्त हुआ। वे भक्तगण आचार्यश्री जी के पास आकर कहने लगे-'महाराज जी हमारा गांव अज्ञानता के अंधेरे में लिप्त रहा है। आपके ज्ञान की एक ज्योत लेकर हम अपने गांव को प्रकाशवान करना चाहते हैं। इसलिए हम सविनय प्रार्थना करते हैं कि हमारे गांव को प्रकाशित करने के लिए पू. श्री बाहुबली महाराज जी को आप भेज दीजिए।'

सहसा आचार्यश्री बोल उठे-'अरे भैय्या! बाहुबली के बिना हमारा एक पत्ता भी नहीं हिलता। देखिये कितना प्रेम है हमें अपने शिष्य पर। जैसे बिना छत्र के छाया नहीं, बिना दीप के प्रकाश नहीं, बिना बीज के अंकुर नहीं, बिना मेघ के वर्षा नहीं उसी प्रकार बाहुबली के बिना संघ की शोभा नहीं। हम आपके साथ इन अन्य त्यागियों को भेज सकते हैं।' इस पर कुरूंदवाड के सभी श्रावक नगराध्यक्ष श्री रावसाहेब पाटील, बाबा साहेब पाटील, अजितनंदरगे, आण्णा साहेब भविरे आदि लोग सहसा ही बोल उठे-'नहीं महाराज जी आप कृपा कीजिए। बाहुबली महाराज जी की वाणी सुनकर हम लोग चेत उठे हैं। महाराज जी हमें आपके लाडले शिष्य ही चाहिए।

कुरूंदवाड़ में छाया अज्ञान
बाहुबली थे ज्ञान की खान
श्रावक पहुंचे गुरुवर के पास
कीनी विनती जोड़ के हाथ
बाहुबली की वाणी में तेज
जिससे खुलते दिमाग के पेच
हम सबका बेड़ा पार करो
अपना शिष्य हमें दे दो।

उन लोगों की धर्म भावना देखकर आचार्यश्री ने बाहुबली महाराज जी को ले जाने की अनुमति दे दी। गुरुवर की स्वीकृति मिलते ही उन लोगों का आनन्द जैसे दरिद्र को चिन्तामणि रत्न मिल जाए तो कितना आनन्द होता है। वैसा ही आनन्द गुरु बाहुबली महाराज को ले जाने की स्वीकृति से लोगों को मिला।

धर्म प्रभावना का प्रथम चरण

गुरु आज्ञा से आपका स्वतंत्र विहार प्रारम्भ हुआ। साथ में एक दो क्षुल्लक भी थे। मैंने पूछा-'गुरु के बिना विहार करना कैसा लगता था?'

महाराज श्री बोले-'शुरू शुरू में गुरु के बिना विहार हमें भार जैसा लगता था। बच्चा जब तक अपने पिता के पास रहता है, निश्चिन्त रहता है। अलग होते ही चिन्ताएं सताती हैं। वही अवस्था हमारी थी हमें चिन्ताओं से जूझना पड़ा। विहार की चिन्ता, वचन की चिन्ता, शंका समाधान करना, अन्य त्यागियों आदि के भार से हमें परेशानी महसूस होती थी। गुरु की छत्र छाया में हम निश्चिन्त थे। अब क्या कर सकते थे गुरु आज्ञा शिरोधार्य।'

मैंने पूछा-'आप गुरुदेव के पास ही रहते ? आपने अलग विहार क्यों किया ?' वो बोले-'मेरे गुरुदेव ने धर्म प्रभावनार्थ अलग विहार की आज्ञा स्वयं दी थी। उसे इन्कार करने की शक्ति मुझमें नहीं थी।'

कुरूंदवाड में पंचकल्याणक

कुरूंदवाड में पू. मुनिश्री बाहुबली का प्रवेश बड़े स्वागत सत्कारके साथ हुआ। नगर में चारों ओर आनन्द की लहर दौड़ गई। मई का महीना था लोगों की भीड़ होने लगी। पू. मुनिश्री को एक मिनट भी एकान्त नहीं मिलता था, लोगों को मार्गदर्शन करने में ही सारा समय बीत जाता था।

जिनकी साधना और सिद्धि के आयाम इतने विशाल हैं उनके बारे में अपने संस्मरण लिखना कितना दुष्कर है। जिन लोगों के मन में इस महान क्रांतिकारक साधु ने उथल-पुथल की और उनके जीवन को प्रकाश की दिव्यता से भर दिया वे मौन को ही सदैव महत्व देते हैं। चमत्कारों को प्रकाशित नहीं करते। किन्तु मैं जानती हूं कि मुनिश्री बाहुबली जी कुछ दिन के लिए एक गांव में विराजमान थे। उस गांव में जैन समाज के लोगों में पारस्परिक द्वेष-फूट और कलह अपनी चरम सीमा पर थे। मुनिश्री के लिए यह एक चुनौती थी। उन्होंने अपने वात्सल्य एवं मधुर वाणी के चमत्कार से सारे जैन समाज को एक कर दिया और वह एकता आज भी अन्य स्थानों के लिए आदर्श का विषय है। मुनिश्री बाहुबली के पारस स्पर्श ने कितने ही लौह प्रखण्डों को स्वर्ण बनाया है, बना रहे हैं और बनायेंगे।

कुरूंदवाड में भी युवावर्ग की भीड़ मुनिराज के पास एकत्र होनेलगी। पंचकल्याणक की तारीख निश्चित हो गई। पूरे नगर के जैन समाज ने अपनी खुशी से श्री रावसाहेब पाटील एवं उनकी धर्मपत्नी सौ. विजया पाटील इन दोनों को इन्द्र-इन्द्राणी का पद दे दिया।

गुरुदेव की अनुपस्थिति में पहली बार मुनि अवस्था में इतना बड़ा विशाल कार्यक्रम हो रहा था। उस विशाल महोत्सव का वर्णन करना सरल नहीं है। प्रतिदिन विशेष कार्यक्रम होते थे। रात में विद्वानों का व्याख्यान होता था उसी उत्सव में केशलोंच का कार्यक्रम भी अति आनन्द से सम्पन्न हुआ। हाथी, घोड़े, हेलीकॉप्टर आदि से धर्मप्रभावना बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हो गई।

सर्पराज हमारा मेहमान

प. पू. आचार्य देशभूषण जी दिल्ली गए हुए थे बाहुबली मुनिराज जी और कुछ साधु कोथली में विराजे थे। गर्मी के दिन थे सभी साधु संन्यासी अपनी-अपनी गुफा में अध्ययन कर रहे थे। सभी अपने काम में लगे थे। उसी समय एक भयंकर सर्प आ गया। बाहुबली महाराज जी जिस गुफा में बैठे थे उस गुफा के पास आ गया। गुफा का दरवाजा बन्द था, वह सर्प इतनी जोर से दरवाजे पर अपने फण मारने लगा। महाराज जी को लगा शायद कोई आया है। उन्होंने उठकर दरवाजा खोला तो सामने सर्पराज अपना फण उठाकर खड़ा है। वह सर्प सीधे अन्दर आ गया।

महाराज बाहुबली जी बोले-'आ जाओ भइया' कहकर स्वयं लघुशंका के लिए बाहर चले गए। फिर अन्दर बैठकर अध्ययन करने लगे। सर्पराज अन्दर आकर सभी ग्रन्थों पर इधर-उधर नाचने लगा। उसी समय चौके वाली महिलाएं अपना काम निपटाकर प्रवचन सुनने के लिए आ गई और सर्प देखकर चीख पड़ी।'महाराज जी! आप अन्दर क्यों बैठे हो बाहर आ जाओ।' लेकिन महाराज जी बाहर नहीं आए और उन लोगों से बोले-'अरे!ये तो हमारा मेहमान है। कभी-2 आता है। इसका जब मन होगा तब ये चला जाएगा।' लोगों के चीखने की आवाज सुनकर सर्प डरकर अलमारी के पीछे बैठ गया।

प्रवचन का समय होते ही साधु-साध्वी आ गए तो बाहुबली मुनिराज भी बाहर आकर बैठ गए। जब सभी बाहर आ गए तो सर्प अलमारी के पीछे से निकलकर आया और सीधे अपना रास्ता पकड़ लिया। मैंने पूछा-'गुरुदेव ऐसी स्थिति में भी आपको घबराहट नहीं हुई?' महाराज जी मुस्कराते हुए बोले-'डर, भय क्या है इसका मुझे पता ही नहीं।'

'महाराज जी उस समय आप क्या सोच रहे थे' मैंने पूछा।

'हम तो बस यही सोच रहे थे कि यदि पूर्वभव में मैंने इस जीव का कुछ बिगाड़ा होगा तो ये हमें बाधा पहुंचायेगा। अन्यथा चुपचाप चला जाएगा।

वह सर्पराज सौम्य और धैर्य की मूर्ति गुरुदेव बाहुबली जी का रूप देखकर अपना फण नीचा करके मानो महामुनि के चरणों को प्रणाम करता हुआ धीरे-2 गुफा से बाहर जाकर न जाने कहां चला गया।

सामने देख के काला सांप
नहीं डरे गुरुवर जी आप
बोले बताऊं एक मैं राज
ये तो पूर्वभव की है बात
हमने सताया होगा इसे, काटेगा तब तो ये मुझे
हमने किया नहीं इसका अनिष्ट, जीव तो होते बड़े ही शिष्ट।

कुरूंदवाड चातुर्मास सन् 1977

जब कोई चीज अच्छी लगती है तो चीज को पाने की बार-2 अपेक्षा करते हैं। ठीक इसी प्रकार गुरुदेव बाहुबली की वात्सल्य मूर्ति देखकर कुरूंदवाड के लोगों को पुनः अपने नगरमें ले जाने की इच्छा जागृत हुई। कुरूंदवाड का पूरा जैन समाज गाड़ी भर-भर के कोथली में पहुंचा। उनको देखकर ही आचार्यश्री समझ गए कि ये लोग बाहुबली को ले जाने के लिए आए हैं।

पू. आचार्यश्री के उपदेश समाप्त होते ही कुरूंदवाड के श्रावक आगे बढ़े और आचार्यश्री से प्रार्थना करने लगे-'आचार्यश्री! हमारे कुरूंदवाड में अज्ञानता का बोलबाला है धर्म का ज्ञान वहां पर बिल्कुल भी नहीं है। लोहे के समान हमारी अवस्था को आपके शिष्य पारसमणि बाहुबली जी अपने अनमोल अमृतमय उपदेशों से कंचन बना सकते हैं। कृपा कर आप उन्हें हमारे गांव भेज दीजिए।'

आचार्यश्री बोले-'देखिए, तब आपके यहां पंचकल्याणक प्रतिष्ठा थी इसलिए हमने बाहुबली को भेज दिया था। अब हम कैसे भेज सकते हैं। आठ-पन्द्रह दिन की बात हो तो सोचा भी जा सकता है। लेकिन पूरे चार महीने का सवाल है। बाहुबली तो मेरा दायां हाथ है अगर दाएं हाथ को ले जाओगे तो मैं बाएं हाथ से कैसे काम करूंगा? इसलिए हम नहीं भेजेंगे।' आचार्यश्री के शब्द सुनकर लोग बड़े उदास हो गए और बोले-

'आचार्यश्री! हम इस आश्रम के लिए मदद करेंगे। आप कुछ भी कहो हम करने के लिए तैयार हैं लेकिन अपने शिष्य को चातुर्मास के लिए भेज दो।' आचार्यश्री ने आना-कानी करते-2 आखिरकार हां कर दी और पू. बाहुबली को कुरुंदवाड ले जाने की श्रावकों को स्वीकृति दे दी। लोग खुशी से फूले नहीं समा रहे थे। जय-जयकार से गगन गूंजने लगा।

कुरूंदवाड के लोगों ने गाय, गुड़ की भेलियां और दान की राशि दे दी। आचार्यश्री के सामने नारियल चढ़ाए। पू. आचार्यश्री से आशीर्वाद लेकर श्रावकगण बड़े ही आदर सत्कार के साथ पू. बाहुबली महाराज जी के साथ तीन क्षुल्लक जी, एक आर्यिका एवं एक क्षुल्लिका माताजी एवं दो ब्रह्मचारियों को लेकर कुरूंदवाड के लिए रवाना हो गए।

कुरूंदवाड में भव्य स्वागत

कुरूंदवाड में लोगों के सब्र का बांध टूटा जा रहा था। हर वक्त की खबर लोगों को मिल रही थी कि बाहुबली महाराज हेरवाड़ आ गए और अब तेरवाड़ आ गए। अरे अब तो महाराज केवल एक कि.मी. पर ही हैं। चलो-2 जल्दी करो।' लोगों का उत्साह देखते ही बनता था। पूरे नगर में स्वागत की तैयारियां चल रही थी। किसी के पास समय नहीं 'था। श्रावक श्राविकाएं लम्बी दूरी तक बाहुबली महाराज जी को लेने आए। आकाश में जय-जयकार की ध्वनि गूंजने लगी। पू. गुरुदेव बाहुबली महाराज जी का भव्य स्वागत हुआ। घर-2 श्रावकों ने गुरु का दूध, दही, जल से पाद प्रक्षालन किया। पुष्पवृष्टि पूरे जुलूस में होती रही। घर-घर के द्वार पर आरती उतारी गई। मनोहर दृश्य देखकर आनन्दाश्रु से नेत्र सजल हो उठे।

कुरूंदवाड के श्रावकों को आहारदान विधि अर्थात नवधा विधि भक्ति मालूम नहीं थी। फिर भी गुरुदेव सबको समझाकर आहार लेते थे। कोथली से ब्र. शांताक्का (अभी पू. आर्यिका शांतमती माताजी) जब आ गई तो उन्होंने आहार की मर्यादा अर्थात आटा, नमक, घी आदि के बारे में विस्तृत रूप से समझा दिया।

धार्मिक संस्कार के अभाव तथा शहरी वातावरण की हवा लगने से कितने ही युवावर्ग वहां व्यसनाधीन बन चुके थे। उनको उपदेशामृत का टॉनिक देकर मुनिराज जी सन्मार्गपर लाए। ब्राह्मण धर्म की बाहुलता होने से प्रत्येक जैन के घर में गणेशजी की पूजा तथा सत्यनारायण की कथा होती थी। गुरुदेव के मधुर उपदेश सुनकर लोगों ने मिथ्यात्व को त्याग दिया।

कुरूंदवाड़ में आचार्य शान्ति सागर पुण्यतिथि

एक बार चातुर्मास में प०पू०चा०च० समाधि सम्राट श्री आचार्यश्री शान्तिसागर की पुण्य तिथि का कार्यक्रम था। गुरुदेव के प्रभाव से व्यसनाधीन बच्चे सन्मार्ग पर आ गए लोगों ने मिथ्यात्व को त्याग दिया। ऐसा कुछ अन्य जातियों के लोगों को अच्छा नहीं लगा। जिस दिन आचार्य शान्तिसागर का जुलूस निकल रहा था उस दिन सारा जैन समाज जुलूस के साथ था। गुरुदेव अपनी गुफा में सामायिक कर रहे थे। ऐसे समय में कुछ विघ्न पैदा करने वाले लोग वहां आ गए। वहां पर कोई भी जैन श्रावक नहीं था। ऐसा समय देखकर वे गुरुदेव पर उपसर्ग करने लगे। उसी समय एक श्राविका ने यह दृश्य देख लिया और दौड़ते-2 जुलूस में आयी और उक्त घटना के बारे में सबको बता दिया। सुनते ही पूरा गांव इकट्ठा हो गया। उस दिन आमदार रत्नाप्पा कुंभार, शामराव पाटील यड्रावकर आदि गुरुदेव की गुफा के सामने सारी रात बैठे रहे। दूसरे दिन जो लोग उपसर्ग कर रहे थे वे स्वयं क्षमा मांगने आ गए और स्वयं भी गुरुदेव के वचनामृत से प्रभावित हो गए।

कुरूंदवाड के चातुर्मास में वे रोज नृसिंहवाड़ी जाते थे। उधर जिन मंदिर का काम शुरू हो चुका था। कुरूंदवाड के कार्यकारी लोग ही वहां जाकर काम देखते थे। प्रवचन के लिए औरवाड, वाडी, मजरेवाडी, शिरढोण, बुबनाल अकिवाट आदि स्थान से श्रावक आते थे।

आचार्य शान्तिसागर महाराज जी के समान प०पू० बाहुबली महाराज ने भी प्रत्येक घर-घर के मिथ्या देवों को बाहर निकाल दिया। प्रत्येक घर-घर में सम्यक् ज्योति चमक उठी। चातुर्मास में एक से एक कार्यक्रम प्रभावात्मक हो गए। धर्म वर्षा की ऐसी झड़ी लगी कि जैन अनुयायी ही नहीं अपितु अन्य जाति के लोग भी प्रभावित हो गए।

उपदेशामृत से पतित भी पावन बन गये

कुरूंदवाड में रोज सुबह 8:30 बजे महाराज जी नृसिंहवाड़ी, श्मसान घाट की तरफ जाते थे रास्ते में निम्न जाति के लोगों की झोंपडपट्टी थी। एक 10 वर्ष की नन्हीं बच्ची रोज गुरुदेव के चरणों में फूल चढ़ाती थी। पूरे चातुर्मास में उसका यह क्रम बन चुका था उसके निमित्त से उसके मां-बाप भी नमस्कार करने लगे।

चातुर्मास के अन्तिम दिन महाराज जी का विहार होने वाला था। गुरु जी उसकी झोपड़ी के आगे से निकले लेकिन वह नन्हीं लड़की दिखी नहीं। इसलिए गुरुदेव ने पूछा-'आज वह लड़की कहां गई है? कहीं दिखी नहीं।' बोलते-2 वह आगे बढ़ गए। लड़की को मुनिराज के विहार के बारे में पता लगा था, अतः वह बाजार से अच्छे फूल लेने चली गई थी। जब वह वापस आई तब गुरुदेव आगे जा चुके थे। इस बात का उसको बहुत दुःख हुआ और वह आक्रोश करने लगी। आखिर गुरुदेव जंगल से आए तब वह दौड़ते-2 उनके पास गई और साष्टांग नमस्कार कर फूल चढ़ाया और रोने लगी।

पाप कर्म के उदय से लड़की ने निम्न जाति में जन्म लिया लेकिन अच्छे भाव करके वह उच्च जाति के बंध बांध रही थी। पूर्वभव के संस्कार के कारण और गुरुदेव की भक्ति से उसने अपने घर का वातावरण बदल दिया। यद्यपि मां-बाप पहले मांसाहारी थे लेकिन उस लड़की के निमित्त से उन दोनों ने मांसाहार का त्याग कर दिया। उस लड़की का जैन समाज ने स्नेह सत्कार किया। अब जब भी महाराज जी कुरूंदवाड जाते हैं तो उसके घर के लोग जरूर आते हैं।

संसार सिन्धु में डूबते हुए को बचाया

कुरूंदवाड में आप्पासाहेब पाटील नाम के एक धनी प्रतिष्ठित भूतपूर्व नगराध्यक्ष थे। लेकिन उनको शराब पीने की एक बुरी आदत थी। बहुत समझाने के बावजूद भी उनकी यह लत नहीं छूटती थी। गुरुदेव नगर में पधारे। रोज प्रवचन होता ही था। उनके यहां चौका शुरू था। 'उस दिन गुरुदेव का नियम हाथ जोड़ कर खड़े पुरुष' का था बहुत देर तक धारणा नहीं मिल पाई। आप्पा साहेब पाटिल भी कौतुहल वश देख रहे थे जब गुरुदेव सामने आते हुए देखे तो झट से उनके हाथ जुड़ गए। हाथ जोड़ते ही गुरुदेव झट से उनके सामने आकर खड़े हो गए। पाटील साहब को बहुत डर लगा। मैं शराबी हूं मैं गुरुदेव को कैसे पड़गाऊ? सभी लोग चिल्लाने लगे-'पाटील साहब गुरुदेव को पड़गाओ।' डर के मारे उनको कुछ समझ नहीं आ रहा था आखिर पड़गाना पड़ा। पड़गाहन करके वो अपने घर ले गए। व्यसनी होने से गुरुदेव ने आहार नहीं लिया।

पाटील साहब ने विचार किया 'आज में पुनीत हो गया।' गुरुदेव आहार लेकर पाटील साहब से बोले-'आप इतने धनी और प्रतिष्ठित व्यक्ति होते हुए भी आप में ये बुरी आदत क्यों है? उनकी वाणी सुनकर पाटील साहब की आत्मा बोल उठी-'गुरुदेव मुझे क्षमा कर दो मैं पापी आत्मा हूं मुझे पवित्र कर दीजिए। आज से मैं शराब पीना छोड़ दूंगा।' गुरुदेव का आशीर्वाद मिला और उसी दिन गुरुदेव ने पति-पत्नी को दशलक्षण व्रत दे दिए।

चातुर्मास के आखिरी दिन गुरुदेव विहार करने वाले थे। उस दिन पूरा समाज रो रहा था अब हमें धर्मामृत कौन देगा? इस दुःख से सभी लोग दुःखी हो गए। सभा भरी थी प्रत्येक व्यक्ति रो-रोकर भाषण दे रहा था। उसी समय पाटील

साहब भाषण के लिए उठ गए और बोले-'मुझ जैसे व्यसनी, उच्छृंखल आचरण वाले भ्रष्ट एवं पतित आत्मा का यदि गुरुदेव बाहुबली महाराज जी ने उद्धार न किया होता तो न जाने मेरी क्या दुर्गति होती। इन्होंने मुझे संसार सिंधु में डूबते हुए देख हस्तावलंबन देकर मेरी रक्षा की है तथा मुझे सन्मार्ग की अपूर्व निधि दी है। उनके उपकार को मैं भव भवान्तर में भी नहीं भूल सकता।'

अब वह व्यक्ति इस दुनिया में नहीं हैं पर उस दिन से उनका मार्ग बदल गया। वह मंदिर का पूरा काम देखते थे। सांस्कृतिक मंगलधाम बांधना, धार्मिक कार्यक्रम आदि कार्य करने में अग्रसर थे। कुरूंदवाड का जैन समाज व्यसनों से मुक्त हो गया। आज भी कुरूंदवाड के जैन जैनेत्तर लोग उन्हें याद करते रहते हैं। चातुर्मास होते ही पू. गुरुदेव का विहार शिरढोण की ओर हो गया। वहां से इचलकरन्जी आए। उस समय धर्मानुरागी श्री काणे ने आगे होकर गुरुदेव को लाये थे।

वर्द्धमान हौसिंग सोसायटी में जिनमंदिर निर्माण

पहले जिनमंदिर फिर आहार

इचलकरन्जी शहर कपड़े की मिलों के कारण बहुत फैल गया है। जैन समाज यहां वहां बंट गया है। पू. गुरुदेव जब इचलकरन्जी में पधारे थे तब सोसाइटी में जैन मंदिर नहीं था जैन समाज के घर तो बहुत थे। गुरुदेव आहारको निकलने वाले थे तो श्रावकों से पूछा-'यहां जिनमंदिर कहां है?'

'महाराज जी गांव में मंदिर हैं यहां नहीं है। हीरालाल दोशी के यहां चैत्यालय है आप वहां से आहार को निकलिए।' लोगों ने बताया।

गुरुदेव ने कहा-'मैं किसी के घरसे नहीं निकलूंगा, जिन मंदिर से ही आहारचर्या के लिए निकलूंगा।'

लोग बोले-'गुरुदेव, अभी इधर जगह नहीं है, समाज के पास पैसे भी नहीं है क्या करें?'

'क्यों अपने-अपने घर बनाने के लिए पैसा है और जिनमंदिर बनाने के लिए पैसा नहीं है। सब अपने पास के पैसे निकालो। ले लो यह सामने दिखती हुई जगह और शुरू करो जिन मंदिर बनाने का काम।' गुरु बोले।

'गुरुदेव पहले आप आहार लीजिए उसके बाद सोचेंगे।' श्रावकगण बोले।

'हम आज जिनमंदिर बनाने का तय हुए बिना आहार के लिए नहीं निकलेंगे। पहले जिनमंदिर फिर आहार।' गुरु बाहुबली जी ने जिद पकड़ ली।

'गुरुदेव! हम जिनमंदिर के लिए जगह ले लेंगे आप आहार के लिए निकलिए।' श्रावकों ने विश्वास दिलाया।

'नहीं-नहीं! पहले निर्णय फिर आहार। रॉवका जी अपनी जेब खाली कर दान दोगे तो खजाना फिर भर जाएगा। आप सभी लोग यहां पहले जिनमंदिर के लिए दान करो।' गुरुदेव अपनी जिद पर अड़े रहे।

सभी श्रावकों ने अपनी शक्तिनुसार दान दे दिया। कुल एक लाख रुपए एकत्र हो गए। जगह लेने का प्रोग्राम तय हो गया। तत्पश्चात् गुरुदेव आहार के लिए निकले। कागवाड़े में भी जिनमंदिर निर्माण के लिए भूपाल कागवाड़े ने अपनी जगह दे दी। उस दिन दो जिनमंदिर निर्माण का कार्य शुरू हो गया। वर्धमान सोसायटी के जिनमंदिर निर्माण के लिए श्री दीपचंद भाई आदि ने बहुत परिश्रम किये और कागवाड़े जिनमंदिर निर्माण के लिए श्री कुंथीलाल पाटणी ने परिश्रम किया।

शिरढोण चातुर्मास सन् 1978

शिरढोण, यह गांव कुरूंदवाड से बिल्कुल पास में ही 3 कि.मी. पर ही है। कुरूंदवाड में जो चातुर्मास हुआ था उसका असर शिरढोण के ऊपर बहुत जल्दी हो गया था। हम भी अपने गांव में बाहुबली जी को लाएंगे। इसलिए सभी श्रावक आचार्य श्री देशभूषण जी के पास गए।

शिरढोण के श्रावकों को देखते ही आचार्य श्री समझ गए कि ये लोग बाहुबली को ले जाने के लिए आए हैं। बहुत स्थानों के लोग पू. बाहुबली जी को बुलाने आए थे। शिरढोण के लोगों में बड़ा उत्साह था। पूज्य आचार्यश्री का उपदेश हो गया। उपदेश होते ही पू. आचार्यश्री के चरणों में शिरढोण के श्रावक प्रार्थना करने लगे-'आचार्यश्री हमारे गांव पू. बाहुबलीजी को चातुर्मास के लिए भेज दीजिए।'

आचार्यश्री ने आश्चर्य से कहा-'कहां? शिरढोण? अरे वहां का समाज व्यसनों में लिप्त है वहां चातुर्मास कैसे होगा?'

श्रावक बोले-'आचार्यश्री हमारा समाज व्यसनों से लिप्त है इसीलिए तो हम पू. गुरुदेव बाहुबली महाराज जी को लेने आए हैं। पिछले वर्ष कुरूंदवाड में चातुर्मास होने से वहां का पूरा युवावर्ग व्यसनमुक्त हो गया। वहां का गौरव देखकर ही हम आज आपके चरणों में आशा की किरण लेकर आए हैं। आप हमें निराश मत कीजिए।'

शिरढोण के श्रावकों की तीव्र याचना देखकर आचार्यश्री के सामने एक विकट समस्या उत्पन्न हो गई। शान्तिगिरी का काम कौन देखेगा? फिर उन्होंने श्रावकों से कहा-'बाहुबली के बिना यहां एक पत्ता भी नहीं हिलता उनको भेजने से यहां कोथली का काम कौन देखेगा। उनके न होने से काम जहां का तहां पड़ा रहेगा। इसलिए हम किसी अन्य साधु को आपके साथ भेज देंगे।'

श्रावक एक साथ बोले-'नहीं-2, हमें बाहुबली महाराज जी ही चाहिए। उनके साथ आप कितने ही त्यागी भेज दीजिए।'

श्रावकों की असीम भक्ति देखकर आचार्यश्री गद्‌गद् हो गए। अन्त में बाहुबली महाराज जी को शिरढोण भेजने के लिए श्रावकों को हां कहकर आशीर्वाद दे दिया।

जय-जयकार से गगन गूंजने लगा। जहां तहां आनन्द की लहरें उछलने लगीं। शिरढोण में स्वागत की तैयारी शुरू हो गई। कोथली में गुरुकुल के लिए गेहूं, ज्वारी, चावल आदि की बोरियां भर-भर कर भेज दी। बाहुबली जैसे रत्न के आगे ऐसी मामूली चीजों का क्या मोल?

चातुर्मास के प्रारम्भ से ही व्यसन के ऊपर उपदेश शुरू हो गया। धीरे-धीरे लोग व्यसन मुक्त होने लगे केवल जैन ही नहीं अजैन भी व्यसन मुक्त हो गए।

श्री पायगोंडा पाटील (गावकामगार) धनगर समाज के थे। लोग शराब में लिप्त थे। गुरु के वचनामृत से उनका व्यसन छूट गया। वे रोज नियम से प्रवचन में आने लगे तथा सम्मेद शिखर की यात्रा भी हो गई। शंकर सासने मछुआरे समाज के थे उनका जीवन मछली पकड़ना था लेकिन वे भी हमेशा के लिए शाकाहारी बन गए। शैव धर्म की एक महिला ने दशलक्षण व्रत और रात्रि भोजन त्याग का व्रत ले लिया। शैव धर्मके ही एक आप्पा साहेब पंतोजी उन्होंने तो जैन धर्म ही स्वीकार कर लिया। उन्होंने अपने लड़के के नाम अरिहन्त और वीतराग रखे। उत्तम श्रावक के व्रत लेकर षट् क्रिया पालन करने लगे।

केवल नाम जैन नहीं

पू. गुरुदेव ने शिरढोण के चातुर्मास के समय प्रवचन में बताया था कि 'बन्धुओं! हमें केवल नाम के जैन नहीं बनना है। आहार, भय, मैथुन, परिग्रह ये चार संज्ञा मनुष्य तथा पशु दोनों के पास हैं। लेकिन उन दोनों में तुलना तो केवल विवेक तथा बुद्धि की अपेक्षा से ही की जा सकती है। जिसमें विवेक है, बुद्धि है वही मानव है यदि मानव में आचरण नहीं तो उसका जीवन पूर्णतः पशुवत् ही है।

एक बार एक व्यक्ति ने बन्दूक खरीद ली और बन्दूक लाकर घर में रख दी। उसके मित्रों ने बताया कि बिना लाइसेन्स के बन्दूक रखना तथा चलाना कानूनी जुर्म है। इसलिए पहले लाइसेंस बनवा लो। उसने मित्रों की बात मानकर लाइसेंस बनवा लिया और जेब में रखकर घूमने लगा।

एक दिन लाइसेंस लेकर शिकार खेलने जंगल में गया। सामने से गर्जना करते आये शेर के सामने मूछों पर ताव दे-देकर बोलने लगा-'अरे मूर्ख प्राणी! तू मुझे अपने गर्जन से डराना चाहता है। देख मेरे पास लाइसेंस है लाइसेंस।' शेर ने झपट्टा मारकर उस व्यक्ति को पल में ही मार गिराया।

अर्थात जिस तरह अकेले लाइसेंस से व्यक्ति का रक्षण नहीं हो सका उसी प्रकार यदि हम भी जीवन में केवल नाम के जैनी बने रहे तो न जाने कब मिथ्यात्व रूपी सप्त व्यसन रूपी सिंह दहाड़कर हमें खत्म कर देगा पता ही नहीं चलेगा। इसलिए हमें सदैव जागृत-सावधानी से सदाचार रूपी बन्दूक से सप्त व्यसन रूपी मिथ्यात्व का सामना करना चाहिए। तभी हम जी सकेंगे अन्यथा नहीं। इसलिए पहले व्यसन छोड़ो उसमें आपका हित है।

सोना यदि मिट्टी में छिपा है तो वह मिट्टी के भाव ही बिकेगा मिट्टी से अलग करने पर ही सोने का असली मूल्य पता चलेगा। उसी प्रकार यह मानव पर्याय भी मूल्यवान पर्याय है इसलिए अच्छे अच्छे कार्य करके अपने जीवन को सफल बनाना चाहिए। इस प्रकार सम्पूर्ण चातुर्मास में प्रवचन की झड़ी लगी रही जिससे सप्त व्यसन रूपी मिथ्यात्व की कीचड़ धुल गई।

मेरी बात ध्यान से सुनो
जैन हो तो जैनी बनो
बुरे काम से सदा बचो
सदाचार की राह चलो।

कोकण भाग-खारे पाटण तरफ विहार

पू. गुरुदेव का विहार रत्नागिरी जिले में खारे-पाटन की तरफ हो गया। वहां अज्ञान का पूरा साम्राज्य फैला हुआ था। जैन धर्म का तत्वज्ञान देकर उन्होंने सबको कृतार्थ कर दिया। खारे-पाटण में पांच दिन का पंचकल्याणिक हो गया। पंचकल्याण पूजा होते ही पू. गुरुदेव का विहार हो गया।

भूईबावड़ा में गुरुदेव पधारे। वहां एक घटना घटी-एक 35 साल की मराठा समाजकी महिला थी। उसके शरीर में व्यंतर बाधा प्रवेश कर गई थी कम से कम अठारह साल से उसको तकलीफ हो रही थी। उसके पति को जैन समाज के एक व्यक्ति ने कहा-'अरे भैय्या! यहां हमारे गुरुदेव पधारे हैं आप अपनी पत्नी को उनके पास ले जाइए। वो उनकी तकलीफ दूर कर देंगे।'

उसको भी आशा की किरण नजर आयी। शाम को सामायिक होते ही उस व्यंतर बाधित महिला को ले गए। उस समय वहां कोल्हापुर निवासी-डोर्ले एवं ब्रह्मचारी कुछ महिलाएं थीं। जैसे ही उसने गुरुदेव को देखा वैसे ही वह चिल्लाने लगी मेरे को यहां नहीं रहना है यहां डर लग रहा है। मेरे को बाहर ले चलो। गुरुदेव मौन थे केवल इशारे से णमोकार मंत्र बोलने के लिए कहा-वैसे ही वह चिल्लाने लगी-'अठारह साल हो गये मैं यहां रहती हूं अब मैं इनको छोड़कर कहां जाऊं? णमोकार मंत्र मैं नहीं जानती, मुझे नहीं आता।'

गुरुदेव ने मौन से संकेत किया-'णमोकार मंत्र बोले बिना यहां से जाने नहीं देंगे।' इतना कहकर मंत्रित चावल उसके ऊपर छिड़के वैसे ही वह और जोर से चिल्लाने लगी। वहां के सब लोग डर गए। बहुत देर बाद आखिर वह व्यंतर गुरुदेव के सामने कसम खाकर चला गया। उसके बाद फिर उस व्यन्तर ने उसे परेशान नहीं किया। बाद में वो दोनों पति पत्नी पू. गुरुदेव को कोल्हापुर तक छोड़ने गए। आज तक वे लोग अभी भी उनको याद करते हैं।

स्त्रीलिंग छेदन का अमोघ उपाय

(पू. आर्यिका राजुलमती माता जी की यम सल्लेखना)

जब पू. गुरुदेव ने कुरूंदवाड में चातुर्मास किया तभी से पू. आर्यिका राजुलमती माताजी वहीं रहती थी। क्योंकि उम्र हो चुकी थी वृद्धावस्था के कारण कहां विहार आना-जाना नहीं होता था। नियम सल्लेखना शुरू थी। धीरे-धीरे आहार कम करती आ रही थीं। शरीर क्षीण हो गया था। इसलिए पू. गुरुदेव बाहुबली महाराज जी कुरूंदवाड आ गए। माताजी ने महाराज जी के चरणों में सल्लेखना की प्रार्थना की। प्रकृति बहुत क्षीण हो गयी थी। पू. गुरुदेव ने सब देखकर यम सल्लेखना के लिए मुहूर्त देख लिया।

माता जी को यम सल्लेखना दे दी। उनका वास्तव्य (रहने की व्यवस्था) पाटील के खाली वाड़ा में कर दिया। सल्लेखना की आराधना शुरू हो गई। सल्लेखना के लिए साधु साध्वी आ गए। प.पू. मुनि श्री 108 आर्यनन्दी महाराज जी भी आ गए। श्रावक श्राविकाओं की भीड़ होने लगी।

सल्लेखना क्या चीज है? सल्लेखना यानि आत्महत्या? नहीं-सल्लेखना याने कषाय कृश करना एवं शरीर कृश करना। आत्महत्या में कषाय की तीव्रता रहती है। सल्लेखना में कषाय की मंदता रहती है माता जी को रोज पू. गुरुदेव जी उपदेश सुनाते थे। माताजी बहुत जाग्रत अवस्था में थीं पूरे दस दिन से सल्लेखना की आराधना शुरू थी। दिन पे दिन भीड़ बढ़ने लगी।

ग्यारहवां दिन था। माता जी आत्मध्यान में मग्न थीं। सुबह के आठ बजे थे अभिषेक का समय हो गया था। पू. गुरुदेव माता जी के पास गए और कहने लगे-'माताजी उठिए। अभिषेक का समय हो गया है।' वो बिल्कुल जागृत अवस्था में थीं। बोलीं-हाथ में पींछी लेनी होगी ना। माताजी तो अब स्त्रीलिंग पर्याय छेद करने में तत्पर थीं। गुरुदेव तो माताजी को क्षपकोत्तमा, सिद्धात्मा बोलते थे। यह नश्वर पर्याय तो छूटने वाली है केवल एक शाश्वत सिद्धात्मा को पाने के लिए माताजी ने महान सल्लेखना व्रत धारण किया था। माता जी केवल एक ही चिन्तन करती थीं-

एको मे शाश्वतश्चात्मा ज्ञान दर्शन लक्षणः।

'जो तो, तो मीएक स्वरूप' ॐ सिद्धाय नमः, सिद्धोऽहं, सिद्धोऽहं, सिद्धोऽहं ऽऽऽ

आज बोलने की भी शक्ति नहीं थी भगवान को देखते-देखते खुद भगवान के रूपमय बन गईं। इधर महाराज जी 'सिद्धोऽहं' मंत्र सुना रहे थे, अभिषेक हो रहा था। जहां तहां पंच णमोकार मंत्र का नाद गूंज रहा था। जैसे दीप बुझते समय देदीप्यमान तेज फैलाकर समाप्त होता है उसी प्रकार माताजी की अवस्था हुई इस नश्वर शरीर को छोड़ते समय उनके मुख मण्डल पर देदीप्यमान फैल गया और राजुलमती की आत्म ज्योति बुझ गई। अर्थात नश्वर देह छोड़कर शाश्वत पर्याय पाने के लिए लोप हो गया।

दुक्खक्खओ कम्मक्खओ समाहिमरणं च बोहिलाहो य।
मम होउ जगत बान्धव जिनवर तव चरण सरणेण॥
स्वः स्वं स्वेन स्थितं स्वस्मै स्वस्मात्स्वस्याविनश्वरे।
स्वस्मिन् ध्यात्वा लभेत्स्वेस्यमानंदममृतं परम्॥

नृसिंहवाड़ी पंचकल्याणिक प्रतिष्ठा 1979 (त्रिभुवन लाल कांच मंदिर)

माता जी की सल्लेखना होते ही नृसिंहवाड़ी के श्रावक आ गए और पू० गुरूदेव से कहने लगे-'गुरूदेव! वाड़ी में जिनमंदिर का काम पूरा हो गया हैं अब हमें उस मंदिर में जिनेन्द्र भगवान को विराजमान करना है यह हमें पंचकल्याण प्रतिष्ठा के लिए मुहूर्त निकालकर दीजिए। और यह प्रतिष्ठा आपके ही मार्ग दर्शन और सानिध्य में ही सम्पन्न होगी।

गुरूदेव बोले-'देखिए कुरूंदवाड की प्रतिष्ठा में हमारे गुरूदेव आचार्य रत्न देशभूषण जी नहीं आए थे। इस बार उनके बिना पूजा करनी ही नहीं हैं। ये पूजा उनके ही अधिनेतृत्व में होगी। इसलिए पहले आप कोथली जाकर पू० आचार्य श्री को आमन्त्रित करके आओ। कुरूंदवाड, मजेरवाडी और शिराढोण के चौके आएंगे। आहार की पूरी व्यवस्था ये लोग देख लेगें। आप लोग केवल लाने का काम करे। कुरूंदवाड के पाटील साहब को ले जाओ जिससे आचार्य श्री आ जाएंगे।'

नृसिंहवाडी के श्रावक हर्ष विभोर हो गए। राव साहेब पाटील इतर श्रावक आदि मिलकर आचार्य रत्न देशभूषण महाराज जी को ले आए। पू० आचार्य श्री विशाल संघ सहित अपने लाड़ले शिष्य का वैभव देखने आ गए। बड़ा पोस्टर निकाला गया। प० पू० देशभूषण आचार्य श्री के अधिनेतृत्व में एवं पू० मुनि श्री बाहुबली गुरूदेव जी के मार्गदर्शन में यह कार्यक्रम होने वाला था।

इस कार्यक्रम के तहत तीन इन्द्र इन्द्राणी बने थे। इन तीनों के नाम क्रमशः भोज निवासी चांदी के व्यापारी धर्मानुरागी श्री जंबूराव सौदंते, दूसरे म० प्र० नीमच के निवासी ने तथा तीसरे इचलकरंजी निवासी श्री गजकुमार उदगांवे थे। कुरूंदवाड के श्रावक तन मन धन से कार्य कर रहे थे। कुरूंदवाड के लोग तो पू० गुरूदेव जी को तीर्थंकर रूप में देखते थे। पूजा बहुत ही प्रभावात्मक हो रही थी। पहली बार इतना बड़ा मेला लगा हुआ था। ब्राह्मण लोगों ने अपने घर खाली कर दिए थे।

नृसिंहवाडी दत्तस्थान से प्रचलित है। लेकिन वास्तविकता यह है कि यहां तीन चार सौ साल पहले अकबर बादशाह के समय में एक महान विद्यावाचस्पति विद्यासागर मुनि महाराज हो चुके है। उनकी तपोभूमि थी यह पंचगंगा-कृष्णा नदी का संगम है। ऐसे पवित्र स्थान पर विद्यासागर जी विद्या साधना करते थे। तभी तो एक ही रात में दिल्ली राजधानी में जा विराजे थे। और जैन धर्म का डंका बजा दिया। तथा मुसलमान बादशाह के चंगुल से जैन धर्म को बचाया था। ऐसी पवित्र भूमि में पू० गुरुदेव बाहुबली जी ने त्रिभुवन लाल कांच मंदिर निर्माण कर धर्म की बड़ी जागृति की।

पंचगंगा के दो कंकर को शंकर का रूप देने गुरू पधारे

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के दौरान में (कुरूंदवाड निवासी कु० सुरेखा) पू० गुरूदेव के पास गई। और गुरू चरणों में याचना की-'गुरूदेव! मुझे ब्रह्मचर्य व्रत लेना हैं। आप मुझे संसार सिन्धु से पार कर दीजिए। सुनते ही गुरूदेव आवाक् रह गए। बोले-'बेटा! ब्रह्मचर्य व्रत लोगी यह अच्छी बात है। लेकिन ये व्रत मैं तुम्हें नहीं दूंगा। मेरे गुरूदेव प० पू० आचार्य देशभूषण जी महाराज आए हैं। आप उनके पास ये व्रत ले लो।' मैं प० पू० आचार्य रत्न देशभूषण जी के पास पहुंची। और बोली-'आचार्य श्री मुझे ब्रह्मचर्य व्रत लेना हैं आप मुझे कृतार्थ कीजिए।' मेरी बात सुनकर गुरूदेव अचम्भित हो गए। 'इतनी छोटी उम्र में ब्रह्मचर्य व्रत?' पू० आचार्य ने मुझसे पढ़ाई के बारे में पूछा तो मैंने स्पष्ट बता दिया कि मुझे आगे लौकिक पढ़ाई तो नहीं करनी है। आप मुझे केवल ब्रह्मचर्य व्रत दे दीजिए।

आचार्य श्री बोले- 'बेटी तुम बहुत बड़ा पुरुषार्थ कर रही हो। अभी हम दो वर्ष के लिए ब्रह्मचर्य व्रत दे रहे है। क्योंकि आप घर में बिना बताए व्रत ले रही हो। कुछ बाधा नही आनी चाहिए। इसलिए दो साल के लिए व्रत ले लो। आपकी दृढ़ता बढ़ गई तो फिर व्रत बढ़ा देंगे। सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। उसी समय कु० नूतन भी आ गई उसने भी दो साल के लिए ब्रह्मचर्य व्रत की प्रतिज्ञा ली।

पंचगंगा के किनारे दो कंकरों को वीतराग का रूप देने गुरूदेव स्वयं पधारे थे। यह एक अविस्मरणीय घटना थी।

पंचकल्याणक होते ही पू० गुरूदेव बाहुबली जी अपने गुरू आचार्य श्री देशभूषण के साथ विहार कर गए। कुरूंदवाड, बोरगांव, शमनेवाडी होते हुए पू० आचार्य श्री संघ सहित कोथली पहुंच गए। चातुर्मास की बेला समीप आ रही थी। बहुत से गांव के लोग आमंत्रित करने आए। पू० बाहुबली जी को इस बार हम ले जाएंगे। लोगों को पता नहीं लग रहा था कि इस बार आचार्य श्री पू० बाहुबली को कहां भेजते है।

बेलगांव, हुपरी, चिपरी, इचलकरंजी, भोज आदि स्थानों के श्रावकों ने अपने-अपने नम्बर लगा रखे थे पूज्य बाहुबली का चातुर्मास अपने यहां करने हेतु। पू० आचार्य श्री का उपदेश शुरू हो गया। इस बार पू० गुरूदेव की बाहुबली जी को कहीं भेजने की इच्छा नहीं थी। उपदेश होते ही श्रावक आगे बढ़ गए। बेलगांव के श्रावक सबसे आगे थे। हाथ जोड़कर आचार्य श्री से बोले- 'पूज्य आचार्य श्री इस बार हमारे गांव पर कृपा कर दीजिए। गुरुदेव बाहुबली महाराज जी को इस साल बेलगांव में भेज दीजिए।

'नहीं, इस बार हम बाहुबली को कहीं नहीं भेजगें। दो साल से बाहुबली बाहर ही चातुर्मास कर रहे है। इस बार उनका चातुर्मास हमारे पास ही होगा।' पू० आचार्य श्री ने अपना निर्णय सुनाया।

'आचार्य श्री आप इतने कठोर मत बनिये हमारे ऊपर दया कीजिए।' श्रावकों ने विनती की। आचार्य श्री ने बाहुबली को जैसे न भेजने की कसम खा ली हो।

श्री जयपाल अप्पाण्णावर, अनंताप्पा कलमनी, धर्मू कलमनी, महावीर चौंगुला, गम्भीर पदमन्नवर, वसंत चिक्कन्नवर, वसंत पदमन्नवर श्री चन्द्रकान्त कागवाड, आप्पासाहेब जड़ी, कोडचवाड, इंचल, कोमलण्णा दोड्डण्णावर, रामगौंडा, नेमन्नावर वकील आदि श्रावक तो बिल्कुल हठ पकड़कर बैठे थे। बोले- 'आप जब तक हां नहीं कहेंगे हम यहीं बैठे रहेंगे। खाना भी नहीं खाएंगे। आपसे आशीर्वाद का श्रीफल लेकर ही जाएंगे।' जब इतना कहने पर आचार्य श्री नहीं माने तब बेलगांव के श्री जयपाल अप्पाण्णवर उठ गए और बोले-'आचार्य श्री, आप बाहुबली महाराज जी को नहीं भेजोगे तो

मत भेजिए। आज से बेलगांव तथा कोथली का सम्बन्ध टूट गया। हम अब यहां कभी नहीं आएंगे।' सबकी ओर मुखातिब होकर बोले 'चलो आप-सब उठो और गाड़ी में बैठो।' ऐसे क्रोध में उन्होंने सबको उठा दिया और स्वयं चलने लगे तब आचार्य श्री बोले-'अरे अप्पाण्णावर! रुक जाओ, ले जाओ बाहुबली को।' तदनंतर बाहुबली महाराज जी की ओर संकेत करते हुए बोले-'बाहुबली आप बेलगांव जाओ। वो लोग रूठकर गए हैं।' बेलगांव के श्रावकों की कली खिल गई। सब हर्षित हो गए। पू० आचार्य श्री से बाहुबली महाराज जी को भेजने का आशीर्वाद मिल गया। इससे उन लोगों को इतनी खुशी हुई जो अवर्णनीय है।

बेलगांव चातुर्मास सन् 1979

बेलगांव का चातुर्मास 'न भूतो' हो गया। एक बार आहार के समय पू० गुरुदेव ने धारणा ली थी कि जिनके हाथ में सात पपड़ी हो उनके यहां आहार को जाएंगे। उस दिन बहुत घूमे लेकिन कहीं भी धारणा नहीं मिल पायी। उस दिन उपवास हो गया। बेलगांव के तरुण, प्रौढ़, बच्चे, बूढ़े आदि सभी लोग घबरा गए। ऐसी कौन सी धारणा हैं? अब क्या करें, महाराष्ट्र-कोल्हापुर की तरफ दशहरा के समय गुंजिया पपड़ी बनाते हैं। बेलगांव की तरफ के लोगों को पता नहीं था वहां पर यह सब नहीं बनता था। उसी दिन कोल्हापुर साइड के लोग चौका लगाने आ गए। उनको भी पता चला कि धारणा नहीं मिलने से उपवास हो गया। उन्होंने अपनी पद्धति से दशहरा के निमित्त गुजिया पपड़ी बनाई और पड़गाहने खड़े हो गए। आहार के समय बहुत भीड़ थी अब आज क्या होता हैं? महाराज जी का आहार होगा या नहीं? जैसे ही गुरूदेव आहार चर्या के लिए निकले वैसे ही उनके पीछे भीड़ लग गई। चौके वाले सब डर गए सब जोर-जोर से 'भो स्वामी अत्र-अत्र' आदि कहकर पड़गाहने लगे। महाराज की नजर सबकी थाली में थी जैसे ही महाराज की नजर पपड़ी की थाली पर गई वैसे ही उन लोगों के सामने आकर खड़े हो गए। महाराज जी के पड़गते ही लोग जय-जयकार बोलने लगे। महाराज जी का आहार निरन्तराय हो गया। सब बड़े प्रसन्न थे।

पपड़ी की धारणा करके
आहार को गुरुवर निकले
एक दिवस तो बीत गया
धारणा के बिन उपवास हुआ
श्रावक गण व्याकुल भए
सारे दिन चिन्ता में रहें
दूजे दिवस मुनिवर निकले
पपड़ी थाली में देख रुके
झट से फिर वो पड़ग गए।

मेरे से छोटे हैं और मैं उनको नमस्कार करूं?

यह घटना बहुत मजेदार है। पू० गुरूदेव जी का चातुर्मास बेलगांव में था। वे आहार के लिए कभी-कभी शाहपुर जाते थे। वहां जयाप्पा पत्रावली नाम के एक सद्गृहस्थ थे। वे धार्मिक होने के बावजूद पू० बाहुबली महाराज जी को नमस्कार नहीं करते थे। उनका कहना था कि मैं 75 साल का हूं और बाहुबली मुझसे बहुत छोटे है। तो में उनको नमस्कार कैसे करूं?' इसलिए तो वह महाराज जी के पास आते ही नहीं थे। क्योंकि यदि उनके पास गए तो नमस्कार करना पड़ेगा। लेकिन यह बात पूज्य गुरुदेव को मालूम नहीं थी।

एक बार उनके यहां चौका लगा। संघ के इतर साधुओं का आहार हो गया लेकिन चौका लगते-लगते आठ दिन हो गए महाराज जी का आहार नहीं हो पा रहा था। घर में उनकी पत्नी बोली- 'हमारे घर महाराज श्री का आहार नहीं हो पा रहा है। ऐसा शायद इसलिए है कि आप वहां जाते नहीं है।'

जयाप्पा पत्रावली बोले- 'महाराज जी का आहार हो या न हो। मैं न तो वहां जाऊंगा और न ही उन्हें नमस्कार करूंगा।' उनकी पत्नी बोली-वो तो गुरु हैं, दीक्षा होने के बाद छोटे बड़े का फर्क नहीं रहता। अपने धर्म में गुणों की पूजा होती है। उम्र से क्या लेना देना। इसलिए आपको नमस्कार करना चाहिए।' लेकिन वह नहीं माने।

नौंवे दिन पू० गुरुदेव आहार चर्या के लिए निकले। पीछे-पीछे युवकों की भीड़ लगी थी। आज गुरुदेव की धारणा अलग थी उनकी निगाह किसी को ढूंढ रही थी। जयाप्पा पत्रावली रोज की तरह दूर खड़े रहकर कौतूहल वश देख रहे थे कि महाराज जी मेरे घर जाते हैं या नहीं। गुरुदेव की नजर दूर खड़े पत्रावली पर गई। वे पत्रावली के सामने जाकर खड़े हो गए। गुरुदेव को एकाएक सामने देखकर वह बौखल्ला गए-'अब मैं क्या करूं?' यंत्रवत कब उनका मस्तक झुक गया कब उन्होंने हाथ जोड़ लिये वह समझ नहीं पाए। फिर साष्टांग नमस्कार करके कहने लगे-'गुरुदेव! मुझे क्षमा कीजिए मैंने आपका बहुत अनादर किया है।' लोगों ने उनसे कहा-'पत्रावली उठो और महाराज जी को पड़गाओ' उन्होंने खड़े होकर कांपते हुए तीन परिक्रमा लगाई। और उन्हें अपने घर ले गए। आहार होने तक वह बस यहीं कहते रहे-'गुरुदेव आप आहार शान्ति से लीजिए और हमें माफ कर दीजिए।' आहार हो जाने के बाद वे गुरूदेव को जिनमंदिर तक छोड़ने गए। उस दिन उनका अज्ञान-तम दूर हो गया।

हिंडलगा कारावास में कैदी लोगों को गुरूदेव का अनमोल उपदेश

श्री चन्द्रकान्त कागवाड, अप्पण्णावर, कलमनी आदि लोगों के पास कारावास के मुख्य अधिकारी आए और बोले 'क्या आप अपने दिगम्बर गुरूदेव को जेल में ला सकते हो, ताकि वहां के कैदी उनके अनमोल उपदेश से लाभान्वित हो सकें। सभी ने गुरूदेव को आमन्त्रित किया। उपदेश के लिए कारावास जाने की तारीख निश्चित हो गई।

आहार एवं सामायिक होते ही पू० गुरूदेव उपदेश के लिए निकल पड़े। बच्चे बूढ़े और जवान सभी उनके साथ जाने को उत्साहित थे। लोगों की भीड़ गुरूदेव के पीछे थी। जिन मंदिर से कारावास छः कि०मी० दूरी पर था। कोई बस से कोई अपनी गाड़ी से और कुछ पैदल गुरूदेव के साथ चल पड़े थे।

कारावास में गुरुदेव पहुंचे। सारे कैदी मैदान में बैठे थे। सबने सफेद रंग के खादी के कपड़े पहन रखे थे। कुछ कैदी महिलाएं भी थी। जिन्होंने बड़े अपराध किए थे उन्हें जाली के अन्दर बिठाया गया था।

मंगलाचरण होते ही पू० गुरूदेव का उपदेश शुरू हो गया। 'धर्म प्रेमी भव्यात्माओं। आज हम आपको उपदेश देने नहीं आए है बल्कि खुद को उपदेश देने आए हैं हमारे साथ जितने भी लोग आए है यह उपदेश सुनने नहीं आए बल्कि गुनहगारों को देखने आए है। लेकिन मैं कहता हूं कि केवल आप ही लोग अपराधी नहीं है हमारे साथ जितने भी लोग आए है वे सब अपराधी हैं जेलर साहब भी अपराधी है। यहां तक की हम भी अपराधी हैं।' लोग जोर-जोर से हंसने के साथ ताली बजाते रहे। कुछ देर शान्त रहकर वह पुनः बोले-'आप लोग पूछोगे कि हम अपराधी किस तरह हैं?' जब तक इस तन में है ऐसी पर्याय मिलती रहेगी तब तक हम अपराधी बने रहेगें। ऐसी पर्याय हमें अष्ट कर्म की श्रृंखला में जकड़े होने की वजह से मिलती है। इसे दूर किए बिना मुक्ति नहीं है।

बंधुओं हमारे साथ आए हुए सभी श्रावक लोग केवल आप लोगो को ही अपराधी समझकर देखने आए है। लेकिन मैं कहता हूं कि आप बड़े गुनहगार है तो ये छोटे गुनहगार। क्योंकि ये लोग सभी पंच पाप करते है। झूठ बोलते है, चोरी करते है, हिंसा करते है, व्यभिचार करते हैं, परिग्रह बढ़ाते हैं। लेकिन ये सब काम छिपकर करते हैं। पाप करते समय किसी को पता नहीं चलता है। बन्धुओं अपना सौभाग्य समझो कि सन्त की वाणी सुनने को मिल रही है। अब आप लोग चेतो। पाप मत करो, पाप से ही आप लोगों को कारावास मिला है। अर्थात् इस लोक में दुख और परलोक में भी दुःख ही मिलेगा। इसलिए पाप करना छोड़ो।

आपका सौभाग्य का सूर्य उदित हो रहा है। उठो, जागो इस राग-द्वेष आदि कषाय की चादर को उतारो, फेंक दो। तुम लोगों में नारायण का रूप छिपा हुआ है। उसे खोजो। आपका दीपक बुझ रहा हैं उसे बुझने मत दो। यह जीवन थोड़ी देर का हैं पता नहीं कब किस वक्त यहां से विदा हो जाना पड़े। इसलिए सम्यक पुरुषार्थ करो। पाप करते समय पसीना नहीं आता। पाप का फल भोगते समय पसीना आता हैं ऐसा क्यों? देखिए आप लोगों को पाप करते समय पता नहीं चलता। मात्र उसका फल अभी आप लोग भोग रहे है। भोगते समय पता चलता है, जब जेलर साहब के डण्डे आप पर पड़ते है। तब पता चलता है कि मैंने ऐसा पाप क्यों किया। पाप एक घण्टा किया होगा लेकिन उसका फल एक या दो नहीं दस साल का कारावास मिला। अब पाप करना छोड़ दो। हम सबको-आशीर्वाद दे रहे हैं आपका जीवन मंगलमय हो, सुखमय हो, धर्ममय हो।

गुरुदेव का उपदेश सुनते समय सब कैदी ऐसे रो रहे थे मानो सावन की झड़ी लगी हो। सब लोगों ने गुरुदेव से नियम ले लिया-'गुरुदेव! आज से हम कभी भी पाप नहीं करेगें। इस कारावास से हमारा जल्दी छुटकारा हो ऐसा उपदेश दीजिए। उस दिन काराग्रह के 550 कैदियों ने कभी अपराध न करने की कसम खायी। कारावास के सुपरिटेन्डट श्री डी. एस. सांगवी ने आचार्य श्री के चरणों में पुष्प अर्पित किये। माणिक बाग बोर्डिंग की ओर से सब कैदियों को नारियल, केला प्रसाद दिया गया।'

कारावास में मुनिवर ने
कैदियों को उपदेश दिया।
अन्तर्मन सुन जाग गया,
आंसुओं की लग गई झड़ी।

आचार्य पद-स्वरूप

प० पू० भरत गौरव आचार्य रत्न देशभूषण जी महाराज अपने संघ सहित भगवती आराधना ग्रन्थ का स्वाध्याय कर रहे थे। वार्धक्य अवस्था होने से अब ज्यादा विहार आदि नहीं होता था। ऐसी अवस्था देखकर भगवती आराधना का आधार लेकर जब अपना भार देकर निवृत होना चाहते थे। आचार्य, अपनी आयु अभी कितनी रह गई हैं उसका विचार करके कषायों को कृष करते-करते इस अपवित्र शरीर को त्याग करने का विचार करने लगते है। आचार्य बहुत गम्भीर सागर के समान होते हैं। उनके संघ में बहुत से शिष्यगण होते है। उन सभी शिष्यगणों में से चुनौती स्वीकार करके जो शिष्य आचार्य के सानिध्य में 15-20 साल तक रहकर अत्यन्त विनम्रता से गुरुसेवा, वैय्यावृत्य, आज्ञापालन, क्षमाशील तत्ववेत्ता, सहनशीलता, व्यवहार कुशल आदि सर्व गुणों से सम्पन्न हो। उनको आचार्य श्री अपने मन में अन्वेषित करके अपने पद पर नियोजित करते है। उन्हीं साधु को ही आचार्य श्री बालाचार्य पद्वी देते है। बालाचार्य का अर्थ तो स्पष्ट

हैं-पूर्व आचार्य के पीछे यानि उनके पद पर ये बालाचार्य ही इस संघ के पालन कर्ता हो जाएंगे। आचार्य पद इन्हीं को ही प्राप्त होगा। आचार्य श्री ने अपने स्थान पर स्थापित किया हुआ शिष्य जो परलोक का उपदेश करके मोक्ष मार्ग में भवों को स्थिर करता है। गणनायक आचार्य ने यावज्जीवन आचार्य पद्वी का त्याग करके अपने पद पर स्थापा हुआ और आचार्य के समान जिसका गुण समुदाय हैं ऐसा जो शिष्य उनको दिशा अर्थात् बालाचार्य कहते है। उन बालाचार्य की और अपने संघ के मुनीजनों को पूर्वाचार्य बुलाकर अपने विचार को व्यक्त करते है।

कालं संभाविता सत्वगणमणुदिसं च वाहरिय।
सोमतिहिकरण णक्खत्तावि-लग्गे मंगलोगासं॥275॥ भ.आ.

अपनी आयु की स्थिति विचारकर समस्त संघ को और बालाचार्य को बुलाकर शुभ दिन, शुभकरण, शुभ नक्षत्र और शुभ लग्न तथा शुभ देश में-

गच्छाणु पालणत्थं आहोहय अन्तगुणसमं भिक्खू।
तो तम्मि गणविसग्गं अप्पकहाए कुणदि धीरो॥276॥ भ.आ.

अपने गुणों के समान जिसके गुण है। ऐसा वह बालाचार्य गच्छके पालन करने के लिए योग्य है ऐसा विचार कर उस पर अपने गण को विसर्जित करते है अर्थात् अपना पद छोड़कर सम्पूर्ण गण को बालाचार्य के लिए छोड़ देते है अर्थात् बालाचार्य जी यहां से उस गण का आचार्य समझा जाता है। उस समय पूर्वाचार्य उसको थोड़ा सा उपदेश देते है।

अव्वोच्छित्तिणिमित्तं सव्वगुण समोयरं तयं णच्चा।
अणुजा जाणेदिदिसं सो एस दिसा वोत्ति बोधित्ता॥277॥ भ.आ.

धर्म तीर्थ रूप सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र स्वरूपी है। इसका नाश नहीं होता हैं। इसकी परिपाटी अखण्ड रूप से चलनी चाहिए। इसलिए बालाचार्य को सर्व गुणों से परिपूर्ण समझकर यह तुम्हारा आचार्य है ऐसा गण को समझाते है। यदि पूर्वाचार्य अपने स्थान में अपने योग्यता के धारक शिष्य की योजना बिना करके ही समाधीमरण के लिए संघ को छोड़कर चले जाऐंगे तो सम्पूर्ण गण के रत्नत्रय धर्म का नाश होने से धर्म तीर्थ का ही विच्छेद होगा। अत· मेरे स्थान पर मैंने इस योग्य शिष्य को प्रतिष्ठित किया हैं और यह अब तुम्हारे आचार्य है। ऐसा कहकर वे सर्वगण की क्षमा मांगते है।

पू० आचार्य श्री बहुत थक गए थे इसलिए वे सोच रहे थे अब बाहुबली को ही यह भार देकर मैं निश्चिन्त हो जाऊं। सभी को बुलाकर उन्होंने अपना विचार बता दिया। वृद्धावस्था की दशा में साधना की चरम परिणति रूप आचार्य पद का त्याग आवश्यक जानकर ही वे अपना पद बाहुबली को देना चाहते थे। क्योंकि पू० बाहुबली मुनि महाराज जी में आचार्य के गुण देखकर अष्ट प्रवचन मातृका देखकर ही अपना पद देना चाहते थे।

आचार्य पद कोथली क्षेत्र पर 26 जून 1980 में

आचार्य श्री वीरसेन स्वामी ने आचार्य के गुण गिनते हुए बताया है, कि 'आचारांगधरो वा तात्कालिक स्वसमय पर समय पारगो वा मेरूरिव निश्चलः, क्षितिरिव सहिष्णुः सागर इव बहिक्षिप्तमलः सप्तभय विप्रमुक्तः आचार्यः।

अर्थात् जो आचारांग के धारक हो, तत्कालीन जिनागम के अन्य शास्त्रों में पारंगत हो। मेरु समान सहनशील और सागर के समान मल दोषों को दूर करने वाला हो, सात प्रकार के भय से रहित हो वह आचार्य है।' ये सभी गुण गुरु ने अपने शिष्य बाहुबली में पाए थे।

अतः पू0 आचार्य श्री ने 'त्रिलोक मण्डल विधान' की रचना दिनांक 25 जून 1980 से 2 जुलाई 1980 तक करवाई। और उसी बड़े कार्यक्रम में शुभ दिन, शुभकरण, शुभ नक्षत्र और शुभ लग्न में अर्थात् दिनांक 26 जून 1980 के दिन ब्रह्म मुहूर्त में गणधर वलय विधान करके प0पू0 भारत गौरव, धर्मनेता आचार्यरत्न श्री 108 देशभूषण महाराज जी अपने करकमलों द्वारा प0पू0 बाल ब्रह्मचारी श्री 108 बाहुबली महाराज जी को दोपहर दो बजे- बालाचार्य पद प्रदान किया।

उस पद समारोह में हजारों श्रद्धालु जनों की भीड़ उमड़ गई थी। चारों ओर आनन्द एवं हर्ष का वातावरण छा गया था। सभी के मन में एक नई खुशी की लहर थी। पूरी सभा जयघोष से गूंज उठी। हर्ष और खुशी का वातावरण बन गया। आध्यात्मिक विकास के क्षेत्र में आचार्य पद की बड़ी प्रतिष्ठता है। मूलाचार में लिखा है-'जो निर्ग्रन्थ मुनि ज्ञान, दर्शन, वीर्य तथा तप और चारित्र रूप पंच आचारों का निरतिचार पूर्वक पालन करता हैं, दूसरों को इन पंच आचारों में लाता है तथा इनका उपदेश देता हैं उसे आचार्य कहते हैं।' धवला टीका में लिखा है-'जो पंचविधि आचार का पालन करते हैं दूसरों से पालन कराते हैं उन्हें आचार्य' कहते हैं।

'महावंध के मंगल श्लोक में लिखा हैं, जिन्होंने रत्नत्रय रूपी तलवार के प्रहार से मोहरूपी सेना के मस्तिष्क को विदीर्ण कर दिया है तथा भव्य जीवों का परिपालन किया है वे आचार्य महाराज प्रसन्न होवे। आचार्य परमेष्ठी का वीतराग शासन होता है। जबकि राजाओं का सराग शासन होता है। आचार्य महाराज के शासन में रहने वाला गुरू प्रसाद से स्वर्ग, मोक्ष की सामग्री को प्राप्त करता हैं किन्तु राजा के प्रसाद में ऐहिक कुछ सामग्री मिल जाती है। राजा प्रसन्न होने पर हाथी, भूमि का दान देता है किन्तु आचार्य गुरुदेव प्रसन्न होते हैं तो वे शिष्य को अपने समान बना लेते हैं। इस प्रकार इन आचार्य परमेष्ठी के साथ तुलना करने पर राजा बहुत ही लघु ज्ञात होता हैं। इसी से राजा भी इन महाप्रभु के चरणों की रज के द्वारा अपने जीवन को धन्य मानता है।

प0 पू0 आचार्य देशभूषण महाराज जी ने अपने प्रवचन में ही उस दिन बताया-'बाहुबली महाराज हमारे पास कम से कम 20-25 साल से हैं उनका आचरण, सेवा, ध्यान, अध्ययन, संघ का भार संभालना आदि को देखकर ही मैंने उन्हें बालाचार्य याने भावी आचार्य पद देकर विभूषित किया है। अब आज से ये दीक्षा-शिक्षा आदि देने में योग्य हो गए।

केवल आचार्य परमेष्ठी ही शिक्षा दीक्षा दे सकते है सामान्य मुनि को यह अधिकार नहीं है। जब पू0 बाहुबली महाराज जी आचार्य पद से विभूषित हो रहे थे उस समय भोज निवासी श्री जंबूराव सौदत्ते ने खुद आगे होकर सब कार्य किए।

पू0 बाहुबली जी जब गुरुदेव के इस भार को धारण करने के लिए किसी भी हालत में तैयार नहीं हुए तब आचार्य देशभूषण जी ने सम्बोधित कर के कहा कि-'बाहुबली, तुम्हें आज गुरु दक्षिणा अर्पण करनी होगी और उसी के प्रतिफल स्वरूप यह पद धारण करना होगा।' गुरु दक्षिणा की बात से मुनि श्री बाहुबली जी निरुत्तर हो गए। तब धन्य हो गयी कोथली क्षेत्र कर्नाटक की वह घड़ी 26 जून 1980। आचार्य रत्न श्री देशभूषण जी ने अपने करकमलों से बालाचार्य (भावी आचार्य) पद पर मुनि श्री बाहुबली जी महाराज को संस्कारित कर विराजमान किया।

बालाचार्य माने पू0 गुरुदेव आचार्य श्री सल्लेखना लेने से पूर्व तक बालाचार्य पद रहता है। गुरु सल्लेखना लेने के बाद ये ही बालाचार्य आचार्य पद पर आसीन हो जाते है। जैन समाज के वर्तमान, काल में ज्ञात इतिहास की वह प्रथम घटना थी। पू0 आचार्य देशभूषण जी ने अपने शिष्य को ' क ख ग' से पढ़ाया, सिखाया और उसे अपना आचार्य पद अपने ही कर कमलों से संस्कारित करके प्रदान किया -

आचार्य पद का भार कठिन
गुरूवर हम न करेगें वहन
गुरूवर समझाकर हारें
बाहुबली जब नहीं माने
गुरूवर ने इक बात कहीं
गुरू दक्षिणा मांग ली
सुनकर वो हो गए चुपचाप
सहर्ष मान ली गुरू की बात
लोगों में आनन्द छाया
सबने किया जय जयकारा॥

नरवीर-चारित्र चक्रवर्ती

प0 पू0 आचार्य श्री शान्ति सागर महाराज जी का जीवन हम सभी के लिए एक दीप स्तंभके समान मार्ग दर्शन करने वाला था। उनके जीवन रूपी सागर में से एक अंजुली पानी जितना भी आचरण अपने जीवन में अति हितकारक होगा।

आकाश में सूर्योदय हो गया परन्तु भूतल पर सुर्यास्त हो गया। आचार्य श्री युगपुरूष थे। अपने आचार और विचार से ही धर्मयुग का निर्माण किया। अज्ञान फैला हुआ था, अविचार बढ़ता जा रहा था। आचार लोप होता जा रहा था। स्वप्न झूठे होते जा रहे थे, सत्व का अस्तित्व निकलता जा रहा था, अंगारे पर राख चढ़ती जा रही थी। आचार्य श्री जी ने फूंक मार दी, तेज फैलता गया, सुविचार बोंते गए, सदाचार रूपी अंकुर की उत्पति होती गई। उसके लिए छोटा बड़ा, अमीर-गरीब, ऐसा कुछ भेद नहीं किया। सभी को धर्म वृक्ष की छाया में ले आए, उनका सन्ताप दूर किया।

आचार्य श्री शान्ति के सागर थे। उनके मस्तक में लोकत्तम सिद्ध और मन में लोकोत्तम अर्हन्त सदैव वास करते थे। इसलिए समाधिमरण वीर मरण के समान घोर तप शान्त परिणाम से किया। मृत्यु का चुम्बन लेने वाले अनेक महापूरूष हैं लेकिन इस मृत्यु को स्वतः होके बुलाना और उसका मार्ग प्रतीक्षा करना कितना धैर्य का काम है। उसमें भी फिर 'मैं तैयार हूं' ऐसा कहकर निर्विकार होना और अखण्ड आत्मचिन्तन में रहना महादिव्य। वह महादिव्य आचार्य श्री ने किया।

प0 पू0 गुरूदेव आचार्य रत्न देशभूषण महाराज जी को वे धर्मसूर्य कहते थे। पं0 सुमेर चन्द दिवाकर ने (सिवनी) आचार्य श्री को संयम, सम्यक्त्व, और सद्बोध अमृत पिलाने वाले पावन चरण उग्र तपस्वी, साधु शिरोमणि कहकर सहस्त्रोबार प्रणाम किया।

8 सितम्बर 1955 गुरुवार याने गुरु का दिन । केवल 22 मिनट में आचार्य श्री ने ऐसा अमर संदेश दिया जो आगे आने वाली 22 पीढ़ियों के लिए हितकारक होगा। बोलने का वेग गंगा नदी के प्रवाह के समान था। शब्द अल्पक्षरी लेकिन बहुअर्थी थे। अंतरंग से निकलकर मुखकमल से प्रस्फुटित हो रहे थे।

'सम्यक्त्व धारण करो। आत्म कल्याण करो। सत्य में ही सम्यक्त्व हैं और अहिंसा में ही संयम है। डरो मत निर्भय रहो।' आचार्य की वाणी जिसने भी सुनी वह धन्य हो गया, जिसने उनके शब्दों को आचरण में ढ़ाला उन्होंने अपने जीवन को मोती बनाया क्योंकि वे अनुभव के वचन थे। आचार्य श्री ने पहले चर्या की, तत्पश्चात चर्चा की, वह व्यर्थ बड़-बड़ नहीं थी। अनुभावित जीवन दर्शन था। वे स्वयं मौन थे पर उनका आचरण बोलता था। इसलिए वे नरवीर चारित्र चक्रवर्ती हो गए।

मृत्यु की गोद में आसन लगाकर उन्होंने जो चार शब्द कहे वे अमूल्य थे उनका जीवन ही सच्चा संदेश था। उनके आदर्शों पर चलने में ही अपना हित है।

प०पू० आचार्य श्री का स्मारक

आज भी यहां वहां से लोग आचार्य श्री शान्ति सागर की जन्म भूमि भोज नगरी आकर यहां की पवित्र धूल को मस्तक पे लगाकर खुद को धन्य समझते है। इस महा विभूति की याद के लिए हमें उनका स्मारक बनाना जरूरी हैं जिससे हमारी अनेकों पीढ़ी उनके गुणों को याद करती रहेगी।

इतना सुनते ही सभी लोगों में एक विशेष प्रकार का उल्लास समा गया। जय जयकार की ध्वनि से आवाज गूंज उठी। सभी श्रावकों का मत एक हो गया और उन्होंने आचार्य श्री बाहुबली जी से कहा कि-'आचार्य श्री का स्मारक बनाने के लिए हम सभी मिलकर कार्य करेंगे आप हमें आशीर्वाद दीजिए।' आचार्य श्री के स्मारक की बात पक्की हो गई। आचार्य बाहुबली जी के साथ मुनि श्री महाबल जी भी थे। उसी चातुर्मास में गांव के बाहर गलतगा जाने की रोड पर जिन मंदिर से एक कि०मी० दूरी पर स्मारक के लिए दो एकड़ जगह ले ली।

प० पू० की आचार्य श्री बाहुबली जी एवं महाबल जी के सानिध्य मे भव्य स्मारक की नींव

विजयादशमी के शुभ दिन स्मारक की नींव भरनी थी श्रीमान दानवीर श्रावक रत्न संघपति श्री जम्बूराव रत्नाप्पा सौदत्ते तथा धर्मपत्नी सौ० सोनूबाई जम्बूराव सौदत्ते इन दम्पत्ति ने स्मारक की नींव भरवाई। स्मारक के लिए धन की जरूरत थी। दान के बारे में पू० आचार्य रत्न बाहुबली जी एवं मुनि श्री महाबल जी का रोज उपदेश होता था। शक्ति के अनुसार लोग दान करने लगे। हुपरी की फिरगान शानाक्का ने अपने हाथ के सोने के कंगन निकालकर दान में दे दिए। पू० आचार्य श्री ने स्मारक का काम अपने ऊपर ले लिया। और काम बड़े स्तर पर जारी हो गया।

शिष्य से गुरु की ओर

पू० आचार्य श्री के साथ तीन चार साल से इंगली के सुरेन्द्र ब्रह्मचारी संयम साधना में लगे थे। वे सात्विक वृति के बाल ब्रह्मचारी थे। उन्हें तत्वज्ञान आता था। इसलिए आचार्य श्री के चरणों में दीक्षा की याचना की। धर्म के प्रति उनके लगाव ध्यानाध्ययन देखकर आचार्य श्री ने दीक्षा के लिए स्वीकृति दे दी।

क्षुल्लक दीक्षा के लिए शुभ मुहूर्त देखकर ब्र० सुरेन्द्र जी को क्षुल्लक दीक्षा प्रदान की। अब वे शिष्य को शिक्षा देकर गुरू बन गए। इस प्रकार वे विविध प्रकारेण धर्म प्रभावना करते हुए तीर्थों की वन्दना करते हुए जन-जन का कल्याण कर रहे हैं। उन्होंने अनेकानेक भव्य जीवों को सद्उपदेश देकर सत्यमार्ग का दिग्दर्शन किया। उनकी इस प्रकार

की धर्मप्रभावना से जनमानस प्रभावित हो, मन्त्र मुग्ध हो रहा था। ब्र0 सुरेन्द्र को क्षुल्लक दीक्षा देकर उन्होंने पू0 श्री 105 शान्ति सिन्धु जी' नाम से विभूषित किया। जैसा नाम था वैसा ही उनका स्वभाव था। अब गुरू शिष्य दोनों विहार करने लगे।

क्षुल्लक पद की दीक्षा देकर
बाहुबली बन गए गुरुवर
आतम का कल्याण करो
कहते जीवन है नश्वर।

अकलूज पंचकल्याणक एवं भ. महावीर कीर्तिस्तंभ निर्माण

अकलूज में जीवनचन्द दोशी परिवार भगवान अनन्तनाथ का पंचकल्याणक करने वाले थे इसलिए पू0 आचार्य श्री को आमन्त्रित किया। वे ससंघ अकलूज की तरफ विहार कर गए। श्री हीराचन्द्र एवं श्री माणिकचन्द बन्धुद्वय ने पंचकल्याणक करवाए, जिसकी बहुत धर्मप्रभावना हुई। 30.12.80 के शुभ दिन पू. आचार्यश्री ने अपने मधुर उपदेश से वहां के नवयुवकों के मन में एक प्रकार की ऐसी चेतना भर दी जिससे नवयुवक मंडल जागृत हो गया। इसी दिन 'बाहुबली सेना' की स्थापना गुरुदेव की प्रेरणा से हुई और भ. बाहुबली जिनमंदिर के समीप चौराहे पर 'भ. महावीर कीर्तिस्तंभ' तथा प्याऊ निर्माण हेतु भी प्रेरणा इन्हीं से मिली। वहां से आते ही कुरूंदवाड के पास विद्यासागर समाधि भूमि मजरेवाडी में आ गए। वहां जिनमंदिर का जीर्णोद्धार पंचकल्याणक पूजा थी।

मजरेवाडी सन् 1983

वहां के श्रावक गुरुभक्त भाविक थे। गुरुदेव के प्रति उन लोगों की असीम श्रद्धा थी। वे गुरुदेव की आज्ञा के बिना कुछ नही करते थे। छोटा गांव, छोटा समाज था। वहां के श्रावक कुबेर भले ही नहीं थे लेकिन उनका मन कुबेर था। पू0 आचार्य श्री जहां भी जाते थे वहां मजरेवाडी की दो-तीन महिलाएं अपना चौका लेके जाती थी। दोनों ही वृद्ध महिलाएं एक शकु आत्या और एक गुणवंती बाई ये दोनों बड़े जतन से चौका लगाती थी। देशभूषण महाराज जी तो जब-जब आते थे तो उनसे पूछते थे- 'मिर्ची लेकर नहीं आई क्या?' ऐसा कहकर मजाक करते थे।

वीर सेवादल का दीप स्तम्भ वीराचार्य बाबा साहेब कुचनूरे ने गुरू चरणों में दीक्षा की भावना व्यक्त की सन् 1983

पंचकल्याणक पूजा बड़ी धर्मप्रभावना से सम्पन्न हो रही थी। गुरूदेव के दर्शन के लिए बाबासाहेब कुचनूरे आ गए। उस दिन भगवान आदिनाथ के दीक्षा कल्याणक का दिन था।

बाबा साहेब कुचनुरे, गणेशवाडी के रहने वाले वकील थे। उन्होंने प0 सुमेर चन्द दिवाकर (सिवनी) द्वारा लिखा हुआ आचार्य शान्ति सागर महाराज जी की जीवन गाथा चारित्र चक्रवर्ती ग्रंथ पढ़ा। वह ग्रन्थ पढ़ते ही उनका मन वैराग्य की ओर मुड़ गया। वकीली करते समय झूठ बोलना पड़ता था। इसलिए वकीली करना हमेशा के लिए छोड़ दिया। और गुरू का आशीर्वाद लेकर युवा वर्ग को इकट्ठा करने लगे। प्रत्येक गांव-गांव जाकर धर्म संस्कार धर्म ज्ञान का पाठ युवा वर्ग को देने लगे। धीरे-धीरे युवा वर्ग की संख्या बढ़ने लगी। व्यसन मुक्ति का पाठ पढ़ाया। व्यसनों में लिप्त युवा वर्ग

सन्मार्ग धारण करने लगे। युवा पीढ़ी सुधरने लगी। दस बारह हजार युवकों ने संगठित होकर 'वीर सेवा दल' नाम से एक मध्यवर्ती केन्द्र बनाया और प्रत्येक गांव में इसकी शाखा खुलने लगी। बाबा साहेब आ गए तो उस गांव के युवावर्ग मंत्रमुग्ध होकर उनकी बात सुनते थे।

ॲड. बाबासाहेब ने पट्टणकुड़ी पंचकल्याणक में प0 पू0 आचार्य रत्न बाहुबली महाराज जी के पास आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया था। उनका जीवन बिल्कुल सादा था। बाबा साहेब मजरेवाडी में पू0 गुरूदेव के पास आ गए। वह कुछ पाने के लिए आए थे। त्रय भक्ति पूर्वक गुरूदेव को नमस्कार किया और बोले-'गुरूदेव, दीक्षा लेने की प्रतिज्ञा आपके चरणों में कर रहा हूं।' आचार्य श्री बोले-'बाबा साहेब। आप जब बोलोगे हम तब दीक्षा दे देगें।'

उसी दिन भगवान आदिनाथ जी का आहार दान था। आहार दान का कार्यक्रम बड़े हर्ष के साथ सम्पन्न हो गया। भगवान के आहार के बाद पू0 गुरूदेव आहार चर्या के लिए धारणा लेकर निकले। पूरे गांव में घूम रहे थे। लेकिन धारणा नहीं मिल पा रही थी। हम दोनों ब्रह्मचारणियों ने उसी दिन आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया था। इसलिए उन्होंने दो कुंवारी ब्रह्मचारणियों की धारणा ले ली। लेकिन यह बात हम लोगों को मालूम नहीं थी। हम लोग चौके में थे। वहां नांदणी के भट्टारक जी जिनसेन महास्वामी जी मुझसे बोले 'बेटा। जाओ नीचे जाकर देखो। महाराज जी की धारणा नहीं मिल रही।' हम दोनों वहां गए। हमारे जाते ही महाराज जी पड़ग गए। सच में गुरूदेव ने दो ब्रह्मचारणियों की धारणा ली थी। श्री आदगोंडा पाटील के घर गुरूदेव का आहार हो गया। बड़ी असीम धर्म प्रभावना हुई।

एकच रात जाय दिल्ली

पू0 गुरूदेव आचार्य श्री ने अपने प्रवचन में ही विद्यावाचस्पति तपोनिधि विद्यासागर मुनिराज की महत्ता बताते हुए कहा था-अकबर बादशाह के समय के घोर तपस्वी, विद्यासाधक मुनि श्री विद्यासागर हुए। उस समय धर्म का लोप होता जा रहा था। मुनि कैसे होते है ये भी बताना बहुत कठिन हो गया था। केवल चित्रदर्शन से ही मुनि ऐसे होते हैं इतना ही उस समय लोगों को पता था दिल्ली में अकबर बादशाह पूरी जैन समाज को मुस्लिम बनाने का प्रयत्न कर रहा था। अकबर बादशाह ने जैन समाज को धमकी देना शुरू कर दिया-'तुम सबको मुस्लिम होना पड़ेगा नहीं तो यह साबित करना पड़ेगा कि तुम्हारे जैन धर्म में कितनी शक्ति है।' जैन समाज के सामने एक बहुत विकट समस्या खड़ी हो गई। सभी चिन्ताग्रसित थे। सोते, जागते, हर समय बस एक ही चिन्ता, इस समस्या का समाधान कैसे होगा? कुछ समय बाद उन्हें पता चला कि कोल्हापुर जिले में एक महान तपस्वी, विद्यासाधक, धर्मोद्धारक, धर्म वात्सलयधारी पू0 मुनि श्री विद्यासागर महाराज विराजमान है। सुनकर सभी लोग को थोड़ा सा धैर्य मिला।

अकबर बादशाह ने उन्हें छः महीने की अवधि दी थी कि यदि छः महीने में कार्य सफल नहीं हुआ तो तुम्हें मुस्लिम होना पड़ेगा। उस समय किसी भी प्रकार के वाहन नहीं थे। सभी जैन बन्धुओं ने विचार किया और निकल गए पैदल कोल्हापुर की ओर। दिल्ली से कोल्हापुर जाने में छह महीने का समय लग गया। पू0 विद्यासागर जी नृसिंहवाडी (कुरूंदवाड) में कृष्णा पंचगंगा नदी के किनारे रहते थे। वह उनकी तपस्या भूमि कहलाती थी। वर्तमान में वे कोल्हापुर के उद्यान में विराजमान थे।

वीतराग शान्त दिगम्बर छवि को देखकर सभी आश्चर्य चकित हुए। जैन बन्धु उनके दर्शन से शान्त हो गए। जैसे डूबते को तिनके का सहारा राहत देता है ठीक वैसे ही जैन बन्धुओं को दिगम्बर मुनि के सहारे से राहत मिली। उन्होंने पू. मुनि श्री के सामने अपनी समस्या रखी। सारा विवरण सविस्तार से बताया। मुनि श्री ने उन्हें सान्त्वना दी घबराओ नहीं

आप सभी निश्चिन्त रहो सब ठीक हो जाएगा। सभी श्रावकों ने महाराज जी से पुनः प्रार्थना की-'महाराज जी आज अन्तिम दिन है हमारी रक्षा करो।'

महाराज जी ने कहा-'घबराने की कोई बात नहीं है आप सभी निश्चिन्त होकर सो जाइए।' सभी श्रावक वहीं उद्यान में सो गए। पू. विद्यासागर मुनि अपनी विद्या के बल से सभी श्रावकों सहित उसी रात दिल्ली के उद्यान में पहुंच गए। दिल्ली के उद्यान में पहुंचते ही दिल्ली का नगाड़ा जोर-जोर से बजने लगा। गुरुदेव को जो लोग लेने गए थे वे लोग उठते ही अचम्भित हो गए-अरे हम लोग तो कोल्हापुर के उद्यान में थे और यह तो हमारे दिल्ली का उद्यान है।' सभी हर्ष विभोर हुए।

रात में अचानक नगाड़े की आवाज सुनकर अकबर बादशाह विस्मित हो गया और नगाड़ा बजने का कारण पूछा। दूत ने जाकर देखा कि नगाड़ा अपने आप बज रहा है। आकर उसने सारी बात महाराज को बता दी। इतने में दूसरे दूत ने आकर बताया कि-'उद्यान में जैनों के नग्न गुरु आए हैं। राजा ने सुबह एक थाली में मांस के टुकड़े भरकर उसपर एक कपड़ा ढाककर अपने दूत के साथ मुनिराज को भेंट भेज दी। वह दूत भेंट लेकर गया। पू. मुनिराज ने दूर से ही जान लिया और उस दूत को आशीर्वाद देकर कहा कि-'ये भेंट तुम जाकर अपने राजा को दे दो।' दूत वहीं से ही वापस चला गया और जाकर राजा से कहा-'जैन गुरु ने आपकी भेंट स्वीकार न करते हुए आपको ही वापस भेज दी है।'

अकबर बादशाह ने कपड़ा उठाकर देखा तो मांस के टुकड़े कमल के फूल में परिवर्तित हो गए। राजा को बहुत आश्चर्य हुआ। राजा ने पुनः मुनिश्री के कमण्डल में मछली भर दी। लेकिन विद्या के प्रताप से कमण्डल उल्टा करते ही वे सभी मछलियां सुवर्ण सिक्कों के रूप में परिवर्तित हो गईं। इन सभी चमत्कारों से राजा बहुत खुश हुआ और गुरुदेव को नमस्कार किया। मुनिश्री ने जैनधर्म की चमत्कारिक प्रभावना करके सम्राट अकबर को भी झुकने के लिए विवश कर दिया था-

अकबर का फैला साम्राज्य
उसने डराया जैन समाज
लोगों ने की करुण पुकार
विद्यासागर ने किया चमत्कार
समझाया जैन धर्म का सार
क्या होता है मंत्र णमोकार
अकबर ने अपनी मानी हार
जैन धर्मकी जय-जयकार।

अंत में सल्लेखना के समय कुरूंदवाड के गांव के बाहर सरकार पटवर्धन का खेत था वहां विद्यासागर जी आ गए। उस समय वहां के लोगों ने पूछा-'गुरुदेव! समाधि के बाद आपका अन्तिम संस्कार कहां करें।' तो मुनि ने कहा-'मैं यहां से एक नीबू फेंकता हूं वह नीबू जहां गिरेगा वहीं इस शरीर का अग्नि संस्कार करना।'

जहां विद्यासागर जी की समाधि हुई वह स्थान मजरेवाड़ी के नाम से प्रसिद्ध हो गया। समाधि होने से पूर्व मुनिवर ने जो नीबू फेंका था वह मजरेवाड़ी से 5 कि.मी. दूरी पर अकिवाट ग्राम के बाहर छोटे पर्वत पर जा गिरा। वहां मुनिवर का अन्तिम संस्कार किया गया। वर्तमान में दोनों गांव अतिशय क्षेत्र की तरह प्रसिद्ध हो गए हैं। वे ऐसे महातपस्वी, विद्यावाचस्पति श्री विद्यासागर हमारी रक्षा करें, उनके चरणों में हमारा कोटिशः नमोस्तु! नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!

श्रवणबेलगोला की ओर विहार

परिषहों को जीतने में आप निपुण हैं। अनेक व्रत उपवास के क्षुधा परीषह, तृष्णा परिषह जीतते हैं। शीत, उष्ण की बाधाओं को सहने के अभ्यासी हैं। जेठ की कड़ी दुपहरी में भी विहार करते हुए कभी पीड़ा का अनुभव नहीं करते और कड़ी ठण्ड में प्रातः विहार करते हुए खेद खिन्न नहीं होते हैं।

श्रवणबेलगोला की ओर विहार करते समय रोज आप 60 कि.मी. चलते थे। बाल ब्रह्मचारी होने से स्त्री-पुरुष में समता दृष्टि रहती है। सत्कार, पुरस्कार या तिरस्कार से आपको कोई प्रयोजन नहीं है। इतनी मजबूती आ चुकी है कि मार्ग चलते हुए यदि कांटा भी लग गया तो निकालने की परवाह नहीं रहती है या तो वह कांटा ही आपके चरणों में घिस जाता है या स्वयं गलकर पिघल जाता है। आपका कुछ नहीं बिगाड़ पाता है।

ऐसे दिगम्बर सन्तराज के दर्शन मिलने पर भी यदि कोई कहे आज सच्चे साधु नहीं मिलते हैं तो उससे बड़ा कोई मिथ्यात्वी नहीं है। कलिकाल है चित्त चलायमान है, शरीर अन्न का कीड़ा बना हुआ है। ऐसे समय में जिनरूप के धारी दिगम्बर साधु आज भी पाए जाते हैं। यही आश्चर्य की बात है। दो रोटी के टुकड़ों के लिए साधुओं की परीक्षा मत लो। वे साधु हैं तुम तो गृहस्थ धर्मानुसार दान देकर पुण्य कमा लो।

काले कलौ चले चित्ते देह चान्नादि कीटके।
एतच्चित्तं तदयापि जिनरूपधरा नराः॥
भुक्ति मात्र प्रदाने तु का परीक्षा तपस्विनः।
ते सन्तोऽसन्तो वा गेही दानेन शुद्धयति॥

कोई कितना भी विरोध करे, पंचमकाल के अन्त तक उपसर्ग परीषह विजयी, सच्चे सन्त मिलेंगे। यदि नहीं हैं तो एक समय के लिए भी कोई आकर नाग्न्य परीषह सहन कर चौराहे पर खड़ा हो जाए और अपनी सत्यता बताए।

दमकता है सोना तपने के बाद।
रंग लाती है मेंहदी घिसने के बाद॥
चमकता है हीरा तराशने के बाद।
रंग लाता है जीवन परीषह के बाद॥

पू. आचार्य देशभूषण जी का ससंघ विहार पहले ही हो चुका था। पू. आचार्य बाहुबली जी महाराज अकलूज में पंचकल्याण के लिए गए थे। इसलिए श्रवणबेलगोला जाते समय वे अपने शिष्य सहित दस बारह दिन में ही श्रवणबेलगोला पहुंच गए।

गोमटेश्वर बाहुबली श्रवणबेलगोला में प्रवेश

श्रवणबेलगोला क्षेत्र पर पहुंचने की घड़ियां निकट आती जा रही थीं पू. आचार्य श्री को यहां तक पहुंचाने का काम कुरूंदवाड के श्री रावसाहेब पाटील, श्री बाबासो पाटील एवं शिरढोण के प्रतिष्ठित लोग ने किया। उन्होंने गुरुदेव की बहुत सेवा की। श्रवणबेलगोला के नजदीक पहुंच कर गोमटेश्वर जी के दर्शन हो गए।

गोमटेश्वर बाहुबली! तव दर्शन का प्यासा 'बाहुबली' दौड़े-दौड़े आ रहा है

गोमटेश्वर बाहुबली भगवान का मस्तकाभिषेक देखने पू. आचार्य बाहुबली जी महाराज आ पहुंचे। आचार्य श्री के स्वागत की तैयारियां चल रही थीं। एलाचार्य विद्यानन्द जी, आचार्यश्री विमलसागर जी के संघस्थ अनेक त्यागीवृन्द तथा भट्टारक श्री चारुकीर्ति जी लम्बी दूरी तक आचार्य श्री को लेने आए। कुरूंदवाड के श्री रावसाहेब पाटील एवं बाबासाहेब पाटील ने आंखों देखा दृश्य बताते हुए कहा-कि पू. आचार्य श्री के स्वागत के लिए 543 त्यागीवृन्द आए थे। धन्य-धन्य गुरुदेव!

गुरुकुल के बच्चों द्वारा जय-जयकार की ध्वनि गूंज रही थी। सब त्यागी पू. गुरुदेव को परस्पर वंदामि करके वात्सल्य का प्रतीक दिखा रहे थे। अपूर्व मिलन की भव्य बेला थी। विशाल जन समूह ने आचार्य श्री का भव्य स्वागत किया। घर-घर, द्वार-द्वार लोगों ने आचार्य महाराज का दूध-दही, जल से पाद प्रक्षालन किया। पुष्पवृष्टि पूरे जुलूस में होती रही। द्वार-द्वार पर आरती उतारी गई। मनोहर दृश्य देखकर आनन्दाश्रु से नेत्र सजल हो उठे। आचार्य श्री अपने गुरुदेव के निवास पर पहुंचे। गुरुदेव आचार्य देशभूषण जी अपने शिष्य की प्रभावना देख आनन्दाश्रु से उनके नेत्र सजल हो उठे।

गोमटेश्वर बाहुबली का सहस्राब्दी वर्ष महा मस्तकाभिषेक अपने आप में कीर्तिमान है। इस दर्शनीय, सम्यकत्व की उत्पत्ति के कारणभूतप्रसंग में 550 से भी अधिक पिच्छी त्यागी वृन्दों का पर्दापण हुआ था।

एक मंच पर त्यागियों का समूह देखकर चतुर्थकालीन दृश्य आंखों के सामने आ खड़ा होता था। वे कितने भाग्यशाली होंगे जिन्होंने इस अवसर पर वहां जाकर भगवान बाहुबली के चरणों में अपना मस्तक रखा था। इस उत्सव के अवसर पर प्रातः 7से 8 बजे तक आध्यात्मिक स्वाध्याय होता था तथा मध्यान्ह में चरणानुयोग का स्वाध्याय होता था। सर्व मुनि, आचार्यों के बीचोबीच प.पू. आचार्यरत्न देशभूषण जी महाराज ऐसे शोभायमान होते थे जैसे कमल का फूल। अर्थात देशभूषण महाराज जी सभी मुनियों और आचार्यों में ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ थे। पू. आचार्य श्री पू. गुरुदेव बाहुबली जी आदि अनेक मुनि व आर्यिका समूह के बीच तत्व चर्चा का भी विशेष लाभ मिलता था। इस समय आपस में अनेक शंका समाधान हुए। सर्वसंघ वात्सल्य से एक साथ रहे वहां आनन्द का वातावरण था।

महामस्ताकाभिषेक

प्रतीक्षा की घड़ियां समाप्त हुईं ध्येयपूर्ति का समय समीप आ गया। श्री 1008 बाहुबली भगवान का 22 फरवरी 1981 को महामस्तकाभिषेक हुआ। उस दिन अपार जन समूह के द्वारा जिनदेव का नीरक्षीर आदि से पंचामृताभिषेक किया गया। हजारों नर नारियों ने अभिषेक किया तथा श्री गंधोदक को मस्तक पर लगाकर अपने पाप पंक का प्रक्षालन किया।

कोई-कोई स्वाध्याय प्रेमी बन्धु बोले-आगम में दूध, दही, रस आदि से अभिषेक नहीं लिखा है। उन बन्धुओं की बात इन मान्य ग्रन्थों के निम्न प्रमाणों से गलत सिद्ध हो जाती है। इन प्रमाणों के बाद व्यक्ति गम्भीरता से सोचने के लिए विवश हो जाता है।

आचार्य जिनसेन स्वामी कृत 'हरिवंश पुराण' है। आचार्य जिनसेन स्वामी महाज्ञानी एवं आगम के मर्मज्ञ दिगम्बर जैन आचार्य हुए हैं। हरिवंश पुराण के बाईसवें सर्ग में लिखा है- 'वासुपूज्य भगवान के जन्म से पुनीत चम्पापुरी में वासुदेव ने गन्धर्व सेना के साथ फाल्गुन के अष्टान्हिका महापर्व में जिनमंदिर जाकर बड़े हर्ष से क्षीर, इक्षुरस, दधि, घृत, जलादि

के द्वारा जिनेन्द्र भगवान का अभिषेक किया। उन्होंने हरिचन्दन की गंध, शालि, तन्दुल नाना प्रकार के पुष्प, निर्दोष नैवेद्य, दीप-धूप से भगवान की पूजाकी थी। ग्रन्थ के ये शब्द ध्यान देने योग्य हैं-

क्षीरेक्षुरस-धारौघैघृतदघ्युदकादिभिः।
अभिषिंच्य जिनेन्द्रार्चामर्चितां नृसुरासरैः॥
हरिचन्दन-गंधोढ्यै र्गन्ध शाल्यक्षता क्षतैः।
पुष्पैर्नानाविधैरुद्यै धूपैः कालागुरुद्भवैः॥
दीपैर्दीप्त-शिखजालैर्न्नौविद्यै निरवधकैः।
तावानर्चतुश्चा तामर्चना विधिको विदौ॥22॥21-23

पूजा के अन्त में वसुदेव ने अढ़ाई द्वीप के 170 धर्म क्षेत्रों में त्रिकाल सम्बन्धी जिनेन्द्रादि की इन भव्य शब्दों द्वारा वन्दना भी की थी-

द्विपेए वर्धतृतीयेषु स सप्तति शतात्मके।
धर्मक्षेत्रे त्रिकालेभ्यो जिनादिभ्यो नमोऽस्त्विति॥27॥

पद्म पुराण भी इस विषय में हरिवंश का समर्थन करता है। राम के वनवास के पश्चात् भरत शासन करते थे। भरत ने द्युति नाम के महान आचार्य के समीप नियम लिया था कि-पदमदर्शन मात्रेण करिष्ये मुनिताम्' राम के दर्शन मात्र से ही मुनिव्रत धारण करूंगा। उस समय आचार्य द्युति महाराज ने कहा था कि इसके पूर्व तुमको श्रावकों के व्रत धारण करना चाहिए। उन्होंने उपदेश दिया था-अरे जो रात्रि कूं आहार का त्याग करे सो गृहस्थ पद के आरम्भ विषै प्रवृत्ति है जो तो हूं शुभ गति के सुख पावै। जो पुरुष कमलादि जल के पुष्प तथा केतकी मालती आदि पृथ्वी के सुगन्ध पुष्पनिकरी भगवान कूं अरचे सो पुष्पक विमान कूं पाय यथेष्ट क्रीड़ा करें।' (दौलतराम जी की भाषा टीका वृ. 308 पर्व 32)।

रविषेणाचार्य रचित पद्मपुराण के मूल्य वाक्य देने योग्य हैं-

यः करोति विभावर्या माहरवरिवर्जनाम्।
सर्वारंभ प्रवृत्तोऽपि यात्यसौ सुखदां गति।32/157
सामोदै र्भूजलोदभूतैः पुष्पैर्यो जिनमर्चीत।
विमानं पुष्पकं प्राप्य संक्रीऽति यथेप्सितम्॥159॥

इस आगम के प्रकाश में पुष्पों द्वारा भी भगवान की पूजा का निषेध नहीं होता। जिस सिद्धपूजा को श्रावक जन बड़े चाव से पढ़ते हैं उसमें भी मंदार कुंद, कमल आदि वनस्पति से उत्पन्न पुष्पों द्वारा सिद्धचक्र की वन्दना की गई है।

मन्दार-कुंद-कमलादि वनस्पतीनां।
पुष्पैर्यजे शुभतमैर्वर सिद्धचक्रम्॥

अभिषेक का महाफल

पद्मपुराण की भाषा टीका में दौलतराम जी ने लिखा है 'जो नीर करि जिनेन्द्र का अभिषेक करें, सो देवनिकट मनुष्यनि तै सेवनिक चक्रवर्ती होय, जाकर राज्याभिषेक देव विद्याधर करें। अर जो दुग्ध करि अरहन्त का अभिषेक करै, सो क्षीर सागर के जल समान उज्जवल विमान विषै परमकांति धारक देव होय, बहुरि मनुष्य होय मोक्ष पावै। अर जो दधि

का सर्वज्ञ वीतराग का अभिषेक करे सो दधि समान उज्जवल यश कूं पाय कर भवोदधि कूं तरें। अर जो घृत का जिननाथ का अभिषेक करें, सो अमृत का आहारी सुरेश्वर होय नरेशवर पद पाय मुनीश्वर होय अविनश्वर पद पावै। अभिषेक के प्रभाव करि अनेक भव्यजीव देव अर इंद्रनिकर-अभिषेक पावते भए, तिनकी कथा पुराणनि में प्रसिद्ध है।

मूल संस्कृत ग्रन्थ (सर्ग 32) के ये पद पढ़ने योग्य हैं-

अभिषेक जिनेन्द्राणां कृत्वा सुरभि वारिणा।
अभिषेक मवाप्नोति यत्र यत्रोपजायते॥165॥
अभिषेक जिनेन्द्राणां विधाय क्षीर धारया।
विमाने क्षीरधवले जायते परमद्युतिः॥166॥
दधि-कुंभैर्जिनेन्द्राणां यः करोत्यभिषेचनम्।
दध्याभ-कुट्टमे स्वर्गे जायते स सुरोत्तमः॥167॥
सर्पिषा जिननाथानां कुरुते योऽभिषेचनम्।
कांति द्युति प्रभावाढ्यो विमानेशः स जायते॥168॥
अभिषेक प्रभावेण श्रूयंते बहवो बुधाः।
पुराणऽनंत वीर्याद्या घुभूलब्धाभिषेचनाः॥169॥

वरांग चारित्र में लिखा है-जन्म, जरा, मृत्यु आदि की शांति के लिए जल चढ़ाते हैं। विषय वासना को सर्वथा मिटाने के लिए दूध से पूजा करते हैं। दधि से पूजा करने से कार्यसिद्धि होती है। क्षीर पूजा से पवित्र स्थान मोक्ष में निवास होता है। वरांग चारित्र की हिन्दी टीका में लिखा है-सोना चांदी आदि के कितने ही कलश दूध, दधि, जल, घी आदि अभिषेक में उपयोगी द्रव्यों से भरे हुए थे। ये सब कलश मुख पर रखे श्रीफल आदि फूलों के गुच्छों तथा फलों से ढके हुए थे। प्रत्येक कलश पर माला लटक रही थी। (पृ. 212 पर्व 23) भाव संग्रह में आचार्य देवसेन ने दूध, दही आदि द्वारा भगवान के अभिषेक का वर्णन करते हुए लिखा है-

उच्चारि ऊणमंते अहिसेयं देवदेवस्स।
णीर-घय-खीर-दहियं खिवउ अणुक्कमेण जिणसीसे॥

पंडित सुखदास जी ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार के 119वें श्लोक में देवाधि देवचरणे आदि की टीका में यह महत्वपूर्ण कथन बताया है-'बहुरि जे अजित द्रव्यनिने पूजन करे है ते जल गंध, अक्षतादि उज्जवल द्रव्य निकरि पूजन करे है। अर चमेली, चंपक, कमल, सोना, जाई इत्यादि सचित पुष्प निते पूजन करे है। घृत की दीपक तथा कपूर आदि दीपकानि की आरती उतारे हैं। अर सचित, आम्र,केला, दाडि-मादिक, द्रव्यानि कर हूं पूजन करे हैं। धूपयानि में धूप दहन करे है। ऐसे सचित द्रव्यनि कर हूं पूजन करिये है। दोऊ प्रकार के आगम की आज्ञा प्रमाण सनातन मार्ग है अपने भावनि के अधीन पुण्य बन्ध के कारण है।

जैन पुराणों का अवलोकन करने पर हमें विदित होता है कि उस समय में भी पंचामृत अभिषेक का प्रचलन था। सम्यक्त्वी जीव आगम क अनुसार श्रद्धान करता है। यह वीतराग आचार्यों पर पक्षपात का आरोप नहीं लगाता। तिलोयपण्णति भाग 2 (अ. 5 गाथा 111) में फलों द्वारा पूजा का भी कथन मिलता है। आचार्य कहते हैं-'दाख, अनार, नारंगी, मातुलिंग, आम तथा अन्य भी पके हुए फलों से जिननाथ की पूजा करते हैं गाथा इस प्रकार है-

दक्खा-दाड़िम-कदली-पारंगय-मादुलिंग-भूदेहिं।
अण्णेहिं वि पक्केहिं, फलेहि पूजंति जिणणाहं॥115-5॥

भगवान बाहुबली का महामस्तकाभिषेक होते ही पू. आचार्य श्री का विहार बेलगांव की तरफ हो गया।

बेलगांव चातुर्मास सन् 1981

प.पू. आचार्यरत्न देशभूषण महाराज जी धर्मस्थल,काडकल, मूडबिद्री, वरांग आदि क्षेत्रों का दर्शन करते हुए ससंघ बेलगांव पहुंचा। चातुर्मास निकट ही था। इसलिए बेलगांव के श्रावकों ने प.पू. आचार्य बाहुबली महाराज जी को चातुर्मास के लिए श्रीफल चढ़ाएं। इस बार उन्होंने चातुर्मास के लिए मना कर दिया लेकिन वहां के लोगों में ऐसी श्रद्धा तथा भक्ति है जैसे कृष्ण के प्रति रुक्मणी की।

कुछ कारणवश कृष्ण नारद के पास थे। सत्यभामा आदि सब रानियों को चिन्ता लगी। सब नारद जी के पास गईं और अपने पति की याचना करने लगीं। नारद जी बोले-'कृष्ण मेरा सेवक है। आपको कृष्ण चाहिए तो कृष्ण का जितना वजन होगा उतना हमें सोना चाहिए। तभी मैं कृष्ण को वापस करूंगा। नारदजी ने कृष्ण को तराजू के एक पलड़े में बिठाया। सत्यभामा समेत सभी रानियां अपने-2 गहने उतार कर पलड़े में रखने लगीं। अट्ठारह हजार रानियों के ढेरों जेवर पलड़े पर आ गए लेकिन कृष्ण वाला पलड़ा फिर भी भारी था। सारे गहने खत्म हो गए। सत्यभामा चिन्तित हुई। आखिर नारद बोले-'रुक्मणी रानी को भी बुलाओ और उनके भी गहने डाल दो।'

रुक्मणी जी को बुलाया गया। वह सामने का दृश्य देखकर चिन्तित हो गईं। रुक्मणी से भी गहने डालने के लिए कहा गया। लेकिन उन्होंने उसमें गहने न डालकर उन्होंने एक पत्ते के ऊपर कुम-कुम से कृष्ण का नाम लिखकर तराजू के पलड़े में डाल दिया। पलड़ा अपने आप ऊपर उठ गया। सत्यभामा सहित सभी रानियों का मुंह देखने लायक हो गया। रुक्मणी की शक्ति-भक्ति ही अलग थी। उसी प्रकार बेलगांव के श्रावकों की भक्ति ही अलग थी इसलिए पू. आचार्य श्री का इन्कार हो तो भी उन्होंने अपनी तीव्र भक्ति से बाहुबली महाराज को बेलगांव में चातुर्मास के लिए मजबूर कर दिया।

उस चातुर्मास में अनेक बड़े-बड़े कार्यक्रम हुए। हिंडलगा जेल में फिर से कैदियों के लिए आचार्य श्री का एक बड़ा कार्यक्रम रखा गया। इस प्रकार पूरे चातुर्मास में खूब धर्म प्रभावना होती रही। चातुर्मास के बाद आचार्य श्री का विहार इब्राहिमपुर की तरफ हो गया।

इब्राहिमपुर के प्राचीनतम भगवान पार्श्वनाथ

बेलगांव से 50 कि.मी. की दूरी पर इब्राहिमपुर है। वहां पार्श्वनाथ भगवान के दो प्राचीनतम मंदिर हैं। ऐसा लोग बोलते थे लेकिन जाते नहीं थे। यह बात आचार्य श्री को चातुर्मास के समय पता लगा। चातुर्मास होते ही उनका विहार इब्राहिमपुर की तरफ हो गया। गांव-2 में त्याग तपस्या का बिगुल बजाते हुए, धर्म की मधुरिम वर्षा करते हुए भगवान पार्श्वनाथ के पावन तीर्थ पर पहुंच गए।

इब्राहिमपुर में एक ऐसा झरना है जिसका उद्गम स्थान का पता ही नहीं है। आज तक यह पता नहीं लग पाता कि झरना कहां से निकलता है। जो भी श्रावक दर्शन के लिए आते हैं वह यहां का मीठा पानी ले जाते हैं। वहां का जिन मंदिर तथा मंदिर में विराजमान भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा बहुत प्राचीन है।

वहां एक भी जैन नहीं था। केवल एक पण्डित का घर था वह रोज भगवान के ऊपर पानी डाल कर जाता था। मंदिर की व्यवस्था करने वाला, देखने वाला कोई नहीं था। मंदिर के मण्डप में ही पंडित अपने गाय-भैंस बांधता था। मंदिर की हालत देखकर आचार्य श्री उदास हो गए। आचार्य श्री के साथ बेलगांव के कई श्रावक थे। आचार्य श्री ने पंडित से पूरी जानकारी ली और पंडित के लिए दो कमरे बनवाने के लिए बोल दिया तथा मंदिर प्रांगण में गाय भैंस बांधने के लिए मना कर दिया। वहां दो तीन दिन रहकर सारी व्यवस्था करने के बाद वह भौगोली की तरफ विहार कर गए। वहां जिन मंदिर है लेकिन भगवान की प्रतिमा नहीं है। मंदिर बड़ा ही प्राचीन है लेकिन जैनियों का सर्वथा अभाव था।

इस प्रकार आचार्य श्री का विहार इधर-उधर होता रहा। उसके बाद उनका विहार महाराष्ट्र में हो गया। आचार्य श्री जहां भी जाते वहां श्रद्धालुओं तथा भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ती पैर रखने को भी स्थान नहीं मिलता था।

सहस्त्रफणी पार्श्वनाथ का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा-साजणी

साजणी गांव का मन्दिर जर्जर हालत में था। आचार्य श्री बाहुबली महाराज जी ने मंदिर का जीर्णोद्धार कराया। भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा स्थापित की उस समय विहार करते हुए आचार्य श्री विमलसागर, गणधराचार्य कुंथुसागर आदि के विशाल संघ का आगमन हो गया। पू. आचार्य श्री आगे जाकर आचार्य विमलसागर जी को नमोऽस्तु, नमोऽस्तु, नमोऽस्तु किए। प्रतिष्ठा तक संघ वहीं रुका। तत्पश्चात् वह संघ उत्तर की ओर प्रस्थान कर गया।

पू. आचार्य श्री का विहार शिरदवाड (इचलकरंजी) की तरफ हो गया। वहां भी जिनमंदिर का जीर्णोद्धार एवं मानस्तम्भ निर्माण कर भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा की। वहां सौधर्म इन्द्र इन्द्राणी श्री बालासाहेब चावरे थे। उसी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लेकर पवित्र हो गए और सौधर्म इन्द्र ने सप्तम प्रतिमा धारण कर ली। उसी दिन से उन बालासाहेब चावरे को बाल महाराज बोलते हैं। उनकी गुरुदेव पर अटूट श्रद्धा है।

शिरदवाड बोरगांव पंचकल्याणक

शिरदवाड में पंचकल्याण से बड़ी धर्म प्रभावना हुई। तत्पश्चात बोरगांव (कर्नाटक) के निषिधिका में भगवान बाहुबली की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा थी वहां बड़ा ही धार्मिक वातावरण था। वहां के सौधर्म इन्द्र श्री धन्य कुमार नगारे थे।

उस समय पू. आचार्य श्री के साथ उग्र तपोधारी, तपोवृद्ध मुनिश्री पिहिताश्रव महाराज भी थे। इनकी कहानी अलग और रहस्यमय थी। पिहिताश्रव महाराज ने अपने जीवन में बहुत कम वर्ष आहार में अन्न लिया। अन्तिम समय तक पूर्ण अनाज त्याग था। आहार में केवल खारीक (छुआरे) की खीर, कोई एक फल का रस, दूध, मही (छांछ) और मूंगफली की बर्फी इतना ही लेते थे। कभी भी पाटा या चटाई पर नहीं बैठते थे। वीतराग आसन अर्थात जमीन पर ही बैठना, सोना। इनका कमण्डल पीतल का बहुत बड़ा था। उनकी गुफा में स्त्रियों का प्रवेश निषिद्ध था। पिहिताश्रव महाराज कभी भी किसी भी संघ में नहीं रहते थे। केवल पू. आचार्य बाहुबली महाराज जी के पास रहते थे और आचार्य श्री के साथ दो तीन चातुर्मास भी हो गए। स्वभाव कड़क था जो भी कहते उसके लिए हां करना पड़ता था। वे हमेशा मजरेवाड़ी में रहते थे। आहार के लिए वहां से रोज कोल्हापुर, इचलकरंजी, कुरूंदवाड, हसूर, बोरगांव, शिरढोण, तेरवाड और मजरेवाड़ी में आना जाना करते थे। कितना भी दूर हो आहार के समय पहुंच जाते थे और फिर सामायिक के बाद वापस वहीं आते थे जहां थे। मजरेवाड़ी में सामने रहकर विद्यासागर महाराज जी की समाधि का स्थान निर्मित किया।

गणेशवाड़ी में आर्यिका व क्षुल्लिका दीक्षा समारोह-5 मई 1982

बोरगांव पंचकल्याण में दो ब्रह्मचारिणी एक बोरगांव की सुकन्या शन्याक्का तथा दूसरी मजरेवाड़ी की सुकन्या ललिता थी। ये दोनों ही बाल विधवा थीं। उन्होंने पूज्य आचार्य श्री के चरणों में दीक्षा की याचना की। जिनका शिक्षण पू. आचार्य श्री की प्रेरणा से कारंजा व सोलापुर आश्रम में हुआ। उनके मन में वैराग्य के प्रति भावना बढ़ रही थी। पू. आचार्य श्री ने उनकी दृढ़ता देखकर दीक्षा की तारीख निश्चित कर दी। 5 मई को ॲड वीराचार्य बाबासाहेब कुचनूरे की जन्म भूमि गणेशवाड़ी में दीक्षा समारोह होने वाला था।

पू. आचार्य श्री जी बोरगांव से कुरूंदवाड हसुर होते हुए गणेशवाड़ी पहुंच गए। उसी समय आचार्य श्री सुबलसागर महाराज जी की शिष्या विदुषी आर्यिका श्रुतमती माताजी ने पू. आचार्य श्री जी से याचना की कि हमारे साथ में रहने वाली दो क्षुल्लिकाएं व एक ब्रह्मचारिणी को भी आर्यिका दीक्षा देना है। पू. आचार्य श्री जी ने स्वीकृति दे दी। उसी पण्डाल में सभी का दीक्षा कार्यक्रम सम्पन्न हो गया। वर्तमान में शान्याक्का माने पू. आर्यिका मुक्ति लक्ष्मी माताजी व ललिता माने पू. आर्यिका निर्वाण लक्ष्मी माताजी संघ में हैं।

ॲड वीराचार्य ने इस दीक्षा समारोह में बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। उनके साथ वीरसेवा दल के बन्धु भी उक्त कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। स्वयं शुद्ध वस्त्र पहनकर पू. आचार्य श्री को आहार दान दिया।

चंदेरी नगरी हुपरी 1982

दीक्षान्त समारोह के उपरान्त आचार्य श्री का विहार शुरू हो गया। विहार करते-करते पू. आचार्य श्री हुपरी आ गये और वहीं उनका चातुर्मास हुआ। हुपरी एक बड़ा औद्योगिक नगर है जहां चांदी का ही काम होता है। आचार्य श्री के चातुर्मास होने से वहां के लोगों में बड़ा उत्साह निर्माण हो गया। चातुर्मास में विविध प्रकार के कार्यक्रम रखे गए। अष्टान्हिक पर्व में सिद्धचक्र विधान का आयोजन किया गया। विधान के समय सारे नगर को दुल्हन की तरह सजाया गया। इसलिए पू. आचार्य श्री जी ने उस नगरी को चंदेरी नगरी की उपमा दी।

हुपरी में जाकर गुरुवर ने
आनन्द खूब बढ़ाया।
सिद्धचक्र का विधान रचवाकर
दुल्हन सा नगर सजवाया॥

चातुर्मास की अवधि में ही गांव के बाहर जैन मंदिर के लिए जगह ले ली गई। पू. आचार्य श्री की प्रेरणा से कुछ ही समय में वहां सुन्दर मंदिर का निर्माण हो गया। मंदिर के शिखर में, गर्भ मंदिर में व तलघर में विराजमान करने के लिए चांदी की, पाषाण की व पीतल की मूर्तियां मंगवाई गईं। 108 फणा वाली पार्श्वनाथ भगवान की (पाषाण की) मूर्ति श्री देवकुमार सौदत्ते ने मंगवाई। ईसवी सन् 1995 में इसी जैन मंदिर में पंचकल्याण प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। पंचकल्याण बहुत ही बड़े स्तर पर सम्पन्न हुआ। पू. आचार्य श्री जी ने सभी मूर्तियों पर संस्कार किए। इस पंचकल्याण के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी-ध. श्री आण्णा साहेब बलवंत शेंडुरे व सौ. कमल आ. शेंडुरे थे। केवलज्ञान कल्याण के दिन हेलीकॉप्टर के द्वारा भगवान के ऊपर पुष्प वृष्टि हुई। पू. आचार्य श्री के तत्वावधान में ही सभी कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

चिपरी चातुर्मास सन् 1983

चिपरी गांव कोल्हापुर जिले के शिरोल तहसील में है। जहां पर लगभग 300-400 जैन परिवार है। सारी जैन समाज पर अज्ञानता छायी हुई थी। पू. आचार्य श्री जी के आगमन से सभी के ज्ञान रूपी दीप जल गए। आचार्यजी ने धर्मबोध छोटे से लेकर बड़े तक सभी को दिया। इसी अवधि में जिनमंदिर का जीर्णोद्धार किया गया। बाद में भगवान पार्श्वनाथ की नूतन प्रतिमा मंगवाकर पंचकल्याण प्रतिष्ठा करवाई। चातुर्मास के दौरान में दो क्षुल्लक दीक्षा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। पंचकल्याण के समय पू. आचार्य श्री सामायिक के लिए एक आम के झाड़ के नीचे बैठे थे उसी समय हुपरी के गुरुभक्त श्री फक्कड़ गाट वहां आए। आचार्य श्री वहां के शांत वातावरण को देखते हुए सहज ही बोल पड़े-'ऐसे निर्जन स्थान में चातुर्मास करने की हमारी इच्छा है।' सामने बैठे हुए भक्त ने कहा 'ठीक है आचार्य श्री जी हम आपकी इच्छा पूरी करेंगे।' उन्होंने अपने ही खेत में मुनि गुफा हाल वगैरह बनाकर पू. आचार्य श्री जी के पास चातुर्मास का नारियल चढ़ाने के लिए आ गए। नारियल चढ़ाकर बहुत विनती की आपका आने वाला चातुर्मास हमारे खेत में ही होना चाहिए। उनकी भक्ति में इतनी शक्ति थी कि आखिर चातुर्मास की स्वीकृति आचार्यश्री को देनी ही पड़ी।

जिनश्रुत तपोवन हुपरी सन् 1984

भक्तों की विशेष प्रार्थना स्वीकार करते हुए आचार्य श्री 1984 में चातुर्मास के लिए हुपरी जिनश्रुत तपोवन पहुंचे। गुरुभक्त फक्कड़ गाट की इच्छा पूरी हुई। चातुर्मास स्थापना का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आस पास के लोग अपने-अपने चौके लेकर वहां आ गए। जंगल में मंगल शुरू हो गया। जहां देखो वहां भीड़ ही भीड़। वहां का दृश्य देखकर चतुर्थ काल की याद आ रही थी। पू. आचार्य श्री जी के चरण जहां भी पड़ जाते वहां मंगल ही मंगल हो जाता। नित प्रति दिन लोग आचार्य श्री के प्रवचन से लाभान्वित होते थे। महती धर्म प्रभावना शुरू थी।

इसी अवधि में पू. आर्यिका विमलमती माता जी (आचार्य देशभूषण जी संघस्थ) ने आचार्य श्री के सान्निध्य में ही सल्लेखना लेने का विचार किया। गुरुभक्ति माताजी के रग-2 में भरी थी। पू. माताजी के दीक्षा गुरु पायसागर महाराज जी थे। उनकी समाधि के बाद माताजी ने आचार्य देशभूषण महाराज जी के संघ में रहकर अपना धर्म ध्यान किया। माताजी ने अपने विचार पू. आचार्य श्री जी के समक्ष प्रकट किए। आचार्य श्री माताजी को सल्लेखना व्रत देकर रोजाना उन्हें सम्बोधन करने लगे। माताजी ने पू. आचार्य श्री जी को अपना निर्यापकाचार्य बनाकर अपना कल्याण कर लिया।

आचार्यश्री के द्वारा द्वय दीक्षा

उसी हुपरी चातुर्मास के समय हम दोनों सोलापुर आश्रम से गुरुदेव के पास आ गए। गुरुदेव बोले-'अभी अध्ययन कितना बाकी है और अभी कितने साल पढ़ना है?'

'मैं (सुरेखा) अभी दो साल और अध्ययन करना चाहती हूं। न्याय का विषय पूरा करके परीक्षा देना चाहती हूं।'

आचार्य श्री बोले-'हाथ में पीछी लेना ही न्यायतीर्थ है। अब वापिस आश्रम को नहीं जाना है। हम दीक्षा का मुहूर्त निकाल रहे हैं। इस बार की दीवाली घर की ही करो।' 28 नवम्बर 1984 पू. आचार्य श्री ने दीक्षा की तारीख निश्चित

कर दी। कुरूंदवाड में दीक्षा की खबर चारों ओर फैल गई। कुरूंदवाड के सभी श्रावकों से मैंने दीक्षा की आज्ञा मांगी और सबको साथ लेकर आचार्य जी के पास गई-सभी लोगों ने आचार्य श्री से कहा- 'गुरुवर अभी ये बच्ची छोटी है इतनी कम उम्र में इतनी जल्दी दीक्षा देना क्या ठीक है? आचार्य श्री ने कहा-'आयु का क्या भरोसा! ये जीवन तो क्षणभंगुर है, पानी के बुलबुले के समान है क्षण में नष्ट हो जाएगा। इनका अध्ययन भी हो जायेगा और परिपक्वता भी आ जाएगी। संयम पथ जल्दी ही धारण करना श्रेयष्कर है।

पानी का सा बुलबुला, अस मानस की जात।
देखत ही छिप जात है, ज्यों तारा परभात॥

आचार्य श्री ने अनेकों उदाहरण देकर सबको मानसिक तौर पर तैयार कर लिया। सभी ने दीक्षा की सहर्ष अनुमोदना दे दी। कुरूंदवाड के श्रावकों ने गुरुदेव के समक्ष एक ही इच्छा व्यक्त की-'हमारी बच्ची की दीक्षा हमारे ही नगर में हो, बस हमारी यही इच्छा।'

पू. आचार्य श्री ने स्वीकृति दे दी और कहा कि-'दीक्षा कार्यक्रम सामान्य रूप से नहीं विशेष रूप से करना है। त्याग की महत्ता क्या है? यह सभी की नजरों में आना चाहिए। आचार्य श्री कोल्हापुर होते हुए कुरूंदवाड आ गए। वहां लोगों ने उनका भव्य रूप से स्वागत किया। दीक्षा समारोह की मुख्य पत्रिका छपकर तैयार हो गई। सभी के मुख पर सिर्फ एक ही बात थी। 'इतनी छोटी उम्र में दीक्षा। धन्य-धन्य है त्याग जीवन।'

सचमुच-

ब्रह्मचर्य जो पालन करते
वो ही मुक्ति पाते हैं
संयम की नौका से प्राणी
भवसागर तर जाते हैं।

कुरूंदवाड के श्रावक आचार्यरत्न देशभूषण महाराज के पास जाकर दीक्षा का आशीर्वाद ले आए। दीक्षा का कार्यक्रम चार दिन का था। पहले दिन 'अखण्ड णमोकार मंत्र का जाप' दूसरे दिन ऋषि मण्डल विधान, तीसरे दिन गणधर वलय विधान एवं दीक्षार्थी का हाथी पर बैठकर जुलूस और चौथे दिन 28 नवम्बर को सुबह 7 बजे क्षुल्लिका दीक्षा का कार्यक्रम।

दीक्षा समारोह देखने के लिए चारों ओर भीड़ ही भीड़ थी। सभी की आंखों में आनन्दाश्रु छलक रहे थे। इतनी अबोध अवस्था में वैराग्य। एक तरफ पंचेन्द्रिय विषय वासना की रंगीन दुनिया दूसरी तरफ त्याग की कठिन राह। त्याग के इस दृश्य को देखने के लिए लोग बड़े ही लालायित थे। पहले दिन दोनों कन्याओं को श्रृंगारित करके जुलूस निकाला गया। दूसरे दिन दोनों ने अपने शरीर पर शुभ्र वस्त्र धारण किए। दस हजार लड़कों के संघ के नायक ॲड. बाबासाहेब कुचनूरे ने बड़े उत्साह के साथ दीक्षा समारोह में भाग लिया। गुरुदेव ने कुमारी सुरेखा को आर्यिका श्रुतदेवी तथा कु. नूतन को आ. जिनदेवी के नाम से सुशोभित किया।

नूतन सुरेखा बालाएं
उनके त्याग को शीश नवाएं
बालपन में त्याग किया
ब्रह्मचर्य व्रत को पाल लिया
मुनिवर ने दीक्षा के लिए
पहले तो उपदेश दिए
अट्ठाईस नवम्बर चौरासी
जनता दर्श की अभिलाषी
दोनों की दीक्षा भई
भीड़ ने जय-जयकार करी
नूतन बन गई जिनदेवी
सुरेखा बन गई श्रुतदेवी
लोगों ने की वाह वाह वाह।

दीक्षा कार्यक्रम के आठ दिन वाद संघ का विहार हो गया। संघ मजरेवाड़ी आ गया। वहां आठ दस दिन रहकर अब्दुल लाट की ओर प्रस्थान कर गया। वहां से रूई आ गया। रूई में प्राचीन जिन मंदिर है मगर जगह कम होने से पू. आचार्य श्री जी की प्रेरणा से मंगलधाम (कार्यालय) बनाने का निश्चित हो गया। भूमिपूजन करके कार्य की शुरूआत हुई। वहां मौजी बन्धन का कार्यक्रम भी बहुत बड़े रूप से सम्पन्न हुआ। गुरुवर का संघ तीन महीने रूई में रुका।

तत्पश्चात् तिलवणी में पंचकल्याण हेतु आचार्य ससंघ पहुंचे। इसी मंगल बेला में क्षु. शान्ति सिन्धु महाराज जी को आचार्य श्री ने ऐलक दीक्षा दी तथा उसी समय तिलवणी के एक श्रावक को भी क्षुल्लक दीक्षा जिनका नाम क्षुल्लक वीरनन्दी पड़ा। इसी बीच हेरले में भी पंचकल्याण था। वहां के भक्तों को भी पू. आचार्य श्री का एक दिन के लिए सान्निध्य मिला।

आचार्य शान्तिसागर जन्मभूमि भोज में चातुर्मास सन् 1985

भोज चातुर्मास में स्मारक का काम युद्ध स्तर पर जारी था। स्मारक में भ. शान्तिनाथ का कमलाकार जिनमंदिर, मारबल का सोलह स्वप्न चित्र दर्शन सहित उत्तुंग मानस्तम्भ, शान्तिसागर जी की शुभ्र मारबल की प्रतिमा, आचार्य शान्तिसागर की चरण पादुका, मुनि गुफा एवं प्रवचन हाल आदि बनाने का काम शुरू हो गया।

इस बार चातुर्मास स्मारक में ही था। वातावरण रम्य था। आहार के समय जब सभी त्यागी एक साथ एक के पीछे एक निकलते थे तो उस समय का दृश्य देखकर ऐसा लगता था जैसे चतुर्थ काल हो। पहले साधु जंगल से ही गांव में आहार को इसी तरह आते थे। चातुर्मास के समय वहां पर लोगों को ऐसा लगता था जैसे चार महीने का महापर्व शुरू हो गया हो। पूरा वातावरण धर्ममय बन गया था। संघस्थ त्यागियों का स्वाध्याय सुबह प्रमेय रत्नमाला, मध्यान्ह में लब्धिसार होता था।

मानवता शान्तिपथ रथ यात्रा सन् 18.10.85

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शान्तिसागर का नाम, उनकी जीवन गाथा पूरे हिन्दुस्तान में प्रसार करने हेतु एवं प्रत्येक मानव-मन में मानवता रहने के लिए विश्व में शान्ति निर्माण करने के लिए पू. आचार्य श्री ने 'मानवता शान्तिपथ रथयात्रा' निकालने का निश्चय किया। सभी के अन्तर्मन में भक्ति का अजस्र स्त्रोत प्रवाहमान था।

एक ट्रक सजाया गया। उसमें आचार्य श्री शान्तिसागर जी, देशभूषण जी, धर्मसागरजी आदि आचार्यों के चित्र, स्मारक मॉडल और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी आदि नेताओं के चित्र लगवाए गए। मेरी भावना शान्ति निर्माणार्थ, अहिंसा प्रसारार्थ सुविचार, नीति सुधामृत लिखे गए। चा.च. शान्तिसागर की संक्षिप्त रूप से जीवन गाथा, उनका अन्तिम संदेश, अनेक अवस्थाओं की फोटो, चरणचिन्ह आदि भी थे। उसी समय 'चारित्र चक्रवर्ती' ग्रन्थ की द्वितीय आवृत्ति प्रकाशित की गई। इस सुअवसर पर महाराष्ट्र और कर्नाटक प्रान्त के सभी प्रतिष्ठित लोग उपस्थित थे।

इस कार्य की सफलता के लिए गुरुभक्त श्री जम्बू आण्णा सौदत्ते, श्री धनु मुरताले, श्री रविन्द्र पाटील, श्री जीवन्धर सदलगे, श्री अण्णा सेंडुरे, श्री अण्णा इंग्रोले, श्रीकान्त सौदत्ते आदि लोगों ने बहुत मेहनत की।

जिस दिन की सभी बेताबी से प्रतीक्षा कर रहे थे आखिर वह दिन 18.10.85 आ ही गया। मानवता शान्तिपथ रथयात्रा का शुभारम्भ होने वाला था।

मंगलवाद्य, गाड़ियां और जनता की भीड़ देखकर मन बड़ा ही अचम्भित हो गया। शान्तिसागर हाई स्कूल का ग्राउण्ड और पूरे स्मारक के आजू-बाजू जितनी खेती थी। हर जगह केवल लोग ही लोग दिख रहे थे। जिस तरह समोशरण में अपना वैर छोड़कर सब प्राणी मात्र वात्सल्य रूप से एक ही स्थान पर आते हैं उसी प्रकार उस मानवता शान्ति पथ रथ यात्रा के स्टेज पर सभी लोग परस्पर वात्सल्य भाव से एक स्थान में बैठे थे।

भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री बी.डी. जत्ती, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री आमदार कल्लापाण्णा आवाडे, आमदार जकनूर सो, आमदार रत्नाप्पांण्णा कुंभार, आमदार सरोजनी खंजिरे, अखिल भारतीय महासभा के अध्यक्ष माननीय निर्मल कुमार सेठी, सोलापुर श्राविकाश्रम की संचालिका पं. सुमतिबाई शाह एवं बा.ब्र.प्रा. विधुल्लता शाह, दक्षिण भारत जैन सभा के अध्यक्ष माननीय रावसाहेब मणेरे वकील साहेब एवं उनके सहकारी लोग और एक व्यक्ति जो विशेष रूप से परिश्रम कर रहे थे, वह थे दस हजार नवयुवकों के अधिनायक अध्यक्ष ब्र. श्री वीराचार्य बाबासाहेब कुचनूरे आदि नेता, विद्वान, संयमी और साधुगणों से पूरा स्टेज भरा हुआ था। स्वस्तिश्री जिनसेन भट्टारक महास्वामी विशेष रूप से पूरा कार्य देख रहे थे।

यह सत्कार्य यशस्वी होने के लिए प.पू. आचार्यरत्न देशभूषण महाराज जी का आशीर्वाद पत्र पढ़कर सुनाया। तत्पश्चात नेताओं के, विद्वानों के व्याख्यान हुए और अन्त में प.पूज्य आचार्यरत्न बाहुबली महाराज जी का इस विषय सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रवचन हुआ। उन्होंने अपने प्रवचन में बताते हुए कहा-हमारी संस्कृति की सुरक्षा, संस्कारों का निर्माण और समाज की उन्नति का आधार संगठन पर है। वर्तमान में राष्ट्र एवं समाज सैकड़ों समस्याओं से घिरे हैं। बिखराव के अन्धकार से यदि बचना है तो संगठन का दीप जलाना होगा तभी अन्धकार दूर होगा। छोटे-छोटे तारों से इतना प्रकाश, शीतलता नहीं मिलती जितनी चन्द्रमा से। बेरोजगारी के कारण डूबते बिखरते परिवार, अशिक्षा, दहेज, संस्कृति का पतन, शास्त्रों की अवहेलना, तीर्थों की असुरक्षा, मुनियों, त्यागियों के आहार विहार में होने वाली कठिनाइयां, आने वाली पीढ़ी की जिनालय से दूरी आदि कई समस्याएं हमारे समक्ष हैं। समाज पर होने वाले आक्रमणों तथा संस्कृति को नष्ट किए जाने

वाले प्रयासों का दृढ़तापूर्वक मुकाबला करने हेतु संगठन की आवश्यकता है। चाहे वह राजकीय क्षेत्र हो, व्यवसायिक क्षेत्र हो, धार्मिक क्षेत्र हो या घरेलू हो, बिना संगठन के इनका कोई भी कार्य नहीं हो सकता है।

हमारे समक्ष एक कथानक है-एक बाबूजी के चार लड़के थे। पिताजी उनको कुछ शिक्षा देना चाहते थे। उसने चारों लड़कों को एक-एक लकड़ी दी और तोड़ने को कहा। सभी ने लकड़ी तोड़ दी। फिर पिता ने चार लकड़ी की गठरी बनाकर सबको दी। कोई भी नहीं तोड़ पाया। ये ही तो संगठन है।

इसी प्रकार धार्मिक क्षेत्र में भी संगठन की अति आवश्यकता है। जैन समाज मुट्ठीभर है। वह भी जातिवाद, पंथवाद, कांजीपंथ, बीसपंथी, तेरापंथी, साढ़े सोलह पंथी आदि पंथों में बंटा हुआ है। हमारी इस कमी को अन्य धर्म के अनुयायी जानते हैं। हमारी इस हालत से हमने अपने मंदिरों को प्रतिमाओं को अपने ही हाथों से दूसरों को सौंप दी है। हम जानते हैं कि तेरह प्रकार के चारित्र का पालन करने वाले साधु वास्तव में तेरहपंथी होते हैं और सब श्रावक बीसपंथी। हमें आपस में होने वाले मतभेद मिटाना जरूरी है। इन मतभेदों से हमारा आत्मकल्याण होने वाला नहीं है। व्यवहार में हम जीवन्त उदाहरण देखते ही हैं।

किसी गांव में राजा ने सब पंचों के मुखियों को दस खेकड़े डिब्बे में लाने के लिए कहा। सभी लोग डिब्बे लेकर राजदरबार में आए। राजा ने देखा सबके डिब्बे बन्द थे और उसमें दस-दस खेकड़े थे। लेकिन बनिये का डिब्बा राजा ने देखा तो दंग रह गया क्योंकि वह डिब्बा खुला था। राजा के आश्चर्य को देखकर बनिये ने कहा-आप गिन लीजिए। राजा ने गिने पूरे दस थे। बनिया ने कहा-राजा जी इन्होंने बनिये का अनाज खाया है। एक बाहर निकलने का प्रयास करता है तो बाकी नौ उसको नीचे खींचते हैं। यही हमारा हाल है। हम किसी की प्रगति नहीं देख सकते। लेकिन हमें यहां से उठकर रस्सी या कपड़े बनाना है। रस्सी या कपड़ा एक-एक धागे से मिलकर बनता है रस्सी या कपड़े का एक धागा आसानी से टूट जाता है लेकिन कपड़े को तोड़ना मुश्किल है। हमारा शरीरिक बन्धारण वह भी संगठन की महत्ता बताता है। अपने मुख में एक दांत हो तो वह कुछ नहीं कर सकता। लेकिन पूरे बत्तीस होते कड़ी से कड़ी वस्तु को तोड़ सकते हैं। एक-एक मोती अलग-अलग रहते हैं तो उनकी कोई कीमत नहीं है लेकिन सब एक साथ गुंथ जाए तो माला तैयार हो जाती है तो उसका मूल्य जाप देने वाला ही जानता है।

पानी वहीं टिकेगा जहां ढलान नहीं
सुख वही रहेगा जहां तनाव नहीं
मंदिर मस्जिद में जाकर भक्त बनने वालों
धर्म वहीं फैलेगा जहां आपसी दुराव नहीं।

कहने का तात्पर्य यही है कि आज हमें एक होना है क्योंकि संगठन की शक्ति महान है। यदि समाज को प्रगति की ओर ले जाना हो तो, शान्ति से जीना हो तो हमें जिनवर द्वारा कथित, गणधर द्वारा रचित शास्त्रों को प्रमाण मानकर आचरण करना होगा। भगवान महावीर का संदेश 'जिओ और जीने दो' को घर-घर में पहुंचाना होगा।

प्रवचन होते ही चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शान्तिसागर महाराज के चांदी के चरण पादुका ॲड बाबा साहेब कुचनूरे के हस्त से रथ में विराजमान किए गए। रथयात्रा की शुरुआत हुई।

'जिओ और जीने दो' का शान्ति प्रदायक नारा पू. आचार्य श्री जी की प्रेरणा से विश्व के कोने-कोने में गूंजने लगा।

- शुभ संदेश -

(तर्ज-बाहुबली भगवान का मस्तकाभिषेक...)

मानवता पथ शान्ति रथ का शुभ संदेश
जिओ सभी को जीने दो हो पावन भारत देश। शुभ संदेश ॥धुव॥

सत्य अहिंसा की ध्वनि से ही, भारत देश है गूंजे
जग से हिंसा नाम मिटाने, महावीर थे जन्मे
जीव हत्या मत करो रे भाई, बनो अहिंसा के अनुयायी
मानवता की लाज बचाने जाग्रत करो विवेक
जिओ सभी को जीने दो, हो पावन भारत देश। शुभ संदेश॥1॥

करुणा सागर वीर प्रभू की, कर लो मन से भक्ति
सच्चा सुख पाने की तभी ही, मिलेगी अन्तर शक्ति
अपना देश है सबको प्यारा, जन सेवा हो धर्म हमारा
जन-2 के कल्याण की खातिर, बुद्धि हमारी हो नेक
जिओ सभी को जीने दो, हो पावन भारत देश। शुभ संदेश॥2॥

सच्ची वाणी वीर प्रभु की, पार लगाने वाली
जग के सब जीवों की वो तो, करें सदा रखवाली
आतम का कल्याण जो करता, अष्ट कर्म से दूर वो रहता
त्याग भावना का ही है, शास्त्रों में उल्लेख
जिओ सभी को जीने दो, हो पावन भारत देश। शुभ संदेश॥3॥

निरपराधी मूक पशु पर, मत करो अत्याचार
इसके लिए गुरु बाहुबली जी, दे रहे उपदेश सार
नरक पशु जाति में मत जाओ, दयाभाव अपने प्रगटाओ
परम अहिंसा को अपनाकर, छोड़ो राग और द्वेष
जिओ सभी को जीने दो, हो पावन भारत देश। शुभ संदेश॥4॥

रथ यात्रा जिस प्रान्त, नगर और जिले में जाती वहां के लोगों का आनन्द बढ़ कर दुगुना हो जाता। इसी दरम्यान पू. आचार्य श्री के पास बाबासाहेब कुचनूरे आए। उन्होंने गुप्त रूप से दीक्षा की याचना की। दीक्षा लेने के लिए बाबासाहेब को कोई भी अनुमति नहीं दे रहा था। लेकिन उनके मन में तो चारित्र चक्रवर्ती बनने की भावना बढ़ रही थी। उनकी वैराग्य भावना को देखकर पू. आचार्य श्री ने दीक्षा की तारीख निश्चित कर दी। वह दिन विजयादशमी का था लेकिन यह बात केवल लेने वाले तथा देने वालों को ही मालूम थी। दीक्षा के थोड़े दिन पहले बाबासाहेब ने आचार्य श्री से एक बार भोजन करने का नियम ले लिया। शाम को केवल दूध पानी ही लेते थे।

उस समय आचार्य श्री को लगभग दो महीने से बुखार आ रहा था। भीषण ज्वर में तेजोमय मुखमण्डल पर जरा भी उदासी नहीं थी, उनका मुख एकदम फूलों की तरह प्रसन्न था चेहरे पर एक अद्‌भुत आत्मतेज था।

दीक्षा का समय नजदीक आ गया। बाबा साहेब अपने घर गए। माता-पिता के चरण छूकर उन्होंने क्षमा याचना की। इस प्रकार के व्यवहार से उन्हें शंका हुई। उन्होंने तुरन्त इस बात की सूचना बोर्डिंग में दे दी। यह बात धीरे-धीरे सभी जगह फैल गई। मध्यवर्ती के लोग पू. आचार्य श्री के पास आ गए। लेकिन उनसे प्रत्यक्ष पूछने की उन लोगों की हिम्मत नहीं हुई। इसलिए वो लोग संघस्थ त्यागियों के पास गए। लेकिन इस बारे में किसी को कुछ मालूम नहीं था।

कुछ लोग आचार्य श्री देशभूषण महाराज जी के पास पहुंच गए उन्होंने आचार्य श्री से कहा-'क्या बाबासाहेब दीक्षा ले रहे हैं? दस हजार लड़कों को उन्होंने सप्त व्यसन से दूर कराया, सन्मार्ग दिखाया, यदि वो ही दीक्षा ले लेंगे तो हमें सन्मार्ग कौन दिखाएगा? आप हमारी विनती सुन लीजिए। आप उन्हें समझाइए वो आपकी बात कभी नहीं टालेंगे।' प. पू. देशभूषण महाराज जी उनके मायाचार को नहीं समझ पाए। श्रावक जब बाबासाहेब को प.पू. आचार्य देशभूषण जी के पास लेकर आए तो आचार्य श्री ने दीक्षा लेने से इन्कार कर दिया। गुरु आज्ञा थी इसलिए बाबा साहेब कुछ नहीं बोल पाए, नाराज हो गए। उनके हृदय पर कुठाराघात हो गया, वे बहुत विह्वल हो गए। उन्हें कुछ समझ नहीं आ रहा था। फिर सभी लोग बाबासाहेब को लेकर बाहुबली-कुम्भोज गए। वहां भी प.पू. समंतभद्र से याचना की। उन्होंने भी बाबासाहेब को तत्काल दीक्षा लेने से मना कर दिया। दीक्षा मुहूर्त टलने तक उन्हें वहीं रोक लिया गया। इससे उनका मन दुखी होकर रोने लगा।-'अब मैं गुरुदेव को अपना मुंह कैसे दिखाऊं? मैंने आज अपने गुरु का अपमान किया है, धिक्कार है मेरे जीवन को।' उनकी नींद उड़ गई।

पू. आचार्य श्री को भी मालूम हो गया। लेकिन वे तो तटस्थ, ज्ञाता दृष्टा स्वभावी थे। हर्ष विषाद उनके जीवन में कभी भी नहीं था। उनके लिए अच्छे बुरे सब दिन बराबर थे। उसी दीक्षा नक्षत्र में विजयादशमी के दिन अनगोल (बेलगांव) निवासी श्री बाबूराव भेंडीगेरी को क्षुल्लक दीक्षा प्रदान की गई तथा श्री क्षु. देवपुत्र महाराज उनका नाम रखा गया।

विजयादशमी के दिन पू. गुरुदेव समंतभद्र जी के द्वारा सद्धर्म प्रवर्तक पद प्रदान

भोज से निकली हुई मानवता शान्तिपथ रथ यात्रा का आगमन कुम्भोज बाहुबली में हुआ। प.पू. श्री 108 ज्ञानोपयोगी समंतभद्र महाराज जी का मन रथ को देखते ही आनन्द से विभोर हो गया। ऐसी अपूर्व दिव्य और भव्य धर्म प्रभावना देखकर सहर्ष हृदय से दिनांक 22.10.85 के दिन उन्होंने आचार्य बाहुबली महाराज जी को 'सद्धर्म प्रवर्तक' की उपाधि देकर उनके कार्य की सराहना की और 'शान्ति पथ रथ यात्रा' के कार्यकर्ताओं को आशीर्वाद देते हुए कहा-'आपकी यात्रा सफल हो एवं यशस्वी होकर सभी भारतीयों के कल्याण के लिए सत्कार्य करो, यही हमारा आशीर्वाद है।'

पुनः रथयात्रा अविरत रूप से शुरू हुई। धर्म ध्वजा जगह-जगह फहराने लगी। सम्पूर्ण महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश आदि प्रान्तों में नगर-नगर गांव-गांव में रथयात्रा का विहार हुआ।

सम्मेद शिखर जी

चातुर्मास के समाप्त होने में पन्द्रह दिन शेष थे। एक दिन प्रवचन के दौरान प.पू. आचार्य श्री ने कहा-'आज हमारे मन में एक मंगलमय विचार आया है।' आचार्य श्री के वचन सुनते ही सबके कान आकुलित हो गए। प्रवचन सभा में एकदम शान्ति खिच गई। आचार्य श्री बोले-'मेरे मन में सम्मेद शिखर जी की वन्दना करने की भावना है।' जिन श्रावक श्राविकाओं को मेरे साथ आना हो वे अपनी भक्ति समेत तीर्थ यात्रा में आवें। साथ में आने वाले श्रावक सप्त व्यसन से दूर अष्टमूलगुणधारी, सदाचारी, सद्विवेकी हो। श्रावक षटक्रिया पालन करने वाले, धर्म में रुचि रखने वाले हो। तीर्थयात्रा का उद्देश्य मन में रखकर स्वपर कल्याणार्थ अपनी यात्रा होनी चाहिए।

अपनी भक्ति-शक्ति अनुसार तीर्थयात्रा करके पुण्य का सम्पादन करना है। एक बार आचार्य शान्तिसागर महाराज जी भी यात्रा के लिए जा रहे थे। उनके साथ अनेकों श्रावक, चौका समेत सम्मेद शिखर जाने को तैयार हो गए। जहां पू. आचार्य श्री थे वहां एक चोर आया जो छोटी मोटी चोरी करता था। उसको भी आचार्य श्री के साथ शिखर जी जाने के भाव हो गए। उसने आचार्य श्री से प्रार्थना की-'महाराज जी मैं भी आपके साथ आऊंगा।' उस समय कुछ श्रावक वहीं थे। उस चोर की बात सुनकर बीच में ही बोल पड़े-'यह तो चोर है सभी की चोरी करता है।' आचार्य श्री ने उस व्यक्ति से कहा-'तुम चोरी करते हो?'

'हां।' उसने उत्तर दिया।

'अच्छा ऐसा करो आज से चोरी करना छोड़ दो।' उसने पूज्य आचार्य श्री की बात मान ली।

'ठीक है मैं आज से चोरी नहीं करूंगा।' उसने आचार्य श्री की बात स्वीकार कर ली। सभी श्रावक एकदम चौंक पड़े और आचार्य श्री से बोले-'महाराज जी इसकी आदत नहीं जाएगी।' आचार्य श्री ने उसके मुखातिव होकर पुनः पूछा। उसने कहा-'महाराज जी मैं आज से नियम लेता हूं कि चोरी नहीं करूंगा।' चोर ने नियम ले लिया और उसे यात्रा की स्वीकृति मिल गई।

यात्रा शुरू हुई। चौके वालों की तक्रार शुरू हो गई। मेरा आज ये सामान खो गया, मेरा वो सामान खो गया। मेरा सामान इनके पास कैसे? सभी लोगों में हलचल मच गई। लोग कहने लगे-'यह उसी चोर की करामात होगी हमने तो आचार्य श्री से पहले ही कहा था कि इसे मत ले चलो इसकी आदत कभी नहीं छूटेगी। इसी तरह रोज चलता रहा तो हमारी यात्रा कैसे होगी?'

सभी श्रावक आचार्य श्री के पास गए और उनसे कहा-'महाराज जी हमने आपसे पहले ही कहा था कि इस व्यक्ति को साथ मत ले चलिए लेकिन आपने हमारी बात नहीं मानी। अब हमारी चीजें उधर-उधर हो रही हैं अब हमें ही इसका परिणाम भुगतना पड़ रहा है।' आचार्य श्री ने चोर को बुलाया और उससे पूछा-'तुमने चोरी की?'

'जी नहीं! मैंने जिस दिन आपसे नियम लिया था उसी दिन से चोरी करना छोड़ दिया।'

'फिर ये सभी लोग ऐसा क्यों कह रहे हैं कि हमारा सामान गुम गया।' आचार्य ने पूछा। चोर बोला-'गुरुदेव मैंने चोरी नहीं की। इन सभी से पूछो कि इनका क्या-क्या सामान खो गया है।' लोग बोले-'गुरुदेव हमारा सामान कुछ भी नहीं खोया। बस उनका सामान हमारे पास, हमारा सामान उनके पास पता नहीं कैसे चला गया।'

आचार्य श्री ने पुनः पूछा-'तुम ऐसा क्यों करते हो।'

'महाराज जी शिखरजी की यात्रा पूर्ण होने तक यदि मेरी चोरी की आदत छूट गई तो मैं बाद में क्या करूंगा। इसलिए मैं ऐसा करता हूं।'

बन्धुओं कहने का तात्पर्य यही है कि तीर्थयात्रा करना हो तो अपनी बुरी आदतें छोड़कर ही यात्रा करनी चाहिए। इस बारे में एक जगह कहा भी है-

मक्का गए मदीना गए बनकर आए हाजी।
आदत गई न इल्लत गयी, फिर पाजी के पाजी॥

मोही जीवों की हालत ऐसी ही होती है। वे कितनी भी यात्रा कर लें। किन्तु पापाचार की गन्दगी से उनका अन्तःकरण मलिन ही रहता है।

तीर्थ याने 'तरतीति तीर्थः'। जिससे जीव तिर जाते हैं। अर्थात् जो साधक साधना करके आत्मसिद्धि प्राप्त कर लेते हैं, कर्म रूपी शत्रुओं का नाश करके परमात्म दशा प्राप्त कर लेते हैं उसी को तीर्थ कहते हैं।

'सागार धर्मामृत' में लिखा है कि गृहस्थ को तीर्थयात्रादि अवश्य करनी चाहिए क्योंकि इससे सम्यक् दर्शन में विशुद्धता होती है इस दृष्टि से तीर्थयात्रा मुनि जीवन के लिए उपयोगी है। गृहस्थ के लिए भी हितकर है। निर्वाण भूमि-निर्वाण प्राप्त करने की पिपासा को जगाया करती है।

भाविक हो! हमें भी तीर्थयात्रा करके मोक्ष सिद्धि को प्राप्त करना है। जहां-जहां तीर्थंकर, मुनि आदि ने कर्मक्षय करके मोक्ष प्राप्त किया है उस स्थान की रज हमें अपने माथे पर लगाकर यही भावना भाना है कि हे-भगवन्! हमें भी आप अपने समान जल्दी बनाइए।' इस प्रकार हमें भी अरिहंत पद, सिद्ध पद प्राप्त करने के लिए यात्रा करके जीवन सफल बनाना है।

'तीर्थक्षेत्र की यात्रा से
भाव निर्मल हो जाते हैं
तीर्थयात्रा करने से ही
लोग मुक्ति पा जाते हैं।'

श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर जी की ओर आचार्य श्री जी का मंगल विहार 13 नवम्बर 1985 कार्तिक शुद्ध प्रतिपदा

बीसों सिद्ध भूमि जा ऊपर, शिखर सम्मेद महागिरी ऊपर।
एक बार वन्दे जौ कोई, ताहि नरक पशुगति नहीं होई॥

चातुर्मास पूर्ण होते ही रत्नत्रय धर्म की प्रभावना करने वाला आचार्य संघ तीर्थ क्षेत्रों की वन्दना हेतु प्रस्थान करने को उद्यत हुआ। कार्तिक शुद्ध प्रतिपदा का दिन अर्थात दीपावली प्रतिपदा के मंगल दिन का उदय हो गया। जहां तहां भीड़ थी। मंगल गीत, वाद्य आदि शुरू थे। दूर-2 के लोग आचार्य श्री के दर्शन को आ गए। अब पुनः हमें आचार्य श्री के दर्शन कब होंगे। इस विचार से सभी का हृदय बहुत दुःखी हो रहा था। हजारों की संख्या में भक्तगण यही प्रार्थना कर रहे थे कि पूज्य आचार्य श्री की यात्रा निर्विघ्न सम्पन्न हो और पुनः दक्षिण प्रान्त में इनका आगमन हो और सभी को दर्शन का लाभ प्राप्त हो।

आहार होते ही मंगल बेला में रथोत्सव शुरू हुआ। उस रथ में संघपति श्री जम्बू आण्णा और उनकी धर्मपत्नी सौ. सौनाक्का भगवान की प्रतिमा को लेकर बैठे। आनन्द और उत्साह की धर्मगंगा भोज नगरी में बह रही थी। जय-जयकार की ध्वनि से आकाश गूंज रहा था।

13 नवम्बर 1985 को आचार्य श्री बाहुबली महाराज जी ने बारह त्यागियों के साथ तीर्थराज श्री सम्मेद शिखर जी की ओर विहार किया। संघपति श्री जम्बू आण्णा, रविकीर्ति पाटील आदि पुण्यशाली, जिनधर्म के प्रगाढ़ दयालु श्रावकों ने संघ के साथ रहने का संकल्प लिया।

'जाके धन तेरे चरन दोय ता गेह कमी कबहूं न होय' जो भाग्यवान श्रावक अपना धन तीर्थयात्रादि में लगाते हैं उन्हें असीम पुण्य की प्राप्ति होती है। वे अन्त में जिनगुण सम्पत्ति के अधिकारी होते हैं।

विहार के समय हजारों की संख्या में जनता भोज में उमड़ पड़ी। आचार्य श्री की जय-जयकार से सारा गगन गूंज उठा। सभी ने भक्तिपूर्वक आचार्य संघ को विदाई दी। दोपहर के ठीक दो बजे संघ का विहार आचार्य शान्तिसागर स्मारक से गांव के जिन मंदिर का दर्शन करते हुए आगे बढ़ा। संघ के साथ आए हुए भाविक श्रावक चतुर्थ कालवत् संघ के विहार व सेवा में सतत् संलग्न रहे। पू. आचार्य श्री के साथ लगभग 108 लोग थे। जहां भी आचार्य श्री का संघ पहुंचता वहां मेला जैसा लग जाता तथा सभी भक्ति भाव से सेवादि करते तथा विहार के समय संघ के साथ दूर तक जाते और भावभीनी विदाई देकर अपने भाग्य सराहते थे-

विहार के समय जोभी
संतों के संग जाते हैं
श्रद्धा भक्ति कर सन्तों की
खुद कृतार्थ हो जाते हैं।

चलते समय सबसे पहले ध्वजा लेकर श्रावक चलते थे। तदनंतर पू. आचार्य श्री, उसके बाद सभी त्यागी, साथ में कमण्डल लेकर चलने वाले श्रावक। इस प्रकार आनन्द से विहार शुरू हुआ। सभी त्यागी चलते समय भी अपना पठन पाठन करते थे।

जहां आहार होता था वहां श्रावक एक छोटी गाड़ी लेकर आगे जाते। अच्छी, शुद्ध तथा कुएं की व्यवस्था देखकर आगे का विहार निश्चित करते थे। कभी-कभी दो तीन बार जगह देखने जाना पड़ता था। कई बार चाय पानी मिलना भी कठिन हो जाता था। ऐसी अवस्था में भी सभी श्रावकों की मुख मुद्रा सदा प्रसन्न रहती थी।

जहां चौके की व्यवस्था होती थी वहां आचार्य श्री का संघ आते ही संघपति-जम्बू आण्णा की सारी व्यवस्था रहती थी वे अपनी धर्मपत्नी से कहते थे-'ए, विजय! महाराज जी आ गए। जल्दी-जल्दी काम करो। पूजा का सामान लाओ पूजा करनी है।' ऐसा कहकर शोर मचाना शुरू कर देते थे। उनकी आवाज सुनकर चौके वाले घबराकर दौड़े-दौड़े वहां आ जाते। आहार होने तक सभी को बस एक ही चिन्ता रहती थी कि सभी त्यागियों का आहार निरन्तराय हो जाए। क्योंकि आहार के पश्चात पुनः विहार होता था। 3-4 कि.मी. आगे जाकर सामयिक पुनः विहार। इस प्रकार 30-40 कि.मी. चलते थे कई त्यागी पीछे रहते थे तो कोई आगे निकल जाते थे। आचार्य श्री के मन में इतना वात्सल्य था कि पीछे चलने वाले त्यागियों के साथ कोई है या नहीं। यह सभी ध्यान रखते हुए वे स्वतः पीछे रहकर सभी को आगे भेज देते थे। शाम को जब जत्था खेत या जंगल में होता, तो एक अनोखा ही दृश्य वहां दिखाई देता। हर जगह भीड़ ही भीड़ नजर आती जिसे देखकर ऐसा लगता जैसे एक सुन्दर नगर की रचना हो गई हो। आचार्य श्री आते ही संघपति पू. आचार्य श्री जी के गरम पानी से पाद प्रक्षालन करते। उन्हें आसन देते। वैयावृत्य करते तभी शान्ति से बैठते थे। सभी त्यागियों की यथायोग्य वैयावृत्य करके सभी श्रावक श्राविका पू. आचार्य श्री जी की आरती करते थे। सामुदायिक प्रतिक्रमण होते ही आचार्य वन्दना होती थी तत्पश्चात् सामायिक। ऐसा नित्यक्रम था।

सर्दियों के दिन थे। सर्दी बहुत होने से कोई भी त्यागी अपनी कुटिया छोड़कर बाहर आने का नाम नहीं ले रहे थे। बाहर तो मानो बर्फ की वर्षा हो रही थी। सभी त्यागी ठण्ड से कांप रहे थे तथा बैठे-बैठे माला फेर रहे थे। आचार्य श्री

ने देखा कोई भी त्यागी व श्रावक विहार के लिए बाहर नहीं आ रहे हैं तो स्वयं झट से अपने स्थान से उठकर बाहर आ गए और विहार शुरू कर दिया। जब सभी ने देखा कि पू. आचार्य श्री का विहार हो गया तो भागे-भागे बाहर आए। आगे-आगे आचार्य श्री पीछे-पीछे सभी साधुगण। धर्म ध्वजा लेकर चलने वाला बन्धु भी आज सर्दी के मारे चादर ओढ़कर बैठा था। आचार्य श्री ने विहार कर दिया ऐसा सुनते ही उसकी सर्दी भाग गई। धर्मध्वजा लेकर दौड़कर आचार्य श्री से भी आगे चलने लगा। सब कमण्डल वाले आचार्य श्री के पीछे भागने लगे। सबकी ठण्ड भाग गई। आचार्य श्री इतनी सर्दी में भी ऐसे चल रहे थे जैसे गर्मियों के दिन में चलते हैं। उनके चेहरे पर जरा भी शिकन नहीं थी-

गुलाब कांटों में भी मुस्कराता है,
जल चट्टानों के मध्य भी लहराता है।
आपत्ति विपत्ति में हतोत्साहित होने वालों,
उपसर्ग विजेता ही तो मुक्ति पाता है॥

परिषहों को जीतने में तो आचार्य श्री निपुण थे। यदि चलते समय कांटा भी लग जाए तो निकालने की परवाह न करते थे। शरीर की कोई भी व्याधि हो जाए तो भी किसी प्रकार की आयुर्वेदिक दवा उपयोग नहीं करते थे। यदि आहार के समय कोई श्रावक औषधि जबरदस्ती करके दे भी दे तो वो अन्तराय करके बैठ जाते हैं। इस पंचमकाल में आचार्य श्री जैसे सन्तों के दर्शन अहोभाग्य से होते हैं। वो संकटों का सामना मुस्कराकर करते हैं, उनके हृदय में सरलता व वात्सल्यता तो कूट-कूटकर भरी है। आप सदैव साधुजनों व भव्यों को सच्चे मार्ग का दिग्दर्शन कराते हुए साधना पथ पर अग्रसर करते हो।

संघ में विश्वनन्दी मुनिराज थे। ठण्डी अधिक होने से उनसे चला नहीं जा रहा था। तब ब्रह्मचारी श्री आदगोंडा भाई (वर्तमान में मुनि श्री धर्मसेन महाराज) ने सीधे उन्हें कन्धे पर बिठाकर 15 कि.मी. का रास्ता पार करा दिया। उसी दिन आचार्य संघ का पदार्पण मैहर में हुआ।

धर्मध्वजा लेकर चलने वाले श्रावक सर्जेराव पाटील ने आचार्य श्री से कहा-'गुरुदेव आज का विहार तो बहुत अजीब है। आज चलते समय मैं अन्दर और बाहर दोनों तरफ से भीग गया।'

'वह कैसे?' आचार्य ने हैरत से पूछा।

'ऊपर की शर्ट बर्फ की वर्षा से भीग गई और अन्दर की बनियान पसीने से भीग गई।' वह श्रावक बोला। उसकी बात सुनकर सभी हंसने लगे।

मैहर पहुंचते ही संघपति एक सिगड़ी (अंगीठी) ले आए और आचार्यश्री के सामने रख दी।

'इस सिगड़ी (अंगीठी) का हमारे लिए क्या काम है।' आचार्य श्री बोले।

'आचार्य श्री आज बहुत सर्दी है। थोड़ी देर आप सेंक लीजिए।' संघपति बोला।

'नहीं भाई' हम तो महाव्रती हैं, शीत परिषह सहे बिना कर्म निर्जरा कैसे होगी। हमने तो सदैव धैर्य रूपी चादर ओढ़ रखी है। आकाश ही हमारा वस्त्र है। इसे ओढ़कर हम शुद्धात्मा का चिन्तन करते हैं।' आचार्य श्री ने मुस्कराकर कहा। उनकी धैर्यता देखकर संघपति की आंखों में आंसू छलछला आए। धन्य-धन्य मेरे गुरुदेव। तभी उन्हें देवशास्त्र गुरु पूजा की जयमाला याद आ गई।

'हे गुरुवर! शाश्वत् सुख दर्शक, यह नग्न स्वरूप तुम्हारा है।
जग की नश्वरता का सच्चा, दिग्दर्शन करने वाला है॥
जब जग विषयों में रचपचकर, गाफिल निद्रा में सोता है।
अथवा वह शिव के निष्कन्टक, पथ में विष कन्टक बोता है॥
हो अर्धनिशा का सन्नाटा वन में वनचारी चरते हों
तब शान्त निराकुल मानस तुम, तत्वों का चिन्तन करते हो॥
करते तब शैलनदी के तट पर, तरू तल वर्षा की झड़ियों में।
समता रस पान किया करते, सुख दुख दोनों की घड़ियों में॥

विहार करते समय दिगम्बर मुनि किसी भी जीव को पीड़ा नहीं पहुंचाते है। आगे की चार हाथ भूमि देखते हुए ही गमन करते हैं। सूर्योदय के बाद व सूर्यास्त से पहले गमन करते हैं। ऐसे शुद्ध गमन को ही तो उत्तम विहार (ईर्यापथ शुद्धि) कहते हैं। परीषहों को जीतने के लिए सर्वत्र विहार करते हैं।

इस प्रकार श्रद्धाभक्ति से मुनि चर्या का पालन करते हुए आचार्य श्री ने भारत के हर प्रान्त तथा प्रत्येक भाग में जाकर जैन धर्म की अभूतपूर्व प्रभावना की। आचार्य श्री जहां भी जाते हैं वहां के जीवों को एक नवीन दिशा मिलती है। सच है-

चांद के उदय से प्रकाश होता है,
सूर्य के उदय से पुष्प विकास होता है।
पू. आचार्य श्री जहां भी विहार करते हैं,
वहां के मनुजों के जीवन में सुप्रभात होता है॥

सम्मेदाचल का महत्व

एक दिन एक व्यक्ति ने आचार्य श्री से सहज भाव से पूछ लिया-'गुरुदेव' सभी भूमियां समान हैं तो फिर शिखरजी को अधिक महत्व क्यों देते हैं? आप तो दिगम्बर हैं आपको बाहर के तीर्थों की वन्दनार्थ किसी तीर्थ की जरूरत ही नहीं है। असली तीर्थ अपनी आत्मा ही है। इसलिए सम्मेद शिखर जी जाने का महान आरम्भ किया जाना, धन खर्च करना व्यर्थ ही है क्योंकि इसमें मार्ग में कष्ट भी उठाना पड़ेगा।

गुरुदेव ने उनसे वात्सल्य भाव से शंका का निरसन करते हुए कहा-निर्वाण-भूमि के द्वारा आत्मा पर विशिष्ट प्रभाव पड़ने का मुख्य कारण है। सम्मेद शिखर जी सदा से सिद्ध भूमि रूप से आगम में प्रसिद्ध हैं। वहां जगत का अनन्त उपकार करने वाले धर्म तीर्थंकरों का उस समय आगमन हुआ था।

जिस स्थान पर तीर्थंकर केवली का विहार होता है, वहां आस-पास सौ-2 योजन पर्यन्त सुभिक्ष हो जाता है, इसका कारण यही है कि उनके द्वारा परित्यक्त पुद्गल के परमाणुओं मे इतनी उच्चता और सप्राणता रहती है कि सर्वत्र सुख और समृद्धि की सृष्टि ही दर्शन होती है। जो काम अरबों मन खाद के द्वारा सम्पन्न न हो, जिस समृद्धि को अवतरित भू को शस्यश्यामला बनाने की सामर्थ्य पुरुष प्रयत्न साध्य न हो, वह कार्य परम औदारिक शरीरधारी तीर्थंकर केवली के परम पवित्र शरीर से विनिर्गत परमाणुओं द्वारा अनायास सिद्ध हो जाता है। भगवान की सामर्थ्य और उनके प्रभाव के विषय में समंतभद्र स्वामी लिखते हैं-

'अवापदार्हन्त्यमचिंत्यमदभूतं, त्रिलोक पूजातिशयास्पदं पदम्।'

भगवान पार्श्वनाथ जी ने ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय तथा अंतराय का नाश करके जो अरहन्त का पद प्राप्त कियाहै। उसकी महिमा अचिन्त्य है-उसका चिन्तन करने की सामर्थ्य हममें नहीं वह अद्‌भुत है।

भगवान का शरीर अयोग केवली रूप उत्कृष्ट स्थिति को प्राप्त करने के पश्चात् जिस भूमि में रह जाए वहां की भूमि को लोकोत्तर मानने में कैसे संदेह हो सकता है। उनके उस परम पवित्र, परिशुद्ध शरीर का अन्तिम संस्कार जिस भूमि में सदा से होता आ रहा है-उसकी विलक्षणता को कौन विचारक न मानेगा? निर्वाण भक्ति में लिखा है कि-'भगवान के निर्वाण पश्चात् देवताओं ने आकर निर्वाण पूजा की तथा अग्नि कुमार नामक भवन वासी देवेन्द्रों ने अपने मुकुट से अद्‌भुत अग्नि तथा सुगंधित चन्दन, धूप आदि के द्वारा उनके शरीर का अन्तिम संस्कार किया तथा उस भस्म की पूजा की गई।'

निर्वाण मुद्राधारी मुनि को मुक्ति पथ साधना के लिए निर्वाण भूमि एक लक्ष्य केन्द्र

पू. आचार्य श्री ने शंकाकार को फिर आगे बताते हुए कहा-'दिगम्बर मुनि जीवन की कठिन साधना का एक मात्र लक्ष्य या केन्द्र हैं-निर्वाण को प्राप्त करना। निर्वाण भूमि तथा निर्वाण सम्बन्धित सामग्री उसी आत्मा को ध्येय की ओर साहसपूर्वक बढ़ने का मौन उपदेश देती है। इस दृष्टि से श्रमणों के लिए निर्वाण भूमि गमन की असाधारण उपयोगिता नहीं भुलाई जा सकती है।

जिस भूमि पर निरन्तर हिमपात होता है, वहां शीतलता के कारण नष्ट हुई वृक्ष राशि पुनः नहीं बढ़ती है। उस हिमपात के प्रभाव से पृथ्वी की उर्वरा शक्ति का विपरीत परिणमन होता है। इसी प्रकार कषाय अग्नि पर वीतराग भाव रूप अनन्त हिमपात द्वारा कर्मबीज को दग्ध करने वाली श्रेष्ठ आत्माओं के जीवन के श्रेष्ठ क्षण जहां व्यतीत हुए हों, जहां उन्होंने अनन्त कल्याण दाता अक्षय शान्ति रस की दिव्यवाणी द्वारा वर्षा की है तथा जहां उनके सिद्ध होते समय परम औदारिक शरीर का अग्नि में संस्कार किया गया हो, वहां बन्धक आत्मा में विशेष विशुद्धता उत्पन्न हो, उसका मोह रूपी ज्वर मंद हो तथा आत्माकी निरोगता बढ़े इसमें क्या आश्चर्य?'

निर्वाण भूमि का दर्शन करना मुनियों का परम कर्तव्य है। निर्वाण भूमि को आचार्य शान्तिसागर जी 'वीरभूमि' कहते थे। जो कर्म को रत्नत्रय रूपी खड्‌ग के द्वारा संहार करके जहां अनन्त दुखों में डुबाने वाली आत्मा की रक्षा की है। उस निर्वाण भूमि के वन्दनार्थ जाना अत्यन्त समुज्वल कार्य है।

मन को पवित्र रखो

निर्वाण भूमि की वन्दना के लिए जाते समय मन को पाप वासनाओं से बचाते हुए जाना आवश्यक है। उसके द्वारा यदि जीवन में मधुरता न आई, पवित्रता का बसन्त जीवन को श्री सम्पन्न न बना सका तो कहना होगा मछली नदी के मध्य में रहते हुए भी प्यासी की प्यासी ही रही।

काहे री नलिनी तू कुम्हलानी
तेरे ही नाल सरोवर पानी
जल में निकसत जल में ही वास
फिर क्यूं नलिनी तू है उदास।

अर्थात जो मोही जीव हैं जो पाप वासनाओं से मुक्त नहीं हुआ हो तो उसका हाल कमलिनी जैसा ही होता है। पाप वासनाओं से मुक्त होकर जो निर्वाण भूमि की वन्दना करता है उनका जीवन सफलता को प्राप्त होता है।

अभी लक्ष्यगत स्थल को पहुंचने में बहुत देर थी। यात्रा भी पैदल थी किन्तु पवित्र तीर्थराज की मनोज्ञ मूर्ति आचार्य श्री के चित्त के समक्ष सदा विद्यमान रहती थी कारण दृष्टि उसी ओर थी, संकल्प भी तद्रूप था आत्मा पर्वतराज की ओर थी।

अपूर्व आनन्द

संघ के साथ आए हुए श्रावक कहते थे-ऐसा आनन्द, ऐसी सात्विक शान्ति, ऐसी भावों की विशुद्धता जीवन में कभी नहीं मिली, जैसी आचार्य श्री के संघ में सम्मिलित होकर जाने में प्राप्त हुई। आर्तध्यान और रौद्रध्यान की सामग्री का दर्शन भी कभी नहीं होता था, निरन्तर धर्मध्यान ही होता था। शुभोपयोग की इससे बढ़िया सामग्री आज के युग में कहां मिल सकती है? वह रत्नत्रयधारियों तथा उपासकों का संघ रत्नत्रय की ज्योति को फैलाता हुआ आगे-2 बढ़ता जा रहा था।

आचार्य श्री के संघ के दर्शनार्थ सभी ग्रामीणों की बहुत भीड़ जमा हो जाती थी। हजारों व्यक्ति महाराज को देखते ही मस्तक जमीं पर टिकाकर प्रणाम करते। वो जानते थे कि-'ये नागा बाबा साधु परम देवता हैं।' आचार्य श्री का दर्शन करके लोगों ने असीम पुण्य का संचय किया।

आचार्य श्री का संघ संध्या को जहां भी ठहरता वहां दूर-2 से ग्रामवासी आते। मंगलमय उद्देश्य को लेकर मंगलात्मक श्रवण समुदाय सुसज्जित संघ अन्वर्थतः मंगलमय दिखता था।

सूर्यास्त होते ही साधुगण अपनी कुटी में बैठकर आत्मध्यान में लीन हो जाते। सूर्योदय के होते ही उनका विहार प्रारम्भ हो जाता था। लगभग सात-आठ मील पहुंचकर साधुगण शौचादि से निवृत्त होते तब तक श्रावक श्राविकाएं मोटरकार द्वारा आगे पहुंचकर आहार की पूर्ण तैयारी कर लेते थे। अस्थाई उपयोग के लिए तम्बू वगैरह लगाते। आहारादि दान रूप में सेवा की जाती थी। आहार होते ही पुनः विहार प्रारम्भ हो जाता था। मध्यान्ह सामायिक समय तक विहार करने के पश्चात किसी आम, इमली आदि वृक्ष के नीचे सामायिक के लिए रूकते थे। सामायिक होते ही आचार्य श्री का संघ यंत्रवंत विहार प्रारम्भ कर देता था।

नागाबाबा के दर्शन से हजारों जनता का कल्याण

प्रत्येक स्थान पर धर्म प्रभावना करने के पश्चात् संघ मधुबन के नजदीक आ गया। दूर से ही पर्वतराज के दर्शन हो गए। संघ को ज्यादातर जंगली मार्ग से जाना पड़ता था। उस स्थान पर दिगम्बर मुनि के दर्शन करके ग्रामीणों को कल्पनातीत कल्याण की प्राप्ति हुई। रास्ते भर हजारों आदिवासी लोग ने नागा बाबा के दर्शन को दूर-दूर से आते थे। गुरुवर के समक्ष दण्डवत प्रणाम करके उपदेश सुनते। उनके उपदेशों का ये प्रभाव होता कि लोग मांस खाना, शराब पीना, शिकार खेलना आदि विचारों का सहज ही त्याग कर देते थे।

विहार के समय कभी-कभी जंगलों में भी रूकना पड़ता था। जहां पर सिर्फ फक्त आदिवासियों की बस्ती होती थी। सभी आचार्य श्री से कहते कि ये बहुत खतरनाक इलाका हैं, डाकू लुटेरों से यहां कोई बच नहीं पाता हैं, ऐसे निर्जन स्थान पर आप कैसे रहेंगे?

आचार्य श्री मुस्कराकर कहते-'घबराने की कोई बात नहीं है। डाकू लुटेरे हमारा क्या बिगाडेगें। हम तो दिगम्बर हैं पीछी, कमण्डलु के अलावा हमारे पास कुछ नहीं है। अगर वो पीछी कमण्डल लेंगे तो उन्हें भी साधु होना पड़ेगा।

लेकिन अद्‌भुत चमत्कार ये हुआ कि वे सभी आदिवासी रात भर आचार्य श्री के संघ का संरक्षण करते रहे। कभी-कभी पुलिस वाले आकर संघ का सरंक्षण करते थे। रात बीतने के पश्चात् सभी आचार्य श्री के दर्शन के लिए आए। आचार्य श्री ने उन्हें धर्म की महिमा बताकर उन से सप्तव्यसन का त्याग करा दिया। उन्होंने गुरू प्रसाद रूप में व्रत को स्वीकार कर अपना आत्मकल्याण कर लिया।

मधुबन का दूर से दर्शन

आचार्य श्री ससंघ हजारी बाग पहुंचे। 20 फरवरी को संघ मधुबन शिखर जी पहुंचेगा। शिखर जी पहुंचने की बात दक्षिण भाग में फैल गई। उस समय सबको असीम आनन्द की प्राप्ति हुई।

तीर्थराज सम्मेद शिखर जी-20 फरवरी 1986

सम्मेद शिखर जी-मधुबन में पहुंचते ही प्रत्येक के अन्तःकारण में आनन्द का रस छलका सा पड़ता था। अगणित सिद्धों की सिद्धी के स्थल सम्मेद शिखर जी का मंगल संस्मरण जब पुण्य भावनाओं को जाग्रत करता हैं तब तीर्थराज का सााक्षात् दर्शन के हर्ष का वर्णन कौन कर सकता हैं?

सम्मेद शिखर जी में 20 फरवरी को सुबह 9 बजे पू० आचार्य श्री के भव्य संघ का आगमन हो गया। 'न भूतो' ऐसा स्वागत किया गया। उस समय संघ का प्रत्येक व्यक्ति अन्तःकरण से आचार्य श्री के प्रति कृतज्ञता प्रगट कर रहा था।

मधुबन में पहुंचते ही वहां के भव्य जिनालयों के दर्शन से श्रांत क्लांत यात्रियों को अपूर्व शान्ति प्राप्त हुई थी। मधुबन में नन्दीश्वर बावन जिन चैत्यालय, चौबीस टोंक रचना, बाहुबली स्वामी की मूर्ति, मानस्तम्भ, सहस्त्र कूट चैत्यालय आदि मंदिरों के दर्शन कर प्रत्येक व्यक्ति ने अपने को धन्य समझा।

पू० आचार्य श्री बाहुबली महाराज जी का दर्शन मिलेगा, इस मंगल भावना वश दक्षिण भाग कर्नाटक, महाराष्ट्र प्रान्त के लाखों लोगों ने सम्मेद शिखर जी आकर एक विशाल धर्मनगर का दृश्य उपस्थित कर दिया था। उस समय सभी ट्रेनों में अपार भीड़ थी। स्पेशल ट्रेनें पारसनाथ स्टेशन को जल्दी-जल्दी आ रही थी। रेल के लिए टिकिट बाबू का कहना था-टिकिट का हिसाब ही नहीं लग रहा हैं। मोटर आदि वाहनों द्वारा पहुंचने वालों की गणना करना कठिन था। देखने में वह स्थान धर्म पुरी के रूप में प्रतीत होता था, यहां के आराध्य गुरू आचार्य रत्न बाहुबली जी थे। भीड़ इतनी अधिक थी कि सारे स्थान भर गए थे। व्यवस्थापकों को उम्मीद नहीं थी कि इतने लोग आएंगे। लोग सोचते थे कि तीर्थराज शिखर जी की वन्दना भी हो जाएगी और चतुर्थ काल के साधुओं सदृश आचार्य श्री का दर्शन भी कर लेगें।

सम्मेद गिरि में सभी लोग आधी रात से अपने बच्चों को लेकर लालटेन पकड़कर भगवान पारसनाथ की, आचार्य श्री की जय बोलते हुए पर्वत पर जाने को उद्यत होते थे।

सम्मेद शिखर जी की महिमा विशाल
इसको कहते तीर्थराज
लोग रात से पर्वत पे चढ़ते,
पार्श्वनाथ की जय-जय करते
लालटेन को हाथ में लेकर
प्रभू की मूरत दिल में बसाकर
यात्रा हो जाती आसान
सब रोगों का होता निदान।

लगभग दस कोस की यात्रा भगवान की भक्ति, श्रद्धा, तथा आत्मबल के प्रति से अशक्त लोग भी प्रसन्नता पूर्वक पैदल करके आ जाते। पर्वत पर घना जंगल होने से वहां जंगली जानवरों के निवास को कौन रोक सकता हैं? किन्तु भगवान पारसनाथ का नाम वहां गूंजते रहने से कभी भी किसी यात्री को भय नहीं हुआ। भीषण जंगल से निकलते हुए ऐसा लगता है जैसे बगीचे में से जा रहे हो। चिन्तामणी पारसनाथ प्रभू का नाम दूर देश में जपने वालों का संकट क्षण में दूर कर देता है। तब उन देवाधिदेव के निर्माण भूमि में पहुंचते ही कष्ट क्यों नही दूर हो जाएंगे?

आचार्य श्री संघ सहित सम्मेदाचल पर वन्दनार्थ

मधुबन में आचार्य श्री पहुंचते ही भगवान का अभिषेक हुआ और तुरन्त आचार्य श्री आहार को निकले। मधुबन के बीस पंथी कोठी में जहां तहां चौके तथा पड़गाहन के लिए खड़े श्रावक श्राविका 'भोस्वामिन्। नमोऽस्तु। नमोऽस्तु। नमोऽस्तु। अत्र-अत्र' से नभोमण्डल गूंजने लगा। आचार्य श्री की विधि आज संघपति जम्बू आण्णा की थी, वे सीधे संघपति के सामने खड़े हो गए। उनके यहां आहार निरन्तराय हो गया। आहार होते ही आचार्य श्री संघ सहित वन्दना के लिए रवाना हो गए आचार्य श्री भूमि पर दृष्टि डालते हुए तथा जीवों की रक्षा करते पर्वत पर चढ़ रहे थे। विशेष अभ्यास से और शारीरिक महान शक्ति सम्पन्न होने के कारण वे शीघ्र ही गंधर्व नाले के पास पहुंच गए। कुछ समय पश्चात् सीता नाला भी आ गया। मार्ग के कंकर पत्थर की परवाह किए बगैर आचार्य श्री तीर्थराज पर्वत के शिखर पर पहुंचते जा रहे थे। संघस्थ कुछ साधु-साध्वी अशक्त थे वे केवल गुरू के बलवान आर्शीवाद से ही पर्वतराज पर चढ़ते जा रहे थे।

आज हजारों मील पैदल चलकर शैलराज पर विराजमान बीस तीर्थंकरों के चरण चिन्हों को प्रणाम करते हुए वात्सल्य रत्नाकर आचार्य रत्न बाहुबली जी महाराज को जो शान्ति मिली, जो आनन्द प्राप्त हुआ उसका अनुमान राग रोगी आत्मा कैसे कर सकती हैं?

चन्द्रप्रभू की ललित कूट बड़ी आकर्षक लगती है। ललित कूट का तथा पारसप्रभू की सुवर्ण भद्रकूट इन दोनों टोंको का पर्वत के नीचे से भी स्पष्ट दर्शन होता है। सब टोंको का दर्शन करते हुए अन्त में पारसनाथ भगवान की सुवर्णभद्र टोंक का दर्शन हो गया। उस भूमि से ब्यासी करोड़, चौरासी लाख, पैंतालिस हजार, सात सौ ब्यालीस मुनियों ने मोक्ष प्राप्त किया था। कितना पवित्र मनोरम आनन्ददायक यह निर्वाण स्थल हैं यहां ऐसा मन लगता है कि जाने की इच्छा ही नहीं होती।

इस टोंक पर पू० आचार्य श्री जी ने सम्यक्ज्ञान नेत्र द्वारे सिद्ध समूह की आराधना की। इस श्रेष्ठ तीर्थ पर भिन्न-भिन्न टोंको की भावपूर्ण वन्दना की। पारसनाथ भगवान की टोंक में पूर्णशान्ति मिलते ही आचार्य श्री ने पर्वत से उतरना प्रारम्भ

किया। नीचे आ जाने पर भी पुनः पुण्यधाम को देखने की इच्छा होने लगी। मधुबन के सब बिम्बो की वन्दना करके आज की तीर्थ वन्दना पूर्ण हुई। बाद में आचार्य श्री एक योग्य स्थान पर आत्मध्यान हेतु विराजमान हो गए। आज की सामायिक की निर्मलता, विशुद्धता का और आनन्द का कौन वर्णन कर सकता है। आज बीस तीर्थंकरों के निर्वाण भूमि के चरण चिन्हों की वन्दना करके परमात्मा के स्वरूप के चिन्तन में मग्न हो गए।

आचार्य श्री वहां दस बारह दिन थे। कोई-कोई साधु रोज वन्दनार्थ जाते थे। किसी की तीन, किसी की चार, किसी की पांच वन्दना हो गई। तत्पश्चात् संघ सहित सम्मेद गिरि को परिक्रमा देने के लिए निकले। आहार करके निकले थे साथ में श्रावक श्राविका भी थे। वे सब प्रभू नाम स्मरण बेला में विविध गीतों के द्वारा भक्ति प्रकट कर रहे थे। साधु साध्वी श्रावकों के मुख में जिन स्तुति से पर्वत मुखरित होता था। कन्नड़ प्रान्त वाले कन्नड़ में, महाराष्ट्र प्रान्त वाले मराठी में, जिन स्तवन करते जाते थे, कोई संस्कृत में कल्याण मंदिर आदि स्रोत पढ़ते थे। इस प्रकार विविध भाषाओं में जिनेन्द्र नाम स्मरण करके परिक्रमा दे रहे थे। शाम होते ही निमियाघाट धर्मशाला में विश्राम करके प्रभात होते ही फिर परिक्रमा देना शुरू कर देते। दूसरे दिन आहार के समय सम्मेद गिरी की परिक्रमा देकर मधुबन आ गए। उसके पश्चात् आहार हो गया।

सम्मेद शिखर जी से प्रस्थान

आचार्य श्री ने शिखर जी में दस बारह दिन रहकर प्रस्थान कर लिया। इतने दिनों में सम्मेद शिखर जी के दर्शन की जो उमंग थी वह पूरी हो गई। संघ गिरडीह पहुंच गया। वहां से वासुपूज्य भगवान के निर्वाण स्थान अथवा पंचकल्याणिक स्थान चम्पापुर के लिए रवाना हुआ।

भगवान वासुपूज्य के पांचों कल्याणिक स्थान चम्पापुर

चम्पापुर में भगवान वासुपूज्य की मूंगा वर्ण की प्रतिमा बड़ी ही मनोज्ञ है। तथा उनके चरण भी यहां विद्यमान है। उनके दर्शन-स्तवन आदि कर सबने शान्ति प्राप्त की। चम्पापुर में भगवान वासुपूज्य के पांचों कल्याणिक स्थापना हो चुकी है। पांच वालयति तीर्थंकरों में वासुपूज्य भगवान का प्रथम नाम स्मरण किया जाता है। वहां दो तीन दिन संघ ठहरकर मंदारगिरि पहुंच गया। वहां के दर्शन कर संघ भागलपुर पहुंच गया।

विपुलाचल का दर्शन

भागलपुर से संघ का विहार राजगिरि की ओर हो गया। यहां के राजा श्री श्रेणिक महाराज थे। भगवान महावीर स्वामी के समवशरण में मुख्य प्रश्नकर्ता श्रोता का गौरव श्रेणिक बिम्बसार को प्राप्त हुआ था।

राजगृही पंच पहाड़ी की वन्दना करने आचार्य श्री का संघ निकल पड़ा। होली का समय था। सारे संघ को साथ में लेकर वे चल रहे थे। राजगिरि के पूर्व में चतुष्कोण आकार वाला ऋषि शैल है। दक्षिण में वैभार गिरी, नैऋत्य दिशा में विपुलाचल पर्वत है। पश्चिम वायव्य तथा उत्तर दिशा में धनुषाकार छिन्न नाम का पर्वत है। ईशान्य दिशा में पाण्डु पर्वत है।

विपुलाचल पर्वत पर भगवान महावीर की प्रथम देशना का सौभाग्य मिला था। भगवान महावीर की 66 दिन पर्यन्त वाणी नहीं खिरी। अन्त में श्रावण कृष्णा प्रतिपदा के प्रभात में विपुलाचल पर्वत पर दिव्य ध्वनि खिरी।

इस पंच पहाड़ी पर वे संघ सहित चढ़े। विपुलाचल पर्वत पर भगवान महावीर की पांच फुट की विशाल चार मूर्ति का दर्शन हो गया। नीचे आते समय एक स्थान पर दो प्रकार के झरने थे एक से गरम पानी और एक से ठण्डा पानी निकलता था। वहां का मनोहारी दृश्य देखकर राजगिरि के जिनमंदिर में आ गए।

भगवान महावीर की निर्वाण भूमि पावापुरी

राजगिरि की वन्दना के पश्चात् आचार्य श्री संघ सहित भगवान महावीर के निर्वाण से पुनीत हुई पावापुरी की ओर विहार किया। पावापुरी की नैसर्गिक शोभा मन को बहुत आकर्षित करती हैं। यहां पहाड़ी नहीं हैं, कहीं दूर जाना ही नहीं है तालाब के बीचों बीच भगवान महावीर का निर्वाण स्थल है। जलमंदिर में भीतर भगवान महावीर स्वामी के चरण चिन्ह विराजमान है। तालाब लगभग आधा मील लम्बा तथा चौड़ा है। उसमें मनोहर कमल शोभायमान है। इसके मध्य का मंदिर शुभ्र संगमरमर का बड़ा ही आकर्षक था। मंदिर तक पहुंचने के लिए एक पुल बना हुआ था।

सभी ने भगवान महावीर के चरण को भक्ति भाव से स्पर्श कर मधुर राग से वीर स्तुति की। तीर्थंकर महावीर प्रभु की निर्वाण भूमि के दर्शन करके संघ गुणावा आया।

बिहार प्रान्त के आरा के चन्दा बाई आश्रम में आगमन

संघ ने गुणाबा में गौतम गणधर के चरण कमल का दर्शन करके वहां से फिर विहार किया। विहार करते-करते बिहार प्रान्त में आरा में पू० आचार्य श्री के संघ का आगमन हो गया। ब्र० चंदाबाई ने जो महान परिश्रम करके आश्रम बनवाया उसकी आचार्य श्री ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। वहां से शहर में आए। वहां दस बारह दिन रहकर पूरे पैंतालीस जिन मंदिरों के दर्शन किए। नन्दीश्वर मंदिर तो बहुत ही सुन्दर है।

इसके पश्चात् आचार्य श्री के संघ का विहार काशी की ओर हो गया। उस समय भीषण गर्मी थी। किन्तु महाव्रती साधुओं के नियम जीवन भर अटल रहते हैं। इस काल में पानी पीते ही क्षण भर में उदराग्नि द्वारा भस्म हो जाता था, फिर भी मुनिश्वर आहार के समय ही प्रासुक जल पीते थे और फिर ऊष्ण काल में विहार भी करते जाते थे। गरम पवन आग की लपटों का स्मरण करके लोग घबरा उठते थे। किन्तु महाव्रती मुनिराज अपने आत्मस्वरूप का चिन्तन करते हुए समता भाव पूर्वक कष्टों को सहन करते थे। इससे उनके पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा होती थी।

भारत की सांस्कृतिक राजधानी काशी में आगमन

आचार्य श्री का संघ विहार करते हुए काशी पहुंच गया। भगवान चन्द्रप्रभु का जन्म स्थान चन्द्रपुरी में जाकर दर्शन वन्दना कर वहां से प्रस्थान किया। बड़े वैभव के साथ पू० आचार्य श्री का स्वागत किया। काशी तो भारत की सांस्कृतिक राजधानी है। और भगवान सुपारसनाथ तथा भगवान पारसनाथ स्वामी की जन्मपुरी होने के कारण वन्दनीय है।

तीर्थंकर युगल के जीवन से पुनीत काशी में कुछ काल व्यतीत कर आचार्य संघ का विहार हो गया।

कुण्डलपुर के बड़े बाबा

अतिशय क्षेत्र कुण्डलपुर जाते समय एक अनजान पगडण्डी का रास्ता मिला। वहां से पटेरा ग्राम पास में है। ऐसा वहां के आदिवासियों ने बताया। उस दिन आहार होते ही विहार शुरू हो गया। दिन भर संघ चलता रहा। लेकिन पटेरा

ग्राम में नहीं पहुंच सकें। बीच रास्ता होने से उधर के श्रावकों को पता नहीं लगा। वे लोग गाड़ी लेकर रोड पर ढूढ़ते रहे परन्तु संघ नहीं मिला।

शाम होते ही आचार्य श्री इधर-उधर देखने लगे आगे कोई गांव भी नजर नहीं आ रहा था। इसलिए वहीं जंगल में रूकने का विचार किया। अब क्या करें उधर ना पाटा, न चटाई, न कुछ। कमण्डलु पकड़ने वाले भी थक गए थे। रात हो गई। सब साधु आत्म चिन्तन में मग्न थे। सामायिक होते ही सबको नींद आने लगी। सब सो गए। केवल आचार्य श्री मात्र कार्योत्सर्ग में ध्यान मग्न थे। पूरी रात आत्म चिन्तन में निकाल दी। सुबह होती ही विहार प्रारम्भ हो गया। जब पटेरा पहुंचे तब पता चला चौंके वाले श्रावक श्राविका उदास बैठे है। जैसे ही उन्हें आचार्य श्री के आने का पता चला सभी आनन्द विभोर हो गए। आहार निरन्तराय हो गया। यहां से श्री अतिशय क्षेत्र कुण्डलपुर केवल तीन मील है।

कुण्डल पुर में पहुंचकर आचार्य श्री ने बड़े बाबा के दर्शन किए इससे उन्हें आत्मिक शान्ति मिली। यहां 64 जिनमंदिर है। कुण्डलाकृति पर्वत होने से इसे कुण्डलपुर कहते है। बड़े बाबा की पद्मासन प्रतिमा बड़ी भव्य, नयन रम्य है। जिसकी ऊंचाई लगभग 12 फुट हैं मूर्ति यक्ष-यक्षिणी सहित है जो लगभग 1400 वर्ष प्राचीन है।

पहले यहां कुछ चमत्कारिक घटना घटी थी। मुस्लिम बादशाह औरंगजेब ने जब अपने कर्मचारियों को मूर्ति तोड़ने के लिए आदेश दिया तब उन्होंने मूर्ति तोड़ने के लिए अंगुली पर छेनीमारी तब मूर्ति से दूध की धारा निकल पड़ी। सभी लोग विस्मित हो गए।

कुण्डलपुर में दर्शन करने के पश्चात् संघ का विहार प्रारम्भ हो गया।

द्रोणगिरी क्षेत्र में दंश-मशक परीषह

आचार्य श्री का संघ वहां से गढ़ाकोटा, उवरा, शाहपुर, पिंडरिया, डुगरासा, बमोरी आदि गांव में धर्म-प्रभावना तथा धर्मोपदेश करता हुआ, द्रोणागिरी सिद्ध क्षेत्र पहुंचा। यहां हजारों लोगों ने दूर-दूर से आकर गुरूदर्शन का लाभ लिया। वहां आचार्य श्री पर्वत पर जाकर ध्यान करते थे। गर्मी का समय था वहां मच्छर बहुत थे। हम लोग तो अपनी साड़ी से शरीर ढांक सकते थे पर दिगम्बर साधु की क्या हालत होती होगी? जब एक मच्छर भी अपने दंश प्रहार और भिनभनाहट से हमारी नींद में बाधा पहुंचा सकता है। तब अनगित डांस और मच्छर दिगम्बर शरीर को कितना त्रास देते होगें? सब लोग जब प्रातः गुरू वन्दना के लिए गए तब आचार्य श्री को देखते ही घबरा गए। क्योंकि आचार्य श्री के पूरे शरीर पर बड़े-बड़े फोड़े हो गए थे। आंखे फूल गई थी। आचार्य श्री से पूछने पर भी उन्होंने कुछ नहीं बताया। तब क्षुल्लक जी ने बताया-'रात में बहुत मच्छर थे। आचार्य श्री ने उस उपद्रव को सौम्य भाव से सहन किया। यह दिगम्बर मुनि की श्रेष्ठ चर्या है। इसमें जरा भी शिथिलाचरण का स्थान नहीं है। महावीर प्रभू के चरणों का असाधारण प्रसाद जिन महामानवों को प्राप्त हुआ है। वे ही ऐसे कठोर एवं भीष्ण कष्ट श्रमण जीवन कर्म निर्जरा का अपूर्व कारण मान सहर्ष स्वीकार करते है। वे अपने हाथ से मच्छरों, डांसों को भगाते भी नहीं हैं क्योंकि ऐसा करने से उनकी हिंसा होती है। वे डांस उनके शरीर का खून चूसते रहे, और ये मुनिराज निर्विकार भाव से इस उपद्रव को सहन करते रहे। मानो यह शरीर उनका न हो।

वास्तव में भेद विज्ञान की ज्योति के बिना महाव्रती की जीवन यात्रा सानन्द नहीं हो सकती। भेद विज्ञान के प्रकाश में शरीर को चैतन्य पिण्ड आत्मा से पूर्णतः पृथक अनुभव करने वाले तत्वदर्शी महात्मा को शरीर की बाधा आने पर भी संक्लेश नहीं होता। द्रोणगिरी सिद्ध क्षेत्र हैं, निर्वाण काण्ड में बताया गया है-

फलहोड़ी बड़गामें पच्छिमभायम्मि दोणगिरी सिहरे।
गुरूदत्तादि मुणिदां णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

द्रोणागिरी के पर्वत पर कुल 28 जिनालय हैं। अन्तिम मंदिर में गुरूदत्त मुनिराज का चरित्र, पाषाण पर अंकित है। पास ही विशाल गुफा में गुरूदत्त मुनिराज के चरण चिन्ह हैं। वहां दर्शन करके अपूर्व शान्ति प्राप्त होती है। यहां पर्वतराज पर एक गोल स्तूप है। जिसमें कुल 96 प्राचीन मूर्तियां हैं। नीचे तलहटी में दो जिनालय है। आश्रम में श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा व चौबीसी के दर्शन अति मनोहर है।

आचार्य श्री ने गुरूदत्त मुनिराज का तिर्यन्च कृत उपसर्ग का वर्णन करते हुए बताया था कि-महानुभावों! गुरूदत्त मुनिराज ने राजा की पर्याय में पूजा की शान्ति के लिए गुफा में स्थित सिंह को जलवाया था। उस वैर के कारण सिंह ने भी कपिल ब्राह्मण पर्याय प्राप्त कर गुरूदत्त को मुनि पर्याय में ध्यानस्थ देख कर सेमर की रूई चारों ओर आग लगाई ऐसा घोर उपसर्ग किया। गुरूदत्त मुनि को ध्यान के प्रभाव से केवल ज्ञान उत्पन्न हो गया। इसलिए बन्धुओं! कभी भी किसी के साथ वैर भाव मत करो। एक बार बैर बंध गया तो भव-भव में दुख देता है। आचार्य श्री ने संघ सहित बहुत क्षेत्रों के दर्शन किये। 'खजुराहो भी होकर आए। वहां की प्राचीन मूर्तियों के दर्शन करके असीम शान्ति प्राप्त हुई। वहां से विहार करते हुए संघ आहार जी पहुंचा।

अतिशयक्षेत्र आहार जी

आचार्य संघ का आहार जी अतिशय क्षेत्र पर पदार्पण हुआ। आहार जी की रमणीयता एवं शान्ति, कुन्थ अरहनाथ की उन्नत प्रतिमाओं का दर्शन करके सभी त्यागियों की थकान दूर हो गई।

आहार जी ऐसा नाम क्यों पड़ा

आचार्य श्री के दर्शन को जनता उमड़ पड़ी। संघ के बहुत से त्यागी पहली बार उत्तर प्रान्त में आए थे। उन्हें कुछ मालुम नहीं था। इसलिए आचार्य श्री ने आहार जी क्षेत्र की अतिशयताकी रोचक घटना बताते हुए कहा-

इस क्षेत्र में एक मुनिराज थे। जब वो गृहस्थ थे तब अपनी पत्नी से पूछे बिना मुनि दीक्षा ग्रहण कर ली। पत्नी मोह से विह्वल हो अर्न्तध्यान से मरकर व्यन्तरी बन गई। पूर्व भव के वैर के कारण मुनिराज को आहार के समय विघ्न पैदा करने लगी। रोज मुनिराज अन्तराय की वजह से भूखे ही रह जाते थे। पानी मिले तो भोजन नहीं, भोजन मिले तो पानी नहीं। बारह वर्ष वह ऐसे ही परेशान करती रहीं। मुनि श्री विहार करते हुए इस गांव में आ पहुंचे।

नगर के सेठ को मुनिराज के उपसर्ग की घटना जानकर बड़ी वेदना हुई। सेठ जी के घर में चैत्यालय था। उन्होंने अपने नगर वासियों व परिवार जनों से कहा कि आज मुनिराज जी आहार चर्या को आए तो जब तक आहार पूर्ण नही हो जाए तब तक सभी जोर-जोर से णमोकार मंत्र का उच्चारण करें। पुण्योदय से सेठ जी के यहां मुनिराज पड़ग गए। मुनिराज के भोजनशाला में आते ही सब लोग जोर-जोर से णमोकार मंत्र का उच्चारण करने लगे। चारों ओर णमोकार मंत्र की ध्वनि गूंजने लगी। उस समय उस व्यन्तरी ने ऊपर से आने का प्रयास किया लेकिन वह तो जिन चैत्यालय था। अतः वह अन्दर नहीं आ सकी। उसके प्रयत्न निष्फल हो गए। क्योंकि जितने क्षेत्र से णमोकार मंत्र की ध्वनि गूंजेगी उतने क्षेत्र में व्यन्तरों का प्रभाव नही हो सकता व्यन्तरी थक कर लौट गई। बारह वर्षों बाद इस पावन क्षेत्र पर मुनिराज का आहार निरन्तराय हो गया। आकाश मैं जय-जयकार की ध्वनि गूंज उठी। तभी इस क्षेत्र का नाम 'आहार जी' पड़ गया।

एक घटना

उसी क्षेत्र में पू0 आचार्य श्री जब पहुंचे तब उस समय एक घटना घटी-आचार्य श्री जब सामायिक को बैठ ही रहे थे, तब उन्हे ऐसा प्रतीत हुआ कि उनके सामने कोई व्यक्ति आकर खड़ा हैं और उनसे कह रहा हैं कि -'इस वर्ष हम आपको चातुर्मास में ले ही जाएंगे। आपको आना ही पड़ेगा। और हमारी प्रार्थना स्वीकार ही करनी पड़ेगी।' सामायिक होते ही ललितपुर के ट्रस्टी श्री शील चन्द जी जैन (दाऊ) आ गए। और अपने यहां चातुर्मास करवाने की प्रार्थना की। उस समय मौन रूप से आचार्य श्री जी की सम्मति मिल गई।

टीकमगढ़ की ओर संघ का विहार हुआ। वहां ललितपुर के सभी ट्रस्टी आगे गए और आचार्य श्री से प्रार्थना करके चातुर्मास के लिए सम्मति ले ली।

टीकमगढ़ के मंदिर जी में पद्मासनस्थ श्यामपूर्ण तीर्थंकर पार्श्वनाथ जी की प्रतिमा विशाल व मनोज्ञ है। हजारों नर नारी आचार्य श्री के दर्शन को लालयित थे। गुरू उपदेशामृत सुनकर सबकी लम्बे समय की प्यास को विराम मिला। टीकमगढ़ से 4 कि0मी0 दूर मनोरम, रमणीय अतिशय क्षेत्र पपोरा जी है। यहां कुल 77 जिन मंदिर है। आचार्य श्री का संघ पपोरा जी अतिशय क्षेत्र पर आ पहुंचा यहां की अतिशयता के चर्चे टीकमगढ़ के वृद्ध जनों से सुने-यहां की बावड़ी से पहले यात्रियों को मनचाहे बर्तन मिलते थे। कल्पवृक्ष के समान बावड़ी भाजनांग (बर्तन) जाति के कल्पवृक्षवत लोगों को इच्छित बर्तन देती थी। एक बार एक लोभी व्यक्ति बावड़ी से बर्तन निकालकर घर ले गया पुनः उसने उन्हें बावड़ी में नहीं डाले। तभी से बावड़ी की अतिशयता समाप्त हो गई। सच है 'लाभात् लाभ से लोभ बढ़ जाता है।

इन्सान तरक्की को रोता
लोभ के कारण जग में मानव
अपना सब कुछ खोता है।

दो आचार्यों का मिलन

पपोराजी क्षेत्र की महिमा अपने आप में अवर्णनीय हैं। फिर जहां दो आचार्यों रूपी शीतल सूर्य दीप्तिमान हो जाए तब तो जो शोभा हुई होगी उसका वर्णन अकथनीय है। तीर्थों की शोभा साधुओं से होती हैं। यहां आचार्य श्री विद्यासागर जी विराजमान थे आचार्यरत्न श्री बाहुबली जी महाराज का और आचार्य श्री विद्यासागर जी का अद्भुत मिलन हुआ। दो धर्म चक्री आपस में मिले। चारों और मुनिराज, ऐलक, क्षुल्लक, ब्रह्मचारिणी भाई बहिनें, श्रावक-श्राविकाओं का समूह आनन्दाश्रुओं से सजल नेत्रों से एकटक दृश्य देख रहा था। जय-जयकार के उद्घोष से नभोमंडल गुंजायमान हो रहा था। कैमरों से इस मनोहारी दृश्य के फटाफट फोटो निकल रहे थे।

दोनों आचार्यों की बाते सुनने के लिए हजारों लोग उत्सुक थे। सबने अपने-अपने टेपरिकार्ड चालू करके रखे थे। लेकिन हुआ क्या? दोनों आचार्यो की बातचीत कन्नड़ भाषा में हुई। जिससे सभी लोग अपरिचित थे। इन दोनों आचार्यो का जन्म दक्षिण प्रान्त में ही हुआ। तथा दोनों ब्रह्मचर्य अवस्था में भारत गौरव आचार्य रत्न देशभूषण जी के संघ में साथ ही थे। उस समय का वात्सल्य दोनों आचार्यों के हृदय में उमड़ गया।

सन् 1985 में सम्मेद शिखर जी सिद्धक्षेत्र यात्रा के संघपति गुरुभक्त
श्री शंभूराव सौंदत्ते [illegible] पू. आचार्य श्री के साथ

1986 में गणधर टोंक (सम्मेद शिखरजी) के दर्शन हेतु जाते हुए पू. आचार्य श्री

श्री आचार्यदेव अंजुलीधर, आहार हेतु हैं निकल रहे।
ईर्यासमिति पूर्वक गुरुवर, पग संभाल कर रख रहे।।
(श्री सम्मेद शिखरजी बीस पंथी कोठी के मंदिर से आहार हेतु निकलते हुए पू. आचार्य श्री)

कैदियों को सम्बोधित करने हेतु ललितपुर जेल में जाते हुए पूज्य आचार्यश्री (1986)

सन् 1987 मुंबई चातुर्मास में शास्त्र लिखते हुए पू. आचार्य श्री

धर्मध्वजा फहरा दी गुरु ने, क्षुल्लक धर्मध्वज बन गये।
गुरु का आशीर्वाद तो देखो, श्रावक खुद मुनिराज बन गये।।

(पू. आचार्य श्री के कर कमलों द्वारा ब्र. आदिनाथ जी को क्षुल्लक दीक्षा–सन् 1987 वर्तमान में मुनिश्री धर्मसेन जी)

श्री जम्बुराव जी सोदत्ते, दान शिरोमणि [illegible]।
दीक्षित होकर समाधि लेकर, जिनने पा ली सद्गति।।

(सन् 1989 में कोथली क्षेत्र पर पू. आचार्य श्री के कर कमलों द्वारा संघपति श्रीमान् जम्बूराव सौदत्ते जी को क्षुल्लक दीक्षा)

शांति सागरजी ने मूर्ति बना दी, बाहुबलीजी ने महाव्रत दिये।
अजितमती माताजी ने अपने आत्मबल से कर्म दूर किये।।

(बारामती में पू. आचार्य शांतिसागर जी की अंतिम शिष्या क्षु. अजितमती जी को पू. आचार्यश्री आर्यिका दीक्षा देते हुए)

निर्यापकाचार्य श्री, क्षपकराज (आ. अजितमती माताजी) को भगवती अराधना ग्रंथ संबोधते हुए
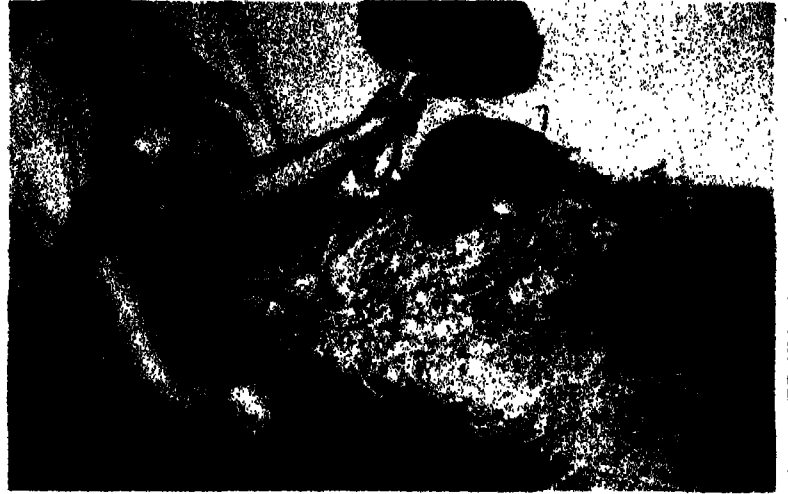
पू. आचार्यश्री आर्यिका अजितमती माताजी को अंत समय में महामंत्र णमोकार सुनाते हुए

सन् 1990 में मंत्री श्री सम्पतराव चौहानजी को पू. आचार्यश्री आशीर्वाद देते हुए

(पू. आचार्यश्री की प्रेरणा से निर्माणधीन धर्मनगर क्षेत्र पर दि. 22/06/91 के दिन धर्मनाथ भगवान का आगमन)

पू. आचार्य श्री शेन्द्री चातुर्मास के समय बगीचा में धर्मसभा के बीच (सन् 1991)

(पू. आचार्यश्री की प्रेरणा से नव निर्माणाधीन धर्मनगर क्षेत्र में आहारदान देनेवाले भक्तों की भीड़)

(नवनिर्मित क्षेत्र की नामकरण विधि दि. 28/6/91)

धर्मनगर में इंजीनियर श्रीयुत टी. के. पाटील, धर्मनगर अध्यक्ष श्री वीरगोंडा पाटील व इतर कार्यकर्ते मूर्ति को निहारते हुए

जिन को जपते-जपते, आखिर जिन को भी ना जपना है !
[illegible] [illegible] [illegible] निरंजन, जिन्हें निरंजन बनना है ।।
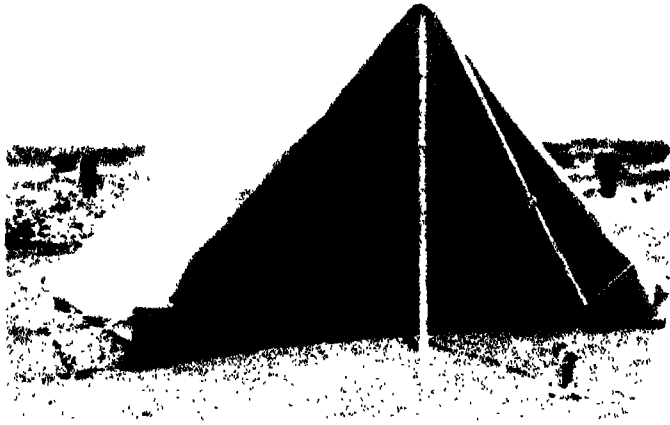
(धर्मनगर क्षेत्र बनने से पूर्व का दृश्य)

(धर्मनगर में सर्वप्रथम आर्यिका दीक्षा समारोह दि. 11/12/91)
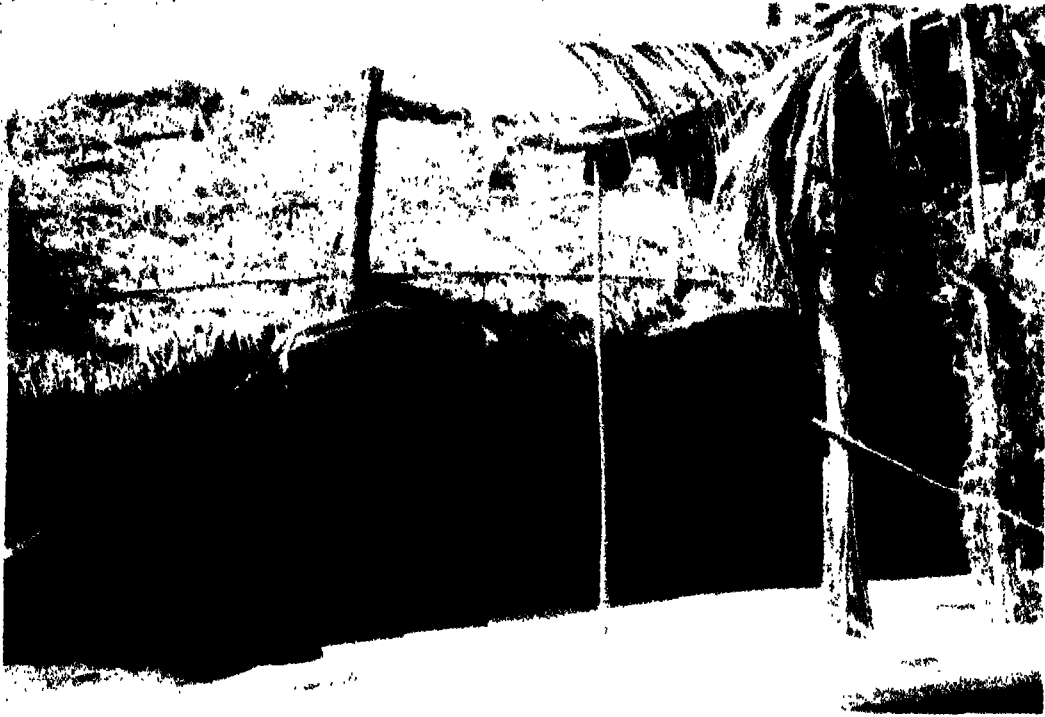
इस झोपड़ का भाग्य तो देखो, जिनवाणी का प्रथम बसाया ;
गुरुवर ध्यान जहाँ धरते थे, आज वहाँ धर्मनगर बसाया।।
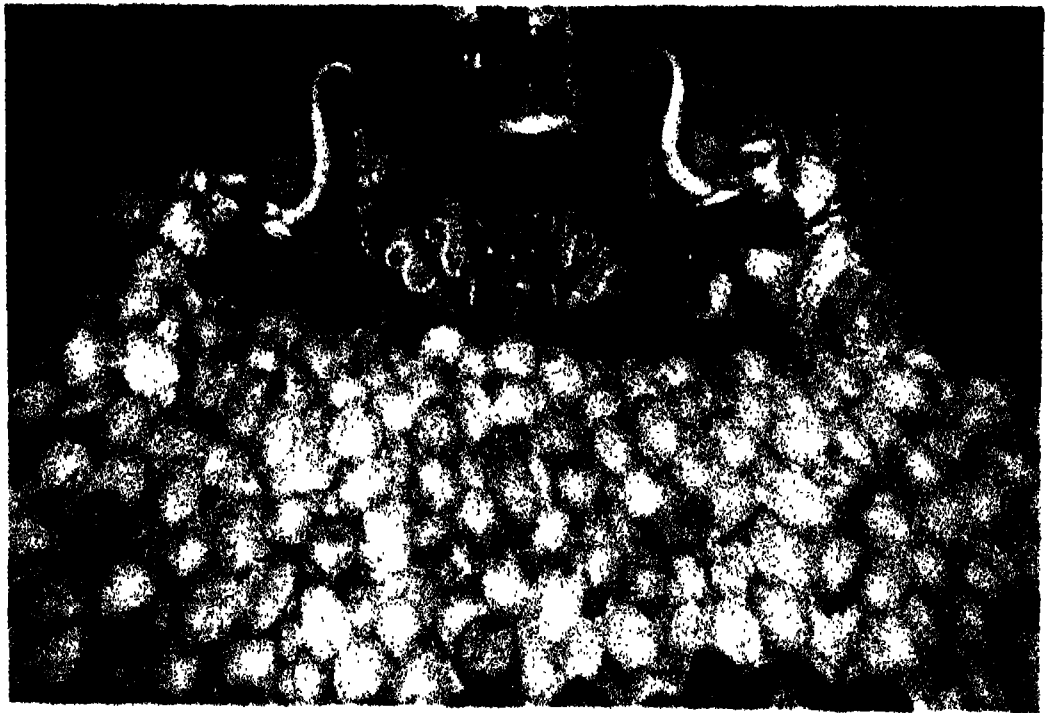
पू. आचार्यश्री की प्रेरणा से धर्मनगर में प्रथम बार सिद्धचक्र विधान

धर्मपुरी ललितपुर में चातुर्मास सन् 1986

चातुर्मास हेतु पू० आचार्य श्री का संघ धर्मनगरी ललितपुर आ गया। आचार्य श्री के मंगल प्रवेश के समय विशाल भव्य जुलूस निकाला गया। नगर में घर-घर तोरण द्वार बांधे गए सभी चौराहे बड़े-बड़े दरवाजों से सजाए गए थे। नगर के बच्चे बूढ़े तथा सैकड़ों नर-नारी स्वागत के लिए तैयार थे।

'गुरुवर तेरे चरणों की, जो धूल हमें मिल जाए।
चरणों की रज पाकर, मेरी तकदीर बदल जाए॥'

ललितपुर पंडित, विद्वान तथा त्यागियों का नगर है। ललित यानि सुन्दर-यहां के सभी पुरुषों की आत्मा धर्मरूपी श्रृंगार से सुन्दर नजर आती है। लोगों की भीड़ आचार्य श्री के दर्शन से उमड़ पड़ी। चारों ओर धर्म की वर्षा हो रही थी। बड़ा मंदिर, नया मंदिर, अटा मंदिर तथा क्षेत्रपाल मंदिर तथा विशाल जिनालय जैन संस्कृति की धरोहर है। प्रत्येक मंदिर में पचासों वेदियां है। जो पूर्वजों की धार्मिक भावना का प्रतीक है। यहां का क्षेत्रपाल मंदिर अतिशय क्षेत्र है। मूलवेदी के नीचे क्षेत्रपाल विराजमान है। इसलिए यहां का नाम क्षेत्रपाल पड़ा। यह सभी की मनोकामना पूर्ण करती है। मंदिर में अतिशयकारी अभिनन्दन भगवान की मनोहर प्रतिमा है। गुफा में प्राचीन प्रतिमाएं दर्शनीय है। अटा मंदिर में चातुर्मास कलश स्थापित किया गया।

आचार्य श्री का रोज सुबह प्रवचन सार पर उपदेश होता था। सभी वर्गों के लोग बड़े ध्यान से प्रवचन सुनते थे। एक दिन आचार्य श्री ने प्रवचन के दौरान बताया-एकता के बिना मोक्ष मार्ग नहीं मिलता। तत्वार्थ सूत्र में उमा स्वामी आचार्य श्री जी ने प्रथम अध्याय के प्रथम सूत्र में बताते हुए कहा हैं-'सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्राणि मोक्षमार्गः' अकेला सम्यक् दर्शन. अकेला सम्यक् ज्ञान व अकेला सम्यक्-चारित्र शाश्वत् सुख के लिए असमर्थ है। तीनों की एकता मोक्ष मार्ग है। फूलों का गुलदस्ता घर की मेज तथा ऑफिस की शोभा बढ़ाता है। जबकि अकेला फूल पैरों तले रूंधकर जीवन की शोभा खो देता है। बिन्दू सिन्धु के साथ रहे तो उसे करोड़ों सूर्य भी नहीं सुखा सकते, वही अगर बिन्दू सिन्धु से अलग हो जाए तो क्षणमात्र में ही सूख जाती है इसी प्रकार जो श्रावक समाज से धर्म से जुड़कर रहता है उसे कोई शक्ति मिटा नहीं सकती। जबकि समाज या धर्म से हटकर रहने वाला श्रावक मिट जाता है। अगर सुख से रहना चाहते हो तो कन्धे से कन्धा मिलाकर चलो।

'सदाचार जीवन का दर्पण है' आचरण से मानव के कुल, जाति, वंश व ज्ञान की परीक्षा होती है। वर्तमान में जैन व्यक्ति से यदि छने पानी तथा रात्रि भोजन के बारे में कहा जाए तो ज्यादातर लोग यही कहते हैं कि-'हमें सब चलता है।' यह कदाचार जब तक नहीं मिटेगा तब तक सदाचार जीवन में आ नहीं सकता है।

कुएं में यदि अंधा गिरता है, तो कोई विशेष बात नहीं हैं किन्तु जानते हुए भी जान बूझकर अंधा बन रहा हैं, वास्तविक अंधा तो वही हैं। वह अंधा नहीं हैं, वह तो मात्र आंखो के माध्यम से अंधा है इन्द्रियों की अपेक्षा से तो वह आपसे भी आगे का है। यह भी ध्यान रखो किन्तु जो व्यक्ति राग द्वेष-मोह रूपी मदिरा पीते ही जा रहे है, उनके पास आंखे होते हुए भी वे जान बूझकर अंधे बने है।

बंधुओं। अंधकार में एक व्यक्ति उधर से आ रहा था वह अंधा था और इधर से जो जा रहा था वह आंखों वाला था। उन दोनों की टक्कर हो गई। आंखों वाले के मुंह से निकला-'क्या अंधे हो तुम। दिखता नहीं है।' अपघात जहां कहीं

हो जाए प्रत्येक व्यक्ति अपनी गलती को नहीं स्वीकारता। वह बोला-'आप ठीक कह रहे हो, मैं अंधा हूं, मेरे नेत्र नहीं हैं भाई।'

दूसरे दिन वह आदमी उस अंधे से फिर मिल गया-लेकिन आज उस अंधे के हाथ में लालटेन थी। उसे देखकर आंखों वाला बोला-'तुम तो कल कह रहे थे कि मैं अंधा हूं। फिर हाथ में लालटेन क्यों ले रखी है। पागल हो क्या? अंधा मुस्कराते हुए बोला-'मेरे पास आंखें नहीं हैं, लालटेन की मुझे आवश्यकता नही है। लेकिन आप जैसे आंखों वाले महोदय टकरा न जाए इसलिए उनके देखने के लिए यह लालटेन मैंने पकड़ रखी है।

आर्यिका दीक्षा

आचार्य श्री मानव जीवनं एवं अध्यात्म से सम्पृक्त अपने सारगर्भित, चिन्तन पद और अनुभवी प्रवचनों के माध्यम से अमृत की वर्षा करते हुए जो कहते हैं, उसका जीवन में स्वयं पालन भी करते है। इसलिए जनमानस पर उनके प्रवचनों का प्रभाव होना स्वाभाविक ही हैं। वस्तुतः उनके प्रवचनों की विशेष रूप से उपादेयता और महत्ता है।

भोले बाबा के प्रवचन से कहान पंथीय लोग भी पास में आने लगे। इतना ही नहीं उन्होंने चौका लगाकर आचार्य श्री को आहार भी दिया। उनके इस अद्वितीय एवं महत्वपूर्ण योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता है।

श्रावण महीने में इसी चातुर्मास में संघस्थ क्षुल्लिकाओं की आर्यिका दीक्षा हुई। 8/8/86 को क्षुल्लिका शांतमती माताजी ने पू० आचार्य श्री से दीक्षा पाई। वह बचपन से ही आचार्य श्री के सानिध्य में थी। शुरू से ही उन्होंने संयम धर्म को स्वीकार करके धर्म साधना प्रारम्भ की। पू० माताजी ने क्षुल्लिका दीक्षा आचार्य रत्न देशभूषण महाराज जी से ली थी। आचार्य देशभूषण महाराज जी के प्रतिनिधित्व वे पू० बाहुबली जी को मानती है।

दिनांक 10/8/86 को तीन क्षुल्लिकाओं की दीक्षा हुई आर्यिका जिनदेवी, आर्यिका श्रुतदेवी और आर्यिका निर्वाण लक्ष्मी इन तीनों ने महाव्रत स्वीकार कर लिया।

किस्मत का खेल

चातुर्मास के दौरान एक गरीब परिवार ने भी अपने घर में चौका लगाया। श्रद्धा और भक्ति से पड़गाहते-पड़गाहते दो महीने बीत गए लेकिन उनके घर आचार्य श्री का आहार नहीं हुआ। आचार्य श्री के संघ में 15 त्यागी थे। और 50-60 चौंके लगते थे। ऐसी स्थिति में आचार्य श्री का आहार होना किस्मत का खेल था।

दो महीने बाद एक दिन आचार्य श्री ने उस गरीब परिवार का नियम ले लिया। आहार चर्या को आचार्य श्री निकले। घूमते-घूमते काफी समय हो गया। हुआ क्या घर की बाई ने रसोई बनाना प्रारम्भ किया। केवल दूध और पानी गरम करके रखा था इतने में उसको अड़चन आ गई। पांच दिन वह चौके में नहीं आ सकती थी। घर में काम करने वाला दूसरा कोई नहीं था। इसलिए वो पड़गाहने के लिए बाहर नहीं आयी।

दो बार आचार्य श्री उनके घर के सामने से निकले। लेकिन किसी को भी धारणा समझ में नहीं आ रही थी। तीसरी परिक्रमा के समय उनका लड़का शुद्ध वस्त्र पहनकर खड़ा हो गया। आचार्य श्री उसे देखते ही उसके सामने रूक गए। उस लड़के ने बड़े आनन्द से पू० आचार्य श्री को पड़गाया। नवधा भक्ति पूर्वक उन्हें चौंके में ले गया, लेकिन चौंके में तो कुछ भी तैयार नहीं था। उस दिन बाहर के चौके वालों को अन्दर नहीं आने दिया गया। ब्रह्मचारिणी बहिनों को भी

नहीं आने दिया गया। उसी चौके से दूध और पानी लेकर आचार्य श्री बाहर आ गए। बाहर खड़े श्रावक छटपटाते रह गए। आहार होने के बाद उस परिवार को सूतक आ गया। अगर उस दिन आचार्य श्री को विधि नहीं मिलती तो उन्हें पूरे बारह दिन का उपवास रखना पड़ता। ये तो किस्मत का खेल हैं।

ब्रह्मचर्य व्रत की विधि न मिलने से उपवास

दशलक्षण पर्व के अंतिम ब्रह्मचर्य धर्म के दिन पू० आचार्य श्री ने आहार चर्या के लिए निकलते समय धारणा ली। कि जो व्यक्ति आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लेगा। उसी के हाथों से हम आहार लेंगे। आचार्य श्री ने पूरे नगर में भ्रमण किया जहां देखो वहां एक ही चर्चा कि आज आचार्य श्री की विधि क्या है। सभी श्रावक श्राविकाएं बदल-2 कर वस्तुएं दिखा रहे थे। लेकिन आचार्य श्री देखते और आगे बढ़ जाते। पूरे ललितपुर में हल्ला सा मच गया। तीन परिक्रमा होते ही आचार्य श्री मंदिर जी में आ गए। उस दिन उनका उपवास हो गया। सभी श्रावक श्राविकाएं उदास हो गए।

दूसरे दिन चौकों की संख्या बढ़ गई। उस दिन पहली परिक्रमा में ही विधि मिल गई। दो भाई-बहन ने आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत लेकर आचार्य श्री को पड़गाया और अपना जीवन सार्थक बनाया।

भगवान महावीर पधारे

26 सितम्बर 1986 को सिवनी की दो बहिनें ब्र. सरिता और ब्र. समीक्षा ने दो साल का ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया। उन्हें इसके लिए आज्ञा नहीं मिल रही थी वो बिना आज्ञा के ही व्रत स्वीकार करके आ गईं। उसी समय उनके पिताजी उन्हें लेने आए। पिताजी को देखते ही वे एक श्रावक के घर चली गईं। पिताजी तो उन्हें ले जाने के लिए बैठे थे, लेकिन तीन दिन हो गए थे वे बाहर नहीं निकलीं। तीसरे दिन पू. आचार्य श्री जी उन्हीं दोनों की धारणा लेकर आहार चर्या को निकले। प्रत्येक चौके के सामने आचार्य श्री जाते और आगे बढ़ जाते। ये दोनों श्री अजय सेठ के यहां थीं पूज्य आचार्य श्री की विधि नहीं मिलने से दोनों सहज बाहर आयीं। उन दोनों को देखते ही आचार्य श्री वहीं रुक गए। दोनों ने पड़गाहन करके आहार दिया। उस समय ऐसा लगा-'चन्दन बाला के संकट दूर करने के लिए भगवान महावीर ही पधारे हैं। पू. आचार्य श्री उन्हें आहार के बाद मंदिर जी में ले गए और उनके पिताजी को अच्छी तरह से समझा कर घर वापस भेज दिया।

कैदियों को उपदेश

'पाप से घृणा करो पापी से नहीं'

ललितपुर में ही आचार्य श्री ने वहां के जेल में जाकर कैदियों को उपदेश दिया। आचार्य श्री का मार्मिक उपदेश सुनकर उन क्रूरकर्मी जीवों के मन पर बड़ा असर हुआ। अनेक कैदियों ने संकल्प लिया कि जेल से छूटने के बाद वे अपने जीवन को स्वच्छ और निर्मल बनाएगे। कैदियों ने उपदेश सुनते ही चोरी आदि महापापों का त्याग किया था।

पूरे चातुर्मास में धर्म गंगा प्रवाहित हो रही थी। दश लक्षण के समय भिण्डर के जवाहर पंडित जी तत्वचर्चा के लिए आए। दस दिन सर्वार्थ सिद्धि के 8वें सूत्र पर सखोल तत्वचर्चा हुई और वहां एक विधान हो गया। उत्तर प्रान्त में मौजी बंधन संस्कार की पद्धति नहीं है। इसलिए आचार्य श्री मौजी बंधन संस्कार के बारे में रोज उपदेश देते थे। एक दिन उन्होंने प्रवचन के दौरान कहा-'बन्धुओं! प्रत्येक माता का कर्तव्य है कि बालक को संस्कारित बनाने के लिए अशुद्ध वस्तु कभी

नहीं खिलाएं। मधुमक्खियों के वमन का पिण्ड से बना शहद कभी नहीं खिलावें। बच्चे को णमोकार मंत्र सुनाते हुए स्तनपान करावें तथा महापुरुषों की लोरियां सुनाते हुए सुलावे। भगवान कुन्द कुन्दाचार्य की मां अपने पुत्र को झूला झुलाते समय गाती थीं-

शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरन्जनोऽसि संसारमाया परिवर्जितोऽसि।
संसार स्वप्नं त्यज मोहनिद्रां श्री कुन्दकुन्द जननी मिदमेवमूचे॥

अर्थात हे बेटा! तुम शुद्ध हो, बुद्ध हो, निरन्जन हो, संसार के मायाजाल से अलग हो, यह संसार एक स्वप्न है। वत्स! मोहरूपी निद्रा को छोड़ो। वह मां धन्य थी जो कुन्दकुन्द बालक को ऐसे वीतरागतामयी गीत सुनाकर संस्कार रूपी अग्नि में दमका रही थी।

फलतः कुन्द-कुन्द बालक ग्यारह वर्ष की अवस्था में मुनिव्रत धारण कर महात्मा बन गए। जिनसेनाचार्य, कुन्दकुन्दाचार्य, पूज्यपाद स्वामी आदि दिगम्बर महापुरुषों ने कभी कपड़े ही धारण नहीं किए। नौ-ग्यारह वर्ष की उम्र में ही दिगम्बर बन गए। माता के द्वारा प्रदत्त संस्कारों से बालक जहां वीर, धीर, तीर्थंकर बन गया वहीं एक बड़ा डाकू चोर और लुटेरा भी बन सकता है। माता के दूध में अचिन्त्य शक्ति है।

प्राचीन पद्धति में बालक को लौकिक तथा धार्मिक दोनों शिक्षाएं दी जाती थी। परन्तु वर्तमान में लौकिक शिक्षा का भार इतना बढ़ गया है कि धार्मिक शिक्षा के लिए समय ही नहीं है। माता-पिता का भी धार्मिक शिक्षा की तरफ ध्यान नहीं है। बहुत छोटी उम्र में स्कूल भेज देते हैं। लेकिन धार्मिक शिक्षा की बात की जाए तो परिवार वाले कहते हैं कि-'अभी तो बालक है।' बस यही कुसंस्कार धर्म का बीज बोने नहीं देते हैं। प्रत्येक माता-पिता का कर्तव्य है कि अपनी सन्तान को लौकिक और धार्मिक शिक्षण के लिए संस्कारित करें। बाल्यकाल में बच्चों को जो सिखाया जाता है, वे ही संस्कार अन्त तक बने रहते हैं। कच्ची मिट्टी से जैसा चाहो घड़ा बना लो पकने पर उसे आसानी से तोड़ा नहीं जा सकता। बाल्यकाल भी कच्ची मिट्टी के समान है उस पर जैसा संस्कार डाला जाएगा बालक वैसा ही बनेगा।

आठ वर्ष से कम आयु के बालक को जिनाभिषेक, पूजा, सद्गुरुओं के लिए आहार दान आदि का अधिकार नहीं है। आठ वर्ष के पश्चात् बालक का रत्नत्रय सूचक उपनयन संस्कार करना चाहिए। प्रायः मोह के वशीभूत होकर माता-पिता व परिवारजन 8 वर्ष से पहले ही बालकों को अपनी गोदी में लेकर जिनाभिषेक करते हैं, यह क्रिया अनुचित है। आगम पद्धति का लोप है। इससे मूर्तियों का अतिशय घटता जाता है। यह अनुचित क्रिया बालक के लिए भी घातक है।

कई लोगों के अनुसार-मौजी बन्धन संस्कार आदि सब रूढ़ियां और अंधविश्वास है तथा जैन धर्म से बाह्य है। यह लोगों की भूल है। ऐसा नहीं है। 8 वर्ष की कुमारावस्था में भगवान आदिनाथ को इन्द्र ने जनेऊ तथा मौजी संस्कार किया था। यह जैन धर्म की ही परम्परा है जिसे हम छोड़ रहे हैं तथा दूसरे धर्मावलम्बी अपनाते जा रहे हैं। दक्षिण में आज भी यह पद्धति मौजूद है। वहां विधिवत् सैकड़ों बालकों को संस्कारित किया जाता है तथा बालिकाओं को भी 8 वर्ष की उम्र में 'आत्म कुंकुम संस्कार' विधि का वर्णन आगम में है। दक्षिण में बालक बालिकाओं का विधिवत संस्कार गृहस्थाचार्य आज भी कराते हैं। उत्तर प्रान्त में भी यह संस्कार होना चाहिए। ललितपुर में भी इस आयु वर्ग के कई बच्चे हैं जिन पर यह संस्कार होना चाहिए।

आचार्य श्री के प्रवचन के दौरान इस विषय पर बताने से लोग मौजी बन्धन संस्कार के लिए तैयार हो गये। यह बात सबको सूचित कर दी गई। पत्रिका निकल गई। बहुत बड़े रूप से कार्यक्रम सम्पन्न हुए। पूरे चातुर्मास में कार्यक्रम होते रहे।

चातुर्मास समापन की बेला आ गई सबके चेहरे उदास थे। आचार्य श्री को नगर में लाते समय जो खुशी थी वह खुशी आज नहीं थी। धर्म की गंगा अब दक्षिण प्रान्त की तरफ प्रवाहित होने वाली थी। जिस दिन आचार्य श्री का विहार हो रहा था, उस दिन 5 कि.मी. की दूरी तक रास्ता नहीं दिखाई दे रहा था, इतनी भीड़ हो गई थी। जय-जयकार की ध्वनि आकाश में गूंज रही थी।

आचार्य बाहुबली महाराज की जय!
जब तक सूरज चांद रहेगा,
मुनियों का सम्मान रहेगा!
बाहुबली सागर दूर न जाना,
हम बच्चों को भूल नहीं जाना॥

आदि-आदि नारे देते हुए श्रावक आचार्य श्री के साथ दौड़ रहे थे। आचार्य श्री का विहार देवगढ़ की ओर हो गया।

अतिशय क्षेत्र देवगढ़ का दर्शन

देवगढ़ जैन संस्कृति एवं कला का महान अतिशय तीर्थ है। यहां ऐसा प्रतीत होता है मानो कलाकारों ने अपनी-अपनी कला से पाषाण को भी जीवन्त करने का प्रयास कर सफलता प्राप्त की है। यहां का देवगढ़ नाम अति सार्थक है। यह देवों का गढ़ है। यहां कुल 42 जिनालय हैं। उनमें भी इतनी जिनेन्द्र प्रतिमाएं हैं कि उनकी गिनती करना भी असम्भव है। इतना ही नहीं प्रत्येक दीवारों पर श्रावक, श्राविकाओं, क्षुल्लक, ऐलक जी, आर्यिका, मुनि, उपाध्याय, आचार्य, अरहंत व सिद्ध इन सभी की प्रतिमाएं उभरी हुई मिलती हैं। मूलनायक श्री शांतिनाथ जी भगवान की खड्गासन प्रतिमा जी मनोज्ञ है। पंच बालयति की विशाल प्रतिमाएं अनुपम हैं और यहां भरत चक्रवर्ती की नवनिधियां देखने को मिलती हैं। दीवारों पर सुन्दर प्रथमानुयोग के मनोरम दृश्य उभरे हुए हैं। सभी भव्यात्माओं को देवगढ़ जी का अवश्य दर्शन करना चाहिए। यहां से आचार्य श्री का विहार हो गया।

थूबोन जी की विशाल जिन प्रतिमाओं का दर्शन

आचार्य श्री का संघ थूबोन जी क्षेत्र में शाम को पहुंचा। सुबह थूबोन जी की विशाल मनोरम जिन प्रतिमाओं का दर्शन कर आत्मा भाव विभोर हो गई। यहां 26 जिनालय हैं, इन प्रतिमाओं और मंदिरों के जो एक बार दर्शन कर लेता है वह उन्हें सपने में भी भूल नहीं सकता है।

चंदेरी

चंदेरी क्षेत्र वास्तव में कर्मरूपी अंधेरों को दूर करने का बहुत बड़ा साधन है। चंदेरी में प्राचीन प्रसिद्ध चौबीसी हैं। ग्रन्थों में तीर्थंकरों का जो वर्ण कहा गया है। तदनुसार उसी वर्ण की प्रतिमाओं के दर्शन यहां होते हैं। प्रतिमाएं बड़ी मनोहर हैं। आचार्य संघ इन प्रतिमाओं का दर्शन पाकर बहुत आनन्दित हुआ।

सैरोन जी

सैरोन जी भी एक प्राचीन अतिशय क्षेत्र है। यहां के मंदिर भी मन को आकर्षित करते हैं। इसी मनोरम क्षेत्र में पू. आचार्य श्री जी की जन्म जयन्ती बड़े धूमधाम से मनाई गई। लोगों ने भक्तिपूर्वक इस कार्यक्रम में भाग लिया।

नंग-अनंग कुमार

अब संघ पवित्र निर्वाण भूमि सोनागिरि आ गया। निर्वाण काण्ड में लिखा है-

णंगाणंग कुमारा कोडी पंचध्द मुणिवरा सहिया।
सुवण्णवर गिरि सिहरे णिव्वाण गया णमो तेसिं॥

सुवर्णगिरि के शिखर से नंग कुमार अनंग कुमार आदि साढ़े पांच कोटि मुनियों ने मोक्ष प्राप्त किया।

सोनागिरि तत्कालीन दतिया के नजदीक स्थित है। लगभग 78 जिनमंदिर सोनागिरि की शोभामें चार चांद लगाते हैं। सारे मंदिर पहाड़ पर बिल्कुल पास स्थित हैं। वन्दना करने में शरीर को कोई कष्ट नहीं होता है और न ही ज्यादा समय लगता है। मंदिरों का समुदाय बड़ा ही मनोहर है। भगवान चन्द्रप्रभु का मंदिर विशेष आकर्षण का केन्द्र है। भगवान बाहुबली की मनोज्ञ तथा समुन्नत मूर्ति के द्वारा आनन्द की वृद्धि होती है। यहां विशाल धर्मशालाएं हैं जिनमें हजारों यात्रियों को स्थान मिल जाता है। फाल्गुन मास में होली पर यहां मेला लगता है। हजारों श्रद्धालु इस अवसर पर सोनागिरि आते हैं।

आचार्य संघ ने जब इस निर्वाण भूमि का दर्शन किया तब सभी मुनियों एवं श्रावकों को बड़ा आनन्द आया। संघ के पधारने से लोगों में उत्साह झलक रहा था। वहां से कुछ समय पश्चात् संघ आगे बढ़ा।

नैनागिरि सिद्धक्षेत्र

विहार करता हुआ संघ नैनागिरि सिद्धक्षेत्र पहुंचा। इस रमणीय स्थान पर भगवान पार्श्वनाथ का समवशरण आया था। भगवान पार्श्वनाथ के समवशरण में वरदत्त इन्द्रदत्तादि पांच राजा दीक्षित हुए तथा इसी पावन क्षेत्र से मुक्त हुए। यहां 39 मंदिर पर्वत पर स्थित हैं तथा 14 जिनालय नीचे हैं। 34 नं. मंदिर में वरदत्त मुनिराज की खड्गासन मूर्ति अति आकर्षक एवं मनोज्ञ है तथा 39 नं. मंदिर की पार्श्वनाथ प्रभु की खड्गासन मूर्ति, वर्तमान चौबीसी तथा वरदत्त, मेघदत्त, गुणदत्त व मुनि चन्द्रदत्त की खड्गासन प्रतिमा दर्शनीय है। यहां आचार्य संघ पांच दिन रहा और वहां से विहार किया।

इन्दौर बावनगजा

सिद्धक्षेत्र, अतिशय क्षेत्रों का दर्शन करते हुए संघ का विहार इन्दौर की तरफ हो गया। यह समाचार मिलते ही श्रीमान् बाबूलाल पाटोदी आदि श्रीफल लेकर आमन्त्रित करने आ गए। नगर की धर्मानुरागिणी जनता ने आचार्य श्री के स्वागत की विशाल पैमाने पर तैयारियां कीं। बैण्डबाजों के साथ विशाल जुलूस निकला। घर-2 से आचार्य श्री पर पुष्पवृष्टि हो रही थी तो कहीं चरण प्रक्षालन कर थालियां आकाश में उठती नजर आती थीं। इन्दौर की जनता आत्मविभोर थी। इन्दौर में प.पू. मुनि श्री निजानन्द महाराज जी विराजमान थे। वो भी आचार्य श्री को लेने आगे आए थे। उन्होंने आचार्य श्री की तीन परिक्रमा कर मंगल वंदना की। निजानन्द महाराज का उस दिन आचार्य श्री के साथ ही आहार लेने का नियम था। अतः उन दोनों का आहार साथ-साथ हो गया।

आचार्य श्री का संघ शान्तिनाथ जिनालय में था। कांच मंदिर, गोम्मट गिरि आदि मंदिरों के दर्शन किए। तीन चार दिन रहकर सनावद आ गए। सनावद में मोतीचन्द जी दीक्षार्थी का जुलूस था। वहां से सिद्धवर कूट, ऊन पावापुरी,

सिद्धक्षेत्र के दर्शन कर आचार्य संघ बड़बानी क्षेत्र पहुंचा। यहां बाहुबली भगवान की 52 गज की प्रतिमा होने से इसे बावनगजा बोलते हैं।

बडवाणीवर णयरे दक्खिणभायम्मि चूलगिरि सिहरे।
इन्दजिय कुंम्भकण्णो णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

चूलगिरि से रावणपुत्र इन्द्रजीत और भाई कुम्भकर्ण कर्मक्षय करके मोक्ष गए। आचार्य संघ ने चूलगिरि में जाकर दर्शन स्तवन करके आत्म शान्ति पा ली। उसी स्थान पर ब्र. सरिता, ब्र. समीक्षा, ब्र. स्नेहा इन तीनों ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लिया।

यहां गुरुदेव के सान्निध्य में आदिनाथ भगवान का मस्तकाभिषेक हुआ। सर्व संघ ने पर्वतराज की वन्दना की। मीलों की पदयात्रा करते हुए आचार्य श्री ने मांगीतुंगी जी सिद्धक्षेत्र में पदार्पण किया।

दक्षिण भारत का लघु सम्मेद शिखर पर्वतराज मांगीतुंगी जी

जब आचार्य संघ मांगी तुंगी से दूर था तबसे पर्वतराज पास में ही दिख रहा था। उस दिन आहार होते ही जो चल रहे थे दिनभर चलते रहे। शाम को 6 बजे मांगीतुगी क्षेत्र पर आ पहुंचे।

प्रातः सूर्योदय होते ही पावन तीर्थराज सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी पर्वत पर आचार्य श्री संघ सहित दर्शनार्थ चल पड़े वहां वह स्थान देखा जहां सीता माता ने केशलोंच किया था। श्री बलभद्र मुनिराज इसी पर्वत पर पूरी जनता को पीठ करके चले गए थे। वे चरम शरीरी सर्वांग सुन्दर देह को धारण करने वाले थे। उनके सौन्दर्य को देखकर स्वर्ग की अप्सराएं भी मुग्ध हो जाती थीं सभी उन्हें चाहते थे लेकिन वे अपने आत्म स्वरूप में लीन रहना चाहते थे। यहां पर ध्यान मग्न (दीवार की तरफ मुंह किए हुए) एक प्रतिमा है जो इस बात का प्रतीक है कि बलभद्र अप्रतीम सौन्दर्य के धनी होकर भी विश्व से विमुख रहे। अपनी ओर देखने में आत्मज्ञ बनने में लगे रहे हैं। उन्होंने समस्त बाह्य पदार्थों से हटकर अपने अजर-अमर आत्म तत्व की ओर दृष्टिपात किया। बलभद्र जी के पीठ की पूजा वंदना लोग अभी भी करते हैं। वहां दर्शन कर तुंगी गिरि पहुंचे। निर्वाण काण्ड में कहा है-

रामहणू सुग्गीवो गवयगवक्खो य णीलमहणीला।
णवणवदी कोडीओ तुंगीगिरिणिव्वुदे वंदे॥

रामचन्द्र, हनुमान, सुग्रीव, गव, गवाक्ष, नील, महानील आदि निन्यानवे कोडी मुनि इसी तुंगीगिरि से निर्वाण को प्राप्त हुए और श्रीकृष्ण के शव की अंतिम क्रिया यहीं पर की गई थी। तुंगी गिरि के दर्शन कर नीचे आ गए।

सत्तेवय बलभद्दा गज पंथाजी सिद्धक्षेत्र

ग्रीष्म ऋतु की शुरुआत हो चुकी थी। तिलमिलाती धूप में आचार्य श्री का विहार होता रहा। आचार्य श्री मांगीतुंगी की वन्दना कर गजपंथा जी सिद्धक्षेत्र पर आ पहुंचे। निर्वाण काण्ड में कहा है-

सत्तेवय बलभद्दा जदूवणरिंदाण अठ्ठ कोडिओ।
गजपंथे गिरि सिहरे णिव्वाण गया णमो तेसिं॥

सप्त बलभद्र, यदुवंशीय राजे एवं आठ कोडी मुनिराज इस गजापंथा क्षेत्र से निर्वाण को प्राप्त हुए। वहां गजकुमार मुनिराज की निर्वाण भूमि की आचार्य श्री ने वन्दना की। वहीं पर हम सभी को आचार्य श्री ने गजकुमार की कथा बताई।

गजकुमार राजपुत्र शादी करके आए थे। कंकण भी नहीं छूटा था कि वैराग्य को प्राप्त होकर मुनिव्रत अंगीकार कर लिया। गजकुमार के ससुर सोमशर्मा को जब यह बात मालूम हुई तो क्रोधावेश में गजकुमार मुनिराज के मस्तक पर जलती हुई सिगड़ी (अंगीठी) रख दी और कहा-यदि तुझे दीक्षा ही लेनी थी तो मेरी बेटी से शादी क्यों की? अब उसका क्या होगा? ऐसा कहकर वह चला गया। उपसर्ग विजयी मुनिराज ध्यान से जरा भी विचलित नहीं हुए और केवलज्ञान प्राप्त कर इसी क्षेत्र से मुक्त हुए।

यहां ग्रीष्म कालीन वाचना के लिए आचार्य संघ रुक गया। सखोल ग्रन्थों का अध्ययन शुरू हो गया। जिन जीवों का सौभाग्य था उन्होंने गुरुदर्शन का लाभ उठाया और व्रत से नरजन्म को भूषित किया। ग्रीष्म ऋतु की भीषणता होते हुए भी आचार्य श्री की तपश्चर्या का तेज बढ़ रहा था।

चैत्र प्रतिपदा के दिन ब्र. आदिनाथ जी ने गजपंथा के निर्वाण स्थल पर सप्तम ब्रह्मचर्य प्रतिमा धारण की। गजपंथा में ही फोन से आचार्य धर्मसागर जी महाराज की समाधि का समाचार मिला। सुनते ही आचार्य श्री का मन उदास हो गया। सारा संघ स्तब्ध सा रह गया। अचानक यह क्या हुआ? आयु समाप्त होने पर कोई किसी को रोक नहीं सकता। आचार्य श्री के सान्निध्य में सर्व संघ ने सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्ति पूर्वक शान्ति भक्ति कर आचार्य धर्मसागर को श्रद्धांजली अर्पित करते हुए समाधि क्रिया सम्पन्न की। एक महान सरल प्रकृति के भोले भाले आचार्य देव हमारे बीच से चल बसे। सभी ने नौ बार णमोकार मंत्र का स्मरण करते हुए भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित की।

गुरुदेव आचार्य देशभूषण जी की याद

आचार्य श्री ने जब आचार्य धर्मसागर जी की समाधि का समाचार सुना तो उन्हें अपने गुरुदेव की याद और भी ज्यादा सताने लगी। उनका मन अपने गुरु जी के दर्शन को व्याकुल हो उठा। गुरुदेव की तबियत ठीक नहीं रहती थी। संघपति जम्बू आण्णा से चर्चा करके स्वयं आचार्य श्री अपने गुरुदेव के दर्शन हेतु जाने को तैयार हो गये। संघस्थ साधुओं को वहां ही रहने का विचार हो गया। शायद आचार्य श्री को अपने गुरुदेव के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त होने वाला नहीं था। इसीलिए उस रात ही जाने का विचार रद्द हो गया। संघ की सेवा करने वाले गुरु भक्त श्री आण्णा साहेब कोले को कोथली भेज दिया गया। वहां जाकर उन्होंने देखा कि आचार्य श्री देशभूषण महाराज जी तो अपने लाडले शिष्य के नाम की जाप कर रहे थे। 'बाहुबली कब आने वाला है उसे जल्दी बुलाओ' कह रहे थे। सभी लोग उन्हें सान्त्वना दे रहे थे। बाहुबली महाराज जल्दी ही आने वाले हैं कहकर एवं पू. आचार्य श्री देशभूषण महाराज का आशीर्वाद लेकर श्री आण्णाकोले गजपंथा आ गए और आकर उन्होंने सब बताया। सुनकर आचार्य श्री के नेत्र सजल हो गए। आचार्य धर्मसागर जी की समाधि के पूरे एक महीने बाद एक अत्यन्त दुखद घटना घटी।

खुशियां बिखर गईं

एक दिन सुबह-2 आचार्य श्री ने एक सपना बताया-आज सपने में गुरुदेव का दर्शन हुआ। वे कहीं जा रहे थे और मैं उन्हें रोक रहा था। अचानक ही गुरुदेव के सामने एक बहुत बड़ा सर्पराज आया। आचार्य श्री ने मुझसे कहा-बाहुबली तुम आगे मत जाओ। मैं गुरुदेव से कह रहा था कि आप आगे मत जाइए। मैं उस सर्पराज को अलग कर देता हूं। लेकिन उन्होंने मुझे ऐसा करने से रोक दिया। इतने में ही मेरी नींद खुल गई।

उसी दिन आर्यिका शान्तमती माताजी ने भी इसी तरह का सपना देखा और आचार्य श्री को बताया। उस दिन आचार्य श्री उदास और व्याकुल थे तन यहां था परन्तु मन अपने गुरुदेव देशभूषण जी के चरणों में था। वे भक्ति पाठ, स्वाध्याय आदि करके जंगल जाने ही वाले थे कि उनकी दृष्टि संघपति पर पड़ी उन्होंने कहा-आज आहार लेने के बिल्कुल भी भाव नहीं हैं। संघपति ने प्रार्थना की-'आप ऐसा मत कीजिए। आपके बिना सभी त्यागी आहार के लिए कैसे उठेंगे। संघस्थ त्यागियों के कारण आचार्य श्री को आहार के लिए उठना पड़ा। लेकिन उस दिन उन्होंने केवल पानी लेकर हाथ छोड़ दिया।

मध्यान्ह प्रवचन होने के बाद नासिक से आई हुई एक महिला ने माताजी से पूछा-'माताजी, आपको कुछ पता है क्या? आचार्य श्री देशभूषण महाराज जी की समाधि हो गई है। मैंने आज सुबह टी.वी. में सुना तथा पेपर में पढ़ा है।' उस महिला से ऐसा सुनते ही हम सभी घबरा गए और तत्काल ही आचार्य श्री के पास जाकर यह दुखद समाचार सुनाया।

सुनकर आचार्य श्री को ऐसा लगा जैसे जमीन खिसक गई हो। चारों ओर सन्नाटा सा छा गया। गुरु का वियोग शिष्य को गहरी चोट दे गया। आचार्य श्री के नेत्रों से अविरल अश्रुधारा बह निकली। उनके मुख से बार-बार एक ही बात निकल रही थी-'मेरी छत्रछाया हट गई, अब मुझे कौन राह दिखायेगा। मैं तो गुरुदेव के दर्शन के लिए व्याकुल था.यह तो ऐसा पहाड़ टूट पड़ा कि सारी खुशियां राख हो गईं।'

जिसने भी इस दृश्य को देखा उसी का हृदय द्रवित हो उठा। एक महीने पहले उत्तर प्रान्त के आचार्य शिरोमणि धर्मसागर जी चले गए और आज दक्षिण प्रान्त में आचार्यरत्न देशभूषण जी चले गए। उस दिन पूरे संघ का उपवास था। आचार्यरत्न देशभूषण जी के चरणों में संघ ने सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्ति पूर्वक शान्ति भक्ति कर श्रद्धांजली अर्पित की। शोकसभा मनाई गई। आचार्य श्री के मन में एक महीने पहले अपने गुरुदेव के दर्शन की जो तमन्ना थी वह वैसी की वैसी ही रह गई।

ग्रीष्म ऋतु निकल गई। वर्षा का मौसम शुरू होते ही पोदनपुर एवं बोरीवली (बम्बई) के ट्रस्टी आचार्य श्री को ढूंढते-ढूंढ़ते गजपंथा आ गए और उन्होंने चातुर्मास हेतु आचार्य श्री से प्रार्थना की। गुरुभक्त श्री धन्यकुमार मेलवंके बी.बी. पाटील, सौ. पुष्पावती पाटील आदि भी साथ में थे। बम्बई वाले श्रावकों के जोर से आचार्य श्री ने चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान कर दी।

बम्बई पोदनपुर आदिनाथ-भरत बाहुबली त्रिमूर्ति

बम्बई में आचार्य श्री का चातुर्मास होना ऐसा लगा जैसे जन्मों की प्यासी धरती को वर्षा की ठण्डी बौछार मिल गई। तपती धरती पर चलते पथिक को तरुवर की शीतल छाया मिल गई हो। पोदनपुर त्रिमूर्ति में रत्नत्रय की प्रतीक तीन मूर्तियां आदिनाथ, भरत, बाहुबली भगवान की प्रतिमा जन-जन को मिथ्यात्रय के त्याग का सदुपदेश देती हैं। बम्बई जैसे बड़े महानगर में साधु त्यागी वर्ग के ठहरने के लिए कोई स्थान नहीं था। इसलिए आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज के शिष्य पूज्य नेमिसागर जी महाराज के सदुपदेश से पोदनपुर का निर्माण हुआ। यह स्थान शान्ति का एक अपूर्व केन्द्र बन गया है। यहां पहुंचते ही व्यक्ति सारे झंझटों से मुक्त हो अपने आप में एक अपूर्व शान्ति का अनुभव करता है।

बोरीवली में चातुर्मास सन् 1987

पोदनपुर में आठ दस दिन रहकर आचार्य श्री संघ सहित बोरीवली चले गए। वहां आचार्य शान्तिसागर हाल में चातुर्मास कलश स्थापन विधि सम्पन्न हुई। बस, आचार्य श्री की दुकान चालू हो गई। ग्राहकों की कमी नहीं है इनके लिए। धर्म की रुचि जाग्रत हुई। सोई जनता पुनः धर्ममार्ग में लगी।

बम्बई चातुर्मास के दौरान अनेक धार्मिक, साहित्तिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक कार्यक्रम हुए। यहां पूर्व आचार्य श्री ने ब्र. आदिनाथ को क्षुल्लक दीक्षा प्रदान की। ब्र. आदिनाथ ने 'धर्मध्वज' नाम पाया।

इसी स्थान (पोदनपुर) में एक चालीस वर्षीय ब्रह्मचारिणी जीवी बाई सातवीं प्रतिमा का पालन कर रही थीं। अचानक वह बीमार पड़ गईं। पू. आचार्य श्री ने उनकी तबीयत देखते हुए उन्हें नियम सल्लेखना का व्रत दे दिया। उसी बीच आर्यिका दीक्षा देकर पू. आचार्य श्री ने उनका कल्याण कर दिया। आचार्य श्री ने उन्हें जीवनमती नाम दिया। दो तीन दिन के बाद यम सल्लेखना पूर्वक उनकी विधिवत समाधि हो गई।

चातुर्मास होते ही दक्षिण की भीड़ आ गई। उन्होंने आचार्यश्री से कहा-आचार्यरत्न देशभूषण महाराज जी की समाधि होने के बाद दक्षिण का समाज निराधार हो गया। हम लोगों की छत्रछाया हट गई। उसी समय बेलगांव जिले के पदाधिकारी कोल्हापुर सांगली जिले के प्रतिष्ठित लोगों ने आचार्य श्री से प्रार्थना की-'हे गुरुदेव! आचार्यरत्न देशभूषण की छवि हम आप में देखते हैं। आप ही हमारे सर्वस्व हो। अतः आप दक्षिण में पधारें। आपके दर्शन के लिए समाज तड़प रहा है आपके आने के बाद ही उन संतप्त हृदय को शीतलता प्राप्त होगी।

उन भव्यात्माओं की प्रार्थना को आचार्यश्री जी की मूक सम्मति मिल गई। बम्बई के भव्य जिनालयों के दर्शन करके कोल्हापुर-सांगली की ओर आचार्य श्री का विहार हो गया। गांव-2 शहर-2 में आचार्य श्री का विहार हुआ। गुरुदेव जहां-2 जाते वहां पर दीवाली के समान लोग खुशियां मनाते।

आहार में फिटकरी

एक बार की बात है आचार्यश्री अपने संघ सहित मुंबई चातुर्मास के बाद कोल्हापुर की ओर विहार कर रहे थे। रास्ते में एक नगर में श्रावकों ने भक्ति पूर्वक चौका लगाया। चौके में उस दिन कुछ महिलाओं ने सेंधा नमक के बदले फिटकरी डालकर रसोई बना डाली।

आचार्यश्री को उन्होंने बड़े भक्तिभाव पूर्वक पड़गाह लिया। आचार्यश्री ने प्रसन्न होकर आहार ले लिया। आहार के बाद जब सभी खाना खाने बैठे तो सभी थू-थू करने लगे। तब सामने खड़े घर के एक सज्जन ने पूछा-अरे भाई! क्या हो गया? इस तरह से क्यों थू-थू कर रहे हो? सबने कहा-खाने में फिटकरी डली है। सभी के साथ एक डाक्टर भी खाना खा रहे थे तब उन्होंने बताया-खाने में फिटकरी की मात्रा बहुत अधिक है। यदि अधिक मात्रा में फिटकरी पेट में चली जाय तो विष रूप हो सकती है। सभी घबरा गये। आचार्यश्री तो आहार लेकर चले गये, लेकिन सभी को चिन्ता लग गयी। अब क्या होगा? देखिए तपधारी महामुनि के हाथ में अगर आहार विष भी रख दो तो वह अमृत हो जाता है। पू. आचार्यश्री की तपस्या के प्रभाव से उस फिटकरी का कुछ भी असर नहीं हुआ। आचार्यश्री के मुख पर वही तेज वही प्रसन्नता थी जैसे कि पहले थी।

इसी तरह की एक घटना और भी घटी-कोथली क्षेत्र में आचार्यश्री आहार हेतु चौके में गये थे। एक महिला ने जल्दी-जल्दी में बूरा (शक्कर) के बदले में नमक में घी मिलाकर दे दिया। तब भी आचार्यश्री ने अपने चेहरे पर कुछ भी बदलाव न आने दिया और नमक व घी खा लिया। आहार के बाद पता चला कि नमक में घी मिलाकर आचार्यश्री को दे दिया गया था। तब सभी को बहुत पश्चाताप हुआ।

भट्टारक जिनसेन महास्वामी जी (नांद्रे) की प्रार्थना-सन् 1988

आचार्य श्री का संघ विहार करते-2 जब हसुर में आया तब वहां कोल्हापुर नांदणी के मठाधीश भट्टारक श्री जिनसेन महास्वामी आचार्य श्री जी के दर्शनार्थ वहां आए और आचार्य श्री के चरणों में एक विनती की। आपको गुरुदेव देशभूषण महाराज के समाधि स्थल पर आना ही पड़ेगा। आपके पवित्र चरण कमल के स्पर्श से वहां के दुःखित श्रावकों का उत्साह बढ़ेगा। आचार्य श्री ने कहा-'जहां मेरे गुरुदेव नहीं हैं उनका दर्शन भी नहीं मिलेगा, वहां जाकर हम क्या करेंगे?' हां समाधि स्थान का दर्शन हम अवश्य करेंगे। लेकिन गाजे बाजे से नहीं। जिनसेन महास्वामी बोले-हम आपको ले ही जाऐंगे। यदि आप नहीं आएंगे। तो शान्तिसागराचार्य को नसलापुर का भीमाप्पा सामायिक के समय जैसे उठाकर ले गया था वैसे ही हम भी आपको उठाकर ले जाएंगे। जिनसेन महास्वामी जी की करुण प्रार्थना आचार्य श्री ने सुन ली ओर कोथली की ओर प्रस्थान निश्चित हो गया।

1 जनवरी 1988 को गुरुदेव की समाधि के दर्शन हेतु आचार्यश्री का आगमन

आचार्य श्री के आगमन की सूचना मिलने से सभी कोथली वासियों के हृदय में आनन्द की लहर दौड़ गई।

भव्य एवं दिव्य आगमन

एक जनवरी को सुबह-2 ही आचार्य श्री का कोथली में पदार्पण हुआ। चिर प्रतीक्षा करने वाले भक्तों को गुरु दर्शन से अपूर्व शान्ति मिली। शान्ति गिरी पर्वत लोगों से खचाखच भरा हुआ था। गाड़ियां खड़ी करने के लिए लोगों को जगह नहीं मिली थी।

आचार्य श्री संघ सहित सर्वप्रथम अपने गुरुदेव के समाधि स्थल पर पहुंचे। तीन परिक्रमा देकर सजल नेत्रों से भाव पूर्वक नमोस्तु किया। उसी स्थान पर आचार्यरत्न देशभूषण महाराज के चरण चिन्ह की प्रतिष्ठा कर स्थापना की।

समाधि स्थल पर गुरुवर
सोच रहे थे झुकाकर सर
गुरु के सान्निध्य में ही
मिला मुझे आकार
उन्होंने ही बतलाया था
हमें धर्म का सार
नई राह दिखाई हमको
छोड़कर गए खुद इस जग को
सोचते-2 नेत्र भर आए
अश्रुओं के श्रद्धा सुमन चढ़ाए।

तत्पश्चात् शान्तिगिरी पर्वत पर जाकर दर्शन, वन्दन, स्तवन करके मंच पर विराजमान हुए। जय-जयकार की ध्वनि से आकाश गूंज उठा। आचार्य श्री ने पीछी उठाकर सबको आशीर्वाद दिया। दूर से आशीर्वाद मिलते ही सबको अद्भुत आनन्द की प्राप्ति हुई। कोथली क्षेत्र का एक-2 परमाणु आचार्य श्री बाहुबली महाराज जी का नाम पुकार रहा था। ब्र. बहिनों के मंगलाचरण द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत हुई बाद में नीरा निवासी रमणीक लाल कोठारी का जबरदस्त व्याख्यान हुआ। उसके बाद नांदणी के भट्टारक जिनसेन महास्वामी जी का मार्मिक प्रवचन हुआ। जिनकी वाणी सुनने के लिए भक्तगण तरस रहे थे। उनकी वाणी प्रस्फुटित होते ही सारी जनता शान्त हो गई। आचार्य श्री का प्रवचनामृत पीकर सबके मन तृप्त हो गए। सबके कान सफल हो गए। कार्यक्रम होते ही पुनः आचार्य श्री का विहार हो गया।

कोथली चातुर्मास सन् 1988-89

प.पू. भारत गौरव देशभूषण महाराज जी की जन्मभूमि कोथली ग्राम में आचार्य श्री के दो चातुर्मास धर्मप्रभावना पूर्वक सम्पन्न हुए।

अद्भुत परीषह

सन् 1988 के चातुर्मास में आचार्य श्री जी की दोनों जंघाओं में दो बड़े-2 फोड़े हो गए। दो महीने तक फोड़े ठीक नहीं हुए। तीव्र वेदना थी। उठने, बैठने, सोने में बड़ी दिक्कत होती थी। फिर भी आचार्य श्री के मुख पर सदा प्रसन्नता ही झलकती थी। फोड़े के कारण तेज बुखार था फिर भी ऐसी अवस्था में भी स्वाध्याय, प्रवचन आदि सभी नित्य क्रियाएं चालू थीं। धन्य हैं ऐसे कठिन परीषह सहने वाले साधु। वास्तविकता में उपसर्ग विजेता का जीवन ही चमकता है।

मैंने पूछा- 'गुरुदेव! फोड़े की वेदना तो बहुत तीव्र होगी।' आचार्य श्री बोले-'हमें आज तक कुछ नहीं हुआ। हमें किसी भी प्रकार की वेदना नहीं सताती। अगर वेदना सताती भी है तो हम ध्यान में लीन हो जाते हैं। वेदना अपने आप भाग जाती है। हमें वेदना का परिज्ञान नहीं हो पाता आनन्द ही आता है।'

उस फोड़े को देखकर सभी त्यागीगण, भक्तगण चिन्तित हो जाते। लेकिन आचार्य श्री के चेहरे पर मुस्कुराहट रहती थी। कभी भी कितना भी विहार करना पड़े लेकिन चेहरे पर उदासी की छटा कभी नहीं दिखती।

संघपति जम्बूराव सौंदत्ते की भव्य दीक्षा सन् 1989

संघपति श्री जम्बूराव जी सतत आचार्य श्री की सेवा में रत रहते थे। भरा पूरा परिवार उनके छह लड़के एक से एक बढ़कर सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्र में अग्रसर हैं। धर्मपत्नी सोनाबाई धार्मिक मुनिसेवा रत विचारवंत हैं। खेती, धनधान्य से परिपूर्ण घर में किसी प्रकार की कमी नहीं थी। छहों बहुएं बुद्धिमानी एवं संस्कारित हैं।

दाता भवति वा न वा

धनी, दानी व ज्ञानी इन तीनों गुणों का दुर्मिल अर्कमाने जम्बूराव सौंदत्ते 'सा विद्या या विमुक्तये' इस सूक्ति के अनुसार देखा जाये तो वे विशेष ज्ञानी ही हैं। अमाप पैसा कमाकर धनी हो गए। लेकिन किसी भी प्रकार की भोगाशक्ति व व्यसन नहीं। बस एक ही व्यसन उन्हें जरूर था-'दान व्यसन'। अर्थात् 'गुरुपाद सेवन व्यसन' उनका पूरा जीवन गुरुचरणों में समर्पित था। ऐसे देखा जाए तो अभी तक उन्होंने 25 लाख 35 हजार का दान अपने हाथों से किया। इतना

सब होते हुए भी श्रावक शिरोमणि जम्बूराव जी के मन में साधु शिरोमणि बनने के भाव जागृत हुए। सभी ऐश आराम का त्याग करने को वे तैयार हो गए।

महता पुण्य पण्येन क्रीतये कायनौस्त्वया।
पारं दुःखोदधेर्गन्तुं तर यावंन्न भिद्यते॥

महान पुण्यरूपी धन के बल पर शरीर रूपी नाव खरीदी है। दुःख रूपी समुद्र के उस पार जाना है। रोग राई, बुढ़ापा से शरीर रूपी नाव जब तक न फूटे उससे पहले ही भवसागर तिर जाना श्रेयस्कर है।

11 अक्टूबर 1989 मंगल दिन की मंगल बेला में बुधवारी संघपति धर्मवात्सल्य जम्बूराव जी की दीक्षा पू. आचार्य श्री जी के शुभ हस्ते सम्पन्न हुई। संघपति जम्बूराव जी जम्बू स्वामी होकर मोक्षमार्ग में अग्रदूत हुए। इन्हीं के साथ दो श्रावकों ने भी दीक्षा ली। पू. आचार्य श्री जी ने संघपति जम्बूराव जी का नाम क्षु. जिनचन्द्र रखा। दूसरे जो दो श्रावक थे उनका नाम क्रमशः क्षु. पूर्णचन्द्र महाराज व क्षु. धर्मचन्द्र महाराज रखा। माणगांव की सरसूबाई (जिन्होंने आचार्य शान्तिसागर महाराज जी से सप्तम प्रतिमा ली थी) ने क्षुल्लिका दीक्षा ली। जिनका नाम क्षु. सरस्वती माता जी रखा गया।

विविध प्रकार से आचार्य श्री के द्वारा धर्मप्रभावना शुरू हुई। जगह-2 पंचकल्याणिक जीर्णोद्धार नूतन मंदिर निर्माण त्यागी निवास निर्मित हो रहे थे। रूई, शिरटी, माणगांव आदि स्थानों में जैन युवक सम्मेलन बड़ी ही प्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ।

पवित्र भोज भूमि पर न भूतो पंचकल्याणिक

आचार्य शान्तिसागर जी की जन्म भूमि में पूज्य आचार्य श्री बाहुबली महाराज जी की प्रेरणा एवं आर्शीवाद से 'आचार्य शान्तिसागर स्मारक' बनाया गया। इस स्मारक में 'न भूतो' पंचकल्याणिक हुआ। इस पंचकल्याणिक में तीन इन्द्र इन्द्राणी (सौधर्म इन्द्र) बने थे। एक पूना के, दूसरे भोज के, और तीसरे शिरटी के थे। पंचकल्याणिक के समय सारी भोजनगरी इतनी सजाई गई थी जैसे साक्षात् इन्द्रों ने आकर ही इसकी रचना की हो। अलका नगर के समान आचार्य श्री की प्रेरणा से जो भी कार्य होता हैं वह अद्भुत ही होता है। उनके कार्य की सराहना शब्द रूपी पुद्गल वर्गणाओं से नहीं की जा सकती। वो जो भी कार्य करते उसमें अहं का भाव नहीं रहता है।

भोज के पुराने मंदिर में, जो मान स्तम्भ था वहां अभी भगवान विराजमान नहीं थे। वहां की प्रतिष्ठा तथा नूतन स्मारक में भगवान शान्तिनाथ, सामने संगमरमरी उत्तुंग मानस्तम्भ पर भगवान शान्तिनाथ चतुर्मुखी प्रतिमा विराजमान करने का कार्य व बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य, दिगम्बराचार्य श्री शान्ति सागर जी की पांच फुट ऊंची प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा करके विराजमान करने का कार्य पू० आचार्य श्री के द्वारा ही सम्पन्न हुआ। स्मारक में बीचोबीच आचार्य शान्ति सागर जी के चरण चिन्ह विराजमान किए गए। आज इसी स्मारक की विशेष प्रगति हो गई है। वहां वर्तमान में सात आठ मुनि गुफा, एक बड़ा शान्ति सागर हॉल है। बाग बगीचा एवं त्यागियों के ध्यान अध्ययन के लिए यह एक अनुकूल स्थान बन गया।

चारित्र चन्द्रिका पद प्रदान-5 मार्च सन् 1990

पंचकल्याणक पूजा के समय आचार्य शान्ति सागर जी की अन्तिम शिष्या तपोवृद्धा विदुषी क्षुल्लिका अजितमती माता जी भी आयी थी। पू० माता जी का जन्मदिन भोज में मनाया गया। उस समय आचार्य श्री ने उन्हें उनके गुणानुसार

'चारित्र चन्द्रिका' पद प्रदान किया। आचार्य श्री ने अपने प्रवचन में बताते हुए कहा कि आचार्य शान्ति सागर जी 'चारित्र चक्रवर्ती' थे तो उनकी शिष्या 'चारित्र चंद्रिका' है।

16 दिसम्बर एक अनहोनी घटना

16 दिसम्बर को सबुह-सुबह कुछ लोग बैलगाड़ी में केले और नारियल के पेड़ की कुछ शाखाएं लेकर आ गए। आचार्य श्री ने सहज उनसे पूछा-'आज क्या हैं? आप लोग ये क्या कर रहे है।' वे भोले भाले लोग थे। झट से बोल पड़े-'गुरूदेव। आज आपका जन्मदिन है। इसलिए हम लोग ये झाड़ तोड़कर लाए है।' इतना सुनते ही आचार्य श्री का मुख म्लान हो गया। आचार्य श्री को जन्मदिन मनाना पसन्द नहीं है। प्रतिवर्ष भक्तगण आचार्य श्री को बिना बताए ही मना लेते है।

उस दिन आहार रविकीर्ति पाटील के घर हो गया। आहार के समय भीड़ थी सभी के मुख पर आनन्द था। लेकिन आचार्य श्री उदास थे। उन्हें बार-बार यहीं लग रहा था कि आज हमारे निमित्त से बिना प्रयोजन एकेन्द्रिय जीवों की हिंसा हो रही है। आहार होते ही हम भी वहां पहुंच गए। क्षु० धर्मध्वज महाराज भी आ गए। आचार्य श्री को बैण्ड बाजे के साथ मंदिर जी में ले गए। ये सभी दृश्य देखकर आचार्य श्री ने श्रावकों से कहा-हम जंगल जाकर आते हैं। साथ में क्षुल्लक धर्मध्वज महाराज थे। आचार्य श्री जो गए तो जल्दी आए ही नहीं। दो घण्टे हो गए लेकिन आचार्य श्री वापस नहीं आए। लोगों को शंका हुई आचार्य श्री का आज जन्म दिन है इसलिए शायद उन्होंने ऐसा किया। भक्तगणों की भीड़ पू. आचार्य श्री की राह देख रही थी। जब आचार्य श्री नहीं आए तो सभी श्रावक पू० आचार्य श्री को ढूंढने निकल पड़े। आचार्य श्री शिरदवाड़ पहुंच गए थे। वहां श्रावकों की भीड़ ही भीड़ थी। शाम के पांच बज गए आचार्य श्री को लगा शाम हो गई शायद सभी चले गए होगें। वे पुनः भोज आ गए। यहां आकर देखा कि पूरा मण्डप खचाखच लोगों से भरा था। उस समय नांदणी के जिनसेन भट्टारक महास्वामी भी वहां विराजमान थे। मण्डप में प्रवेश करते ही लोगों ने पुष्प वृष्टि की। और बड़े जोर शोर से जन्म दिन मनाया।

मजरेवाड़ी में आर्यिका दीक्षा सन् 1989

आचार्य श्री के संघ में बहुत दिन से ब्र० नंदा बहिन नियम संयम पूर्वक अपनी साधना में रत थी। मन में वैराग्य भावना देखकर आचार्य श्री ने दीक्षा का मुहूर्त निकाल दिया। दीक्षा के बाद उन्होंने 'मुक्ति कांता' माता जी नाम दिया।

धर्म की काशी फलटण में चातुर्मास सन् 1990

फलटण एक ऐसी नगरी हैं जहां श्रावक श्राविका नित्य ही व्रत उपवास में रत रहते है। वहां छह मंदिर है। गृह चैत्यालय भी अनेक है। चातुर्मास में सतत् धार्मिक शिक्षण शिविर विधान आदि विशेष कार्यक्रम शुरू ही थे। आचार्य श्री की दुकान खुली थी। श्रावको ने भरपूर खरीदी की। इसी चातुर्मास में ब्र० चम्पाबाई को-क्षुल्लिका दीक्षा देकर आचार्य श्री ने 'निष्पाप मति' नाम दिया।

त्रिलोक मण्डल विधान-व चारित्र चूड़ामणि पद प्रदान

चातुर्मास होते ही आचार्य श्री की प्रेरणा व आर्शीवाद से 'न भूतो' ऐसा त्रिलोक मण्डल विधान हुआ। उस समय युवक वर्ग का उत्साह द्विगुणित था। आचार्य श्री के आगमन से चार महीने तक फलटण शहर में धर्म का महापुर आ गया

था। फलटण नगर ने महानगर का रूप धारण कर लिया था विधान के निमित्त से त्रिलोक की यात्रा शुरू की। श्री आदिनाथ मंदिर के सामने कहीं भी कदम रखने के लिए जगह नहीं थी। तीन लोक में जितने अकृत्रिम मंदिर हैं उनकी वन्दना इस औदारिक शरीर से तो नहीं हो सकती परन्तु भाव से सब यहां वन्दना करने आए थे। विधान के बीच पू० आचार्य श्री का जन्मदिन फलटण की समाज ने विविध कार्यक्रमों के साथ मनाया। इस कार्यक्रम में आचार्य शान्तिसागर महाराज की शिष्या चारित्र चन्द्रिका अजित मती माता जी भी उपस्थित थी। उन्हें बहुत तेज बुखार था फिर भी वे उस दिन आचार्य श्री को जन्मदिन की बधाई देने पण्डाल पहुंच गई। आचार्य श्री को नमोस्तु करके इतना ही कहा धर्म की प्रभावना हेतु आपको दीर्घ आयु प्राप्त हो।

उसी समय आचार्य श्री के उज्जवल चरित्र से प्रभावित हो उन्हें सारी समाज ने जिनसेन भट्टारक महास्वामी के अधिनेतृत्व में 'चारित्र चूड़ागणि' पद से विभूषित किया। जय-जयकार की ध्वनि से सारा नभो मण्डल गूंज उठा। सारे समाज ने भावूपर्वक अपनी भक्ति आचार्य श्री के चरणों में अर्पित की।

भावपूर्ण समर्पण

प० पू० आचार्य रत्न श्री 108 बाहुबली महाराज जी के चरणों में भाव समर्पण-चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज के पावन पद स्पर्श से पुनीत हुई। दिगम्बर जैनों की दक्षिण काशी इस नाम से प्रसिद्ध 'फलटण नगरी में 2/12/90 से 14/12/96 पर्यन्त वाले श्री त्रिलोक महामण्डल विधान पूजा महोत्सव के शुभ प्रसंग में श्रद्धापूर्वक स्मरण करना आद्य अपना कर्त्तव्य है।

आप प०पू० भारत गौरव आचार्य रत्न देशभूषण महाराज जी के पदाधीश हो। श्रमण संस्कृति एंव आर्ष परम्परा के सम्वर्द्धन हेतु आप सतत् दक्षतापूर्वक प्रयत्न करते हो विद्वतापूर्वक ओजस्वी, सारगर्भित उपदेश जैन साहित्य ग्रन्थ संकलन व अनुवाद जिनवाणी का प्रचार तथा प्रसार नूतन मंदिर का निर्माण व प्रतिष्ठा भव्य जीवों को जिनदीक्षा समाज प्रबोधन इसके द्वारा ही जैन संस्कृति का संरक्षण आप सदैव करते हो। इसका सार्थ स्वाभिमान जैन समाज को सतत् रहेगा।

आप लोग, त्याग और वात्सल्य की साक्षात् शान्ति मूर्ति हो। सद्धर्म प्रवर्तन का कार्य आप अखण्ड रूप से करते हो। आज की इस मंगल बेला में समस्त दिगम्बर जैन समाज चतुः संघ के समक्ष आपको-

'चारित्र चूड़ामणि' इस पद से विभूषित कर रहे है।

आपके विनीत

समस्त जैन समाज
फलटण (जि.-सातारा)

वीर संवत् 2517
मार्ग शीर्ष-वदी-5
दिनांक 6 दिसम्बर, 1990

पूज्य आचार्य श्री के चरणों में क्षु. अजितमती माताजी द्वारा आलोचना

अजितमती माताजी को दहिगांव जाना था। वहां जाकर गाड़ी त्याग करके सल्लेखना पूर्वक देह विसर्जन करने के भाव मन में थे। लेकिन फलटण में आचार्य संघ मिला। आचार्य श्री ने माता जी से उनकी प्रकृति के बारे में पूछताछ की। और माता जी ने आचार्य श्री के चरणों में-

'महाराज 63 साल में अर्थात् दीक्षा के अन्तर्गत मेरे द्वारा ग्रहण किए चारित्र में मन, वचन, काय, कृत-कारित, अनुमोदना से अतिक्रम, व्यतिक्रम अतिचार, अनाचार आदि दोष हुए है, प्रमादवश विराधना हो गई हो तीव्र मंद कषाय से ज्ञात अज्ञात भाव से जो भी दोष लगे हो, वे सब दोष आपके चरणों में मिथ्या हो। 'मिथ्या में दुष्कृतं भवतु' यही मेरी प्रार्थना है।'

यह श्रेष्ठ दिगम्बर आचार्य श्री के सामने डेढ़ दो डिग्री बुखार, कफ से भरी छाती, बार-बार खांसती हुई, कमर में दर्द से पीड़ित बिल्कुल कम आवाज में नब्बे साल की एक वृद्धा श्वेत वस्त्रा, श्वेत मुद्रा, श्वेत लेश्या, महाश्वेता हाथ में मयूर पीछी लेकर बोल रही थी। छोटा निष्पाप बच्चा अपने शरीर पर हुए घाव अपनी मां को दिखा रहा था और मां अपने दिगम्बर रूपी पल्ले के अन्दर ढांक रही थी। उस समय संघस्थ मुनि आर्यिका, ऐलक, क्षुल्लक, क्षुल्लिका, क्षु0 श्रेयांस मति माताजी, रेवती, जिनमति आदि वहां थे। माताजी ने आगम कथित उत्तमार्थिक प्रतिक्रमण किया। 'आचार्य श्री ने प्रतिक्रमण की भावाभिव्यक्ति वात्सल्यता से स्वीकार की। माता जी मांग रही थी और आचार्य श्री दे रहे थे।

उस दिन माता जी आचार्य जी के समक्ष धान्य, रस परिग्रह की मर्यादा कर ली। उन्होंने दहिगांव जाने का विचार मन से निकाल दिया और अपना सब भार आचार्य श्री के ऊपर छोड़ दिया।

17 दिसम्बर 1990 को अजितमति माताजी ने हृदय पटल खोलने वाले शब्द आचार्य श्री के सामने व्यक्त किए।-'महाराज। मैंने दीक्षा से लेकर अभी तक के दोषों का प्रतिक्रमण प्रत्याख्यान आलोचना आपके सामने की। अब आपके मार्ग दर्शनानुसार मुझे आगे बढ़ने की इच्छा है। आपकी आज्ञा शिरसावंद्या'।

आचार्य श्री ने माताजी को समझाते हुए कहा-आपने अपने ऊपर का भार हमारे ऊपर छोड़ दिया हैं आपके लिए अधिक से अधिक अनुकूल वातावरण जहां रहेगा वहीं हम आपकी उत्तम व्यवस्था करेगें। एक समाधि के लिए 48 साधुओं की जरूरत रहती हैं पर यहां तो उतने साधु नहीं है। आप किसी भी प्रकार का विकल्प मत करना। माता जी बोली-'महाराज। मैं आपकी आज्ञानुसार चलूंगी' नाते पुते, फलटण, बारामती आदि गांव के लोगों ने आचार्य श्री से विनती की-माताजी को हमारे गांव ले चलो। परन्तु आचार्य श्री ने सबको आर्शीवाद देकर भेज दिया।

क्षु0 श्रेयांसमती माताजी के दीक्षागुरू आचार्य रत्न देशभूषण महाराज जी थे। आचार्य बाहुबली महाराज श्रेयासंमति के गुरूबन्धु और अब क्षु0 अजितमती माताजी के नियपिकाचार्य । रेवती ने आचार्य श्री से हंसते हुए कहा-'महाराज दोनों लड़कियों को अपने पीहर में लाए है।' आचार्य श्री के चेहरे पर प्रसन्नता उमड़ आयी। माताजी के पास आकर सभी गांव के लोग अपने गांव आने के लिए प्रार्थना करने लगे। माताजी ने सभी से स्पष्ट कहा-'मैं आचार्य श्री के सानिध्य में नियम सल्लेखना का अभ्यास कर रही हूं। पहले मैंने एकान्त स्थान समझकर दहिगांव क्षेत्र चुना था। पर मेरा सौभाग्य बिना ढूंढे मुझे आचार्य श्री मिल गए। अब मुझे महत्व क्षेत्र का नही बल्कि गुरू सानिध्य का है। शरीर क्या कहीं भी फेंकना है।

बारामती के जम्बू कुमार सेठ, अर्हंददास सेठ की भारी आकुलता देखकर आचार्य श्री ने रेवती को बारामती भेज दिया। फलटण निवासी सुभाष गांधी ने उत्स्फूर्त भावना व्यक्त करते हुए कहा-'महाराज, मैं माता जी की समाधि होने तक

अकेला ही पूरा खर्चा करूंगा उनकी तीव्र भक्ति देखकर आचार्य श्री ने उनका कौतुक किया। रेवती बारामती की जगह देखकर आ गई। और वहां के तीन चार अनुभवी लोगों से पूछताछ भी कर ली। आचार्य श्री के चतुर्विध संघ की ऐतिहासिक बैठक पार्श्वनाथ मंदिर में थी। गांव के सभी भक्तगण उसमें सम्मिलित थे अन्त में निर्णय बारामती का ही हो गया। तथा विहार का दिन भी निश्चित हो गया।

25 दिसम्बर 1990 के दिन आचार्य श्री ने संघ समेत बारामती की ओर विहार किया। क्षु0 अजीतमती माता जी जम्बू कुमार सर्राफ की गाड़ी से बारामती पहुंची। आचार्य श्री का मुक्काम उस दिन सांगवी में था। बारामती भक्तगण कड़ाके की सर्दी के बावजूद आचार्य श्री की सेवा में लगे थे। 30 दिसम्बर को आचार्य श्री के पास अजितमती माताजी ने वाहन का त्याग कर दिया। तथा उन्होंने आचार्य श्री से महाव्रत लेने की याचना की । आचार्य श्री ने कहा-'माताजी! आप ज्ञान से, चारित्र से, अनुभव से आज तक समाधि साधना कैसे करना है आप शब्दों से कहती थी। लेकिन आज कृति में दिखा रही हो। सल्लेखना रूपी मैदान में मृत्यु रूपी मल्ल के साथ आप युद्ध करने के लिए तैयार हो।'

माता जी बोली-'महाराज महाव्रत के लिए नक्षत्र, दिन वगैरह देख लीजिए और शीघ्र ही महाव्रत के संस्कार कर दीजिए।'

पौष कृष्ण सप्तमी सोमवार के शुभ मुहूर्त (7 जनवरी) में माताजी की आर्यिका दीक्षा निश्चित हो गई। पत्रिका छप गई। नई पीछी माताजीओं ने बना ली। सर्राफ जी के यहां आचार्य शांतिसागर महाराज जी के हाथ का कमण्डलु था। कमण्डलु देखते ही आचार्य श्री ने माता जी से कहा-'माताजी, आचार्य महाराज ने यह कमण्डलु आपके लिए भेजा है।' माता जी बोली-'हां, मेरे लिए ही तो रखकर गए है।'

आचार्य श्री द्वारा क्षु0 अजितमती माता जी को आर्यिका दीक्षा प्रदान 7 जनवरी 1991

सुबह 6 बजे संघस्थ माताजीयों ने अजितमती माताजी का केशलोंच किया। केशलोंच शान्ति पूर्वक हो गया। आचार्य श्री संघ सहित पंडाल में आर्यिका दीक्षा देने हेतु-विराजमान हुए। भट्टारक जिनसेन महास्वामी जी भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। माताजी ने आचार्य श्री व चतुर्विध संघ से क्षमा याचना की। और दीक्षा लेने हेतु प्रार्थना की। कोल्हापुर, सांगली, बेलगांव, सोलापुर, सातारा, पूणा आदि सभी जिलों के लोग आर्यिका दीक्षा कार्यक्रम देखने के लिए उत्साहित थे। शान्त सन्त, धीर, घनगम्भीर आवाज में शुद्ध उच्चारण करते हुए भट्टारक महाराज विधि पढ़ने लगे। आचार्य श्री महाव्रत के संस्कार करने लगे। पांच सुहागिन महिलाओं ने श्वेत वस्त्र पर गंध से साथियां बनाया। उस पर अक्षत के पुंज रखें। तदनन्तर आचार्य श्री की आज्ञा होते ही माता जी उस पर जा बैठी। प्रथम तीन बार शान्ति मंत्र पढ़कर आचार्य श्री ने गंधोदक सिंचन किया। मस्तक पर बाए हाथ से तीन बार स्पर्श किया। दधि अक्षत गोमय (राख), दरभ आदि वर्द्धमान मंत्र उच्चारते हुए मस्तक पर सिंचन किया। कपूर मिश्रित भस्म से सिद्ध भक्ति और योगी भक्ति पढ़ते हुए पांच स्थान में छोड़े हुए केश उत्पाटन किया। मस्तक पर गंध से श्रीकार लेखन करके 108 बार 'ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा ह्रीं स्वाहा। मंत्र उच्चारते हुए लोंग रखा। माताजी की अन्जुलि में चावल, सुपारी, छुंआरा और नारियल देकर 28 मूलगुण (महाव्रत) का आरोपण किया। उसके पश्चात् एक महिला की गोद में वह नारियल दे दिया। षोडश संस्कार लोंग से किया। तत्पश्चात् गुर्वावली पढ़कर उपकरण प्रदान का कार्यक्रम शुरू हो गया। अर्हद्दास सर्राफ और उनकी मां ने माता जी को पीछी प्रदान की। बारामती दिगम्बर जैन युवक संघटन की ओर से शास्त्र प्रदान किया गया। अकलूज निवासी चंपाबाई फडे ने कमण्डलु तथा पूणा निवासी रतन बाई शहा ने श्वेत वस्त्र प्रदान किए। विधि समाप्त होते ही माता जी

ने दीक्षा गुरू को अर्थात् निर्यापकाचार्य श्री को प्रथम त्रिवार नमोस्तु किया। संघस्थ मुनि वृंद को नमोऽस्तु करके आर्यिका माता जी को वंदामि किया। सभी माता जी ने प्रति वंदामि किया।

आचार्य श्री ने संयम ग्रहण करने का उपदेश देते हुए कहा-'भव्य बन्धुओं! महाव्रत की गंगा अपने आगंन में आयी हैं, जिस जिसको बहती गंगा में हाथ धोना हैं वह हाथ धो ले।' कुछ लोगों ने बहती गंगा में हाथ धोने का लाभ लिया। अकलूज निवासी द्वितीय प्रतिमाधारी श्रीमान माणिकलाल जीवराज गांधी सप्तम प्रतिमाधारी बन गए। लासूर्णे निवासी द्वितीय प्रतिमाधारी श्री हीरा लाल गांधी तथा बारामती निवासी द्वितीय प्रतिमाधारी श्री माणिक चन्द्र शाह क्रमशः पंचम तथा सप्तम प्रतिमाधारी बन गए। नातेपुते के भाईचन्द्र चंकेश्वरा ने सपत्नीक आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत लिया। इसी प्रकार सभी ने शक्तिनुसार व्रत लेकर पुण्य सम्पादन किया।

नांदणी से जिनसेन भट्टारक महास्वामी जी का आना जाना हमेशा शुरू हो गया। इन्हीं के परिश्रम से मठ उर्जितावस्था को प्राप्त हुआ था। आचार्य श्री भट्टारक जी से हमेशा कहते थे 'आप ज्यादा प्रवास मत करो। आपकी तबियत ठीक नहीं रहती। संभलकर काम करो।'

माता जी बोलीं-'भट्टारक जी आपकी गादी तो दिगम्बर गादी हैं पर अभी तो आप क्षुल्लक जी की मुद्रा में ही हो।

भट्टारक जी बोले-'माता जी मैं भले ही अभी क्षुल्लक अवस्था में इस गादी पर हूं पर समाधि के समय मेरी मुद्रा आप सभी को दिगम्बर ही दिखेगी। गादी शुरू से दिगम्बर हैं और दिगम्बर ही रहेगी।' भट्टारक जी चर्चा करके पुनः नांदणी चले गए।

माताजी की दीक्षा हुए मात्र दो महीने हुए थे। एक रात अचानक फोन आया-'नांदणी के जिनसेन भट्टारक जी बहुत अस्वस्थ है। कुछ देर बाद पुनः फोन आया-'भट्टारक जी ने भगवान आदिनाथ स्वामी के सामने महाव्रत दिगम्बर व्रत स्वीकार कर लिया है।' फिर तीसरा फोन आया-'जिनसेन भट्टारक जी की समाधि हो गई।' प० पू० आचार्य श्री सुबल सागर जी व प० पू० आचार्य श्री बाहुबली महाराज जी की सम्मति से नूतन जिनसेन भट्टारक की नियुक्ति हुई। मठ सम्बन्धी चर्चा चल रही थी उस समय सांगली के बंडेन्द्र पाटिल ने एक घटना बताई थी। घटना इस प्रकार थी-

हाथी से उतार कर घोड़े पर नहीं बिठायेंगे

आचार्य देशभूषण महाराज जी संघ सहित कोल्हापुर में थे। पहले नांदणी पीठ पर म्हैशाल गांव के भट्टारक जी थे। उस समय मठ का कुछ नुकसान हो गया था प्राचीन पीठ उर्जितावस्था में लाने की बात आचार्य श्री के सामने चल रही थी। पास में ही क्षुल्लक जी बाहुबली जी भी बैठे थे। नांद्रेकर, बंडेन्द्र पाटील, राव साहेब मनेरे जी (दक्षिण भारत जैन सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष) आदि ने आचार्य श्री से प्रार्थना की-'गुरूदेव, आपके परम शिष्य क्षुल्लक बाहुबली महाराज जी को इस गादी पर बिठाएं तो अच्छा होगा क्योंकि ये सभी प्रकार से मठ चलाने के योग्य है। शास्त्रों का ज्ञान भी हैं और विशेष बात यह हैं कि ये बाल ब्रह्मचारी हैं, विनम्र हृष्ट पुष्ट आज्ञाकारी हैं। निर्भय, अन्वेषी, विनयी हैं। गादी का नियन्त्रण ये खूब अच्छी तरह से कर सकते हैं। आपने तो संघ की देख रेख एकमायने में बागडोर बाहुबली महाराज जी को ही सौंप चुके हो। अतः आप उन्हें गादी में बैठने की आज्ञा प्रदान कीजऐ।'

तब देशभूषण जी ने उन लोगों से कहा-'बाहुबली तो हाथी पर सवार हांने के लिए तैयार है।, अब उनको घोड़े पर कैसे बिठायेगें। अध्यात्म सागर में डुबकी लगाने का इच्छुक, व्यवस्था की नाव पर चलने को राजी कैसे होगा? उसे मुनि बनना है, उसे मुनि पथ अपनाना है वह नहीं बन सकेगा भट्टारक।'

आचार्य श्री की नकारार्थी बाते सुनकर सभी लोग उदास हो गए पुनः आचार्य श्री ने उनसे कहा-'हमारे संघ में क्षुल्लक वासुपूज्य महाराज है। अगर आप चाहते हो तो उन्हें भट्टारक बना लों। क्योंकि वे भी बाल ब्रह्मचारी हैं। बाहुबली कारंजा आश्रम में उनका संस्कृत आध्यात्मिक, न्याय आदि विषय पर अध्ययन हो चुका हैं, भरपूर ज्ञान हैं अतः वे भट्टारक बनने के लिए वे पूरी तरह योग्य है।' सभी लोग तैयार हो गए। क्षु० वासुपूज्य महाराज जी ने गादी स्वीकार कर ली। भट्टारक बनने के बाद अभी तक उन्होंने बहुत परिश्रम किया। इसलिए मठ उर्जितावस्था में दिखाई देने लगा। मठ की 700 एकड़ जमीन थी। धीरे-धीरे मठ का पुनः उत्थान हो गया। मठ का उत्थान करते-करते ही उनकी आयु की डोर टूट गई।

इसी प्रकार एक और घटना बेलगांव के श्रावकों ने बताई। आचार्य श्री देशभूषण महाराज जी का संघ बेलगांव में था तब हुमचा (होम्बुज) के देवेन्द्र कीर्ति भट्टारक जी बेलगांव आए थे। देवेन्द्र कीर्ति भट्टारक ने कहा-'आचार्य श्री मैं बूढ़ा हो गया हूं इसीलिए अपने मठ की गादी पर क्षुल्लक बाहुबली महाराज को बिठाने का विचार हमने किया है। हम क्षुल्लक बाहुबली महाराज को लेने आए है।

फूल नीचे नहीं गिरा

आचार्य श्री देशभूषण महाराज जी की आज्ञा लेकर क्षुल्लक बाहुबली जी महाराज को ले गये। परन्तु उनकी तो बिल्कुल इच्छा नहीं थी फिर भी आचार्य श्री की आज्ञा होने से उन्हें जाना पड़ा वे वहां एक महीना रुके थे। एक महीने में मठ सम्बन्धी सभी ज्ञान भट्टारक जी ने दे दिया। देवेन्द्र कीर्ति महाराज बाहुबली महाराज पर बहुत खुश थे।

एक दिन देवेन्द्र कीर्ति जी ने मन में प्रश्न रखकर पद्मावती माता के मस्तक पर फूल चढ़ाया। फूल नीचे गिरा ही नहीं। देवेन्द्र कीर्ति जी निराश हो गए, क्योंकि वह प्रश्न क्षु० बाहुबली जी को भट्टारक बनाने का था। फूल नीचे नहीं गिरा इसलिए उनके प्रश्न का मनचाहा उत्तर नहीं मिला। बाहुबली महाराज को भट्टारक बनना ही नहीं था इसलिए फूल नीचे गिरा ही नहीं। मंजिल पर चढ़ने वाले नीचे कैसे उतरेगें?

जिनका संकल्प दृढ़ होता है वह कुछ भी करने में घबराते नहीं हैं और क्षु० बाहुबली तो थे त्याग की जीती जागती मूर्ति। अब तो वे निश्चित आगे बढ़ने लगे। नांदणी के जिनसेन भट्टारक जी तो अजितमती माताजी के परिचारक बनकर आए थे और माता जी से पहले चल बसे।

कुशल वैद्य

अजीतमती माताजी को यम सल्लेखना देने से पहले पंढरपूर और पूना के डॉक्टर वहां दर्शनार्थ आए थे। माताजी को देखते ही उनको लगा आज ही माताजी की समाधि हो जाएगी तो उन्होंने आचार्य श्री से कहा-'आप माताजी को यम सल्लेखना आज ही दे दीजिए क्योंकि उनका कोई भरोसा नहीं। शायद आज ही.....।' आचार्य श्री ने बहुत शान्त और गम्भीरता पूर्वक कहा-'आज तो हम माताजी को यम सल्लेखना नहीं देंगे, अभी तबियत ठीक हैं।'

डॉक्टर बोले-'नहीं, महाराज। आज की रात उनकी अंतिम रात हैं। अतः आप आज ही यम सल्लेखना दीजिए।'

आचार्य श्री बोले-'आज आप लोग यहीं रुकिए। माता जी की तबियत में थोड़ा भी फर्क दिखेगा तो हम यम सल्लेखना दे देंगे।' डॉक्टर उस दिन वहीं रुक गए। रात में बार-बार माता जी के कमरे के सामने से चक्कर काटने लगे। माता जी की तबियत अच्छी थी। सुबह होते ही डॉक्टर आचार्य श्री के पास पहुंचे और श्रद्धापूर्वक मस्तक झुकाकर बोले-'आचार्य देव। आप तो भव रोग वैद्य हो। हम तो शरीर रोग दूर करने वाले वैद्य है। इस बात की कल्पना हमें नही

आएगी। आप सचमुच कुशल वैद्य हो।' आचार्य श्री ने जैसा कहा था वैसा ही हो गया। माता जी को आर्यिका दीक्षा लिए 107 दिन हो गए। उस दिन आचार्य श्री ने उनकी स्वेच्छा से उन्हें यम सल्लेखना दे दी।

यम सल्लेखना के बाद आचार्य श्री माता जी को कैसा उपदेश देते थे, कैसे उत्साह बढ़ाते थे वह मैं उनके ही शब्दों में बता रही हूं। आचार्य श्री-'कार्य सिद्धि करने का यही समय हैं। आत्मा शाश्वत् है। वहीं उपयोग लगाना, अन्तिम समय पास में आया है।

श्वास श्वास में जिन भजो
वृथा श्वास मत खोय।
न जाने इस श्वास का,
फिर आना होय न होय॥

लक्ष्य है ना माता जी? (केवल इशारे से स्वीकृति दी)

आचार्य श्री-'संसार अनित्य हैं, तीर्थंकरों ने भी उसी का चिन्तन किया। एक आत्मा ध्रुव शाश्वत् स्वतन्त्र हैं। अन्य सब अनित्य है?

'शरण कौन'-आचार्य श्री।

माता जी-अपनी आत्मा ही।

आचार्य श्री-आप महामौनी हो। किसी से बात नहीं करना, केवल अपने से ही बात करना। व्यवहार से आप अरिहन्त सिद्ध की शरण में हो। यह रास्ता आपको किसने दिखाया?

माताजी-'शांति सागर महाराज जी ने।'

आचार्य श्री-'संसार बड़ा यमघाट-गुरू बिन कौन दिखावे बाँट। गुरूदेव ने संसार मायाजाल से ऊपर निकाला हैं अजित नाम धारण करने वाली आत्मा ने महान उच्च पद प्राप्त कर लिया हैं। सब भाविक लोग आपकी बड़ाई कर रहे है। दृढ़, श्रद्धा, कितना धैर्य, उज्जवल, चारित्र त्याग की महिमा अपरम्पार है, किसकी महिमा शुरू है?'

(हृदय की तरफ अंगुली दिखायी)

अरिहंत कौन?
क्षपक कौन? (हृदय की तरह अंगुली दिखायी)
सिद्ध कौन होगा?

आचार्य श्री-शिवपुरी का राजपुत्र कौन? (हाथ से-मैं)-आप अजितमती माताजी हो क्या? (हाथ से नकार) आत्मा का लिंग है क्या? (हाथ से नकार)-आप स्वयंभू हो, अजित वीर्य आपका नाम हैं। अभी हमारा यह मल्ल मैदान में आकर मृत्यु के साथ सामना कर रहा है। आप चार महीने से यमराज को बुला रही हो पर यमराज इस मल्ल से डर गया।'

माताजी ने दो-दो घण्टे के लिए वस्त्र का त्याग करना प्रारम्भ कर दिया। यम सल्लेखना के छटवें दिन थोड़ी तकलीफ होने लगी। अब आचार्य श्री का ज्यादा समय माता जी के पास ही बीतने लगा।

सिवनी से पं० सुमेर चन्द्र दिवाकर जी (चारित्र चक्रवर्ती ग्रन्थ के लेखक) का पत्र आया।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः सिवनी 5/3/91

तीन काल के जिनवरा, तीन काल के सिद्ध।
तीन काल के मुनिवरा, वंदो लोक प्रसिद्ध॥

प० पू० आचार्य बाहुबली महाराज जी तथा संघस्थ संयमी जनों को सविनय नमोऽस्तु।

समाधि निमग्न माता अजितमती को बारम्बार प्रणाम। महाराज जी आपका बड़ा भाग्य है कि आप माताजी की समाधि में सर्व प्रकार की सहायता प्रदान कर रहे है। माता जी का भी महान पुण्य हैं कि आपकी आत्मा को प्रकाश और प्रेरणा देने वाली आचार्य देव जैसी अद्‌भुत सामग्री प्राप्त हो गई है। प० पू० आचार्य श्री शांतिसागर महाराज की यह वाणी आपको अमृततुल्य होगी।

'बाबा मैं न काहूं का कोई नहीं मेरा रे। जीव अकेला आहे कोणी साथी नहीं' जीवोऽन्यः पुद्‌गलश्चान्यः। उसको सदा पढ़ना...............।

आचार्य श्री शांति सागर महाराज के गुरू ब्र० मुनि देवाप्पा स्वामी (देवेन्द्र कीर्ति) थे जिन्होनें मुनि दीक्षा भगवान के दीक्षा कल्याणक में जिनेश्वर से ली थी।

पंच परमेष्ठियों से प्रार्थना है कि समाधि निर्विघ्न हो। निर्विघ्न समाधि के लिए 'ॐ नमः सिद्धेभ्यः' मंत्र का सामूहिक रूप से जाप करें तो अच्छा होगा। कुंथलगिरि में आचार्य श्री के सल्लेखना के समय सब लोग मिलकर करते थे।

गुरु चरणों त्रिवार नमोऽस्तु॥

आर्यिका दीक्षा हुए आज 118 वां दिन था। माता जी ने पहले ही कह रखा था कि अंतिम समय में मेरे सामने आचार्य शांति सागर की फोटो एवं आचार्य श्री बाहुबली महाराज जी ही दिखने चाहिए। और वैसा ही हो गया। अन्तिम समय आचार्य श्री ही सामने थे और उन्हीं के मुख से णमोकार मंत्र सुनते-सुनते ध्यान मुद्रा में 4 बजे माताजी के प्राण पखेरू उड़ गए। उस दिन की भीड़ का वर्णन लेखनी से लिखा नहीं जा सकता। दहन क्रिया का कार्यक्रम विधि पूर्वक हो गया।

बारामती में चार महीने आचार्य श्री का वास्तव्य था। उस समय पूना निवासी पलसदेवकर श्री मोतीलाल शहा एवं सौ० स्नेहलता शहा ये दोनों पति पत्नी हमेशा आते जाते रहते थे। गुरूदेव पर उनकी अपार श्रद्धा थी। उनकी एक ही इच्छा हमेशा थी कि पू० आचार्य श्री का चातुर्मास अपने खेत में हो। वे रोज आचार्य श्री से प्रार्थना करते थे। हालांकि चातुर्मास अभी काफी समय दूर था इसलिए आचार्य श्री की सम्मति उन्हें नहीं मिल रही थी। बारामती में चिपरी के श्रावक पंचकल्याणक हेतु आमंत्रित करने आए। माताजी की समाधि होते ही वहां से आचार्य श्री का विहार कोल्हापुर की तरफ हो गया। पू० आचार्य श्री द्वारा चिपरी में मानस्तम्भ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव बड़ी प्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ।

तदंनतर आचार्य श्री विहार करते हुए तारदाल आ पहुंचे उसी दिन मोती लाल शहा पलसदेवकर अपने विशाल परिवार सहित वहां आए। चातुर्मास का नारियल आज अवश्य ही लेकर जाएंगे ऐसी शुभ भावना को लेकर वे आचार्य श्री के पास आए थे।

पलसदेव के रहने वाले श्रीमान मोती लाल शहा व्यापार के काम से पूना, सोलापुर आदि स्थानों में रहते थे। सोलापुर जिले के सेंदरी गांव के बाहर साठ एकड़ जमीन उनकी थी। वहां पर हरियाली प्रचुर मात्रा में होने से वहां रमणीय वातावरण लगता है। उनके चारों बेटे अपने-अपने व्यापार के कारण पंढ़रपुर सोलापुर, बम्बई, पूना आदि स्थानों में रहने लगे। वे सभी आचार्य श्री के चरणों में यहीं प्रार्थना कर रहे थे, 'गुरुदेव। इस वर्ष आपको हमारी झोली भरनी ही पड़ेगी।' उनकी भक्ति में इतनी शक्ति थी कि आचार्य श्री को चातुर्मास की स्वीकृति देनी ही पड़ी। चातुर्मास का नारियल पाकर वे आनन्दित हो गए।

पट्टणकोडोली की ओर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव हेतु आचार्य श्री ने संघ सहित विहार किया। इसी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में दो क्षुल्लक दीक्षाएं हुई। एक शिरढ़ोण निवासी भी भाऊसाहेब बडबड़े और दूसरे नांद्रे ब्रह्मचारी इन दोनों ने क्षुल्लक दीक्षा पाई। क्रमशः उनका नाम क्षु. चित्रगुप्त महाराज व क्षु० समाधि गुप्त महाराज रखा गया। प्रतिष्ठा होते ही आचार्य संघ आगे बढ़ा।

नवनिर्मित धर्मनगर क्षेत्र की भूमि पर आचार्य श्री का आगमन-18/6/91

आचार्य श्री इचलकरंजी पहुंचे। श्री आदिनाथ केटकाले के नवीन घर में आचार्य श्री का आहार हो गया। उसी दिन अर्थात् 18/6/91 के दिन चिपरी निवासी श्री वीरगोंडा पाटील वहां आए। उनको आचार्य श्री बुलडोजर कहकर पुकारते थे। क्योंकि पाटील साहब जो भी कार्य अपने हाथ में लेते उसे पूर्ण किए बिना नहीं छोड़ते अर्थात् वो कार्य पूर्ण करके ही दिखाते थे। आज वे नूतन क्षेत्र निर्माण करने सम्बन्धी विशेष बात बताने आचार्य श्री के पास आए थे। आहार के पश्चात् वो आचार्य श्री को नवनिर्मित होने वाले क्षेत्र की भूमि दिखाने हेतु ले गए। सांगली-कोल्हापुर हाइवे रोड़ पर, इचलकरन्जी से 10 कि०मी० और जयसिंगपुर से 6 कि०मी० पर यह स्थान सांगली मिरज से 20 कि० मी० कोल्हापुर से 30 कि०मी० इचलकरंजी फाटा के नजदीक ऐसे स्थान को देखकर आचार्य श्री को प्रसन्नता हुई। यह जमीन निमशिरगांव निवासी श्री रामू चौगुले (शैव धर्मीय) की थी। भूमि देखते ही आचार्य श्री के मानस पटल पर अनेकों विचार उमड़ आए। आज के भौतिक सुखवादियों को तीर्थ यात्रादि धार्मिक कार्यों में होने वाले कष्ट बड़े असहनीय लगते हैं। इसलिए आचार्य श्री ने हाइवे रोड पर ही नूतन क्षेत्र विकसित करने का विचार निश्चित कर लिया।

पू. आचार्य श्री ने प्रवचन में अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा- आजकल शहरों में अटैच सिस्टम चालू है। पहले लोग शौचादि के लिए जंगल में जाते थे। लेकिन अब दूर न जाकर घर में ही बाथरूप आदि अटैच कर लिए। उसी प्रकार आज के श्रावकों को रोड छोड़कर अन्दर यदि कोई धार्मिक क्षेत्र हो तो वहां जाने के भाव नहीं होते इसलिए हमने धर्म नगर क्षेत्र रोड पर ही अटैच कर दिया है जिससे आपको जिनदर्शन हेतु कष्ट न हो।

नूतन क्षेत्र का निर्माण

इतिहास का निर्माण वर्तमान के कार्यों से होता है। ये जिनालय आदि इतिहास की पृष्ठभूमि का निर्माण करेंगे।

संसार के समस्त प्राणियों की नीरोगता एवं कल्याण भावना से जिनका जीवन ओतप्रोत है ऐसे सर्वोदय तीर्थ के नेता आचार्यरत्न श्री 108 बाहुबली महाराज जी जहां भी अपने चरण कमल रखते हैं वहां की भूमि पावन आत्मा के जीवन की सुगन्ध से सुरभित हो जाती है और वह पिछड़ा हुआ स्थान विकसित हो जाता है। जिस भूमि पर इनके चरण पड़े वही भूमि धन्य हो उठी। नयी दिशा, नया निर्माण, नयी चेतना से सारी भूमि पवित्र हो जाती है।

आपके हृदय में धर्म और संस्कृति की रक्षा के प्रति जब-2 भावना आयी तब-2 आपके साहसिक कदम बढ़ाए और भक्तों के हाथ स्वतः सतकार्यों के लिए उठ गए। आचार्य श्री ने इस स्थान पर 'त्यागी तपोवन' बनाना अति आवश्यक समझा। भक्तों में ज्यों ही आपके अन्तःकरण की भावना ज्ञात हुई उन्होंने सहर्ष स्वीकृति देखकर लाखों रुपया इस शुभ कार्य में लगाकर पुण्यार्जन किया। वे भक्त भूतपूर्व संघपति जम्बूराव सौंदत्ते (क्षु. जिनचन्द्र महाराज) इनकी धर्मपत्नी एवं सुपुत्र, हुपरी निवासी गुरुभक्त श्रीमान आण्णा साहेब सेंडुरे व बाबूराव गाट, महावीर शंकर गाट आदि हैं। अपनी-2 शक्तिनुसार अनेकों श्रावकों ने दान देकर पुण्यार्जन किया।

नवनिर्माण क्षेत्र पर भगवान धर्मनाथ का आगमन

दिनांक 22.6.91 के दिन वह नव निर्माण जमीन क्षेत्र के लिए दी गई। 24 तारीख को सवा ग्यारह फुट ऊंची श्री 1008 धर्मनाथ तीर्थंकर जी की प्रतिमा का शिरदवाड से आगमन हुआ। भगवान श्री 1008 शान्तिनाथ भगवान की प्रतिष्ठित मूर्ति को नवनिर्मित क्षेत्र पर चिपरी से धर्मप्रभावना पूर्वक लाकर विराजमान किया गया।

भगवान शान्तिनाथ जी का महामस्तिकाभिषेक हुआ। निर्जर स्थान को एक चेतना प्राप्त हुई। प्रारम्भ में टीन व बांस की चटाई (टट्टे) की झोपड़ी बनाकर मूर्ति को विराजमान किया गया। आचार्य श्री व समस्त संघ कपड़े के टेन्ट में रहते थे। चौके वाले भी टट्टे (बांस) की झोपड़ी में रहकर ही आहारदान आदि करने लगे। बड़े-2 बंगलों में रहने वाले आनन्द से झोपड़ी में रहकर मुनिसंघ को आहार देकर सातिशय पुण्य कमा रहे थे।

नवनिर्माण क्षेत्र की नामकरण विधि 28.6.91

आचार्य श्री ने जैसे ही इस पावन भूमि पर पदार्पण किया, भूमि का भाग्य जाग उठा। आचार्य श्री के विचारों ने करवट ली। 28.6.91 को नियोजित स्थान पर 'श्री 1008 धर्मनाथ तीर्थंकर तीर्थ 'त्यागी तपोवन' और वृद्ध विश्राम धाम, कन्या विद्यालय, जीव रक्षा केन्द्र, धर्मलोक न्यायालय, ब्रह्मचारिणी आश्रम, अखिल भारतीय दिगम्बर जैन संस्था केन्द्र एवं धार्मिक तथा लौकिक शिक्षण केन्द्र 'धर्मनगर' त.-शिरोल जिला-कोल्हापुर इस नाम से क्षेत्र का नामकरण किया गया। जहां सभी को अकेले आने में डर लगता था वहां अब कोई डर नहीं। क्योंकि जंगल में मंगल हो गया।

आचार्य श्री का शेंदरी की ओर विहार होने से नवनिर्मित धर्मनगर क्षेत्र पर संघस्थ दो माताजी का चातुर्मास पक्का हो गया। माताजी की सारी व्यवस्था चिपरी, जयसिंगपुर आदि के भक्तों ने अपने ऊपर लीं। पू. आर्यिका मुक्तिलक्ष्मी माताजी एवं पू. आर्यिका निर्वाण लक्ष्मी माताजी को वहां छोड़कर आचार्य श्री का विहार हो गया।

आचार्य श्री विहर करते हुए पंढरपुर पहुंचे। पंढरपुर में आचार्य श्री के आगमन से एक प्रकार का नव चैतन्य जाग्रत हो गया। दो दिन में उनकी अद्भुत वाणी से प्रभावित होकर श्रावक जनों ने पू. आचार्य श्री से प्रार्थना की-'गुरुदेव! आपके ज्ञान रूपी गंगा की बाढ़ हमारे शहर में आयी है आंशिक रूप से हमको भी इसका लाभ हो। यही आपके चरणों में प्रार्थना करते हैं। श्रावकों की प्रबल भावना देखकर पू. आर्यिका शांतिमती माताजी व क्षुल्लिका सरस्वती माताजी को आचार्य श्री ने चातुर्मास हेतु आज्ञा दी।

शेंदरी चातुर्मास 1991

आचार्य संघ विहार करते हुए महातपुर पहुंचा। इस गांव में सारे घर जैन के ही हैं। कोई अजैन नहीं है। देहात होने से लोग भोले भाले तथा उनकी वेशभूषा साधारण थी। आचार्य श्री के आगमन से भरपूर धर्मप्रभावना हुई। धर्मप्रभावना

करते हुए संघ आगे बढ़ा आचार्य श्री ने ससंघ शेंदरी में पदार्पण किया। मोतीलाल पलसदेवकर जी का हृदय असीम आनन्द से भर गया। मोती बाग में आचार्य श्री के आगमन से नवप्रभात की नवकिरण का प्रकाश फैला।

25.7.91 को बड़ी धूमधाम से चातुर्मास कलश स्थापित हुआ। चातुर्मास में हजारों की संख्या में लोग आचार्य श्री की अमृतवाणी प्राशन करने के लिए आने लगे। आस-पड़ोस के लोग बैलगाड़ी, घोड़ागाड़ी लेकर दर्शनार्थ आते थे। इसी चातुर्मास के दरम्यान 11.10.91 को ब्र. सुरेखा की दीक्षा हुई। उन्होंने आर्यिका धर्मेश्वरी नाम पाया। दशलक्षण पर्व में अनेकों भाविकों ने उपवास किए।

श्रीमान मोतीलाल शहा और उनकी धर्मपत्नी सौ. स्नेहलता शहा, इन दोनों का आनन्द तो वर्णनातीत था। ये दोनों संघ सेवा में सतत् लगे रहते थे। पू. आचार्य श्री के चरण स्पर्श से वह भूमि पावन हो गयी। उन्हें भी आत्मसाधना के लिए बहुत अच्छा स्थान मिला। कभी-2 आचार्य श्री वहां से कुछ दूर छोटे-2 टीलों पर जाकर ध्यान करते थे जहां वे एकान्त रम्य निर्जन वन में शाश्वत आनन्द का अनुभव करते थे।

विविध कार्यक्रमों के साथ-2 वहां दक्षिण भारत जैन सभा का अधिवेशन भी हुआ। उस अधिवेशन में महाराष्ट्र, कर्नाटक के अनेकों प्रतिष्ठित भाविकों की उपस्थिति में महान विद्वानों के भाषण हुए। उसी समय एक अशिक्षित, अनपढ़ गुरुभक्त ने कहा-मैं भी कुछ शब्द बोलना चाहता हूं। वह व्यक्ति कोई और नहीं थे हुपरी के श्रीमान फक्कड़ गाट थे। उन्होंने अपने टूटे फूटे शब्दों में कहा-'मैं कोई वक्ता या नेता नहीं हूं, मैं तो एक साधारण सा अनपढ़ किसान हूं। मैं अंगूठा छाप वाला हूं गुरुदेव की कृपा से आपके समने खड़े होकर कुछ बोलनेका साहस जुटा पाया हूं।

बिना पेट्रोल की गाड़ी शुरू हो गई

मैं इन्दौर से हुपरी आ रहा था। उस समय रास्ते में हमारी गाड़ी बन्द हो गई। फिर मन में विचार आया कि कोई गाड़ी निकलेगी तो उससे पेट्रोल ले लेंगे। लेकिन दो घंटे तक कोई गाड़ी नहीं निकली। मैं परेशान हो गया। तभी मुझे नजरों के सामने मेरे गुरुदेव दिखाई दिए। उसी समय मैंने अपने तारण हारे गुरुदेव का नाम स्मरण किया। 'बोलो बाहुबली महाराज की जय' ऐसा बोलते ही गाड़ी शुरू हो गई और पेट्रोल पम्प पर जाकर ही रुकी। मेरी खुशी की कोई सीमा नहीं थी। उसी समय मैं गुरुदेव के चरणों में चला आया। गुरुदेव पर मेरी असीम श्रद्धा है। गुरुभक्त फक्कड़ गाट का भाषण सुनते ही तालियां बजीं और जय-जयकार से सारा सभा मण्डप गूंज उठा।

जिसके तप साधना की ज्योति से वातावरण ज्योतिर्मय हो गया उस व्यक्ति के व्यक्तित्व का क्या कहना? वही ज्योतिर्मान व्यक्तित्व पू. आचार्य श्री बाहुबली जी महाराज का था। कोई उन्हें त्याग मूर्ति कहता तो कोई उन्हें शान्तिमूर्ति। आचार्य श्री ने प्रवचनों द्वारा ज्ञान की किरणें विकीर्ण कर लोगों का अज्ञान तिमिर विछिन्न किया। वे प्रत्येक प्राणीके लिए आंखों में दया, वाणी में दया और व्यवहार में भी दया रखते थे। आचार्य श्री का समता आलोकमय व्यक्तित्व सन्मार्ग दिखाकर मिथ्याभ्रम में पड़े हुए व्यक्ति को सम्यक् दर्शन, ज्ञान और चारित्र की त्रिवेणी में अवगाहन कराकर उसकी आत्मा को ऊर्ध्वगामी बना सकता है।

अधिवेशन में फक्कड़ गाट की भोली भक्ति देखकर बेलगांव निवासी दक्षिण भारत जैन सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री चन्द्रकान्त कागवाड ने आचार्य श्री के बारे में कहा-'व्यक्तित्व के विकास की पूजा होती है। हां मनुष्य की नहीं मनुष्यता की पूजा होती है।' आचार्य श्री हमें बार-2 एक ही बात कहते हैं-'जीवन में कटु क्षणों को सहना सीखो, कहना नहीं।' उन्होंने हजारों लोगों के जीवन को रोशनी से जगमगाया। ज्ञान और वात्सल्य की जो धारा उन्होंने समाज में प्रवाहित की

वह सदैव फलदायिनी सिद्ध होती रहेगी। सभी के श्रद्धा केन्द्र आचार्य श्री बाहुबली महाराज जी के चरणों में कोटिशः नमन!

अधिवेशन होते ही श्रीमान चन्द्रकांत कागवाड़ बेलगांव जाने के लिए अपनी गाड़ी में बैठ गए। लेकिन गाड़ी चालू ही नहीं हो रही थी। तो उन्होंने भी गुरुभक्त फक्कड़ गाट के समान भक्ति भाव से गुरुदेव बाहुबली महाराज की जय लगाई। जयकारा होते ही गाड़ी शुरू हो गई सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। इन दोनों घटनाओं को सुनकर व देखकर जैन व जैनेत्तर व्यक्ति प्रभावित हुए।

शेंदरी में आचार्य श्री का केशलोंच था। मोतीलाल मामा को लगा- इतनी दूर ज्यादा लोग नहीं आएंगे इस हिसाब से उन्होंने छोटा पण्डाल लगवा दिया। दोपहर में जब आचार्य श्री का केशलोंच प्रारम्भ हुआ। उससमय इतनी भीड़ थी कि उस पण्डाल को लोगों ने उखाड़कर अलग कर दिया। जिस मंच में आचार्य श्री बैठे थे वह टीन का था। चारों तरफ से लोगों को केशलोंच दिखाई न देने से भक्तों ने चहुं ओर लगी हुई टीनों को निकालकर रख दिया। जब सभी को पू. आचार्य श्री का दर्शन हुआ तभी सब शान्त बैठे। मोतीलाल जी का सारा परिवार उस दिन लोगों की भोजन व्यवस्था में ही लगा था तो भी व्यवस्था नहीं हो पा रही थी। चारों तरफ मनुष्य ही मनुष्य नजर आ रहे थे। गाड़ियों का तो कुछ हिसाब ही नहीं था।

पू. आचार्य श्री तो एक कल्पवृक्ष के समान ही हैं। वृक्ष पर अनेक टहनियां, पत्ते होते हैं। तरह-2 के पक्षी उस पर बैठकर चहचहाते हैं, कुदकते-फुदकते हैं, घोंसले बनाते हैं, उसके फल भी खाते हैं, मनुष्य भी उसकी छाया में सुख का अनुभव करते हैं। जिसकी आंच से खाना पकाकर अपने और बच्चों की उदरपूर्ति करते हैं उससे लाभान्वित होते हैं। मैं समझती हूं। पू. आचार्य श्री का जीवन एक ऐसा ही वृक्ष है जिससे सभी लोग बिना किसी भेदभाव सुख शान्ति का लाभ उठाते हैं। पू. आचार्य श्री की वात्सल्यता तो सभी जीवों का स्वागत करती है। जैन नहीं जैनेत्तरों के लिए भी सदैव उनका द्वार खुला है। सचमुच आचार्य श्री सारे समाज को प्रकाशित करने वाले धर्म सूर्य हैं।

कुंथलगिरी सिद्धक्षेत्र

चातुर्मास होते ही 25 अक्टूबर के दिन श्री सिद्धक्षेत्र कुंथलगिरी की ओर आचार्य श्री का विहार हो गया। कुंथलगिरी एक पावन सिद्धक्षेत्र है। यहां से बाल ब्रह्मचारी यतिराज श्री देशभूषण व कुलभूषण जी मुक्ति पधारे। यहां दोनों यति राजों की खड्गासन मंगल मूर्तियां भक्त के हृदय में भक्ति के अंकुर जाग्रत करती हैं। 10 नवम्बर को आचार्य संघ कुंथलगिरी पहुंचा। सर्वसंघ ने निर्विघ्न पर्वतराज की वंदना की। यही वह पावन तीर्थराज है, जहां से पावन युग में मुनिचर्या के सच्चे पथ प्रदर्शक मुनि पुंगव ऋषिराज आचार्य प्रवर शान्तिसागर जी महाराज ने सल्लेखना धारण कर स्वर्गारोहरण किया। भगवान कुलभूषण व देशभूषण के चरणों के समीप बैठकर आचार्य संघ ने स्तुति वन्दना आदि की। पंचमृताभिषेक हुआ और इसी में ब्र. सरिता बहन ने ब्रह्मचर्य सप्तम प्रतिमा धारण की और ब्र. समीक्षा बहन ने तीसरी प्रतिमा धारण की। वहां दो तीन दिन रहकर पंढरपुर मार्ग से आचार्य श्री धर्मनगर की ओर आए।

नूतन क्षेत्र धर्मनगर में आगमन

दिनांक 22.11.91 को पू. आचार्य संघ का धर्मनगर क्षेत्र में सानन्द आगमन हुआ। आचार्य श्री के चरण कमल उस क्षेत्र पर पड़ते ही धर्मरूपी वर्षा होने लगी। 9.12.91 को जिस स्थान पर भगवान 1008 धर्मनाथ तीर्थंकर को जहां विराजमान

करना था उसी स्थान में भूमि पूजन व नींव खुदाई का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। यह शुभारम्भ गुरुभक्त श्री आण्णासाहेब शेंडुरे व बाबूराव गाट इनके शुभ हाथों से किया गया। उस पावन भूमि की खुदाई गुरुभक्तों ने सोने की छोटी कुल्हाड़ी से की। तदनन्तर कल्याण मंदिर, कलिकुण्ड पार्श्वनाथ आदि अनेक विधान इसी स्थान पर सम्पन्न हुए।

धर्मनगर में आर्यिका दीक्षा-11.12.91

नवनिर्मित क्षेत्र पर प्रथम आर्यिका दीक्षा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। दीक्षा के पहले दिन गणधर वलय विधान एवं दीक्षार्थी ब्र. सरिता बहिन का भव्य जुलूस निकला। दीक्षार्थी को शृंगारित करके हाथी पर बिठाया गया। आजू बाजू के परिसर में धर्मवात्सल्य लोग दीक्षा देखने के लिए उपस्थित थे। पूरी धर्मनगरी सजाई गई। उस समय वहां किसी की इमारत वगैरह नहीं थी। घासफूस की झोपड़ी में श्रावक आहार दान आदि देकर सच्चा आनन्द लुटा रहे थे।

11 दिसम्बर को सुबह मंगल स्नान करके दीक्षार्थी को मंच पर लाया गया। जहां पर पूरा संघ विराजमान था। दीक्षा का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। प्रथम दीक्षार्थी सरिता बहिन ने आचार्य श्री से विनम्रता पूर्वक दीक्षा प्रदान करने की प्रार्थना की। गुरुदेव का आदेश पाकर दीक्षार्थी ने वैराग्यमयी सारगर्भित वचनों से खचाखच भरी जनता को उद्बोधित किया। तदुपरान्त शृंगारित अवस्था में दीक्षार्थी ने हवा में उड़ने वाले केशों का लुंचन करना प्रारम्भ किया। कोमल शरीर होने से पूरा चेहरा म्लान हो गया।

केशलोंच पूर्ण होते ही सभी आभूषण का त्याग किया और श्वेत वस्त्र पहन लिए, महाश्वेता बनने के लिए स्त्रीलिंग छेदने के लिए। तदनंतर आचार्य श्री ने महाव्रत के संस्कार कर उन्हें आर्यिका दीक्षा प्रदान की। ब्र. सरिता देखते-2 महाव्रती आर्यिका सुज्ञानी माताजी बन गईं।

शिलान्यास समारोह

शिलान्यास कार्यक्रम के तहत 12 दिसम्बर को सौ. पुष्पावती बी. पाटील बम्बई के द्वारा ऋषि मण्डल विधान, 13 दिसम्बर को नवग्रह विधान, 14 दिसम्बर को सोनुबाई जम्बूराव सौदत्ते भोज द्वारा शिलान्यास समारोह सम्पन्न हुआ। 15 दिसम्बर को सौ. विजया राव साहेब पाटील कुरूंदवाड और बम्बई निवासी श्री गुणवन्त राय के द्वारा मंत्रराज णमोकार मंत्र विधान सम्पन्न हुआ।

आचार्य श्री का जन्मदिन समारोह एवं मुनिदीक्षा 16 दिसम्बर 1991

16 दिसम्बर सबके हृदय पटल खोलने का दिन यानि आचार्यरत्न बाहुबली मुनि पुंगव का 60वां जन्मदिन। सारे धर्मनगर में रोशनी ही रोशनी। तोरणद्वार, वन्दनवार आदि से धर्मनगर सजाया गया। प्रातः शहनाई बैंडबाजों से धर्मनगर गूंज उठा। 60 लोगों के हाथों में 60 धर्मध्वजा, 60 सुहागिन महिलाओं के हाथों में 60 मंगल कलश शोभायमान हो रहे थे। 60 महिलाओं व पुरुषों द्वारा आचार्य श्री की आरती की गई। मंगल कलश से पाद प्रक्षालन किया गया। 60 प्रकार के व्यंजनों से भरी 60 थालियों द्वारा आचार्य श्री के चरणों में अर्घ चढ़ाया गया। सभी भक्तगण मंगलगीत, काव्य सुमनांजलि समर्पित कर रहे थे।

श्रावक गिनते एक-एक दिन
आचार्य श्री का आया जन्म दिन
नाचे धरती नाचे अम्बर
कहते आया सोलह दिसम्बर।

अनेकों विद्वानों द्वारा आचार्य श्री के जीवन पर व्याख्यान हुए और उसी दिन द्वय मुनि दीक्षा सम्पन्न हुई।

द्वय मुनि दीक्षा

आचार्य श्री के प्रथम शिष्य ऐलक श्री शान्ति सिंधु महाराज जी की एवं काव्यभूषण क्षुल्लक श्री विद्याभूषण जी की मुनि दीक्षा हुई। शान्ति सिन्धु जी का जैसा नाम वैसा काम। शांत प्रकृति वाले महान तत्वज्ञानी, निरतिचार चारित्र पालन में दक्ष, बोलना भी बहुत कम। इसी कारण तो आचार्य जी ने उनका नाम शान्ति सिन्धु रखा। विद्या भूषण मुनिराज की काव्य रचना उत्तम है इसलिए आचार्य श्री ने उन्हें काव्य भूषण पद से अलंकृत किया।

शान्ति सिन्धु थे बड़े गम्भीर
शान्त रह के चलाते तीर
विद्या भूषण की कलम वाचाल
बनाती सुन्दर शब्दों का जाल
शिष्यों की प्रकृति को देख
आचार्य श्री ने नाम दिए
दोनों ने नामों के अनुकूल
धर्म समर्पित काम किए।

आचार्य श्री ने अपने प्रवचन में कहा-'इस मुनिधर्म का पालन करना बच्चों का खेल नहीं है। मुनिधर्म अत्यन्त कठिन है प्राणों की भी आशा छोड़कर मुनिपद अंगीकार किया जाता है। जब भी इस धर्म का पालन असम्भव हो जाए तब समाधि मरण करना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है।

कर्मों की निर्जरा करना मुनि जीवन का ध्येय है। मुनिपद को धारण किए बिना कर्मों की निर्जरा नहीं होती। गृहस्थ जीवन में सदा बंध का बोझा बढ़ता जाता है। उसके पास कर्म निर्जरा के साधन नहीं हैं। इसलिए निर्जरा के लिए त्यागी बनना आवश्यक है।

आचार्य श्री की उत्स्फूर्त प्रेरणा से श्री आण्णा साहेब शेंडुरे, बाबूराव गाट हुपरी निवासी, इनके द्वारा धर्मनाथ वेदी की नींव भरने का कार्यक्रम 12 जनवरी 1992 के दिन सम्पन्न हुआ। वहां का कार्य तीव्र गति से प्रारम्भ हुआ। आचार्य श्री की बस एक ही तमन्ना थी वेदी पर भगवान धर्मनाथ जल्दी विराजमान हो जाएं। अतः वे वहीं रहकर तप साधन करने लगे।

अष्टान्हिका महापर्व में सिद्धचक्र विधान

अष्टमी से लेकर पूर्णिमा तक यह पर्व मनाने के कारण इसे अष्टान्हिका पर्व कहते हैं। इस पर्व में आठवें नंदीश्वर द्वीप के 52 जिन चैत्यालयों की प्रतिकृति बनाकर भक्तगण यहां अकृत्रिम चैत्यालय स्थित कर भगवान की पूजा करते हैं। नंदीश्वर द्वीप में साक्षात् देवगण जाकर ही पूजा करते हैं। महान पुण्य बंध कमाते हैं।

फाल्गुन मास आते ही आचार्य श्री का मन मयूर विधान करने के लिए उत्साहित हो गया। आचार्य श्री मन में विचार कर रहे थे कि इस विधान का मुख्य इन्द्र किसे बनाया जाये। इतने में ही इचलकरन्जी निवासी गुणधर उपाध्ये सामने आ गए। उन्हें देख आचार्य श्री सहज ही बोल उठे-'सिद्धचक्र विधान के इन्द्र आ गए।' श्री गुणधर उपाध्ये भी सहर्ष इन्द्र बनने को तैयार हो गए। वे गुरु आज्ञा को शिरसावंद्य मान लिये।

आर्यिका सुज्ञानी माताजी की दीक्षा में इन्होंने ही पिछी कमण्डलु एवं शास्त्र दान की बोली लेकर पुण्यार्जन किया था। आठ दिन बड़े उत्साह पूर्वक भगवान की आराधना करके श्री गुणधर उपाध्ये ने अपूर्व पुण्य बंध कमाया।

क्षु. जिनचन्द्र महाराज जी की समाधि

विधान होने के कुछ दिन पश्चात् क्षु. जिनचन्द्र महाराज जी की तबियत एकदम बिगड़ गई। उन्हें लकवा का अटैक आ गया। आचार्य श्री ने उन्हें नियम सल्लेखना दे दी इसलिए 6 महीने आचार्य श्री का वास्तव्य धर्मनगर में ही था। परन्तु कुछ समय पश्चात् उन्होंने विहार करने का विचार किया। धर्मनगर में हमें दोनों माता जी (आर्यिका श्रुतदेवी माताजी व आर्यिका सुज्ञानी माताजी) व क्षु. देवपुत्र महाराज जी को उनकी सेवा में रखकर वे कुरूंदवाड चले गए। दोपहर में भगवती आराधना का स्वाध्याय चालू था जिसका विषय था-'महाव्रत बिना मोक्ष नहीं....।' ये वाक्य बार-2 उन्हें मुनि दीक्षा लेने के लिए प्रेरित करने लगे। क्षुल्लक जी ने मुझसे कहा-'मुझे मुनि दीक्षा चाहिए।' मैंने उन्हे समझाया-'गुरुदेव को आने दो वही तुम्हें मुनि दीक्षा देंगे।'

एक दिन अचानक सुबह-2 अभिषेक होते ही उन्हें अटैक की हिचकी आई। णमोकार मंत्र का जाप करते-2 ही पिंजड़े से पंछी उड़ गया। उत्तम प्रकार से उनका समाधि मरण हो गया।

फूल खिला तो मुरझाएगा
घड़ा टूट मिट्टी बन जाएगा
पैदा हुआ जो मर जाएगा
त्यागी मर के अमर कहलाएगा।

धर्मनगर में चातुर्मास 1992

नूतन क्षेत्र में देवशास्त्र गुरु निवास का कार्य तीव्रता से चालू था। त्रिवेणी संगम का कार्य शीघ्रता से सम्पन्न हो इसके लिए धर्मनगर के सभी ट्रस्टियों ने आचार्य श्री से चातुर्मास हेतु प्रार्थना की। उनकी प्रबल भावना देखकर आचार्य श्री ने सम्मति दे दी।

आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को आचार्य श्री ने संघ सहित चातुर्मास की प्रतिष्ठापना रात्रि आठ बजे की। कलश स्थापना के दिन इचलकरन्जी, जयसिंगपुर, सांगली, चिपरी, निमाशिरगांव आदि के श्रावकगण उपस्थित थे।

आगत समाज को सम्बोधित करते हुए आचार्य श्री ने कहा-'सिंह चार माह के लिए पिंजड़े में बन्द हो गए। बंधुओं दिगम्बर साधु की सिंह वृति होती है। जिस तरह सिंह पिंजड़े में रहना पसन्द नहीं करता उसी तरह दिगम्बर साधु भी स्वतन्त्र विचरण करते हुए निःशंक रहते हैं। चातुर्मास आते ही चार महीने सभी साधुवर्ग पिंजड़े में बन्द हो जाते हैं।

चातुर्मास धर्म प्रभावना पूर्वक चालू था। आस पास के गांव शहर के पुण्यात्माओं ने बहती हुई धर्म गंगा में डुबकी लगाकर जीवन पवित्र किया। भगवान धर्मनाथ तीर्थंकर प्रतिष्ठा महोत्सव करने का प्रस्ताव पू० आचार्य ने समाज के समक्ष रखा। पंच कल्याणिक की तैयारी शुरू हो गई।

धर्मनगर में पंचकल्याणक हेतु सौधर्म इन्द्र का अन्वेषण

भगवान धर्मनाथ तीर्थंकर प्रतिष्ठा महोत्सव का शुभ महूर्त देखकर आचार्य श्री ने पंचकल्याणिक की तारीख निश्चित कर दी। सौधर्म इन्द्र की बोली की भी तारीख निश्चित हो गई। पत्रिका के द्वारा सभी को आमन्त्रण पहुंच गया। 13 अगस्त से 16 अगस्त 1992 तक चार दिन विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। 13 तारीख को श्री भक्तामरजी का चौबीस घण्टे का अखण्ड पाठ 14 तारीख को मंत्रराज णमोकार मंत्र का चौबीस घण्टे अखण्डपाठ, पन्द्रह तारीख को विघ्नहर श्री ऋषि मण्डल मंत्र का चौबीस घण्टे अखण्ड पाठ और 16 अगस्त को तीस चौबीसी विधान एवं सौधर्म इन्द्र की बोली का कार्यक्रम रखा गया।

तीन दिन विविध मंत्रों की अखण्ड आराधना के बाद 16 तारीख की प्रतीक्षा थी। मंगल दिन की शुभ बेला में हजारों लोग उपस्थित थे। कई लोग सौधर्म इन्द्र बनने की भावना मन में संजोकर लाए थे। बंधुओं! भावना ही भव नाश करती है और भावना ही संसार बढ़ाती है। इन्द्र बनने के भाव सभी के थे लेकिन सौधर्म इन्द्र का पद किसी एक को ही मिलने वाला था।

बोली शुरू हुई। सभी श्रावक अपने भाव व्यक्त कर रहे थे। बोलियां बढ़ा रहे थे। आखिर जिनका तीव्र पुण्य का उदय होगा बोली उसी को मिलेगी। अन्त में इचलकरन्जी निवासी भाग्यवंत श्रावक श्री गुणधर उपाध्ये एवं उनकी धर्मपत्नी सौ. शोभा उपाध्ये इन्हें सौधर्म पद मिल गया। बोली होते ही पू. आचार्य श्री का प्रवचन हुआ। उन्होंने अपने प्रवचन में एक दृष्टान्त बताते हुए कहा-

'सुलोचना का स्वयंवर मंडप रचा था उस मण्डप में भरत चक्रवर्ती के पुत्र अर्क कीर्ति, सेनापति जयकुमार और सभी देशों के राजा-महाराजा स्वयंवर के लिए आए थे। सुलोचना किसके गले में माला डालेगी यह प्रश्न सबके मन में चुभ रहा था। इसका उत्तर यही है कि जिसका पुण्य बलवान होगा उसी के गले में वह माला आएगी। चक्रवर्ती के पुत्र अर्ककीर्ति को गर्व आ गया कि मैं चक्रवर्ती का पुत्र हूं। सुलोचना सभी राजाओं को देखते हुए आगे बढ़ी और अर्ककीर्ति को देखकर भी आगे बढ़ गई। अन्त में उनके सेनापति जयकुमार के गले में माला डाल दी। सभी देखते रह गए। यहां भी एक से बढ़कर एक सेठ आए थे। लेकिन कष्ट उठाकर धनोपार्जन करने वाले पुण्यवान श्रावक श्री गुणधर उपाध्ये के गले में पुण्य रूपी माला पड़ गयी।'

प्रवचन के पश्चात् सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी को हाथी पर बिठाकर भव्य जुलुस निकाला गया। आगे पंचकल्याणिक की तैयारियां शुरू हो गईं। पुण्य पुरुषों पर कुछ न कुछ विघ्न उपसर्ग आते ही रहते हैं। लेकिन पुण्य पुरुष उस तरफ बिल्कुल भी ध्यान नहीं देते। प्रद्युम्न कुमार को मारने के लिए, नीचे गिराने के लिए उनके भाई ने बहुत प्रयत्न किया। परन्तु वह कुप्रयत्न सफल नहीं हो पाया। पुण्य पुरुष उस उपसर्ग से चमक जाता है जैसे सुवर्ण को अग्नि ताप देने से चमक आती है। उसी प्रकार धर्मनगर के अधिनेता आचार्य श्री के जीवन में अनेक उपसर्ग विघ्न आए तो भी वे आगे बढ़ते गए। आचार्य श्री की तपस्या के आगे विघ्नों की कुछ नहीं चली।

दमकता है सोना तपने के बाद।
रंग लाती है मेंहदी घिसने के बाद॥
चमकता है हीरा तरशने के बाद।
रंग लाता है जीवन उपसर्ग के बाद॥

धर्मनगर में तेरह दिन का भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सन् 1993

धर्मनगर में कई दिनों पहले से पंचकल्याणिक महोत्सव की तैयारी शुरू हो गई। हर जगह उत्साह ही उत्साह। प्रत्येक स्थान पर पंचकल्याणक महोत्सव पांच, सात या नौ दिन तक ही है। परन्तु धर्मनाथ भगवान का दरबार तो तेरह दिन तक भरने वाला था। तेरह दिन माने तेरह प्रकार के चारित्र के ही द्योतक थे।

25 जनवरी से 6 फरवरी तक होने वाली प्रतिष्ठा सबके हृदय पटल खोलने वाली थी। 'पदम नन्दी पंचविंशतिका' ग्रन्थ में श्री पदम नन्दी आचार्य ने लिखा है-

बिम्बादलोन्नतियवोन्नतिमेव भक्त्या
ये कारयन्ति जिनसद्म जिनाकृतिं वा
पुण्यं तदीयमिह वागपि नैव शक्ता,
स्तोतुं परस्तु किमु कारयितुं द्वयस्य॥20॥

भव्य जीव इस संसार में भक्तिपूर्वक यदि छोटे से छोटे बिम्ब, पत्ते के समान जिन मंदिर तथा यव के समान जिन प्रतिमा को भी बनवाएं तो उस मनुष्य को भी इतने अधिक पुण्य की प्राप्ति होती है कि साक्षात् सरस्वती भी उसका वर्णन नहीं कर सकतीं। किन्तु जो मनुष्य ऊंचे-2जिनमंदिर तथा जिन प्रतिमाओं का निर्माण कराने वाले हैं उनको तो फिर अगम्य पुण्य की प्राप्ति होती है।

परमपूज्य आचार्य श्री करुणा मूर्ति हैं आचार्य श्री ने अपनी अनुकम्पा से असंख्य जीवों का उपचार कर उनका दुःख दूर किया है उन्हें सन्मार्ग दिखाया है। आपने जैन-अजैन बन्धुओं में कृपा प्रसाद लुटाया है तथा जैन तीर्थों का जीर्णोद्धार, जिनवाणी का प्रचार-प्रसार करवाकर जैन संस्कृति का जो उद्धार किया है इसके लिए जैन संस्कृति आपकी ऋणी है।

भव्य पंचकल्याणक सन् 1993

25 जनवरी का दिन उदित हुआ। 25 से 30 जनवरी 1993 तक अंकुरारोपण, वृहत् शान्ति आराधना, नवग्रह होम, ध्वजारोहण, महायाग मण्डलाराधना, भद्र कुम्भ लाना, कुबेर के द्वारा रत्नवृष्टि आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री कल्लाप्पा आवाडे (भूतपूर्व उद्योग राज्यमंत्री, खासदार) थे। उन्हीं के द्वारा पंचकल्याणिक का ध्वजारोहण किया गया। बड़े-2 प्रतिष्ठित लोग आकर भेंट देने लगे। श्रीमान कल्लाप्पाण्णा आवाडे तो मुख्य थे ही, पर प्रकाश आवाडे (वस्त्रोद्योग मंत्री जी) मा. सरोजनी खंजिरे, शामराव पाटील, देशभक्त रत्नाप्पा कुंभार, पी.बी. पाटील, रावसाहेब मनेरे वकील सोलापुर के डॉ. श्री राव साहेब पाटील, निर्मल कुमार फडकुले, शिवाजी राव भोंसले, दक्षिण भारत जैन सभा के अध्यक्ष-उपाध्यक्ष सदस्य आदि सब लोग पुण्य सम्पादन करने के लिए इस महोत्सव में शामिल थे।

पु. आचार्य श्री बाहुबली जी महाराज की प्रेरणा से नवनिर्मित देव शास्त्र गुरु निवास, धर्मनगर (महाराष्ट्र)
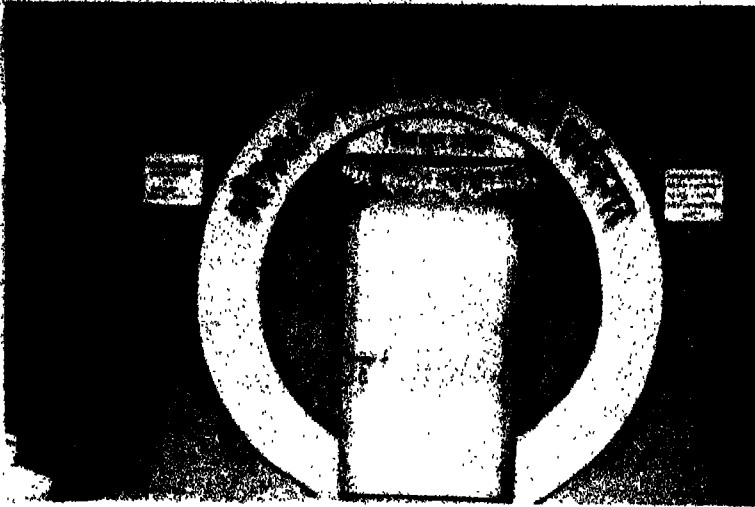
धर्मनगर में जिनश्रुत शास्त्र भांडार
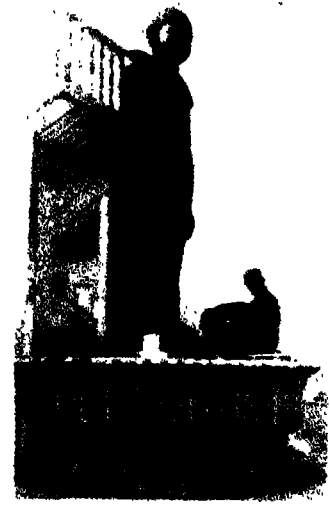
प्रथम देव वंदना करते हुए पु. आचार्यश्री

धर्मनगर में देवशास्त्र गुरु निवास के प्रांगण में पु. आचार्य श्री स्वाध्याय करते हुए

धर्मनगर में धर्मवात्सल्य महाज्योत

लक्षदीपोत्सव के समय धर्मनगर में आरती के शुभ अवसर पर पू. आचार्य श्री संघ सहित मंगल आशीर्वाद देते हुए

अष्टाह्निक कन्याओं ने, ज्ञान का दीप जलाया।
साक्षात् प्रभु के चरणों में, अनुपम आनंद पाया।।

जंगल में मंगल करने वाले बाबा पू. आचार्यश्री आशीर्वाद देते हुए

पू. आचार्यश्री का विशाल संघ

पू. गुरुदेव श्री के पावन हस्त कमल
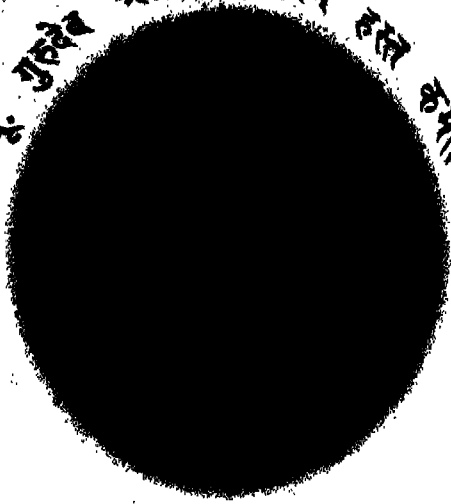
अभय-आशीष सदा दिया है, गुरु हाथों ने जीवों को।
इन्हीं करों ने दिया सहारा, तरनेवाले भव्यों को।।

पू. गुरुदेव श्री के पवित्र चरण कमल
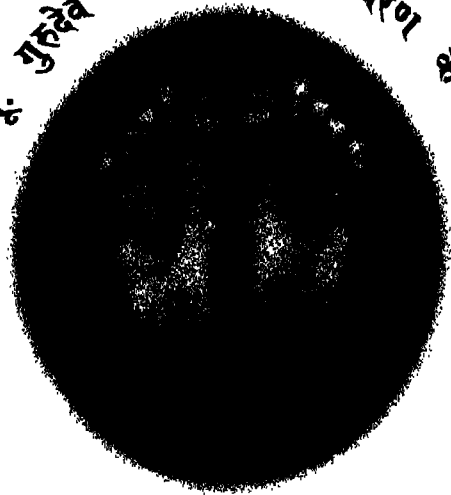
जहाँ गुरुवर चरण है रखते, जंगल में मंगल हो जाय।
किस्मत भी उनकी बदली, जिनको चरणन रज मिल जाय।।

संयमोपकरण पिछी
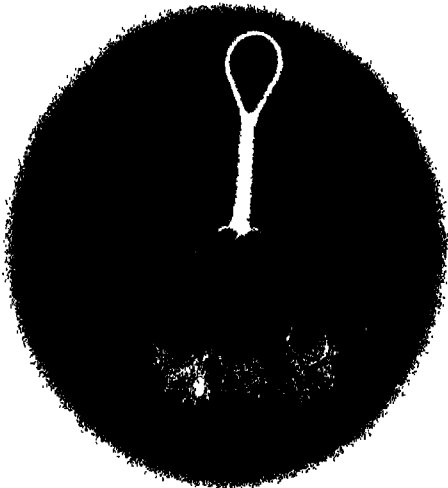
मयुर पंख की बनी पिच्छिका, कितनी सुन्दर लगती है।
गुरु हाथों में थम जाये जब, दया क्षमा बरसती है।।

शौचोपकरण कमंडलु
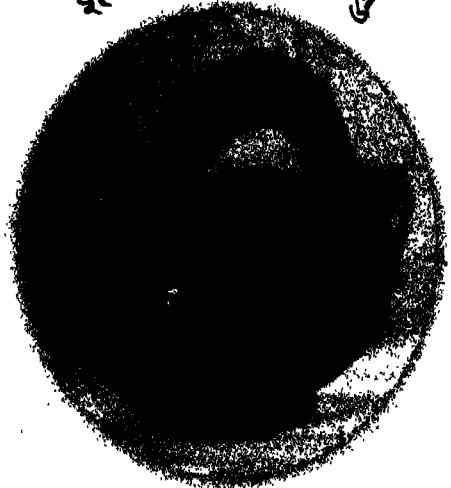
शुद्धि का उपकरण अनूठा, कमण्डलु यह कहलाता।
तन मैल हटे मन मैल मिटे, तन-मन यह शुद्ध करा जाता।।

गर्भ कल्याण 31 जनवरी 1993

धर्मनाथ भगवान की जननी (सुप्रभा) के गर्भ में आने के छहमाह पूर्व से ही इस वसुन्धरा में भावी तीर्थंकर के मंगलमय आगमन की महत्ता को सूचित करने वाले अनेक शुभ कार्य यहां सम्पन्न हुए।

धर्मनगर की रचना सौधर्म इन्द्र की आज्ञानुसार कुबेर ने स्वर्गपुरी के समान रत्नपुरी नगरी की रचना की थी। सौधर्म इन्द्र (गुणधर उपाध्ये) की यह इच्छा थी कि धर्मनगर में स्वर्ग की प्रतिकृति होनी चाहिए। इसलिए एक मंच पर स्वर्ग की रचना की गई। मंच के दूसरी तरफ सुरेन्द्र भवन से स्पर्धा करने वाला महाराज भानुराज के निवासार्थ नरेन्द्र भवन की रचना की गई। उसकी दीवारों में अनेक प्रकारके दीप्तिमान मणि लगे थे। स्वर्णमय स्तम्भ के समलंकृत तथा पुष्प, मुक्तादि की मालाओं से शोभायमान था। कुबेर के द्वारा धर्मनगर में अर्थात रत्नपुरी में प्रभात, मध्यान्ह, सायंकाल तथा मध्यरात्रि में चार बार साढ़े तीन करोड़ रत्नों की वर्षा होती थी। कुबेर का पद श्रीमान भरत ध. मेलवंके बम्बई वालों ने पाया था और धर्मनाथ तीर्थंकर के माता-पिता का पद श्रीमान तेजराज एवं सौ. राजकुमारी बोहरा इचलकरन्जी निवासीने लिया था। माता की सेवा स्वर्ग से आयी हुई अष्टादिक कन्या एवं छप्पन कुमारिकाएं कर रही थीं।

धर्मनगर में सोलह स्वप्न दर्शन

प्रत्येक जिनेन्द्र जननी सोलह स्वप्नों को रात्रि के अन्तिम प्रहर में देखती हैं। धर्मनगर में आचार्य श्री की प्रेरणा से सोलह स्वप्न की जीवन्त प्रतिकृति करके सभी को दर्शाया गया। खचाखच भरे पण्डाल में सोयी हुई माता रात्रि के अन्तिम प्रहर में सोलह स्वप्न देखने लगी। स्वप्न देखने के पश्चात् तीर्थंकर के पिता उसका फल बताते हैं। उस दिन ऐसा लग रहा था जैसे सभी धर्मनगर में न होकर रत्नपुरी में है

शची का अद्भुत सौभाग्य

त्रिलोक सार में लिखा है कि सौधर्म स्वर्ग के इन्द्र और इन्द्राणी वहां से चलकर एक मनुष्य भव धारण करके मोक्ष को प्राप्त करते हैं। सौधर्मेन्द्र तो साधिक दो सागर प्रमाण देवायु पूर्ण होने के पश्चात् मनुष्य होकर मोक्ष पाता है किन्तु उसकी पट्ट देवी शची-इन्द्राणी पचपन पल्य प्रमाण आयु को भोग मनुष्य होकर शीघ्र मोक्ष जाती है। सागर प्रमाण स्थिति के सामने पचपन पल्य की आयु बहुत ही कम है। इन्द्राणी के शीघ्र मोक्ष जाने के कारण यह प्रतीत होता है कि जिनमाता और प्रभु इन दोनों की सेवा का अपूर्व तथा उत्कृष्ट सौभाग्य उसे प्राप्त होता है। लौकान्तिक देव की पदवी महान है। उनकी स्थिति आठ सागर है सर्वार्थ सिद्धि के देव लोकोत्तर हैं। इतने लम्बे काल के पश्चात् उन महान देवों को मोक्ष का लाभ मिलता है। शची का भाग्य सचमुच में अद्भुत है, कारण स्त्रीलिंग छेदकर वह शीघ्र निर्वाण को प्राप्त करती है। जिनेन्द्र भगवान की भक्ति का प्रत्यक्ष उदाहरण इन्द्राणी है।

जन्मकल्याणिक

प्राची के गर्भ में स्थित सूर्य सदृश जननी के गर्भ में वे धर्मसूर्य जिनेन्द्र भव्यों को अधिक हर्ष प्रदान कर रहे थे। किन्तु जिस समय प्रभु का जन्म हुआ, उस समय के आनन्द और शान्ति का वर्णन कौन कर सकता है?

शीघ्र ही तीन लोक के स्वामी तीर्थंकर का जन्म जानकर देवों की सात प्रकार की सेना सौधर्म महाराज की आज्ञा से निकली। पण्डाल के ऊपर एक झूला बंधा था। सभी इन्द्रगण उसमें बैठकर भूतल पर आये। तब प्रेक्षक वर्ग को ऐसा

लगा मानों सचमुच स्वर्ग से ही इन्द्र प्रधार रहे है। सौधर्म इन्द्र ने ऐरावत-हाथी पर शची के साथ बैठकर अनेक देवो से समलंकृत हो रत्न पुरी के लिए प्रस्थान किया। इन्द्र रत्नपुरी आ पहुंचे।

शची द्वारा जिनेन्द्र चन्द्र का दर्शन

शची ने सुरराज की आज्ञा का पालन करते हुए उस नरेन्द्र भवन के अन्तःपुर में प्रवेश किया और माता सुप्रभा के आंचल के भीतर विद्यमान बालस्वरूप जिनेन्द्र चन्द्र का दर्शन किया। उस समय इन्द्राणी के हृदय के आनन्द का वर्णन उन्हें ही मालूम है जिन्होंने धर्मनगर में आकर प्रत्यक्ष देखा। शची ने बाल जिनेन्द्र सहित माता को बड़े प्रेम, ममता, श्रद्धा तथा भक्तिपूर्वक देखा। भगवान और माता की तीन प्रदक्षिणा के पश्चात् त्रिभुवन के नाथ को बड़ी भक्ति से प्रणाम किया। जिनमाता की स्तुति की और माता को मायामयी निद्रा में निमग्न कर उनकी गोद में मायामयी शिशु को रखकर शची ने जगद्गुरु को अपने हाथों में उठाया और परम आनन्द को प्राप्त किया।

इन्द्राणी ने प्रभु को बड़े आदरपूर्वक लेकर इन्द्र को देने के लिए प्रसव मन्दिर से बाहर पैर रखा। उस समय भगवान के सामने अष्ट मंगल द्रव्य धारण करने वाली अष्टादिक कन्या चल रही थी। बाहर सौधर्म इन्द्र शची देवी की प्रतीक्षा कर रहा था, इतना आकुलित हो रहा था कि उसका वर्णन इस जिव्हा से नहीं किया जा सकता। इन्द्राणी ने बाल जिनेन्द्र को इन्द्र के करतल में विराजमान कर दिया। प्रभु की अनुपम सौन्दर्य पूर्ण मनोज्ञ छवि का दर्शन कर सुरराज ने सहस्त्र नेत्र बनाकर अपने आश्चर्य चकित अन्तःकरण को तृप्त करने का प्रयत्न किया।

पाठकगण, आपको बताना मैं भूल ही गई कि सबसे ज्यादा आनन्द किसे हुआ था आपको पता हैं? अरे सबसे ज्यादा आनन्द तो धर्मनगर के बाबा आचार्य रत्न बाहुबली महाराज जी को ही हुआ था। आचार्य श्री स्वयं जय जयकार लगा रहे थे। भगवान को अपनी गोद में लेकर सुरराज ऐरावत हाथी पर विराजमान हुए। ईशान इन्द्र धवल वर्ण का छत्र लगाए अन्य इन्द्रगण चमर ढुरा रहे थे। इस लोकोत्तर दृश्य की कृत्रिम रचना ही जब हृदय में पीयूष धारा प्रवाहित करती हैं जब उसके साक्षात् दर्शन से जीवों की क्या मनास्थिति हुई होगी?

सुमेरू की ओर प्रस्थान

शास्त्रों में सुमेरू पर्वत का वर्णन तो है पर धर्मनगर में जो सुमेरू पर्वत बना था वह भी विशाल था। 51 फुट ऊंची पाण्डुक शिला सबका मन मोह रही थी। उसके सोपान पंक्ति कृत्रिम नील मणियों से निर्मित शोभायमान हो रही थी। एक हजार आठ इन्द्र पंक्ति बद्ध खडे हुए थे। आचार्य श्री भी उनके साथ-साथ थे। सुमेरू पर्वत के चारों ओर नीचे क्षीर सागर बनाया गया था।

सौधर्म इन्द्र मेरू पर्वत के शिखर पर पहुंच गए। बड़े प्रेम से सुरराज ने मेरू की प्रदक्षिणा की। और पाण्डुक वन की ईशान्य दिशा में स्थित पाण्डुक शिला पर भगवान को विराजमान किया।

जन्माभिषेक

सभी देवगण जन्मोत्सव द्वारा जन्म सफल करने हेतु पाण्डुक शिला को घेरकर बैठ गए। सौधर्म इन्द्र ने अभिषेक के लिए प्रथम कलश उठाया। ईशान्य इन्द्र ने सघन चन्दन से चर्चित दूसरा पूर्ण कलश उठाया। इसके पश्चात् सभी देवगणों ने कलश उठाया।

सौधर्म इन्द्र ने जय-जयकार करते हुए प्रभु के मस्तक परप्रथम ही जलधारा छोड़ी और सम्पूर्ण धर्मनगर को पवित्र कर दिया। त्रिलोक चूड़ामणि जिनेन्द्र का जन्माभिषेक होने के पश्चात इन्द्राणी ने बाल जिनेन्द्र को स्वर्ग से लाए हुए विविध आभूषणों तथा वस्त्रादि से समलंकृत किया। और प्रभू को ऐरावत गज पर-विराजमान कर रत्नपुरी लाए। इन्द्र ने जब भक्ति के रस में निमग्न होकर ताण्डव नृत्य किया, उस समय का शोभा तथा आनन्द अवर्णनीय था।

राज्याभिषेक

धर्मनगर में राज्याभिषेक दो दिन चला। भगवान के राज्याभिषेक के लिए श्रावकों ने राजा की वेशभूषा धारण करके भगवान के चरणों का अभिषेक किया। किसी ने कमल पत्र के बने हुए दोने से, किसी ने मृत्तिका पात्र से सरयू का जल लेकर चरणाभिषेक किया। पहले तीर्थजल से, पश्चात् कषाय जल से और अन्त में सुगन्धित जल द्वारा अभिषेक सम्पन्न किया।

अभिषेक के पश्चात् भगवान को आभूषण वस्त्र आदि से अलंकृत किया गया। भगवान को राज सिंहासन पर विराजमान कर उनके मस्तक पर राजमुकुट चढ़ाए। सभी श्रावक राजा बनकर भगवान के दरबार में बैठे थे। उस समय संसार भर का सन्ताप दूर हो गया। केवल ज्ञान की उत्पति रूपी महान वायु के द्वारा तीनों लोकों में हलचल मच गई।

उस समय कल्पवासी देवों के यहां घंटानाद, ज्योतिषी देवो के यहां सिंहनाद, व्यंतरों के यहां मेघ गर्जना सदृश नगाड़ों की ध्वनि तथा भवनवासी देवो के यहां शंख ध्वनि हो रही थी। 'विष्टाराण्य मरेशानां आसनैः प्रचकांपिरे' समस्त इन्द्रों के आसन बड़े जोर से कम्पित हुए। धर्मनगर में सभी प्रकार के दृश्यों को दर्शाया गया।

प्रातः केवल ज्ञान के संस्कार का समय था। आचार्य श्री धर्मनाथ भगवान के ऊपर सूर्यमंत्र के संस्कार आरोपित करने लगे और इतर मुनिराज छोटे-छोटे मूर्तियों पर संस्कार करने लगे।

सौधर्म इन्द्र ने भगवान के केवल ज्ञानोत्पत्ति का वृतांत अवगत कर परम हर्ष को प्राप्त किया। सौधर्मेन्द्र अनेक देवों के साथ भगवान के केवलज्ञान की पूजा के लिए निकले। कुबेर ने इन्द्र की आज्ञा से भगवान की धर्मसभा अर्थात् समवशरण की अद्‌भुत रचना की थी। सौधर्मेन्द्र आदि ने समवशरण में प्रवेश किया। उनके आनन्द का पारावार नहीं था। आज समवशरण में विराजमान भगवान का दर्शन कर उस सुरराज को बड़ा हर्ष हुआ। वह धन्य हो गया। इन्द्र ने खड़े होकर बड़े सन्तोष के साथ अपने हाथों से गंध, पुष्प माला, धूप, दीप, दिव्य अक्षत तथा उत्कृष्ट अमृत पिण्डों से जिनेन्द्र भगवान के चरणों की पूजा की। धर्मनगर के सौधर्मेन्द्र ने तो गुड़ की बड़ी भेली ही उठाकर भगवान के चरणों में अर्पण की। पू० आचार्य श्री की प्रेरणा से श्री विहार के लिए नवीन रथ बनाया गया। उसी रथ में प्रभू को बिठाकर बिहार हुआ। हेलीकॉप्टर द्वारा पुष्प वृष्टि हुई। इस विशाल जुलूस में चार हाथी दो ऊंट, ग्यारह घोड़े, अनेक प्रकार के वाद्य थे। जो श्री विहार की शोभा बढ़ा रहे थे। लाखों लोगों ने इस जुलूस में सम्मिलित होकर पुण्य कमाया।

भगवान की दिव्य ध्वनि कल्पवृक्ष तुल्य प्रतीत होती है। कल्पवृक्ष से इच्छित वस्तुओं की प्राप्ति होती है। इसी प्रकार इस दिव्य वाणी के द्वारा आत्मा की समस्त कामनाओं की पूर्ति होती है। भगवान ने भव्यरूपी कमलों के कल्याणार्थ विहार प्रारम्भ किया। त्रिलोकी नाथ धर्मचक्र के स्वामी समवशरण लक्ष्मी से शोभायमान धर्मनाथ तीर्थंकर ने अधर्म पर विजय प्राप्त की। भगवान के विहार से त्रिविध सन्ताप अर्थात् जन्म-जरा-मरण रूपी सन्ताप दूर हो जाते हैं।

निर्वाण कल्याणक

जीवन में मोक्ष प्राप्ति से बढ़कर कुछ भी श्रेष्ठ नहीं हो सकता है। वह अवस्था आत्मगुणों का चिन्तन करते हुए जीवन को उज्जवल बनाने की प्रेरणा प्रदान करती है।

भगवान तो कर्मों का विनाश होते ही सिद्ध परमात्मा हो गए। भगवान के निर्वाण होने की वार्ता विदित कर इन्द्र निर्वाण-कल्याणक की विधि सम्पन्न करने के लिए वहां आए और निर्वाणोत्सव किया।

जैसे चतुर्थकाल में तीर्थंकरों के साक्षात् पंचकल्याणक होते थे। उसी प्रकार इस विशाल पंचकल्याणक में भी यथोक्त विधिवत् सर्व क्रिया सम्पन्न हुई। श्री 1008 कलशों से अभिषेक हुआ। इस प्रकार बड़े उत्साह और आनन्द के साथ इस पावन क्षेत्र धर्मनगर में प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ।

बेलगांव चातुर्मास-1993

बेलगांव एक ऐसी धार्मिक नगरी है जहां के श्रावकों में गुरूभक्ति असीम है। पिछले दो तीन साल से वहां के श्रावक चातुर्मास हेतु प्रयत्न कर रहे थे। वे प्रतिवर्ष आते लेकिन आचार्य श्री की स्वीकृति दूसरे भक्तों को ही मिल जाती। जब शेंदरी चातुर्मास निश्चित हो गया। उस समय बेलगांव निवासी अनन्य गुरूभक्त श्री जयपाल आपण्णावर ने आचार्य श्री से एक नियम लिया कि 'जब तक आपका चातुर्मास हमारे बेलगांव में नहीं होगा' तब तक हमारे लिए चावल का त्याग है।'

वे अपने नियम से बद्ध रहे। बेलगांव चातुर्मास निश्चित होने के बाद ही उन्होंने चावल खाना शुरू किया। धर्मनगर में सभी श्रावकगण आए। बेलगांव की ओर आचार्य संघ का विहार हुआ। इस मंगल विहार में श्री आपण्णावर ही धर्म ध्वजा लेकर सबसे आगे थे। गांव-गांव में आचार्य संघ का भव्य स्वागत किया गया। बेलगांव में विशाल संघ का आगमन पुष्प वृष्टि के साथ हुआ। पूरा नगर सजाया गया। श्रावकों का आनन्द द्विगुणित हो गया।

बेलगांव में जो आया संघ,
पुलकित हो गया हर एक मन।
आचार्य संघ पर फूलों की वर्षा हुई,
सारे नगर में दिवाली मनी॥

चातुर्मास में अनेक प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। हिंडलगा जेल में कैदियों को उपदेश देने हतु आचार्य श्री का विहार हुआ। महिला मण्डल के द्वारा सर्वतोभद्र विधान विशेष धर्म प्रभावना पूर्वक सम्पन्न हुआ। चातुर्मास होते ही समवशरण का विघटन हो गया।

कुरूंदवाड चातुर्मास-1994

सन् 1977 के बाद कुरूंदवाड के श्रावकों को पुनः चातुर्मास का अवसर प्राप्त हुआ। इस चातुर्मास के दरम्यान तरुण वर्ग को विशेष धर्मज्ञान प्राप्त हुआ। आचार्य श्री की प्रेरणा से सांस्कृतिक मंगल धाम का निर्माण हुआ। पू० आचार्य श्री की प्रेरणा से ही कुरूंदवाड में प्रतिवर्ष आज भी व्याख्यान माला का कार्यक्रम शुरू है।

चातुर्मास के दरम्यान ही आचार्य श्री के मन में एक नवीन कल्पना जाग्रत हुई। धर्मनगर क्षेत्र में पौष शुक्ल पक्ष में पांच तीर्थंकर के नौ कल्याणक हेतु विविध विधि विधान व लक्ष दीपोत्सव कार्यक्रम के साथ ही श्री 1008 धर्मनाथ

तीर्थंकर का द्वितीय वार्षिक महोत्सव। कार्यक्रम की तारीख निश्चित हो गई। आचार्य श्री के मन में जो भी विचार आता उसकी कार्य रूप में तत्काल परिणति हो जाती है।

चातुर्मास होते ही श्री आचार्य संघ का विहार हुआ। शिरढोण इचलकरन्जी होते हुए आचार्य संघ रूई आ गया। वहां पर एक श्राविका को आचार्य श्री ने नियम सल्लेखना का व्रत दिया। दो दिन के बाद आचार्य श्री का धर्मनगर में आगमन हुआ।

अहिंसामयी लक्षदीपोत्सव व विविध विधान

1 जनवरी से 16 जनवरी 1995 पूज्य आचार्य श्री के आर्शीवाद एवं प्रेरणा से 16 दिन के विशाल कार्यक्रम की शुरूआत ध्वजारोहण से हुई। प्रतिदिन दो तीन गांव के लोग आकर विधान धर्म-प्रभावना पूर्वक करते थे। बैंड झांज पथक की ध्वनि से सारा धर्मनगर गूंज उठा।

क्षण-क्षण में उत्कंठा बढ़ाने वाला लक्ष दीपोत्सव का कार्यक्रम देखने के लिए आतुरित हुआ समाज राह देख रहा था। 16 तारीख का दिन उदित हुआ। चारों ओर खुशहाली ही खुशहाली। प्रातःकाल की शुभ बेला में कार्यक्रम की शुरूआत हुई। मध्यान्ह में भव्य रथोत्सव का कार्यक्रम होने के बाद दीपोत्सव की तैयारियां शुरू हुई। इस कार्यक्रम में राज्यमंत्री श्री प्रकाश आवाडे, खासदार श्री कल्लाप्पाण्णा आवाडे श्रीमती इन्दुमती आवाडे, माननीय शामराव पाटील आदि प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे।

लक्ष्य दीपोत्सव प्रज्जवलित होने के समय काले-काले बादल छाने लगे। सभी की दृष्टि मेघराज की ओर थी सभी को यही लग रहा था कि यदि बरसात आ गई तो सभी के आनन्द पर पानी पड़ जाएगा। सभी के मुख पर एक बात थी कि कार्यक्रम जल्दी शुरू करो। जिन आराधक मेघराजा चारों दिशाओं में 10-10 कि०मी० के अन्तर पर वर्षा कर रहा था। दीपोत्सव के समय आकाश स्वच्छ था। श्री 1008 धर्मनाथ भगवान के दोनों तरफ स्वर्ग की दिव्याकृति तैयार की गई। दोनों बाजू में 20-20 स्वर्ग अप्सरायें आरती लेकर खड़ी थी और भगवान के चारों तरफ इन्द्र परिवार था। स्वर्ग के समान दिव्याकृति देखकर सारा समाज अंचभित हो गया। हेलीकॉप्टर से भगवान के ऊपर पुष्पवृष्टि की गई।

दीपोत्सव होने में थी देर
बादल करते घन-घन शोर
सब लोगों को चिन्ता भारी
व्यर्थ न हो जाए मेहनत सारी
तभी अचम्भा हुआ तत्काल
पल में हो गया मौसम साफ
खुशी-खुशी दीपोत्सव मना
मानो स्वर्ग का प्रतिबिम्ब हो बना।
बाद में रिमझिम बरसात हुई।
उससे धर्म प्रभावना ही बढ़ी।

विश्व में प्रथम ही अद्वितीय लक्ष दीपोत्सव का कार्यक्रम अद्‌भुत धर्म प्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ। और आचार्य श्री का स्वप्न साकार हुआ। भगवान धर्मनाथ के सामने महाज्योत, धर्मज्योत, केवलज्ञान ज्योत प्रज्जवलित करते समय सारा समाज आनन्द का आस्वाद ले रहा था। ज्योत प्रज्जवलित होते ही आचार्य श्री की जय जयकार से पूरा धर्मनगर गूंज उठा। सूर्य प्रकाश को लजाने वाला, सांयकाल 7 बजे लक्षदीप का प्रकाश सभी के हृदय को प्रकाशित कर रहा था। दीपोत्सव होने के बाद रिमझिम बरसात शुरू हुई। लोग खुशी से झूम रहे थे आरती कर रहे थे। सभी सोच रहे थे कि बारिश की फुहारों में भी ये दीप कैसे जल रहे है। हवा लगने पर भी दीप क्यों नहीं बुझे? ऐसे चमत्कार को देख कर सभी को समझ आ गया कि संकट में पड़े हुए महात्मा गांधी कहते थे-'अहिंसा अमर है। अहिंसा अमर है। अहिंसा अमर है।' अग्निकुण्ड में प्रवेश करने वाली सीताजी कह रही थी कि-शील पवित्र है। शील पवित्र है। शील पवित्र है। निसर्ग रूप से जल वृष्टि होने के बाद तीव्रता से बहने वाली हवा में भी जलने वाले दीप कह रहे थे-'बाहुबली जी पवित्र है। महान है। आचार्य श्री जी पवित्र है। धर्मनगर पवित्र है। पवित्र है।'

उस दिन एक विशेषता थी कि पंढरपुर, फलटण, बारामती आदि शहरों से आने वाले श्रावक, जयसिंगपुर सांगली पर्यन्तपूर्ण मूसलाधार बरसात में ही आ गए। जयसिंगपुर के बाद एक भी बूंद बारिस नहीं थी। बाकी चारों तरफ जोरदार बरसात थी। सिर्फ धर्मनगर में ही बरसात नहीं थी। ये चमत्कार नहीं तो क्या है। सचमुच इसमें पूज्य आचार्य श्री की तत्पश्चर्या का महत्व दिखाई देता है।

पू० आचार्य श्री की ततपश्चर्या के प्रताप से ही धर्मनगर शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की तरह वृद्धिगंत हो रहा है।

श्रवण बेलगोला की ओर प्रस्थान-27 जनवरी 1995

लक्षदीपोत्सव कार्यक्रम होते ही आचार्य श्री ने 27 जनवरी 1995 को ससंघ श्रवण बेलगोला की ओर विहार प्रारम्भ किया। संघ की व्यवस्था बम्बई निवासी श्री धन्यकुमार मेलवंके और श्री आण्णा कोले आदि ने की। चौबीसवें दिन संघ सभी क्षेत्रों के दर्शन करते हुए श्रवण बेलगोला पहुंच गया।

भट्टारक श्री कर्मयोगी चारू कीर्ति जी के द्वारा आचार्य श्री का भव्य स्वागत

आचार्य संघ श्रवण बेलगोला के पास (अरसिकेरी गांव में) पहुंचते ही श्रवण बेलगोला के भट्टारक श्री कर्मयोगी चारू कीर्ति महास्वामी आचार्य श्री के दर्शनार्थ आए। और शीघ्र ही वहां आने हेतु आमन्त्रण दिया।

आचार्य संघ का सुबह 9 बजे श्रवण बेलगोला क्षेत्र में आगमन हुआ। भट्टारक जी गांव के बाहर हाथी व बैंड बाजे सहित स्वयं आचार्य संघ के स्वागतार्थ आए। आचार्यश्री को त्रिवार नमोऽस्तु कर श्रवण बेलगोला में प्रवेश की नम्र विनती की। आचार्य महाराज संघ सहित सभी जिन मंदिरों का दर्शन करके निवास स्थान में आए। तदनन्तर जिनेन्द्र भगवान का पंचामृताभिषेक हुआ। अभिषेक होते ही आचार्य संघ आहार चर्यार्थ निकला। आहार होते ही आचार्य श्री संघ सहित गोम्मट स्वामी के वन्दनार्थ निकले। वहां स्तुति स्तवन ध्यानादि के पश्चात श्री गामेटेश्वर भगवान का महा मस्ताभिषेक हुआ। पूरा संघ आनन्द विभोर हो गया। चिक्कवेट्ट, दोड्ड बेट्ट सभी जिनमंदिरों के दर्शन वंदन स्तवन पूजन कर संघ का विहार धर्मस्थल की ओर हुआ। चारू कीर्ति स्वामी जी तो आचार्य श्री से प्रार्थना कर रहे थे-आप एक महीना यही रहो परन्तु आगे आचार्य श्री के अधिनेतृत्व में महाराष्ट्र में पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएं थी। इस हेतु पुनः आचार्य श्री का विहार हुआ। विहार करते-करते संघ धर्मस्थल पहुंचा।

धर्मस्थल में वीरेन्द्र हेगडे के द्वारा भव्य स्वागत

आचार्य श्री जैसे ही धर्मस्थल के नजदीक पहुंचे वैसे ही श्रीमान् वीरेन्द्र हेगडे जी दौड़े-दौड़े आए। भक्तिभाव से गुरू वंदना करके धर्मस्थल आने हेतु आमंत्रण दिया। तत्पश्चात् श्री हेगडे जी ने द्वय हाथी से भव्य स्वागत किया दोनों हाथियों ने आचार्य श्री की तीन परिक्रमा देकर सूंड में भरे हुए कलश से आचार्य श्री के चरण प्रक्षाल की।

वाद्य सहित भव्य आगमन हुआ। प्रथम गोम्मट स्वामी जी के दर्शन करके चन्द्र प्रभु मंदिर की धर्मशाला में संघ ठहरा। रत्नाम्मा हेगडे ने भी स्वयं चौंका लगाया। लेकिन अन्तराय कर्म के उदय से उस दिन आचार्य श्री को अन्तराय आ गया। श्री वीरेन्द्र हेगडे ने यह बात समझते ही आचार्य श्री को आगे विहार करने से रोक दिया।

श्री वीरेन्द्र हेगड़े को 'चक्रवर्ती' पद प्रदान

श्री हेगड़े जी को अत्यंत जरूरी काम से कहीं जाना था लेकिन पू० आचार्य श्री जी का अन्तराय होने से दूसरे दिन बाहर जाने से इन्कार कर दिया। दोनों पति पत्नी और उनकी माता ने मिलकर चौका लगाया। आहार के समय हेगड़े जी शुद्धि का पानी ले आए। और पड़गाहन हेतु घर के सामने खड़े हो गए। उस समय ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे श्रेणिक राजा और महाराणी चेलना भगवान महावीर को पड़गा रहे हैं। दोनों विनम्रता पूर्वक पड़गाहन करके आचार्य श्री को भोजन शाला में ले आए। उस दिन आहार निरन्तराय हो गया। हेगड़े परिवार के मुख पर प्रसन्नता थी। मध्यान्ह समय में आचार्य श्री ने अपने प्रवचन में कहा-श्रीमान हेगड़े जी आज के 'चक्रवर्ती है।' वास्तव में हेगड़े जी चक्रवर्ती के समान ही सभी को नित्य किमिच्छक दान देते है। आचार्य श्री को उन्होंने अपनी भोजन शाला (अन्नपूर्णा) दिखाई। जहां प्रतिदिन तीन चार हजार लोग भोजन करते है। वस्तु संग्राहलय आदि भी वहां प्रसिद्ध है। आचार्य संघ का धर्मस्थल से विहार हुआ।

भट्टारक श्री चारू कीर्ति के द्वारा भव्य स्वागत मुडबिद्रि

आचार्य श्री संघ सहित वरांग, कारकल आदि क्षेत्रों के दर्शनार्थ वहां आए। कारकल में श्री ललित कीर्ति भट्टारक जी विद्यमान थे। वहां के दर्शन कर मुडबिद्रि क्षेत्र पर आचार्य श्री का आगमन हुआ। श्री चारू कीर्ति भट्टारक जी ने भव्य स्वागत किया। मुडबिद्रि में एक हजार खम्भों का विशाल जिनमंदिर सिद्धान्त दर्शन आदि प्रसिद्ध है। सारे मंदिरों के दर्शन कर आचार्य संघ आगे बढ़ा।

मनोहर कुंदादि बेट्ट

कुंदादि बेट्ट बहुत ही मनोहर क्षेत्र है। इस क्षेत्र में दर्शनार्थ जाते समय थोड़ी सी देर हो गई थी। पर्वत ऊँचा था आचार्य श्री आगे चले गए थे। संघस्थ कुछ त्यागी बीच के ही रास्ते से पर्वत पर चढ़ गए। लेकिन रास्ता ही नहीं मिला। सभी नीचे आ गए। और पुनः पर्वत पर चढ़ना प्रारम्भ किया। चढ़ते-चढ़ते शाम हो गई। सभी त्यागियों को थके हारे देखकर आचार्य श्री ने वहीं रुकने का निर्णय किया। घना जंगल देखकर-सभी श्रावकों ने आचार्य श्री से कहा-'यहां रात में जंगली जानवर घूमते-रहते है, आप यहां कैसे रहेगें?' आचार्य श्री ने कहा-'हमें किस बात का भय। वे प्राणी भी हमारे जैसे है अगर हम उनका कुछ नहीं बिगाड़ेंगे तो वे भी हमें कुछ नहीं करेगें। आज हमें भी तो तपस्या करने का मौका मिला है।

वहां पर्वत पर एक जिन मंदिर था, जिसमें दरवाजे खिड़कियां कुछ भी नहीं थी। लाइट भी नहीं थी। संयोगवश एक शीशी में थोड़ा सा तेल था। और वहीं पर थोड़ा सा कपास था। एक श्रावक ने दीपक जलाकर भगवान के सामने रख दिया। रात भर दीपक जलता रहा। सुबह 6 बजे तक दीपक का पूरा तेल समाप्त हो गया। और सूर्य का प्रकाश फैल गया। रात में न चटाई थी न ही पाटा। आचार्य श्री सहित पूरा संघ भगवान का ध्यान, जप आदि करता रहा। पूरी रात भगवान की आराधना करने में निकल गई। पार्श्व प्रभू के चरणों में आचार्य श्री जी पार्श्व बनने में ध्यानस्थ थे। सभी त्यागियों के सिर पर आचार्य श्री रूपी निर्भय छत्र होने से किसी को भी डर नहीं लगा।

सुबह-सुबह जब बाहर आए तो सभी जगह कोहरा छाया हुआ था। सुबह चार बजे आचार्य श्री ने घण्टा बजाने के लिए कहा। श्रावकों ने जैसे ही घण्टा बजाना प्रारम्भ किया वैसे ही नीचे धर्मशाला में सोए हुए श्रावक घबराकर उठ गए। इतनी जल्दी घण्टा क्यों बज रहा हैं, कहीं आचार्य संघ पर कोई संकट तो नहीं आ गया। अनेक प्रकार की शंका कुंशका मन में उठने लगी। संघ को कुछ न हो इसलिए सभी महामंत्र का जाप करने लगे। सुबह भागते-भागते कुछ श्रावक पर्वत पर आए प्रत्यक्ष आचार्य संघ का दर्शन करने के बाद ही उन्हें शान्ति मिली।

सुबह 6 बजे के बाद देवदर्शन करके जब पूरा संघ नीचे आने के लिए निकला तो उस समय का वातावरण देखकर-ऐसा लग रहा था मानो स्वर्ग में आ गए हो। कुंदाद्रि बेट्ट के दर्शन से सभी का मन प्रसन्न हो गया। तदन्तर हुम्बुज की ओर विहार हुआ।

होम्बुज के श्री देवेन्द्र कीर्ति भट्टारक जी द्वारा स्वागत

होम्बुज पहुंचते ही श्री देवेन्द्र कीर्ति जी ने आचार्य संघ का भव्य स्वागत किया। वहां पर पद्मावती माता जी की महत्ता अधिक है। स्वयं देवेन्द्र कीर्ति जी ने सिद्धान्त दर्शन के बारे में बताया। जिनदत्त श्रेष्ठी की कथा बताई। दो दिन रहकर संघ वहां से रवाना हुआ। विहार करते-करते कोल्हापुर जिले में एक छोटा सा गांव तिलवणी जहां पंचकल्याणक प्रतिष्ठा थी वहां आचार्य संघ पहुंचा। तिलवणी जैसे छोटे गांव की जनता ने संघ का स्वागत किया।

तिलवणी मे भव्य पंचकल्याणक एवं उपाध्याय पद प्रदान

आचार्य संघ का आगमन होते ही सारे श्रावकों में एक विशेष प्रकार का उत्साह था। बड़ी ही धूमधाम से पंचकल्याणिक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। इसी महोत्सव में संघस्थ त्यागी मुनि श्री अर्हद बली महाराज जी को पू० आचार्य श्री जी ने प्रवचन परमेष्ठी व मुनि श्री शांति सिंधु जी को 'उपाध्याय' पदवी प्रदान की। यथा गुण तथा नाम के अनुसार ही आचार्य श्री ने उन्हें योग्य पद दिया।

एक सौ आठ फुट ऊंचा तीर्थंकर स्तूप भूमिपूजन 10 मई 1995

पू० आचार्य श्री के मन में 108 फुट उत्तुंग तीर्थंकर स्तूप निर्माण करने का विचार आया। तत्काल ही कार्य की शुरूआत 10 मई 1995 को हुई। पू० आचार्य श्री के सानिध्य में ही दिव्य तथा भव्य स्तूप की भूमि पूजन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इस स्तूप में श्री 1008 भगवान आदिनाथ, भगवान चन्द्रप्रभु, भगवान शांतिनाथ तथा भगवान महावीर की सवा पांच फुट ऊंची गुलाबी प्रतिमाएं स्थापित होने वाली है। सभी को इन प्रतिमाओं के आसानी से दर्शन हो इसके लिए लिफ्ट आदि की भी व्यवस्था की जाने वाली है। धर्मनगर का परिसर पू० आचार्य श्री की प्रेरणा से नन्दनवन के रूप में बदल गया।

मंत्री श्री कल्लाप्पाण्णा आवाडे जी केवलज्ञान की ज्योत प्रज्वलित करते हुए
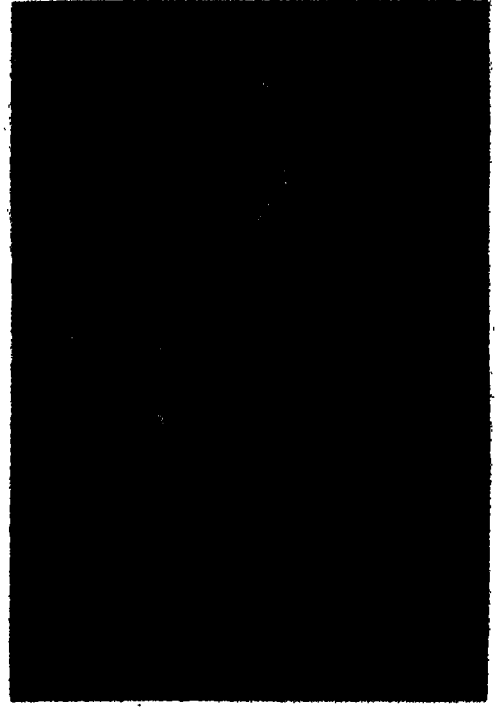
विहार करते हुए पू. आचार्य श्री
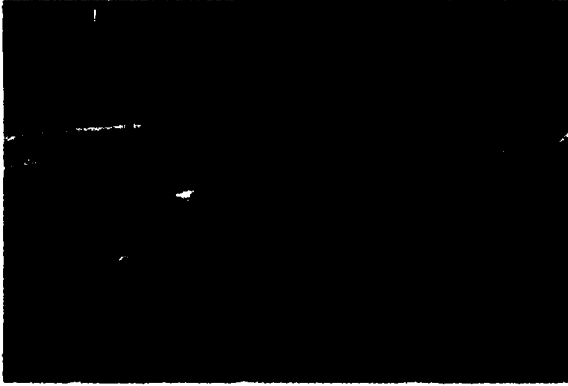
दि. 16/01/95 के दिन लक्ष दीप के युगपत प्रकाश से धर्मनगर जगमगा उठा और पू. आचार्य श्री का सपना साकार हुआ।

धर्मनगर में रचा विधान, लाख दीप जलवाये थे।
आंधी चली अति तेज गति से, पर दीपक बुझ न पाये थे।।

पू. आचार्य श्री अपने संघ सहित श्रवण बेलगोला की ओर मंगल विहार करते हुए - दि. 27/01/95

प्रथम अधिष्ठाता क्षु. धर्मध्वज महाराज को धर्मनगर पीठ पर विराजमान करते हुए पू. आचार्य श्री

बाहुबली की मूर्ति, देती हमको ज्ञान।
छोड़ व्यर्थ संसार को, कर अपना कल्याण।।

क्षु. धर्मसेन, चित्रगुप्त, समाधिगुप्त, पूर्णचन्द्र, मुनिभेष में एवं ब्र. कलगोंडा पाटील जी को क्षुल्लक दीक्षा देकर धर्मनगर के द्वितीय अधिष्ठाता धर्मध्वज - पू. आचार्य श्री दीक्षा के संस्कार करते हुए - 12 मई 1995
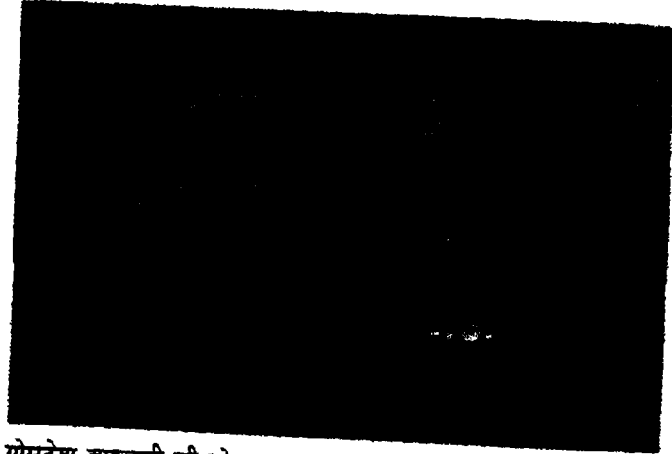
गोमटेश बाहुबली जी के पावन चरण कमल

प. पू. आचार्य श्री की प्रेरणा से निर्मित सांस्कृतिक मंगल कार्यालय कुरुंदवाड
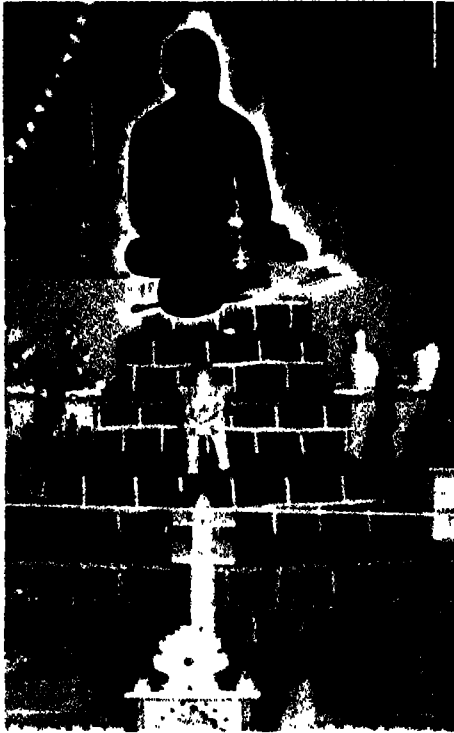
प. पू. आचार्यश्री की प्रेरणा से निर्मित सांस्कृतिक, धार्मिक मंगल कार्यालय रुई

कल्पद्रुम विधान ये देखो, रुई गांव में रचवाया।
जिनवाणी गुरु झेल रहे हैं, गणधर स्वरूप को प्रगटाया।।
(सन् 1995 में पू. आचार्यश्री की प्रेरणा से रुई गांव में कल्पद्रुम विधान की रचना)

पू. आचार्यश्री की फोटो का अनावरण करते हुए सेठ जवाहरलाल जी सूरतवाले

रुई गांव में कल्पद्रुम विधान में दिगम्बर जैन समाज के अध्यक्ष पदमाण्णा हेरवाडेजी को आशीर्वाद देते हुए पू. आचार्यश्री

पू. आचार्यश्री के दर्शन करते हुए मंत्री प्रकाश आवाडेजी
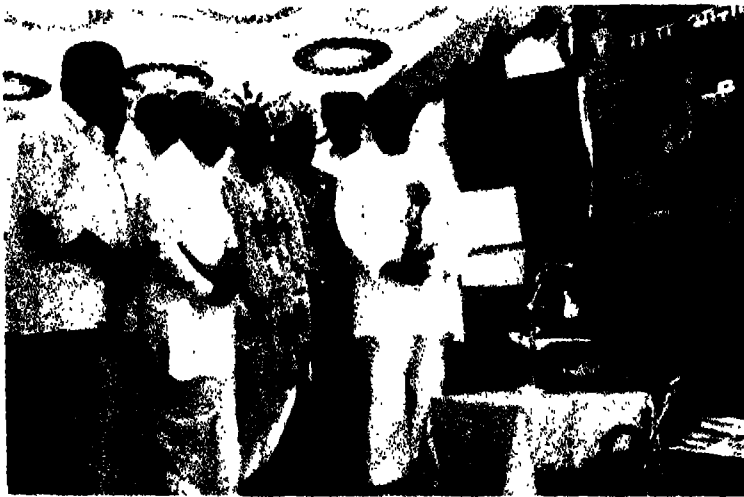
विधायक श्रीमान् कल्लाप्पाण्णा आवाडे जी एवं श्रीमान् शामराव जी को पू. आचार्यश्री आशीर्वाद देते हुए

श्रीमान् विधायक कल्लाप्पाण्णा आवाडे जी की बहुएँ सौ. किशोरी व सपना पू. आचार्यश्री से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

धर्मनगर में पू. आचार्यश्री की प्रेरणा से बालधर्म संस्कार शिविर में शुद्ध भोजन करते हुए छात्र (सन् 1996)

पू. आचार्यश्री जी के सानिध्य में धर्मनगर में सर्वतोभद्र विधान

वृषभसेन मुनिवर को तारा, दे सल्लेखना दिया उबार।
ऐसे तारक गुरु चरणों को, मुनिवर नमते बारम्बार।।

श्रीमान् रावसाहब पाटील कुरुंदवाड के भूतपूर्व नगराध्यक्ष चातुर्मास (सन् 1994) में पू. आचार्यश्री से आशीर्वाद लेते हुए

धर्मनगर क्षेत्र पर पू. आचार्यश्री का एवं संघस्थ मुनिराजों का केशलोंच

'सुखी मानुस' की उपाधि से सन्मानित अनन्य गुरुभक्त श्री शरद कर्वे सांगली

बाहुबली गुरु चरण की, मिली भक्तों को धूल।
आष्टावासी नाच रहे है, अर्पण कर फल और फूल।।
(पू. आचार्यश्रीका सांगली नगर में चातुर्मास होते ही आष्टा नगर के श्रावक आचार्यश्री का भव्य स्वागत करते हुए)

कमलासन पर चिंतवन करते हुए पू. आचार्यश्री

अकलूज चातुर्मास हेतु प्रस्थान (विहार के समय अकलूज निवासी चातुर्मास समिति के सदस्य पू. आचार्यश्री के साथ सन् 1997)

अकलूज निवासी श्री माणिकचंद दोशी व धर्मपत्नी सौ. चंचलाबाई गुरुभक्ति करते हुए

सर्वतोभद्र आराधना के प्रमुख इन्द्र श्री अरविन्द फडे व चातुर्मास समिति के अध्यक्ष श्री प्रद्युम्न कुमार गांधी अकलूज पू. आचार्य श्री से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

अकलूज में. आयोजित सर्वतोभद्र विधान के मंगल अवसर पर घट यात्रा

अकलूज में पू. आचार्य श्री के सानिध्य में सर्वतोभद्र विधान का आयोजन

दो गजराज हाथीद्वय पू. आचार्यश्री को नमस्कार करते हुए

पू. आचार्यश्री से दीक्षित आर्यिका मातायें

पू. आचार्यश्री के अधिनेतृत्व में अकलूज नगर में अखिल भारतीय दिगम्बर जैन अल्पसंख्यक मेला में आशीर्वाद देते हुए पू. आचार्यश्री
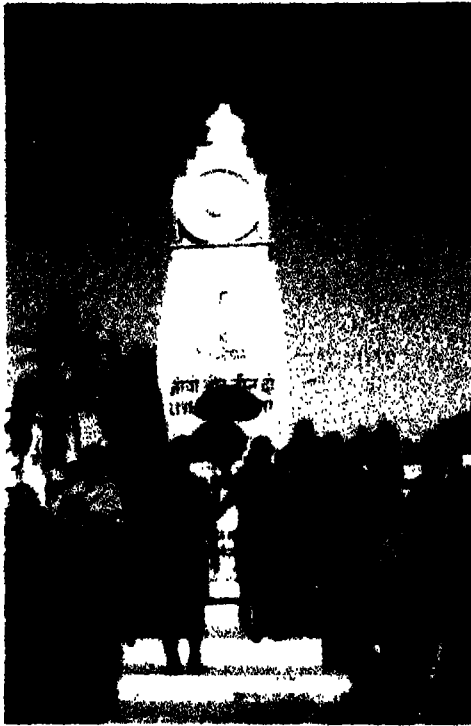
कुरुंदवाड में कोल्हापुर जिले के पुलिस जिला अधिकारी श्री माधव राव सानप की विदाई समारोह के शुभ अवसर पर पू. आचार्यश्री का मंगल प्रवचन

जिनकी कीर्तिगाथा स्वयं ही स्तम्भ बनकर खड़ी हुई।
अभय हस्त उठ गये गुरु के, जिओ जीने दो वाणी गुंज गई।।
(पू. आचार्यश्री की प्रेरणा से 30 दिसम्बर, 1980 में अकलूज में भ. महावीर कीर्तिस्तंभ का निर्माण एवं बाहुबली सेना की स्थापना)

श्री माधवराव सानप जी को पू. आचार्यश्री आशीर्वाद देते हुए

पुलिस इंस्पेक्टर जी पू. आचार्यश्री से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

विद्यासागर पूर्वाचार्य के, चरणों में झुका है माथ।
चरण युगल के बीच है प्रभु, तीन लोक के जो हैं नाथ।।

पूर्वाचार्य श्री विद्यासागर, अकबर जिनको ध्याता था।
ज्ञानी-ध्यानी शास्त्र गुरु को, अपने दरबार बुलाता था।।
जैन धरम की लाज बनाने, उड़े गुरुवर ऊँचे-ऊँचे।
विद्यासागर निज विद्याबल से, एक रात में दिल्ली पहुँचे।।
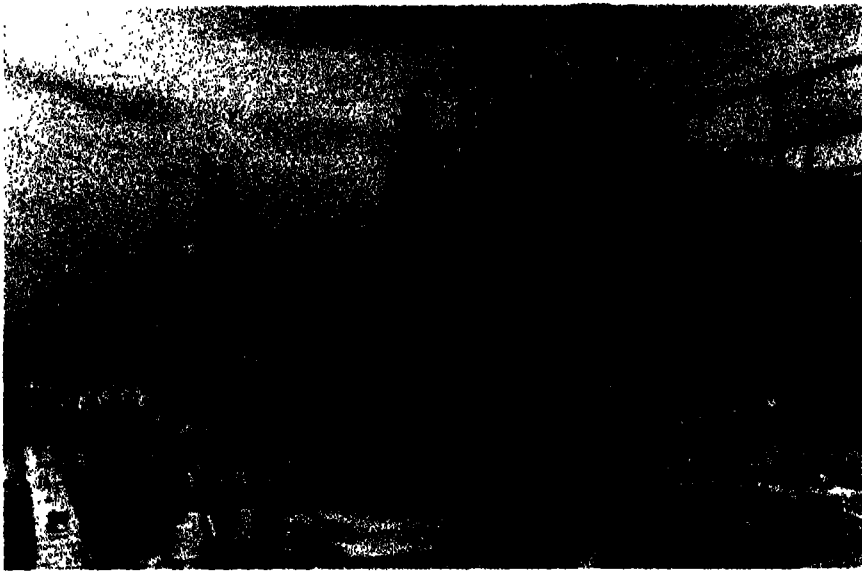
श्री निर्मलकुमार सेठी जी को ढ़ाई द्वीप विधान की जानकारी देते हुए श्री गुणधर उपाध्ये व श्री कुंथी भाई पाटणी जी

पू. आचार्यश्री की प्रेरणा से, धर्मनगर में अढ़ाई द्वीप विधान में चक्रवर्ती श्री देवकुमार सौंदत्ते व धर्मपत्नी सौ. सुरेखा सौदत्ते गजराज पर बैठकर ढ़ाई द्वीप की परिक्रमा करते हुए

धर्मनगर में आयोजित ढ़ाई द्वीप विधान के शुभ अवसर पर पू. आचार्यश्री प्रवचन देते हुए

अखिल भारतीय जैन महासभा के अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार सेठी जी पू. आचार्यश्री से श्रीफल प्राप्त करते हुए

ढ़ाई द्वीप विधान की निर्विघ्न समाप्ति पर विशाल रथ यात्रा

ढ़ाई द्वीप में त्रिलोक दीपोत्सव, जगमग शोभा न्यारी है।
ढ़ाई लाख लोगों की जहाँ पर, रही उपस्थिति भारी है।।
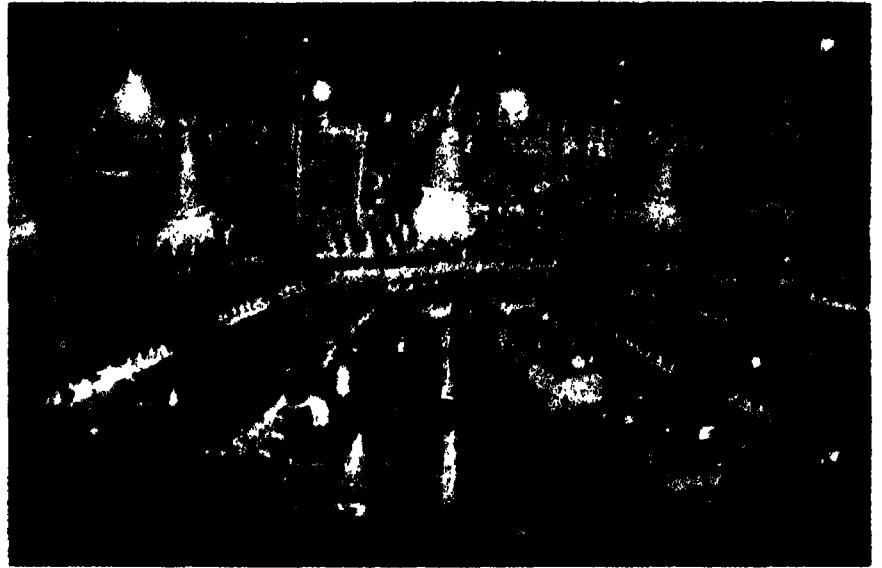
ढ़ाई द्वीप में पांचों मेरु, पूजन पाठ रचाया है।
कितना सुन्दर कृत्रिम है यह, पर पूरण बनवाया है।।
(धर्मनगर में त्रिलोक दीपोत्सव)

पू. आचार्यश्री के प्रेरणा से निर्मित मानवता पथ शांतिरथ विहार का ऐरावत हाथी दि. 18.3.99

**मानवता शांति पथ दर्शन रथ, नगर-नगर में घूमा है।
सब धर्मों का सार यही है, धर्म अहिंसा बिन सूना है।।**

मानवता पथ शांतिरथ श्रावकगण उद्घाटन के शुभ अवसर पर पुष्प क्षेपण करते हुए

मानवता शांतिपथ रथ के विहार के मंगल अवसर पर पू. आचार्यश्री संघ सहित

मानवता शांतिपथ रथ विहार के अवसर पर सामाजिक एवं राजकीय नेता रथ का स्वागत करते हुए

धर्मसभा में विधायक प्रकाश बापू पाटील (सांगली) अपने विचार व्यक्त करते हुए

धर्म सभा में राजनेताओं को एवं समाज को आचार्यश्री उपदेश देते हुए

रथ यात्रा के शुभारंभ के समय धर्मनगर के अध्यक्ष श्री वीरगोंडा पाटील एवं श्री गुणधर उपाध्ये, श्रीमान् शामराव पाटील को स्मृति चिन्ह भेट करते हुए

धर्मनगर के ट्रस्टी श्रीमान् कुंथीभाई पाटनी श्रीमती सरोजनी खजिरे जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए

धर्मनगर के ट्रस्टी श्री रविन्द्र देवमोरे श्रीमान् जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए
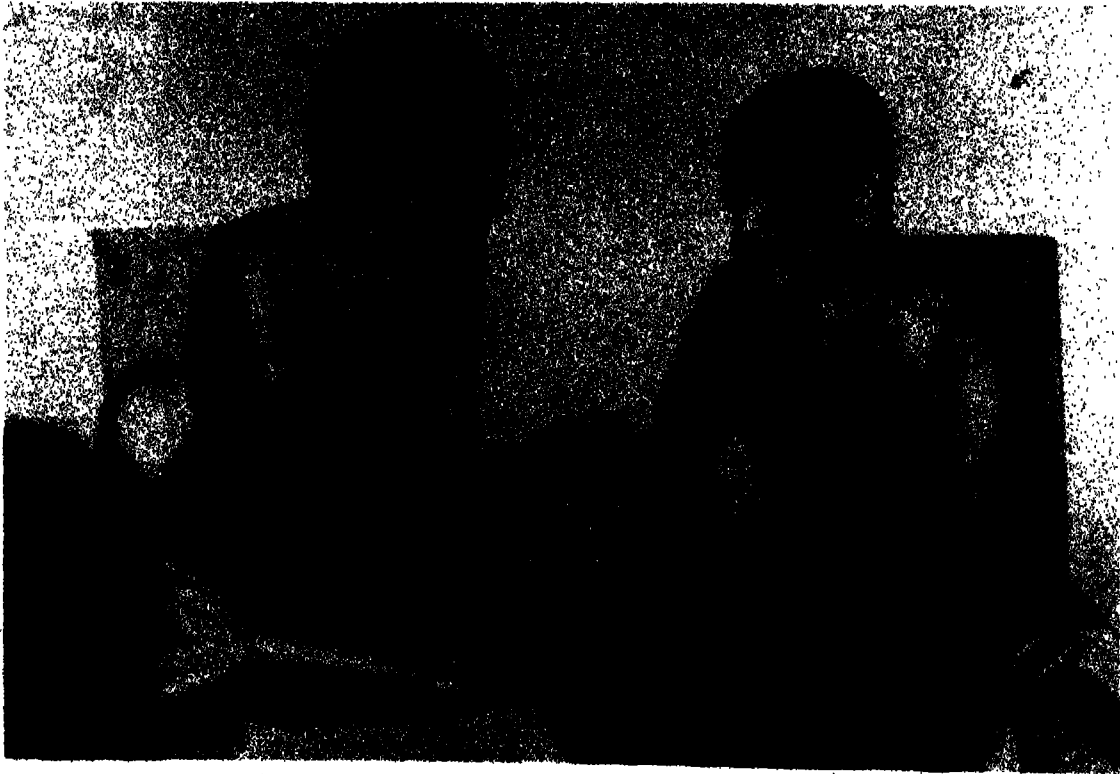
प. पू. 108 श्री सुबलसागर महाराज जी प. पू. 108 आचार्य श्री बाहुबली महाराज जी

धर्मनगर में वार्तालाप करते हुए आचार्यद्वय

दिगम्बर व क्षुल्लक दीक्षा समारोह-12 मई 1995

इसी क्षेत्र में आचार्य श्री के अमृत हस्ते चार मुनि दीक्षा व एक क्षुल्लक दीक्षा सम्पन्न हुई। धर्मनगर के प्रथम अधिष्ठाता क्षुल्लक धर्म ध्वज महाराज ने मुनि दीक्षा लेकर अपना आत्मकल्याण किया। जिनका नाम धर्मसेन रखा गया। शेष क्रमशः मुनि श्री चित्रगुप्त, मुनि श्री समाधि गुप्त व मुनि श्री पूर्ण चन्द्र के नाम से प्रसिद्ध हुए। ब्र० कलगोंडा जी क्षुल्लक दीक्षा लेकर द्वितीय अधिष्ठाता क्षु० धर्मध्वज बन गए।

आर्यिका दीक्षा समारोह सम्पन्न

19 मई 1995 को क्षु० निष्पाप-मती माता जी ने आर्यिका दीक्षा प्राप्त की। आर्यिका दीक्षा लेकर वे स्त्रीलिंग छेदन करने हेतु सज्ज हो गई।

रूई चातुर्मास-1995

पू० आर्यिका श्रुतदेवी माता जी व आर्यिका सुज्ञानी माता जी 1994 का चातुर्मास धर्म प्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ। इसी चातुर्मास में विशाल मंगल धाम का कार्यपूर्ण होते ही रूई के श्रावक आचार्य श्री जी को चातुर्मास हेतु आमन्त्रण देने आए। उन्होंने आचार्य श्री से प्रार्थना की-'इस वर्ष चातुर्मास का नारियल हमें ही देना पड़ेगा। हमारी खाली झोली को कृपया इस वर्ष भर दीजिए। उनकी तीव्र भावना देखते ही पू० आचार्य श्री ने उन्हें मौन स्वीकृति दे दी। क्योंकि आचार्य श्री ने पहले ही कह रखा था कि मंगल कार्यालय का काम होते ही हम चातुर्मास हेतु अवश्य ही आएगें। रूई के श्रावकों में गुरूभक्ति रोम-रोम में भरी थी। नूतन मंगल धाम में ही आचार्य श्री का वास्तव्य होने वाला था। वीर सेवा दल के बांधवों में विशेष उत्साह था।

आचार्य श्री का रूई में आगमन होते ही मेघराजा को आनन्द हुआ। उसने तुरन्त जलवृष्टि करके आचार्य श्री का स्वागत किया। लोगों ने अपने घर के सामने रंगोली सजाई। सभी श्रावकों के आनन्द का कोई पार नहीं था। जय-जयकार की ध्वनि से आकाश गूंज उठा।

आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को कलश की स्थापना हुई। चातुर्मास में विविध कार्यक्रम, शिविर आदि सम्पन्न हुए। चार महीने का समय समवशरण की भांति ही प्रतीत होता था।

कल्पद्रुम विधान 23 नवम्बर से 5 दिसम्बर 1995

चातुर्मास सम्पन्न होते ही मंगल धाम के विशाल प्रांगण में कल्पद्रुम विधान आचार्य श्री के आशीर्वाद से सम्पन्न हुआ। साक्षात् समवशरण की रचना की गई। मान स्तम्भ, वाटिका, नाट्यशाला, सरोवर, प्राकार, बारह सभा, तीन कटनी पर अष्ट मंगल द्रव्य धर्मध्वजा और सबसे ऊपर कमलाकार सिंहासन जिस पर चतुर्मुखी भगवान विराजमान थे। बारह सभा के पहले कोटे में ऋद्धिधारी मुनिराज जी भगवान की दिव्य ध्वनि सुन रहे हैं ऐसी सुन्दर मुनिराजों की मूर्ति बनाकर रखी गई। दूसरे कोटे में कल्पवासिनी देवियां, तीसरे में आर्यिका, माता जी व श्राविका, चौथे में ज्योतिषी देवियां, पांचवे में व्यन्तर वासी देवियां, छठे में भवनवासिनी देवियां, सातवें में भवनवासी देव, आठवें में व्यन्तर देव, नवम में ज्योतिष देव, दसवें में कल्पवासी देव, ग्यारहवें में श्रावकगण, बारहवें में पशुगणों के पुतले बनाकर रखें गए। उस रचना को देखकर ऐसा लग रहा था जैसे सचमुच ही सम्यक्त्वी जीव भगवान के समवशरण में बैठे है। भगवान के ऊपर तीन छत्र, पीछे भामण्डल शोभायमान हो रहा था।

कल्पद्रुम का शाब्दिक अर्थ ही है कल्पित वस्तु देने वाला वृक्ष अर्थात् समवशरण। इस विधान के सौधर्म इन्द्र श्री बापूसो विराजे थे। अध्यक्ष श्री पद्माण्णा हेरवाडे थे। सभी प्रमुख कार्यकर्ताओं ने वीर सेवा दल ने बहुत अधिक मेहनत की। तेरह दिन तीन दिन की तरह व्यतीत हो गए। अन्तिम दिन विशाल जुलूस निकाला गया जिसमें दो रथ दो बैण्ड, दो झांज पथक, हाथी, घोड़े थे इस प्रकार भगवान के समवशरण का विहार पूरे गांव भर में हुआ। सम्पूर्ण नगरी इतनी सजाई गई मानों इन्द्र ने आकर ही रचना की हो। अन्य जातियों के लोगों ने भी इस कार्यक्रम को देखकर आत्मिक शांति पाई। पूज्य आचार्य श्री ने अध्यक्ष की गुणवत्ता देखकर उन्हें 'समाजभूषण' पद से सुशोभित किया। तदनन्तर धर्मनगर में सर्वतोभद्र विधान हुआ। चिंचवाड में इन्द्रध्वज विधान सम्पन्न हुआ। विधान होते ही आचार्य संघ का विहार 'बाबा नगर' की तरफ हुआ। 'बाबा नगर' बीजापुर के पास है। 7 मार्च 1996 के मंगल दिन यहां के एक अतिशय पूर्ण प्राचीन मंदिर में मूलनायक हरित वर्ण खड्गासन् पार्श्वनाथ जी की प्रतिमा के दर्शन कर नेत्र तृप्त हुए। यहां के अतिशय के बारे में कहा जाता है कि एक मुगल बादशाह ने इस मंदिर को विध्वंस कर उसकी समस्त प्रतिमा एक बावड़ी में फिकवा कर हरित वर्ण की इस प्रतिमा को खिलौने सदृश्य रखने हेतु साथ ले गया। बाद में उसकी बेगम को उदर शूल की पीड़ा उठी तो बहुत इलाजों से भी शांत नहीं हुई। तब एक जैन पुरोहित को स्वप्न में दृष्टान्त हुआ कि उस प्रतिमा के अभिषिक्त जल से उसका रोग शांत हो जाएगा। वैसा करने से उसका रोग शांत हो गया। इसी खुशी में बादशाह ने उस स्थल पर नवीन जिन मंदिर बनवाकर प्रतिमा को श्रद्धापूर्वक विराजमान करवाया। और पुरोहित को आजीविक के लिए जमीन दे दी। इस मूर्ति की वजह से इस क्षेत्र का नाम जग में प्रसिद्ध हो गया। एक जगह कहा भी है-

बाबा नगर विख्यात जगत में, हरकोई तेरा नाम जपे।
बाबा नगर के बाबा कहकर, मनवांछित फल को पावे।
भव-भव भंजन नाथ निरन्जन, दूर करो दुख आज मेरे
बाबा तेरी सुन्दर मूरत हित उपदेश हमें देती-
प्रतिमा तेरी इतनी प्यारी लोहे को कंचन करती॥

★ ★ ★

निरख निरख कर मन नहीं भरता चमत्कारी वह प्रतिमा है
छोटी मूरत कीर्ति मनोहर ऐसी उसकी महिमा है
चरण धूलि को माथ लगाते भक्ति से हर कोई प्राणी
बाबा तेरी सुन्दर मूरत ....

सचमुच वीतराग प्रतिमा के दर्शन से दो जीवों का कल्याण हो गया। दो ब्रहमचारियों ने पू० आचार्य श्री के समक्ष दीक्षा लेने के भाव व्यक्त किए। शुभ मुहूर्त देखकर आचार्य श्री ने उन्हें क्षुल्लक दीक्षा दी। और उनका क्रमशः क्षु० पार्श्व सेन व क्षु० देवसेन नाम रखा। आठ दिन के ठहरने के बाद आचार्य संघ का वहां से विहार हुआ।

धर्मनगर में क्षुल्लक व क्षुल्लिका दीक्षा समारोह

12 मई 1996 अक्षय तृतीया के शुभ दिन पू० आचार्य श्री के शुभ हस्ते ब्र० तातोबा ने क्षुल्लक दीक्षा पाई। उनका नाम क्षु० जिनेन्द्र महाराज रखा गया। ब्र० इन्द्रा बाई ब्र० चम्पाबाई, ब्र० दर्शक्का तथा ब्र० चपाक्का ने क्षुल्लिका बनकर क्रमशः क्षु० ऐरादेवी, क्षु० शिव देवी, क्षु० सुमंगला तथा क्षु० सुनन्दा माता जी नाम पाए।

बाल धर्म संस्कार शिविर

2 जून से 6 जून 1996 तक धर्मनगर में प्रथम बार आचार्य श्री के अधिनेतृत्व में पू0 आचार्य श्री जी की प्रेरणा से ही बाल धर्म संस्कार शिविर का कार्यक्रम निश्चित हो गया। पांच दिन के इस शिविर में पांचवी कक्षा से सातवीं कक्षा तक के लगभग चार सौ बच्चों ने भाग लिया। संघस्थ आर्यिका माताजी व अन्य विद्वान शिक्षकों ने बच्चों पर उत्तम संस्कार डालने तथा धर्म सम्बन्धी जानकारी देने का उत्कृष्ट कार्य किया। अब प्रतिवर्ष यहां शिविर लगता है तथा बच्चों की संख्या प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है।

सांगली चातुर्मास -1996

धर्मनगर में सांगली के कम से कम चालीस-पचास लोगों ने आकर अपनी इच्छा प्रगट की कि पू0 आचार्य श्री जी का चातुर्मास हमारे यहां हो। उन लोगों में आचार्य श्री के एक अनन्य भक्त शरद कर्वे भी थे। जिनके मुख पर हमेशा प्रसन्नता झलकती रहती थी। वे प्रतिवर्ष किसी न किसी त्यागी का चातुर्मास अवश्य करते थे। स्वयं रसोई बनाकर त्यागियों को आहार देते थे। उन्होनें आचार्य श्री से निवेदन किया-'प्रतिवर्ष हमें सूर्य की किरण मिलती है लेकिन इस वर्ष तो हमें आचार्य श्री रूपी धर्म सूर्य का प्रकाश मिलें हम यही आशा लेकर आए है।

कई गांव के श्रावक अपने-अपने विचार व्यक्त कर रहे थे आचार्य श्री चुपचाप सुन रहे थे। जय जयकार से पूरा धर्मनगर गूंज उठा। श्रीफलों का आचार्य श्री के सामने ढेर लग गया। सांगली वालों की भक्ति ने आचार्य श्री को आकर्षित कर लिया। आचार्य श्री ने श्रीफल उठाकर सांगली वालों को दे दिया। श्रीफल मिलते ही सभी नाच उठे।

सांगली में चार महीने समवशरण वत् सतत् जिनवाणी रूपी अमृत का प्राशन सभी भव्यों ने किया चार महीने खूब धर्मप्रभावना हुई। चार महीने चार दिन की तरह निकल गए। चातुर्मास होते ही आचार्य श्री का विहार आष्टा की ओर हुआ। आष्टा नगर में जैन समाज के लगभग आठ सौ घर है तथा चार भव्य जैन मंदिर है। प्रत्येक घर के सामने पाद प्रक्षालन करना असम्भव था इसलिए भव्यों ने प्रत्येक चौराहे पर गेट बनाकर आचार्य श्री का पाद प्रक्षालन भक्ति भाव से किया। ऐसा भव्य व दिव्य स्वागत का वर्णन करना अशक्य है। हम दोनों माताजीओं का चातुर्मास यहां के श्रावकों ने विशेष धर्मप्रभावना पूर्वक सम्पन्न किया। दो दिन के वास्तव्य के बाद आचार्य श्री का विहार धर्मनगर की ओर हुआ।

पेनूर पंचकल्याणिक -27 दिसम्बर 1996

सांगली चातुर्मास होते ही आचार्य संघ का विहार पेनूर गांव की ओर हुआ। सोलापुर जिले में पेनूर नाम का छोटा सा गांव है। यहां पर सिर्फ एक जैन मंदिर है। तथा जैनियों के घर भी बहुत कम है। श्री रमेश कोठारी ने अपने माता पिता की आज्ञा से वहां नूतन मानस्तम्भ बनवाया। इस हेतु पू0 आचार्य श्री का आगमन वहां हुआ। आचार्य श्री के अधिनेतृत्व में विशेष धर्मप्रभावना के साथ इस छोटे से गांव में पंचकल्याणक महोत्सव सम्पन्न हुआ।

इस प्रतिष्ठा के बाद आचार्य संघ करकंब गांव की ओर आया। करकंब गांव में दो प्राचीन जिनमंदिर है। मानस्तम्भ निर्माण करने की प्रेरणा देकर आचार्य श्री मोडनिंब की ओर आए। मोडनिंब के श्रावक एक ही स्थान पर पूरे संघ का आहार करने वाले थे। पू0 आचार्य श्री ने कहा-'हम श्रावकों के घर पर हीं आहार लेगें, धर्मशाला में नहीं। ऐसा सुनकर सभी श्रावक घबरा गए। किसी त्यागी को अन्तराय आ गया तो क्या करेगें? फिर भी वैसे ही घर-घर में चौका लगाया। पहले दिन सभी त्यागियों का निरन्तराय आहार हो गया। दो-दिन के बाद आचार्य श्री का विहार होने वाला है यह पता

लगते ही श्रावक आचार्य श्री के पास आए और बोले-'हम आपको आगे विहार नहीं करने देगें।' मोडनिंब के श्रावको की भक्ति ने आचार्य श्री को रोक ही लिया। दो दिन रहने वाला आचार्य संघ पूरे अठारह दिन वहां रूका।

तदनन्तर कुर्डुवाडी कपिलापुर होते हुए कुंथलगिरि की ओर आचार्य संघ का विहार हुआ। कुंथलगिरी में आठ दस दिन आचार्य श्री का वास्तव्य था। पुनः मोडनिंब के श्रावक आचार्य श्री को आमन्त्रण देने आ गए। उनके पुण्योदय से आचार्य श्री का केशलोंच समारोह बड़े धूम धाम से मोडनिंब वासियों ने मनाया। अभूतपूर्व धर्मप्रभावना हुई।

उसके बाद अकलूज वासी निमन्त्रण देने आ गए। उन्होंने बड़ी भक्ति के साथ आचार्य संघ का स्वागत किया। आचार्य श्री का वहां सिर्फ एक ही दिन रहने का विचार था लेकिन वहां के श्रावाकों ने उन्हें 15 दिन तक वहां से जाने नहीं दिया। आचार्य संघ का वास्तव्य बाहुबली मंदिर में था। वहां पर नन्दीश्वर विधान बड़ी धर्मप्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ।

उसके बाद म्हसवड के श्रावक अपनी झोली पसारे आचार्य श्री के पास आए। और महावीर जयन्ती का कार्यक्रम आचार्य श्री के सानिध्य में सम्पन्न होने की स्वीकृति म्हसवड के भक्तों को मिल गई। बीस दिन तक वहां के भक्तों को विशेष धर्मलाभ मिला। महावीर जयन्ती के निमित्त से विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए।

विहार करते-करते अनगोल-बेलगांव की ओर आचार्य श्री पंचकल्याणक महा महोत्सव के निमित्त से गए। वहां की प्रतिष्ठा होते ही हातकणंगले, निमशिरगांव आ गए। निमशिरगांव के इस महोत्सव में 'जैन समाज नवदर्शन सम्मेलन' का कार्यक्रम हजारों लोगों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।-आचार्य श्री के अधिनेतृत्व में यह प्रतिष्ठा बड़े आनन्द से सम्पन्न हुई।

अकलूज चातुर्मास 1997

बहुत प्रयास के बाद अकलूज वासियों की मनोकामना पूर्ण हुई। जिस दिन आचार्य श्री ने उन्हें श्रीफल दिया उस दिन उनकी खुशी की कोई सीमा नहीं थी। आचार्य श्री का विहार धर्मनगर से अकलूज की ओर हुआ। विहार के समय युवावर्ग सबसे आगे था। बाहुबली सेना के प्रत्येक युवक का रोम-2 पुलकित था। अकलूज में आते ही उनका भव्य स्वागत किया गया।

आचार्य श्री हैं ज्ञान का दीप
मोती बनाते जैसे सीप
उनकी वाणी में है तेज
जैसे होता हवा में वेग
जहां पर उनका चातुर्मास होता
लोगों का मन पुलकित होता।

छोटे से लेकर बड़े तक सभी उस जुलुस में शामिल थे। प्रत्येक घर के सामने चौक पुराये गये। महिलाएं केसरिया साड़ी पहनकर हाथों में मंगल कलश लिए पाद प्रक्षालन करने के लिए व्याकुल हो रही थीं।

भगवान महावीर मंदिर में (पंचायती वाडा) आचार्य श्री व समस्त संघ की ठहरने की व्यवस्था की गई। विनोद दोशी (भांबुर्डेकर) के द्वारा आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को चातुर्मास कलश की स्थापना की गई। आचार्य श्री ने अपने प्रवचन

में कहा-'हम अपनी दुकान लेकर अकलूज गांव में आए हैं जिसे माल खरीदना है वह अवश्य खरीदे।' इस दुकान के ऊपर लिखा है- (1) दुकान पर बिना कीमत का माल बिकता है। (2) माल सुन्दर और टिकाऊ है। (3) माल आध्यात्मिक, तात्विक तथा गॅरन्टी युक्त है। (4) जब चाहो तब मिलेगा। कभी भी आओ, सुबह आओ, मध्यान्ह आओ, शाम को आओ। लेते जाओ पाते जाओ।'

ग्राहकी चालू हो गई। छहढ़ाला, तत्वार्थ सूत्र, रत्नकण्ड श्रावकाचार आदि विषयों पर धार्मिक परीक्षाएं, शिविर, प्रश्नमंच, धार्मिक अंताक्षरी आदि विशेष कार्यक्रम सम्पन्न हुए। आचार्य श्री की दुकान पर भीड़ होने लगी। लोग आध्यात्मिक माल खरीदने लगे।

पार्श्व पंचमी के दिन ब्र. विलासमती टोणे (जयसिंगपुर) की आर्यिका दीक्षा हुई और उन्हें आचार्यश्री ने आर्यिका धर्ममती नाम प्रदान किया। रक्षाबन्धन पर्व विशेष रूप से मनाया गया। दशलक्षण पर्व में तो भक्तों की भक्ति का महापुर ही बहने लगा। दस उपवास करने वालों की संख्या दस, पंचमेरू उपवास करने वाले पैंतीस, रत्नत्रय के तीन उपवास करने वालों की संख्या इक्कीस थी। इस प्रकार त्यागपर्व सचमुच में त्यागपूर्वक ही सम्पन्न हुआ।

दशहरा, दीपावली की छुट्टियों में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम रखे गए। आचार्य श्री की प्रेरणा से सर्वतोभद्र विधान निश्चित हो गया। पूजामें बैठे मुकुटधारी श्रावक-श्राविकाएं पूजा में मग्न हो सातिशय पुण्य का बंध कर रहे थे। अनेक पुस्तकों का प्रकाशन हुआ। उसी बीच-'वात्सल्य रत्नाकर' इस पदवी से पूज्य आचार्य श्री को अकलूज के श्रावकों ने अलंकृत किया। सचमुच आचार्य श्री वात्सल्यता की साक्षात् मूर्ति हैं। गुरुदेव की वात्सल्यता के कारण ही हजारों जैन अजैन भक्त गुरु के पावन चरण कमलों में आकर दर्शन पाकर अपने को धन्य समझते हैं। साथही अपनी शक्ति के अनुसार व्रत नियम-संयम धारण करके अपने जीवन को धन्य बना लेते हैं। गुरुदेव का सान्निध्य प्राणी मात्र को पवित्र बनाता है। गुरुदेव का घोर विरोधी भी उदण्डता पूर्वक उनका विरोध करने के लिए दहाड़ता हुआ यदि आता है तो वह भी आपकी सौम्य छवि मुस्कराती सूरत तथा अद्वितीय वात्सल्य को देखकर दूर से ही शान्त हो जाता है। प्रश्नोत्तर तो दूर की बात।

अकलूज में जैन अल्पसंख्यक मेला

सर्वतोभद्र विधान के बीच ही आचार्य श्री की प्रेरणा से जैन अल्पसंख्यक मेला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में दक्षिण भारत जैन सभा के अध्यक्ष श्री चन्द्रकांत कागवाड, श्री बी.बी. पाटील, श्री डी.ए. पाटील पूना के मिलींद फडे आदि लोगों की उपस्थिति थी। उस दिन अनेक महान विद्वानों के व्याख्यान हुए।

सर्वतोभद्र की प्रभावना 'न भूतो न भविष्यति' अकलूज के निर्मल परिसर में सम्पन्न हुई। विधान होते ही आचार्य श्री का विहार धर्मनगर की ओर हुआ। तदनन्तर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हेतु आचार्य श्री का सर्वत्र विहार हुआ।

धर्मनगर में चातुर्मास 1998

धर्मनगर में ट्रस्टिओं की विशेष विनती पर पू. आचार्य श्री का चातुर्मास धर्मनगर जैसे पावन क्षेत्र में निश्चित हो गया। आठ तारीख को कलश स्थापना हुई। चातुर्मास में अनेक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। अष्टान्हिका पर्व में सिद्धचक्र विधान होते ही आचार्य श्री के मन में पुनः विचार आया कि धर्मनगर में एक ऐसे विधान की महापूजा करना है जो आज तक कहीं नहीं हुई हो। 'ढाई द्वीप' विधान करने का निश्चित हो गया।

भारत में प्रथम बार अढ़ाई द्वीप विधान रचना

इचलकरन्जी के श्री गुणधर उपाध्ये जो धर्मनगर के ट्रस्टी हैं उन्हें अढ़ाई द्वीप विधान की रचना का कार्य सौंपा गया। उन्होंने आचार्य श्री की प्रेरणा से अढ़ाई द्वीप की विशाल रचना का कार्य शुरू किया। साक्षात् रचना करना बड़ा मुश्किल काम है लेकिन आचार्य श्री से पूछकर वो सारे काम करने लगे। सबसे पहले जम्बूद्वीप बनाया। जम्बूद्वीप के अन्दर दक्षिण की ओर भरत क्षेत्र उसके आगे छह क्षेत्र और छह कुलाचल पर्वत की रचना की गई। हिमवान आदि छः कुलाचल पर्वतों पर क्रम से पद्म, महापद्म, तिगिंच्छ, केशरी, पुंडरीक, महापुंडरीक ऐसे छह सरोवर दर्शाये गए।

इन छह सरोवरों से गंगा-सिन्धु आदि चौदह नदियां निकलती हुई दर्शायी गईं। भरत क्षेत्र के छह खण्ड, हिमवान पर्वत के पद्म सरोवर से जो गंगा सिन्धु नदी निकलती है उसकी रचना तो अद्वितीय थी। प्रथम हिमवान पर्वत पर पद्म सरोवर बनाकर इसके बीचोबीच कमल की रचना की गई। उसके अन्दर श्री देवी का महल दिखाया गया। भरत क्षेत्र के बीच पूर्व-पश्चिम में लम्बा विजयार्ध पर्वत है। उस पर नौ कूट है। सिद्धकूट पर जिन भवन तथा शेष कूटों में देव देवियों के निवास स्थान यथावत दिखाए गए। विजयार्ध पर्वत पर दो महागुफाएं हैं और इसी गुफा से, सरोवर से निकली हुई गंगा-सिन्धु नदियां बाहर आकर लवण समुद्र में प्रवेश करती हुई दर्शायी गईं।

पद्म सरोवर की चारों दिशाओं में चार तोरण द्वार दिखाकर पूर्व तोरण द्वार से गंगा नदी निकलती है। गंगा नदी निकलने का द्वार गौ (वृषभाकार) सदृश बनाकर उसमें से पानी गिरता हुआ लवण समुद्र कीओर जाता हुआ दिखाया गया। सिन्धु आदि चौदह नदियों की रचना यथावत की गई।

भरत क्षेत्र में पांच म्लेच्छ खण्ड और एक आर्य खण्ड की रचना करके इसी आर्य खण्ड में जिनमंदिर, नगर आदि बनाए गए जिसमें मुनिराज, आर्यिका माताजी आहारचर्या को जाते हुए नजर आते हैं तथा श्रावक-श्राविकाएं उनका पड़गाहन करके अपने घर ले जाते हुए दिखाये गए। चतुर्विध संघ के अधिनायक आचार्य श्री जन समुदाय को प्रवचन दे रहे हैं। यह सब रचना बड़ी मनोहारी थी।

गंगा नदी जहां गिरती है वहां एक गोल कुण्ड बनाकर नीचे गंगाकूट की रचना की गई। उस कूट में गंगा देवी का दिव्य भवन बना हुआ था। भवन के ऊपर कमलासन पर जटा मुकुट रूप शेखर से युक्त जिनेन्द्र प्रतिमाएं दिखाई गई। गंगा नदी इन प्रतिमाओं का अभिषेक करती हुई गंगा कूट पर गिरती हुई बहुत ही सुन्दर लग रही थी।

उसके आगे छह कुलाचल पर्वत नाभि गिरी पर्वत, छह क्षेत्र और विदेह क्षेत्र के बीचोबीच सुमेरु पर्वत को बनाया गया। सुमेरु पर्वत के पास चार गजदंत पर्वत, विदेह क्षेत्र में बत्तीस नगर, सोलह बक्षार पर्वत, बारह विभंगा नदियों की रचना बड़ी ही सुन्दर की गई। विदेह क्षेत्र के बीचोबीच देवकुरु-उत्तरकुरु क्षेत्र दिखाकर उस क्षेत्र में दो-2 दिग्गज पर्वत दिखाए गए। मेरु पर्वत के ईशान कोण में जम्बूवृक्ष बनाया गया। भरतक्षेत्र के समान ऐरावत क्षेत्र की रचना की गई।

इस प्रकार शास्त्रोक्त रूप से जम्बूद्वीप की रचना करके उस द्वीप को घेरे हुए वलयाकार लवण समुद्र की रचना की गई। तदनन्तर जम्बूद्वीप वत लवण समुद्र को घेरे हुए धातकी खण्ड। धातकी खण्ड में पूर्व पश्चिम दो मेरु, बारह कुलाचल, चौदह क्षेत्र, अट्ठाईस नदियों की रचना थी। उस धातकी खण्ड को घेरे हुए कालोदधि समुद्र, तदनन्तर उस समुद्र को घेरे हुए पुष्करार्ध द्वीप दिखाया गया। इसमें भी पूर्व-पश्चिम दो मेरु आदि दुगुने-2 दिखाए गए। धातकी खण्ड और पुष्करार्ध द्वीप में दक्षिण उत्तर इष्वाकार पर्वत दिखाकर पुष्करार्ध को घेरा हुआ मानुषोत्तर पर्वत दिखाया गया।

पांचों मेरु को प्रदक्षिणा देते हुए सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र, तारका आदि की रचना शास्त्रोक्त रूप से की गई। रात्रि में यह दृश्य तो इतना सुन्दर दिखता था कि उसका वर्णन इस जिव्हा से करना असम्भव है।

समाज में धर्म जागृति हो, सभी लोग सुसंस्कृत होकर समाज के कार्य में अग्रगण्य रहे, इस हेतु आचार्य श्री की प्रेरणासे दिगम्बर जैन संस्कृति संवर्धन सम्मेलन का कार्यक्रम रखा गया।

नयनरम्य, अद्वितीय अढ़ाई द्वीप विधान के मुख्य इन्द्र हुपरी निवासी चांदी कारखानेदार गुरुभक्त श्रीमान देवकुमार जम्बूराव सौदत्ते और उनकी धर्मपत्नी सौ. सरोजनी थे। प्रतिदिन अलग-अलग इन्द्रों ने इस विशाल विधान में सहभागी होकर पुण्य कमाया। ऐसे अठारह इन्द्र थे। इस विधान में लाखों लोगों ने कृतकारित अनुमोदना के द्वारा पुण्य कमाकर अपने भाव निर्मल किए।

त्रिलोक तीर्थ दीपोत्सव-31 जनवरी 1999

31 जनवरी 1999 के शुभ दिन सुबह हवन, दोपहर में देवाधिदेव श्री 1008 धर्मनाथ भगवान का महामस्तकाभिषेक हुआ। शाम को 7 बजे त्रिलोक तीर्थ दीपोत्सव का कार्यक्रम बड़े आनन्द के साथ सम्पन्न हुआ। इस दीपोत्सव का मुख्य इन्द्र पद फलटण निवासी कु. स्नेहल मेथा ने लिया। बाकी इन्द्र जो कि इक्कीस थे वो सब अलग-2 शहरों के थे।

पांच सूड वाले कृत्रिम हाथी पर त्रिलोकेन्द्र विराजमान हुए। विधान के प्रमुख इन्द्र हाथी पर विराजमान हुए बाकी के सभी इन्द्र रथ पर सवार होकर भव्य जुलूस में शामिल हुए। इस जुलूस में दो ढाई लाख लोगों की भीड़ लेकर धर्मलाभ लिया।

इन्द्रों ने पुष्पवृष्टि करते हुए आचार्य श्री को मेरु पर्वत तक ले आए। प्रथम सुदर्शन मेरु पर त्रिलोक इन्द्र ने केवलज्ञान ज्योति प्रज्जवलित की और अन्य उपेन्द्रों ने शेषचार मेरु पर केवलज्ञान ज्योति जलाई। उस समय तो ऐसा लग रहा था मानों साक्षात् समवशरण में ही भव्य जीव अपनी आत्म ज्योति जलाने आए हैं।

उस दिन की भीड़ ने चारों दिशाओं के रास्ते बन्द कर डाले। जो बाहर थे उन्हें अन्दर आने की जगह नहीं थी। यह कार्यक्रम सचमुच स्वर्ण अक्षरों में लिखने के लायक 'न भूतो न भविष्यति' हो गया।

इस महान आयोजन में विशेष रूप से श्री गुणधर उपाध्ये, श्री रंगोलीकर पाटील, श्री धनपाल केटकाले, श्री वीरगोंडा पाटील, श्री रवि देवमोरे, श्री महावीर माणगांवे, श्री कुंथीभाई पाटणी, श्री रमेश कोठारी, श्री शीतल दोशी, श्री बुधराज सेठी, श्री आण्णा कोले, श्री जिनपाल सूर्यवंशी, श्री अशोक पाटील, श्री पी.टी. पाटील आदि ने बहुत परिश्रम करके कार्यक्रम को सफल बनाया।

इस कार्यक्रम के तहत, भट्टारक श्री लक्ष्मीसेन महास्वामी जी भी उपस्थित थे। अखिल भारतीय जैन समाज के अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार सेठी जी, माननीय मंत्री श्री रामदास कदम, माननीय श्री पुंडलीक जाधव, खासदार श्री कल्लाप्पाण्णा आवाडे, वस्त्रोद्योग मंत्री श्री प्रकाश आवाडे, माननीय श्री शामराव पाटील (पार्वती इन्डस्ट्रीज के चेयरमैन) माननीय श्री प्रकाश खंजिरे, माननीय श्री पी.बी. पाटील, श्री एन.वी. पाटील, सौ. रजनी मगदुम, आमदार श्री शरद पाटील, माननीय श्री कापसे वकील (कोल्हापुर निवासी) एडवोकेट श्री पी.आर. पाटील, ॲड श्री एस.एस. पाटील, डॉ. श्री अजित पाटील, वीरसेवा दल के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री विजय आवटी, प्राध्यापक श्री आण्णासो क्वाणे, डॉ. राव साहेब पाटील, श्री प्रा. कुलभूषण लोखण्डे, प्रा. श्री सुमेरचन्द्र जैन, रिटायर्ड जज श्री शेट्टी साहेब, डॉ. श्री अनिल मडके, प्राध्यापक श्री डी.ए.

पाटील, माननीय श्री बी.बी. पाटील, माननीय श्री राजीव आवले आदि प्रतिष्ठित लोगों ने सांस्कृतिक सर्म्बधन सम्मेलन में आकर अपने विचार व्यक्त किए।

भगवान महावीर जयन्ती-हिंसा कि अहिंसा?

28 मार्च 1999 के दिन भगवान महावीर स्वामी जी की जयन्ती थी और उसी दिन बकरी ईद भी थी। एक ही दिन दो विरोधी त्यौहार अहिंसा और हिंसा। तीर्थंकरों का जब जन्म होता है तब स्वर्गों में क्या नरकों में भी नारकीय जीवों को क्षणमात्र सुख प्राप्त होता है। तीनों लोकों के जीव सुखी होते हैं।

ऐसी परिस्थिति में आचार्य श्री ने पत्रिका छपवाई तथा धर्मप्रचार करवाया और सभी को आदेश दिया। अपने-2 गांव, शहर के आसपास के मुसलमान भाईयों से विनम्र निवेदन करें कि उस दिन हिंसा न करें। आचार्य श्री की प्रेरणा से जहां तहां अहिंसा का प्रचार शुरू हो गया। परिणाम स्वरूप उस दिन प्रत्येक गांव में हिंसा नहीं हुई।

मानवता शान्तिपथ दर्शन रथ विहार

चैत्र शुद्ध प्रतिपदा, नूतन वर्षारम्भ दिनांक 18 मार्च 1999 के शुभ दिन मध्यान्ह तीन बजे भारतीय ऋषि साधुजनों की पवित्र भूमि को पावन रखने के लिए प.पू. श्री 108 आचार्यरत्न बाहुबली मुनि महाराज ने राजा व प्रजा के लिए शुभ आशीर्वाद देते हुए कहा-

देश का धन पशु पक्षी हैं आप मानव हैं। पशु पक्षियों की रक्षा अवश्य करो। देवी देवता तो पशु पक्षियों को न तो खाते हैं और न ही बलि मांगते हैं। अपनी भूल को दूर करो और पाप से बचो जो परिग्रह प्रमाण अपनाएगा वही प्रजा को सुख से चलाएगा। पाप कार्यों से दूर हटने की प्रतिज्ञा करो। राज्य सत्ता किसी की भी हो प्रजा को समान रूप से देखो। केवल अपने पक्ष को मत देखो। तभी शासन अच्छी तरह से चलेगा। 'व्यसनों को हटाओ, उत्पादन बढ़ाओ, न्याय से धन कमाओ, देश को समृद्ध बनाओ।'

गली से दिल्ली (राजधानी केन्द्र) तक-धार्मिक एवं नैतिक भावनाओं के माध्यम से देश-2 में राष्ट्र-2 में पूरे भारत में आचार्य श्री की प्रेरणा से चैत्र शुद्ध प्रतिपदा के शुभ दिन मानवता शान्ति पथ दर्शन विहार शुरू हुआ।

उस रथ में साधु संतों के चित्र, नेताओं के चित्र, जिनवाणी माता एवं भारतमाता का चित्र, भगवान महावीर के समवशरण में गाय और सिंह एक ही पात्र में पानी पी रहे हैं। ऐसे दयामय धर्म के प्रतीक का सुन्दर चित्र, चारित्र चक्रवर्ती समाधि सम्राट आचार्य श्री शान्तिसागर महाराज के चांदी के चरण, नूतन निर्मित 108 फुट ऊंचे तीर्थंकर स्तूप की प्रतिकृति भव्य मंगल कलश आदि इस रथ की शोभा बढ़ा रहे थे। सुविचार, मेरी भावना, महान-2 व्यक्तियों के विचार इस रथ पर लिखे थे।

प.पू. करुणा सागर, वात्सल्य रत्नाकर, शान्ति सुधा सागर आचार्य श्री बाहुबली महाराज ने सम्पूर्ण विश्व में अहिंसा की ज्योति प्रज्जवलित करने के लिए राष्ट्रीय एकात्मकता के लिए अत्याचार, अनाचार, भ्रष्टाचारादि कुकृत्य जड़ से नष्ट होने के लिए तथा समता, सुख, शान्ति, समृद्धि का विकास होने के लिए इस महान कार्य को करने की प्रेरणा दी।

भारत एक अहिंसामय देश है। इस देश में कदम-2 पर अहिंसा की ध्वनि गूंजा करती थी, परन्तु हमारा दुर्भाग्य इस अहिंसामय देश में आज हिंसा का तूफान उठ रहा है। सब ओर पशु पक्षियों की करुण पुकार सुनाई दे रही है। राजा और प्रजा सब लोग अंधे और बहरे हो गए हैं। भगवान महावीर की इस पवित्र भूमि पर हिंसा का ताण्डव नृत्य हो रहा है।

बंधुओं! हिंसा से भगवान महावीर, बुद्ध आदि ऋषि-मुनि सन्तों की पवित्र भूमि पर देश पतन के चिन्ह दिख रहे हैं।

जहां पवित्र गंगा-यमुना नदियां बहती थीं, वहां रक्त की नदियां बह रही हैं। शाम के समय मंदिर, मस्जिद, देवालय में पवित्र धर्मचर्चा, आरती आदि सुनने को मिलती थी। परन्तु अब सुमधुर आरती के बदले पशुओं की करुण पुकार सुनने को मिलती है। अरे! यह वही देश है जहां भगवान महावीर का दिव्य संदेश 'जिओ और जीने दो' का नारा गूंजता था। यह वही देश है जहां दूध, दही की नदियां बहती थीं। जहां भगवान महावीर, रामकृष्ण, गौतम, नानक, पैगम्बर के समान महापुरुष होकर गए हैं। आज इस पवित्र वसुन्धरा पर हिंसा का ताण्डव क्यों?

अरे मानव! जिस गाय का दूध पीता है, जिसे तैंतीस कोटि देव भी मानते हैं। देश में कहा जाता है कि गाय हमारी माता है। उसी गाय को कत्लखाने में भेज रहे हैं। अरे निर्दयी मानव! तुझे धिक्कार हो। किसी भी धर्म ने हिंसा को धर्म नहीं माना। मानवोचित्त कार्यकर मूक पशुओं की क्रूरता से चीरफाड़ मत कर। छोड़ो यह पशु हत्या, सुन उन मूक प्राणियों की करुण पुकार। सब धर्मों का एक ही तत्व हिंसा मत करो, जीव हत्या मत करो, पंचशील का पालन करो।

बूचड़खाने का दृश्य देखकर
आत्मा थर-2 कांप जाए
खूंटे से बंधी गाय टकराय
दूर खड़ा बकरा मिमियाय
सोचे अब मेरी बारी है
किस्मत की सब बलिहारी है
क्यूं विधाता मुझको बनाया
जब भेजना ही था बूचड़खाना।

इस प्रकार आचार्य श्री जन समुदाय के सामने मानवों को पुकार रहे थे। आचार्य श्री जब प्रवचन दे रहे थे उस समय मानवों के हृदय कांप उठे थे और धरती हंस रही थी। बहुत-2 शुक्रिया दे रही थी।

इस कार्यक्रम में सभी नेता आदि उच्च वर्ग की उपस्थिति थी। इस रथ का विहार कोल्हापुर जिले में सबसे पहले हुआ।

करुणा सागर

एक बार की करुण घटना मैं आपके सामने रखना चाह रही हूं।

आचार्य श्री संघ सहित पंचकल्याण प्रतिष्ठा महोत्सव हेतु सातारा जिले में साखरवाड़ी की ओर जा रहे थे। विहार में कई गांवों में जैन समाज की अनुपस्थिति थी।

एक बार एक गांव में श्रावकों ने चौका लगाया। आचार्य श्री साढ़े नौ बजे उस स्थान पर आ गए। आते ही अभिषेक हुआ। श्रावकों ने शुद्ध पानी लाकर रखा। आहारचर्या के लिए उठने ही वाले थे, इतने में एक भयानक दृश्य आचार्य श्री की नजरों के सामने आया, एक बकरी के गले में पुष्पमाला डालकर, सिन्दूर लगाकर उसे बाजों के साथ ला रहे थे। बकरी आगे नहीं आ रही थी। फिर भी लोग उसे दोनों तरफ से खींच रहे थे। मूक प्राणियों की आवाज सुनने वाला वहां कोई नहीं था। बकरी आक्रोश कर रही थी फिर भी कसाई को दया नहीं आई।

यह दृश्य देखते ही आचार्य श्री वहीं बैठ गए और पास में जो श्रावक थे, उन्हें उन लोगों के पास भेज दिया। श्रावकों ने उनसे विनयपूर्वक कहा-'भैय्या, आपके गांव में हमारे जैन गुरु आए हैं आपका सौभाग्य है। आप जो यह कुकार्य करने जा रहे हैं वह कृपाकर मत कीजिए। इस निरपराधी मूक प्राणी को मुक्त कर दीजिए।' इतना समझाने पर भी वह दुष्ट कहने लगे-'अरे, बलि देना हमारा धर्म है, हमारी रीति है। ये हम कैसे छोड़ सकते हैं। पुनः श्रावकों ने कहा-'हम तो दस बीस हजार रुपए देते हैं तुम ये प्रथा हमेशा के लिए बन्द कर दो।' फिर भी वे नहीं माने।

एक जगह कहा भी है-'जिसके न फटे बिवाई वो क्या जाने पीर पराई।' अर्थात जिसके हृदय में दया ही नहीं है वो क्या जानेगा दूसरे का दर्द। अनेक प्रयत्नों के बाद भी निर्दयी लोगों को दया नहीं आयी। आचार्य श्री का कहना था-'यह क्रूर हत्या बन्द होनी चाहिए।' जब वे निर्दयी नहीं पसीजे तो आचार्य श्री ने बिना आहार लिए ही वहां से गमन कर दिया।

आचार्य श्री ने उन्हें अन्तिम समय तक समझाया था-'देखिए, आप लोग क्रूर कर्म छोड़ दो, आपका गांव धनवान और सुखी हो जाएगा। अगर आप हत्या करना बन्द नहीं करोगे तो आप कभी भी सुखी नहीं रह पाओगे। दुख ही दुख उठाना पड़ेगा।'

सत्य ही है-गुरुदेव अर्थात् दिगम्बर मुनि की वाणी कभी असत्य नहीं होती। एक महीने के अन्दर ही उस गांव के लोग त्राहि-2 हो गए। बिना जल की मछली के समान सभी छटपटाने लगे। उस समय उन्हें गुरुदेव के वचन याद आ गए। गांव के कुछ लोग आचार्य श्री को ढूंढ़ने लगे। ढूंढ़ते-2 गुरुदेव के चरणों में आ गये और विनम्र होकर प्रार्थना की, क्षमा याचना की-'अब हम कभी भी हत्या नहीं करेंगे। आप हमारा दुःख दूर कीजिए।' आचार्य श्री ने उन्हें सच्चे धर्म का स्वरूप समझाकर जीव हिंसा, असत्य, चोरी, कुशील, परिग्रह ऐसे पांच पापों का स्थूल रूप से त्याग कराया। उनका दुःख दूर किया। वे लोग गुरुदेव का आशीर्वाद लेकर अपने गांव की ओर गए। गांव वालों को इकट्ठा करके गुरुदेव का उपदेश सभी को बताकर पंच पापों से दूर रहने के लिए कहा। आश्चर्य उसी दिन शाम को मेघराजा ने हर्षित होकर घनघोर वर्षा की। सभी लोग सुखी हुए। उसी दिन से उन लोगों की आचार्य श्री के प्रति श्रद्धा बढ़ गई।

गरग चातुर्मास

धर्मनगर में श्रावकों का आना जाना शुरू हो गया। जैसे बसंत ऋतु के आगमन पर कोयल कुहू-2 करती है उसी प्रकार चातुर्मास रूपी बसन्त ऋतु के आते ही श्रावक रूपी कोयलों ने अपना गाना शुरू कर दिया। प्रत्येक गांव के श्रावकों की यही इच्छा आचार्य श्री का चातुर्मास हमारे यहां होना चाहिए। कोल्हापुर, सातारा, सोलापुर, सांगली, बेलगांव, धारवाड़, हुबली, हावेरी, बीजापुर सभी जिलों के श्रावकों का मेला धर्मनगर में लगा था। इस वर्ष कर्नाटक के भक्तगण भी अपनी आशा लेकर आए थे। सभी अपने-2 मन की बात आचार्य श्री से कह रहे थे।

धारवाड़ जिले में गरग नाम का एक गांव है वहां के भी कुछ श्रावक आए। उन्होंने आचार्य देव से विनती की-'हमारा जिला धर्म के मामले में बहुत पीछे है। जैन समाज शैव धर्म (शिवलिंग की पूजा करने वाले) को अपना रहा है। जैन साधुओं का विहार उस भाग में कम होने से अन्य जाति के संस्कारों को हमारी समाज अपना रही है और उसी तरह का आचरण कर रही है। मिथ्यात्व का ही चारों तरफ बोलबाला है। अतः हमें मुक्ति का मार्ग दिखाने के लिए, जैन धर्म जीवन्त रखने के लिए इस वर्ष आप हमारी प्रार्थना स्वीकार कर लीजिए।'

आचार्य श्री के पास गरग के श्रावक आठ दस बार चातुर्मास का श्रीफल लेने आए फिर भी उन्हें आशीर्वाद नहीं मिला। धर्मनगर के ट्रस्टी व उस परिसर के श्रावक आचार्य श्री से बार-2 प्रार्थना कर रहे थे कि इस साल धर्मनगर में ही

चातुर्मास होना चाहिए। आपकी प्रेरणा से नूतन निर्मित तीर्थंकर स्तूप के कार्य में हमें अवश्य ही सहयोग मिलेगा। अतः हमें आपका आशीर्वाद चाहिए। परन्तु आचार्य श्री के मन में कहीं दूर जाने की इच्छा पहले से ही थी।

गरग के श्रावक भी हठ पकड़कर बैठ गए। दो दिन उन्होंने कुछ भी नहीं खाया। उन्होंने निश्चय कर लिया था कि इस वर्ष हम आचार्य श्री जी को लेकर ही जाएँगे। वे लोग धर्मनगर के ट्रस्टियों के पास आए और उनसे विनती की। भक्तों की अचल भक्ति पर भगवान को भी दया आती है। आचार्य श्री ने गम्भीर विचार किया और दूसरे दिन उन्हें चातुर्मास का श्रीफल दे दिया।

कुछ श्रावकों ने आचार्य श्री से कहा-'आप पास के भक्तों को छोड़कर इतनी दूर क्यों जा रहे हो।' तब आचार्य श्री ने कहा-'जहां धर्म नहीं वहां जाना ही श्रेयस्कर है। हम मंदिर आदि के जीर्णोद्धार के लिए नहीं बल्कि जीवों के जीर्णोद्धार हेतु वहां चातुर्मास के लिए जा रहे हैं।'

आचार्य श्री का गरग गांव में आगमन

23 जुलाई को आचार्य श्री के चरण कमल पड़ते ही सभी भक्तगणों का मन मयूर की तरह नाचने लगा। धार्मिक रूप से पिछड़े इस भाग के लोगों को तो दिगम्बर मुनि का दर्शन ही दुर्लभ था। जब आचार्य श्री का चातुर्मास ही इस गांव में हो रहा था तो कहना ही क्या? गुरुदेव का आगमन होने से मेघराजा ने भी हर्षित होकर जलवृष्टि की। आचार्य श्री के स्वागत के लिए शैव धर्म के गुरु भी आए थे। सभी महिलाएं मंगल कलश लिए आगे-2 चल रही थीं। पुरुषों, बच्चों व तरुणों की जय-जयकार से आकाश गूंज रहा था।

जिन मंदिर का नहीं बल्कि जीवों का जीर्णोद्धार

27 जुलाई को बड़े ठाठ से कलश की स्थापना हुई। इस कार्यक्रम में धारवाड़, हुबली, बेलगांव, कोल्हापुर, पंढरपुर, अकलूज,सांगली आदि स्थानों से कई प्रतिष्ठित व्यक्ति आए।

पू. आचार्य संघ का वास्तव्य जयकीर्ति विद्यालय के परिसर में था। चातुर्मास में वहां के लोगों की अज्ञानता पू. आचार्य श्री ने दूर की। पानी कैसे और क्यों छाना जाता है इतना भी यहां के लोगों को मालूम नहीं था। आहार की विधि तथा स्वाध्याय का ज्ञान तो लेशमात्र भी नहीं था। ऐसे लोगों का ही तो जीर्णोद्धार करने के लिए आचार्य श्री आए थे।

एक व्यक्ति ने आचार्य श्री से कहा-'हे गुरुदेव! कुलभूषण महाराज और श्रुतसागर महाराज ने हमें जिनमंदिर का मार्ग दिखाया अब आप हमें शुद्ध रहना सिखाना।' गुरुदेव के मधुर उपदेश से धीरे-2 लोगों में विवेक जाग्रत हो गया। मुकुट सप्तमी, रक्षाबन्धन पर्व, दशलक्षण पर्व, षोडश कारण व्रत बहुत ही धर्मप्रभावना पूर्वक सम्पन्न हुए। जिन्हें 'उदक चन्दन' भी बोलना नहीं आता था। उन्हीं श्रावक श्राविकाओं ने आचार्य श्री की प्रेरणा से सभी प्रकार के व्रत नियम लेकर अपना आत्म कल्याण किया।

धर्मचक्र विधान एवं लक्ष दीपोत्सव

11 अक्टूबर से 17 अक्टूबर तक इस छोटे से गांव में बड़े उत्साह पूर्वक धर्मचक्र विधान सम्पन्न हुआ। धर्मचक्र विधान की रचना भी बड़ी मनोहर थी। बीच में गंधकुटी बनाकरचारों तरफ सर्वाण्ह यक्ष सभी के मन को हरने वाले रखे गए। सर्वाण्ह यक्ष अपने मस्तक पर धर्मचक्र धारण किए हुए थे। छह दिन का विधान भक्तिभाव पूर्वक बड़े उत्साह के साथ

सम्पन्न हुआ और सातवें दिन अज्ञान रूपी अन्धकार दूर करने वाला लक्ष दीपोत्सव हुआ। त्रिलोक की रचना कर स्वस्तिक, कलश व विविध प्रकार की डिजाइन में दीप रखकर प्रज्जवलित किए गए। चारों तरफ केवलज्ञान रूपी दीप का प्रकाश फैल रहा था। आचार्य श्री रूपी दीप स्तम्भ से सभी जीवों का अज्ञान रूपी अन्धकार दूर हो गया। जैन धर्म का मर्म सभी को मालूम हो गया।

'गुरु' शब्द का बहुत गहरा अर्थ है। 'गु' का अर्थ है अंधकार, 'रु' का अर्थ है प्रकाश। अर्थात जो सभी जीवों को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं तथा सभी के हृदय में सच्ची ज्योतिजलाते हैं वे ही वास्तव में सच्चे गुरु हैं। कहा भी जाता है-'गुरु की महिमा वरणी न जाए।' गुरु की महिमा का वर्णन वृहस्पति भी नहीं कर सकता फिर हम जैसे सामान्य लोगों की क्या बात है। पू. आचार्य श्री की प्रेरणा से इस विधान के द्वारा विशाल धर्म प्रभावना हुई।

द्वय बाल ब्रह्मचारी बालयोगी बने-20 अक्टूबर 1999

बाल ब्रह्मचारी श्री विजय कुमार एवं अशोक कुमार की गुरु के प्रति असीम निष्ठा थी। उनकी भक्ति देखकर आचार्य श्री ने उन्हें क्षुल्लक दीक्षा दी। दीक्षा के पहले दिन गणधर वलय विधान हुआ व दीक्षार्थियों का जुलूस निकाला गया। ब्र. विजय कुमार को क्षु. श्री जिनसेन तथा ब्र. अशोक कुमार को क्षु. सिद्धसेन नाम दिया गया। छोटी सी उम्र में ही दोनों ने अपना आत्मकल्याण कर लिया। क्षु. सिद्धसेन जी तो चार महीने में ही सरागी से विरागी हो गए अर्थात गृह त्यागकर क्षुल्लक बन संघ में आ गए।

जो वैरागी वही त्यागी, जो त्यागी वही अन्त में कर्मों की निर्जरा कर मोक्ष रूपी मंजिल को पा सकता है। इस प्रकार दीक्षा का कार्यक्रम बहुत ही धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

इसी दिन हुपरी निवासी श्री आण्णा साहेब शेंडुरे ने पू. आचार्य श्री के सामने नारियल चढ़ाकर श्री सम्मेद शिखर जी की यात्रा हेतु विनती की। वैसे तो श्री आण्णा साहेब व फलटण निवासी कु. स्नेहल मेथा तीन चार वर्ष से आचार्य श्री जी के पीछे लगे थे सम्मेद शिखर जी की यात्रा करने के लिए। लेकिन आचार्य श्री जी स्वीकृति नहीं दे रहे थे।

इस वर्ष इन भक्तों का पुण्य उदय में आ गया इसलिए आचार्य श्री ने जाने की हामी भर दी। यह बात सब जगह हवा की तरह फैल गई कि आचार्य श्री शिखर जी जा रहे हैं। रास्ते में पड़ने वाले स्थानों के लोग आचार्य श्री को आमन्त्रण देने आ गए। शिरटी के श्रावकों ने जिद पकड़ ली कि आपको हमारे गांव आना ही पड़ेगा। सन् 1983 में बहुत लोगों ने आचार्य श्री की प्रेरणा से दसलक्षण व्रत, षोडश कारण व्रत लिए थे। उन्हें व्रत का उद्यापन करना था इसलिए वो बार-2 आचार्य श्री से प्रार्थना कर रहे थे। लोगों की अभिलाषा थी कि जिस गुरु से हमने व्रत लिया उन्हीं के सान्निध्य में व्रत का उद्यापन हो। सच्चे भक्तों की भक्ति के आगे आचार्य श्री को झुकना ही पड़ा।

8 नवम्बर 1999 को चातुर्मास पूर्ण होते ही पू. आचार्य श्री का गरग से धर्मनगर की ओर विहार हुआ। जिस दिन आचार्य श्री का विहार होने वाला था सभी लोगों की आंखों में अश्रु छलक रहे थे। संघ को विदाई देने हेतु हजारों लोग धारवाड व हुबली जिले से आए।

आचार्य संघ विहार करते-करते जब कुरूंदवाड पहुंचा तो वहां पर शिरटी के श्रावक आचार्य श्री को बुलाने आ गए। वहां पर बच्चा-बच्चा आचार्य श्री के आगमन की प्रतीक्षा कर रहा था। प्रत्येक व्यक्ति के मन में अपूर्व उत्साह था। सारा गांव झालरों से सजाया गया था। प्रत्येक चौराहे में बड़ी-बड़ी कमानियां बनाई गई थी।

शिरटी में आचार्य श्री का आगमन

शिरटी के श्रावकों ने पू० आचार्य श्री का भव्य स्वागत किया। सभी ने गुरू का दर्शन करके आत्मिक शांति पाई। व्रत उद्यापन के इस छोटे से कार्यक्रम ने विशाल पंच कल्याणिक प्रतिष्ठा का रूप धारण कर लिया। अंतिम दिन तो हाथी, घोड़े, रथ सहित भव्य जुलूस निकला। कार्यक्रम होते ही आचार्य संघ का विहार धर्मनगर की ओर हुआ। मध्यान्ह सामायिक के लिए आचार्य श्री, श्री दत्त सहकारी शक्कर कारखाना शिरोल में गए। वहां के चेयरमेन श्री सा.रे. पाटील पू० आचार्य श्री के दर्शनार्थ वहां आए। आचार्य श्री ने उनसे कहा-'हम आपके कारखाने में सामायिक हेतु आए हैं' तो प्रसन्न होते हुए उन्होंनें कहा-'गुरूदेव। यह सब आपका ही है आपकी ही कृपा से मुझे सफलता प्राप्त हुई है।' आचार्य श्री ने उन्हें श्रीफल देकर आशीर्वाद दिया। तदनन्तर वहां से विहार हुआ। शाम पांच बजे आचार्य श्री का आगमन धर्मनगर में हुआ। आचार्य श्री के पावन चरण रखते ही धर्मनगर में मानो पुनः रौनक सी आ गई। भक्तो का मेला लगने लगा।

सम्मेद शिखर जी निर्विघ्न यात्रा हेतु धर्मनगर में विविध-कार्यक्रम आयोजित किए गए। जैसे नव देवता, नवग्रह, कलिकुंड पार्श्वनाथ, शान्तिनाथ आदि विधान, दीपोत्सव बड़े उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुए। जहां भी आचार्य श्री होते वहीं भक्तों का मेला सा लग जाता। जबसे लोगों को पता लगा कि आचार्य श्री यात्रा हेतु दूर जाने वाले है तो भीड़ का तांता सा लग गया। धर्मनगर में भक्तों का महापुर सा आ गया। कोल्हापुर, सांगली, बेलगांव, बीजापुर, सोलापुर, धारवाड़, सातारा आदि जिले के श्रावक दर्शनार्थ टूट पड़े। सचमुच ऐसा लग रहा था-

गुरुवर के आने से आए बहार।
गुरुवर के जाने से जाए बहार॥

आचार्य श्री तो सारी की सारी बहार लेकर जाने वाले थे। इसलिए तो सभी के चहरे उदास थे। सभी की दिली इच्छा यही थी कि आचार्य श्री का पुनः दर्शन हमें शीघ्र ही हो।'

श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर जी यात्रार्थ आचार्य श्री के विशाल संघ का मंगल विहार-3 दिसम्बर 1999

3 दिसम्बर 1999 शुक्रवार के शुभ दिन पू0 आचार्य श्री का संघ सहित विहार होने वाला था। इसलिए 2 तारीख को भाविक लोग आ गए। पूरी रात भजन कीर्तन में ही बीत गई। भक्तों के भक्तिगीत से धर्मनगर गूंज उठा।

प्रातः 6.30 बजे भूतपूर्व खासदार जवाहर शक्कर कारखाने के चेयरमेन श्री कल्लाप्पाण्णा आवाडे जी और उनकी धर्मपत्नी (इंदिरा महिला सूत गिरणी की अध्यक्षा) सौ0 इंदुमती आवाडे गुरूदर्शन हेतु वहां पहुंचे क्योंकि आचार्य श्री सवा सात बजे विहार करने वाले थे। उससे पहले श्री 1008 भगवान शांतिनाथ का पंचामृताभिषेक हुआ। अभिषेक होते ही आचार्य संघ श्री धर्मनाथ भगवान के दर्शनार्थ गया।

देव वन्दना करके जब आचार्य श्री नीचे आ रहे थे तो लोग की अपार भीड़ खड़ी थी। आचार्य श्री ने सभी श्रावकों को पिछी उठाकर आशीर्वाद दिया। आशीर्वाद मिलते ही सबके चेहरे खिल उठे लेकिन पुनः सभी के चेहरे मुरझा गए। क्योंकि कुछ दिनों के लिए गुरु का वियोग होने वाला था। लोगों की अश्रुधारा बहने लगी।

जहां आप जाते है गुरुवर
फूल खिलते है लोगों के दिल पर
आपका विहार होता जहां से
लोग दिखते है मुरझाए गुल से।

दक्षिण का सूर्य उत्तर की ओर जा रहा था। दक्षिण भाग में कुछ समय के लिए अंधेरा होने वाला था। इसलिए लोग व्याकुल हो रहे थे।

माननीय श्री कल्लापाण्णा आवाडे जी एवं उनकी धर्मपत्नी इंदुमती आवाडे ने पूज्य आचार्य श्री के चरण कमलो का प्रक्षालन नारियल के जल से किया। और भगवान से प्रार्थना की कि-'आचार्य श्री की यात्रा निर्विघ्न हो। और आचार्य श्री के दर्शन शीघ्रता शीघ्र हो।' ऐसी शुभ कामना व्यक्त करते हुए उन्होंने आचार्य संघ को विदाई दी। मंगल विहार में धर्मनगर से लेकर जयसिंगपुर तक विशाल जन समुदाय पू० आचार्य श्री जी के साथ था। इस भव्य एवं दिव्य जुलूस में बैंड बाजे वाले मंगल गीतों की ध्वनि से सबका मन लुभा रहे थे। तदनन्तर ऐरावत हाथी, जिस पर म्हसवड निवासी श्री देशमाने धर्मध्वजा लिए विराजमान थे। उसके पीछे दो सुन्दर रथ थे। प्रथम रथ में संघपति श्री अण्णा साहेब शेंडुरे अपनी धर्मपत्नी सौभाग्यवती कमल सहित विराजमान थे। भगवान धर्मनाथ की मूर्ति इस मनोहारी जुलूस में सुशोभित हो रही थी। तथा दूसरे रथ में भवतारणी श्री जिनवाणी माता को लिए संघपति श्रीमती कस्तूरबाई नेमचन्द मेथा एवं उनकी सुकन्या कु० स्नेहल मेथा विराजमान थी। झांजपथक आदि विविध वाद्य भी जुलूस की शोभा बढ़ा रहे थे। वीर सेवा दल के युवक भक्तिपूर्वक नृत्य गान आदि कर रहे थे। सुहागिन महिलाएं मंगल कलश लेकर आगे चल रही थी। तदनन्तर आचार्य संघ धीरे-धीरे कदम बढ़ाते हुए आगे बढ़ रहा था। उनके पीछे-पीछे सम्मेद शिखर जी यात्रा हेतु जाने वाली 25-30 गाड़िया थी। इसी मंगल विहार में वस्त्र उद्योग मंत्री श्रीमान् प्रकाश आवाडे जी भी पू० आचार्य श्री के दर्शनार्थ पधारे और अपनी शुभेच्छा व्यक्त करके उनके चरणों की धूल अपने मस्तक पर लगाकर वे स्वयं को धन्य मान रहे थे।

देखते-देखते आचार्य संघ जयसिंगपुर पहुंच गया। वहां पर संघ का भव्य स्वागत हुआ। भगवान पारसनाथ के-मंदिर में प्रवेश करते ही कर्नाटक राज्य मंत्री श्रीमान बाबागौंडा पाटील पू० आचार्यश्री के दर्शनों के लिए वहां आए। और अपनी शुभेच्छा व्यक्त की। उसके बाद आचार्य श्री आहार चर्या के लिए निकले। उस दिन आचार्य श्री का आहार धर्मनगर के अध्यक्ष श्रीमान् वीरगोंडा पाटील के यहां निरन्तराय हो गया। आहार दान करके उनको असीम सुख मिला। सामायिक के बाद मंगल प्रवचन हुआ। इसी बीच द्वय संघपति का सत्कार-समारोह हुआ। तदनन्तर शाम चार बजे उदगांव कुंजवन की ओर विहार प्रारम्भ हुआ।

आचार्य श्री के संघ में सम्मेद शिखर की यात्रा हेतु 5 मुनिराज, 10 आर्यिकाएं, 8 क्षुल्लक जी, 5 क्षुल्लिकाएं, ब्रह्मचारी तथा ब्रह्मचारिणी आदि थे। 18-20 चौके वालों सहित लगभग 250 श्रावक श्राविकाएं भी शामिल थे। आचार्य संघ अपने समस्त काफिले के साथ चल पड़ा, अपनी मंजिल पाने के लिए।

इस विशाल समुदाय को देखकर सभी गांवो के लोग इनकी सराहना कर रहे थे ये सच भी है कि-शिखर जी की यात्रा बड़े पुण्य व भाग्य से ही मिलती है। यात्रा तो सभी करते है। लेकिन इतने विशाल आचार्य संघ के साथ यात्रा करना कोई मामूली बात नहीं है और वो भी आचार्य श्री बाहुबली सागर जैसे संतो के साथ करना कई जन्मों के पुण्य का फल है।

विहार आनन्द के साथ सतत् जारी था, लेकिन संसार के सुख-दुख, धूप-छांव, एक ही सिक्के के दो पहलू है। जिसका क्रम चलता रहता है कभी कोई सा पहलू सामने आ जाता है तो कभी कोई सा। इसी क्रम में एक घटना घटित हो गई।

क्षुल्लिका सुनन्दामती माताजी की समाधि

विहार करते हुए संघ दहीवडि तक पहुंच गया। वहां से फलटण की ओर जाते समय 13 तारीख का आहार मोगराले स्कूल में होने वाला था।

सुबह 6.30 बजे संघस्थ साधुओं ने विहार किया। क्षु० सुनन्दा माताजी ने आचार्य वन्दना करने के बाद आचार्य श्री से प्रार्थना की-'हे गुरूदेव। आज मुझे बहुत कमजोरी लग रही है। दो तीन कि०मी० चलने के बाद यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं गाड़ी से आगे चली जाऊंगी। उनकी तबियत खराब देखकर आचार्य श्री ने उन्हें आज्ञा दे दी। आचार्य श्री से आज्ञा लेकर वो चली गई। वहां पहुंचते ही उन्होंने भगवान महावीर स्वामी का भक्ति भाव से दर्शन करके गंधोदक ले प्रातर्विधी के लिए जंगल चली गई। वहां से आने के पश्चात् उनकी छाती में हल्का सा दर्द हुआ। उस समय माताजी अरिहन्त-अरिहन्त कह रही थी। वहीं उन्हें चक्कर आ गया। होश में आते ही वो बस यहीं कह रही थी कि 'गुरूदेव को बुलाओ.......।' माता जी की अवस्था देखकर कुछ श्राविकाएं दौड़ी आई। माताजी की वाणी बन्द हो गई थी। उन्होंने इशारे से सभी को णमोकार मंत्र बोलने के लिए कहा। णमोकार मंत्र का स्मरण करते-करते उन्हें हिचकी आई और उनकी वहीं प्राण पखेरू उड़ गए। नश्वर शरीर का उन्होंने त्याग कर दिया। ये दृश्य देखकर संघपति घबरा गए। उन्हें रोना आ गया। वे तुरन्त गाड़ी लेकर आचार्य श्री के पास आए। तथा गुरुदेव को सारा वृतान्त सुनाया। आचार्य श्री ने उन्हें धैर्य बंधाया तथा संघ जल्दी-जल्दी चलकर मोगराले आ गया। आचार्य श्री ने सभी को समझाते हुए कहा-'आयु की डोर किसी के हाथ में नहीं हैं सभी को एक ना एक दिन तो मरना ही होगा।' अर्थात्

पानी का सा बुलबुला अस मानस की जात।
देखत ही बुझ जात है, ज्यो तारा परभात॥

इष्टोपदेश में पूज्यपाद स्वामी ने एक जगह कहा भी है-

दिग्देशेभ्यः खगा एत्य संवसंति नगे-नगे।
स्व स्वकार्य वशाद्यांति देशे दिक्षु प्रगे-प्रगे॥

अर्थात् हर जगह के पक्षी रात में एक ही स्थान पर विश्राम के लिए आते है और सुबह होते ही अपनी दिशा की ओर मुड़ जाते हैं। माताजी ने भी इस पर्याय में अनेक उपवास आदि करके अपने जीवन को सफल बनाया। संयम में ही प्राण त्याग कर दिए।

मोगराले गांव में जैन समाज नहीं था। अंत्य क्रिया हेतु फलटण, वडूज, दहिवड़ी ले जाने का सभी लोग विचार करने लगे। इतने में उसी गांव के एक भद्र सदस्य ने संघपति से कहा-आप लोग हमारे खेत में ही माताजी का अन्तिम संस्कार कीजिए। आपको जितनी जगह चाहिए उतनी ले लीजिए। नारायण जगदाले जाति से मराठा थे। उनके खेत में अन्तिम संस्कार हुआ। उस समय वहां फलटण, वडूज, दहिवड़ी, म्हसवड आदि गांव के हजारों लोग वहां उपस्थित थे। अन्य जाति के लोग भी वहां उपस्थित थे। पू० आचार्य श्री ने गांव वालों को समझाते हुए कहा-'यदि आप मांस भक्षण त्याग

करोगे तो आप सबको क्रिया करने को मिलेगी।' आचार्य श्री की शांत और सौम्य मुद्रा देखते ही सभी ग्रामवासी नतमस्तक हो गए। सरपंच, शिक्षक आदि सभी ग्रामवासियों ने आचार्य श्री से व्रत ले लिया-'हम आज से निर्व्यसनी रहेगें। सभी प्रकार के व्यसन का त्याग हम आपकी साक्षी से करते है। और सदैव शाकाहारी ही रहेंगे। सच ही है भव्य जीव किसी भी जाति में अथवा योनि में जन्में, वह गुरू उपदेश सुनकर संसार से भयभीत अवश्य ही होता है। जैसे खदिरसा भील ने भी सभी प्रकार के मांस का त्याग कर अपनी गति सुधार ली।

यहां के भद्र जीव भी अपनी गति अवश्य सुधारेगें। जय-जयकार की ध्वनि से नभ गूंज उठा। आगे आचार्य श्री ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा 'माताजी के निमित्त से आपका गांव पवित्र हो गया। इसलिए यहां एक समाधि स्थल निर्मित्त हो बस यही हमारी इच्छा है।' आचार्य श्री के वचन सुनते ही दहिवडी, बड्डुज, म्हसवउ, फलटण व इतर सभी जाति के बन्धुओ ने कहा-'गुरुदेव' हम आपकी इच्छा जरूर पूरी करेंगे।' क्षणभर में पांच लाख से अधिक पैसा इकट्ठा हो गया। ग्रामवासी पानी व लाइट की व्यवस्था करने को तैयार हो गए। उस स्थान का नाम 'सुनन्दा त्यागी निवास' रखने का निश्चय हो गया। उस रास्ते से गुजरने वाले त्यागियों के लिए रूकने का एक स्थान हो गया। आचार्य श्री की कृपा से एक सामान्य भूमि तीर्थ के रूप में बदल गई। आचार्य संघ फलटण की ओर आगे बढ़ गया।

जैनों की काशी फलटण में पू० आचार्य श्री का जन्मोत्सव

फलटण के संघपति श्रीमती कस्तूरबाई नेमचन्द मेथा जी की तीव्र तमन्ना थी कि पू० आचार्य श्री का जन्मोत्सव इस वर्ष फलटण में ही हो। उनकी यह इच्छा पूर्ण हुई। 15 दिसम्बर को पू० आचार्य श्री का फलटण में भव्य आगमन हुआ। 16 दिसम्बर का दिन खुशियां बिखेरता हुआ आ गया सबके मन आनन्द से पुलकित हो उठे। हर जगह रौनक ही रौनक थी। पूरी फलटण नगरी में भव्य जलूस निकला। दो रथ, हाथी, घोड़े, पालकी से ये विशाल जुलूस सुशोभित था। सभी महिलाएं केसरिया साड़ी पहनकर हाथों में कलश लिए जुलूस की शोभा बढ़ा रही थी। लोग उत्साह से नाचते हुए पुष्पवृष्टि कर रहे थे। दोपहर में गांव के कई लोगों ने हार्दिक शुभेच्छा व्यक्त की कि-'आचार्य श्री दीर्घायु हों, उनकी कीर्ति अजर अमर हो।'

जन्मोत्सव का कार्यक्रम चल ही रहा था तभी दिल्ली निवासी श्री विनेश जी की धर्मपत्नी सौ० सुनीता जैन का पत्र आया उन्होंने आचार्य श्री के दीर्घायु की कामना करते हुए अपनी भावनाओं को अपनी मित्र सरिता 'साहिल' से काव्यरूप में परिणति कराके प्रेषित की। जो इस प्रकार है-

नीचे जमीं और ऊपर है अम्बर
बड़ा शुभ है 16 दिसम्बर
दुनिया की भगदड़ से हटकर
जन्मे खेतों में गुरूवर
अक्का मां की आंखों के तारे
बलवंत पिता के बड़े दुलारे
दुनिया को नई राह दिखाई
जग झमेले से खुद मुक्ति पाई
भाए नहीं आपको कभी आडम्बर

बड़ा शुभ है 16 दिसम्बर
चन्द्र की जैसे 16 कलाएं
आपकी कीर्ति की 16 सौ विधाएं
पुंज हो आप जैसे धर्म के
मतलब बताएं आपने ही कर्म के
कीर्ति बढ़ती रहे जैसे हो समुन्दर
बड़ा शुभ है 16 दिसम्बर।

शुभकामनाओं के बाद आचार्य श्री का पाद प्रक्षालन किया गया। 68 दीपों से आचार्य श्री की आरती उतारी गई। सांगली निवासी श्री अजित उपाध्ये ने 68 पेड़ों की मानस्तम्भ की सुन्दर प्रतिकृति बनाकर पू० आचार्य श्री के सामने समर्पित की। गुलाब व चांदी के पुष्पो से पुष्पवृष्टि की गई। इस प्रकार अति नयन रम्य कार्यक्रम इस फलटण नगरी में हुआ।

इसी दिन पू० आचार्य श्री के शुभ हाथ से भगवान आदिनाथ प्राचीन जिनमंदिर के शिखर पर स्वर्ण कलश चढ़ाया गया। और नवल बाई मंगल धाम के ऊपर बने हुए नूतन शांति सागर हॉल का उद्घाटन भी पूज्य आचार्य श्री के सानिध्य में हुआ।

17 तारीख को पू० आचार्य श्री का विहार दहिगांव की ओर हुआ। दहिगांव में पूजा स्तवन वन्दन करके आहार के पश्चात् आचार्य संघ का विहार अकलूज की ओर हुआ।

कुबेर नगरी अकलूज में आचार्य श्री का भव्य आगमन

अकलूज में जैन समाज के लगभग 200 घर है। सभी सम्पन्न होने के साथ-साथ देवशास्त्र गुरु के प्रति निष्ठावान भी है। अकलूज में आचार्य श्री जी का चातुर्मास भी बड़ी ही धर्मप्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ था।

मालशिरस में जहां आचार्य श्री की प्रेरणा से नूतन जिन मंदिर का निर्माण हो रहा है वहां से सामायिक के बाद आचार्य संघ का विहार हुआ। जीवराज नगर में अकलूज के बाहर श्री बाबू भाई (हीरा लाल) गांधी जी एक नवदेवता जिन मंदिर का निर्माण करा रहे हैं। वो आचार्य श्री को मंदिर दिखाने के लिए वहां ले गए तथा अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, जिन धर्म, जिनागम, जिनचैत्य, जिन चैत्यालय की मूर्ति आचार्य श्री को दिखाई। त्यागी निवास चौंके के कमरे, सभा मंडप, आदि को देखकर-आचार्य श्री को संतोष हुआ। पू० आचार्य श्री ने श्री बाबू भाई को उन्नत होने का आशीर्वाद दिया।

तदनन्तर आचार्य श्री का संग्राम नगर में भव्य स्वागत हुआ। गुरूभक्त श्री माणिक चन्द दोशी व श्री फूलचन्द फडे के यहां आचार्य संघ की रात्रि में रूकने की व्यवस्था की गई। उन्होंने मन, वचन, तन से सभी त्यागियों की सेवा की। दूसरे दिन प्रातः अकलूज नगरी में आचार्य संघ का भव्य स्वागत हुआ। अकलूज निवासी गुरूभक्त श्री प्रद्युन गांधी, श्री सुनील दोशी, विनोद दोशी, (भांबुर्डे कर) श्री विजय गांधी, श्री बाहुबली चंकेश्वरा, श्री जवाहर मोतीलाल फडे, श्री शीतल दोशी आदि प्रमुख लोगों ने आचार्य संघ को अकलूज लाने के लिए विशेष परिश्रम किया।

घोड़े, रथ व बैंड बाजे सहित आचार्य श्री का प्रवेश इस धर्मपुरी में हुआ। नगर में प्रवेश करते ही श्रीमान बाहुबली चंकेश्वरा ने गुरू पाद प्रक्षालन करके महान पुण्य कमाया। भव्य जुलूस के साथ ही आचार्य संघ ने श्री 1008 बाहुबली

जिन मंदिर के दर्शन कर व भगवान श्री 1008 मुनि सुब्रत जिनमंदिर के दर्शन कर समाधान प्राप्त किया। उसके पश्चात् भगवान महावीर मंदिर में इस विशाल संघ का आगमन हुआ। प्रत्येक घर के दरवाजे पर पाद प्रक्षालन पुष्पवृष्टि हो रही थी। मध्यान्ह दो बजे विशाल जन समुदाय के समक्ष अकलूज समाज ने संघपति श्री अण्णा साहेब शेंडुरे को 'समाजभूषण', व श्रीमती कस्तूर बाई मेथा को 'त्यागमूर्ति' पद्वी से सम्मानित किया। तदनन्तर आचार्य श्री ने सारी समाज को सम्बोधित करते हुए कहा-'स्वयं सिद्ध पद प्राप्त करने के लिए सिद्धों की वन्दना करना आवश्यक हैं उनकी आराधना से ही हम भव समुद्र से पार हो सकते है।' प्रवचन होते ही श्री सिद्ध क्षेत्र कुंथलगिरी की ओर विहार हुआ।

भगवान देशभूषण-कुलभूषण सिद्ध क्षेत्र कुंथलगिरी

आचार्य श्री का संघ अकलूज से धीरे-धीरे कुर्डुवाडी, शेन्द्री, भूम आदि होते हुए श्री सिद्धक्षेत्र कुंथलगिरी आ पहुंचा। गुरूकुल के नन्हे-नन्हे बच्चे गुरूदेव के दर्शन के लिए आ गए। सभी बच्चे जोर-जोर से एक स्वर में नारे लगा रहे थे। आगे-आगे बैंड बाजे, पीछे-पीछे सभी बच्चों का समुदाय लाइन में चल रहा था। जय-जयकार के मंगल गान से सभी आचार्य श्री की भक्ति कर रहे थे जैसे झाड़ के फूल नीचे गिरते है वैसे ही सभी श्रावक श्राविकाएं निरागस बच्चे गुरुदेव के चरणों में 'नमोऽस्तु कहकर' झुक रहे थे। आचार्य श्री सभी को 'सद्धर्म वृद्धि' आशीर्वाद दे रहे थे। कुछ ही क्षणों में आचार्य संघ ने क्षेत्र में प्रवेश किया। समवशरण आदि जिनमंदिरों के दर्शन करते हुए वो अपने संघ सहित पहाड़ पर गए। भगवान कुलभूषण-देशभूषण जी का दर्शन वन्दन, पूजा आदि के पश्चात् संघ नीचे आ गया। आहार चर्या हुई। दो दिन आचार्य श्री का वास्तव्य वही था। संघपति सह सभी श्रावक श्राविकाओं ने अभिषेक पूजन करके सातिशय पुण्य कमाया। उसके पश्चात् आचार्य श्री ने अपने प्रवचन में कहा-'भव्य बन्धुओं। आप लोग जो नयन रम्य भगवान कुलभूषण-देशभूषण की मूर्ति निहार रहे है, इसकी कहानी बहुत रहस्य भरी है।

महापुरूष रामचंद्र जी के समय की बात है। सिद्धार्थ नगरी के राजा क्षेमंकर और रानी विमला देवी थे। उनके दो पुत्र थे-एक देशभूषण और दूसरा कुलभूषण। दोनों भाईयों को एक दूसरे के प्रति अपार प्रेम था मात्र इसी भव में नहीं बल्कि पूर्व में अनेक भव से एक दूसरे के भाई थे दोनों भाई आत्मा को जानने वाले थे और पूर्वभव के संस्कारी थे।

राजा ने बाल्यावस्था से ही दोनों को विद्याभ्यास के लिए गुरूकुल भेज दिया था। पंद्रह वर्ष तक दोनों भाई विद्याभ्यास में इतने मस्त थे कि विद्यागुरू के अलावा किसी और को तो जानते तक नहीं थे विद्याभ्यास पूरा करके जिस समय दोनों युवा राजकुमार घर आये, उस समय राजा ने नगरी का श्रृंगार करके उनका भव्य सम्मान किया और उनके विवाह के लिए राजकन्याओं को पंसद करने की तैयारी की।

दोनों भाइयों की स्वागत यात्रा नगरी में घूमती-घूमती राजमहल के पास आयी, वहाँ झरोखे में एक अति सुंदर राजकन्या प्रसन्न चित्त खड़ी थी उसका अद्भूत रूप देखकर दोनों राजकुमार उसके ऊपर मुग्ध हो गए। वह राजकन्या भी एक टक उनको देख रही थी, दोनों का रूप निहारती-निहारती वह बहुत प्रसन्न हो रही थी।

अब एक साथ उन देशभूषण और कुलभूषण दोनों भाइयों को ऐसा लगने लगा कि राजकन्या मेरे लिए ही है। वह मेरे ऊपर प्रसन्न हो रही है, मैं ही उससे विवाह करूंगा, परंतु दूसरा भाई भी इसी राजकन्या के ऊपर ही नजर रखकर उसे राग से निहार रहा था यह देखकर दोनों को एक दूसरे पर द्वेष आया कि यदि मेरा भाई इस कन्या के ऊपर नजर रखेगा तो मैं उसे मारकर इस राजकन्या से विवाह करूंगा। ऐसा मन ही मन एक दूसरे को मारकर उस राजकन्या से विवाह करने की सोच रहे थे। दोनों का चित्त एक ही राजकुमारी में एकदम आसक्त था, इस कारण वे एक दूसरे से कहने लगे -

"इस राजकुमारी के साथ मैं विवाह करूंगा, तुम नहीं।" इस प्रकार तू तू मैं मैं करते-करते दोनों भाई हाथी के ऊपर बैठे-बैठे वाद-विवाद करने लगे। कन्या के मोहवश दोनों भाई एक दूसरे के प्रति प्रेम भूल गए और द्वैषपूर्ण बर्ताव करने लगे। कन्या की खातिर एक दूसरे से लड़ने के लिए तैयार हो गए।

अरे विषयासक्ति! भाई-भाई के स्नेह को भी तोड़ देती है चार-चार भव से परम स्नेह रखने वाले दोनों भाई इस समय विषयासक्ति वश एक दूसरे को मारने के लिए भी तैयार हो गये।

इतने में कुछ शब्द उनके कान में पड़ते ही दोनों भाई चौंक गये..... जैसे बिजली ही उनके ऊपर गिर गई हों, कैसे दोनों स्तब्ध हो गए?..... क्या शब्द थे वे?

उनके साथ के बुद्धिमान मंत्री ने दोनों राजकुमारों को लड़ाई की तैयारी करते देखा। तथा दोनों की नजर भी राजकुमारी की ओर लगी है यह देखकर, बुद्धिमानमंत्री परिस्थिति को समझ गए कि ये दोनों राजकुमारी के लिए लड़ रहे है ..... उन्होनें कहा -

"देखो, राजकुमारों! सामने राजमहल के झरोखे में तुम्हारी बहिन खड़ी है, बहुत वर्षो बाद तुम्हें पहली बार देखकर अत्यंत प्रसन्न हो रही है कि अहा! कितने अच्छे लग रहे है मेरे भाई! अतः टकटकी लगाकर तुम्हें निहार रही है। तुम विद्याभ्यास करने गए थे। उसके बाद उसका जन्म हुआ था। यह तुम्हारी बहिन तुम्हें पहली बार देखकर कितनी खुश है! तुम भी उसे पहली बार देख रहे हो.....।"

"अरे! इस झरोखे में खड़ी-खड़ी जो हमारे सामने हंस रही है वह राजकुमारी कोई ओर नहीं, हमारी ही सगी बहन है।"

ऐसा जानकर दोनों भाइयों के मन को जबरदस्त झटका लगा लज्जा से वे वहीं ठहर गए। वे सोचने लगे-"अरे! यह तो हमारी छोटी बहिन है। हमने इसे कभी देखा नहीं, जिससे समझ नही सके। अज्ञानता के कारण हम अपनी बहिन के ऊपर ही विकार से मोहित हुए और एक दूसरे को मारने का विचार करने लगे। अरे, विषयांध होकर हम भाई-भाई के स्नेह को ही भूले। हाय रे! हमें यह दुष्ट विचार क्यों आया?

अरे! ऐसे संसार में क्या रहना! जहाँ एक भव की स्त्री दूसरे भव में माता या बहिन हो, एक भव की बहिन दूसरे भव में स्त्री वगैरह हो। अब इस संसार से विराम लेना चाहिए। अनेक दुःखों से भरा यह संसार, जिसमें दुष्ट मोह, जीव को अनेक प्रकार से नाच नचाता है। हमें धिक्कार है कि मोह के वश होकर अपनी बहिन के ऊपर विकार किया। अरे! अब माता-पिता को हम क्या मुँह दिखायेंगे।"

ऐसा विचार करके उन्हें राजमहल जाने में शर्म महसूस हुई इस प्रकार संसार को असार समझ कर दोनों भाई अत्यंत विरक्त हुए और वहाँ से लौट गये और जिनदीक्षा लेकर मुनि हो गये। मुनि देशभूषण और कुलभूषण आत्मसाधना में तत्पर हुए। वे देश देशांतर में विचरण करते हुए पृथ्वी को तीर्थरूप बनाने लगे।..... उनके पिता दोनों पुत्रों के विरह में आहार को त्याग करके, प्राण छोड़कर भवनवासी देव में गरूडेन्द्र हुए।

देशभूषण और कुलभूषण दोनों राजकुमार भाई जिस समय एकाएक संसार से विरक्त होकर मुनि दीक्षा लेने के लिए तैयार हुए, उसी समय पुत्र वियोग से व्याकुल माता ने पुत्रों को रोकने हेतु बहुत प्रयत्न किया। उसकी बहिन ने भी मुनिपने में बहुत कष्ट बताते हुए कहा-"हे बंधुओ! वहाँ कोई माता पिता या परिवार नहीं है। कुंटुंब के बिना वन में अकेले किस प्रकार रहोगे?"

तब वैरागी कुमारों ने कहा।

"हे माता! हे बहन! मुनिदीक्षा में तो महा आनंद है। वहाँ कोई आत्मा अकेली नहीं है उनका महान् चैतन्य उनके साथ ही है।"

कहा भी है -

"धैर्यं यस्य पिता क्षमाच जननि शांतिश्चिरं गेहिनी,
सत्यं सुनुरयं दया च भगिनी भ्राता मनः संयमः।
शय्या भूमितलं दिशोऽपि वसनं ज्ञानामृतं भोजनं
एते यस्य कुटुंबिनो वद सखे! कस्मात् भयं योगिनः॥

धैर्य जिसका पिता है, क्षमा जिसकी माता है। अत्यंत शांति जिसकी गृहिणी है, सत्य जिसका पुत्र है, दया जिसकी बहन है और संयम जिसकी भाई है, ऐसा उत्तम वीतरागी परिवार मुनियों को जंगल में आनंद देता है फिर पृथ्वी जिसकी शय्या है, आकाश जिसके वस्त्र है, ज्ञानामृत जिसका भोजन है-ऐसे योगी को कैसा डर होवे? भय तो इस मोहमयी संसार में है मोक्ष के साधकों को भय कैसा?"

ऐसा कहकर देशभूषण कुलभूषण दोनों कुमार वन में चले गए और दीक्षा लेकर मुनि हो गए। उनकी बहन आर्यिका हो गयी। दोनों राजकुमार मुनि होकर चैतन्य के अनंत गुण परिवार के साथ अत्यंत आनंद के साथ क्रीड़ा करने लगे। शुद्धोपयोग के द्वारा निज-गुण के सपरिवार के साथ भाव विभोर होते हुए मोक्ष की साधना करने लगे।

जिस समय राम, लक्ष्मण और सीता वंशधर पर्वत के पास आये थे उसी समय देशभूषण-कुलभषण मुनिवर उस पर्वत पर विराजे थे और ध्यान मग्न थे। उस समय पूर्वभव बैरी दुष्ट अग्निप्रभदेव तीन दिन से उनके ऊपर दैवी मायाजाल के द्वारा घोर उपद्रव कर रहा था।

श्री केवली भगवान की वाणी में ऐसा आया था कि मुनिसुव्रत प्रभु के बाद उनके शासन में देशभूषण कुलभूषण केवलज्ञानी होंगे-ऐसा सुनकर पूर्व की द्वेषबुद्धि से प्रेरित होकर दुष्ट अग्निप्रभदेव ने विचार किया कि मैं उनके ऊपर उपसर्ग करूंगा तो केवली भगवान का वचन मिथ्या हो जाएगा। ऐसा मिथ्याबुद्धि के द्वारा वह देशभूषण और कुलभूषण मुनिराजों के ऊपर उपसर्ग करने लगा।

विक्रिया के द्वारा सर्प और चींटी बनकर उनसे लिपट जाता, ऐसी गर्जना करता कि पर्वत कांप उठता ..... क्रूर पशुओं का रूप धारण कर मुनियों को खा जाने की चेष्टा करता। रोज रात होने के बाद उन ध्यानस्थ मुनियों के ऊपर उपसर्ग करता। उन उपसर्गों की भयानक आवाज दस-दस गांव के लोगों तक सुनाई देती थी। वह आवाज सुनकर नगरजन भय से कांप उठते..... राजा भी कोई उपाय न कर सके थे, इसलिए भय के कारण राजा-प्रजा सभी रात को वह नगरी छोड़कर दूर चले जाते।

इस प्रकार अत्यंत भयभीत नगरजनों को देखकर राम ने उसका कारण पूछा? और पर्वत पर जाने को उद्यत हुए, तब नगरजनों ने कहा -

"यहाँ रोज के समय कोई दुष्ट देव भयंकर उपसर्ग करता है उसकी अत्यंत कर्कश आवाज से यहां के सभी जन भयभीत हैं। पता ही नहीं चलता कि पर्वत के ऊपर रोज रात्रि को क्या होता हैं। वहाँ बहुत डर है जिसे तुम जान नहीं सकते, इसलिए तुम वहाँ नहीं जाओ, तुम भी हमारे साथ में सुरक्षित स्थान में चलो।"

ऐसा सुनकर सीता भी भयभीत होकर कहने लगी-"हे देव! आप वहाँ मत जाइये! चलो हम भी उन लोगों के साथ जाएंगे और निर्भय स्थान में जाकर रात बितायेंगे।"

उस समय राम ने हंसकर कहा-"हे जानकी! तुम तो बहुत कमजोर हो। तुम्हें लोगों के साथ जाना है तो तुम जाओ मैं तो इसी पर्वत के ऊपर रात को रहूंगा और वहाँ यह सब क्या हो रहा है उसे देखूंगा। मुझे कोई डर नहीं हैं।''

तब सीता ने कहा-"हे नाथ! तुम्हारा हठ दुर्निवार है। तुम जाओगे तो मैं भी साथ ही जाऊंगी। आप और लक्ष्मण जैसे वीर हमारे साथ हो, फिर मुझे भी कैसा भय? ऐसा कहकर वह भी राम लक्ष्मण के साथ ही वंशधर पर्वत की ओर ही जाने लगी।

लोगों ने उन्हें न जाने के लिए बहुत समझाया परन्तु राम लक्ष्मण, निर्भयता पूर्वक पर्वत के ऊपर जाने लगे, सीता भी उनके साथ गयी। सीता भय से कहीं पर्वत के ऊपर से गिर न जाए-ऐसा विचार कर राम आगे और लक्ष्मण पीछे, बीच में सीता-इस प्रकार दोनों भाई बहुत सावधानी से सीता को पहाड़ के शिखर के ऊपर तक ले गये।

पहाड़ के ऊपर जाकर देखा तो वहां अद्‌भुत आश्चर्य कारी दृश्य देखा। अहो! अत्यंत सुकोमल दो युवा मुनि भगवंत खडे-खडे देह से भिन्न आत्मा का ध्यान कर रहे है नदी के समान गंभीर उनकी शांत मुद्रा है-ऐसे वीतरागी मुनि भगवंतों को देखकर उन्हें अत्यंत प्रसन्नता हुई और भक्ति भाव से स्तुति की कि पर्वत के ऊपर रहने वाले पशु भी सुनकर मोहित हुए और वहां आकर शांति से बैठ गए। उसके बाद राम-लक्ष्मण, सीता वहीं रूक गए।

फिर रात हुई····· और असुर उपद्रव करने वहां पहुंचा, वहां भयंकर सर्प का रूप लेकर जीवो को ललकारते हए वह उन मुनियों से लिपट गया। राम-लक्ष्मण इस उपद्रव को देखकर असुर की माया समझकर उस पर अतिशय क्रोधित हुए। सीता तो उनका भयंकर रूप देखकर भय से राम से लिपट गयी····· तब राम ने कहा कि "हे देवी! तू भय न कर।"

इस प्रकार सीता को धीरज बंधाकर दोनों भाइयों ने मुनियों के शरीर से सर्प को दूर किया। बलदेव और वासुदेव के पुण्य के प्रताप से असुरदेवों की विक्रिया का जोर नही चला उसने विक्रियाजनित माया समेट ली। इस प्रकार उपसर्ग दूर हुआ समझकर राम, लक्ष्मण, सीता आनंद सहित मुनिराजों की स्तुति करने लगे।

"हे देव! आप तो संसार से उदास मोक्ष के साधक हो, आप मंगल हो, आपकी शरण लेकर भव्य जीवो का भवरूपी उपद्रव दूर हो जाता है और आनंदमयी मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है। अहो आप जिनमार्ग के प्रकाशक हो आत्मा की साधना में आप मेरु के समान निश्चल हो। तुच्छ असुर देव तीन-तीन रात से घोर उपद्रव करते रहे, फिर भी आप आत्म साधना से नहीं डिगे, जरा सा विकल्प भी नहीं किया। धन्य है आपकी वीतरागता। आपके पास एक नहीं परंतु अनेक उपलब्धियाँ है, आप चाहे तो असुर देव को क्षणमात्र में भगा सकते है।····· परंतु बहुत उपसर्गकर्त्ता के प्रति भी द्वेष नहीं। ऐसे आप चैतन्य के ध्यान के द्वारा केवलज्ञान साधने में तत्पर हो।"

इस प्रकार बहुत स्तुति करते रहे·····। लेकिन वहाँ मध्यरात्रि के समय वह दुष्ट देव फिर से आया और मुनियों के ऊपर पुनः उपद्रव करने लगा। भयानक रूप धारण करके राक्षस और भूतों के समूह नाचने लगे। विचित्र आवाज करके शरीर में से अग्नि की लपटें निकालने लगे।····· हाथ में तलवार भाला लेकर कूदने लगे। उनके शोर से पर्वत की शिलाएं भी कांपने लगी मानो कोई भयानक भूकंप आया हो। बाहर में यह सब कुछ हो रहा था। उसी समय दोनों मुनिवर अंदर शुक्ल ध्यान में मग्न होकर अपार सुख का आनंद ले रहे थे। बाहर क्या हो रहा है। इस पर उनका लक्ष्य नहीं था सीता यह दृश्य देखकर पुनः भयभीत हो गई, तब राम ने कहा-

"देवी! तुम डरो मत, तुम इन मुनिवरों के चरणों में ही बैठी रहो, वहाँ हम उन दुष्टों के भगाकर आते हैं।" ऐसा कहकर सीता को मुनि के चरणों के समीप छोड़कर राम-लक्ष्मण ने दुष्ट असुर देवों को ललकारा।

राम की धनुष की टंकार से ऐसा लगने लगा जैसे वज्रपात हो गया है। लक्ष्मण भी सिंह गर्जना करके अग्निप्रभ के पीछे दौड़ा। अग्निप्रभ देव समझ गया कि ये कोई साधारण मनुष्य नहीं है ये तो महाप्रतापी बलदेव और वासुदेव हैं उनका पुण्य प्रताप प्राप्त देखकर वह अग्निप्रभ देव भाग गया और उसकी माया भी समाप्त हो गयी तथा फिर से उपद्रव दूर हुआ। उपसर्ग दूर होते ही ध्यान में लीन देशभूषण और कुलभूषण मुनिराजों को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। तब केवलज्ञान के उत्सव को मनाने के लिए बहुत देव आए। चारों और मंगल नाद होने लगा। रात्रि भी दिव्य प्रकाश से जगमगा उठी। केवलज्ञान के प्रताप से रात और दिन में कोई भेद नहीं रहा।

अहो, अपने सामने मुनि भगवंतो को केवलज्ञान होता देखकर राम लक्ष्मण सीता के तो आनंद का पार न रहा। हर्षित होकर उन्होनें सर्वज्ञ भगवंतो की भक्ति भाव से परम स्तुति की, दिव्य ध्वनि द्वारा भगवान का उपदेश सुना। अहो, प्रभु के श्रीमुख से परम अद्‌भूत गंभीर महिमा सुनकर उनके आनंद का पार नहीं रहा। देशभूषण और कुलभूषण के पिता जो मरकर गरुडेन्द्र हुए थे वे भी केवली भगवान के दर्शन करने के लिए आए। राम लक्ष्मण से वे अत्यंत प्रसन्न हुए। और आदरपूर्वक बोले, ये दोनों मुनि हमारे पूर्वभव के पुत्र है तुमने उनकी भक्ति भाव से उनका उपसर्ग दूर किया यह देखकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ हूं इसलिए जो मांगना हो वह मांगो। मैं वह दूंगा। तब राम ने कहा-"जब कभी हम पर संकट आए तब आप हमारी मदद करें।"

यह वचन प्रमाण करके गरुडेन्द्र ने कहा-"अच्छा तुम यह समझना कि मैं तुम्हारे पास ही हूं। केवली भगवान की वाणी सुनकर अनेक जीवों ने धर्म प्राप्त किया। राजा और प्रजाजनों ने नगरी में आकर आनंदपूर्वक उत्सव मनाया। केवल ज्ञान के प्रताप से सर्वत्र आनंद मंगल छा गया। भगवान की वाणी में ऐसा आया कि रामचंद्र जी इसी भव से मोक्ष प्राप्त करेगें।

"श्री रामचंद्र जी बलभद्र है, तद्‌भव मोक्षगामी है।"

ऐसा केवली प्रभु की वाणी में सुनकर लोगों ने उनका बहुत सम्मान किया। मुनिवरों को केवल ज्ञान उत्पन्न होने से उस भूमि को महातीर्थ समझकर राम, लक्ष्मण, सीता बहुत दिनों तक वहीं रहे। और महान् उत्सवपूर्वक पर्वत पर अनेक मंदिर बनवाकर अद्‌भुत् जिन भक्ति की। उसी समय यह स्थान "रामटेक तीर्थ" के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

गगनविहारी देशभूषण-कुलभूषण केवली भगवान की दिव्य ध्वनि से अनेक देशों के भव्य जीवों को धर्म का प्रतिबोध करते-करते अयोध्या नगरी में पधारे। तब फिर से उन मुनि भगवंतो के दर्शन करके राम, लक्ष्मण, सीता, भरत, कैकयी वगैरह को बहुत हर्ष हुआ। उनका धर्मोपदेश सुनकर भरत ने दीक्षा ली और हाथी ने भी श्रावक व्रत अंगीकार किए। उसके बाद वे विहार करते-करते दोनों मुनि भगवन्त कुंथलगिरी पधारे और वहां से मोक्ष प्राप्त कर सिद्धालय में विराजमान हुए। दोनों भाई संसार के अनेक भव साथ रहे और आज मोक्ष में भी साथ ही विराजमान है।

देशभूषण और कुलभूषण कुछ भवपूर्व उदित और मुदित नाम से सगे भाई थे। उनकी माता का नाम उपभोगा था वह दुराचारिणी थी, वसु नाम के दुष्ट पुरूष के साथ प्रेम करती थी। मोहवश उस दुष्ट वसु ने उसके पति को मार डाला तथा विषयांध माता उपभोगा ने अपने दोनों पुत्रों को भी मारने के लिए वसु से कहा-"ये दोनों पुत्र अपने दुष्ट कर्म को समझ जावें, इसके पूर्व ही तुम इन्हें मार डालो।"

अरे! विषयांध संसारी। विषयों में अंधी हुई माता अपने सगे पुत्रों को भी मारने के लिए तैयार हो गयी। परंतु उसके इस दुर्विचार को उसकी पुत्री समझ गई और उसने अपने दोनों भाई उदित-मुदित को बताकर सावधान कर दिया। इससे क्रोधित होकर उन दोनों भाईयों ने वसु को मार डाला और वह मरकर क्रूर भील हुआ। फिर वे उदित-मुदित दोनों भाई एक मुनिराज के उपदेश से वैराग्य प्राप्त कर मुनि हो गए। वे सिद्धक्षेत्र सम्मेद शिखर जी की यात्रा को जाते समय रास्ता भूल गए और घोर जंगल में भटक गए। वहाँ पूर्व भव का बैरी क्रूर भील उन्हें पहचान गया और मारने को तैयार हो गया।

इस उपसर्ग के प्रसंग को समझकर उदित मुनि ने मुदित मुनि से कहा, 'हे मुनि! मरने के उपसर्ग का प्रसंग आया है, परन्तु तुम भय न करो .... क्षमा में स्थिर रहो। पूर्व में हमने जिसे मारा था, वह दुष्ट वसु का जीव, भील बनकर इस समय हमें मारने आया है .... परन्तु हम तो मुनि हो गये हैं, अपने शत्रु-मित्र क्या? इसलिए तुम आत्मा में ही दृढ़ रहना।

उसके उत्तर में मुदि मुनि ने कहा -

'अहो मुनिवर! हम मोक्ष के उपासक, देह से भिन्न आत्मा का अनुभव करने वाले, हमको भय कैसा?' ऐसा कहकर वे दोनों मुनि ध्यान मग्न हो गय। तब परम धैर्य पूर्वक दोनों मुनि देह के ममत्व को छोड़ परम वैराग्य से आत्मभाव में रम गये। भील उन्हें माने के लिए शस्त्र उठाने लगा, ठीक उसी समय वन का राजा वहां पहुंचा और उसने भील को भगाकर दोनों मुनिराजों की रक्षा की।

वन का राजा पूर्वभव में एक पक्षी था, शिकारी के जात में से उसे इन दोनों भाइयों ने बचाया था, उस उपकारी संस्कार के कारण उसे सद्बुद्धि उपजी और उसने मुनियों का उपसर्ग दूर कर उनकी रक्षा की।

उपसर्ग दूर होते ही दोनों मुनिराज श्री सम्मेद शिखर जी की यात्रा करके रत्नत्रय की आराधना पूर्वक, समाधि-मरण पूर्वक स्वर्ग गए।

दुष्ट ीील का जीव दुर्गति में गया और उसने घोर दुःख प्राप्त किया। उसके बाद कुतप के प्रभाव से ज्योतिषी देव हुआ।

अब वे उदित और मुदित (देशभूषण-कुलभूषण) दोनों भाईयों के जीव स्वर्ग से निकरलकर एक राजा के यहां रत्नरथ और विचित्ररथ नाम से कुमार हुए। भील का जीव भी ज्योतिषि देव से च्युत होकर इन दोनों का भाई हुआ। देखो, कर्म की विचित्रता! किसको कहें वैरी, किसको कहें भाई! इस समय भी पूर्व के बैर संस्कार से वह उन दोनों भाइयों के प्रति बैर रखने लगा। इससे दोनों भाइयों ने उसे देश निकाला दे दिया। वह दंभी-तापस हुआ और विषयांध होकर मरा, अनेक भवों में रूलते-रूलते फिर ज्योतिषी देव हुआ। उसका नाम अग्निप्रभ था।

इधर रत्नरथ और विचित्ररथ-ये दोनों भाई वैराग्य धारण कर राजपाट छोड़कर मुनि हुए.......और समाधिकरण पूर्वक स्वर्ग गए।

वहाँ से निकलकर उन दोनों भाइयों के जीव सिद्धार्थ नगरी के राजा के यहाँ देशभूषण और कुलभूषण के रूप में उत्पन्न हुए। अपनी बहिन को देखकर अनजाने में दोनों भाई उसके रूप पर मोहित हो गए। परंतु जब पता चला कि, अरे! जिसके लिए आपस में लड़ रहे थे वह तो हमारी बहिन है। ऐसा पता चलते ही दोनों भाई इतने शर्मिन्दा हुए कि नगर छोड़कर वन में चले गए और जिन दीक्षा लेकर मुनि हो गए।

जिस समय वे आत्म ध्यान में लीन थे, तभी पूर्वभव का बैरी अग्निप्रभ देव उनके ऊपर उपसर्ग करता है तब राम लक्ष्मण उसे भगाकर उपसर्ग दूर किया, उपसर्ग दूर होते ही दोनों मुनियों को केवलज्ञान हुआ वे दोनों केवली भगवंत विहार करते-करते अयोध्या नगरी में पधारें। तभी भरत तथा हाथी के जीव को प्रतिबोध हुआ....... और फिर कुंथलगिरी से मोक्ष पधारे। अतः निर्वाण काण्ड में लिखा है-

वंसत्थलवरणियडे पच्छिमभायम्मि कुंथुगिरिसिहरे।
आहुठ्ठय कोडीओ णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

बोलिये कुलभूषण देशभूषण भगवान की जय॥

यहां देशभूषण-कुलभूषण भगवान की जो चरण पादुका है-'उसका भी कुछ वृतान्त हैं-'जिनभक्त मेटाशा नाम का एक भाविक एवं सात्विक श्रावक को सपना आया-एक गाय रोज पर्वत पर एक विवक्षित स्थान पर दुग्धभिषेक करके जाती है, उसी स्थान पर चरण पादुका है।' गड्ढा खोदकर देखा तो वहां पर सचमुच चरण पादुका मिल गई। इसी चरण पादुका पर द्वय मुनिराजों की प्रतिमा स्थापित की गई।

उसी क्षेत्र पर बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य श्री शान्तिसागर जी ने घोर तपस्या कर 36 दिन की सल्लेखना धारण करके अपना नश्वर शरीर इसी द्वय मुनिराजों के चरणों में त्याग दिया। और वे समाधि सम्राट बन गए।

बन्धुओं! हमें भी इसी मार्ग पर चलकर आत्म कल्याण करना है जिसके लिए गुरु ही हमें सच्चा मार्ग दिखा सकते हैं। इन्हीं गुरु के चरणों में जाकर हमें सिद्ध बनना है।

"ॐ सिद्धाय नमः"

सिद्ध क्षेत्र कुंथलगिरी को 'भूयात पुनर्दर्शनम्' करके संघ का बिहार आगे बढ़ा। बीड़ गेवराई, पंचालेश्वर, आदि स्थानों के दर्शन करके संघ अतिशय क्षेत्र पैठण आ पहुंचा।

अतिशय क्षेत्र पैठण

प्राचीन क्षेत्र पैठण औरंगाबाद जिले में दक्षिण की ओर 50 कि0मी0 दूर सुरम्य गोदावरी के तट पर स्थित है। मंदिर जी के भूगर्भ में चतुर्थ कालीन राजा खरदूषण द्वारा प्रतिष्ठित तथा भगवान रामचन्द्र जी के द्वारा पूज्यनीय 20वें तीर्थंकर श्री 1008 मुनिसुव्रत नाथ भगवान की श्याम वर्ण बालुकामय प्राचीन अति मनोज्ञ सातिशय युक्त विशाल मूर्ति ध्यानस्थ मुद्रा में विराजमान है। मूर्ति इतनी अधिक मनोज्ञ है कि मानो कलाकार ने भगवान की सम्पूर्ण वीतरागता को पुद्गल पाषाण में ढ़ालकर साकार कर दिया है। अप्रतिम आकर्षक भव्य मूर्ति की ओर बार-बार देखने के बाद भी आंखों को तृप्ति नहीं मिलती। मूर्ति चतुर्थकालीन तथा सबको अद्भुत आनन्द शान्ति प्रदान करने वाली है।

ऐसी मान्यता और भी हैं कि-'आचार्य भद्रबाहु की दक्षिण यात्रा के समय मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त भी उन्हीं के साथ थे। आचार्य भद्रबाहु के उपरान्त कालकाचार्य और विशाखाचार्य द्वारा भी दक्षिण की यात्रा की गई। पैठण के दरबार में कालकाचार्य की बड़ी मान्यता पैठण प्रतिष्ठा के नाम से प्रसिद्ध थी और इसी चतुर्थकाल में तीर्थंकर मुनि सुव्रतनाथ की प्रतिमा स्थापित की गई। ऐसा उल्लेख पद्मपुराण में आता है।

इस क्षेत्र के अतिशय के बारे में कहा जाता है कि सोलहवें शताब्दी के भट्टारक अजित कीर्ति के चिमना पंडित ने क्षेत्र के प्रभाव से अमावस्या के दिन अवकाश में पूर्ण चन्द्र दर्शन दिखाकर जैन धर्म की प्रभावना की थी। वर्तमान में कभी-कभी मंदिर जी के भूगर्भ से यहां सुगन्धित धुंआ निकलता है।

इस क्षेत्र में भगवान मुनि सुव्रतनाथ के दर्शन, पूजन तथा अभिषेक कर सभी को अपूर्व शान्ति प्राप्त हुई। एक दिन विश्राम करके संघ आगे बढ़ा।

अतिशय क्षेत्र कचनेर

अतिशय युक्त, मनोवांछित फलदायक श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथ भगवान के दर्शन की तीव्र अभिलाषा लिए आचार्य संघ का आगमन अतिशय क्षेत्र में हुआ। औरंगाबाद व आसपास के हजारों लोगों ने संघ का भव्य स्वागत किया।

कचनेर वाले बाबा को देखते ही सभी के नेत्र धन्य हो गए। उस छोटी सी मूर्ति ने सभी का मन आकर्षित कर लिया। प्रभु का अभिषेक तो वैसे पूर्णिमा के दिन बाहर पाण्डुशिला पर किया जाता है' परन्तु जिस दिन आचार्य श्री वहां पहुंचे उस दिन अमावस्या थी। फिर भी गुरूदेव के पुण्य से सभी को प्रभू का अभिषेक देखने को मिला। छोटे बाबा (आचार्य श्री) की भक्ति से बड़े बाबा भी प्रसन्न हो गए और अमावस्या को हो गई पूनम, बड़े उत्साह के साथ द्रय संघपति और श्रावकों ने भगवान की पूजा की। औरंगाबाद व आसपास की जनता तो पू० आचार्य श्री के दर्शनों के लिए उमड़ पड़ी। कचनेर में मेला सा लग गया।

मध्यान्ह में पू० आचार्य श्री का प्रवचन हुआ। आचार्य श्री ने अपने प्रवचन में विघ्न विनाशक चिन्तामणि पार्श्वनाथ बाबा की प्रत्यक्ष घटी हुई घटना बताते हुए कहा-'प्राचीनकाल में कचनेर ग्राम के मध्य बस्ती में एक जैन मंदिर था जिसमें चिन्तामणी पार्श्वनाथ भगवान की मूर्ति थी। मध्यकाल में मूर्ति भंजकों के पाशवी कृत्यों से बचाने के लिए इस भव्य मंदिर को मिट्टी से दबा दिया था।

लगभग 200 वर्ष पूर्व एक गौ नित्य सांयकाल जब जंगल से लौटती थी तब वहां भूयार का द्वार था, उस जगह वह अपने स्तनों का दूध गिराकर फिर गोठे में जाती थी। यह दृश्य उस गांव के संपतराव की दादी प्रतिदिन देखती थी और आश्चर्य चकित होती थी। एक दिन उसने गाय को जंगल में नहीं जाने दिया और बांधकर रखा। सांयकाल होते ही वह गौ रस्सी तोड़कर गोठे से निकली और प्रतिदिन की तरह उस जगह जाकर दूध झराया। दादी मां इस चमत्कार के बारे में विचार करती रही। एक दिन उन्होंने स्वप्न देखा कि गौ प्रतिदिन जहां दूध झराती है वहां भूयार का द्वार है और उसमें एक मूर्ति है। मूर्ति संकेत करती है-'मुझे इस भूयार से निकालो आपका कल्याण होगा।' दादी मां की प्रेरणा से वहां की मिट्टी खोदी गई। भूयार का दरवाजा प्रकट हुआ। सीढ़ियां लगाई गईं। अन्दर स्वप्न के अनुसार सप्तफणा युक्त चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा मिली। ग्रामवासी इस घटना से विस्मित हो गए। उस समय गांव में जैनियों की बस्ती नहीं थी इसलिए कचनेर ग्राम के दो कि.मी. दूरी पर जैन टेकड़ी नामक स्थान से जैनियों को बुलाया गया। दिगम्बर जैन प्रतिमा उन श्रावकों को सुपुर्द की गई। यथा विधि श्रद्धा व भक्ति के साथ उस बाड़े में प्रतिमा विराजित की गई।

कुछ दिनों बाद शोकदायी एक घटना घटी। अचानक मूर्ति की गर्दन धड़ से अलग हो गई और जमीन पर गिर गई। धड़ वेदी पर ही रहा। मूर्ति खण्डित हो गई। खण्डित प्रतिमा को जलाशय में विसर्जित करने का निर्णय लिया गया तथा दर्शन और पूजा के लिए नई प्रतिमा लाने का विचार किया गया। श्री क्षेत्र जैनपुर (जिंतूर) से भगवान महावीर की प्रतिमा लाई गई। इस मूर्ति को लाते समय महाद्वार पर और विराजमान करते समय वेदी पर अतिशय युक्त घटनाएं घटीं।

नई मूर्ति आने के बाद यथा समय श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान की खण्डित प्रतिमा को जलाशय में विसर्जित करने का निश्चय हुआ। इस बीच क्षेत्र के कार्यकर्ता पिंप्री निवासी श्री लच्छीराम जी कासलीवाल को स्वप्न में दृष्टान्त हुआ। प्रतिमा ने संकेत दिया कि 'मुझे विसर्जित मत करो। एक कमरे में गड्डा बनाकर मुझे उसमें घी-शक्कर के साथ रख दो। कमरे को बन्द करके ताला लगा दो और सात दिन तक अखण्ड भजन, पूजन करते रहो मेरा धड़ और गर्दन जुड़ जाएगी।'

श्री लच्छीराम कासलीवाल सेठजी ने समाज को स्वप्न के बारे में जानकारी दी। स्वप्न के अनुसार कार्य किया गया। सात दिन के पश्चात् देखा गया तो चिन्तामणि पारसनाथ की खण्डित प्रतिमा पुनः जुड़ गई। लोगों ने आनन्द विभोर होकर जय-जयकार की तथा प्रतिमा को पुनः यथाविधि वेदी पर विराजमान किया। प्रतिमा खण्डित होने का निशान आज भी गर्दन पर दिखाई देता है।

जंगल में इक गाय जाती
रोज नियम से दूध गिराती
सम्पत की दादी का सपना आया
उसने सारा वृतान्त सुनाया
उस जगह पर की खुदाई
सुन्दर प्रतिमा निकल आई
एक दिवस की बात अशुभ
प्रतिमा का सर टूट गया
सिर धड़ दोनों अलग हुआ
नई प्रतिमा अब थी लानी
खंडित को विसर्जित करने की ठानी
तभी किसी को स्वप्न आया
घी चीनी संग प्रतिमा को
इक गड्डे में दबा दिया
7 दिन पीछे मूर्ति का सर
धड़ से जुड़ा मिला।

भारत वर्ष में इस मूर्ति का अभिषेक करना तथा देखना सभी संकटों से मुक्ति पाना है। भगवान बाहुबली श्रवणबेलगोला की मूर्ति के अभिषेक का जो महत्व है वही महत्व इस मूर्ति को प्राप्त है।

बन्धुओं! हमें भी भव रूपी समुद्र पार होने के लिए इन्हीं बाबा की शरण में आना पड़ेगा। तभी हम भव सागर से पार हो सकेंगे। कचनेर की महिमा वास्तव में अपरम्पार है। एक दिन रुकने के बाद आचार्य संघ आगे बढ़ा। छोटे बड़े गांव शहर होते हुए संघ आगे बढ़ता जा रहा था।

विहार में क्षणभर में छावनी लग जाती और क्षण भर में उठ भी जाती है। एक लाइन में 7 टैन्ट और दूसरी लाइन में 7 टैन्ट द्वय संघपति के टैन्ट बीच में आमने सामने इतनी सुन्दर रचना जैसे एक सुन्दर नगर ही बसा हो। त्यागियों के बैठने के लिए एक मण्डप और उसी मण्डप के बीचोबीच भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा विराजमान की जाती।

गरग (धारवाड, कर्नाटक) में चातुर्मास स्थापना हेतु आचार्य श्री का संघ सहित नगर प्रवेश

विधायक आप्पासाहब [illegible] पाटील चेअरमैन श्री दत्त किसान सहकारी शक्कर फॅक्टरी [illegible] आचार्यश्री आशीर्वाद देते हुए

तीर्थराज श्री सम्मेद शिख जी की ओर मंगल [illegible]

आचार्य संघ की सेवा के लिए श्रावकों के चतु:चक्री वाहन

फलटण में पू. आचार्य श्री की 68 वीं जन्म जयंति के मंगल शुभअवसर पर 68 कलशों से चतुर्गति निवारक स्वस्तिक का निर्माण
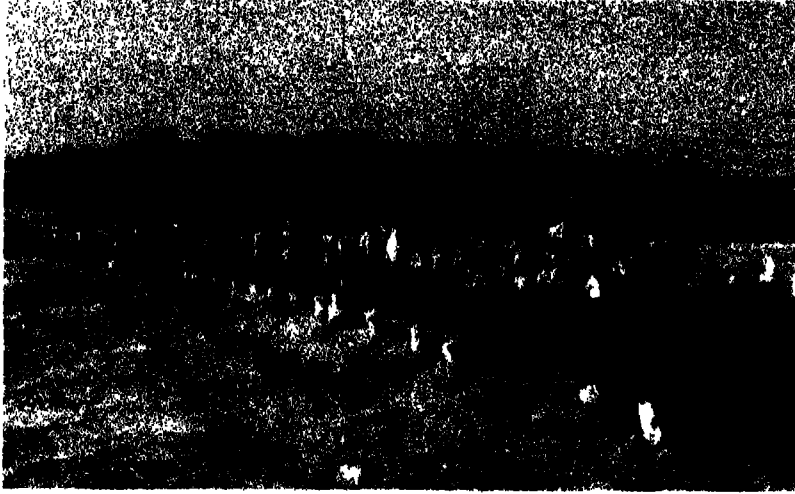
श्री सिद्धक्षेत्र कुंथलगिरी में गुरुकुल के छात्रों द्वारा पू. आचार्यश्री का भव्य स्वागत करते हुए

भ. कुलभूषण देशभूषण जी के चरणों का स्पर्श करते हुए पू. आचार्यश्री

आहार चर्या हेतु
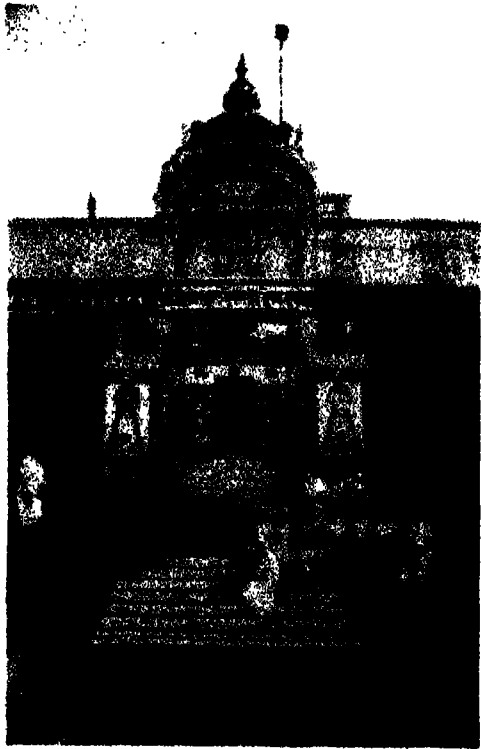
कुलभूषण देशभूषण मुनिवर, स्वयं बन गये अहा स्वयंभू।
विराजमान जहाँ पूरा संघ है, है कुंथलगिरी की पावन भू।।

पैठण नगर में अतिशय कारी मुनिसुव्रत भगवान जी।
गुरुवर करे भाव वंदना, होवे आतम ज्ञान जी।।

अतिशय क्षेत्र कचनेर के श्री 1008 चिंतामणि पार्श्व[illegible]

जितर अतिशय क्षेत्र मे भ. शांतिनाथ के चरणों में भक्ति करते हुए पू. आचार्यश्री

नौ हजार किलो की प्रतिमा वजनी, अंतरिक्ष पे तैर रही।
गुरुवर सोचे मैं कब तैरु, क्यों प्रभुवर ये देर रही।।

चन्द्रगिरी (जितुर) की ओर
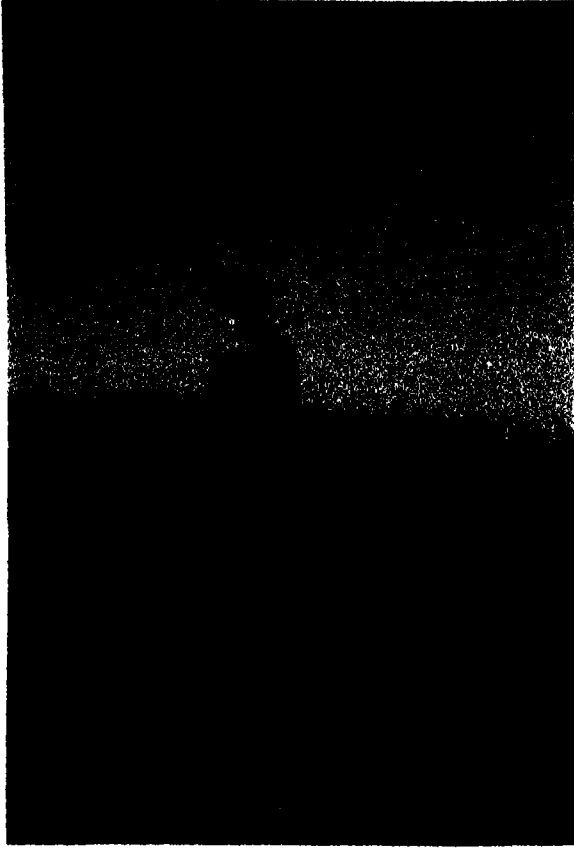
अम्बर तज अम्बर के नीचे, गुरुवर देखो खड़े हुए।
फूलों सी मुस्कान है जिनकी, पिछी-कमंडल हाथ लिए।।

अतिशय क्षेत्र अंतरिक्ष पार्श्वनाथ शिरपुर में जिन चरण स्पर्श करते हुए पू. आचार्यश्री

जो हल्का है वह तैरेगा, [illegible]
पत्थर तैर रहा पानी पर, [illegible]
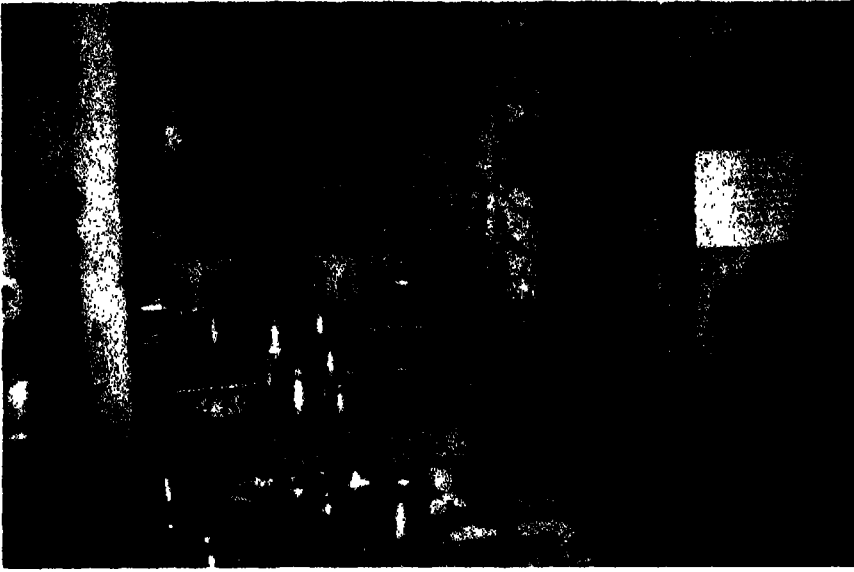
भातकुली के सातिशयकारी भगवान आदिनाथ स्वामी के चरणों में पू. आचार्यश्री

मुक्तागिरी है सिद्धक्षेत्र यह, महिमा अजब निराली है।
साढ़े तीन कोटि मुनिवरने, जहाँ से मुक्ति पाई है।।

मुक्तागिरी सिद्धक्षेत्र पर पू. आचार्यश्री द्वय संघपति

उतुंग जिनालय मुक्तागिरी के पावन जहाँ उतुंग शिखर है।
सिद्ध भूमि पर खड़े गुरुवर, सिद्ध शिला पर गुरु नत, है।।

(पू. आचार्यश्री मुक्तागिरी की पावन भूमिपर सिद्धों का स्मरण करते हुए)
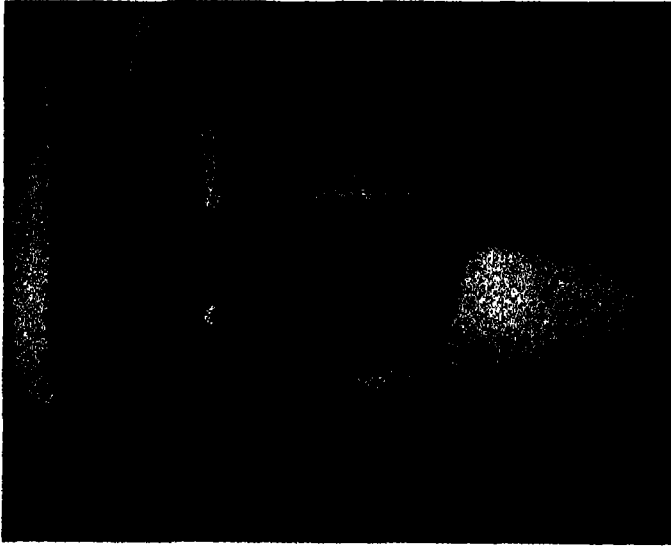
(साढ़े तीन करोड़ मुनिवरों के चरणों की वंदना करते हुए पू. आचार्यश्री)

साढ़े तीन कोटि मुनिवर, जहाँ कर्म झराकर शिव गये।
चरण वंदना उन प्रभुवर की, करने गुरुवर स्वयं गये।।

मंद-मंद [illegible] विसर्जन अभी किया।
जाने [illegible] जाने क्या सिद्ध किया।।

ध्यान करते हुए पू. आचार्यश्री

मुक्तागिरी के शीतल जल में, गुरु प्रतिबिम्ब झलक रहा।
प्रक्षालन पादों का करने, लो भाव लहर वह उछल रहा।।

ईर्यापथ समिति से विहार [illegible]

श्री सम्मेद शिखर यात्रा के दौरान 'बाहुबली नगर' में आचार्य बाहुबली जी महाराज जिनाभिषेक के पश्चात् सम्बोधन करते हुए
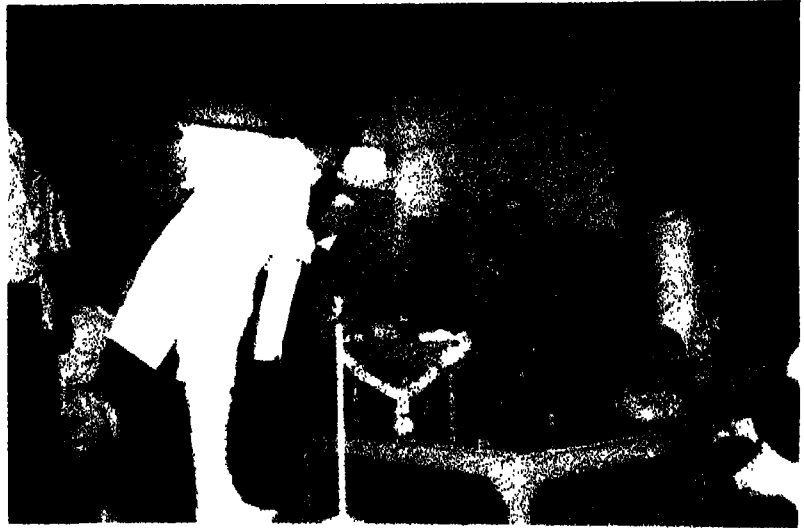
शिक्षण राज्यमंत्री (मुंबई) नागपुर में माननीय नामदार अनील देशमुख पू. आचार्यश्री से आशीर्वाद लेते हुए

प. पू. आचार्यश्री अपने विशाल संघ सहित विद्वानों की [illegible] के बाद धर्मसभा में पंडित श्री श्रेयांसकुमार दिवाकर जी व्याख्यान [illegible]

लखनादौन के नव निर्मित जिनमंदिर के प्रांगण में विशाल संघ सहित पू. आचार्यश्री

पिसनहारी मढ़ियाजी में स्थित नंदीश्वर द्वीप जिनमंदिर में पू. आचार्यश्री संघ सहित

सम्मेद शिखर जी यात्रा के दौरान जबलपुर में दिगम्बराचार्य [illegible] महाराज, श्वेताम्बर साधु श्री राजसिंह सूरिजी के साथ धर्म [illegible]

पनागर क्षेत्र में अतिशयकारी शांतिनाथ भगवान की चरण वंदना करते हुए पू. आचार्यश्री

गुरु चरणामृत का पान कर रहे, धन्य पनागरवासी हैं।
धन्य सारा ग्राम गुरु के, वंदन को अभिलाषी हैं।
(श्रीमान् डयोढीया जी एवं सोधिया जी के द्वारा निर्मित स्कूल के प्रांगण में पू. आचार्य श्री प्रवचन देते हुए)

कटनी के विशाल प्रांगण में विशाल जन सभा को सम्बोधन करते हुए पू. आचार्यश्री

कटनी में आचार्य विद्यासागर जी से दीक्षित आर्यिकाएँ आचार्यरत्न बाहुबली जी महाराज की वंदना करते हुए

सेवा हेतु आचार्य श्री के चरणों में आरक्षण गण

पू. आचार्यश्री संघ सहित विहार करते हुए
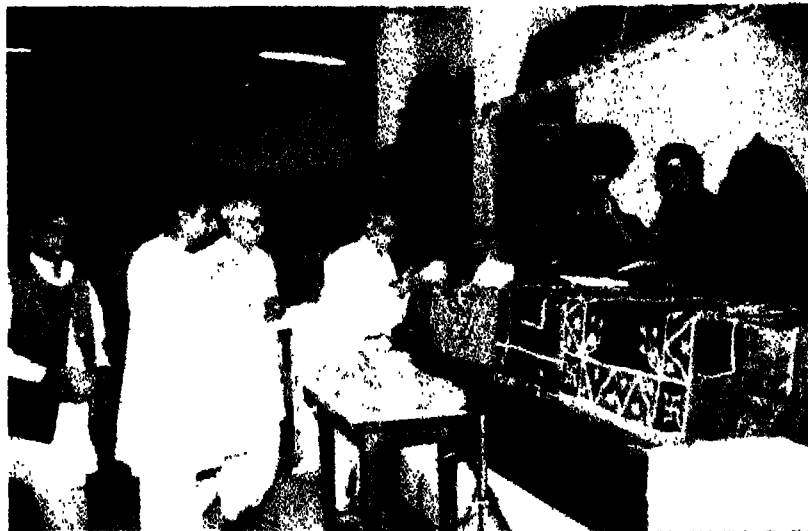
पू. आचार्यश्री अपने विशाल संघ सहित सतना नगर में [illegible]
बाद धर्मसभा में पू. आचार्यश्री के चरणों में श्रीफल [illegible]
निर्मल जी जैन, श्री नीरज जी एवं श्री सिद्धार्थ जैन

25 मार्च 2000 को तीर्थराज सम्मेद शिखरजी मधुबन में पू. आचार्यश्री अपने विशाल संघ सहित मंगल प्रवेश के शुभ अवसर पर

मधुबन बीस पंथी कोठी में गुरुदेव आचार्य रत्न बाहुबली महाराज जी की वंदना करते हुए-पू. आचार्य विमल सागर जी के संघस्थ त्यागी वृंद, पू. आचार्य शीतल सागर जी, पू. आचार्य श्री वासुपूज्य सागर जी, पू. श्री आचार्य कुशाग्र नंदी जी अपने संघ सहित तथा आर्यिका सुरत्नमती माताजी व आर्यिका निर्मलमती माताजी आदि

सम्मेद शिखर जी की बीस पंथी कोठी में प. पू. [illegible] क्षेम-कुशल, वार्तालाप करते हुए अन्य आचार्य गण

तीर्थराज सम्मेद शिखर जी पर संघपति श्री आण्णासाहेब शेंडूरे व धर्मपत्नी सौ. कमला तथा संघपति श्रीमती कस्तुरबाई मेथा एवं सुकन्या कु. स्नेहल आचार्य श्री से आशीर्वाद लेते हुए

श्री स्वर्णभद्र पार्श्वनाथ टोंक के समीप, भगवान पार्श्वनाथ का ध्यान करते हुए पू. आचार्यश्री

सम्मेद शिखर जी की बीस पंथी कोठी में चतुर्दशी के दिन पू. आचार्यश्री अपने संघ सहित तथा वहाँ विद्यमान आचार्य, मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक, क्षुल्लिका आदि त्यागी वृंद पाक्षिक प्रतिक्रमण करते हुए

तीर्थराज सम्मेद शिखरजी से भारत [illegible] दिल्ली की ओर प्रस्थान करते हुए पू. आचार्यश्री अपने संघ [illegible] जैन (दिल्ली)

ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारिणी बहिनें सोले के शुद्ध वस्त्र पहिनकर अभिषेक, पूजन करते व सभी श्रावक श्राविकाएं भी अपनी आवश्यक क्रियाएं देवपूजा आदि करके चौके में चले जाते। अभिषेक, पूजन देख आचार्य संघ अपनी चर्या हेतु उठता। देखते ही देखते उस नवीन वसाहत में सभी भक्तगण हाथों में कलश लेकर पड़गाहन के लिए तत्पर रहते। आचार्य श्री व सारा संघ एक-2 करके आहार हेतु निकलता, चारों ओर से नमोऽस्तु-2 की आवाज से सारा पृथ्वी तल गूंज जाता। यह सब देखकर ऐसा लगता जैसे चन्द्रगुप्त मुनिराज जब आहार के लिए निकलते थे, तब स्वर्ग के देव मायामयी नगर बसाकर श्रावक का रूप ले उन मुनिराज के पंच महाव्रतों की रक्षा हेतु उन्हें आहार दान देकर पुण्य कमाते थे और आहार होते ही अपनी विद्या के बल पर नगर समेट लेते थे। आहार होते ही तुरन्त विहार शुरू होता।

अतिशय क्षेत्र श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ जी जिंतूर (नेमगिरी) में आचार्यश्री का आगमन विहार करते-2 आचार्य संघ जिंतूर पहुंचा उसको नेमिगिरी भी कहते हैं। श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, नेमगिरी महाराष्ट्र में मराठवाड़ा के परभणी जिले में जिंतूर से उत्तर दिशा की ओर 3 कि.मी. की दूरी पर प्राकृतिक निसर्ग सौन्दर्य से युक्त सह्याद्री पर्वत की उपश्रेणियों में बसा हुआ है।

पहला पर्वत श्री नेमगिरी जी और दूसरा श्री चन्द्रगिरी जी के नाम से जाना जाता है। दोनों पर्वतराज के बीचोबीच युगल चारण ऋद्धिधारी मुनियों की चतुर्थकालीन अतिप्राचीन पादुकाएं विराजमान हैं।

भगवान महावीर स्वामी का समवशरण भी चन्द्रगिरी जी के पर्वत पर आया था। प्रभु की चरण रज से यह पर्वत पवित्र हो गया। दोनों पर्वतों के मंदिरों की अति प्राचीन मूर्ति शिल्पकला अनायास ही दर्शनार्थी के मन को मोह लेती है।

पांचवीं गुफा में संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य बिना जादू मंतर के देखने को मिलता है। उत्तर भारत के सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के समय 12 साल के भयानक दुर्भिक्ष के कारण अन्तिम श्रुतकेवली अष्टांग निमित्त ज्ञानी भद्रबाहु आचार्य अपने चन्द्रगुप्त आदि 12,000 शिष्य मुनियों के साथ इस क्षेत्र पर पधारे थे। उन्होंने उस समय भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा की पुनः प्राण प्रतिष्ठा कर मूर्ति को सूरी मंत्र दिया था। सूरी मंत्र एवं भद्रबाहु आचार्य की अचिन्त्य तपस्या के प्रभाव से भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति जमीन से अधर अन्तरिक्ष हो गई। आज भी ओंकारवर्त फणा मण्डप से युक्त अंतरिक्ष भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा इस जगत के इतिहास में लोगों के आकर्षण एवं आश्चर्य का कारण बनी हुई है। आचार्य श्री यहां पहुंचते ही अपनी सुध-बुध खोकर तन्मयता से टकटकी लगाकर सांगोपांग प्रतिमा को निहारते रहे। कभी नीचे, कभी ऊपर, कभी वेदी, कभी अंतरिक्ष, तो कभी ओंकारवर्त भव्य फणा एवं कभी सुन्दर मनोज्ञ प्रतिमा को निहारते हुए, दर्शन करते हुए आचार्य श्री व सभी साधु अपने जीवन को सफल मानने लगे।

आचार्य श्री के मुखसे सहज ही शब्द निकले-'कामधेनु कल्पवृक्ष, चिन्तामणि के समान मनोवांछित फल देने वाली इस अप्रतिम प्रतिमा के दर्शन मात्र से शारीरिक, मानसिक आदि समस्त सांसारिक दुखों से क्षणमात्र में ही मुक्ति प्राप्त होती है। इस प्रतिमा के चरणों की रज माथे में लगाते ही तुरन्त मनोरथों की पूर्ति होती है। यहां देवदर्शन हेतु अनेक देवगण आज भी आते हैं। धणेन्द्र पद्मावती का यहां साक्षात् वास है।

प्रतिमा लगभग 9 टन (9,000 कि.ग्रा.) है। वैज्ञानिकों के द्वारा परीक्षण करने पर संशोधकों ने प्रतिमा को दैविक शक्ति का ही चमत्कार बताया है और यहां अक्सर नागराज आता ही रहता है। ऐसा यहां के लोग बताते हैं। प्रतिमा के विशाल नवफण अत्यन्त सुन्दर और मनोहारी हैं। इसी प्रतिमा के सामने भद्रबाहु आचार्य श्री उपसर्ग हर पार्श्वनाथ स्त्रोत की रचना की थी। साढ़े छह फीट ऊंचाई वाली निराधार यह प्रतिमा जगत का बहुत बड़ा आश्चर्य है।

देवाधिदेव श्री नेमिनाथ भगवान की मनोज्ञ वीतरागता की साक्षात् प्रतिमा व विघ्नहर अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा का अभिषेक देख सबके नयन तृप्त हुए। भगवान बाहुबली की अनोखी तथा बेजोड़ प्रतिमा आपाद मस्तक लता एवं कंधों पर सर्प और जांघ में छेद होने से विश्व में अनोखी प्रतिमा है। ध्यानमग्न बाहुबली के दर्शन कर आचार्य श्री को अपूर्व आनन्द का अनुभव हुआ-

छः फुट लम्बी नौ टन भारी
पार्श्वनाथ की प्रतिमा प्यारी
ओंकार वर्त फण मण्डप वाली
सबके मन को हरने वाली।

इस चक्रव्यूहाकार गुफा में स्थित मंदिर के दर्शन करते समय कोई-2 साधु रास्ता भूलकर पुनः नीचे या आजू-बाजू की गुफाओं में जाने लगे। चक्रव्यूहाकार गुफा का रहस्य ही अलग था।

श्री अतिशय क्षेत्र अंतरिक्ष पार्श्वनाथ शिरपुर

जिंतूर में एक दिन रहकर संघ विहार करते-2 शिरपुर की ओर आया। जिंतूर के समान यहां भी भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा अधर में है। शिरपुर में आचार्य संघ का आगमन हुआ। यहां के समाज ने संघ का भव्य स्वागत किया। प्रतिमा को देखते ही सभी का मन उदास हो गया। क्योंकि सन् 1980 से चले आ रहे दिगम्बर श्वेताम्बर के वाद-विवाद के कारण न तो भगवान का अभिषेक होता था और न ही पूजा अर्चना। केवल खिड़की से ही दर्शन होते हैं ऐसा दृश्य देखकर पू. आचार्य श्री को बहुत दुख हुआ। आचार्य श्रीने अपने प्रवचन में कहा-'भगवान पार्श्वनाथ ने पूर्व नौ भव में घोर उपसर्ग सहा और तीर्थंकर अवस्था में भी कमठ ने उपसर्ग किया और अभी भी उनकी प्रतिमा पर घोर उपसर्ग हो रहा है मक्सी में भी यही हाल है। वे तो उपसर्ग सहकर उपसर्ग विजेता विघ्नहर, संकट मोचन बन गए। यदि हमें भी उपसर्ग विजेता बनना हो तो इन्हीं के समान पुरुषार्थ करना होगा। हमारा सभी के लिए यही आशीर्वाद है कि सभी के मन की दुर्भावना दूर हो और सभी के मन में सद्भावना रूपी प्रभात हो।"

शिरपुर में एक पवली जिनमंदिर है वहां प्राचीन तथा कुछ खण्डित प्रतिमाएं हैं। उस मंदिर में एक कुंआ है। उसके बारे में कहा जाता हैकि इस कुएं के पानी से सभी रोगों का निवारण हो जाता है।

जैनों का ज्ञानपीठ कारंजा

शिरपुर में कारंजा के भक्तगण आचार्य श्री को आमन्त्रण देने आ गए। धीरे-2 विहार करते हुए संघ कारंजा आ पहुंचा वहां के निवासियों ने संघ का धूमधाम से स्वागत किया।

भगवान चन्द्रप्रभु मंदिर की दीवारों पर बहुत ही आकर्षक एवं रहस्यमयी कलाकृति हैं। जिसमें सोलह स्वप्न आदि को चित्रित किया गया है। यहां सुन्दर सिद्धान्त दर्शन हैं जिसमें अनेक प्रकार के रत्नों के नयन रम्य जिनबिम्ब हैं। श्राविकाश्रम की संचालिका के द्वारा गुरुपाद प्रक्षालन किया गया। सभी जिनमंदिरों के दर्शन कर आचार्य संघ आहार को निकला। आचार्य श्री का आहार श्रीमान मिसीकर जी के यहां हुआ। श्रावकों की भक्ति ने पुनः आचार्य श्री को रोक लिया। दूसरे दिन महावीर ब्रह्मचर्याश्रम में आचार्य श्री का स्वागत हुआ। 1918 में प.पू. गुरुदेव समन्तभद्र जी महाराज के द्वारा इस

आश्रम की स्थापना की गई थी। श्रीमान पंडित प्रवर ब्र. सप्तम प्रतिमाधारी स्व. तात्या चवरे जी के अथक परिश्रम से बना यह आश्रम अत्यन्त अमूल्य ज्ञान मंदिर है। पू. आचार्य श्री के आगमन से श्री पंडित प्रवर धन्यकुमार भोरे जी को बहुत प्रसन्नता हुई। वहां के ट्रस्टियों ने आचार्य संघ को ब्र. तात्या जी का व पं. देवकी नन्द जी का स्वाध्याय का कमरा दिखाया। तदनन्तर आचार्य श्री ने गुरुकुल के कार्यकर्ताओं व बच्चों को सम्बोधित करते हुए कहा-'बन्धुओं! आश्रम में अनेक स्नातक विद्याध्ययन करके विद्वान हो गए उन्हीं स्नातकों में से मैं भी एक हूं जिसे गुरुदेव समंतभद्र जी ने वैराग्य वर्धक उपदेश देकर अपने जैसा बना लिया। स्वर्गीय पं. श्री तात्या जी ने प्रतिमा धारण करके अपना सम्पूर्ण जीवन संयम युक्त बिताया। आचार्य श्री ने पं. प्रवर श्री धन्यकुमार भोरे को उद्‌बोधित करते हुए कहा-'आप महान ज्ञानी हो, उस ज्ञान को यदि संयम का साथ मिल जाए तो जीवन महान व पूज्य बन जाएगा। अणुव्रत और महाव्रतों से अपना जीवन सजाओ यही हमारी इच्छा है।'

गुरुदेव का उपदेश सुन पंडित जी की आंखों में आंसू भर आए। प्रवचन के पश्चात् उन्होंने पू. आचार्य श्री के सामने भावों को व्यक्त करते हुए कहा-'हां, गुरुदेव! मैं कुंदकुंदाचार्य का अनुयायी हूं। मैं आपके उपदेशामृत को अवश्य ग्रहण करूंगा।' तदनन्तर पं. जी ने आचार्य श्री व समस्त त्यागियों को ग्रंथ समर्पित किए।

अमरावती में आगमन

कारंजा से आचार्य श्री ने अमरावती की ओर विहार किया। जिस प्रकार सूर्य के उदित होते ही कमल खिल जाते हैं वैसे ही अमरावती में आचार्य श्री का आगमन होते ही सभी भव्य रूपी कमलों के मन खिल गए। क्षु. ध्यानसागर जी पहले से ही वहां विराजमान थे। वे भी आचार्य श्री की अगवानी करने आए। तदनन्तर गुरु चरणों में उन्होंने विनय पूर्वक अपनी आलोचना की।

मध्यान्ह में आचार्य श्री का प्रवचन था। इस वार्ता को सुनकर स्थानक वासी श्वेताम्बर साध्वियों ने एक पत्र दिया और नम्र प्रार्थना की कि-'हमें आचार्य श्री के दर्शन करने एवं उपदेश सुनने की तीव्र इच्छा है। पत्र को पढ़कर वहां के अध्यक्ष ने आचार्य श्री से अनुमति मांगी। आचार्य श्री ने उन्हें आने की अनुमति दे दी।

उस दिन आचार्य श्री का प्रवचन स्थानकवासी भवन में था। मध्यान्ह वहां दिगम्बर, श्वेताम्बर, स्थानक वासी आदि जैन समाज एकत्रित हुआ। एक ही मंच पर पू. आचार्य श्री, संघस्थ सभी साधुगण, क्षु. ध्यानसागर जी एवं स्थानकवासी साध्वी जी विराजमान थी। प्रथम ब्रह्मचारिणी जी के मंगलाचरण के बाद क्षु. ध्यानसागर जी ने संक्षिप्त रामकथा बताई। तत्पश्चात स्थानकवासी साध्वी जी श्री भद्रावती महाराज साब का व्याख्यान हुआ। उन्होंने अपने प्रवचन में गुरुदेव को तीर्थंकर की उपमा दी। बादमें आचार्य श्री का प्रवचन हुआ। उन्होंने बताया कि-'गन्ना अलग-2 जाति का होते हुए भी जब फैक्टरी में आता है तो उसे एक ही प्रकार की मशीनों में डालकर उसकी शक्कर बनाई जाती है। शक्कर बन जाने के बाद सभी भेदभाव समाप्त हो जाते हैं। ठीक इसी प्रकार इस भूतल पर अनेक पंथ के लोग हैं लेकिन शाश्वत् सुख पाने के लिए उन्हें संयम ही स्वीकारना पड़ेगा। इस पथ पर आए बिना सिद्ध पद प्राप्त नहीं हो सकता।'

आचार्य श्री का प्रवचन सुनकर स्थानकवासी साध्वियां बहुत गद्‌गद् हुईं। उनके मुख से सहज ही शब्द निकले-'हो हो, वात्सल्य प्रदाता, करुणा सागर, गुरु। सही में आप दया के भण्डार हैं। सभी को सतत मोक्षमार्ग में लगाते रहते हैं इनके चरणों में हम साध्वियों का त्रिवार नमन।'

भातकुली-भगवान आदिनाथ बाबा के दर्शन

आदिनाथ भगवान की सातिशय प्रतिमा के दर्शन कर सभी को सुखद अनुभूति हुई। वहां के मंत्री जी ने बताया-'यहां भगवान आदिनाथ जी की यह प्रतिमा पहले जमीन में थी। एक गाय रोजाना अपना दूध इस स्थान पर झराकर जाती थी। इस दृश्य को देखकर एक दिन वहां पर खुदाई की। जमीन खोतदे समय प्रतिमा के मस्तक को धक्का लग गया। उसी दिन वहां के मुखिया के सपने में मूर्ति ने आकर कहा-'मुझे धीरे-2 निकालो।' तब धीरे-धीरे उस प्रतिमा को बाहर निकाला गया। जब प्रतिमा बाहर निकली तो उसके मस्तक के तीन मणि टूट गए थे और मस्तक का भाग खण्डित हो गया था। प्रतिमा वालुकामय थी। भातुकुली में जैनों की बस्ती न होने से प्रतिमा को अन्यत्र ले जाने का विचार किया गया। लेकिन प्रतिमा हजारों लोगों की शक्ति द्वारा भी उठ नहीं सकी। इसलिए इसी स्थान पर प्रतिमा को स्थापित कर दिया गया। भगवान आदिनाथ स्वामी की यह बालुकामय, अति मनोज्ञ, प्राचीन सातिशय युक्त प्रतिमा ध्यानस्थ मुद्रा में विराजमान है। भातकुली में अभी भी जैनों के घर नही हैं फिर भी वहां मंदिर बहुत विशाल बन गया है।

आहार वगैरह होने के बाद सभी त्यागियों ने कुछ देर भक्तामर का पाठ तथा जाप आदि किया। उसके बाद प्रवचन हुआ। प्रवचन समाप्त होते ही मुक्तगिरि की ओर विहार हो गया।

श्री सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरी

खोलापुर, अचलपुर, परतवाड़ा होते हुए आचार्य संघ उस स्थान पर पहुंचा जहां से साढ़े तीन करोड़ मुनि मोक्ष पधारे हैं। इस क्षेत्र के दर्शन के लिए सभी का मन आकुलित था। नयनरम्य इस क्षेत्र के बारे में निर्वाण काण्ड में कहा गया है।

अच्चलपुर वरणयरे ईसाणभाए मेढ़गिरी सिहरे।
आहुट्ठय कोडीओ णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

अर्थात अचलपुर नगर की ईशान्य दिशा में मेढ़ागिरी शिखर है। उस पर्वत पर भगवान आदिनाथ से लेकर भगवान महावीर के समय तक साढ़े तीन कोटि मुनि कर्मक्षय करके निर्वाण को प्राप्त हुए। उन सबको मेरा नमस्कार हो। इस क्षेत्र के सम्बन्ध में आचार्य श्री ने बतांया-'एक मुनिराज मुक्तागिरी क्षेत्र पर ध्यान कर रहे थे, उस समय उस पर्वत पर एक मेंढ़ा घास चर रहा था, उसका पैर फिसल जाने से वह ऊपर से मुनिराज के चरणों में गिर पड़ा। वह घायल हो गया था। मुनिराज ने ध्यान विसर्जन कर उस मेंढ़े को भवतारण णमोकार मंत्र सुनाया। णमोकार मंत्र सुनते-2 उस मेंढ़े के प्राण पखेरू उड़ गये और वह स्वर्ग में देव हुआ। इसलिए इस क्षेत्र को मेंढ़ागिरी भी कहते हैं।

आचार्य संघ 52 मंदिरों की क्रमशः वन्दना करता हुआ निरन्तर आगे बड़ रहा था साथ में दोनों संघपति सभी श्रावक श्राविकाएं जयगुरुदेव के नारे लगाते हुए साथ चल रहे थे। उस समय ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो भक्ति रूपी वर्षा की झड़ी ही लगी हो। दर्शन करते-2 26वें नम्बर की वेदी पर आए तब दोनों संघपतियों ने पंचामृत अभिषेक किया। भक्ति के रंग में रंगकर सभी धर्मलाभ उठा रहे थे। कुछ त्यागियों ने पहाड़ की प्रदक्षिणा भी लगाई। इसी क्षेत्र पर लगभग 10-12 त्यागियों ने केशलोंच भी किया। दूसरे दिन आहार के बाद संघ का प्रस्थान हो गया।

बाजार गांव क्षेत्र

नौ शिखरों वाला यह विशाल क्षेत्र नागपुर के नजदीक है। यहां पर मूलनाराक सुपार्श्वनाथ की प्रतिमा है। इन मंदिरों में भी हमेशा अतिशय होते रहते हैं। नयनरम्य इन मंदिरों की वन्दना करने से मन में अपार शान्ति हुई। यहां के दर्शन कर संघ नागपुर की ओर आगे बढ़ा।

धर्मपुरी नागपुर में आचार्य संघ का भव्य स्वागत

मुक्तागिरि से नागपुर के भक्त आचार्य श्री के साथ थे। नागपुर में आचार्य संघ का भव्य स्वागत किया गया। जगह-2 सुन्दर-2 कमानियां बनाए गई जिसमें पहला अहिंसाद्वार था। उसके बाद श्री शान्तिसागर द्वार, श्री देशभूषण द्वार तथा श्री बाहुबली द्वार आदि थे। सैकड़ों लोगों ने धर्मलाभ लिया। बड़े मन्दिर, सेनगण मंदिर, इतरवारी मंदिर में आचार्य श्री का मंगलमय प्रवचन हुआ। आचार्य श्री की मधुर वाणी सुनकर सभी लोग भाव विभोर हो रहे थे। सभी को ऐसा लग रहा था जैसे साक्षात् समवशरण ही आ गया हो। चौबीसों घण्टे जहां देखो वहां भीड़ ही भीड़। रात दिन का भेद वहां नजर ही नहीं आ रहा था।

आचार्य श्री के इन दो दिन के वास्तव्य में नागपुर के भक्तों ने बहुत धर्मलाभ उठाया। आहार दान आदि देकर मानो जीवन ही सफल बना लिया। वाद्य सहित सभी मंदिरों के दर्शन करके आहार व प्रवचन के पश्चात् संघ का विहार कामठी की ओर हुआ। वहां के मंदिर का कहना ही क्या? जिसने भी दर्शन कर लिए वह धन्य हो गया। वहां की प्रतिमा को निहारकर सभी त्यागी अन्तर्मुख हो अति प्रसन्न हुए। मंदिर की दीवारों में कलाकार ने मानो अपनी सारी कला उड़ेल दी हो। रामायण, महाभारत की कलाकृति तो सचमुच मन को हरने वाली थी। अति प्राचीन मूर्तियों के दर्शन करके जन्मों-2 के पाप क्षणभर में भाग गए। सुबह आचार्यसंघ का विहार रामटेक की ओर हुआ।

अतिशय क्षेत्र रामटेक

अतिशय क्षेत्र रामटेक नागपुर से 4 कि.मी. की दूरी पर मनसर गांव के नजदीक है। जहां भगवान शान्तिनाथ की 13 फुट 5 इंच ऊंची बादामी रंग की प्रतिमा है। कहा जाता है कि 400 वर्ष पूर्व नागपुर जिले के भोसले वंश का राज्य था। वहां का राजा विष्णुमत को मानने वाले था। एक दिन वह मंत्रियों एवं सैनिकों के साथ राममंदिर के दर्शनार्थ गये। दर्शन के पश्चात् राजा भोजन करने बैठे। उन्होंने मंत्री से कहा कि आप भी भोजन कर लें। मंत्री मौन रहा लेकिन राजाज्ञा टालने के भय से मन में भयभीत रहा राजा ने पुनः खाना खाने के लिए कहा तो मंत्री ने राजा से अनुरोध किया-'आप मेरे पितातुल्य हैं। मेरी प्रतिज्ञा है कि जब तक वीतराग प्रभु के दर्शन न कर लूं तब तक अन्न जल को हाथ नहीं लगाऊंगा। जैन की यही पहचान है कि वह अष्टमूलगुणों का पालन करे। प्रथम-मांस, द्वितीय-मधु, तृतीय-मदिरा, चतुर्थ-रात्रि भोजन, पंचम-संकल्पी हिंसादि पंच पापों का त्याग, षष्ट- पानी छानकर पीवे, सप्तम-वीतराग भगवान के दर्शन करे, अष्टम-पंच उदुम्बर फलों को त्याग। इन सभी बातों को मानना तथा वीतराग प्रभु का दर्शन करना यही जैन धर्म का लक्षण है,' सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। उसने मंत्री से कहा-'आप शीघ्र ही हाथी पर बैठकर कामठी के विशाल मंदिर के दर्शन करके अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करें।'

यह सुनकर मंत्री बोला-'20वीं तीर्थंकर श्री मुनि सुव्रत नाथ के समय में भगवान राम, सीता एवं लक्ष्मण जी इस क्षेत्र में आए व ठहरे थे। अतः यहां कहीं न कहीं जैन मंदिर अवश्य होना ही चाहिए।' तुरन्त ही राजाज्ञा से सैनिकों ने जंगल छान मारा। वहीं एक ग्वाले ने बताया कि इसी जंगल में एक मूर्ति पेड़ के नीचे विराजमान है। वहां जाने पर ज्ञात हुआ कि वह प्रतिमा भगवान शान्तिनाथ की है। मंत्री ने भगवान के दर्शन कर भोजन ग्रहण किया। बाद में राजाज्ञा से भगवान शान्तिनाथ के विशाल मंदिर का निर्माण हुआ। जो कि आज श्री 1008 शान्तिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध है।

आचार्य श्री बाहुबली जी का सिवनी की ओर विहार

आहार के पश्चात रामटेक से आचार्य श्री के संघ का विहार सिवनी की ओर हुआ। सिवनी के श्रावक श्राविका आचार्य श्री को आमन्त्रित करने आ गए। सभी ने श्रीफल चढ़ाकर विनती की कि आपको हमारे नगर आना ही है। आचार्य श्री ने स्वीकृति देते हुए कहा हमें सिवनी होकर ही जाना है। अतिशयकारी बड़े बाबा तो छोटे बाबा को बुला रहे थे। इसलिए तो आचार्य श्री के उस रास्ते से जाने के भाव हुए।

आचार्य श्री बाहुबली जी विहार उद्यान

विहार करते-करते 13 फरवरी को जिस खेत में आहार होने वाला था उस खेत का मालिक लगभग 8 लाख रुपये खर्च करके मत्स्य पालन केन्द्र बनाने वाला था। संघपति जब आहार हेतु जगह देखने वहां पहुंचे तो लोगों से पता चला कि यहां पर यह कुकार्य होने वाला है। तब उन्होंने श्री गोविन्द नेमा जी से विनती की कि हमारे गुरु का यहां आहार होने वाला है आप ये कुकार्य बन्द कर दीजिए। अगर आप ऐसा करोगे तभी हमारे साधु कल यहां आकर आहार ले सकेंगे और आपकी भूमि पवित्र हो जाएगी। उन्होंने मौन स्वीकृति दे दी। दूसरे दिन जब आचार्य श्री वहां आए तब गुरुदेव की मुद्रा देखते ही श्री गोविन्द नेमा के हृदय में और भी अधिक परिवर्तन हो गया। उसने आचार्य श्री से प्रतिज्ञा की कि आज से मैं भी अहिंसा धर्म का पालन करूंगा। हिंसा आदि सभी पापों से दूर रहने का उन्होंने नियम ले लिया। मत्स्य पालन केन्द्र बनाने की साफ-2 मनाई कर दी।

सच ही कहा जहां सच्चे साधु संतों के चरण पड़ते हैं वह भूमि पवित्र हो जाती है। आचार्य श्री के चरण पड़ते ही शीलादेहि गांव पवित्र हो गया।

श्री गोविन्द जी 14 तारीख को जब आचार्य श्री के दर्शनार्थ सिवनी नगर में आए तो उन्होंने आचार्य श्री के सामने कहा-'हे गुरुदेव! आप तो हमारे लिए भगवान बनकर आए। आपके दर्शन से मेरा जीवन सफल हो गया। मैं जन्म-2 तक आपका यह उपकार नहीं भूलूंगा। हमारी भूमि पर आपके चरण पड़े इससे मुझे अपार सुकून मिला। इस हेतु हमेशा की यादगार के लिए हम हमारे खेत का नाम 'आचार्य बाहुबली विहार' रखेंगे।

आचार्य श्री की सम्मेद शिखर यात्रा लाखों प्राणियों की रक्षा का उपहार बन गई-

अपनी भूमि पर गोविन्द जी ने
मछली पालन करने की ठानी
उसी भूमि पर गुरुवर जी का
होना था आहार और पानी
गुरुदेव ने उसे समझाया
अहिंसा का महत्व बताया
गोविन्द जी की समझ में आया
मछली पालन का विचार त्यागा
अपनी पावन हुई भूमि को उसने
आचार्य बाहुबली विहार पुकारा।

श्री गोविन्द जी ने आचार्य श्री से कहा हम इस भूमि को तीर्थ अवश्य बनाएंगे। इस प्रकार नेमा जी ने अपना जीवन सफल बना लिया।

विद्वानों की नगरी सिवनी में आचार्य संघ का आगमन

आचार्य संघ का जब नगर में आगमन हुआ तब उनके स्वागत हेतु छोटे से लेकर बड़े तक सभी वहां उपस्थित थे। सभी ने अपना काम धंधा छोड़कर मन, वच, तन से आचार्य संघ का स्वागत किया। पूरे नगर में ऐसा लग रहा था मानो खुशी की गंगा ही बह रही हो। सभी आचार्य श्री की जय-जयकार लगा रहे थे।

अपने-2 दरवाजों पर सभी ने आचार्य श्री की आरती करके पुण्य कमाया। उतुंग शिखरों वाले मंदिर के सामने आते ही श्रावकों ने आचार्य श्री के पाद प्रक्षालन किया। तदनन्तर 18 वेदियों वाले इस विशाल मंदिर की आचार्य संघ ने चैत्य भक्ति पढ़ते हुए वन्दना की।

अतिशयकारी बड़े बाबा की मूर्ति तो अति मनोहर है जो भी एक बार इनके दर्शन अर्न्तमन से कर लेता है वह इन्हीं का हो जाता है। इस मूर्ति के बारे में यहां के पूर्वज ऐसा बताते हैं कि लगभग 500 वर्ष पूर्व जब शिल्पकार इस मूर्ति को जयपुर से लेकर सिवनी आया। उस समय सिवनी के समाज से कहा-इस मूर्ति को 250 रुपयें में ले लो। तब वहां के समाज के पास इतना पैसा नहीं था कि वह मूर्ति खरीद सकते। गरीब समाज ने मूर्ति लेने से इन्कार कर दिया। वह शिल्पकार मूर्ति को लेकर नागपुर चला गया। नाके तक वह गाड़ी लेकर गया लेकिन गाड़ी नाके से आगे नहीं पाई। उस गाड़ी के पहिये अपने आप टूट कर गिरने लगे। शिल्पकार परेशान हो गया। अन्त में जैसे ही उसने गाड़ी का मुख सिवनी की ओर किया पहिये अपने आप जुड़ गए। आखिरकार शिल्पकार मूर्ति को शहर में ले आया और पंचों से प्रार्थना की कि इस मूर्ति को यहीं पर विराजमान कर लो और मूर्ति वहीं विराजमान हो गई। तभी से वाहं का समाज धनाढ्य हो गया और कुछ ही समय में इतने विशाल मंदिर का निर्माण हो गया जो इतिहास में प्रसिद्ध है। बड़े मंदिर की एक-2 प्रतिमा मानो भक्तों का मन क्षण भर में आकर्षित कर उन्हें संसार से भयभीत होने का संदेश देती है।

अतिशयकारी बड़े बाबा के दरबार में आने वाले कभी भी खाली हाथ नहीं जाते। उनकी झोली स्वतः ही भर जाती है। बाबा को जो भी भव्यात्मा अपने नयनों से निहारता है वे नयन धन्य हैं। यहां का चांदी का रथ और रथ से जुड़े हुए वेदी के घोड़े अति रम्य और मनोहारी हैं। छोटे मंदिर में आठ वेदियां हैं वे भी बड़ी आकर्षक हैं।

दो दिन के वास्तव्य के बाद आचार्य संघ का विहार छपारा, लखनादौन होते हुए मढ़िया जी की ओर हुआ।

राह के अतिशय क्षेत्रों के,
दर्शन कर बढ़ता संघ।
सबके मन पर चढ़ा हुआ,
सम्मेद शिखर का रंग॥

अतिशय क्षेत्र पिसनहारी मढ़िया जी

आचार्य संघ का आगमन जब मढ़िया जी में हुआ तो गुरुकुल के बच्चों ने व जबलपुर के श्रावकों ने भव्य स्वागत किया। इस क्षेत्र में एक विशाल गेट है उसके मध्य भाग में इस क्षेत्र के आद्य मंदिर बनाने का श्रेय जिस बुढ़िया को था

उस बुढ़िया की मूर्ति चक्की पीसते हुए दर्शायी गई है। उसने रात दिन चक्की पीस-पीस कर धन एकत्रित करके इस मंदिर का निर्माण किया। धन्य है वह महिला और उसकी जिनभक्ति।

इस क्षेत्र में बड़े-2 पत्थरों के बीच छोटी-2 झाड़ियां हैं बीच से ही ऊपर जाने का रास्ता है। दोनों तरफ भगवान पार्श्वनाथ, भगवान शान्तिनाथ, भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा मंदिर में विराजमान है। वहीं प्राचीन पिसनहारी मंदिर है और तीनों तरफ वर्ण और चिन्हों से युक्त 24 तीर्थंकरों के मंदिर हैं। इनके मध्य भाग में श्री भगवान बाहुबली मंदिर है। नीचे नंदीश्वर की बहुत ही सुन्दर कृति है। इसके अलावा कांच मंदिर तथा समवशरण मंदिर भी है। पू. आचार्य श्री के दर्शनार्थ आचार्य विद्यासागर जी के शिष्य मुनिश्री समाधि सागर महाराज वहां आए तथा आचार्य श्री बाहुबली का वात्सल्य पाकर तो बहुत प्रसन्न हुए। दर्शन वंदना कर उन्होंने आचार्य श्री की सेवा वैय्यावृत्ति की और अपने आपको धन्य माना।

जबलपुर शहर में आचार्य श्री के चरण पड़े

पूज्य आचार्य श्री के चरण स्पर्श से पूरा जबलपुर नगर पवित्र हुआ। मंदिरों के दर्शनों से सभी त्यागियों की आत्मा तृप्त हुई। सुबह आचार्य श्री की मंगल वाणी सुन सभी जीवों को अपार सुख मिला। जबलपुर में जैन समाज के हजारों घर हैं सभी ने आचार्य श्री की सम्मेद शिखर की यात्रा सफल होने की कामना व्यक्त की। जबलपुर में आचार्य श्री सुमतिसागर महाराज की शिष्या आर्यिका ज्ञानमती माताजी का संघ विराजमान था। उन्होंने भी पू. आचार्य श्री का मन वचन काय से आदर पूर्वक स्वागत किया। आहार व सामायिक के बाद आचार्य श्री का मंगल विहार हुआ।

दिगम्बर-श्वेताम्बर साधुओं का मिलन

श्वेताम्बर साधुओं को पता चला कि शहर में दिगम्बर आचार्य आए हैं वैसे ही उन्होंने कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों को आचार्य श्री के पास भेजां उन्होंने विनती की-'आचार्य देव हमारी इच्छा है कि दिगम्बर, श्वेताम्बर साधुओं का मंगल मिलन हमारे भवन में हो। आप संघ सहित वहां अवश्य पधारें। उनकी तीव्र इच्छा को देखते हुए आचार्य श्री ने मौन स्वीकृति दे दी।

जब आचार्य श्री ने लार्डगंज के मंदिर से विहार किया तब सभी श्वेताम्बर साधु उनकी आगवानी हेतु आगे आए। बड़ी विनम्रता से आचार्य श्री के चरण स्पर्श करके अपने माथे से चरण रज लगाई। इस पवित्र मिलन को देखने के लिए हजारों की संख्या में लोग उपस्थित थे। इस विशाल सभा में उन्होंने सर्वप्रथम आचार्य श्री से मांगलिक सुना। चार साधु व बत्तीस साध्वियां आचार्य श्री के दर्शन कर अपने को कृतार्थ मान रही थीं। उन्होंने आचार्य श्री से उनके रत्नत्रय तथा स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ की।

दिगम्बर के 28 साधु तथा साध्वियों तथा श्वेताम्बर के 36 साधु साध्वियों से पूरा मंच सुशोभित था। इस अनोखे मिलन को देखकर सभी पुलकित हो रहे थे।

कार्यक्रम का प्रारम्भ गोमटेश बाहुबली भगवान के भजन से हुआ। तदनन्तर आए हुए अतिथियों का स्वागत हुआ। उसके पश्चात् श्वेताम्बर साधुओं में जो मुख्य ऋषिराज पू. आचार्य भगवंत राजयश सूरीश्वर जी का व्याख्यान हुआ। उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा-'बन्धुओं! हम बाहर से ही नहीं बल्कि अन्दर से भी एक हैं अर्थात् हम परस्पर एक दूसरे के हृदय में हैं आज हमें ऐसा महसूस हो रहा है जैसे पिता के पास पुत्र बैठा हो।'

'आचार्य भंते! अनंतानंत मुनिराज कर्मक्षय कर जहां से मोक्ष सिधारे हैं आप उस पवित्र स्थान पर जा रहे हैं। हम शुभेच्छा व्यक्त करते हैं कि आपकी यात्रा सफल हो। आप मद का, कषाय का निर्वाण करने जा रहे हैं। हमारे अन्दर भी जो मद बैठा है उसका निर्वाण हो यही आपके चरणों में भावना व्यक्त कर हम विराम लेते हैं।'

श्वेताम्बर गुरुदेव के व्याख्यान के पश्चात् आचार्य श्री बाहुबली सागर जी का उपदेश शुरू हुआ। उन्होंने अपने प्रवचन में कहा-'भव्य और पुण्यात्माओं! साधुओं की कथनी और करनी एक ही होती है। साधु केवल चर्चा ही नहीं करते वो चर्या भी करते हैं। दिल्ली में हमारे गुरुदेव आचार्य रत्न देशभूषण महाराज का विशाल संघ, श्री सुशील कुमार जी, तुलसी जी, साध्वी विचक्षण जी, स्थानक वासी और भी श्वेताम्बर तेरा पंथी साधुजन उपस्थित थे। लगभग 72 लोगों की मीटिंग दिल्ली के राजभवन में थी। हम भी (आचार्य श्री) गुरुदेव के साथ वहां थे। प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने उस समय आचार्य देशभूषण जी से आशीर्वाद प्राप्त किया। वह मीटिंग भगवान महावीर का 2500वां निर्वाण महोत्सव मनाने के लिए हुई थी।

आज भी दिगम्बर श्वेताम्बर में एकता हो तो दिल्ली राजकेन्द्र पर अहिंसा का ध्वज फहराया जा सकता है। मांस निर्यात, बूचड़खाने क्षणभर में बन्द किए जा सकते हैं-

यदि एकता हो तो दुनिया में अज्ञान के अंधकार को मिटाकर ज्ञान के प्रकाश को फैलाया जा सकता है। दिगम्बर श्वेताम्बर तो पिता-पुत्र के समान हैं।

सभी की दृष्टि जैनियों के ऊपर रहती है क्योंकि उनके पास पैसा है। बड़े-2 उत्सवों के खर्चे ये लोग उठा लेते हैं। लेकिन जैनी ऐसे हैं जो एक दिन पूर्ण रूप से निःसंग होकर दिगम्बर बनकर मोक्ष चले जाएंगे। पंथ, जाति और कषाय से मोक्ष नहीं मिलता है। पंथ, जाति, कषायों को निर्वाण किए बिना मोक्ष नहीं है। हम राग द्वेषादि कषायों का मेहमान के समान स्वागत करते हैं। लेकिन ये ही तो हमारे अंतरंग शत्रु हैं। जैसे इन्दिरा गांधी के जो रक्षक थे वो ही भक्षक बन गए।

'जैनं जयतु शासनम्' जब तक चांद सूरज रहेंगे तब तक जैनों का शासन जयवंत रहेगा। अनादि से है और अनादि तक रहेगा।

ज्ञानी को ज्ञानी मिले, होगी दो-2 बात।
गधे को गधा मिले, पड़ेंगी दो-2 लात॥

आज यहां ज्ञानी से ज्ञानी मिले हैं इसलिए ज्ञानवर्धक बातें सभी को सुनने के लिए मिल रही हैं। वर्तमान समय तो ऐसा है जहां हर वक्त बात-2 में दंगा, फसाद, झगड़े हो जाते हैं। शिरपुर जैसे प्राचीन अतिशय क्षेत्र में अज्ञानवश भगवान की प्रतिमा पर लोग घोर उपसर्ग कर रहे हैं। भगवान की प्रतिमा पर धूल ही धूल जम गई है। इस उपसर्ग को दूर करने की भावना किसी में नहीं आ रही है किसी का ध्यान उस तरफ नहीं है।'

आचार्य श्री के मंगलमय वचन सुनकर सभी साधु-साध्वी व भक्तगण मंत्र मुग्ध हो गये। 32 साध्वियों में मुख्य श्वेताम्बर साध्वी पू. वाचयमा श्री जी ने सभी आर्यिका माताजी से परस्पर धर्मचर्चा की। तदनन्तर कुछ मंदिरों के दर्शन करते हुए आचार्य संघ ने पनागर की ओर विहार किया।

पनागर के अतिशयकारी बड़े बाबा शान्तिनाथ भगवान

आचार्य संघ का पनागार वासियों ने बड़े उत्साहपूर्वक स्वागत किया। सभी मंदिरों के दर्शन करते हुए भगवान शान्तिनाथ के दर्शन हेतु गए। जैसे ही भगवान के दर्शन हुए, वैसे ही मन को अपार शान्ति प्राप्त हुई। वहां के लोगों ने इस अतिशयकारी प्रतिमा के बारे में घटी हुई घटना को बताते हुए कहा-'भगवान शान्तिनाथ की प्रतिमा जमीन के अन्दर थी उसे बाहर निकालने की बहुत कोशिश की गई तो भी प्रतिमा बाहर नहीं आई। एक दिन पनागर के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति को सपना आया कि इस प्रतिमा को कच्चे धागे से बांधकर ऊपर निकालोगे तो वह बाहर आ जाएगी। सपने के अनसुार ही प्रतिमा को बाहर निकाला गया तथा बैलगाड़ी में प्रतिमा को रखकर दूसरे स्थान पर ले जाने का निश्चय किया गया। प्रतिमा को ले जाते समय बैलगाड़ी एक स्थान पर रुक गई और काफी प्रयत्न के बाद जब बैलगाड़ी टस से मस नहीं हुई तो प्रतिमा को वहीं विराजमान करना पड़ा। उस समय किसी कारणवश प्रतिमा का बायां हाथ टूट गया। किसी को पुनः स्वप्न आया कि इस प्रतिमा के हाथ को गुड़ तथा घी से चिपका दो तो हाथ जुड़ जाएगा। सचमुच हाथ जुड़ गया। उसका निशान आज भी दिखाई देता है।

दूसरी अतिशयकारी घटना यह हुई-भगवान शान्तिनाथ के सामने ही पार्श्वनाथ की वेदी है। वास्तुशास्त्र के अनुसार इस प्रतिमा को दीवार से चिपकाकर स्थापित किया गया था, तो वह प्रतिमा अपने आप आगे सरकने लगी। ऐसा कई बार हुआ। बार-2 ऐसा होने से प्रतिमा को वहीं स्थापित कर दिया गया। इस मंदिर में तेरह वेदियां हैं। चैत्यभक्ति पढ़ते हुए सभी त्यागियों ने चैत्य वन्दना की। ऐसी अतिशयकारी प्रतिमा को देखकर सभी का मन पुलकित हो गया। तत्पश्चात आहार हुआ। प्रवचन के उपरान्त कटनी की ओर विहार हुआ।

आचार्य श्री तिवरी में आहार करके श्री धर्न्य कुमार रांधेलिया जी के यहां पेट्रोल पम्प पर सामयिक हेतु गए। वहां संघस्थ 25 गाड़ियां भी आ गईं। रांधेलियाजी ने सभी गाड़ियों में पेट्रोल डाल दिया। तब उस समय मैंने सोचा-पेट्रोल पम्प में अचेतन गाड़ियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने के लिए पेट्रोल मिलता है। भगवान महावीर जी ने गाड़ियों में पेट्रोल डलवाया और आत्मा को मुक्तिनगर पहुंचाने वाला सम्यग् दर्शनादि रत्नत्रय रूपी पेट्रोल आचार्य श्री की दुकान पर मिलता है, एक बार मन लगाकर खरीद लिया तो बीच में खत्म होने वाला नहीं है। यह सस्ता नहीं बल्कि बिना मूल्य का है, टिकाऊ है। आइये, जितना चाहे खरीद लीजिए।

कटनी में प्रवेश

आचार्य श्री जब अपने संघ सहित कटनी पहुंचे तब सभी श्रावकों में भक्ति का अजस्र स्त्रोत प्रवाहमान था। सारी जनता आचार्य श्री के दर्शन के लिए दौड़ पड़ी। कटनी के लोगों ने बैंडबाजा से आचार्य संघ का स्वागत किया। इसी नगर में पहले से ही आचार्य श्री विद्यासागर जी की शिष्या आर्यिका अकम्पमति माताजी का संघ विराजमान था। वे कटनी से विहार करने वाली थीं लेकिन जैसे ही उन्हें पता चला कि आचार्य श्री बाहुबली महाराज जी का संघ कटनी आने वाले है तो उनके भी भाव आचार्य श्री के दर्शन के लिए हो गए। आचार्य श्री विद्यासागर जी की आज्ञा उन्हें मिली कि आप लोग आचार्य संघ के आने तक वहीं रुको। नगर में आगमन होते ही सभी आर्यिकाएं आचार्य श्री की आगवानी करने आगे आईं। सिद्ध भक्ति, श्रुत भक्ति, आचार्य भक्ति पूर्वक उन्होंने आचार्य श्री की वन्दना की। आचार्य श्री ने उनके रत्नत्रय आदि के बारे में पूछा। तदनन्तर संघस्थ आर्यिकाओं के साथ वंदामि-प्रतिवंदामि विनय पूर्वक किया। संघ नगर में पहुंचा। लगभग 39 त्यागियों का संघ अति वात्सल्य से कटनी में रहा। मंदिर के दर्शन के पश्चात् त्यागियों की आहार चर्या देखने

के लिए सारी जनता आतुर थी। सभी त्यागियों के निरन्तराय आहार होने से सभी सन्तुष्ट हुए। आहारदान देकर सभी ने सातिशय पुण्य कमाया। सामयिक के पश्चात् सभी आर्यिका माताजी आचार्य श्री के दर्शनार्थ उनके निवास स्थान में आयीं। मुख्य माताजी अकंपमति को आचार्य श्री का दर्शन न हो सका। इसलिए उन्होंने आचार्यश्री से एक दिन वहीं रुकने की प्रार्थना की। तदनन्तर उन्होंने आचार्य श्री के सामने विनयपूर्वक आध्यात्मिक सूत्र सुनने की इच्छा व्यक्त की। आचार्य श्री की मूरत तो भक्त के हृदय में भक्ति के अंकुर जाग्रत करती है। आचार्य श्री ने सभी माताजी को आध्यात्मिक सूत्र देते हुए कहा-

'एको में शाश्वतश्चात्मा ज्ञान दर्शन लक्षणः।
शेषा बहिर्भवा भावा सर्वे संयोग लक्षणा॥'

अर्थात ज्ञान दर्शन लक्षण वाला एक हमारी आत्मा ही शाश्वत है, शेष सर्व बाह्य भाव संसार बंध के कारण हैं। उनसे आप परे रहो। अन्तरंग में ही सच्चा सुख है।

आचार्य श्री का उपदेशामृत पीकर वे कृतार्थ हो गई थीं। उसके बाद आचार्य श्री प्रवचन के लिए मंच पर गये। एक साथ 40 त्यागियों को देखकर जनता प्रसन्न थी। प्रवचन से पूर्व संघपति का सत्कार किया गया। श्री भजनसागर जैन एवं गायत्री जैन ने अपने गीतों से आचार्य श्री के गुणों का स्तवन किया।

जैन सिद्धान्तों के प्रतिपालक आचार्यश्री बाहुबली महाराज जी के चरणों में कटनी समाज ने शत-शत वंदन करके भक्ति वशात शब्द रूपी बहुरंगी फूलों की माला समर्पित की।

॥ॐ नमः सिद्धेभ्यः॥

प.पू. आचार्यरत्न श्री 108 बाहुबली जी मुनि महाराज के चतुर्विध संघ सहित दिनांक 27 फरवरी 2000 को कटनी आगमन के महान पुण्य योग के महिमामयी क्षणों में-

सविनय चरण वंदन/स्तवन/नमन

हे परम पूज्य आचार्यरत्न!

परमपूज्य राष्ट्रसंत, भारत गौरव आचार्यरत्न श्री 108 देशभूषण मुनि महाराज के पट्टशिष्य आप श्री आचार्य समन्तभद्र स्वामी की कसौटी पर निर्विकार निराकरण एवं निःसंग होने से खरे उतरते हैं। सभी अर्थों में आप जैसे उत्कृष्ट संत के दर्शन करके हमारा जीवन धन्य हुआ है।

हे अलौकिक संत!

आप सरल, शांत एवं सौम्य व्यक्तित्व के धनी हैं। आपके चेहरे से ज्ञान का तेज टपकता है तथा वाणी से बहता है अध्यात्म रस का निर्झर। हे मुनिश्री, आप ऐसे ही अलौकिक संत के पर्याय हैं।

हे आत्मसाधक!

पूज्य कुन्दकुन्द स्वामी की 'अज्झयणमेव झाणं' की उक्ति को आपने जीवन में उतार लिया है। ज्ञान चर्चा ही आपके आनन्द का विषय है। तीर्थंकरों की वीतराग वाणी के प्रचार-प्रसार में आप अहर्निश प्रयासरत है। आपकी मनोहर मुखमुद्रा एवं प्रकृष्ट प्रवचन कला में चुम्बकीय प्रभाव है।

हे वन्दनीय संत!

तत्वज्ञान के मनन-मंथन से जो मोती निकलते हैं, उन्हें आप सारी दुनिया को बांट देते हैं। आपका जीवन अपने लिए नहीं, सर्व-हिताय संकल्पित है। आपके सत्संग और सानिध्य में लगता है मानों हम पूज्य भूतबलि, पुष्पदंत या उमास्वामी-सरीखे किसी चमत्कारी पूर्वाचार्य के पास बैठे हों।

हे महान सूत्रकार!

आचार्यश्री आप नपा-तुला बोलते हैं, लाग-लपेट की बातें नहीं करते, संकल्प-विकल्पो से दूर रहते हैं और व्यर्थ के वाद-विवादों में अपना समय नष्ट नहीं करते। हे महान् सूत्रकार, आपको शतशः प्रणाम।

हे अध्यात्मिक योगी!

भौतिकतावादी युग में वैज्ञानिकता के आवरण में जीने वाला मानव जीवन की सच्चाइयों से विमुख हो गया है। आज की सभ्यता अति भौतिकता के दारुण चक्र में फंसकर स्वयं अपने विनाश की लीला रच रही है। इस संकट से उबारने के लिए आपने आध्यात्मिक शक्ति से ऐन्द्रियिक अनुभूतियों के सीमांतों को बोधकर अतीन्द्रिय चेतना के नवीनतम शिखरों को अनावरित किया है। जीवन और जगत् के बीच में से ही अनंतता के आयामों को ग्रहण करने की प्रेरणा दी है। आपका अनुभूतिशील आत्मिक पक्ष यथार्थवादी संवेदनाओं से अनुप्रणित है।

हे विश्वशांति के अद्भुत प्रेरक!

आप अनेकांत की मंगलमूर्ति हैं। इस भौतिक जगत् में चारों ओर वैर और शत्रुता के भयविल मेघ गरज रहे हैं। कलह और शांति की इस पूजा में अहिंसा और मित्रता से शांति, दया व प्रेम से रहने का पाठ धर्म ही सिखाता है। अकेला धर्म ही मनुष्य को आपदाओं से मुक्ति दिला सकता है। अतः विश्व-शांति और मैत्री भाव को विस्तारित करने की दिशा में शांति-रथ की आयोजना को साकार बनाने वाले आप पहले 'राष्ट्रसंत' हैं।

दिव्य शांति प्रवर्तक के रूप में हे सर्वतोभद्र तपःपूत परम पूजनीय आचार्यरत्न गुणानुवाद करते हुए आपको 'शांतिदूत' के बिरूद से मण्डित कर स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करते हैं और भगवान जिनेन्द्र देव के शासन से प्रार्थना करते हैं कि आप सुदीर्घ काल तक सम्पूर्ण मानवता के लिए मंगल पथ का प्रदर्शन करते रहें।

दिनांक 27.2.2000
मिती फाल्गुल कृष्ण 8
वीर निर्वाण संवत् 2526

हम हैं आपके चिरकृतज्ञ
दिगम्बर जैन पंचायत
कटनी (म.प्र.)

पू. आर्यिका आराध्यमती माता जी ने अपने प्रवचन में पू. आचार्य श्री बाहुबली सागर एवं पू. आचार्य श्री विद्यासागर जी के मिलन (1985 में पपौरा जी में हुआ था) की याद दिलाते हुए कहा-जब दो धर्माचार्यों का अद्भुत मिलन हुआ था तब हजारों की संख्या में खड़ा जन समुदाय इस दृश्य को आनन्द से एकटक देख रहा था। जय-जयकार की आवाज से सारा नभोमण्डल गुंजायमान हो गया था। उस मिलन को आज भी सारे लोग याद करते हैं।

बन्धुओं! सरिता के तट पर एक बालिका एक घड़ा, एक वृद्धा कटोरा लेकर, एक नवयुवती लोटा लेकर आती है। कुछ लोग खाली हाथ ही आते हैं। जिसके पास जो पात्र था उसमें वह जल भर ले गए। जो खाली हाथ आए वे वह वैसे

ही चले गए। इसी प्रकार आपके नगर में भी ज्ञान की गंगा आई है इसलिए आप भी अपने पात्रों में ज्ञान रूपी जल भर लो। आचार्य श्री तो ज्ञानरूपी धन दोनों हाथों से लुटा रहे हैं आप भी अपनी तिजोरी ज्ञान रूपी धन से भर लो। खाली हाथ मत जाओ। आचार्य श्री अपने विशाल संघ के साथ शाश्वत सिद्ध क्षेत्र के दर्शनार्थ जा रहे हैं। उनकी यात्रा सफल हो। उन अनंतानंत सिद्ध भगवान को हमारा कोटि-2 नमन। जिन्होंने इस क्षेत्र से मुक्ति पाई। पू. आचार्य श्री का विहार इस पृथ्वी तल पर चिरकाल तक होता रहे। इनका उपदेशामृत पीकर सभी जीव संतृप्त रहें। यही भावना व्यक्त करते हुए मैं विराम लेती हूं।

मनुष्य होश में आता है बरबाद होने के बाद

आचार्य श्री ने अपने प्रवचन के दौरान बताया कि जमीन आसमान में जितना अंतर है उतना अन्तर संसार और मोक्ष में है। एक ही लाईन पर थोड़ी-2 दूरी पर अनेक प्रकार की खदानें थीं। उसी रास्ते से कुछ लोग जा रहे थे। लोहे की खदान से किसी ने लोहा लिया। आगे तांबे की खदान देखकर किसी ने लोहा फेंक कर तांबा ले लिया। पीतल की खदान मिलने पर किसी ने पीतल लिया। आगे सोने की खदान मिली। लोहा, पीतल, तांबा को फेंक कर किसी ने सोना ने लिया। किसी ने लोहा ही अपने पास रखा। आगे रत्नों की खदान तक लोग पहुंच ही नहीं पाए थे। लेकिन उनमें भी जो होशियार थे उन्होंने रत्नों की खदान तक पहुंचकर रत्नों को पा लिया। रत्नों के पारखी बिरले ही होते हैं। जिन्होंने रत्न पाया वे मालामाल हो गए। जिन्होंने लोहे को ही अपना सब कुछ मान लिया वे कंगाल बन गए।

दूध जलता है पानी जलने के बाद।
मनुष्य होश में आता है, बरबाद होने के बाद॥

प्रवचन के पश्चात आचार्य श्री ने कटनी में विद्यमान सभी माताजीओं को विशेष रूप से आशीर्वाद देते हुए कहा-'अभी माता जी उपचार से महाव्रती हैं। महाव्रत से स्त्रीलिंग पर्याय छेदकर स्वर्ग में इन्द्र पद प्राप्त करके वहां से चलकर मनुष्य पर्याय प्राप्त करें। दिगम्बर व्रत धारण कर मुक्ति लक्ष्मी की प्राप्ति करें। इन्हें भी सिद्ध स्थान प्राप्त हो यही हमारा उनके लिए विशेष आशीर्वाद है।'

प्रवचन के उपरान्त आचार्य श्री का वहां से विहार हुआ।

भक्तों की भक्ति में शक्ति

कटनी में ही सतना के सभी श्रावकगण आचार्य श्री को आमन्त्रण देने आ गए। गुरुदेव के चरणों में श्रीफल अर्पित कर सतना की ओर विहार करने की विनती की। प्रतिष्ठित व्यक्ति श्री निर्मल जी जैन, श्री सिद्धार्थ जैन, आचार्य श्री के चरणों में पुनः सतना पधारने के लिए आग्रह कर रहे थे। फिर भी आचार्य श्री सतना जाने के लिए इन्कार कर रहे थे। क्योंकि सतना शिखर जी जाने के मार्ग पर नहीं था। फिर भी भक्तों ने कहा-'गुरुदेव हमारे नगर में शान्तिनाथ भगवान अर्थात बड़े बाबा की प्राचीन प्रतिमा है। बड़े आपको बुला रहे हैं हम तो सामान्य व्यक्ति हैं हम आपको कैसे ले जा सकते हैं। तीन चार दिन की जबरदस्ती के बाद अन्त में आचार्य श्री को सतना जाने का निर्णय लेना पड़ा। आखिरकार भक्तों की जीत हो गई।

सतना नगर में आचार्य श्री का संघ सहित आगमन

सतना नगर के विद्वान प्रतिष्ठित व्यक्ति श्री नीरज जैन, श्री निर्मल जैन, श्री सिद्धार्थ जैन आदि लोगों ने आचार्य श्री का भव्य स्वागत किया। श्री नीरज जैन की बहिन वर्तमान में स्व. आचार्य श्री शिवसागर महाराज की शिष्या विदुषी रत्न विशुद्धमती माता जी हैं। जिन्होंने तिलोय पण्णत्ति ग्रंथ का अनुवाद अत्यन्त सरल भाषा में किया। ऐसे विद्वानों की नगरी में आचार्य श्री के आगमन से हर मन पुलकित हो उठा। सतना का रास्ता बहुत खराब था फिर भी आचार्य श्री ने भक्तों की भक्ति को निराश नहीं किया। दिगम्बर मुनि तो दिन-रात 22 परीषह सहते हैं उनमें चर्या नाम का एक परिषह है।

कंकर पत्थर चुभकर पग में घाव बना है पगतल में,
कमल पत्र सम कोमल पग से लहू बह रहा जंगल में।
तथापि मुनिजन मुक्ति रमा से रति रख चलते रहते हैं,
मुमुक्षु बनकर मोक्ष मार्ग में चर्या परिषह सहते हैं।

ऐसे चर्या परिषह सहन करने वाले वात्सल्य रत्नाकर ने सारी जनता को सम्बोधित करते हुए कहा-'शान्तिनाथ भगवान की कृपा से ही आज हम यहां आए है। सोलहवें नम्बर के शान्तिनाथ भगवान के चार अक्षर आज अजर अमर बन गए। कल्पवृक्ष के समान फल प्रदाता बन गए। इस अजर अमरता के पीछे उनके पूर्वभव का त्याग एवं तप है। आज हम शान्तिनाथ भगवान की जय बोलते हैं किन्तु उनके बताए हुए मार्ग पर नहीं चलते हैं। एक जगह कहा भी है-'मैं बाप को मानता हूं पर बाप की बात नहीं मानता हूं।' जब तक हम त्रिलोकी पिता की बात को नहीं मानेंगे, तब तक जय-जयकार लगाने से क्या फायदा। हम तो सतना नगर में इसलिए आए हैं कि जहां से बीस तीर्थंकर मोक्ष को गए है। उस पवित्र शाश्वत, जहां का कण-2 पवित्र है। ऐसे स्थान की रज अपने माथे पर लगाने आप भी हमारे साथ चलो। विचार करते-2 ही हमारी सारी जिन्दगी बीती जा रही है। एक बार एक व्यक्ति वर्षों से सोचता रहा और फिर खूब सोच समझकर निर्णय लिया कि मिलिट्री में भर्ती हुआ जाए और वह भर्ती हो गया। मार्चपास्ट के लिए परेड हो रही थी, कप्तान ने आदेश दिया-दाएं मुड़। सारे सैनिक तुरन्त मुड़ गए। ये सज्जन सोचने लगे कि खड़े रहना ठीक रहेगा या मुड़ना ठीक रहेगा। कप्तान ने फिर कहा-बाएं मुड़। सैनिक तुरन्त बायीं ओर मुड़ गए। ये सज्जन ज्यों के त्यों खड़े रहे। कप्तान ने आकर फिर उन्हें जोर से हिलाया वे जैसे सोते से जाग पड़े हों। कप्तान ने कहा-'क्यों नींद ले रहे हो या कान बहरे हो गये हैं? वो सज्जन बोले-जैसा आप सोच रहे हैं वैसा कुछ भी नहीं हैं। मैं हर काम सोच विचार कर ही करता हूं। मिलिट्री में आने के लिए मैंने कई वर्षों तक सोचा तब निर्णय लिया। इस वक्त मैं सोच रहा हूं कि दायां मुड़ना ठीक है या बांया मुड़ना, आगे बढ़ना उपयुक्त रहेगा या जहां पर खड़े हैं वहीं पर ठीक है। कप्तान बोला-इतना अधिक सोचने वाला व्यक्ति तो बड़ा खतरनाक सिद्ध होगा। अगर ऐसे व्यक्ति को लड़ाई पर भेज दिया जाए तो वह सोचता ही रहेगा कि गोली चलाऊं या गन चलाऊं या बम फेकूं। जब तक दुश्मन इसे ही खत्म कर देगा।

कप्तान ने कहा कि तुम कुछ और भी जानते हो? उसने कहा-'हां-2 क्यों नहीं। मैंने पाक कला में डिप्लोमा किया है। अच्छा स्वादिष्ट भोजन पकाना जानता हूं।' कप्तान ने कहा-आप परेड के लायक नहीं हैं। आप मेस में जाइये। ये सज्जन मेस में पहुंच गए। वहां का जो प्रमुख रसोइया था। उसने कहा-मैं बाजार से सब्जी, आटा, घी, लेने जा रहा हूं। शाम को लौटूंगा तब तक तुम ये थोड़ी सी मटर की फलियां हैं इन्हें छीलकर रखना। शाम को जब वह वापस लौटा तो देखा कि हजरत ज्यों के त्यों प्रस्तर प्रतिमा के समान बैठे हैं। सामने मटर की फलियां ज्यों की त्यों पड़ी हैं। उन्होंने आकर पूछा-'आपने मटर क्यों नहीं छीली?' तो वो बोले-'आपने कहा था कि छोटी एक तरफ डालना बड़ी दूसरी तरफ लेकिन

यह तो बताया नहीं था कि बीच वाली कहां डालूं? यह सुनकर रसोइया ने माथा ठोक लिया और कहा कि जो व्यक्ति काम करने से अधिक समय सोच विचार करने में लगाते हैं वह आगे नहीं बढ़ पाते हैं।

अभी आपने कथा सुनी। इस कथा का बताने का अर्थ यही है कि आप लोग भी सोचने में ही इसी प्रकार सारा जीवन निकाल देते हैं। हम तो आपसे इतना ही कह रहे हैं कि किसी प्रकार का विचार न करते हुए आप भी इस यात्रा में शामिल हो जाइए। सोचने वाले कभी भी अपना जीवन सफल नहीं बना पाते। अपना जीवन सफल बनाओ यही मेरा शुभ आशीर्वाद है।' प्रवचन के बाद आचार्य संघ का विहार रीवा की ओर हुआ। रीवा वासियों ने भी आचार्य संघ का स्वागत भक्ति पूर्वक किया। शान्तिनाथ भगवान के दर्शन कर संघ आहारचर्या हेतु निकला। सामायिक के बाद प्रवचन हुआ, तदनन्तर विहार शुरू हुआ। विहार के समय पुलिस विभाग भी साथ था। चार दिन की संगति के प्रभाव से उन्होंने आचार्य श्री की प्रेरणा से सभी प्रकार के व्यसनों का त्याग कर दिया और अपना जीवन सफल बना लिया। हनुमना ग्राम में ग्रह चैत्यालय के दर्शन कर संघ मिर्जापुर की ओर रवाना हुआ। मिर्जापुर में भी विशेष धर्मप्रभावना हुई। उत्तर प्रदेश के बाद बिहार प्रान्त की ओर संघ का गमन हुआ।

आचार्य संघ का बिहार प्रान्त मे पदार्पण

आचार्य संघ उत्तर प्रदेश मिर्जापुर जिले में पहुंचा। वह उ.प्र. का अन्तिम स्थान था। वहां तीन जिनमंदिर एवं चैत्यालय हैं, दर्शन कर संघ आगे रवाना हो गया।

उत्तर प्रदेश के बाद आचार्य श्री अपने विशाल संघ सहित बिहार प्रान्त में आ पहुंचे। जहाँ से चौबीस तीर्थंकर मोक्ष गये है। संघस्थ सभी त्यागियों व श्रावकों को बहुत खुशी हुई। बिहार प्रान्त आते ही सबको ऐसा लगने लगा अब सम्मेद शिखर जी बहुत ही नजदीक आ गई। जल्दी से जल्दी हमें इस पुण्य भूमि का दर्शन होगा।

आचार्य श्री ने मुक्तागिरी क्षेत्र में ही सभी से कह रखा था-'हम 25 मार्च को सम्मेद शिखर जी पहुंच जायेगें।' अभी 100 कि.मी. की दूरी थी सभी को आशंका होने लगी, दो-ढाई दिन में सौ कि.मी. अंतर काटना असंभव है। आचार्य श्री के पास सभी श्रावक आये और कहने लगे-'आचार्य श्री! 25 मार्च को संघ का शिखरजी पहुंचना कुछ अशक्य सा लगता है।' तब आचार्य श्री ने उनसे कहा-'चलना तो हमें है। आप लोग किसी प्रकार की चिंता मत करो, हम 25 तारीख को अवश्य ही शिखर जी पहुँच जायेंगे।

तूफान का सामना डट कर किया

23 मार्च को आचार्य श्री का संघ हजारी बाग जिले के अन्तर्गत 'सिधरावाँ' में था और चौके वाले श्रावक-श्राविका संघपति सह वहाँ से 12 कि.मी. दूर 'पंचमाधव' गांव के नजदीक एक खेत में नूतन 'बाहुबली नगर' बसाकर अपने अपने टेंटों में चौका लगाने की तैयारी कर रहे थे।

शाम का समय था। सूर्यास्त से पहले ही सबने भोजन किया। पश्चात अपनी अपनी गाड़ियों से सामान निकालकर टेंटों में रख दिया। माताजी एवं क्षुल्लक-क्षुल्लिकाओं के सोले के शुद्ध वस्त्र सुखाने के लिए डाल दिये। इतने में ही बहुत बादल छा गये। कोई कहने लगा-'बारिश आ जाए तो क्या करेगें' तो कोई कहने लगा-'तूफान आ जाये तो क्या करेगें' आदि।

सभी ने मिलकर भगवान महावीर की आरती व गुरूदेव की आरती करके सामायिक की। सामायिक के बाद दिनभर के थके हुए श्रावक-श्राविका सोने की तैयारी करने लगे। कुछ लोग चर्चा करते हुए बैठे थे। इतने में ही भयंकर तूफान शुरू हो गया। जोरों से हवा चलने लगी। उस तूफान में कौन कहाँ हैं, किसी का किसी को पता नहीं था। सभी लोग घबरा कर जोर-जोर से णमोकार मंत्र बोलने लगे। तेज हवा चलने के कारण कुछ टेंट उड़ गये कुछ टेंट फट गये, बर्तन कपड़े आदि सभी उड़ गये। ऐसे भयंकर तूफान को देखकर कुछ श्राविकाएं मूर्च्छित हो गई, डर के मारे किसी की वाचा बंद हो गई। सभी हैरान हो गए। वह रात सब रातों से परे थी। आचार्य श्री अपने संघ सहित जहाँ रात्रि में ठहरे थे, वहाँ भी बारिस थी तूफान था। लेकिन आचार्य श्री के आशीर्वाद से किसी को भी कुछ तकलीफ नहीं हुई।

प्रातः सूर्योदय होते ही आचार्य संघ ने वहाँ से विहार किया और नौ बजे जहाँ आहार होने वाला था वहाँ पहुँच गया। आचार्य श्री ने जैसे ही उस भूमि को स्पर्श किया, वैसे ही सूर्यदेव अपनी किरण सहित उनके स्वागत के लिए वहां आ गया। आचार्य श्री के पहुंचते ही सभी श्रावक ऐसे दौड़े-दौड़े वहां आ गये, जैसे मां को देख बच्चे खुश होते हैं। कोई हंसकर, तो कोई रो-रो कर पूज्य आचार्य श्री को रात बीती घटना बता रहे थे। सभी के मुख पर एक ही शब्द-'गुरुदेव आपके आशीर्वाद का ही यह फल है कि इतना बड़ा संकट आने पर भी किसी को कुछ नहीं हुआ।

उस दिन सभी का आहार निरन्तराय हो गया। आहार होते ही संघपति जी ने आचार्य श्री से कहा-'अभी शिखर जी 85 कि.मी. है। 25 तारीख को पहुंचना कठिन है।' तभी आचार्य श्री ने सभी त्यागियों को बुलाकर कहा-'आगे क्या करना। गुरुदेव आप चिन्ता न करें हम सभी के भाव 25 तारीख को ही शिखर जी जाने के हैं। जितना भी चलना पड़े हम चल लेंगे।' जो वृद्ध साधु थे-उन्होंने भी आचार्य श्री को धीर बंधाया आप हमारी चिन्ता मत कीजिए-हम धीरे-धीरे चलकर दूसरे दिन पहुंच जायेंगे। बस गुरुदेव का उत्साह बढ़ गया। तुरंत ही आचार्य श्री ने विहारकर दिया और 6-7 कि. मी. दूरी पर एक स्कूल में सामायिक के लिए पहुंच गये। सामायिक होते ही पुनः विहार हो गया। क्योंकि सभी के मन में जल्दी से जल्दी शिखर जी पहुंचने की तमन्ना थी।

पूर्वाभास

संघपति जी ने रात के विश्राम के लिए जो स्थान निश्चित किया था वहां आचार्य श्री 4 बजे ही पहुंच गये। आचार्य श्री ने तुरंत ही आगे जाने का निर्णय लिया और निकल गये। कु. स्नेहल (फलटण संघपति) गाड़ी लेकर आगे की व्यवस्था देखने चली गई। 7-8 कि.मी. पर एक बहुत बड़ा स्कूल था। बारिस शुरू थी फिर भी आचार्य संघ आगे बढ़ता जा रहा था। 6.30 बजे आचार्य श्री वहां पहुंच गये। अब केवल आहार की जगह यहां से 5 कि.मी. की दूरी पर ही थी। आचार्य श्री ने चौके वालों को आगे जाने की खबर भिजवाई। कुछ लोग गाड़ी लेकर गये। वहां पर चौके वालों ने अपना सारा समान नीचे उतार लिया था। सभी भोजन करने ही वाले थे इतने में एक पुलिस अधिकारी वहां आये और संघपति जी से कहा-'आप लोग एक मिनट भी यहां मत रुकिये। एक तो आगे चले जाइये (लगभग 20 कि.मी.) नहीं तो फिर अपने गुरुदेव के पास ही वापस चले जाइये।' यहां आज धोखा है। तब संघपति ने पी.एस.सी.आई. (पुलिस सब इन्सपेक्टर) से कहा-'यह खतरनाक इलाका है, ठीक है लेकिन आप लोगों के होते हुए हमें किस बात का डर।' सब इन्सपेक्टर बोले-यहां तो हमारे ऊपर ही आपत्ति आने वाली है, ऐसी परिस्थिति में हम आपकी रक्षा कैसे कर सकेंगे? पुलिस अधिकारी ने स्वयं सामने रहकर सामान गाड़ी में रखवाया और सभी को गुरुदेव के चरणों में वापिस ले आये। गाड़ी आते ही सभी को अचंभा हुआ सारी की सारी गाड़ियां यहां क्यों?

आचार्यश्री ने उन सबसे मौन में पूछा-'आप लोग वापिस क्यों आ गये?' संघपति जी ने कहा-'आचार्यश्री हम जहां चौका लगाने वाले थे वहां कुछ धोखा है, ऐसा पुलिस वालों के द्वारा ज्ञात होते ही हम आगे न जाकर आपके पास आ गये।'

कुछ ही देर बाद ज्ञात हो गया कि वहां एक भयानक बम विस्फोट हुआ जिसमें पुलिस चौकी जलकर भस्म हो गई। इस विस्फोट से कुछ लोगों के प्राण चले गये। उसमें कुछ पुलिस के जवान भी थे।

तदनन्तर यह समाचार ज्ञात हुआ कि जिस गांव में ये लोग चौका करने वाले थे। उस गांव को लगभग 500 आतंकवादियों ने घेर रखा था।

शायद पू. आचार्य श्री को अपने दिव्यज्ञान से इस खतरे का पूर्वाभास हो गया था। इसलिए तो उन्होंने सभी श्रावकों को वह स्थान तत्काल छोड़ने का आदेश दे दिया था।

आचार्य श्री की अनुकम्पा से ही इतने जीवों को उस दिन अभयदान मिला। उस घटना को याद करके आज भी रोम-राम कांप उठता है।

दूसरे दिन जब उसी रास्ते से विहार हुआ तब घटित भयंकर दुर्घटना का दृश्य देखकर सभी की देव-गुरु-धर्म के प्रति श्रद्धा और भी अधिक बढ़ गई।

ब्र. राजगोंडा की इच्छा सम्मेद शिखर पर दीक्षा लेने की थी, लेकिन उस समय क्षु. दीक्षा का मुहूर्त न होने से आचार्य श्री ने 24 तारीख को उनकी दीक्षा निश्चित कर दी थी।

क्षुल्लक दीक्षा

24 तारीख का शुभ दिन आ गया। सुबह विहार करते हुए आचार्य संघ 'अटका' गांव में आ गया। रास्ते में ट्रेफिक जाम होने से चौके की गाड़ियां आचार्य श्री के पहुंचने के बाद ही वहां आयीं। आचार्य श्री का वहां पदार्पण होते ही मौसम एकदम साफ हो गया। छायादार झाड़ों से वातावरण बहुत रम्य था। सुबह 10 बजे गणधर वलय विधान हुआ और 2 बजे दीक्षा समारोह सम्पन्न हुआ। जंगल में मंगल हो गया। ब्र. राजगोंडा क्षु. धर्मानन्द बन गये। कार्यक्रम होते ही विहार हो गया। संघस्थ सभी त्यागियों की नजर आज सम्मेदगिरी की ओर लगी हुई थी। शाम को 5 बजे दूर से ही शाश्वत पर्वतराज के दर्शन हो गये। सबने जय-जयकार की मधुर ध्वनि करते हुए भावपूर्वक दर्शन किए। त्यागियों के आनंद का पारावार नहीं था।

आचार्य श्री का ईसरी में प्रवेश

25 मार्च को 20 कि.मी. का अंतर काटकर आचार्य श्री जी अपने विशाल संघ सहित ईसरी आ पहुंचे। ईसरी श्री तीर्थराज सम्मेद शिखरजी का प्रथम स्टेशन है। 'पार्श्वनाथ हिल' रेलगाड़ी यहीं आती है। यह एक मधुरिम स्थल है। त्यागी, साधक, मुमुक्षु जन यहां इस उदासीन आश्रम में आकर महीनों रहते हैं। यहां चार मंदिर हैं। आश्रम में भगवान श्री पार्श्वनाथ जी की पद्मासन श्यामवर्ण की विशाल मनोज्ञ प्रतिमा विशेष दर्शनीय है।

यहां से ही पर्वतराज की चौबीसी टोंकों के दर्शन कर सभी जन तृप्ति का अनुभव कर रहे थे। सभी का हृदय खुशी से उछल रहा था क्योंकि मंजिल नजदीक ही थी। त्यागियों को तो ऐसा लग रहा था मानो दौड़कर भगवान पार्श्वनाथ व

भगवान चन्द्रप्रभु की टोंक पर पहुंच जाये। संघस्थ कुछ त्यागी पहली बार ही दर्शन को आये थे अतः उनकी खुशी की तो कोई सीमा नहीं थी। दोनों संघपति जी की भाव विभोरता तो अवर्णनीय थी। आचार्य श्री के सम्मेद शिखर जी पहुंचने के पहले ही दक्षिण भाग से भक्तों की टोली उमड़ पड़ी।

विद्रोहियों के द्वारा उपसर्ग एवं मुनि सेवा

ईसरी में आहार होते ही वहां से विहार हुआ। बीच के रास्ते से (जंगल से) आचार्य श्री संघ सहित शिखर जी की ओर आगे बढ़ रहे थे। आगे आगे केशरी ध्वज लिए श्रावकगण व पीछे पीछे संघ। उस समय जय-जयकारों के नारों से आकाश गूंज उठा। पेड़-पौधे झूम-झूम कर अपना आनन्द बिखेर रहे थे। पक्षीगण मधुर कलरव से गुरुभक्ति में लीन होकर नाच रहे थे। चारों ओर आनन्द का वातावरण था।

बियावान जंगल में झाड़ों के नीचे जहां-तहां सामायिक हेतु त्यागीगण बैठ गये। कुछ त्यागी आगे चले गये और कुछ पीछे रह गये। जो त्यागी आगे थे वे आचार्य श्री के आने के पहले ही आगे चले गये। जंगल में पगडंडी के अनेक रास्ते थे। सही रास्ता उन्हें मालूम नहीं था, इसलिये उन्होंने दूसरा रास्ता पकड़ लिया। थोड़ी दूर जाने के बाद दो चार लड़कों ने उन्हें रोक लिया और उनसे कहा-आप लोग हमारे इलाके में क्यों आये हो? इस तरह नंगे क्यों घूम रहे हो? आदि अनेक कटु वचनों से प्रहार करने लगे। मुनि श्री के साथ जो श्रावक थे, उन्हें ठीक से हिन्दी नहीं आती थी इस कारण वे लोग और भी उन्हें सताने लगे। इतने में ही आचार्य श्री उस स्थान पर आ गये। वे प्रश्न पर प्रश्न पूछते ही जा रहे थे। साथ ही कह रहे थे अगर आप हमारे प्रश्नों का उत्तर नहीं दोगे तो हम लोग आपको आगे नहीं जाने देंगे। हमें 2 लाख रुपये चाहिये वरना आप सभी को पिस्तौल से मार डालेंगे। आचार्य श्री थोड़ी देर तक सब कुछ सुनते रहे फिर उन्हें समझाते हुए कहा-'बच्चों! नग्न रहना हमारा धर्म है। हमने तो सब कुछ त्याग दिया है। हमारे बदन पर वस्त्र तक नहीं हैं तो रुपये का हमारे लिए क्या काम?' पुनः आचार्य श्री ने उनसे कहा-'बच्चों! सामने के पेड़ से चार फल ले आओ' आतंकवादियों के लिए यह काम बिल्कुल सरल ही था। उनमें से एक लड़का दौड़कर गया और तत्काल ही चार फल ले आया। आचार्य श्री ने उनसे कहा-'अब एक काम और करो। जहां से इन फलों को तोड़कर लाये हो, वहीं पर इन्हें लगा आओ।'

वह लड़का तपाक से बोला-'यह कैसे हो सकता है?' आचार्यदेव ने कहा -'भैय्या! जब तुम जानते हो कि टूटा जुड़ता नहीं तो फिर तोड़ने का काम ही क्यों करते हो?'

इतना सुनते ही लड़कों को कुछ बोध हो गया।

आचार्य श्री ने पुनः सम्बोधन करते हुए कहा-'हमने तो सब कुछ त्याग दिया फिर इन कपड़ों का भार क्यों? विकारी भाव लेश मात्र भी हमारे मन में नहीं है इसलिए तो निर्विकार बन हम सब स्थानों पर भ्रमण (विहार) करते हैं।'

इस प्रकार आचार्य श्री की वाणी से वे लोग बहुत प्रभावित हुए। उन्हें न सिर्फ जाने दिया बल्कि कुछ दूर उनके साथ विहार भी किया। इस तरह तमाम छुटपुट विघ्न-बाधाओं के बाद आचार्य श्री अपने विशाल संघ सहित 25 मार्च की शाम को 6 बजे सम्मेद शिखरजी पहुंच गये। वहां पर चार आचार्यों का समागम हुआ। सभी ने आचार्य संघ की अगवानी बड़े ही वात्सल्य पूर्वक की। लगभग 40-50 त्यागियों ने आचार्य श्री का भव्य स्वागत किया। मधुवन में पहुंचते ही सबकी थकान स्वतः ही मिट गई।

आचार्य श्री का सम्मेद शिखर पर पदार्पण होते ही भक्तों का मेला सा लग गया।

दिल्ली की ओर विहार करते समय मध्यान्ह में मंत्र जाप, सामायिक करते हुए पू. आचार्यश्री

टी.टी. लिमिटेट, गजरौला श्री रिखबचंद जी जैन व श्री ब्रिजेशचंद जैन की फैक्टरी में पू. आचार्यश्री जी का आगमन

फैक्टरी में पू. आचार्यश्री के संघ का आहार
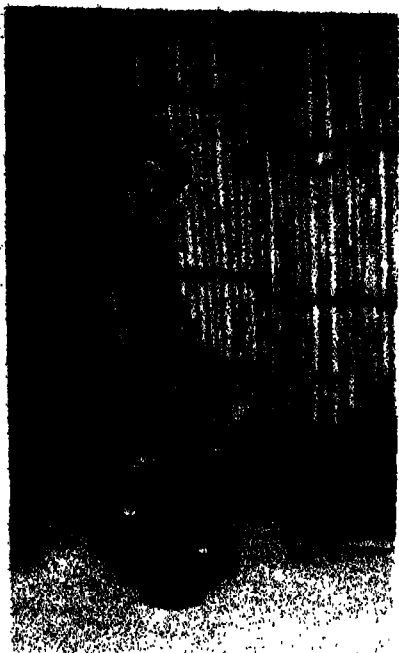
ध्यानमुद्रा में पू. आचार्यश्री

पू. आचार्यश्री संघस्थ मुनिराजों के साथ

पू. आचार्यश्री संघस्थ आर्यिकाओं के साथ

आचार्य वंदना करते हुए संघस्थ त्यागी
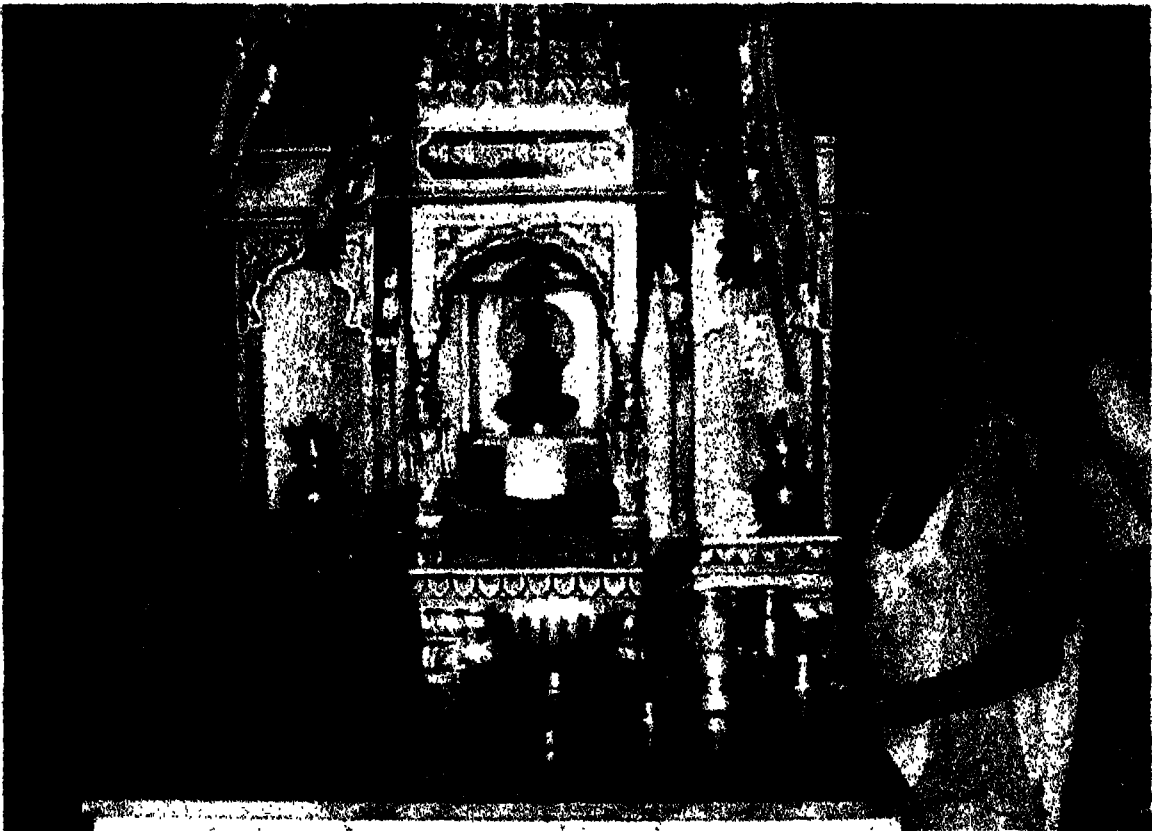
श्री अतिशय क्षेत्र अहिछत्र में तिखाल वाले बाबा के चरण स्पर्श करते हुए पू. आचार्यश्री

श्री अतिशय क्षेत्र अहिछत्र पू. आचार्यश्री को आहार देते हुए श्रावक श्राविका गण

दि. 9 जुलाई, 2000 के दिन प्रातः 9 बजे दिल्ली के परेड ग्राऊँड में विशाल जन सभा को सम्बोधित करते हुए पू. आचार्यश्री
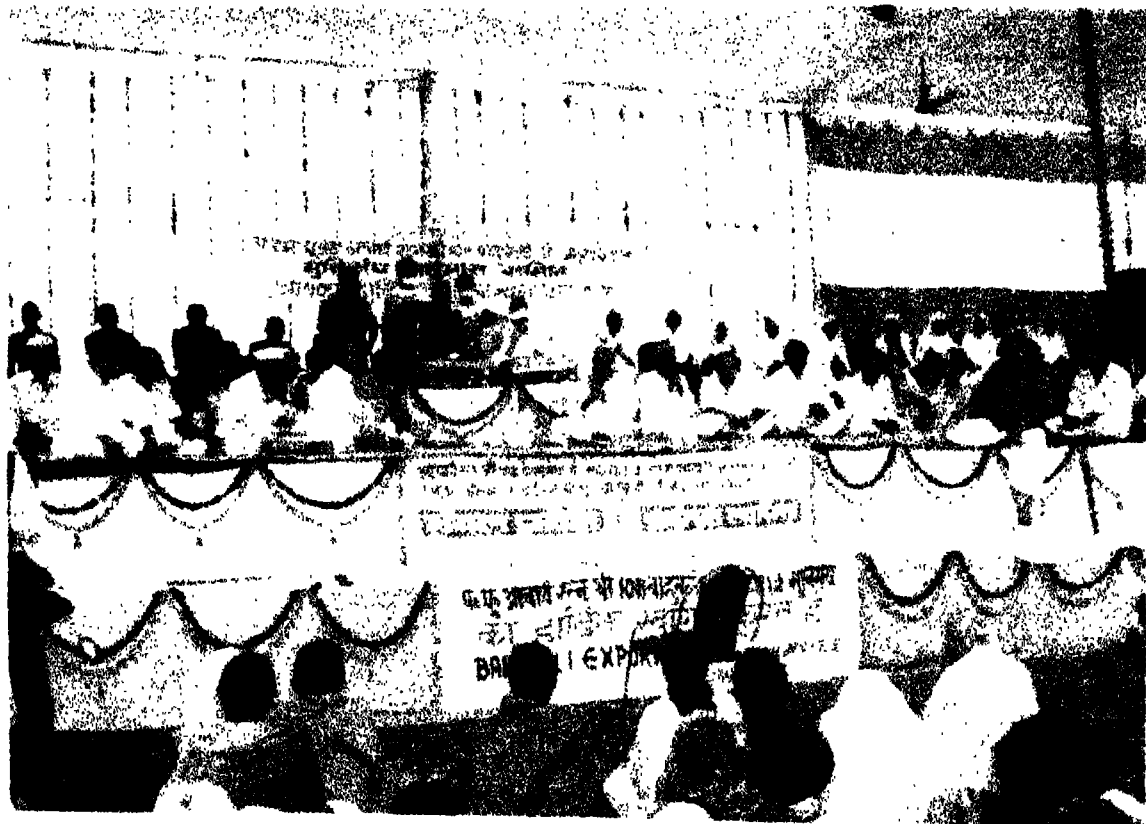
परेड ग्राऊंड में लाल किले के सामने दिल्ली में विशाल मंच पर विद्वान गणों एवं संघ के साथ पू. आचार्यश्री

पू. आचार्यश्री विशाल जनसमुदाय को मंगल आशीर्वाद देते हुए

परेड ग्राऊंड (दिल्ली) में आचार्य श्री का उपदेश श्रवण करता हुआ जन समुदाय

दिल्ली राजधानी के महापौर श्री शाँति देसाई पू. आचार्यश्री से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

परेड ग्राऊंड (दिल्ली) में आचार्यश्री का उपदेश श्रवण करता हुआ जन समुदाय

दि. 15.7.2000 के दिन प. पू. आचार्यश्री के संघ का वर्षायोग कलश स्थापना करते हुए। संघपति श्री विनेश जी, धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता जी, सुपुत्र अंकित लाला श्री लच्छुमल जी धर्मशाला के मालिक श्रीमान् नरेन्द्र जी (कालु), श्री ज्ञानचंद सेठीजी, श्री सतीश जैन श्रावक गण

दिल्ली राजधानी के मुख्यमंत्री दिल्ली सरकार श्रीमती शीला दीक्षित पू. आचार्यश्री से आशीर्वाद प्राप्त करती हुई

दिल्ली राजधानी के वित्त मंत्री श्री महेन्द्र सिंह साथी पू. आचार्यश्री से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए
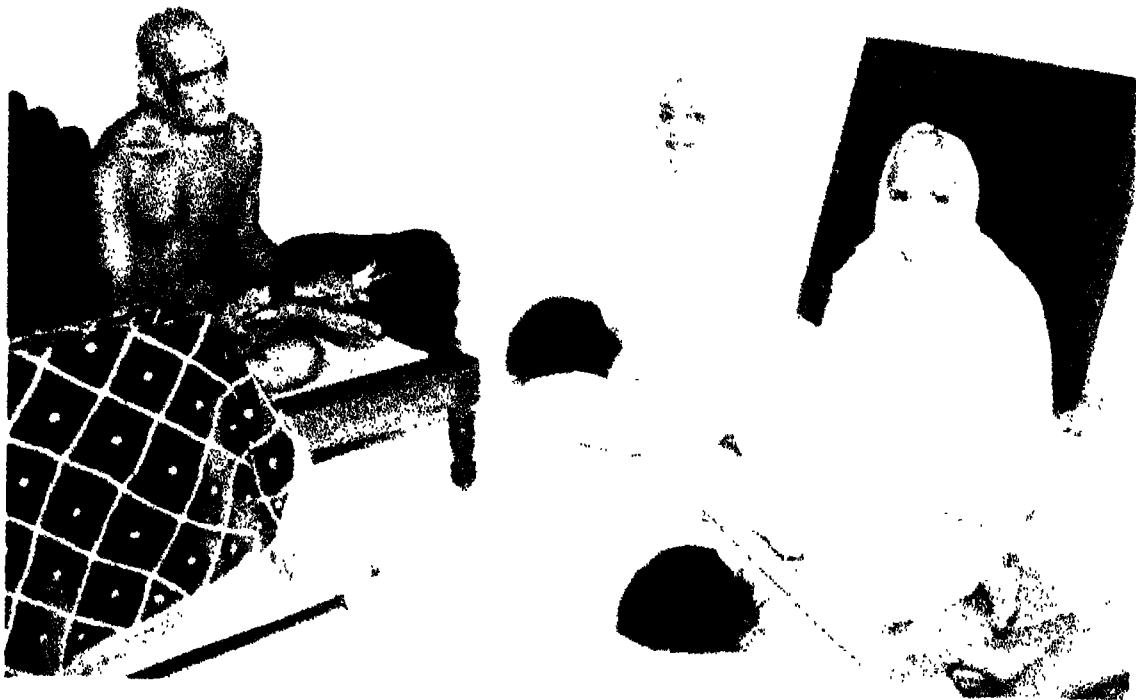
प. पू. आचार्यश्री के दर्शनार्थ पधारी पू. श्री गणनी आर्यिका ज्ञानमती माताजी एवं पू. श्री आर्यिका चंदनामती माताजी

अढाई द्वीप पूजन विधान

मंत्र :- ॐ ह्रीँ अर्ह त्रिभुवन तिलक श्री जिनेंद्राय नमः।

उत्तर

अ	आ	इ	ई
उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ
ओ	औ	अं	अः

मानुषोत्तर पर्वत

पुष्करार्द्ध द्वीप

धातकी द्वीप

पश्चिम

पूर्व

सुदर्शन मेरु

भरत क्षेत्र

लवण द्वीप

धातकी द्वीप

कालोदधि समुद्र

पुष्करार्द्ध द्वीप

मानुषोत्तर पर्वत
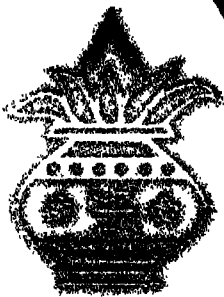
दक्षिण

ॐ	ह्रीँ	अर्हं
अ	ॐ	सि
आ	उ	सा नमः

सर्व संकट हरण, शांति प्रदाता यंत्र

सर्व कार्य सिद्धि यंत्र

ॐ	ह्रीँ	श्रीं
क्लीं	[illegible]	ऐं
अर्हं	नमः	स्वाहा

१६	६	४	५
३	६	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

प. पू. सद्धर्मप्रवर्तक, आचार्यरत्न बाहुबली जी महाराज के सान्निध्य में भारत की राजधानी दिल्ली के लाल किला मैदान पर उत्तर भारत के इतिहास में प्रथम बार दि. 27 नवम्बर 2000 से 11 दिसम्बर 2000 तक

अढाई द्वीप विधान

त्रिलोकाकाश आकृति का विशाल, दिव्यद्वार
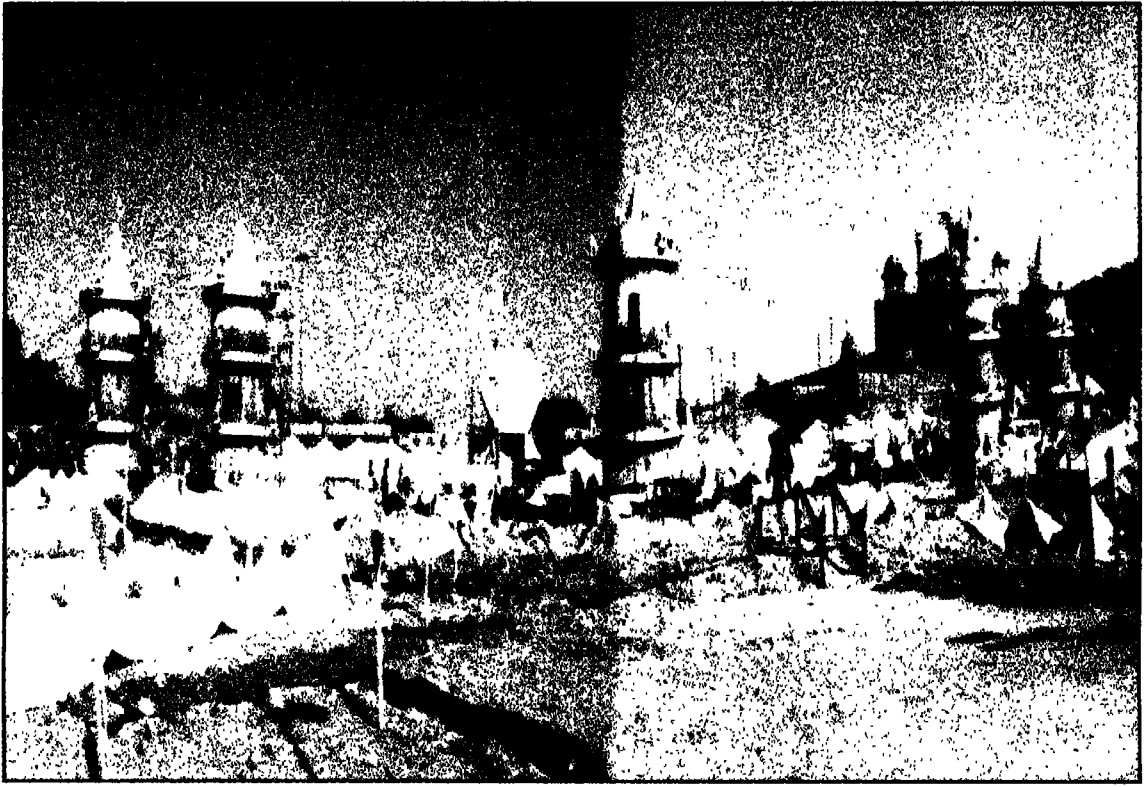
भारत की राजधानी दिल्ली में लाल किला के मैदान पर पू. आचार्यश्री की प्रेरणा से निर्मित अढाई द्वीप विधान की मनोहारी रचना
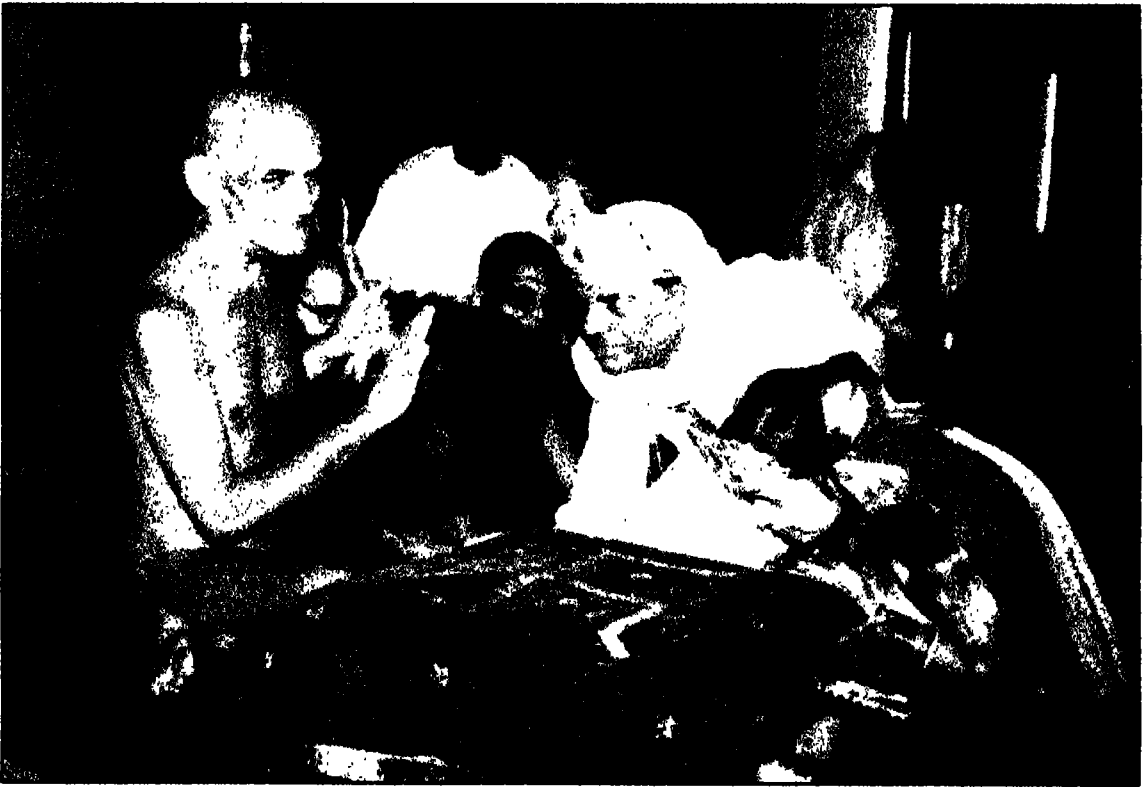
पू. आचार्यश्री से आशीर्वाद लेते हुए सौधर्म इन्द्र, गुरुभक्त श्रीमान् रामकुमार जैन एवं श्रीमती आशा जैन, निर्माण विहार, दिल्ली

प. पू. आचार्यश्री से आशीर्वाद लेते हुए श्रीमान् मांगीलाल गर्ग भा.ज.पा.
अध्यक्ष दिल्ली प्रदेश एवं सुब्रमन्यम् स्वामी राज्य मंत्री दिल्ली

प. पू. आचार्यश्री से आशीर्वाद लेते हुए कुबेर, गुरुभक्त श्रीमान्
कुलदीप जैन, धर्मपत्नी श्रीमती सुमन जैन, मधुबन, दिल्ली

प. पू. आचार्यश्री से आशीर्वाद लेते हुए अढ़ाई द्वीप विधान के प्रधान एवं यज्ञ
नायक श्रीमान् विजय कुमार जैन, धर्मपत्नी श्रीमती संतोष जैन, प्रीत विहार, दिल्ली
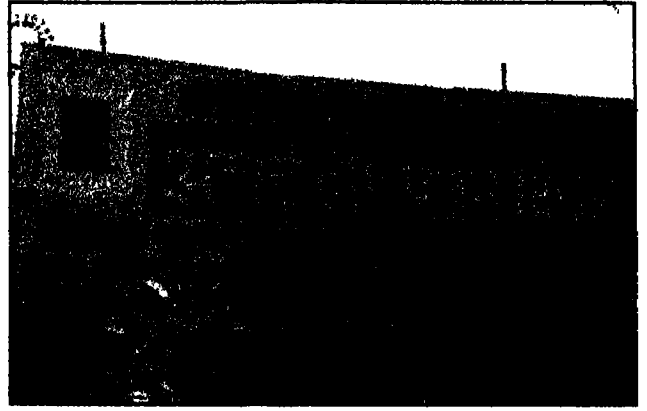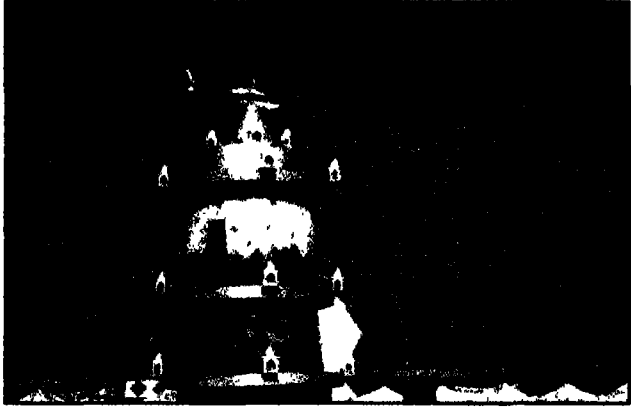
सुदर्शनमेरु पर हेलिकॅप्टर द्वारा पुष्पवृष्टि

प. पू. आचार्यश्री से आशीर्वाद लेते हुए अढ़ाई द्वीप विधान के मुख्य संयोजक श्रीमान् अरुण जैन, दरियागंज, नई दिल्ली

प. पू. आचार्यश्री से आशीर्वाद लेते हुए अढ़ाई द्वीप विधान के कोषाध्यक्ष एवं महेन्द्र इन्द्र श्री नरेन्द्र कुमार जैन एवं धर्मपत्नी श्रीमती संतोष जैन, निर्माण विहार, दिल्ली

प. पू. आचार्यरत्न बाहुबली महाराज जी के साथ प. पू. आचार्यश्री पुष्पदंत महाराज जी अढ़ाई द्वीप पूजा मंडप की ओर जाते हुए साथ में प्रतिष्ठाचार्य पं. नरेश (हस्तिनापुर)

प. पू. आचार्यश्री से आशीर्वाद लेते हुए गुरुभक्त श्रीमान् महावीर प्रमाद जैन (कागजी) धर्मपत्नी श्रीमती माया देवी जैन, न्यू राजधानी इन्कलेव, दिल्ली

प. पू. आचार्यश्री से आशीर्वाद लेते हुए गुरुभक्त श्रीमान् राकेश जैन, धर्मपत्नी श्रीमती संतोष जैन, निर्माण विहार, दिल्ली

प. पू. आचार्यश्री से आशीर्वाद लेते हुए गुरुभक्त श्रीमान् दीपक जैन, श्रीमती रेखा जैन, श्रीमती रेनु जैन, न्यू राजधानी इन्कलेव, दिल्ली

प. पू. आचार्यश्री से आशीर्वाद लेते हुए गुरुभक्त श्रीमान् उपेन्द्र, देवेन्द्र कुमार जैन, धर्मपत्नी श्रीमती लता जैन, दीपक जैन सुपुत्र कु. शिल्पी, कु. रचना सुकन्या, दिल्ली

प. पू. आचार्यश्री से आशीर्वाद लेते हुए गुरुभक्त, दान शिरोमणि श्रीमान् सुभाषजी जैन 'निशांत कुंज' पीतमपुरा, दिल्ली

जवाहर लाल सिंघई
(जबलपुर वाले)

श्रीमती बसंती सिंघई
(सुरत)
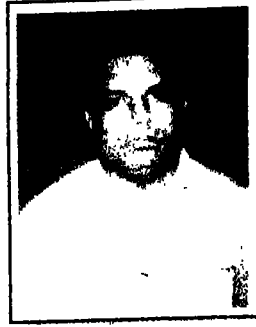
गांधी श्री हिरालाल (बाबुभाई)
अकलूज

सौ. कुंदा गांधी
अकलूज

रुपचंद, इचलकरजी

सौ. उमराव देवी
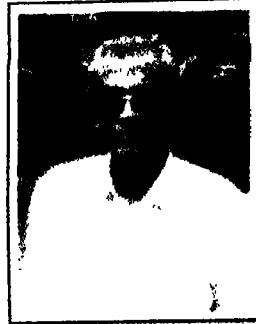
ध. श्री भागचंद कासलीवाल

कासलीवाल सदन, इचलकरंजी
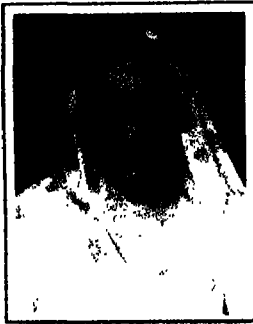
छिमावती जैन, लक्ष्मी नगर,
दिल्ली
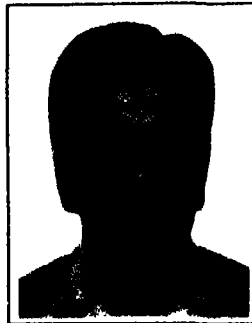
राजेश जैन (लोट्स कोपी वाले)
दिल्ली

स्व. श्री दयालचंद जी बाझल इनके
स्मरणार्थ श्रीमती विद्यावाई बाझल (जैन)
सिवनी (म.प.)

प. पू. आचार्यश्री से आशीर्वाद लेते हुए
गुरुभक्त श्रीमान् पवन कुमार जैन, धर्मपत्नी
श्रीमती सुषमा जैन, दिल्ली

प. पू. आचार्यश्री से आशीर्वाद लेते हुए गुरुभक्त
पदम कुमार, शेखरजी दिगंबर धर्मपत्नी श्रीमती शोभा
जैन सुपुत्र पुनीत जैन, दिल्ली

पर्वतराज की वंदना

आचार्य श्री 26 मार्च 2000 को अपने विशाल संघ के साथ पर्वतराज की वंदना के लिए प्रातः 5 बजे निकल पड़े। साथ में द्वय संघपति एवं संघ के साथ आए हुए सभी श्रावक-श्राविकाएं आचार्य श्री के पीछे-पीछे चल रहे थे। जय-जयकारों के साथ-साथ लोग पुलकित भाव से वंदना करने के लिए आगे बढ़े जा रहे थे।

आगे चलते आचार्य श्री
और पीछे भक्तों का टोला।
मन में दर्श की लगन लिए
सब बोल रहे जयकारा॥

सुप्रभात की मंगल बेला में नभ की लालिमा ने गुरुदेव का पर्वतराज पर अभिवादन किया। तभी सूर्य ने उदयाचल से सहस्र रश्मियों की पुष्पमाला भेंटकर गुरुदेव का वंदन किया। पक्षियों ने अपने मधुर कलरव से सर्व संघ का अभिनंदन किया। गणधर टोंक पर पहुंचकर सबका मन मयूर की भांति नाच उठा। नीर क्षीर से चरण कमलों का जब अभिषेक हुआ तो गंधोदक की सरिता सी बहने लगी। भक्त जनों ने उसमें डुबकी लगाकर पाप पंक का प्रक्षालन किया। फिर भगवान कुंथुनाथ, नमिनाथ, अरहनाथ, मल्लिनाथ, श्रेयांसनाथ, पुष्पदंत, पद्मप्रभु व मुनिसुव्रतजी की टोंकों के दर्शन कर सभी चन्द्रप्रभु (ललित टोंक) के दर्शन के लिए आगे बढ़े। रास्ता लम्बा होने की वजह से कोई बैठता, कोई चन्द्रप्रभु का जय-जयकारा लगाता हुआ आगे बढ़ रहा था। ऊंची तथा अधिक चढ़ाई में सभी लोग थके-थके से महसूस हो रहे थे। परन्तु चन्द्रप्रभु के दर्शन कर सबकी थकान पल में मिट गई। लोगों ने उत्साह के साथ अभिषेक किया, तथा किसी ने पुष्पवृष्टि की तो किसी ने अर्घ्य समर्पण करके आरती उतारी।

सघ आगे बढ़ा। भगवान आदिनाथ, शीतलनाथ, अनंतनाथ, संभवनाथ, वासुपूज्य, अभिनंदन नाथ, धर्मनाथ, सुमतिनाथ, शांतिनाथ, महावीर स्वामी, सुपार्श्वनाथ, विमलनाथ, अजितनाथ, नेमिनाथ जी की सिद्ध भूमि के दर्शन कर सभी जन सुवर्णभद्र कूट पर भगवान श्री 1008 पार्श्वनाथ तीर्थंकर के चरणों में पहुंचे। लम्बी यात्रा तथा ऊंचाई चढ़ाई के वावजूद भी थकान का नामोनिशान नहीं था।

इसी सम्मेद शिखर से नन्तानत हो गए पार।
निश्चय नय से मानिये, हो जावे उद्धार॥

* * * *

तीर्थराज सम्मेद शिखर जी की, करो वंदना तीन।
पूरी होगी सबकी कामना, मन में करो यकीन॥

कुछ देर विश्राम के बाद सभी ने पहाड़ से उतरना प्रारम्भ कर दिया। ठीक 11 बजे चतुर्विध संघ नीचे मधुवन बीसपंथी कोठी में आ पहुंचा। सबकी यात्रा मंगलमय एवं निर्विघ्न हो गई।

सम्मेदाचल पर रत्न, सुवर्ण, रजत, पुष्प वृष्टि

5 अप्रैल चैत्र शुद्ध प्रतिपदा के दिन पू. आचार्य श्री की उत्स्फूर्त प्रेरणा व आशीर्वाद से पर्वत पर 20 टोंकों के ऊपर श्रावकों ने रत्नवृष्टि, सुवर्णवृष्टि, रजतवृष्टि एवं पुष्पवृष्टि की। जिसे देखकर ऐसा लगा रहा था जैसे देवता गण भगवान

का अभिवादन कर रहे हों। श्रावकों ने तीर्थंकरों के तप, केवलज्ञान व मोक्ष कल्याण के एक सौ आठ, एक सौ आठ ऐसे कुल मिलाकर प्रत्येक टोंकों पर 324 दीपों को प्रज्जवलित कर अपने अज्ञान तिमिर को दूर करने के लिए भावना भायी।

उसी दिन दिल्ली से श्री विनेश जी व श्रीमती सुनीता जी जैन आचार्य श्री के पास आए और उन्होंने आचार्य श्री से चातुर्मास के लिए ससंघ दिल्ली आने का विनम्र अनुरोध किया। आचार्य श्री ने अपनी मौन स्वीकृति देकर उनकी भावनाओं का सम्मान किया। दोनों दम्पत्ति खुशी-खुशी घर आये।

आचार्यश्री का मंदारगिरी पर आगमन

शिखरजी में 25 दिन रुकने के बाद संघ का विहार प्रारम्भ हो गया। शिखर जी से विहार करते-करते संघ 1 मई को मंदारगिरी में पहुंचा तब दिल्ली से श्री विनेश जी श्रीमती सुनीता जी, श्री सुंदर सिंह जी, श्री राजेन्द्र जैन, श्री गुणवंत राय जी, श्री राजेश जी इत्यादि अनेक श्रावक वहां आए। जिन्होंने प.पू. आचार्य श्री के समक्ष चातुर्मास के लिए आग्रह किया। सुनीता जैन एवं सरिता साहिल ने अपने मन के उद्‌गारों को व्यक्त करने के लिए आचार्य श्री के समक्ष उद्‌गार प्रस्तुत किये।

चातुर्मास की स्वीकृति देकर
गुरुवर इच्छा पूरी करो।

आचार्य श्री ने भक्तों की इच्छाओं का सम्मान करतेहुए सन् 2000 के चातुर्मास के लिए दिल्ली वासियों को अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी। लोगों का मन मयूर की भांति नाच उठा कि अब -

इन्द्रप्रस्थ बनेगी धर्म की नगरी
चढ़ेगा सब पर धर्म का रंग।
आचार्य श्री का आएगा संघ
चातुर्मास में होगा सत्संग॥

श्री विनेश जी, श्रीमती सुनीता जी एवं मास्टर अंकित को संघपति बनने का गौरव मिला। विहार किन-किन स्थानों से होकर होगा इसका प्रारूप निश्चित किया गया और तय हुआ कि एक दिन में कम से कम 25 से 30 कि.मी. की दूरी तय करनी पड़ेगी तभी जुलाई के प्रथम सप्ताह में आचार्य श्री का संघ दिल्ली में प्रवेश कर पाएगा। भागलपुर, चंपापुर, पावापुर, राजगृही, पटना होते हुए संघ अयोध्या जी आ पहुंचा।

जैन मतानुसार यह पवित्र क्षेत्र, जहां प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ, भगवान अजितनाथ, भगवान अभिनंदननाथ, भगवान सुमतिनाथ, भगवान अनंतनाथ आदि पांचों तीर्थंकरों के गर्भ, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान कल्याणक हुए अर्थात् अठारह कल्याणक मनाने का सौभाग्य इस पुण्य नगरी को प्राप्त है। अगर इसे तीर्थराज कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

भूत, वर्तमान और भविष्य के चौबीस तीर्थंकरों की जन्मभूमि होने से अयोध्या नगरी का कण-कण बड़ा ही पावन है। परन्तु कुछ तीर्थंकरों का जन्म हुंडावसर्पिणी काल के प्रभाव से अन्यत्र हो गया।

भारत गौरव प.पू. आचार्य श्री 108 देशभूषण महाराज जी ने भगवान आदिनाथ की जन्मभूमि अयोध्या को अजर अमर करने के लिए सन् 1965 में उन्होंने भगवान आदिनाथ की प्रतिमा विराजमान करवाई। आदिनाथ भगवान की 31

फुट ऊंची विशाल प्रतिमा स्थापित करवाने में प.पू. आचार्य श्री बाहुबली महाराज जी ने पूर्ण सहयोग दिया। आज भी लोग इस प्रतिमा के दर्शन करके धर्मलाभ उठाते हैं।

श्री तीर्थक्षेत्र अयोध्याजी में 51 फुट ऊंचा मानस्तंभ निर्माण कराने का संकल्प

जब 8 जून को प.पू. आचार्य श्री बाहुबली महाराज जी अपने विशाल संघ सहित सम्मेद शिखर जी से विहार करते हुए अयोध्या जी आये तब उन्हें 35 वर्ष पूर्व अपने गुरु प.पू. आचार्य श्री देशभूषण महाराज जी के साथ इस क्षेत्र के निर्माण में उन्होंने जो प्रयास किया था वह अन्तःपटल पर स्पष्ट दिखाई देने लगा। पुरानी सभी बातें स्मरण आने लगीं। मंदिर जी के भव्य प्रांगण में मानस्तंभ की कमी को आचार्य श्री ने अपने प्रवचन के दौरान जनता के समक्ष रखा। आचार्य श्री के इस विचार से टिकैत नगर, फैजाबाद, लखनऊ आदि के श्रावकों ने अपनी सहमति जताई और तुरन्त इस कार्य के प्रारंभ के लिए एक लाख रुपये इकट्ठा हो गया। इसी दिन श्री कुंदकुंद आचार्य श्री की प्रतिमा स्थापित की गई। इस स्थान पर म्यूजियम बनाने की प्रेरणा आचार्य श्री ने दी। अर्थात् 9 जून को इस पावन क्षेत्र पर तीन कार्यों के निर्माण की सहमति मिल गई। 10 तारीख को 'भूयात् पुनर्दर्शनम्' करके आचार्य श्री ने वहांसे विहार किया और 11 तारीख को भगवान धर्मनाथ तीर्थंकर के गर्भ, जन्म, दीक्षा और ज्ञान इन चार कल्याणकों से पवित्र हुई रत्नपुरी में आचार्य श्री ने ससंघ प्रवेश किया और इस क्षेत्र पर भी भव्य मानस्तंभ बनवाने की प्रेरणा आचार्य श्री ने दी।

संघ आगे को बढ़ता जाता, लोगों को धर्मलाभ कराता।
दिल्ली के ज्यों ज्यों नजदीक आता, भक्तों का उत्साह बढ़ता जाता॥

* * * *

आचार्य श्री है धर्म प्रवर्तक, धर्म के हैं मस्तक।
भक्तगण है भक्ति करते, होके सदैव नतमस्तक॥

दिल्ली की ओर विहार

रत्नपुरी के बाद टिकैतनगर, बाराबंकी, लखनऊ, सीतापुर, अहिच्छत्र आदि स्थानों के दर्शन करता हुआ आचार्य संघ निरन्तर दिल्ली की ओर अग्रसर होता रहा। भीषण गर्मी में एक-एक दिन में 30 कि.मी. की दूरी तय करना निश्चय ही बड़ा ही कठिन कार्य है। नंगे पैर तपती जमीन पर रखते हुए समस्त त्यागीगण रोजाना निर्धारित दूरी तय करते। आहारचर्या एवं स्वाध्याय आदि क्रिया के बाद तीन बजे विहार पुनः प्रारंभ हो जाता। त्यागीगणों का त्याग देखकर मन श्रद्धा से झुक जाता और अर्न्तमन से आवाज आती -

दिगम्बर मुनि को हमारा नमन,
होता है जीवन उनका कांटों का वन।
कड़ाके की सर्दी और तपती दुपहरी,
न सर्दी की चिन्ता न गर्मी का गम॥

मुसलमानों की भक्ति

आचार्य श्री की इतनी कठिन तपस्या देखकर केवल हिन्दुओं ने ही नहीं, बल्कि मुसलमानों ने भी अपना माथा टेक दिया। एक बार आहार के लिए रास्ते में कहीं भी जगह नहीं मिल रही थी। इससे संघपति बहुत परेशान थे। सब जगह

देखने के बाद वे एक मुस्लिम स्कूल में गये। वहां डर-डर कर उन्होंने वहां के मुख्य अध्यापक से बातचीत की। उन्हें गुरुदेव के व जैनधर्म के बारे में सब कुछ बताया। गुरुदेव की तपस्या की महिमा सुनते ही उस अध्यापक का दिल पिघल गया और उस दिन उन्होंने तत्काल ही बच्चों को छुट्टी दे दी और स्कूल के सभी टीचरों को आदेश दिया कि गुरुदेव का आहार होने तक आप लोग बाहर के किसी भी व्यक्ति को अन्दर मत आने देना। स्कूल की पूरी सफाई कराकर उन्होंने आहार दान के लिए अनुमोदना दी।

आचार्य श्री की सौम्य मुद्रा देखकर मुसलमान भी उनके भक्त बन गये।

भारत की राजधानी इन्द्रप्रस्थ दिल्ली में आचार्यश्री का आगमन

आचार्य संघ को निर्विघ्न दिल्ली लाने में श्रीमान विनेश जी, श्रीमती सुनीता जी ने तन-मन-धन से अपना सम्पूर्ण सहयोग प्रदान किया। 18 मई से 9 जुलाई तक श्रीमती सुनीता आचार्य संघ के साथ नियमित रहीं। 8 जुलाई को आचार्य संघ ने श्री सुरेश जैन पीयूष पोलीमर्स प्राइवेट लिमिटेड में रात्रि विश्राम किया। 9 जुलाई को साढ़े पांच बजे संघ का वहां से विहार हुआ। राजेन्द्र नगर, सूर्य विहार, सूरजमल विहार, विवेक विहार, बाहुबली एन्क्लेव आदि मंदिरों के दर्शन करता हुआ यह विशाल संघ हजारों भक्तों के साथ ऋषभ विहार पहुंचा। वहां पर आचार्य संघ का भव्य स्वागत हुआ। ऋषभ विहार में चातुर्मास के लिए विराजे हुए प.पू. आचार्य श्री विमल सागर महाराज जी ने आचार्य संघ की आगवानी की। वहां पर एक धार्मिक सभा आयोजित की गई। प.पू. आचार्य श्री ने भक्तगणों को अपने आशीर्वाद रूपी वचनामृतों से अभिभूत किया। तदनंतर आहार चर्या हुई और अपरान्ह 1.30 बजे ऋषभ विहार से विहार प्रारम्भ हुआ। प्रीत विहार, निर्माण विहार आदि जिनमंदिरों के दर्शन करते हुए आचार्य संघ शाम 6 बजे अणुव्रत भवन में विश्राम हेतु पहुंच गया।

दिल्ली के परेड मैदान पर पू. आचार्यश्री का भव्य दिव्य स्वागत

9 जुलाई को अणुव्रत भवन के नजदीक दिल्ली गेट के मंदिर से सुबह 7 बजे एक भव्य जुलूस निकला। हजारों लोगों ने इस विशाल जुलूस में भाग लेकर धर्मलाभ लिया। यह जुलूस दरियागंज, लालकिले और दरीबा होते हुए परेड मैदान की ओर जा रहा था। रास्ते में जगह-जगह लोगों ने अपने घर के दरवाजों पर आरती की। जैन समाज के आबाल वृद्ध महानुभावों का उत्साह और उमंग के साथ प्रातः 9 बजे जुलूस परेड मैदान में पहुंचा। जहां पर हजारों की तादाद में भक्तगण आचार्य संघ की प्रतीक्षा में बैठे हुए थे। मंगलाचरण के साथ सभा का शुभारम्भ हुआ।

इस अवसर पर शहरी स्वास्थ्य मंत्री श्री ए.के. वालिया तथा श्वेताम्बर पंथ के आचार्य श्री नागराज जी उपस्थित थे। प.पू. आचार्य श्री ने अपने उद्बोधन से सबको सम्मोहित कर लिया। उन्होंने कहा- सत्य और अहिंसा ही सबसे बड़ा धर्म है, इसके पालन से ही समस्त समाज और देश का कल्याण होगा, सबको इसका अनुसरण करना होगा। यह उद्‌गार जैनाचार्य श्री बाहुबली महाराज ने दो शतक बाद राजधानी में प्रवेश करने के बाद लाल किले के सामने परेड मैदान में आयोजित एक विशाल धर्मसभा में व्यक्त किए। दिल्ली के महापौर श्री शांति देसाई ने आचार्य संघ को विनयांजलि अर्पित करते हुए कहा कि भारत संतों और तीर्थस्थलों की भूमि है। इसी कारण विश्व में भारत को महान माना जाता है। यहां त्याग की ही पूजा होती है। आचार्य श्री के ससंघ सान्निध्य से धर्ममार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलेगी। आचार्य श्री नागराज जी ने अपनी विनयांजली में कहा कि जैन धर्म की मूल दिगम्बर परम्परा सर्वोच्च रूप से वंदनीय रही है। जिस प्रकार हम सबने भगवान महावीर का 25 सौवां निर्वाणोत्सव एकता के सूत्र में बंधकर मनाया था उसी प्रकार उनका 26 सौवां जन्म जयंती महोत्सव भी समस्त समाज को एक होकर मनाना है।

लोगों के मुख पर बस एक ही बात थी कि एक बड़े अरसे बाद इतना बड़ा मुनि संघ देखने को मिला है।

15 जुलाई को लाल मंदिर के प्रांगण में प.पू. आचार्य श्री के साथ प.पू. मुनि श्री अर्हदबली जी, मुनि श्री धर्मभूषण जी, मुनि श्री धर्मसेन जी, मुनि श्री चित्रगुप्त जी, मुनि श्री समाधि गुप्त जी के केशलोंच का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। साथ ही चातुर्मास कलश की स्थापना की गई। इस अवसर पर श्री रमेश कोठारी एवं श्रीमती सुनीता जैन ने विहार के दौरान अपने संस्मरण जनता के समक्ष रखे। इस पुनीत शुभ अवसर पर कोठारी रमेश जी तथा संघ संचालिका श्रीमती सुनीता जी का सम्मान किया गया। सभी कार्यक्रम उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुए।

तुम्हं गुणगणसंथुदि अजाणमाणेण जो मया वृत्तो।
देउ मम बोहिलाहो गुरुभत्ति जुदत्थओ णिच्चं॥

हमने गुरुभक्ति से युक्त होकर प.पू. आचार्यश्री के गुणसमूह की स्तुति की है, उस स्तुति का फल हमें बोधिलाभ की प्राप्ति हो, जिनगुण सम्पत्ति की प्राप्ति हो, दुःखों का क्षय हो, कर्मक्षय हो और समाधिमरण की प्राप्ति हो।

गुरु भक्ति से प्रेरित हो, उनका लिखा जीवन इतिहास।
आदर्श बने यह जन जीवन का, किए है ऐसे सभी प्रयास॥
अल्प बुद्धिवश अगर त्रुटि हो क्षमा हमें कर दीजिए।
आप सभी हैं बुद्धिजन, शोध कर पढ़ लीजिए॥

॥ॐ नमः॥
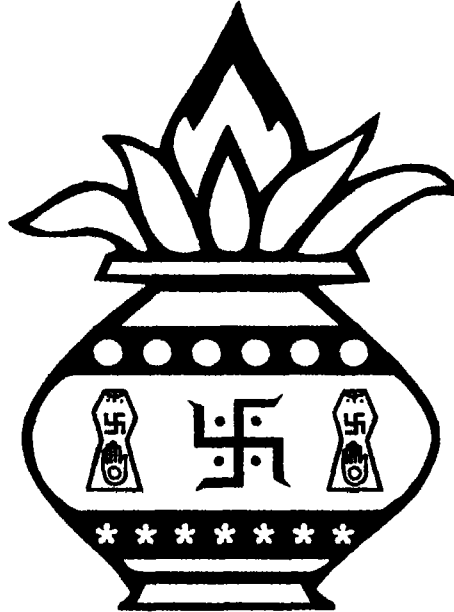
अनुभव दर्पण

ॐ नमः सिद्धेभ्यः।

ॐ नमः।

ॐ श्री जिनाय नमः।

ॐ श्री जिनधर्माय नमः।

ॐ श्री वीतरागाय नमः।

णमो अरिहंताणं।

णमो सिद्धाणं।

णमो आइरियाणं।

णमो उवज्झायाणं।

णमो लोए सव्व साहूणं।

अरिहंत मंगल, सिद्ध मंगल, साधु मंगल, केवलि प्रणित धर्म मंगल।

अरिहंत उत्तम, सिद्ध उत्तम, साधु उत्तम, केवलि प्रणित धर्म उत्तम॥

अरिहंत शरण, सिद्ध शरण, साधु शरण, केवलि प्रणित धर्म शरण।

श्री वृषभनाथ से महावीर भगवान तक चौबीस तीर्थंकराय नमो नमः॥

जय जैनाचार्य

तृतीय खण्ड

आचार्य श्री का चिन्तन

कलम उठाया जब गुरुवर ने, साहित्य सृजन अति कर डाला।
अपने अनुभव को लिख लिखकर, गागर में सागर भर डाला॥
सड़कों पर लगे हुए किलोमीटर दिशा बोधक हैं,
पैदल यात्रा करने वाले के लिए मार्ग शोधक हैं।
बहुत बड़ा महत्व है पथ दर्शक का संसार में,
भूले भटके शिष्यों के लिए बाहुबली आचार्यश्री सच्चे उद्‌बोधक हैं॥

प.पू. आचार्यश्री की डायरी से

आत्म संबोधन

हे आत्मन्! यह विश्व एक मंच है और संसार एक चित्रपट है।

इस संसार रूपी चित्रपट में विश्व के पूरे-पूरे जीव अपने-अपने कर्मानुसार पार्ट लेकर खेल करते रहते हैं। वे सभी जीव अपने-अपने कर्मों के विषयों के अनुसार पात्र बनकर हाव-भाव क्रिया को कर रहे हैं। हर्ष-विषाद, सुख-दुःखादि को अनुभवते-मानते जा रहे हैं, लेकिन अपने-अपने पात्र के विषय को समझ नहीं पा रहे हैं।

इन कर्मों के खेल को एक जिनेन्द्र भगवान ही जानकर तप-संयम के द्वारा कर्मों का सर्वथा नाश कर दिया और सर्वज्ञ बन गये।

श्री जिनेन्द्र भगवान की आत्मा विश्व के सभी जीवों के कल्याण का केन्द्र है। उसी कल्याण केन्द्र को लेकर हरेक जीव अपना-अपना कल्याण कर सकता है।

जीव और अजीव दो द्रव्य को जानकर जीव द्रव्य को ग्रहण करे और अजीव द्रव्य का त्याग कर देना ही भेद विज्ञान है। जीव द्रव्य भी समझ लेता कि मेरा जीव मेरा ही है और अन्य जीव अन्य ही है।

जिनेन्द्र भगवान के तत्त्व अपनाता है। जीव के अनंत ज्ञान गुण, दर्शन गुण, सुख गुण और वीर्य गुण आदि शुद्ध बनाने के लिए संयम को धारण करता है। अंतरंग, बहिरंग परिग्रह का त्याग कर पूर्व संचित कर्मों का नाश करने हेतु तप का साधन बना लेता हैं।

आत्मध्यान, मनन, चिन्तन में एकरूप होते-होते एक दिन स्वयं भगवान बन जाता है। स्वयंभू बन जाता है। यह है जैन तत्व का स्वरूप और जीव का अमर कल्याण।

फिर कभी चतुर्गति के चित्रपट पर नहीं आता है।

॥ॐ नमः॥

आत्म संबोधन

दिनांक - ५-८-७७

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा॥

मेरे आत्मन् ! देखो, सूरज उग रहा है और और तुम सो रहे हो। सोना तेरा स्वभाव नहीं है। तू जो स्वयं को समझ रहा है वह तू नहीं है। जो तू दिख रहा है वह भी तू नहीं है --- तू कुछ और ही है। यह जो सर्वत्र तेरे चहुँ ओर दिखायी दे रहा है --- यही भी तेरा अपना कुछ नहीं है। इन सबको तू अपना मत समझ।

यह रूप, यह सौंदर्य, यह यौवन कुछ भी तेरा नहीं। इसे तू अपना मान लेने की भूल मत कर लेना। पूर्व में की हुई इस भूल के कारण ही तो तुझे चौरासी लाख योनियों में भटकना पड़ा है। अब चेत जा। आज तुझे तेरा अभीष्ट, अभिलषित सब कुछ मिल गया है।

तेरे भाग्य उदित हो रहा है। तू उठ जा, जाग जा। इस राग की चादर को उतार फेंक। इस अनादि कालीन आलस-तन्द्रा को अब त्याग दे। छोड़ दे इसे। इस बार तो साहस संजो ले। पौरुष के प्रदर्शन का निश्चय कर ले।

तेरी इस मायावी, इस छलनामयी मोह निद्रा ही ने तो तुझे इतना सताया है। इसी ने तेरा सर्वस्व तुझसे छीना है। परन्तु स्मरण रख, जो तेरा है वह कभी तेरे से छीना नहीं जा सकता, तुझसे वियुक्त नहीं किया जा सकता ---

अरे आत्मन् ! वही तो एक - हाँ निश्चय ही वही तेरा सर्वस्व, तेरा एकत्व विभक्त आत्मा ही परमेश्वर है।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं।

आत्म संबोधन

दिनांक-९-१०-७७

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अर्हि जिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

हे आत्मन् ! नर में नारायण छुपा है। खोजना तेरा काम है। कोई नारायण आकर तेरे नारायण को नहीं निकालेगा। हर आत्मा में नारायण छुपा है। भगवान महावीर ने उस नारायण को अपनी सतत साधना से पाया है। तुम भी स्वयं की सत् साधना से उसे प्राप्त कर सकते हो।

हे आत्मन् ! जब तक फूल में मकरंद है, मदभीना सौरभ है, तभी तक यह भौरा-भ्रमर भी उसका दीवाना है। उसके लिए मतवाला है। किन्तु एक बार सौरभ समाप्त हो जाने के उपरान्त कोई भी भौरा कभी भूलकर भी उसके आस-पास नहीं मंडराता, उस नीरस पुष्प पर नहीं बैठता। अतः-

हे आत्मन् ! सचेत हो जा, इतनी बड़ी भूल अब मत कर। अब अपने इस अमूल्य जीवन का, इसके बहुमूल्य क्षणों का सदुपयोग कर ले। अपने परमात्मा को पहिचान ले।

प्रारंभ में तुझे कठनाईयों का आभास होगा, उन्हें तू आभास ही जानना। अन्त में जो अनन्त-कालीन अनन्त समय के लिए सुख और परम आनंद की अनुभूति होगी।

अरे पगले ! वही तो सब कुछ है, वही तेरा यथार्थ में अपना है - उसका तू ही तो एक मात्र अधिकारी-स्वामी है।

ॐ सिद्धोऽहं - शुद्धोऽहं।

आत्म संबोधन

दिनांक-७-८-७७

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं श्रौं श्रौं नमः स्वाहा॥

हे आत्मन्! कारण-कार्य की सीमा में रहकर तू समस्त आगम को सुन और मन्मथ विजयी ऐसे जिनमार्ग में अडिग रहकर, सर्वोत्कृष्ट सारभूत आत्मतत्त्व का अनुभव कर।

हे भव्यात्मा! मैं तुझे एक बात समझाता हूँ उसे तू अत्यंत प्यार से सुन और समझ कि यह आत्मा स्वयं नित्य सत् चित् आनन्द स्वरूप है, उसे तू जान ले और और---कभी मत भूलना।

मेरी आत्मा सर्व गुणों का भंडार है और यही सभी शास्त्रों का सार है।

हे जीवात्मा! शुध्दनय से सभी जीव शुध्द हैं, ऐसा जानकर तुम कभी भी शुध्दात्म तत्त्व की भावना को मत छोडना। वास्तव में शुध्दनय का सेवन करनेवाला जीव सदैव शुध्द ही रहता है।

जिस प्रकार रास्ते में चलते हुए किसी गरीब-राहगिर को यदि सुवर्ण से भरा हुआ कलश मिल जाय तो वह उसे गुप्त रखता है, उसी प्रकार - हे भव्य! तुम अपनी निजात्म-भावना को अपने में गुप्त रखना, गुप्त-रूप से उसका अनुभव करना। जो भव्यात्मा अज्ञान से भव-संसार में फँसकर अनेक प्रकार की झंझटों से प्रतिदिन दुःख का शिकार बनता था, वह आज अपने सत्य स्वरूप का साक्षात्कार होने से आनन्द समुद्र में खेल कर रहा है।

ॐ नमः।

आत्म संबोधन

ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा

हे आत्मन्! जिस मानव के वचन में मधुरता, सत्यता मन में मृदुता, भावना में भव्यता, हृदय में सहृदयता, दृष्टि में विशालता, व्यवहार में कुशलता, अंतःकरण में कोमलता है-वही मानवता का पात्र है।

अनादि कालीन रागद्वेष रूपी पिशाच के वशीभूत होकर इस संसार में परिभ्रमण करते हुए आत्मा ने चौरासी लाख योनि में एक भी ऐसी योनि नहीं रही, जहां जन्म नहीं लिया हो।

संसार, वैभव, कुटुम्बियों का सम्बन्ध, कमलदल पर पड़ी हुई जल-बिन्दु के समान चंचल है। हे आत्मन्! कर्मबन्ध के कारण विभाव भाव के वशीभूत हो असह्य पीड़ादायक गर्भावास में अनेक दुःख सहन किये हैं। यदि उन दुःखों से भयभीत है, तो रागादि भावों से विलक्षण शुद्ध चिदानंद चैतन्य घन परमात्मा स्वरूप तेरी आत्मा का ध्यान कर। इस संसार अटवी में वीतराग धर्म को छोड़कर और कोई तेरा रक्षक नहीं है, वरन् तेरे भक्षक हैं। अतः इनसे सावधान रहे।

हे आत्मन्! तुम अपना हित चाहते हो तो किसी के द्वारा की हुई अपनी बुराईयों को सुनकर अपने परिणामों को खराब मत करो। अपना हृदय स्वच्छ रखो। गीली मिट्टी की दीवार पर ही धूल चिपकती है, स्वच्छ संगमरमर की दीवार पर नहीं। तू अपने आपको भूला हुआ है। भेदज्ञान द्वारा अपने अंतरंग को खोल, खुद को पहिचान, तु अनन्त सुख का भंडार है, इस महाव्रत रूपी खेवटिया की सहायता से सम्यक् रत्नत्रय रूपी नौका पर बैठकर संसार समुद्र को पार कर। यदि इस समय सचेत नहीं हुआ तो इस गहन समुद्र में गोता लगाते रहेगा।

अष्ट कर्मरूपी श्रृंखला से जकड़ी हुई तेरी आत्मा शरीर रूपी कारागृह में पड़कर अनंत दुःखों को भोग रही है। इस समय यह तुझे अपूर्व अवसर मिला है इसलिए तत्वज्ञान रूपी छैनी लेकर कर्मरूपी श्रृंखला को तोड़ने का प्रयत्न कर और देहरूपी करागृह से मुक्त होकर स्वतन्त्र अविनाशी अनुपम सिद्धों के सुख का भागी बन।

॥ॐ नमः॥

मानवता शांति पथ दर्शन

भारत देश तीर्थंकर, चक्रवर्ती, नारायण, बलभद्र, महान-महान तपस्वी, ऋषि, मुनि, साधु, संतों की जन्म भूमि है। पावन भूमि है। दया, करुणा, परोपकार का स्थान है। भारतीय मानवी जीवन-जन्म से ही सात्विक निर्मल शुद्ध भावना से सहित होती है।

मनुष्य जन्मजात सत्य और अहिंसा का प्रेमी है। भारत देश दया शांति की भूमि है। भारत के हर स्थान की, हर क्षेत्र की मिट्टी पवित्र है। स्वर्ग-मोक्ष सुख को देने वाली धरती है।

आज भी भारत देश के धरती पर साधु, संत, ऋषि, मुनि, तपस्वी संसार से घर-परिग्रह से, अलिप्त रहकर, संयम-समता को धारण कर आत्म शांति एवं राष्ट्र देश के हर मानव को तथा प्राणी मात्र को शांति प्रदानार्थ तप की साधना कर रहे हैं। मानव को संदेश दे रहे हैं। आप मानव हैं, आप मानव ही बने रहें, दानव मत बनो।

आज भारत देश में घर-घर में, गली-गली में, गांव में, नगर में, शहर में सारे राष्ट्र और देश में स्वार्थ के कारण अराजकता, अशांति, अमानुष्य की का साम्राज्य फैल रहा है और हरेक आदमी कहता है कि दुनिया बिछड़ गई। अरे मानव! दुनिया नहीं बिछड़ी, आप ही बिछड़े हैं। बिछड़े हुए आप तो इसी दुनिया में जन्म-भूमि भारत देश में रहते हैं, इसलिए दुनिया का नाम, भारत देश का नाम आपके ही कारण बदनाम हो रहा है।

सामाजिक, राजकीय और शासकीय सेवा कार्य में शिथिलता प्रसरण हो रही है। लोकप्रिय-राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, सेनापति, प्रमुख पुलिस अधिकारी आदि समाज के प्रमुख नेताओं से निवेदन है एवं आपका आद्य कर्तव्य है कि सहयोग देकर शांति प्रस्थापित करें।

माया का जाल प्रसरित हो रहा है। स्वार्थ रूपी पिशाच आपस में प्रवेश कर रहा है और हरेक मनुष्य कहता कि समाज की नीति बिघड़ गयी, राज्य शासन की नीति भ्रष्ट हो गयी। अरे मानव हो! ऐसे कहने मात्र से दूर नहीं हटेगी। अपने स्वातंत्र्यता के समय के राष्ट्रपिता एवं नेताओं को तथा उस समय के समाज को याद करो। अपने प्राणों की आहुति देकर देश को बचाया है।

इसके संबंध में-समाज एवं राजकीय कार्यकर्ता नेताओं को ही प्रथम अपना लक्ष अपने प्रति रखना होगा। अपने आचार-विचार, नियत और निःस्वार्थ को ठीक रखना होगा। स्वार्थ को छोड़ो, अनीति को छोड़ो, व्यसनों को छोड़ो और सद्भावना के साथ समाज एवं राजकीय शासन क्षेत्र में प्रवेश करो। शराब प्राशन करने वाले एवं मांसभक्षी राज्य का शासन कैसे चला सकते हैं? अर्थात् नहीं चला सकते।

जनता, पूज्य भावना से आपको-अपना समाज कार्यकर्ता, अपना राजकीय नेता समझते हैं, हमारे कष्ट को दूर करने वाले आप ही हैं, ऐसे समझकर-आपके प्रति श्रद्धा रखते हैं, विश्वास करते हैं, आदर के साथ देखते हैं।

भारतीय जन जाग्रण-हरेक व्यक्ति-व्यक्ति को करना है, शांति प्रिय होना है, सेवा की भावना हृदय में रखना है और परोपकार का कार्य करना है, तभी हर घर में और सारे देश भर में शांति प्रस्थापित होगी। प्रेम निर्माण होगा, आदर निर्माण होगा, एकता की शक्ति निर्माण होगी। एकता की एक शक्ति सारे राष्ट्रों को हिला देगी ओर अपना देश सुख और शांति को धारण करेगा। देश आदर्श बनेगा।

सामान्य जनता, साधुभक्त, सामाजिक कार्यकर्ता, राजकीय नेता हो! आप अपने देश का स्वाभिमान रखो। निःस्वार्थ से एव निर्व्यसन से समाज एवं देश की सेवा करो।

यही हमारे भारत देश के साधु संतों की भावना है, पुकार है, आदेश है, संदेश है और आशीर्वाद है।

आप मानव बनो!

आप मानव हैं, सच्चा धर्म मानव में होता है।
धर्म वही है, आप जीवों और दूसरों को जीने दो।
किसी भी जीव-प्राणि को कष्ट मत दो।

आप अपना जीवन सुखमय बनाना चाहते हैं। जीवन में सुख आनन्द के लिए आप मानव भगवान को परमेश्वर को, गुरुवों को, धर्म को मानकर श्रद्धा से, भक्ति से, अच्छे भावों में चलते हैं।

आप मानव आदिप्रभु को, भ. महावीर प्रभु को, अल्ला को, खुदा को, महादेव को, शंकर को, विष्णु को, ब्रह्मा को, लक्ष्मी को, सरस्वती देवी को, विट्ठल-रखुमाई को, सिद्ध परमात्मा को, गौतम गणधर जी को, पद्मावती को, ज्ञानेश्वर को, दिगम्बरत्व को, निराकारत्व को, पैगम्बर को, गुरु नानक को, कबीर को, येशु खिस्त को, शिशुपाल को, तुकाराम को, एकनाथ को, हनुमान को, नागदेव को, कृष्ण-प्रभु को, बसवेश्वर को आदि मुनि यति साधु-ऋषियों को आप सभी भारतवासी पवित्र भावना से मानते हैं, आज्ञा पालन करते हैं, श्रद्धा से भक्ति से धर्म करते हैं, ओर अनुष्ठान भी करते हैं। धर्म से चलते हैं। इन सभी की हजारों जय जयकार के नारे लगाते हैं। भक्ति में लीन रहते हैं।

आप मानव हैं-सभी प्राणियों की रक्षा, सम्हाल भी आप ही करते हैं। तो उन प्राणियों के लिए आप मानव ही परमेश्वर हैं। क्या वे दीन प्राणी भगवान से प्रार्थना कर सकते हैं ? भक्ति कर सकते हैं। कर सकते हैं तो उनकी जो रक्षा करते हैं, उन पर प्रेम करते हैं, खाना-पीना देते हैं।

उन्हीं मानव की तरफ भगवान जैसे देखते हैं। तो मानव का धर्म है कि दीन-दुःखी, दुर्बल-निर्बल, मूक, पराधीन, अनाथ प्राणियों की रक्षा करना सभी धर्मों में ईश्वर भगवान गुरुवों ने प्राणियों की रक्षा करने के लिए, जीवित रखने के लिए, सम्हाल करने के लिए, अभय दान देने के लिए कहां है। उन प्राणियों के लिए मानव ही देवता है। हर प्राणी का रक्षण करना मानव का धर्म है।

सभी देव-देवताओं की, धर्म की, गुरुजनों की सेवा-भक्ति रक्षण मानव ही करता है। प्राणियों की दया, करुणा मानव को ही आती है।

मानव जन हो! देवी-देवताओं के नाम पर, अपने खाने की इच्छा पर अपने जीवन की कमाई के लिए, अपने श्रृंगारों को बढ़ाने हेतु दवाइयों को उपयोग में लाने के लिए कषाय खाने, कत्तलखानों में आदि स्थानों में लाखों करोड़ों पशु-प्राणियों की कत्तल हत्या हो रही है। चीरफाड़ हो रही है। यह सब मनुष्यों के द्वारा ही होती है। तो आप भगवान, गुरु और धर्म की भक्ति करने वाले आज्ञा का पालन करने वाले, उनको मानने वाले कैसे हो सकते हैं ?

मानव जन हो! शांति के साथ सोचो, मनन करो, आपकी आत्मा ही सही-सही जवाब देगी!

हे मानव! प्राणियों का घात करना पाप है, क्योंकि तुम्हें बहुत बड़ी सजा होने वाली है। पुनर्भव में इसके फल का भय करो। आपके द्वारा प्राणियों को जितना कष्ट पहुंचाते है उससे हजारों गुणा आपको कर्म भोगना अवश्य है।

बुद्धिमान मानव हो! देखो अपना शास्त्र, पुराण, कुरान, वेद, बायबल आदि और बनो मानव!

पवित्र, दयामय, सत्य, अहिंसा परोपकार और आत्मा को परमात्मा बनाने वाले ऐसे पवित्र भारत देश में होने वाले अत्याचार को सूज्ञ एवं भारतीय स्वाभिमानी राजनेता आदि इसका उच्चाटन करें। पूरे देश की शांतता रखने में एवं देश के कानून को सुधार करने में समर्थ हो जावें।

भारत के शासन में सुधार हो जावे।

भारत देश के राज्य शासन, राजनेताओं के चुनाव में शराब और मांस भक्षी न रहे। पूरे शाकाहारी बनकर भारत देश पर शासन करें। राजनेता-देश के पिता-रक्षक होते हैं।

उन पशुओं के लिए आप मानव ही भगवान हैं। पशु बिचारे किससे प्रार्थना करेंगे? जो उन्हे सम्हाल कर सके उनके प्रति ही अपनी मूक भावना को प्रकट करते हैं।

पवित्र भारत देश के सभी साधु-संतों की आवाज है और आपके पवित्र आत्माओं को आशीर्वाद है।

आप मानव बनो! आप मानव बनो! आप मानव बनो!

सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारकम्॥

भूयात् सर्व मंगलम्!

अनुभव दर्पण

* मैं मेरे को समझाने के लिए .... समझ पाने के लिए।
* सम्यकत्व से युक्त आत्मा को मेरा यहां से नमोऽस्तु हो, चाहे वह आत्मा किसी भी पर्याय को प्राप्त हुआ हो।
* एक जिनधर्म ही समस्त जीवों के लिए सुखस्थान है।
* समस्त विश्व को एक 'अरिहंत' भगवान ही जानते हैं।
* दुनिया के अनंत पदार्थों में आत्मा ही शुद्ध और पवित्र है।
* सिद्धालय में अनंतो सिद्ध बाधा रहित रहते हैं।
* निश्चयात्मक द्रव्यार्थिक नय से मुक्त और संसारी आत्मा समान है।
* व्यवहारार्थिक नय से सिद्ध आत्मा कर्मों से मुक्त और संसारी जीव कर्मों से बंधित है।
* विश्व में सबसे बड़ी चीज 'इज्जत' है।
* अहिंसा ही सब जीवों की 'मातृका' है।
* त्याग ही पाप कर्मों का भार हलका कर देता है।
* संयम आत्मा को 'शांति' प्रदान करता है।
* अपनी आत्मा ही 'धर्म, मुनि और भगवान' है।
* आधि मन को और व्याधि शरीर को पीड़ा देती है।
* काम-दाम-नाम के लिए त्रस्त हुए को कभी सुख शांति नहीं मिलती।
* धन कमाना जानते हैं, पुण्य कमाना नहीं जानते।
* निर्दोष गुरु के शिष्य होते हैं विशेष।
* विश्व के सभी पदार्थ आत्मा से भिन्न हैं।
* सभी शास्त्रों का सार 'परिणाम विशुद्धि' है।
* तभी समझ पायेगा जब सही आचरण करेगा।
* विश्व में करना कुछ बाकी नहीं रहा, रहा एक ही 'आत्मकल्याण'।
* विश्व के समस्त पदार्थों को देख और अनुभव कर चुका हूं लेकिन याद नहीं।
* मनः स्वास्थ्य से बुद्धि, आयु और आरोग्य वर्धित होते हैं।
* हरेक जीव स्व-सत्ता से स्वतंत्र एवं स्व उपयोगमय है।
* गुणिजन ही गुणी जनों का सम्मान करते हैं।
* धर्मतीर्थ में प्रवेश करना भव्यात्मा का महा पुरुषार्थ है।
* परद्रव्य के मोह माया के जंजाल में अज्ञानवश फंसकर अनंत ज्ञान-सुख धन को खो दिया है तूने।
* हे मूरख! तू तेरी आत्मा के अनंत शक्ति को पा ले।
* अपनी आत्मा के उपयोग रूप परिणामों के अनुरूप कर्मबंध हर समय होता रहता है।
* प्रकृति, प्रवृत्ति संशय, भ्रांति, शंका, विभ्रम, विकल्प, विपरीत, विकृत, विसंगत, निरर्थक, निष्काम, निष्क्रिय, अतिरेक आदि के अनुकूल परिणामों द्वारा अशुभ कर्मबंध होता है।
* स्वार्थ और द्वेष से अच्छी वस्तु का संयोग छूट जाता है।
* स्वार्थ और द्वेष से प्रेम का अभाव हो जाता है।
* मैं लोकमत का नहीं स्वमत का स्वामी बना रहूं।
* मैं अनादिकाल से लोकमत में रहकर संसार चक्र में भ्रमण किया और अनंत दुःख उठाया।
* जिस समय मेरा मत मेरे को वीतराग सर्वज्ञ जिनेन्द्र देव ने बता दिया तब से मैंने लोकमत को ग्रहण करना छोड़ दिया और स्वमत में प्रवेश किया।
* हरेक जीव स्वसत्ता से स्वतंत्र और स्व उपयोगमय होता है।
* परमानन्द स्वशुद्ध परम आत्मज्ञान में है।
* सच्चा गुरु वह है जो स्वयं को और पर को मोक्ष पथ पर ले जाता है।

* झूठा गुरु वह है जो अपने को और पर को दुर्गति को ले जाता है।
* गुरु की आज्ञा सेवा विनय करता है वह एक दिन स्वयं गुरु बनता है।
* गुरु और शिष्य की पहिचान वह है, जो किसी के मन को कोई कष्ट देने का कार्य मन से, वचन से और शरीर से नहीं करता।
* सच्चे गुरु की परीक्षा करने वाला सच्चा शिष्य नहीं होता है।
* संसार ही विश्व में माया का जाल है।
* बनावटी भक्ति प्रेम, सेवा, स्व-पर को देती है धोका।
* अपने विकल्पों को बढ़ाना, कम करना, नष्ट करना अपने हाथ में है।
* ज्ञान, धन, श्रम, सेवा, भक्ति-ये शंका, विकल्प, क्रोध, लोभ, अहंभाव में निकल जाते हैं।
* मैं और मेरा-वास्तव में कुछ नहीं होता।
* शुभ घड़ी कब की ?-अपनी मन की सफाई की।
* निस्सीम भक्ति यही सर्वस्व शक्ति।
* मोक्षार्थी जीवों का ही इतिहास बन सकता है।
* अज्ञान ही चिंता का घर है।
* वैराग्य में ही आत्म चिंतन हो सकता है।
* विरागी के वैराग्य के आत्म चिंतन में तप की प्रबलता होती है।
* वैराग्य रूपी आत्म चिंतन के तपोबल से असंख्य कर्मों की निर्जरा होती है।
* आत्म स्वराज्य को प्राप्त करो।
* आत्म स्वराज्य ही मेरा जन्म सिद्ध हक है।
* परमात्मा की सब शक्ति अपने में है।
* मोह माया के जाल में फंसकर तूने अपने ज्ञान धन को खो दिया है।
* हे मूरख! इस विश्व में तेरा कुछ ही नहीं है।
* लोभ के वश में तूने सब कुछ खो दिया है।
* बाह्य में सोता है वह अंतरंग में जागता है।
* असली से नकली चमकता है।
* एक का दोष एक को नहीं कहना यही मनुष्यता है।
* क्षमाभाव में जीव की दया रहती है।
* मार्दव भाव में आत्मा के मृदुभाव रहते हैं।
* आर्जव भाव में आत्मा की सच्चाई रहती है।
* *मैं मेरा जिसने छोड़ा।*
  मोक्ष पथ की ओर उसने मुख मोड़ा।
* *मेरा मेरा क्या मेरा।*
  यह अज्ञान और भ्रम मेरा।
* विश्व के विचार आत्मा के लिए संबोधनीय है।
* आत्मा के विचार में विश्व के विचार शून्य है।
* जिनेन्द्र भगवान की बैंक हर समय की इन्श्यूरेन्स है।
* वर्तमान परिणामों का प्रति-फल भविष्य में अनुभावना है।
* परिणामों पर गति निर्भर है।
* सम्यग्दृष्टि जीव-जीव के साथ प्रेम रखता है।
  मिथ्यादृष्टि जीव धन के साथ प्रेम करता है।
* परिणामों की विशुद्धि ही सभी धर्म शास्त्रों का सर्वस्व सार है।
* जो वर्तमान सुधारेगा उसका भविष्य स्वयमेव सुधर जायेगा।
* भक्ति, प्रेम, सेवा-स्वार्थ की पूर्णता होने तक।
* निःस्वार्थ भक्ति में आज्ञा और सेवा का फल प्राप्त होता है।
* गुरु आज्ञा से भी जिसको पैसा प्यारा, वह गुरु से है न्यारा।

* वीतरागता जिनशासन को मानता है और गुरु की बात को सुनता है वह गुरु के साथ भगवान के स्थान को पहुंचता है।
* सेवा, भक्ति, स्वार्थ, प्रेम और द्वेष युक्त शिष्य को गुरु अच्छी तरह से जानते हैं।
* जिसमें आराम मिलता है वह है राम, नहीं मिले आराम वह है हराम।
* *मन है आधि, तन है व्याधि।*
  विकल्प है कर्म के उपाधि।
* जीवन में इज्जत की पात्रता को लाना सबसे बड़ा पुरुषार्थ है।
* यह संसार खुली किताब है, भ्रमणशील पुरुष ही इसे पढ़ पाता है।
* शरीर किराये का मकान है वह आयु के हुकुम से रहा करता है।
* काया माया जाते हैं हमेशा वाया।
* मैं और मेरा का घेरा छूट जाता है वह गुरु के घेरे में सुख से रहता है।
* गुरु के अनुकूल प्रवृत्ति ही शिष्यों की सच्ची साधकता है।
* स्वयं आत्म गुणों का गुणन ही गुरु है।
* सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र आत्मा का स्वभाव धर्म है।
* उपयोग आत्मा का लक्षण है।
* मोक्षार्थी शिष्य सिर्फ गुरु आज्ञा का पालन करता है।
* मुक्ति एक्का है संसार छक्का है।
* सगाई करना वीतरागता से, विदाई लेना संसार से।
* मन में कभी पाप नहीं आना यह समय की शुभ घड़ी है।
* पर परिणती और पर द्रव्य को संग्रह करते रहना ही पाप है।
* आत्म आनन्द की शुभ परिणति और निःस्वार्थ ही "पुण्य" है।
* पर द्रव्य के निमित्त को पाकर अपने में घटाना और रागद्वेष को बढ़ाना यही अज्ञान की जड़ है।
* भक्ति और सेवा से भी पूर्णतः फल आज्ञा पालन करने में है।
* सेवा और भक्ति के फल को चाहने वाला दरिद्र होता है।
* अज्ञान और अविचार के साथ कुछ भी बोलना महापाप है।
* बाप को मानता हूं, लेकिन-
  बाप की बात को नहीं मानता।
* स्वार्थ, झूठ और दुराचार की दुनिया में निःस्वार्थी, सत्य और सदाचारी सज्जनों के ऊपर निरर्थक आपत्तियां आती रहती हैं। उन आपत्तियों में विवेक, धीरता, सत्कर्तव्य को जो धारता है वह महापुरुष बनता है।
* आत्म चिंतन सर्वोत्कृष्ट कर्म निर्जरा का कारण है।
* नकली माल हो तो असली माल की पहिचान होती है।
* महान व्यक्ति महान कार्य करता है।
* *संसार में किए पाप को, धोने दे दो दान।*
  दान देता पवित्रता की निर्मल नीर समान।
* हरेक संसारी जीव संसार विषय के विचार रूपी सांचा में ढले हुए हैं। आत्म विचार के जीव संसार विषय के विचार रूपी ढांचा को नहीं बनाते हैं।
* *स्वभाव उग्रता वज्र प्रहार है।*
  स्वभाव नम्रता रत्नहार है।
* रहे जो धर्म से प्यार-पीये वह अमृतसार।
* पाले गुरु आज्ञा एक तार, सब सुख पावे बेड़ा पार।
* *परिणाम बिगड़ जाते हैं, वह अशुभ समय है।*
  परिणाम शुभ रहते हैं, वह शुभ समय है।
* यह आत्मा दुर्गंधी में नाक बंद करता है और सुगंधी में नाक खुला रखता है। उसी प्रकार बुरे कार्यों में परिणामों को बंध रखना और अच्छे कार्यों में परिणामों को खुले रखना है।

* संसार के खेल को और आत्मा के गुणों को ज्ञानी मुनि जानते हैं।

* एक योजन का गड्ढा पुद्गल द्रव्यों से भर जायेगा लेकिन आशा रूपी गड्ढा कभी नहीं भरेगा, उसे निरपेक्ष-निरिच्छा से ही भरना होगा।

* समझदारी ही जीवन की खबरदारी है।

* अच्छी बुद्धिमानी का कार्य वह है, समय पर धन और आयु को शुभ कार्यों में लगाना। जो समय को, धन को, आयु को शुभ समय में शुभ कार्य में नहीं लगाता है वह अपनी आत्मा को खो बैठता है उसे मूर्ख समझना।

* जो प्रशंसा से खुश होता है और बुराई से नाराज होता है वह सम्यग्दृष्टि नहीं होता है।

* *जीव की रक्षा करे सो है दया धर्म।*
  जीव को जीव जाने वह है सच्चा धर्म।

* अहंकार सबसे बड़ा परिग्रह है। अहंकार परद्रव्य के संबंध में होता है।

* हरेक जीव अपने परिणामों का मालिक आप है। परद्रव्यों का कर्ता-धर्ता मानकर कलंक लगाना और लेना अज्ञान है।

* आयु पाप कार्य में निकल जाता है। धन किसी के स्वाधीन होता है। बुद्धि खोटे कार्य में लगाने से ज्ञानावरणीय कर्म का बंध पड़ता है। सभी कार्य शुभ में नहीं बिताने से अंतराय आदि सब कर्मों के बंध से दुर्गति भोगना पड़ता है।

* जन्म-मरण जीव को नहीं देह को है।

* *जानते हैं पर बोलते नहीं वह ज्ञानी।*
  जानते नहीं पर बोलते रहते हैं वह हैं अज्ञानी।

* किसी का दास मत बनो, सबसे उदास बनो।

* बोले सो करे, करे सो ही बोले।

* आंखों न देखी बात को, बात बताई मन को। मन का हुकुम बात को, बात ने उड़ाई तोफ को, तोफ ने बता दी दुनिया को, बात की बात पीड़ा को।

* झूठ नहीं बोलना, चुगली नहीं खाना, बात को नहीं बदलना, कुछ का कुछ नहीं कहना, अनजाने बात को नहीं कहना, किसी के बिघाड़ की बात को भी नहीं कहना।

* सूरत और कीरत
  सूरत मुरझाती, कीरत रह जाती।

* गुरु और भगवान की बात सुनता है अर्थात् वैसा कार्य करता है वह एक दिन भगवान बन जाता है।

* दूसरों की इज्जत को दाग लगाना चाहते हैं वे चांडाल होते हैं। अर्थात् चांडाल ही चांडाल का कार्य करता है। जो चांडाल को जवाब देता है वह अपने परिणामों को बिगाड़ लेता है। जो चांडाल के जवाब को सुनना भी नहीं चाहता और जवाब भी नहीं देता वह सज्जन होता है।

* कामी एवं चोर की आंखें 'चोर' होते हैं, हमेशा चोरी से ही देखते हैं।

* *परख सकती नहीं रत्नों को हर इन्सान की आंखें।*
  दिखाई ब्रह्म क्या देवे, जो न हो ज्ञान की आंखे॥

* *मुक्ति को पाने वाले, विराजते हैं सिंहासन पर।*
  धन को चाहने वाले, विराजते हैं धरती पर॥
  सिंहासन पर विराजने वाले, सोते हैं धरती पर।
  धरती पर विराजने वाले, सोते हैं गादी पर॥

* शत्रु द्वारा की गई प्रशंसा सर्वोत्तम कीर्ति है।

* हृदय की विशालता ही उन्नति की नींव है।

* आज का पुरुषार्थ ही कल का भाग्य है।

* दुर्जन होने से निर्धन होना अच्छा।

* निर्मल हृदय से अधिक सुन्दर और कुछ नहीं।

* नींद और मरण दोनों एक से हैं।

* संसार में सबसे बड़ा अधिकार सेवा और त्याग से प्राप्त होता है।

* त्याग बिना मुक्ति नहीं, ध्यान बिना शुद्धि नहीं।

* कर्त्तव्य भावना से ऊंचा है।

अनुभव दर्पण

* जो वर्तमान सुधारेगा, उसका भविष्य स्वयमेव सुधर जाएगा।
* जब सुख के दिन नहीं रहे तो दुःख के दिन भी नहीं रहेंगे। जब दिन नहीं रहा तो रात भी क्यों रहेगी?
* दीपक अंधकार खाता है, इसलिए काजल उगलता है।
* यह शरीर अनेक रोगों का घर है।
  (शरीर व्याधि मंदिरं)
* यह शरीर रोग रूपी सर्पों का घर है।
* शरीर किराये का मकान है।
* ये काया कांच की शीशी, क्षणिक में टूट जायेगी।
* यह शरीर घोंसला है।
* तन मिला तप करो, करो कर्म का नाश।
* *प्रभात में भी लाली होती है, संध्या में भी लाली है।*
  एक जगाती एक सुलाती, कितनी अंतर वाली है।
* बुराई सुनने के समय बहरे बन जाओ।
* जीवन में पात्रता लाना ही सबसे बड़ा पुरुषार्थ है।
* गुरु के अनुकूल प्रवृत्ति ही पात्रता की साधक है।
* गुरु के हृदय में स्थान पाना सबसे कठिन कार्य है।
* प्राणों के नाश का अवसर आने पर भी गुरु बचनों का उल्लंघन नहीं करना चाहिए।
* हंसना-मुर्झाना इसी क्रम का नाम 'संसार'।
* यह संसार कभी समाप्त न होने वाली यात्रा है।
* मां की गोद से बढ़कर संसार में और कोई भी न तो विश्राम-स्थल होता है और न कोई सुरक्षित स्थान।
* खून से खून नहीं धुलता।

(1) जिसके जीवन में दया नहीं, विनय नहीं, त्याग-भावना नहीं, परोपकार की भावना नहीं, संयम नहीं, ब्रह्मचर्य नहीं, वह करोड़पति होते हुए भी महा दरिद्री है।

(2) आप यदि वास्तविक सुख चाहते हैं, शाश्वत सुख चाहते हैं तो उसे बाहर नहीं भीतर खोजिये। सच्चा सुख भोग में नहीं. त्याग में है। पुद्गल में नहीं, आत्मा में है। कर्म में नहीं, धर्म में है।

(3) देश के नवनिर्माण की इस पवित्र बेला में सफेद कपड़े पहनने वालों के स्थान पर मिट्टी से सने हाथ वालों की ज्यादा प्रतिष्ठा है, ज्यादा सम्मान है। आप श्रम से शर्मायें नहीं बल्कि उसे पुरुषोचित आभूषण समझ कर धारण करें।

(4) एक-एक श्वास का मूल्य समझकर उसका सदुपयोग करो।

(5) वस्तु में भेद नहीं है, दृष्टि में भेद है। इस पर गंभीरता से विचार करना मानव मात्र का कर्तव्य है।

(6) हिंसा का संकल्प करना ही भाव हिंसा है। भाव हिंसा से दूसरों की हिंसा हो या न हो, अपना स्वयं का हनन तो हो ही जाता है। जैसे दियासलाई रगड़ खाकर स्वयं जल जाती है, फिर भले ही वह दूसरे को जलाये या नहीं।

(7) जिसका भोजन बाह्य रूप से नीरस होता है, उसका अंतरंग पौष्टिक, सरस और स्वास्थ्यवर्धक होता है, आत्मकल्याणी होता है।

(8) दूसरों की सेवा करना, गरीबों का दुःख दूर करना, तड़पते हुओं के आंसू पोंछना अहिंसा का दूसरा पहलू है।

(9) जीवन में कटु क्षणों को 'सहना' सीखो, 'कहना' नहीं।

(10) जीवन को पवित्र करने के लिए अहिंसा गंगा के समान है, इसमें स्नान करने से मनुष्य मानवता की पूर्णता को प्राप्त करता है।

(11) विचारों की अहिंसा का नाम अनेकान्तवाद है। अनेकान्तवाद वह शस्त्र है, जिसके द्वारा हम आपसी कलह, साम्प्रदायिक द्वेष और क्लेष को मिटाकर प्रेम और सद्भावना की नदी बहा सकते हैं।

(12) जो दुर्गति की ओर ले जाये वही अपना दुश्मन है, जो उससे बचाये और सही दिशा निर्देश दे वही अपना मित्र हैं।

(13) अहिंसा, संयम और तप को एक शब्द में समझना चाहें तो वह शब्द होगा-'त्याग'; क्योंकि हिंसा के त्याग को अहिंसा, इन्द्रिय शक्ति के त्याग को संयम और तृष्णा के त्याग को तप कहते हैं।

(14) जब बरसात के दिनों में नदी में बाढ़ आती है तब वह किनारे का सारा कूड़ा करकट बहा कर ले जाती है। हमारे अन्दर भी स्नेह की धारा सूख गयी है, जिससे निंदा का, आलोचना का, द्वेष का, घृणा का, एक दूसरे को पराया समझने का कचरा इकट्ठा हो गया है। आप प्रेम की ऐसी गंगा बहायेंगे तो यह सब कचरा धुल जाएगा।

(15) जिस प्रकार पीतल के पात्रों को यदि प्रतिदिन स्वच्छ नहीं किया जाए, तो वे अपनी चमक खो बैठते हैं, उसी प्रकार यदि साधक नित्य साधना नहीं करें तो उनका हृदय अपवित्र हुए बिना नहीं रहेगा।

(16) अगर बाहरी विकास करना है तो दिलों की दीवारें तोड़ो और आत्मिक विकास करना है तो कर्मों की दीवारें तोड़ो।

(17) इस जिन्दगी का कोई भरोसा नहीं है, न मालूम यह चिराग कब गुल हो जाए, यह सफर न जाने कब खत्म हो जाए? यह धन-दौलत, यह महल, यह भोग विलास के सारे साधन यहीं रह जाएंगे; खाली हाथ आये थे और खाली हाथ

जाएंगे। इसलिए जितनी भी भलाई कर सकते हो करो, कषायों को जितना पतला कर सकते हो करो, राग-द्वेष जितना त्याग सकते हो त्यागो, जिससे भविष्य अन्धकारमय न हो।

(18) जैन शासन तो तप का अक्षय कोष है, इसमें तप के बिना कोई कार्य नहीं होता।

(19) संकट महापुरुषों के जीवन में आते हैं, कायरों के नहीं। देखो न ग्रहण सूर्य और चन्द्र को ही लगता है, तारों को नहीं।

(20) जो मनुष्य कर्तव्य का ध्यान रखता है, वह कभी च्युत नहीं होगा और जो सत्ता का ध्यान रखेगा वह कर्तव्य से च्युत हो जाएगा, इसलिए सत्ता की अपेक्षा कर्तव्य का ध्यान रखो।

(21) सच्चा मानव वही है जो संसार के कडुवे-मीठे अनुभव होने पर भी कर्तव्य रूपी सुगन्ध को चारों तरफ फैलाता है।

(22) समय को पहिचान कर दूसरों से सबक लेकर जो चेत जाता है, वही चतुर है।

(23) हम अपने जीवन के विकास का एक लक्ष्य बना लें और उस मंजिल तक पहुंचने के लिए निरन्तर प्रयास करते जाएं। असफलता से कभी नहीं घबरायें। असफलता ही सफलता की कुंजी है।

(24) अपनी आत्मा को उज्जवल करके मनुष्य मोक्ष तक जा सकता है।

(25) पहनने का वस्त्र यदि मैला हो जाए तो आप लोग क्या करते हैं ? साबुन और जल से धोकर उसे स्वच्छ बना लेते हैं। भेद विज्ञान भी ऐसा ही एक साबुन है, जो समतारूपी जल के साथ आध्यात्मिक शुद्धि में उपयोगी बनता है।

(26) आत्मा को थोड़ी देर के लिए सेठ मान लिया जाए तो शरीर को मुनीम मानना पड़ेगा। यदि मुनीम की गलती से व्यापार में घाटा हो जाए तो उसकी पूर्ति कौन करेगा ? सेठ करेगा, मुनीम नहीं। शरीर पाप करेगा तो फल आत्मा भोगेगी शरीर तो यहीं रह जाएगा।

(27) तृष्णा की तृप्ति न कभी हुई है, न होती है, न होगी। वह मनुष्य को पागल बना देती है, अन्धा बना देती है।

(28) बगुला दूध में मिले हुए पानी को पी जाता है, पर हंस ऐसा नहीं करता वह पानी से दूध को अलग करके ग्रहण करता है। विवेकी आत्माएं भी शरीर और शरीरी का भेद समझ कर दोनों का उनके योग्य ही आदर करती है।

(29) दानवता के सींग-पूंछ नहीं होते, न रंग-आकार होते हैं। विकारों से ही मनुष्य दानव बन जाता है और विचारों से दानव भी मानव बन जाता है।

(30) लोभ एक इतना बड़ा विशाल समुद्र है कि जिसके भंवर में पड़कर निकलना अत्यन्त ही कठिन है। लोभ से क्रोध आता है, लोभ से कामनाएं बढ़ती हैं, लोभ से अज्ञान बढ़ता है और लोभ से विनाश होता है।

(31) जिस प्रकार चन्दन अपने काटने वाली कुल्हाड़ी को भी सुगन्धित कर देता है, उसी प्रकार अपने विरोधी को भी जो समभाव रूपी सुगन्ध अर्पित करता है, वह महापुरुष की समता है।

(32) समता हृदय को विशाल बनाती है। जीवन में समभाव/समता को दृढ़ करने के लिए मैत्री, करुणा, प्रमोद और माध्यस्थ भावनाओं को अपनाना चाहिए।

(33) मनुष्य कितना भी विद्वान हो, बुद्धिमान हो, सम्पत्तिवान हो, परन्तु यदि वह आचारवान नहीं है तो जगत में प्रतिष्ठा नहीं पा सकता।

(34) जिस प्रकार सूर्य बिना कहे आप ही कमलों को खिलाता है, चन्द्रमा बिना कहे कुमुदिनों को प्रफुल्लित करता है, मेघ बिना याचना के जल बरसाता है, उसी प्रकार महापुरुष भी बिना याचना के पराई भलाई करते हैं।

(35) आप दर्पण में अपना मुंह देखते हैं। यदि कहीं कोई दाग हो तो गीले तौलिये से उसे पोंछ डालते हैं। ठीक इसी प्रकार महापुरुषों का जीवन-चरित्र भी दर्पण है, जिसकी ओर देखने से हमें अपने जीवन के विकार, कलंक, दोष साफ-साफ दिखाई पड़ेंगे। उस परिस्थिति में हमारा कर्त्तव्य हो जाएगा कि हम ज्ञान-रूपी तौलिये को भावना के जल में भिगोकर उससे अपने जीवन के दुर्गुण रूपी दाग मिटा डालें।

(36) एक दीपक की लौ से हजारों दीपक जलाये जा सकते हैं। ठीक इसी प्रकार एक महामानव का चरित्र हजारों महामानव पैदा कर सकता है। जरूरत है दीपक से दीपक का संयोग करने की।

(37) मिठाई का नाम जपने से नहीं; उसे खाने से ही पेट भरेगा। ठीक उसी प्रकार महापुरुषों के स्मरण-मात्र से नहीं, उनके जीवन का अनुसरण करने से ही आत्मकल्याण होगा। सदाचार से ही उद्धार होगा।

(38) आसक्ति छूटती है-सम्यक्त्व से विवेक से। अजीव को जीव समझना मिथ्यात्व है। जीव को अजीव समझना भी मिथ्यात्व है। जीव को जीव और अजीव को अजीव समझना सम्यकत्व है।

(39) शिक्षा केवल पेट-पूर्ति के लिए ही नहीं है। उसका महान् उद्देश्य जीवन विकास है। जीवन में दो ही रास्ते हैं-विकास का या विनाश का। इन दोनों शब्दों में केवल व्यंजन 'क' और 'न' का ही अन्तर है। परन्तु दोनों शब्द 36 के अंक के समान एक दूसरे से भिन्न हैं।

(40) मानव को बांधने के लिए सांकलों की आवश्यकता नहीं होती है, मानव के लिए कोई बन्धन है तो मर्यादाएं हैं।

(41) यदि एक अणु में सूर्य के समान शक्ति है, तो आत्मा में अनन्त सूर्यों के बराबर शक्ति है। तभी तो आत्मा को अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख और अनन्त वीर्य को धारण करने वाली माना जाता है।

(42) जैसे हम मिट्टी के मकान में रहते हैं, वैसे ही शरीर रूपी मकान में हमारी आत्मा रहती है। किराये के मकान में किरायेदार को कोई आशक्ति नहीं रहती। यदि इस तरह शरीर के प्रति अनाशक्ति पैदा हो जाए तो हमें मृत्यु का कोई भय न रहे।

(43) ज्ञान का उपयोग दूसरों के दोष ढूंढ़ने में, छिद्रान्वेषण करने में मत कीजिए, आत्म निरीक्षण में कीजिए।

(44) जड़ की अपेक्षा चेतन का महत्व अधिक है। हमें इस जड़ संसार में डूबना नहीं, तैरना चाहिये। जहाज डूबता नहीं है, तैरता है; इसीलिए वह दूसरों को तैराने में समर्थ बनता है। जहाज पानी में रहकर भी पानी के ऊपर रहता है। तीर्थंकरों की उपमा जहाज से दी जाती है।

(45) किसी भी संगठन में कोई व्यक्ति कैंची बनने की कोशिश न करे, सुई बन सके तो अच्छा है। परन्तु न बन सके तो कम से कम कैंची न बने।

(46) अनुभव अमृत के समान मधुर होता है, उसमें द्वेष आदि का जहर नहीं होता।

(47) सोना यदि अपवित्र स्थान में, कीचड़ में या गटर में पड़ा हो तो भी कोई उसे नहीं छोड़ेगा। शत्रु में भी यदि अच्छे गुण हैं, तो उन्हें मत छोड़िये, अपनाने को तैयार रहिये।

(48) मैले वस्त्र को फाड़ने से मैल नष्ट नहीं होता, तरीके से उसका मैल निकालना होता है। वैसे ही पापी को मार डालने से वह सुधर नहीं जाता, तरीके से उसका हृदय परिवर्तन करना पड़ता है।

सूक्तियां

Jack of all (out) master of none.
सभी विषयों में हाथ डालने वाला किसी भी विषय में पारंगत नहीं होता।

Keep your heart as glossy and white as diamond.
अपने हृदय को हीरे जैसा चमकता और उज्ज्वल रखो।

Kindness is the golden chain by which society is bound together.
दयाभाव एक ऐसी सुनहरी कड़ी है जिससे समाज सुसंगठित होता है।

Knowledge is life. ज्ञान ही जीवन है।

Live and let live. जीओ और जीने दो।

Love your enemies. अपने दुश्मन से भी प्रेम करो।

Mercy seasons justice.
दया न्याय को सुशोभित करती है।

Mother, Father and Guru are gods on earth.
माता, पिता और गुरु ये तीनों ही पृथ्वी पर जीवंत देवता हैं।

Paradise is open to all kind hearts.
सभी दयालु हृदयों के लिए स्वर्ग के दरवाजे खुले ही रहते हैं।

Peace resides in pure heart.
शान्ति पवित्र आत्मा में वास करती है।

Peace lies in moderating desires and not in satisfying them.
इच्छाओं की आपूर्ति करने से नहीं, अपितु उन्हें परिमित करने से शान्ति प्राप्त होती है।

Remember that time is money.
याद रखो! समय धन है।

Right Faith, Right knowledge and Right conduct are three jewels.
सम्यग् दर्शन, सम्यग् ज्ञान, सम्यग् चारित्र तीन रत्न हैं।

Salvation is self-knowledge.
आत्मज्ञान का अभिप्राय ही मोक्ष है।

Saviour is greater than the killer.
मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है।

Silence is more eloquent than words.
मौन में शब्दों की अपेक्षा अधिक वाक्शक्ति रहती है।

Sin in the root of all pains.
पाप सभी दुःखों का मूल कारण है।

Soul is eternal.
आत्मा शाश्वत है।

The beauty of soul is a joy forever.
आत्मा का सौन्दर्य शाश्वत आनन्द है।

The greatest humbug in the word is the idea that money can make a man happy.
पैसा मनुष्य को सुखी कर सकता है, यह विचार संसार में सबसे बड़ी भ्रांति है।

The human life is a boat to get across the worldly ocean.
मानव जीवन संसार रूपी समुद्र को पार करने के लिए एक नौका है।

The tongue which is only three inches long can kill a man six feet high.
जीभ मात्र तीन इंच लम्बी है, फिर भी वह छः फुट ऊंचे मनुष्य को खत्म कर सकती है।

The world we see is the world we live in.
जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि।

The burnt child dreads fire.
दूध का जला छाछ को भी फूंक कर पीता है।

Thou shalt not made infy there image.
तुम अपनी छवि मत बिगाड़ो।

Thou shalt not commit adultery.
व्यभिचारी मत बनो।

Thou shalt not steal. चोरी मत करो।

Time and tide wait for none.
समय और ज्वार किसी की प्रतीक्षा नहीं करते।

Truth is life. सत्य ही जीवन है।

Truth is the purity of speech.
पवित्र वाणी में सत्य वास करता है।

When money speaks, truth is silent.
जब धन बोलने लगता है, तब सत्य को चुप होना पड़ता है।

All that glitters is not gold.
हर चमकने वाली वस्तु सोना नहीं होती।

A man is known by the company he keeps.
मनुष्य की पहचान उसकी संगति से होती है।

An empty mind is a devils workshop.
खाली दिमाग शैतान का घर होता है।

Anger enters wisdom departs.
ज्योंहि क्रोध प्रवेश करता है, विवेक बाहर निकल जाता है।

Anger is a bitter enemy of the soul.
क्रोध आत्मा का दुर्भेद्य शत्रु है।

An open free heart is worth gold.
निष्कपट हृदय, स्वर्ण के सदृश होता है।

Arise, Awake and stop not till goal is reached.
उठो, जागो और रुको मत जब तक मंजिल तक न पहुंच जाओ।

A sound mind resides in a sound body.
जिसका शरीर स्वस्थ, उसका मन भी स्वस्थ है।

As you sow, so shall you reap.
तुम जैसा बोओगे, वैसा काटोगे या पाओगे।

A silent prayer with full devotion is more meaningful than a loud prayer lacking devotion.
शब्द रहित सहृदय प्रार्थना हृदयहिन मुखर प्रार्थना से उत्तम है।

As you think so shall you become.
तुम जैसा सोचोगे वैसा बनोगे।

A true man hates none.
सच्चा मनुष्य किसी का भी तिरस्कार नहीं करता।

A wise man's day is better than a fools whole life.
बुद्धिमान का एक दिन मूर्ख की सम्पूर्ण जिन्दगी से बेहतर है।

A word is enough to the wise.
अकलमंद को इशारा काफी है।

Behaviour is a mirror in which every one displays his image.
आचरण एक दर्पण के सदृश है, जिसमें हर मनुष्य अपना प्रतिबिम्ब देखता हैं।

Bless those who curse you.
जो तुम्हारी निन्दा करते हैं, तुम उनका भी भला चाहो।

Chastity is life, semuality is death.
सदाचार जीवन है, दुराचार मरण है।

Courtesy brings victory.
विनय विजय दिलाती है।

Conduct is life.
आचरण अथवा चारित्र ही जीवन है।

Contentment is happiness.
सन्तोषी सदा सुखी।

Difficulties test a man.
मुसीबतें मानव की परीक्षा है।

Eat to live and don't live to eat.
जीने के लिए खाओ, खाने के लिए न जीओ।

Everyday is a new light for a wise man.
बुद्धिमान मनुष्य के लिए प्रत्येक दिन नूतन प्रकाश किरण है।

Failure leads to success.
असफलता सफलता की कसौटी है।

Faith makes a man stronger therefore have it in your self and your work.
श्रद्धा मनुष्य को शक्तिशाली बनाती है। अतः अपने आप में और अपने कार्य में श्रद्धा रखो।

Faith is the force of life.
विश्वास जीवन की शक्ति है।

Goodness is the aim of all religions
'भलाई करना' यह सभी धर्मों का लक्ष्य है।

God is truth and truth is God.
ईश्वर सत्य और सत्य ईश्वर है।

Greed is the root of all sins.
लोभ सभी पापों का मूल है।

He who speaks ill of others cannot find peace.
जो दूसरों की निन्दा करते हैं, वे कभी भी शान्ति प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

He who does not have humility cannot seek ultimate truth.
जिसमें अखण्ड नम्रता नहीं, उसमें सत्य नहीं।

Humility is the key to the door of heaven.
विनय (नम्रता) स्वर्ग के द्वार की कुंजी है।

It take two people to make a quarrel.
एक हाथ से ताली नहीं बजती है।

कौन है?

- **मुक्त क्या है?**
  - ➡ विषय भोगों से पूरी तरह से छूटना।
- **भय और नरक क्या है?**
  - ➡ सात व्यसन (सप्त)
- **स्वर्ग क्या है?**
  - ➡ तृष्णा का छूटना।
- **संसार बंधन किससे हटता है?**
  - ➡ आत्म ध्यान से।
- **मुक्ति के हेतु क्या है?**
  - ➡ तपश्चर्या, तप और संयम।
- **नरक का द्वार क्या है?**
  - ➡ कनक और कामिनी।
- **सुख से कौन सोता है?**
  - ➡ समाधिनिष्ठ। अर्थात् आत्म ध्यान में मग्न रहने वाला।
- **जाग्रत कौन है?**
  - ➡ सत्य का विवेकी।
- **शत्रु कौन है?**
  - ➡ इन्द्रियों के दास।
- **दरिद्र कौन है?**
  - ➡ जिसकी तृष्णा बड़ी (अधिक) है।
- **श्रीमान कौन है?**
  - ➡ जो पूर्ण सन्तोषी है।
- **मरा कौन है?**
  - ➡ उद्यमहीन।
- **जीवित कौन है?**
  - ➡ स्व और पर के ज्ञानी।
- **फांसी क्या है?**
  - ➡ ममता और अभिमान।
- **मदिरा की भांति मोहित कौन करता है?**
  - ➡ कामान्ध नारी का संसर्ग।
- **मृत्यु क्या है?**
  - ➡ अविवेक।
- **गुरु कौन है?**
  - ➡ विषय आशा का जिन्होंने पूर्णतया त्याग किया हो और हमेशा ध्यान अध्ययन में रत रहता हो।
- **शिष्य कौन है?**
  - ➡ जो गुरु की आज्ञाओं पर चलता हो।
- **लम्बा रोग क्या है?**
  - ➡ भव रोग।
- **उसके मिटाने की दवा क्या है?**
  - ➡ सत्य और असत्य का विचार।
- **भूषण में उत्तम भूषण क्या है?**
  - ➡ सम्यक् चारित्र।
- **परमतीर्थ क्या है?**
  - ➡ अपना विशुद्ध मन।
- **कौन वस्तु हेय है?**
  - ➡ कामिनी और कंचन।
- **सदा क्या सुनना चाहिए?**
  - ➡ गुरु का उपदेश/सदुपदेश।
- **आत्म प्राप्ति का उपाय क्या है?**
  - ➡ सत्संग, दान विचार और सन्तोष।
- **सन्त कौन है?**
  - ➡ जो समस्त विषयों से वैरागी तथा मोह रहित व्रतनिष्ठ हो।
- **प्राणियों का ज्वर क्या है?**
  - ➡ चिन्ता।
- **मूर्ख कौन है?**
  - ➡ विवेकहीन।

- **किसको प्रिय बनाना है?**
- ➡ अरहन्त भक्ति को।
- **यथार्थ जीवन क्या है?**
- ➡ जो दोष वर्जित है।
- **विद्या क्या है?**
- ➡ जो स्व और पर का कल्याण करे।
- **ज्ञान किसे कहते हैं?**
- ➡ जो मोक्ष का हेतु हो।
- **लाभ क्या है?**
- ➡ आत्मज्ञान।
- **जग को किसने जीता है?**
- ➡ जिसने मन को जीत लिया।
- **वीरों में महावीर कौन है?**
- ➡ जो कामबाण से पीड़ित न हो।
- **धीर कौन है?**
- ➡ जो ललना के कटाक्ष से मोहित नहीं होता।
- **विष क्या है?**
- ➡ समस्त विषय।
- **सदा दुःखी कौन है?**
- ➡ विषयानुरागी।
- **धन्य कौन है?**
- ➡ परोपकारी।
- **पूजनीय कौन है?**
- ➡ अरहन्त तत्व में निष्ठावान।
- **सभी अवस्था में क्या नहीं करना चाहिये?**
- ➡ मोह और पाप।
- **विद्वानों को प्रेम के साथ क्या करना चाहिये?**
- ➡ शास्त्र का पठन और धर्म।
- **संसार का मूल क्या है?**
- ➡ विषय और चिन्ता।
- **किसके संग और किसके साथ निवास नहीं करना चाहिये?**
- ➡ मूर्ख, पापी, नीच और खल के साथ वास नहीं करें।
- **मुमुक्षु व्यक्तियों को शीघ्रातिशीघ्र क्या करना चाहिये?**
- ➡ सत्संग, निर्ममता और जिनेश्वर की भक्ति।
- **हीनता का मूल क्या है?**
- ➡ याचना।
- **उच्चता का मूल क्या है?**
- ➡ अयाचना।
- **अमर कौन है?**
- ➡ जिसकी कभी मृत्यु न हो।
- **शत्रु में महाशत्रु कौन है?**
- ➡ क्रोध, मान, माया और लोभ।
- **विषय भोग से तृप्त कौन नहीं होता है?**
- ➡ कामना।
- **दुःख का कारण क्या है?**
- ➡ ममता।
- **मृत्यु समीप होने पर बुद्धिमान व्यक्ति को क्या करना चाहिये?**
- ➡ कर्म शत्रु का भय निवारण करने के लिये श्री भगवान जिनेश्वर का ध्यान करना चाहिये।
- **किसका जन्म सार्थक है?**
- ➡ जिसका फिर जन्म न हो।
- **दिन रात हमारा ध्येय क्या है?**
- ➡ संसार से वैराग्य और आत्म स्वरूप का चिन्तवन।
- **मार्ग का पाथेय क्या है?**
- ➡ धर्म।
- **पवित्र कौन है?**
- ➡ जिसका मन पवित्र है।
- **पंडित कौन है?**
- ➡ स्व पर विवेकी।
- **विष क्या है?**
- ➡ गुरुजनों का अपमान।
- **मदिरा के समान मोहजनक क्या है?**
- ➡ ममता।

● **डाकू कौन है?**

➡ विषय समूह।

● **संसार वर्धक क्या है?**

➡ विषय-तृष्णा।

● **शत्रु कौन है?**

➡ उद्योग का अभाव।

● **कमल पत्र पर स्थित जल की तरह चंचल क्या है?**

➡ यौवन, धन और आयु।

● **चन्द्र किरण के समान निर्मल कौन है?**

➡ विषय वासना से रहित, बाह्य आभ्यन्तर परिग्रह रहित, वीतराग, तप और संयम से युक्त दिगम्बर साधु।

● **नरक क्या है?**

➡ परवशता।

● **सुख क्या है?**

➡ समस्त संसार का त्याग।

● **सत्य क्या है?**

➡ जिसके द्वारा प्राणी का हित हो।

● **प्राणियों को प्रिय क्या है?**

➡ प्राण।

● **दान क्या है?**

➡ कामना रहित होना।

● **मित्र कौन है?**

➡ जो पाप से हटाये।

● **आभूषण क्या है?**

➡ शील।

● **वाणी का भूषण क्या है?**

➡ सत्य।

● **अनर्थकारी कौन है?**

➡ मान।

● **सुखदायी कौन है?**

➡ सज्जन की मित्रता।

● **समस्त व्यसनों के नाश में कौन समर्थ है?**

➡ सर्वथा त्यागी।

● **अन्धा कौन है?**

➡ जो अकर्त्तव्य में लगा हो।

● **बहरा कौन है?**

➡ जो हित की बात न सुनता हो।

● **गूंगा कौन है?**

➡ जो समय पर प्रिय वचन न बोलता तथा न जानता हो।

● **मरण क्या है?**

➡ मूर्खता।

● **अमूल्य वस्तु क्या है?**

➡ उपयुक्त समय देख करके दान देना।

● **मरते समय क्या चुभता है?**

➡ अपने गुप्त पाप।

● **साधु कौन है?**

➡ सच्चारित्रवान्।

● **अधम कौन है?**

➡ चारित्रहीन।

● **जगत को जीतने में कौन समर्थ है?**

➡ सत्यनिष्ठ और महा सहनशील।

● **शोचनीय क्या है?**

➡ धन होने पर भी कृपणता।

● **प्रशंसनीय क्या है?**

➡ उदारता।

● **पंडितों में पूजनीय कौन है?**

➡ सदा स्वाभाविक विनयवान।

● **चतुर कौन है?**

➡ प्रिय वचन के साथ दान, गर्वरहित ज्ञान, क्षमायुक्त शूरता और त्यागयुक्त धन।

● **मुक्ति किसको मिलती है?**

➡ जिन्होंने संसार से मुंह मोड़ा हो।

प्रश्न आपके उत्तर हमारे

प्रश्न : शलाका पुरुष किसे कहते हैं?

उत्तर : तीर्थंकर आदि प्रसिद्ध पुरुषों को शलाका पुरुष कहते हैं। प्रत्येक कल्पकाल (चतुर्थकाल) में 63 होते हैं। 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती, 9 बलदेव, 9 नारायण, 9 प्रतिनारायण ये 63 शलाका पुरुष है। 169 पुण्य पुरुष-(महापुरुष)-24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती, 9 बलदेव, 9 नारायण, 9 प्रतिनारायण, 9 नारद, 11 रुद्र, 24 कामदेव, 14 कुलकर, 24 तीर्थंकर माता, 24 तीर्थंकर पिता। हुंडावसर्पिणी काल में 58 ही शलाका पुरुष होते हैं।

प्रश्न : शलाका पुरुषों के शरीर की विशेषता क्या है?

उत्तर : सभी वज्रवृषभ नाराच संहनन से सहित, सुवर्ण के समान वर्ण वाले, उत्तम शरीर के धारक, सम्पूर्ण सुलक्षणों से युक्त और समचतुरस्त्र रूप शरीर संस्थान से युक्त होते हैं। सर्व देव, नारकी, हलधर (बलदेव) चक्रवर्ती, तीर्थंकर, केशव (नारायण) और कामदेव मूछ-दाढ़ी से रहित होते हैं।

प्रश्न : शलाका पुरुषों का परस्पर में मिलाप होता है क्या?

उत्तर : नहीं-तीन लोक में कभी चक्रवर्ती- चक्रवर्तियों का, तीर्थंकर-तीर्थंकरों का, बलभद्र-बलभद्रों का, नारायण-नारायणों का और प्रति नारायणों-प्रति नारायणों का परस्पर मिलाप नहीं होता। यदि नारायण, नारायण का मिलाप होगा तो फक्त चिन्ह मात्र से ही मिलाप हो सकता है। एक दूसरे के शंख का शब्द सुनना तथा रथों की ध्वजाओं का देखना इन्हीं चिन्हों से दोनों का साक्षात्कार हो सकता है।

प्रश्न : चक्रवर्ती का लक्षण क्या है?

उत्तर : जो षट् खण्ड (भरत क्षेत्रस्थ पांच म्लेच्छ, एक आर्य खंड) का स्वामी हो और बत्तीस हजार मुकुटबद्ध राजाओं का तेजस्वी अधिपति हो वह सकलचक्री होता है।

प्रश्न : चक्रवर्ती के भोग कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर : चक्रवर्ती के भोग दस प्रकार के हैं - दिव्यपुर (नगर), रत्न, निधि, चमू (सैन्य), भाजन, भोजन, शय्या, आसन, वाहन और नाट्य ये चक्रवर्तियों के दशांग भोग होते हैं।

प्रश्न : भरत चक्रवर्ती की घरकोट विभूति का क्या नाम था?

उत्तर : भरत चक्रवर्ती की घरकोट विभूति का नाम 'क्षितिसार' था।

प्रश्न : गौशाला विभूति का क्या नाम था?

उत्तर : गौशाला विभूति का नाम 'सर्वतोभद्र' था।

प्रश्न : सभाभूमि का क्या नाम था?

उत्तर : सभाभूमि का नाम 'दिग्वसतिका' था।

प्रश्न : निवास भवन का क्या नाम था?

उत्तर : निवास भवन का नाम 'पुष्करावती' था।

प्रश्न : भण्डार गृह का क्या नाम था?

उत्तर : भण्डार गृह का नाम 'कुबेरकांत' था।

प्रश्न : स्नान गृह का क्या नाम था?

उत्तर : स्नान गृह का नाम 'जीमूत' था।

प्रश्न : शय्या का नाम क्या था?

उत्तर : शय्या का नाम 'सिंहवाहिनी' था।

प्रश्न : छत्र का क्या नाम था?

उत्तर : छत्र का नाम 'सूर्यप्रभ' था।

प्रश्न : चमर का क्या नाम था?

उत्तर : चमर का नाम 'अनुपमान' था।

प्रश्न : खड़ाऊं का क्या नाम था?

उत्तर : खड़ाऊं का नाम 'विषमोचिका' था।

प्रश्न : रथ का क्या नाम था?

उत्तर : रथ का नाम 'अजितंजय' था।

प्रश्न : कवच का क्या नाम था?

उत्तर : कवच का नाम 'अभेद्य' था।

प्रश्न : धनुष का क्या नाम था?

उत्तर : धनुष का नाम 'वज्रकाण' था।

प्रश्न : बाण का क्या नाम था?

उत्तर : बाण का नाम 'अमोघ' था।

प्रश्न : शक्ति का क्या नाम था?

उत्तर : शक्ति का नाम 'वज्रतुण्डा' था।

प्रश्न : तलवार का नाम क्या था?

उत्तर : तलवार का नाम 'सौनंदक' था।

प्रश्न : चक्र का क्या नाम था?

उत्तर : चक्र का नाम 'सुदर्शन' था।

प्रश्न : चिन्तामणि रत्न का क्या नाम था?

उत्तर : चिन्तामणि रत्न का नाम 'चूड़ामणि' था।

प्रश्न : सेनापति का क्या नाम था?

उत्तर : सेनापति का नाम 'अयोध्या' था।

प्रश्न : पुरोहित का क्या नाम था?

उत्तर : पुरोहित का नाम 'बुद्धिसागर' था।

प्रश्न : गृहपति का नाम क्या था?

उत्तर : गृहपति का नाम 'कामवृष्टि' था।

प्रश्न : गज का नाम क्या था?

उत्तर : गज का नाम 'विजयगिरी' (धवलवर्ण) था।

प्रश्न : अश्व का नाम क्या था?

उत्तर : अश्व का नाम 'पवनंजय' था।

प्रश्न : स्त्री (पट्टरानी) का नाम क्या था?

उत्तर : स्त्री का नाम 'सुभद्रा' था।

प्रश्न : भेरी का नाम क्या था?

उत्तर : भेरी का नाम 'आनंदिनी' था।

प्रश्न : शंख का नाम क्या था?

उत्तर : शंख का नाम 'गंभीरावर्त' था।

प्रश्न : भोजन का नाम क्या था?

उत्तर : भोजन का नाम 'महाकल्याण' था।

प्रश्न : खाद्य पदार्थ का नाम क्या था?

उत्तर : खाद्य पदार्थ का नाम 'अमृत गर्भ' था।

प्रश्न : स्वाद्य पदार्थ का नाम क्या था?

उत्तर : स्वाद्य पदार्थ का नाम 'अमृतकला' था।

प्रश्न : पेय पदार्थ का नाम क्या था?

उत्तर : पेय पदार्थ का नाम 'अमृत' था।

प्रश्न : चक्रवर्ती कितने होते हैं?

उत्तर : चक्रवर्ती बारह होते हैं-(1) भरत (2) सगर (3) मघवा (4) सनत्कुमार (5) जयसेन (6) शांतिनाथ (7) कुंथुनाथ (8) अरहनाथ (9) सुभौम (10) पद्म (11) हरिषेण (12) ब्रह्मदेव।

प्रश्न : भरत चक्रवर्ती का जन्म कहां हुआ था?

उत्तर : भरत चक्रवर्ती का जन्म 'अयोध्या' में हुआ था।

प्रश्न : भरत चक्रवर्ती के माता-पिता का नाम क्या था?

उत्तर : भरत चक्रवर्ती की माता का नाम 'मरुदेवी' और पिता का नाम 'ऋषभदेव' था।

प्रश्न : भरत चक्रवर्ती के वर्ण, संस्थान, संहनन का नाम लिखो।

उत्तर : भरत चक्रवर्ती के शरीर का 'सुवर्ण' वर्ण, 'समचतुरस्रा' संस्थान, व 'वृषभ नाराच' संहनन था।

प्रश्न : भरत चक्रवर्ती के शरीर की ऊंचाई और आयु कितनी थी?

उत्तर : भरत चक्रवर्ती के शरीर की ऊंचाई 500 धनुष और आयु 84 लाख पूर्व थी।

प्रश्न : भरत चक्रवर्ती कहां गये?

उत्तर : भरत चक्रवर्ती मोक्ष गये।

प्रश्न : चक्रवर्ती का वैभव कितना था?

उत्तर : चक्रवर्ती का वैभव-1. रत्न (14 रत्न) 2. निधि (नऊ) 3. रानियां (आर्यखण्ड की राजकन्याएं 32 हजार, विद्याधर कन्याएं 32 हजार, म्लेच्छ राजकन्याएं 32 हजार, सब मिलकर 96 हजार रानियां) 4. पट्टरानी (सुभद्रा) 5. पुत्र-पुत्री (संख्यात-सहस्रा) भरत चक्रवर्ती के 30 हजार पुत्र-30 हजार पुत्री थे, सगर चक्रवर्ती के 60 हजार पुत्र थे, पद्मचक्रवर्ती की पुत्री थी 6. गणबद्ध देव (32 हजार) 7. तनुरक्षक देव (360) 8. रसोइये (360) 9. यक्ष (32) 10. यक्षों का बंधु कुल (350 लाख) 11. भेरी (बारह) 12. पटह-नगाड़े (बारह) 13. शंख (24) 14. हल (एक कोड़ा कोड़ी) 15. गौ (3 करोड़) 16. गौशाला (तीन करोड़) 17. थालियां (एक करोड़) 18. हंडे (एक करोड़) 19. गज (84 लाख) 20. रथ (84 लाख) 21. नाट्यशाला (32 हजार) 22. अश्व (18 करोड़) 23. योद्धा (84 करोड़) 24. विद्याधर (अनेक करोड़) 25. म्लेच्छ राजा (88 हजार) 26. चित्रकार (99 हजार) 27. मुकुटबद्ध राजे (3200) 28. संगीतशाला (32000) 29. पदाति (48 करोड़) 30. देश (32 हजार) 31. ग्राम (96 करोड़) 32. नगर (75 हजार) 33. खेट (16 हजार) 34. खर्वट (24 हजार) 35. मटंब (4 हजार) 36. पट्टन (48 हजार) 37. द्रोणमुख (99 हजार) 38. संवाहन (14 हजार) 39. अन्तर्द्वीप (56) 40. कुक्षि निवास (6 सौ) 41. दुर्गादि वन (28 हजार) 42. पताकाएं (48 करोड़) 43. भोग (10 प्रकार के) 44. पृथ्वी (षट्खंड)

प्रश्न : चौदह रत्न के नाम कौन से हैं?

उत्तर : 1. चक्र (आयुध) 2. छत्र (छतरी) 3. खड्ग (आयुध) 4. दण्ड (अस्त्र) 5. काकिणी (अस्त्र) 6. मणि (रत्न) 7. चर्म (तम्बू) 8. सेनापति 9. गृहपति (भंडारी) 10. गज 11. अश्व 12. पुरोहित 13. स्थपति (बढ़ई) 14. युवती (पट्टरानी)

प्रश्न : सुदर्शन चक्र की उत्पत्ति कहां होती है?

उत्तर : सुदर्शन चक्र की उत्पत्ति आयुधशाला में होती है।

प्रश्न : अजीव रत्न कौन-कौन से हैं व किससे बने हैं?

उत्तर : अजीव रत्न-चक्र, छत्र, खड्ग, दण्ड, काकिणी, मणि, चर्म ये सात रत्न अजीव हैं व सभी वज्र से बने हैं।

प्रश्न : जीव रत्न कौन से हैं?

उत्तर : जीव रत्न-(1) सेनापति (2) गृहपति (3) गज (4) अश्व (5) पुरोहित (6) स्थपति (7) युवती-ये सात रत्न जीव हैं।

प्रश्न : चक्रवर्ती के छत्र का प्रमाण कितना है?

उत्तर : 12 योजन लम्बा और इतना ही चौड़ा है। यह छत्र वर्षा से कटक की रक्षा करता है।

प्रश्न : चक्रवर्ती की नवनिधि कौन-कौन सी थी?

उत्तर : नवनिधि-(1) काल (2) महाकाल (3) पाण्डु (4) मानव (5) शंख (6) पदम (7) नैसर्प (8) पिंगल (9) नानारत्न।

प्रश्न : कालनिधि चक्रवर्ती को क्या प्रदान करती है?

उत्तर : कालनिधि सामान्य रूप से ऋतु के अनुसार पुष्प फल आदि और विशेष रूप से निमित्त, न्याय, व्याकरण आदि विषयक अनेक प्रकार के शास्त्र व

बांसुरी-नगाड़े आदि पंचेन्द्रिय के मनोज्ञ विषय प्रदान करती है।

प्रश्न : महाकाल निधि क्या प्रदान करती है?

उत्तर : महाकाल निधि भाजन (पंचलौह आदि धातुएं) प्रदान करती है।

प्रश्न : पाण्डु निधि क्या प्रदान करती है?

उत्तर : पाण्डु निधि धान्य तथा षट्रस प्रदान करती है।

प्रश्न : मानव निधि क्या प्रदान करती है?

उत्तर : मानव निधि आयुध (नीति व अन्य अनेक विषयों के शास्त्र) प्रदान करती है।

प्रश्न : शंख निधि क्या प्रदान करती है?

उत्तर : शंख निधि वादित्र प्रदान करती है।

प्रश्न : पद्म निधि क्या प्रदान करती है?

उत्तर : पद्म निधि वस्त्र प्रदान करती है।

प्रश्न : नैसर्प निधि क्या प्रदान करती है?

उत्तर : नैसर्प निधि हर्म्य (भवन) और विशेष रूप से शय्या, आसन, भाजन आदि उपभोग्य वस्तुएं प्रदान करती है।

प्रश्न : पिंगल निधि क्या प्रदान करती है?

उत्तर : पिंगल निधि आभरण प्रदान करती है।

प्रश्न : नाना रत्न निधि क्या प्रदान करती है?

उत्तर : नाना रत्न निधि अनेक प्रकार के रत्न प्रदान करती है। ये नौ निधि चक्रवर्ती के समस्त मनोरथों को पूर्ण करती है।

प्रश्न : इन नौ निधि की क्या विशेषता थी?

उत्तर : ये सभी निधियां अविनाशी थीं। निधिपाल नाम के देवों द्वारा सुरक्षित थी और निरन्तर लोगों के उपकार में आती थीं। ये गाड़ी के आकार की थी। नौ योजन चौड़ी, 12 योजन लम्बी, 8 योजन गहरी और वक्षार गिरी के समान विशाल कुक्षि सहित थी। प्रत्येक की एक-एक हजार यक्ष निरन्तर देखरेख रखते थे। ये नौ की नौ निधियां कामवृष्टि नामक गृहपति (९वां रत्न) के आधीन थीं।

प्रश्न : हुंडावसर्पिणी में चक्रवर्ती के उत्पत्ति काल में क्या अपवाद थे?

उत्तर : इस काल में तीसरा काल शेष रहते ही प्रथम चक्रवर्ती उत्पन्न हो जाता है। यद्यपि चक्रवर्ती की विजय कभी भंग नहीं होती। परन्तु इस काल में उसकी विजय भी भंग होती है।

प्रश्न : नंदीश्वर द्वीप के वंदनार्थ सौधर्मादिक इन्द्र कौन-कौन से यान पर आरुढ़ होकर जाते हैं?

उत्तर : सौधर्म इन्द्र हाथी पर आरुढ़ होते हैं, ईशान इन्द्र वृषभ यान पर, सानत्कुमार इन्द्र सिंह यान पर, माहेन्द्र इन्द्र अश्व यान पर, ब्रम्हेन्द्र इन्द्र हंस यान पर, ब्रम्होत्तर इन्द्र क्रौंच यान पर, शुक्रेन्द्र इन्द्र चक्रवाक् यान पर, महाशुक्र इन्द्र तोता यान पर, शतार इन्द्र कोयल यान पर, सहस्त्रार इन्द्र गरुड़ यान पर, आनत इन्द्र गरुड़ यान पर, प्राणत इन्द्र पदम विमान में, आरण इन्द्र कुमुद विमान में, अच्युत इन्द्र मयूर यान पर आरुढ़ होकर नंदीश्वर द्वीप के वंदनार्थ जाते हैं।

प्रश्न : कल्पवासी और कल्पातीतों में से कौन-कौन से देव एक भवावतारी हैं?

उत्तर : सौधर्म इन्द्र की अग्रमहिषी शची देवी, लोकपालों से सहित सौधर्म इन्द्र, सभी दक्षिणेन्द्र, सर्वार्थ सिद्धि वासी तथा लौकान्तिक नामक सब देव नियम से एक भवावतारी होते हैं।

प्रश्न : सौधर्म इन्द्र की शक्ति कितनी होती है?

उत्तर : सौधर्म इन्द्र की शक्ति जम्बूद्वीप को उठाकर फेंकने तक की रहती है।

प्रश्न : देवियों की उत्पत्ति कौन से स्वर्ग तक हो सकती है?

उत्तर : देवियों की उत्पत्ति भवनवासी से लेकर ईशान्य स्वर्ग तक हो सकती है।

प्रश्न : रामचन्द्र जी (बलदेव) का वैभव कितना था?

उत्तर : रामचन्द्रजी (बलदेव) के 8000 रानियां, 16 हजार देश, 16 हजार आधीन राजा, 9850 द्रोणमुख, 25 हजार पत्तन, 12 हजार कर्वट, 12 हजार मटंब, 8 हजार खेट, 48 करोड़ गांव, 28 द्वीप, 42 लाख हाथी, 42 लाख रथ, 9 करोड़ घोड़े, 42 करोड़ पदाति, 8000 गणबद्ध देव थे।

प्रश्न : रामचन्द्रजी के चार महारत्न कौन से थे?

उत्तर : रामचन्द्रजी के 'अपराजित' नाम का हलायुध, 'अमोघ' नाम के तीक्ष्ण बाण, 'कौमुदी' नाम की गदा और 'रत्नावतंसिका' नाम की माला ये चार महारत्न थे। इन सब रत्नों की एक एक हजार यक्ष देव रक्षा करते थे।

प्रश्न : बलदेवों सम्बन्धी और भी कुछ नियम हैं वे कौन से हैं?

उत्तर : सब बलदेव निदान से रहित होते हैं और सभी बलदेव ऊर्ध्वगामी अर्थात् स्वर्ग व मोक्ष जाने वाले होते हैं। बलदेवों का परस्पर मिलन नहीं होता तथा एक ही क्षेत्र में एक समय में एक ही बलदेव होता है।

प्रश्न : रामचन्द्र जी का जन्म कहां हुआ व माता-पिता का नाम क्या था?

उत्तर : रामचन्द्र जी का जन्म 'अयोध्या' में हुआ था, पिता का नाम 'दशरथ' व माता का नाम 'कौशल्या' था।

प्रश्न : रामचन्द्र जी की ऊंचाई कितनी थी?

उत्तर : रामचन्द्र जी की ऊंचाई 16 धनुष थी।

प्रश्न : रामचन्द्र जी की आयु कितनी थी?

उत्तर : सत्तरह हजार वर्ष की आयु थी।

प्रश्न : रामचन्द्र आयु छेद करके कहां गये?

उत्तर : रामचन्द्र आयु छेद करके मोक्ष को गये।

प्रश्न : लक्ष्मण का जन्म स्थान व माता-पिता का नाम क्या था?

उत्तर : लक्ष्मण का जन्म अयोध्या व माता का नाम सुलक्षणा, पिता का नाम दशरथ था।

प्रश्न : कृष्ण का जन्म स्थान व माता-पिता का नाम क्या था?

उत्तर : कृष्ण का जन्म मथुरा व माता का नाम देवकी, पिता का नाम वसुदेव था।

प्रश्न : लक्ष्मण की ऊंचाई व आयु कितनी थी?

उत्तर : लक्ष्मण की ऊंचाई 16 धनुष व आयु 12 हजार वर्ष थी।

प्रश्न : कृष्ण की ऊंचाई व आयु कितनी थी?

उत्तर : कृष्ण की ऊंचाई 10 धनुष व आयु 9 हजार वर्ष थी।

प्रश्न : नारायण का वैभव कितना था?

उत्तर : नारायण के (लक्ष्मण के) पृथिवी सुन्दरी को आदि लेकर लक्ष्मी के समान मनोहर सोलह हजार पतिव्रता रानियां थीं। इसी प्रकार सुदर्शन नाम का चक्र, कौमुदी नाम की गदा, सौनन्द नाम का खड्ग, अमोघमुखी शक्ति, शंर्ग नाम का धनुष, महाध्वनि करने वाला पांच मुख का पाञ्चजन्य नाम का शंख और अपनी कान्ति के भार से शोभायमान कौस्तुभ नाम का महामणि-ये सात रत्न अपरिमित कान्ति को धारण करने वाले नारायण (लक्ष्मण) के थे।

प्रश्न : कृष्ण का पार्थिव शरीर कहां दहन किया था?

उत्तर : तुंगीगिरी पर।

प्रश्न : लक्ष्मण ने कौन सी शिला उठायी थी?

उत्तर : लक्ष्मण ने लंका को जीतकर कोटिशिला उठायी थी।

प्रश्न : नारायण संबंधी नियम कौन से हैं?

उत्तर : सब नारायण (केशव) निदान से सहित होते हैं और अधोगामी अर्थात नरक में जाने वाले होते हैं। ये सभी नारायण बलभद्र के छोटे भाई होते हैं।

प्रश्न : नारायण कितनी पृथ्वी के स्वामी होते हैं?

उत्तर : नारायण तीन खंड के स्वामी होते हैं। उन्हें अर्धचक्रवर्ती कहते हैं।

प्रश्न : लक्ष्मण व कृष्ण मरकर कहां गये?

उत्तर : लक्ष्मण चतुर्थ नरक में व कृष्ण तृतीय नरक में गये।

प्रश्न : रावण की ऊंचाई और आयु कितनी थी?

उत्तर : रावण की ऊंचाई 16 धनुष व आयु 12000 वर्ष की थी।

प्रश्न : जरासंध की ऊंचाई और आयु कितनी थी?

उत्तर : जरासंध की ऊंचाई 10 धनुष व आयु 1000 वर्ष की थी।

प्रश्न : रावण व जरासंध मरकर कहां गये?

उत्तर : रावण चतुर्थ नरक में व जरासंध तृतीय नरक में गये।

प्रश्न : प्रति नारायणों संबंधी कौन से नियम हैं?

उत्तर : ये नौ प्रति नारायण अपने शत्रु नौ वासुदेवों (नारायण) के साथ युद्ध करते समय उनके हाथों से निज चक्रों के द्वारा मृत्यु को प्राप्त होकर नरक भूमि में जाते हैं।

प्रश्न : नव नारद के नाम कौन-कौन से हैं?

उत्तर : भीम, महाभीम, रुद्र, महारुद्र, काल, महाकाल, दुर्मुख, नरकमुख, अधोमुख।

प्रश्न : नारदों संबंधी नियम कौन से हैं?

उत्तर : से सब अतिरुद्र होते हुए दूसरों को रुलाया करते हैं और पाप के निधान होते हैं, सभी नारद कलह एवं महायुद्ध प्रिय होने से वासुदेव के समान अधोगति अर्थात नरक को प्राप्त होते हैं। ये नारद कलह प्रिय हैं, परन्तु कदाचित धर्म में भी रत होते हैं। वासुदेवों (नारायणों) के समय में ही होते हैं। यद्यपि भव्य होने के कारण परम्परा से मुक्ति को प्राप्त करते हैं परन्तु हिंसादोष के कारण नरकगति को जाते हैं।

प्रश्न : ग्यारह रुद्रों के नाम कौन-कौन से हैं?

उत्तर : भीमावली, जितशत्रु, रुद्र, वैश्वानर, सुप्रतिष्ठ, अचल, पुण्डरीक, अजितंधर, अजितनाभि, पीठ, सात्यकि पुत्र महादेव।

प्रश्न : प्रथम रुद्र (भीमावली) की ऊंचाई व आयु कितनी थी?

उत्तर : प्रथम रुद्र की ऊंचाई 500 धनुष व आयु 83 लाख पूर्व थी।

प्रश्न : अंतिम रुद्र (सात्यकी पुत्र महादेव) की ऊंचाई व आयु कितनी थी?

उत्तर : अंतिम रुद्र की ऊंचाई 7 हाथ और आयु 69 वर्ष थी।

प्रश्न : प्रथम रुद्र व अंतिम रुद्र मरकर कौन से नरक गये?

उत्तर : प्रथम रुद्र सप्तम नरक व अंतिम रुद्र मरकर तृतीय नरक में गये।

प्रश्न : रुद्रों सम्बन्धी नियम कौन-कौन से हैं?

उत्तर : ये ग्यारह रुद्र अंगधर होते हुए तीर्थकर्ताओं के समयों में हुए हैं। सब रुद्र दसवें पूर्व का अध्ययन करते समय विषयों के निमित्त से तप से भ्रष्ट होकर सम्यकृत्व रूपी रत्न से रहित होते हुए घोर नरक में डूब गए। इन रुद्रों के जीवन में असंयम का भार अधिक होता है। इसलिए नरकगामी होना पड़ता है।

प्रश्न : कामदेव कितने होते हैं?

उत्तर : चौबीस तीर्थंकरों के समयों में अनुपम आकृति के धारक वे बाहुबली प्रमुख 24 कामदेव होते हैं।

प्रश्न : चौदह कुलकरों के नाम कौन-कौन से थे?

उत्तर : प्रतिश्रुति, सन्मति, क्षेमंकर, क्षेमंधर, सीमंकर, सीमंधर, विमलवाहन, चक्षुष्मान्, यशस्वी, अभिचन्द्र, चन्द्राभ, मरुदेव, प्रसेनजित, नाभिराय।

प्रश्न : प्रथम कुलकर की ऊंचाई कितनी थी?

उत्तर : प्रथम कुलकर की ऊंचाई 18000 धनुष थी।

प्रश्न : अंतिम कुलकर की ऊंचाई कितनी थी?

उत्तर : अंतिम कुलकर की ऊंचाई 525 धनुष थी।

प्रश्न : प्रथम से लेकर चौदहवें कुलकर तक दण्ड का कौन सा विधान था?

उत्तर : प्रथम से लेकर पांचवें कुलकर तक "हा", छठवें से लेकर दसवें कुलकर तक "हा मा" और ग्यारवें से लेकर चौदहवें कुलकर तक "हा, मा, धिक्" इस प्रकार दण्ड का विधान था।

प्रश्न : कुलकर के अपर नाम व उनका सार्थक्यपना क्या है?

उत्तर : ये प्रजा के जीवन का उपाय जानने से 'मनु' कहे गये हैं। आर्य पुरुषों को कुल की भांति इकट्ठे रहने का उपदेश देने से कुलकर कहलाते थे। कुलों के अर्थात् वंशों के धारण करने से अर्थात् उनका स्थापन करने से उन्हें 'कुलधर' कहा गया है। युग के आरंभ में जन्म लेने से इन्हें युगादि पुरुष भी कहा है। इन कुलकरों को हरिवंश पुराण में महाप्रभाव सम्पन्न होने के साथ अपने जन्मांतर के स्मरण समन्वित कहा है।

प्रश्न : कुलकरों के पूर्वभव संबंधी नियम कौन से हैं?

उत्तर : प्रतिश्रुति को आदि लेकर नाभिराय पर्यंत ये चौदह मनु पूर्वभव में विदेह क्षेत्र के भीतर महाकुल में राजकुमार थे।

प्रश्न : शंबरदेव कौन था?

उत्तर : भगवान पार्श्वनाथ का पूर्व भव का भाई था। इसने भगवान पर घोर उपसर्ग किया। अंत में परम्परा का वैर छोड़कर भगवान की स्तुति की। यह कमठ का उत्तर का नवमां भव है।

प्रश्न : शंबूक कौन था?

उत्तर : रावण की बहन चन्द्रनखा का पुत्र था। सूर्यहास खड्ग को सिद्ध करने के लिए 12 वर्ष का योग वंशस्थल पर्वत पर धारण किया। वनवासी लक्ष्मण ने खड्ग की गन्ध से आश्चर्यान्वित हो, खड्ग की परख के अर्थ शंबूक सहित वंश के बीड़े को काट दिया। यह मरकर नरक में गया।

प्रश्न : सीता निर्दोष होते हुए भी उन पर अपवाद क्यों आया?

उत्तर : एक ग्राम में एक सुदर्शन नामक मुनि आये। वंदना कर जब सब लोग चले गये तब उनके पास एक सुदर्शन नाम की आर्यिका, जो कि मुनि की बहन थी, बैठी रही और मुनि उसे सद्वचन कहते रहे। अपने आपको सम्यग्दृष्टि बताने वाली वेदवती (सीता के पूर्वभव की पर्याय) ने गांव के लोगों से कहा कि मैंने उन साधुओं को एकांत में सुन्दर स्त्री के साथ बैठे देखा है।

प्रश्न : सप्त ऋषियों के नाम कौन-कौन से हैं?

उत्तर : सुरमन्यु, श्रीमन्यु, श्री निचय, सर्वसुन्दर, जयवान, विनयलालस और जयमित्र।

प्रश्न : सुकौशल कौन थे?

उत्तर : राजा कीर्तिधर का पुत्र था। मुनि (अपने पिता) की धर्मवाणी श्रवण कर दीक्षा ग्रहण कर ली। तपश्चरण करते हुए माता ने शेरनी बनकर खा लिया। जीवन के अंतिम क्षण में निर्वाण प्राप्त किया।

प्रश्न : अतं:कृत केवली किसे कहते हैं?

उत्तर : जिन्होंने संसार का अन्त कर दिया है उन्हें अन्तकृत केवली कहते हैं।

प्रश्न : भगवान महावीर के तीर्थ में कौन-कौन से दस अन्तकृत केवली हुए?

उत्तर : भगवान महावीर तीर्थंकर के तीर्थ में नमि, मातंग, सोमिल, रामपुत्र, सुदर्शन, यमलीक, वलीक, किष्किंविल, पालम्ब, अष्टपुत्र ये दश-दारुण उपसर्गों को जीतकर सम्पूर्ण कर्मों के क्षय से अन्तकृत केवली हुए।

प्रश्न : अनंतवीर्य कौन थे?

उत्तर : ऋषभनाथ भगवान के पुत्र तथा भरत के छोटे भाई थे। भरत ने उन्हें नमस्कार करने को कहा। स्वाभिमानी इन्होंने नमस्कार करने की बजाय भगवान के समीप दीक्षा धारण कर ली तथा सर्वप्रथम मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न : अर्हद्बलि आचार्य कौन थे?

उत्तर : पूर्वदेशस्थ पुण्ड्रवर्धन देश के निवासी आप बड़े भारी संघनायक थे। पंचवर्षीय युग प्रतिक्रमण के समय आपने दक्षिण देशस्थ महिमा नगर (जिला सातारा) में एक बड़ा भारी यति सम्मेलन किया था। यतियों में कुछ पक्षपात की गंध देखकर उसी समय आपने मूलसंघ को पृथक-2 अनेक संघों में विभक्त कर दिया था। आचार्य धरसेन का पात्र पाकर इस सम्मेलन में से ही आपने पुष्पदंत और भूतबली नामक दो नवदीक्षित साधुओं को उनकी सेवा में भेजा था। एक देशांगधारी होते हुए भी संघभेद निर्माता होने के कारण आपका नाम श्रुतधरों के परम्परा में नहीं रखा गया है।

प्रश्न : ऐरावत हाथी की क्या विशेषता है?

उत्तर : सौधर्म व ईशान्य इन्द्र के वाहन देव विक्रिया से एक लाख उत्सेध योजन प्रमाण दीर्घ ऐरावत नामक हाथी को निर्माण करते हैं। इनके दिव्य रत्न मालाओं से युक्त बत्तीस मुख होते हैं जो घण्टिकाओं के कोलाहल शब्द से शोभायमान होते हुए पृथक-पृथक शब्द करते हैं। चंचल एवं चन्द्र के समान उज्ज्वल चमरों से सुन्दर रूप वाले एक एक मुख में रत्नों के समूह से खचित धवल चार दांत होते हैं। हाथी के दांत पर निर्मल जल से युक्त एक-एक उत्तम सरोवर होता है। एक-एक सरोवर में एक-एक उत्तम कमल वनखण्ड होता है। एक-एक कमलखण्ड में विकसित 32 महापदम होते हैं और एक-एक महापदम एक-एक योजन प्रमाण होता है। देवों के विक्रिया बल से वे उत्तम कमल उत्तम सुवर्ण से शोभायमान होते हैं। एक-एक महापदम पर एक-एक नाट्यशाला होती है। उस एक-एक नाट्यशाला में उत्तम बत्तीस-बत्तीस अप्सराएं नृत्य करती हैं।

प्रश्न : भगवान का लक्षण क्या है?

उत्तर : ज्ञान-धर्म के माहात्म्यों का नाम भग है। वह जिनके है वे भगवान कहलाते हैं।

प्रश्न : ईश्वर का लक्षण क्या है?

उत्तर : इन्द्रादिक को जो असंभव ऐसे अन्तरंग और बहिरंग परम ऐश्वर्य के द्वारा जो सदैव सम्पन्न रहता है। उसे ईश्वर कहते हैं।

प्रश्न : शुद्धि का सामान्य लक्षण क्या है?

उत्तर : 'दोषे सन्ति प्रायश्चित्तं गृहीत्वा विशुद्धि कारणं शुद्धिः'। दोष होने पर प्रायश्चित लेकर विशुद्धि करना शुद्धि कहलाती है।

प्रश्न : संयम की शुद्धि के कितने भेद हैं?

उत्तर : संयम की शुद्धि के आठ भेद हैं। भाव शुद्धि, काय शुद्धि, विनय शुद्धि, ईर्यापथ शुद्धि, भिक्षा शुद्धि, प्रतिष्ठापन शुद्धि, शयनासन शुद्धि, वाक्य शुद्धि।

प्रश्न : स्वाध्याय की शुद्धि के कितने भेद हैं?

उत्तर : स्वाध्याय शुद्धि के चार भेद हैं-(1) द्रव्य शुद्धि (2) क्षेत्र शुद्धि (3) काल शुद्धि (4) भाव शुद्धि

प्रश्न : श्रावक किसे कहते हैं?

उत्तर : पंच परमेष्ठी का भक्त प्रधानता से दान और पूजन करने वाला भेदज्ञान रूपी अमृत को पीने का इच्छुक तथा मूलगुण और उत्तरगुणों को पालन करने वाला

व्यक्ति श्रावक कहलाता है। 'शृणोति गुर्वादिभ्यो धर्ममिति श्रावकः'। जो श्रद्धा पूर्वक गुरु आदि से धर्म श्रवण करता है, वह श्रावक है।

प्रश्न : श्रावक की षट् क्रिया कौन-कौन सी है?

उत्तर : देवपूजा गुरुपास्तिः स्वाध्यायः संयमस्तपः।
दानं चेति गृहस्थानां षट्कर्माणि दिने दिने॥
देवपूजा, गुरुपास्ति, स्वाध्याय, संयम, तप, दान।

प्रश्न : श्रावक की 53 क्रियायें कौन-कौन सी हैं?

उत्तर : 8 मूलगुण, 12 व्रत, 12 तप, 11 प्रतिमा, 3 रत्नत्रय, 4 दान, समताभाव, पानी छानकर पीना, रात्रि भोजन त्याग-ये 53 क्रियायें।

प्रश्न : समवशरण किसे कहते हैं?

उत्तर : अर्हंत भगवान के उपदेश देने की सभा का नाम समवशरण है। जहां बैठकर तिर्यंच, मनुष्य व देव-पुरुष व स्त्रियां सब उनकी अमृतवाणी से कर्ण तृप्त करते हैं। इसकी रचना विशेष प्रकार से देव लोग करते हैं। इसकी प्रथम सात भूमियों में बड़ी आकर्षक रचनाएं, नाट्यशालाएं, पुष्पवाटिकाएं, वापियां, चैत्यवृक्ष आदि होते हैं। मिथ्यादृष्टि अभव्यजन अधिकतर इसी को देखने में उलझ जाते हैं। अत्यन्त भावुक व श्रद्धालु व्यक्ति ही अष्टमभूमि में प्रवेश कर साक्षात् भगवान के दर्शनों से तथा उनकी अमृतवाणी से नेत्र, कान व जीवन सफल करते हैं।

प्रश्न : मिथ्यादृष्टि, अभव्य जीव श्री मण्डप के भीतर जा सकते हैं क्या?

उत्तर : नहीं, इन बारह कोटों में मिथ्यादृष्टि, अभव्य और असंज्ञी जीव कदापि नहीं आ सकते तथा अनध्यवसाय से युक्त, संदेह से संयुक्त और विविध प्रकार की विपरीतताओं से सहित जीव भी नहीं जाते हैं। सप्तभूमि में अनेक स्तूप हैं। उनमें सर्वार्थ सिद्धि नाम के अनेकों स्तूप हैं। उनके आगे देदीप्यमान शिखरों युक्त भव्यकूट नाम के स्तूप रहते हैं, जिन्हें अभव्य जीव नहीं देख पाते। क्योंकि उनके प्रभाव से उनके नेत्र अंधे हो जाते हैं।

प्रश्न : समवशरण का क्या माहात्म्य है?

उत्तर : एक एक समवशरण में पल्य के असंख्यातवें भाग प्रमाण विविध प्रकार के जीव जिनदेव की वंदना में प्रवृत्त होते हुए स्थित रहते हैं। कोठों के क्षेत्र से यद्यपि जीवों का क्षेत्रफल असंख्यात गुणा है तथापि वे सब जीव जिनदेव के माहात्म्य से एक दूसरे से अस्पष्ट रहते हैं। जिन भगवान के माहात्म्य से बालक प्रभृति जीव प्रवेश करने अथवा निकलने में अन्तर्मुहूर्त काल के भीतर संख्यात योजन चले जाते हैं। इसके अतिरिक्त वहां पर जिन भगवान के माहात्म्य से आतंक, रोग, मरण, उत्पत्ति, बैर, कामबाधा तथा तृष्णा (पिपासा) और क्षुधा की पीड़ाएं नहीं होती हैं।

प्रश्न : भगवान आदिनाथ के समवशरण का विस्तार कितना था?

उत्तर : भगवान आदिनाथ के समवशरण का विस्तार 12 योजन प्रमाण था।

प्रश्न : भगवान महावीर के समवशरण का विस्तार कितना था?

उत्तर : भगवान महावीर के समवशरण का विस्तार 1 योजन प्रमाण था। अर्थात् 8 मील का था।

प्रश्न : विदेह क्षेत्र में सभी तीर्थंकरों के समवशरण का कितना विस्तार है?

उत्तर : विदेह क्षेत्र के सम्पूर्ण तीर्थंकरों के समवशरण की भूमि बारह योजन प्रमाण ही रहती है।

प्रश्न : समवशरण की भूमि कैसी है?

उत्तर : समवशरण की भूमि गोल होती है।

प्रश्न : समवशरण की प्रत्येक दिशा में कितनी सीढ़ियां हैं?

उत्तर : समवशरण की प्रत्येक दिशा में आकाश में स्थित बीस-बीस हजार सोपान हैं।

प्रश्न : समवशरण की सात भूमियों के क्या नाम हैं?

उत्तर : (1) चैत्यप्रासाद (2) खातिका (3) लता (3) उपवन (5) ध्वज (6) कल्प (7) भवन ये समवशरण की सात भूमियां हैं।

प्रश्न : सम्यग्दर्शन के अपर नाम कौन-2 से हैं?

उत्तर : श्रद्धा, रुचि, स्पर्श और प्रत्यय या प्रतीति ये सम्यग्दर्शन के पर्याय हैं।

प्रश्न : मनुष्य, देव, नारकी व तिर्यंचों को सम्यक्त्व कब होता है?

उत्तर : मनुष्यों में जन्म लेने के आठ वर्ष पश्चात्, देव-नारकियों में अन्तर्मुहूर्त पश्चात् और तिर्यंचों को दिवस पृथकत्व के पश्चात् प्रथम सम्यक्त्व होता है।

प्रश्न : क्षायिक सम्यक्त्व की क्या विशेषता है?

उत्तर : क्षायिक सम्यग्दर्शन अप्रतिपाती है। क्षायिक सम्यग्दृष्टि जघन्य से 3 भव और उत्कृष्ट से 7-8 भवों में अवश्य मुक्ति प्राप्त करता है।

प्रश्न : सम्यक्त्व से युक्त जीव के कितने गुण होते हैं?

उत्तर : संवेग, निर्वेद, निन्दा, गर्हा, उपशम, भक्ति, अनुकंपा, वात्सल्य ये आठ गुण सम्यक्त्वयुक्त जीव के होते हैं।

प्रश्न : उत्कृष्ट सम्यग्दृष्टि किसे कहते हैं?

उत्तर : जो उत्तम गुणों को ग्रहण करने में तत्पर रहता है। उत्तम साधुओं की विनय करता है तथा साधर्मी जनों से अनुराग करता है। वह उत्कृष्ट सम्यग्दृष्टि है।

प्रश्न : सम्यग्दर्शन पूज्य क्यों है?

उत्तर : क्योंकि सम्यग्दर्शन से ज्ञान में समीचीनता आती है।

प्रश्न : सम्यग्दर्शन की महिमा क्या है?

उत्तर : सम्यग्दर्शन ही सुखनिधान व मोक्ष की प्रथम सीढ़ी है। समस्त कल्याणों का बीज है। संसार सागर से तरने को जहाज है। भव्य जीव ही इसका पात्र है। पापवृक्ष काटने के लिए कुठार है। पुण्य तीर्थों में प्रधान है तथा विपक्षी जो मिथ्यादर्शन उसको जीतने वाला है। यह सम्यग्दर्शन महारत्न समस्त लोक का आभूषण है और मोक्ष होने पर्यंत आत्मा को कल्याण देने में चतुर है।

प्रश्न : अतिथि किसे कहते हैं?

उत्तर : जिसको प्रतिपदा आदिक तिथि न हो वह अतिथि है अथवा संयम पालनार्थ जो विहार करता है, जाता है, उद्दण्डचर्या करता है ऐसा यति अतिथि है।

प्रश्न : अल्पायु के बंध योग्य परिणाम कैसे होते हैं?

उत्तर : जो प्राणी हमेशा पर जीवों का घात करके उनके प्रिय जीवित का नाश करता है। वह अल्पायुषी ही होता है।

प्रश्न : कौन-कौन से जीवों की अल्पमृत्यु नहीं होती?

उत्तर : औपपादिक देह वाले देव व नारकी चरमोत्तम देह वाले अर्थात् वर्तमान भव से मोक्ष जाने वाले भोगभूमियां तिर्यंच व मनुष्य अनपवर्ती आयु वाले होते हैं अर्थात उनको अपमृत्यु नहीं होती।

प्रश्न : भरत क्षेत्र का विस्तार कितना है?

उत्तर : भरत क्षेत्र का विस्तार $516^{6}/_{19}$ योजन अर्थात् $210563^{3}/_{19}$ मील है।

प्रश्न : हिमवान पर्वत का विस्तार कितना है?

उत्तर : हिमवान पर्वत का विस्तार $1052^{12}/_{19}$ योजन अर्थात $4210516^{4}/_{19}$ मील है।

प्रश्न : हिमवान पर्वत की ऊंचाई कितनी है?

उत्तर : हिमवान पर्वत की ऊंचाई 100 योजन अर्थात् 400000 मील है।

प्रश्न : हिमवान पर्वत का वर्ण कौन सा है?

उत्तर : हिमवान पर्वत का स्वर्ण वर्ण है।

प्रश्न : हैमवत क्षेत्र का विस्तार कितना है?

उत्तर : हैमवत क्षेत्र का विस्तार $2105\frac{5}{19}$ योजन अर्थात् $8421052\frac{12}{19}$ मील है।

प्रश्न : महाहिमवान पर्वत का विस्तार कितना है?

उत्तर : महाहिमवान पर्वत का विसतर $4210\frac{10}{19}$ योजन अर्थात् $16842105\frac{5}{19}$ मील है।

प्रश्न : महाहिमवान पर्वत की ऊंचाई कितनी है?

उत्तर : महाहिमवान पर्वत की ऊंचाई 200 योजन अर्थात् 800000 मील है।

प्रश्न : महाहिमवान पर्वत का वर्ण कौन सा है?

उत्तर : महाहिमवान पर्वत का रजत वर्ण है।

प्रश्न : हरिक्षेत्र का विस्तार कितना है?

उत्तर : हरिक्षेत्र का विस्तार $8421\frac{1}{19}$ योजन अर्थात् $33684210\frac{10}{19}$ मील है।

प्रश्न : निषध पर्वत का विस्तार कितना है?

उत्तर : निषध पर्वत का विस्तार $16842\frac{2}{19}$ योजन अर्थात् $67368421\frac{1}{19}$ मील है।

प्रश्न : निषध पर्वत की ऊंचाई कितनी है?

उत्तर : निषध पर्वत की ऊंचाई 400 योजन अर्थात् 1600000 मील है।

प्रश्न : निषध पर्वत का वर्ण कौन सा है?

उत्तर : निषध पर्वत का वर्ण तपाये हुए सोने के समान है।

प्रश्न : विदेह क्षेत्र का विस्तार कितना है?

उत्तर : विदेह क्षेत्र का विस्तार $33684\frac{4}{19}$ योजन अर्थात् $134736842\frac{2}{19}$ मील है।

प्रश्न : नील पर्वत का विस्तार कितना है?

उत्तर : नील पर्वत का विस्तार $16842\frac{21}{19}$ योजन अर्थात $67368421\frac{1}{19}$ मील है।

प्रश्न : नील पर्वत की ऊंचाई कितनी है?

उत्तर : नील पर्वत की ऊंचाई 400 योजन अर्थात 160000 मील है।

प्रश्न : नील पर्वत का वर्ण कौन सा है?

उत्तर : नील पर्वत का वर्ण वैडूर्य मणि सा है।

प्रश्न : रम्यक् क्षेत्र का विस्तार कितना है?

उत्तर : रम्यक् क्षेत्र का विस्तार $8421\frac{1}{19}$ योजन अर्थात $33684210\frac{10}{19}$ मील है।

प्रश्न : रुक्मि पर्वत का विस्तार कितना है?

उत्तर : रुक्मि पर्वत का विस्तार $4210\frac{10}{19}$ योजन अर्थात $1684105\frac{5}{19}$ मील है।

प्रश्न : रुक्मि पर्वत की ऊंचाई कितनी है?

उत्तर : रुक्मि पर्वत की ऊंचाई 200 योजन अर्थात् 800000 मील है।

प्रश्न : रुक्मि पर्वत का वर्ण कौन सा है?

उत्तर : रुक्मि पर्वत का रजत वर्ण है।

प्रश्न : हैरण्यवत क्षेत्र का विस्तार कितना है?

उत्तर : हैरण्यवत क्षेत्र का विस्तार $2105\frac{5}{19}$ योजन अर्थात् $8421052\frac{12}{19}$ मील है।

प्रश्न : शिखरी पर्वत का विस्तार कितना है?

उत्तर : शिखरी पर्वत का विस्तार $1052\frac{12}{19}$ योजन अर्थात $4210526\frac{6}{19}$ मील है।

प्रश्न : शिखरी पर्वत की ऊंचाई कितनी है?

उत्तर : शिखरी पर्वत की ऊंचाई 100 योजन अर्थात 400000 मील है।

प्रश्न : शिखरी पर्वत का वर्ण कौन सा है?

उत्तर : शिखरी पर्वत का स्वर्ण वर्ण है।

प्रश्न : ऐरावत क्षेत्र का विस्तार कितना है?

उत्तर : ऐरावत क्षेत्र का विस्तार $526^6/_{19}$ योजन अर्थात $2105263^3/_{19}$ मील है।

प्रश्न : हिमवान पर्वत पर कौन सा सरोवर है?

उत्तर : हिमवान पर्वत पर पदम नामक सरोवर है।

प्रश्न : पदम सरोवर कितना लम्बा, कितना चौड़ा व कितना गहरा है?

उत्तर : पदम सरोवर 1000 योजन अर्थात 4000000 मील लम्बा, 500 योजन अर्थात 2000000 मील चौड़ा और 10 योजन अर्थात 40000 मील गहरा है।

प्रश्न : महाहिमवान पर्वत पर कौन सा सरोवर है?

उत्तर : महाहिमवान पर्वत पर 'महापद्म' सरोवर है।

प्रश्न : महापद्म सरोवर कितना लम्बा, चौड़ा और गहरा है?

उत्तर : महापद्म सरोवर 2000 योजन अर्थात 8000000 मील लम्बा, 1000 योजन अर्थात 4000000 मील चौड़ा और 20 योजन अर्थात 80000 मील गहरा है।

प्रश्न : निषध पर्वत पर कौन सा सरोवर है?

उत्तर : निषध पर्वत पर 'तिगिंच्छ' नामक सरोवर है।

प्रश्न : तिगिंच्छ सरोवर कितना लम्बा, चौड़ा और गहरा है?

उत्तर : तिगिंच्छ सरोवर 4000 योजन अर्थात 16000000 मील लम्बा, 2000 योजन अर्थात 8000000 मील चौड़ा और 40 योजन अर्थात 160000 मील गहरा है।

प्रश्न : नील पर्वत पर कौन सा सरोवर है?

उत्तर : नील पर्वत पर 'केसरी' नामक सरोवर है।

प्रश्न : केसरी सरोवर कितना लम्बा, चौड़ा और गहरा है?

उत्तर : केसरी सरोवर 4000 योजन अर्थात 16000000 मील लम्बा 2000 योजन अर्थात 8000000 मील चौड़ा और 40 योजन अर्थात 160000 मील गहरा है।

प्रश्न : रुक्मि पर्वत पर कौन सा सरोवर है?

उत्तर : रुक्मि पर्वत पर 'पुंडरीक' नाम सरोवर है।

प्रश्न : पुंडरीक सरोवर कितना लम्बा, चौड़ा व गहरा है?

उत्तर : पुंडरीक सरोवर 2000 योजन अर्थात 8000000 मील लम्बा, 1000 योजन अर्थात 4000000 मील चौड़ा एवं 20 योजन अर्थात 80000 मील गहरा है।

प्रश्न : शिखरी पर्वत पर कौन सा सरोवर है?

उत्तर : शिखरी पर्वत पर 'महापुंडरीक' नामक सरोवर है।

प्रश्न : महापुंडरीक सरोवर कितना लम्बा, चौड़ा व गहरा है?

उत्तर : महापुंडरीक सरोवर 1000 योजन अर्थात 4000000 मील लम्बा, 500 योजन अर्थात 2000000 मील चौड़ा एवं 10 योजन अर्थात 40000 मील गहरा है।

प्रश्न : इन छह सरोवरों में कितने योजन के कमल हैं?

उत्तर : इन सरोवरों में 1, 2 एवं 4 योजन के कमल हैं। वे पृथ्वी कायिक हैं।

प्रश्न : पद्म आदि सरोवरों में कौन-कौन सी देवी निवास करती हैं?

उत्तर : पद्म आदि सरोवरों में श्री, ही, धृति, कीर्ति, बुद्धि एवं लक्ष्मी ये 6 देवियां अपने परिवार सहित निवास करती हैं।

प्रश्न : पद्म सरोवर से कौन-कौन सी नदी निकली हैं और वे बहकर कहां जाती हैं?

उत्तर : पद्म सरोवर के पूर्व तट से गंगा नदी एवं पश्चिम तट से सिंधु नदी निकली है। गंगा नदी पूर्व समुद्र में एवं सिंधु नदी पश्चिम समुद्र में प्रवेश करती है। ये दोनों नदियां भरत क्षेत्र में बहती हैं तथा इसी पद्म सरोवर के उत्तर तट से रोहितास्या नदी निकलकर हैमवत क्षेत्र में चली जाती है। इस सरोवर से तीन नदियां निकली हैं।

प्रश्न : महापद्म सरोवर से कौन-कौन सी नदी निकली हैं?

उत्तर : महापद्म सरोवर से रोहित एवं हरिकांता ये दो नदियां निकली हैं।

प्रश्न : तिगिंछ सरोवर से कौन-कौन सी नदी निकली हैं?

उत्तर : तिगिंछ सरोवर से हरित एवं सीतोदा नदी निकली हैं।

प्रश्न : केसरी सरोवर से कौन-कौन सी नदी निकली हैं?

उत्तर : केसरी सरोवर से सीता और नरकांता नदी निकली हैं।

प्रश्न : महापुंडरीक सरोवर से कौन-कौन सी नदी निकली हैं?

उत्तर : महापुंडरीक सरोवर से नारी व रूप्यकूला नदी निकली हैं।

प्रश्न : पुंडरीक सरोवर से कौन-कौन सी नदी निकली हैं?

उत्तर : पुंडरीक सरोवर से रक्ता, रक्तोदा एवं स्वर्णकूला ये तीन नदियां निकली हैं।

प्रश्न : भरत क्षेत्र के छह खण्ड कैसे हुए?

उत्तर : गंगा और सिंधु नदी विजयार्ध पर्वत को भेदती हुई जाती है। अतः भरत क्षेत्र को छह खण्डों में बांट देती है। विजयार्ध पर्वत के उस तरफ (उत्तर में) अर्थात हिमवान और विजयार्ध के बीच 3 खण्ड हुए हैं वे तीनों म्लेच्छ खंड कहलाते हैं तथा विजयार्ध के इस तरफ (दक्षिण में) 3 खण्ड हैं। उनमें आजू-बाजू के दो म्लेच्छ खंड और बीच का आर्यखण्ड है। इन पांचों म्लेच्छ खण्डों के निवासी जाति खान-पान अथवा आचरण से म्लेच्छ नहीं हैं। किन्तु मात्र ये क्षेत्रज म्लेच्छ हैं।

प्रश्न : गंगा नदी की क्या विशेषता है?

उत्तर : पद्म सरोवर से गंगा नदी निकलकर पांच सौ योजन पूर्व की ओर जाती हुई गंगाकूट के 2 कोश इधर से दक्षिण की ओर मुड़कर भरत क्षेत्र में 25 योजन पर्वत से (उसे छोड़कर) यहां पर सवा छः योजन विस्तीर्ण, आधा योजन मोटी और आधा योजन ही आयत वृषभाकार जिव्हिका (नाली) है। इस नाली में प्रविष्ट होकर वह गंगा नदी उत्तम श्री गृह के ऊपर गिरती हुई गोसिंग के आकार होकर 10 योजन विस्तार के साथ नीचे गिरती है।

प्रश्न : गंगा देवी के श्रीगृह का क्या स्वरूप है?

उत्तर : जहां गंगा नदी गिरती है वहां पर 60 योजन विस्तृत एवं 10 योजन गहरा एक कुंड है। उसमें 10 योजन ऊंचा वज्रमय एक पर्वत है। उस पर गंगा देवी का प्रासाद बना हुआ है। उस प्रासाद की छत पर एक अकृत्रिम जिन प्रतिमा केशों के जटाजूट युक्त शोभायमान है। गंगा नदी अपनी चंचल एवं उन्नत तरंगों से संयुक्त होती हुई जलधारा से जिनेन्द्र देव का अभिषेक करते हुए के समान ही गिरती है। पुनः इस कुण्ड से दक्षिण की ओर जाकर आगे भूमि पर कुटिलता को प्राप्त होती हुई विजयार्ध की गुफा में 8 योजन विस्तृत होती हुई प्रवेश करती है। अंत में 14 हजार नदियों से संयुक्त होकर पूर्व की ओर जाती हुई लवण समुद्र में प्रविष्ट हुई है। ये 14 हजार परिवार नदियां आर्यखण्ड में न बहकर म्लेच्छ खंडों में ही बहती हैं। इस गंगा नदी के समान ही अन्य 13 नदियों का वर्णन समझना चाहिए। अंतर केवल इतना ही है कि भरत और ऐरावत में ही विजयार्ध पर्वत के निमित्त से क्षेत्र के 6 खंड होते हैं अन्यत्र नहीं होते हैं।

प्रश्न : ज्योतिष्क देवों के कितने भेद हैं?

उत्तर : ज्योतिष्क देवों के 5 भेद हैं-(1) सूर्य (2) चन्द्र (3) ग्रह (4) नक्षत्र (5) तारा।

प्रश्न : इन्हें ज्योतिष्क देव क्यों कहते हैं?

उत्तर : इनके विमान चमकीले होने से इन्हें ज्योतिष्क देव कहते हैं।

प्रश्न : इन सभी विमानों का आकार कैसा है?

उत्तर : ये सभी विमान अर्धगोलक के सदृश है।

प्रश्न : ये विमान कैसे हैं?

उत्तर : ये विमान मणिमय तोरणों से अलंकृत होते हुए निरन्तर देव-देवियों से एवं जिन मंदिरों से सुशोभित रहते हैं। अपने को जो सूर्य, चन्द्र, तारे आदि दिखाई देते हैं यह उनके विमानों का नीचे वाला गोलाकार भाग है।

प्रश्न : ये सभी विमान मेरु पर्वत को छोड़कर कितनी दूरी पर रहकर विहार करते हैं?

उत्तर : ये सभी ज्योतिर्वासी देव मेरु पर्वत को 1121 योजन अर्थात 4484000 मील छोड़कर नित्य ही प्रदक्षिणा के क्रम से भ्रमण करते हैं। इनमें चन्द्रमा एवं सूर्यग्रह $510^{48}/_{61}$ योजन प्रमाण गमन क्षेत्र में स्थित परिधियों के क्रम से पृथक-पृथक गमन करते हैं। परन्तु नक्षत्र और तारे अपनी अपनी एक परिधि रूप मार्ग में ही गमन करते हैं।

प्रश्न : सभी ज्योतिष्क देवों के विमान पृथ्वी तल से कितनी ऊंचाई पर हैं?

उत्तर : सभी ज्योतिष्क देवों के विमान इस चित्रा पृथ्वी से 790 योजन से प्रारम्भ होकर 900 योजन की ऊंचाई तक अर्थात 110 योजन में स्थित हैं।

प्रश्न : इस पृथ्वी के तारे कितनी ऊंचाई पर हैं?

उत्तर : इस चित्रा पृथ्वी से 790 योजन (3160000 मील) के ऊपर प्रथम ही ताराओं के विमान हैं।

प्रश्न : सूर्य की ऊंचाई कितनी है?

उत्तर : इस पृथ्वी से सूर्य की ऊंचाई 800 योजन (3200000 मील) है।

प्रश्न : चन्द्र की ऊंचाई कितनी है?

उत्तर : इस पृथ्वी से चन्द्र की ऊंचाई 880 योजन (3520000 मील) है।

प्रश्न : नक्षत्र की ऊंचाई कितनी है?

उत्तर : इस पृथ्वी से नक्षत्र की ऊंचाई 884 योजन (3536000 मील) है।

प्रश्न : बुध कितनी ऊंचाई पर है?

उत्तर : इस पृथ्वी से बुध की ऊंचाई 888 योजन (3552000 मील) है।

प्रश्न : शुक्र की ऊंचाई कितनी है?

उत्तर : शुक्र की ऊंचाई 891 योजन (3564000 मील) है।

प्रश्न : गुरु की ऊंचाई कितनी है?

उत्तर : गुरु की ऊंचाई 894 योजन (3576000 मील) है।

प्रश्न : मंगल की ऊंचाई कितनी है?

उत्तर : मंगल की ऊंचाई 897 योजन (3588000 मील) है।

प्रश्न : इस पृथ्वी से शनि कितनी ऊंचाई पर है।

उत्तर : इस पृथ्वी से शनि 900 योजन (3600000 मील) पर है।

प्रश्न : सूर्य विमान कितने योजन प्रमाण होता है?

उत्तर : सूर्य का विमान $^{48}/_{61}$ योजन अर्थात $3147^{33}/_{61}$ मील का है।

प्रश्न : चन्द्र विमान कितने योजन प्रमाण है?

उत्तर : चन्द्र का विमान $^{56}/_{61}$ योजन अर्थात $3672^{8}/_{61}$ मील का है।

प्रश्न : शुक्र विमान कितने योजन प्रमाण है?

उत्तर : शुक्र विमान 1 कोश अर्थात् 1000 मील है।

प्रश्न : जैनागम में योजन के कितने भेद हैं?

उत्तर : जैनागम में योजन के दो भेद हैं-(1) लघु योजन (2) महायोजन

प्रश्न : लघु योजन कितने कोश का व महायोजन कितने कोश का होता है?

उत्तर : लघु योजन 4 कोश का एवं महायोजन 2000 कोश का होता है।

प्रश्न : एक कोश में कितने मील माने है?

उत्तर : एक कोश में 2 मील माने हैं।

प्रश्न : आकाश के कितने भेद हैं?

उत्तर : आकाश के दो भेद हैं-(1) लोकाकाश (2) अलोकाकाश

प्रश्न : लोकाकाश के कितने भेद हैं?

उत्तर : लोकाकाश के तीन भेद हैं-(1) उर्ध्वलोक (2) मध्यलोक (3) अधोलोक

अनंत अलोकाकाश के बीचोबीच में यह पुरुषाकार तीन लोक हैं।

प्रश्न : तीन लोक की ऊंचाई का प्रमाण कितना है?

उत्तर : तीन लोक की ऊंचाई 14 राजू प्रमाण है एवं मोटाई सर्वत्र 78 राजू है।

तीन लोक के जड़भाग से लोक की ऊंचाई का प्रमाण **अधोलोक की ऊंचाई** 7 राजू है। अर्थात 7 राजू ऊंचाई सप्तम नरक से लेकर प्रथम नरक पर्यंत है। **नरक के तलभाग में लोक की चौड़ाई** 7 राजू है। यह चौड़ाई घटते-घटते मध्यलोक में 1 राजू रह गई। मध्यलोक से ऊपर बढ़ते-बढ़ते ब्रह्मलोक (5वें स्वर्ग) तक 5 राजू हो गई।

5वें ब्रह्मलोक नामक स्वर्ग से ऊपर घटते घटते सिद्ध-शीला तक चौड़ाई 1 राजू रह गई।

तीनों लोकों के बीचोबीच में 1 राजू चौड़ी तथा 14 राजू लम्बी त्रसनाली है। इस त्रसनाली में ही त्रसजीव पाये जाते हैं।

प्रश्न : प्रभु के चिन्ह क्यों होते हैं?

उत्तर : जम्मेण काले जस्स दु दाहिण, पायम्मि होई जो चिण्णा।
तं लक्खण पाउत्तं आगम, सुतेसु जिण देहं॥

जब तीर्थंकरों का जन्म होता है तब सुमेरु पर्वत पर जन्माभिषेक होता है, अभिषेक के बाद शरीर को वस्त्र से पोछने के वक्त शरीर में विद्यमान 1008 चिन्ह में से जो दाहिने पैर के अंगूठे में चिन्ह पाया जाता है, उसको तीर्थंकर का चिन्ह घोषित किया जाता है। चिन्ह रखने का हेतु है कि तीर्थंकरों एवं मूर्तियों को पहचाना जा सके।

प्रश्न : जैन धर्म में भगवन्तों की मूर्ति किस आसन में पाई जाती है?

उत्तर : जैन धर्म में भगवन्तों की मूर्ति दो आसन में पाई जाती है। (1) खड्गासन (2) पद्मासन

खड्गासन से यह बोध मिलता है-भगवान ने अनंतों भवों तक संसार परिभ्रमण किया, कहीं भी किंचित मात्रा में भी सुख नहीं है। अतः संसार भ्रमण का त्याग करके सदा के लिए खड़े हो गये।

पद्मासन मूर्ति से यह बोध होता-भगवान ने सारे संसार कार्य करके कृतकृत्य हो गये हैं, इसलिए पैर पर पैर, हाथ पर हाथ रखकर सदा के लिए योग में लीन हो गए।

प्रश्न : अरिहन्त भगवान के खाली हाथ क्यों?

उत्तर : अस्त्र-शस्त्र विद्वेषता के सूचक है। परन्तु अरिहन्त भगवान के राग-द्वेषादि 18 दोष नाश हो चुके हैं, अतः सम्पूर्ण जीवों से मैत्री भाव होने से अस्त्र-शस्त्र की आवश्यकता ही नहीं है। अतः अरिहंत भगवान के खाली हाथ हैं।

प्रश्न : प्रभु को भी 'श्री वत्स' चिन्ह क्यों होता है?

उत्तर : जिन प्रतिमा के छाती पर चार पांखुडी का एक पुष्प बना रहता है उसे 'श्री वत्स' चिन्ह कहते हैं। यह चिन्ह प्रभु के एक हजार आठ शुभ चिन्हों में से एक चिन्ह है। 'श्री वत्स' का अर्थ लक्ष्मी एवं पुत्र अर्थात जिनको अनंत दर्शन, अनंत ज्ञान, अनंत सुख एवं अनंत वीर्यरूप अंतरंग चतुष्टय लक्ष्मी प्राप्त हुई है एवं बहिरंग में भी समवशरणादि लक्ष्मी से शोभायमान है और यह नियम से तीर्थंकरों के होता है। अरिहंतों के होने का नियम नहीं है। जैसे भरत, बाहुबली की मूर्तियों पर 'श्री वत्स' चिन्ह नहीं होता। अतः इससे सिद्ध होता है कि 'श्री वत्स' चिन्ह तीर्थंकरों को नियम से होता है।

प्रश्न : प्रभु की नासाग्रदृष्टि क्यों रहती है?

उत्तर : प्रभु के काम-क्रोध-मद-लोभ रूप विकार नष्ट हो गये हैं, इसलिए बाहर देखना ही छोड़ दिया है। पर दृष्टि त्याग एवं स्वदर्शन से पाप का परिमार्जन एवं आत्मदर्शन होता है। इसलिए नासाग्र दृष्टि प्रभु ने सदैव आत्मदर्शन हेतु कर लिया है।

प. पू. आचार्यरत्न श्री 108 बाहुबली मुनि महाराज जी की जय हो

प परमेष्ठी के अंश तुम्हीं हो।
र रत्नत्रयी हाथोडीसे संसार संतति का छेदक तुम्ही हो।
म मनरूपी मदोन्मद हाथी के लिए ज्ञानरूपी अंकुश तुम्ही हो।

पु पुरूषार्थ कर स्वानुभव को पाये हो।
नी नीर-क्षीरवत् भेदज्ञानी हंस तुम्ही हो।
त तपाचार में विराजमान तुम्ही हो।

आ आचार्य श्रेष्ठीवर स्याद्वाद के अधिनेता।
चा चारित्र शिरोमणि गुरू विजेता।
र्य यतिराज बाहुबलीजी समता धारी।
र रत्नत्रय पालक जय हो तुम्हारी।
त् तलवार व्रत धारपर चलने वाले।
न नर से नारायण बनने वाले।

श्री श्री-अंतरंग-बहिरंग लक्ष्मी को पाने वाले।
ए एकत्व भावना भाने वाले।
क कर्म कलंक को हटाने वाले।
सौ सौभाग्य पुंज आप कुपंथ को मिटाने वाले।
आ आर्ष परम्परा दिखाने वाले।
ठ ठग रूपी पंचेन्द्रिय को दमन करने वाले।

बा बाईस परिषह पर विजय पाने वाले।
हु झुलस रहे प्राणी को बचाने वाले।
ब बद्ध कर्म छुड़ाने वाले।
ली लीला संसार हटाने वाले।

मु मुक्त दशा अपनाने वाले।
नि निश दिन ज्ञान ज्योति जलाने वाले।

म ममत्व को छोड समता को अपनाने वाले।
हा हास्य-रति तजने वाले।
रा राग-द्वेष को हराने वाले।
ज जन्म-मृत्यु को तजने वाले।

जी जीवन सफल बनाने वाले।

की काल चक्र को परिमित करने वाले।

ज जड़ - चेतन के भेदज्ञान को पाने वाले।
य यतियों में श्रेष्ठ कहलाने वाले।

हो होवे तुम्हारा सदैव जय जयकार।
नमन तुम्हें शत् शत् बारम्बार।

ब्र. समीक्षा (संघस्थ)

गाए गाथा बाहुबली महाराज की

तर्ज : ये कहानी है दिये की और तूफान की

आओ गाए गाथा बाहुबली महाराज की।
राह जिसने दिखाई निर्वाण की॥ध्रुव॥

(1) आक्का मां बलिहारी, जै जै बोली प्रजा सारी
चहुं ओर था चर्चा चल रहा,
अंधियारे को मिटाने, जग में ज्योति जगाने
बलवन्त जी के घर दिया जल रहा
सब हो-होकर मगन, झूम उठे मन ही मन
दुन्दुभि बाजे गुरु गुणगान की
राह जिसने ....

(2) नाम था संभवकुमार, क्योंकि थे वो गुणवान
सागर वैरागता का रगों में उमड़ रहा
वह नन्हा सा कुमार, गले मुतियन हार
धीरे-धीरे शशि सम था बढ़ रहा
अष्ट वर्ष का भया, मूलगुणों को लिया
अब सुनो गाथा त्याग और ध्यान की
राह जिसने ....

(3) आई यौवन प्रभात, तब बोले पितु-मात
शादी धूमधाम से रचायेंगे
जग में हो रही हा-हाकार, चहुंओर है मारामार
बोले संभव क्या हम खुशियां मनाएंगे
सबने लाख मनाया, उसने मन में था ठाना
ज्योति जगानी है जग में कल्याण की
राह जिसने ....

(4) दिया छोड़ घरबार SS नहीं मानी एक बात
पाठ अहिंसा सिखाने वह चल दिया
26 फरवरी की प्रभात देशभूषण गुरु से आज
तारंगा में दीक्षा लेकर मुनि बन गया
किया लाखों का उद्धार, करके धर्म प्रचार
आई शुभ घड़ी गुरु गुणगान की
गुणगान की S, गुणगान की SS,
गुणगान की SSS
आ SSSS आई शुभ घड़ी गुरु गुणगान की।
जय बोलो बाहुबली महाराज की॥

रचयिता-श्रीमती सुषमा जैन
धर्मपुरा, दिल्ली

गुरु बाहुबली अष्टक

दोहा

बाहुबली की मूरती देती हमको ज्ञान।
छोड़ व्यर्थ संसार को, कर अपना कल्याण॥1॥

थारी शरण में हे गुरु, करता हूं फरियाद।
तुम जैसा मैं बन सकूं, चाहूं आशीर्वाद॥2॥

अथ अष्टकम्

धन्य हुई है धरा यहां की धरा गुरु ने पांव है।
कर्म तपन अब दूर हुई है, मिली गुरु की छांव है॥
आओ सब मिल दर्शन कर लो यह क्षण बड़ा विलक्षण है।
परम पूज्य गुरु बाहुबली को बार-बार मम वंदन है॥1॥

माता पिता को छोड़ा जिसने छोड़ा भाई बहिना है।
इनसे रुचि संसार का कारण ऐसा गुरु का कहना है॥
मनुष्य जन्म को सफल बना लो, ये ही आतम चिंतन हो।
परम पूज्य गुरु बाहुबली को बार-बार मम वंदन हो॥2॥

सरल रूप है श्री गुरुवर का, मन को हरने वाला है।
दर्शन मात्र ही करने से, ये शांति देने वाला है॥
अंधकार को हटा गुरुवर, उज्ज्वल करते तन मन है।
परम पूज्य गुरु बाहुबली को बार-बार मम वंदन है॥3॥

बाहुबली में शिक्षा पाकर बाहुबली में दीक्षा ली।
बाहुबली बन कर्म काटने अन्तर इच्छा आगृत की॥
बाहुबली ही दर्शन जिनका, बाहुबली ही अर्चन है।
परम पूज्य गुरु बाहुबली का बार-बार मम वंदन है॥4॥

जाने क्या ये बात गुरु में, क्या जाने हो जाता है।
जो भी आकर दर्शन करता, उनका ही हो जाता है॥
उनसा नहीं जगत में दूजा, न उनसा कोई दर्शन है।
परम पूज्य गुरु बाहुबली को बार-बार मम वंदन है॥5॥

आभा मुख मंडल की ऐसी, रवि फीका पड़ जाता है।
शीतलता ऐसी है गुरु में, देख शशि शर्माता है॥
सुंदर छवि है ऐसी जिनकी, जैसा मानो दर्पण है।
परम पूज्य गुरु बाहुबली को बार-बार मम वंदन है॥6॥

देशभूषण आचार्य श्री से, निज कल्याण की शिक्षा ली।
उन चरणों में बैठ उन्हीं से, जिन बनने की दीक्षा ली॥
ऐसा शिष्य न देखा हमने, ऐसा न देखा समर्पण है।
परम पूज्य गुरु बाहुबली को बार-बार मम वंदन है॥7॥

आश लिए 'सुनील' आया गुरुवर, चाहे सब कुछ ले लो तुम।
बाहुबली पर बना दो मुझको, ऐसी शिक्षा दे दो तुम॥
छोड़ कहीं ना जाऊंगा मैं, अब चरणों में समर्पण है।
परम पूज्य गुरु बाहुबली को बार-बार मम वंदन है॥8॥

सुनील कुमार जैन (बाझल)
मध्य प्रदेश

मुक्तक

आज हिंसा ने फिर शोर मचाया है।
प्राणी ने प्राणी को फिर सताया है॥
जीओ और जीने दो का संदेश देकर।
महावीर ने बाहुबली सागर को पहुंचाया है॥

●

हर युग में जिनधर्म की बागडोर सम्हालने एक युग पुरुष आता है।
संसार के भटके हुए प्राणियों को वही राह बताता है॥
हे गुरु बाहुबली सागर हमारी उलझी ग्रंथियों को तत्काल सुलझाइये।
अकलंक, समंतभद्र या मानतुंग में से कौन हैं आप बतलाइये॥

●

विपरीत परिस्थिति में भी जो सदा मुस्कराते हैं।
जिनके तप को देख कर्म भी भाग जाते हैं॥
भर रहे जो हमारी खाली ज्ञान गागर को।
बार-बार नमन है उन आचार्य बाहुबली सागर को॥

●

सरल संत न ऐसा देखा न देखा ऐसा इन्सान।
जिनके अंदर यही भावना, जन-जन का होवे कल्याण॥
इतिहासों की नगरी दिल्ली, इसने रचा नया इतिहास।
आचार्यरत्न गुरु बाहुबली ने यहां किया है चातुर्मास॥

●

जिनके मुख से निकल पड़ी सरिता सम्यग्ज्ञान की।
जिनकी महक से महक उठी धरती हिंदुस्तान की॥
आक्का मां का लाल दुलारा बलवंता का नंदन है।
आचार्य श्री बाहुबली जी को बार-बार मम वंदन है॥

सुनील कुमार जैन (बाझल)
मध्य प्रदेश

भाव समर्पण

निर्मल स्वच्छ पवन-झोंके सा
अंतर्मन की वादी में जो
गहराई से उतर गया है
श्वास-श्वास में रचा-बसा वो।

प्रथम दर्शनों की बेला में
ऐसा स्नेहासिक्त किया मन
प्रभु के मानिन्द-गुरु के सन्मुख
हुए भक्त के भाव समर्पण।

आचार्यरत्न बाहुबली गुरु
स्वीकार करो मेरा वन्दन
स्वीकार करो शत-शत वन्दन
स्वीकार करो मेरा वन्दन।

आशा 'सुमन'
ए-6, निर्माण विहार

श्री परमपूज्य एक सौ आठ आ. बाहुबली जी महाराज को शत शत नमन्

श्री - सम्मेद शिखर की यात्रा, करने गुरूवर भाव हुऐ।
प - द पूजन करने प्रभुवर के, गुरू चले सद्भाव लिये।
र - ग रग से जिनकी साधना टपके, समता सौरभ धाम है।
म - म् गुरूवर श्री बाहुबली को, मेरा नम्र-प्रणाम है।
पू - ज्य गुरूवर चरण तुम्हारे जिस-भू पर भी पड़ जाते,
ज - ज्यादा समझना कहूं मैं थोड़ा कंकड़ पत्थर भी तर जाते,
य - म तक इनसे कांप रहा है, सरल-शांत सुखकारी है।
एक - एक कर कर्म नश रहे, छत्तीस मुल-गुण धारी है।
सौ - भाग्य हमारा ऐसे गुरू के, दर्शन हमने पाये है,
आठ - कर्म हटें शीघ्र ही, हमने भावना भाये है,
आ - चार्य बाहुबली नाम से प्यारा, जन मानस सब हर्षित है,
बा - ल यति गुरू बड़े अनोखे, जन-जन में ये चर्चित है।
हु - ई धन्य वह भूमि जहां पर, गुरूवर ने यह जन्म लिया,
ब - जह माता-पिता भी धन्य हो गये, जिनने गुरूवर को जन्म दिया,
ली - नी दीक्षा देशभूषण से, उन गुरू का मान बढ़ा रहे,
जी - व दया का पालन करते, करूणा की गंगा बहा रहे।
म - ंद मंद मुस्कराते है जब, हृदय कमल सबके खिल जाते।
हा - हाकार मचाते जो जन, शांत-भाव उनके हो जाते,
रा - जा हो या रंक सभी को, गुरू-आशीष सदा देते हैं;
ज - ब जी चाहे उन्हें पुकारो, सबके दुःख हरते रहते है।
को - ई भी प्राणी हो उनके, चरण समीप अभय पाता है।
श - का हो गर कैसी भी तो, वो समाधान पा जाता है।
त् - म प्रलयंकर ये गुरूवर है, राह सही दिखलाते है,
श - कर कंकर बनते कैसे, आगे बढ़ स्वयं बताते है,
त् - ट तक ले जायेगें सबको, भव-सागर पार लगा देगें,
न - होगा यह जनम-मरण अब, इन दुःख से पार लगा देगें,
म - म् नमन गुरूवर होवे तुमको, शत्-शत् वंदन अभिनंदन।
न - यन उठा दो तार दो हमको, हे! जिनमाता के लघुनदंन।

राजेश जैन (बागड़) सिवनी

मुक्तक

सागर में डुबकी लगाने पर रत्न मिलते है।
सूरज की अनुकम्पा से ही कमल खिलते है।
बाहुबली सागर महाराज का दीप तो ऐसा अद्भुत दीप है।
जिससे सदैव नए नए दीप जलते है।

पतझड़ को हटाने बसंत चाहिए।
कैवल्य प्रकाश पाने कर्मो का अंत चाहिए।
अरे! मोह माया का तिमिर, ऐसे थोड़े ही हटेगा।
उसे हटाने बाहुबली सागर जैसे संत चाहिए।।

चाँद के उदय से प्रकाश होता है।
सूर्य के उदय से फूलों का विकास होता है
जो भी गुरूदेव बाहुबली का सानिध्य पाता है।
उसके जीवन में सदैव प्रकाश ही प्रकाश होता है।

धागों को जोड़ा तो परिधान बन गया
और ईंटों को जोड़ा तो मकान बन गया
जब संभव ने सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र के रत्नत्रय को जोड़ा
तो बाहुबली सागर नाम बन गया।

राजेश जैन (बागड़)
सिवनी (म.प्र.)

कविता

"काल से भी डरे नही, जाल में भी फंसे नहीं

बबाल भव-भव का अब आप ही मिटाइये

काल की भूचाल चाल रूप धरे है विकराल

लाल कहे ढाल मेरी आप ही बन जाइये

माया का है खारा लाल, पीके हुले मेरे गाल

बेताल बने लाल से अब आप ही बचाइये

भाल तेरे चरण रसाल में झुका है अब

'बाहुबली' निर्बल को बली आप बनाइये"

कविता

"साहस ने ही मानव को धीर बनाया है

साहस ने ही मानव की हर पीर मिटाया है

न छोड़ना साहस को कभी मेरे साथी

साहस ने ही मानव को महावीर बनाया है।"

"म-हान है वह जिसने खुद को पहिचाना है

हा-लत उसकी बिगड़ी है जिसने न खुद को जाना है

बीते हुये कल को भूल जा ये मानव

र-ख न याद ऐसे कल को, कल का क्या ठिकाना है।"

राजेश जैन (बागड़)
सिवनी

मुक्तक

"बाहुबली महाराज को कोटि-कोटि प्रणाम,
गुरूवर की भक्ति चाहूँ मैं हर सुबह हर शाम।
काज आपका कर चलूँ चाहूँ ना आराम,
नाम आपका रट चलूँ जब तक घट में प्राण।।"

"बाहुबली महाराज जी शरण मिली मुझे आज,
मेरे उर गुरू बसे रहो, सभी संभारो काज,
समता में नित लीन हो, दो समता सरताज,
समता बल धर हुओ बलि, बाहुबली महाराज।।"

"है बाहुबली सिन्धु विशाल, सब रत्नों की खान,
खोजो उनको शीघ्र ही, लो डुबकी श्रीमान।
गर यह सिन्धु तुम मथ सको, मथ लो रे इंसान,
ज्ञानामृत का पान करो, अमर बनो भगवान।"

"बाहुबली गुरू विषय को तज, बन गये विषयातीत,
भीत गुरू मैं कर्म से, दो जीत की सम्यक् रीत।
अतीत बीत गया पर नहीं सुना मैं निज संगीत,
मीत बने हो गीत सुना मिले मुझे मनमीत।"

"मेरे उर गुरू बसे रहो, बाहुबली जी आप,
संताप भव-भव के मिटे, करो मुझे निष्पाप।
चरण-शरण में आपकी, मेटो सब आताप,
आलाप पाप का मैं तजूँ-भजूँ आपका नाम।"

राजेश जैन (बागड़) सिवनी

जय गुरूदेव जय गुरूदेव

जय गुरूदेव, जय गुरूदेव
बोलो सब जन जय गुरूदेव
संभव नाम ले गुरूवर जन्मे
धन्य भये पितु बलवंते
घर घर वीणा बजी वाद्य संग
द्वार द्वार घंटे लहरे ॥1॥
ग्यारह प्रतिमाधारी गुरू ने
देशभूषण जी के पास गये
मुनिव्रत धार हुए बाहुबली
जग जिनकी महिमा गाए ॥2॥
धन्य है माटी रूकड़ी ग्राम की
धन्य मात अक्काताई
ऐसी रज को शीश झुकावे
गुरू भक्ति जिनने पाई ॥3॥
आयुकर्म बलवान भयो जब
देशभूषण ने देह त्यागी
आचार्यरत्न से मंडित गुरूवर
बाहुबली महाव्रत धारी ॥4॥
धर्म ध्वजा फहराती देखो
धर्मनगर पावन माटी
श्रावक पहुंचे असाता मेटे
पुरूषार्थ प्रधानी जिनवाणी ॥5॥

डॉ० श्रीपाल डयोढीया
पनागर (म० प्र०)
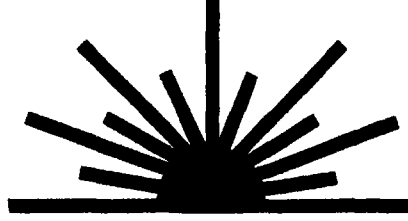
हमारे गुरूदेव

सूरज का उजाला जैसे, बड़ा-छोटा, अमीर-गरीब नहीं देखता,
उसी तरह हमारे गुरूदेव की दृष्टि है।

सूरज का उजाला जैसे कमल पर छा जाने से, कमल खिलते
है, उसी तरह गुरूदेव कि दृष्टि जिसपर छा जाये, उनके जीवन
का कमल खिल जाता है।

गुरूदेव की दृष्टि इसलिए महान है। वह सबको समानता से
देखते है। उनके दरबार में कोई बड़ा-छोटा, अमीर-गरीब नहीं,
वह सबको सद्गती का मार्ग दिखाते है।

गुरूदेव की दृष्टि, जिन्होनें पाने की इच्छा मन में की, उन
सब पर गुरूदेव की दृष्टि छा जाती है।

आंखे होकर भी, अंधेरे में आदमी को रास्ता नहीं मिलता,
गुरूदेव की दृष्टि जिसपर छा जायें, उसे जीवन का सही रास्ता
मिल जाता है।

ऐसे महान गुरूदेव की सिद्धांत दृष्टि ही जीवन का आलोक
पथ प्रशस्त कर सकती है, ऐसे महान है हमारे गुरूदेव।

नंदगावे बंधु (सांगली)

ध्यान मूलं गुरोर्मूर्ति, पूजामूलं गुरोः पदम्

1. श्रद्धा भक्ति और तपस्या के फूलों से गुरू की पूजा करो।
2. आत्मवेत्ता गुरू के संग के प्रभाव से आपका जीवन संग्राम सरल बन जायेगा।
3. जो आंखे गुरू के चरण कमलों का सौन्दर्य नहीं देख सकती वे आंखे सचमुच अंधी है।
4. जो कान गुरू की महिमा नही सुनते वे कान सचमुच बहरे है।
5. गुरू रहित जीवन मृत्यु के समान है।
6. गुरू का ध्यान करने से सब दुःख-दर्द एवं शोक का नाश होता है।
7. गुरू का ध्यान शिष्य के लिए एकमात्र मूल्यवान पूंजी है।
8. शिष्य के हृदय के अन्तस्थल में सुषुप्त दैवी शक्ति को गुरू जागृत-कर सकते है।
9. जिस शिष्य को अपने गुरू में श्रद्धा होती है, वह सच्चा ज्ञान प्राप्त करता है।
10. प्रभु और गुरू एक ही है। अतः गुरू की पूजा करो।
11. अपने आंखों का उपयोग अपने दिव्य गुरू की छबी को-निहारने में करो।
12. अपने मस्तक का उपयोग सद्गुरू के पावन चरणों में झुकाने के लिए करो।
13. गुरू सेवा हृदय को विशाल बनाती है सब विघ्नों को हटाती है।
14. गुरू सब शुभ गुणों का धाम है।
15. गुरू भक्ति जन्म, मृत्यु एवं जरा को नष्ट करती है।
16. गुरू पृथ्वी पर देवदूत है, नहीं, देव ही है।
17. भवसागर में डूबते हुए शिष्य के लिए गुरू जीवन संरक्षण नौका है।
18. गुरू की प्रशस्ति माने ईश्वर की प्रशस्ति।
19. शिष्य के लिए तो गुरू से उच्चतर देवता कोई नहीं है।
20. गुरू ही एकमात्र आश्रय है।
21. गुरू सम्यग्ज्ञान के पथ प्रदर्शक है।

22. गुरू का चरणामृत शिष्य की तृषा शांत कर सकती है।
23. शिष्यत्व की पहचान माने गुरू भक्ति।
24. गुरूदेव की मूर्ति का नियमित ध्यान करना यह शिष्यत्व का राजमार्ग है।
25. गुरूदेव के प्रति सम्पूर्णतः आज्ञापालन का भाव शिष्यत्व की नींव है।
26. गुरू अपने शिष्य को अपने जैसा बनाते है। अतः वे पारस से भी महान है।
27. संसार सागर को पार करने के लिए गुरू ही उत्तम नौका है।
28. गुरू आपके लिए इलेक्ट्रीक लिफ्ट है वे आपको पूर्णता के शिखर पर पहुंचायेंगे।
29. अपने पवित्र गुरू के प्रति अच्छा आचरण परम सुख के धाम का-पासपोर्ट है।
30. गुरू सेवा अध्यात्मिक टॉनिक है।
31. शिष्य का प्रथम पाठ है गुरू के प्रति आज्ञाकारिता।
32. सच्चे शिष्य के लिए तो गुरू वचन माने कानून है।
33. गुरू श्रद्धा पर्वतों को हिला सकती है।
34. भक्ति यह गुरू के चरण कमलों के साथ शिष्य के हृदय को बांधनेवाली-सुवर्णकडी है।
35. गुरू के पवित्र चरणों की भक्ति फूल है और उनके आर्शीवाद अमर फल है।
36. गुरू, पीड़ित मानव जाति के ध्रुवतारक है।
37. जाने-अनजाने गुरू की भावना को ठेस मत पहुंचाओ।
38. शिष्य की सबसे महान सम्पत्ति अपने 'सद्गुरू' के चरण कमल की पवित्र धूली है।
39. गुरू ही मूर्तिमंत कृपा है।
40. गुरू माने साक्षात् देवता है।
41. शिष्यत्व की कुंजी है ब्रम्हचर्य और गुरूसेवा।
42. गुरू की सहायता बिना कोई आत्मज्ञान पा नहीं सकता।
43. गुरू दर्शन से जो लाभ होते है, और जो मानसिक शान्ति का अनुभव होता है वह असीम होता है।

आर्यिका श्रुतदेवी माताजी

भजन

दिव्य ज्ञान के ओ मेरे गुरूवर
मुझे राह सच की दिखाना
जग के झमेले से हमको
मुनिवर मुक्ति दिलाना। हो दिव्य..................।

मैं तो लाई हूं खाली यें गागर
आप तो है ज्ञान का सागर
थोड़ा ज्ञान हमें भी तो दें दो
मैं भी जीवन सफल अपना कर लूं। हो दिव्य......।

आपके सानिध्य से मुनिवर
मिलता भक्तों को आनन्द बड़ा है
आपकी ही तो वाणी से गुरूवर
सबका सोया हुआ मन जगा है। हो दिव्य.........।

आचार्य संघ जाता जहां पर
धर्म नगरी बनती वहीं पर
फूल खिलते है लोगों के मन में
होता धर्ममयी माहौल सारा। हो दिव्य.............।

वीतरागी नग्न मुद्राधारी
आपको सौम्य शान्ति है प्यारी
आप सागर के जैसे अटल हैं
'सरिता' सागर की है आभारी। हो दिव्य.........।

सरिता साहिल
ए-65, शास्त्री नगर, दिल्ली-110052

बाहुबली सागरा

(चाल-डफली वाले.....)

बाहुबली सागरा
शान्ति दिला
भव भव की सताई हूँ आ आ ऽ ऽ
तू मुक्ति तो दिला आ ऽ ऽ
बाहुबली सागरा .... ॥ध्रुव॥
आचार्य श्री की दिव्य वाणी ने कैसा है शोर मचाया
पंचम काल में देखो ये कैसा चतुर्थ काल है आया, हाय हाय
वीर वचनों के देखो रसीले फलों का अमृत पान कराया
बाहुबली सागरा .... ॥1॥
चंद दिनों का जीवन है तेरा
पुण्य कमा ले तू प्राणी
ऐसा ये अवसर फिर ना है आये
मौत की है ना निशानी हाय हाय
हितैषी गुरूवर हमको है कहते
स्वार्थी है दुनियाँ सारी
बाहुबली सागरा .... ॥2॥
धर्मनगर में देखो ये कैसा
समवशरण है ये आया
श्रावक-श्राविका में देखो कैसा
आनंद ही आनंद है छाया, हाय होय
जीवन के उजाले में भक्ति सहारे से
आतम ज्योति जगाया
बाहुबली सागरा .... ॥3॥

रचयिता-आर्यिका सुज्ञानी

भजन

(तर्ज-न कजरे की धार ....)

न भौतिकता से प्यार
न अपनों से कोई राग
न किसी से मतलब हैं
आप तो दिगम्बर मुनिवर हो-2

सर्दी तुम्हारे वस्त्र
गर्मी कूलर ए.सी. है-2
तपती दुपहरी तो
चलना सिखाती हैं। न भौतिकता............

भगवान पिता तुम्हारे
जिनवाणी माता है
भाई बन्धु संघ में
सारे श्रावक बच्चे हैं। न भौतिकता............

सारी जमी घर है
अम्बर तुम्हारी छत है।
दुनियां का हर जीव
तुम्हारा सहोदर है। न भौतिकता............

वाणी मधुर तुम्हारी
मिश्री से मीठी है
भक्तों के मन को जो
सन्तुष्ट करती है। न भौतिकता............

'साहिल' सभी का अरमां
भव सागर गहरा है।
ब्रहमचर्य संयम त्याग से
मंजिल मिलती है। न भौतिकता............

'सरिता जैन' साहिल दिल्ली

भजन

जय बाहुबली मुनिवर, ओ जन्में खेतों में गुरूवर।
पुलकित हो गई सारी धरा, और नाचे नारी नर।
ओ मेरे बाहुबली गुरूवर.........
अक्का मां की आंखो के तारे, तात्या जी के बड़े दुलारे
दोनों की थी जान बसी, अपने बम्बू पर।
ओ मेरे बाहुबली गुरूवर.........
हीरा तारा चन्दा सुनन्दा, बहनों के प्रिय भाई
भुजवली देवा नाभि शाम, भाइयों के थे कर।
ओ मेरे बाहुबली गुरूवर.........
बचपन का प्यारा सा बम्बू, आगे चलकर बन गया सम्भू
सम्भू से फिर सम्भव हो गए, कर दिया नाम अमर।
ओ मेरे बाहुबली गुरूवर.........
उनके लिए न कुछ था असम्भव, तभी तो उनका नाम था सम्भव
अपनी वाणी से कर लेते, कब्जा लोगों पर।
ओ मेरे बाहुबली गुरूवर.........
ब्रहमचर्य संयम त्याग में उनकी, आस्था थी भारी-भारी
चिन्तन करते नित अपना वो, राग द्वेष तज कर।
ओ मेरे बाहुबली गुरूवर.........
देशभूषण गुरूवर को पाकर, हर्षित हो गया मन
उनके ज्ञान के सागर में, नहाए जी भर कर।
ओ मेरे बाहुबली गुरूवर.........
लोगों को उपदेश सुनाते, जैन धर्म का ध्वज लहराते
जन-जन का कल्याण करें मुनि बाहुबली बन कर।
ओ मेरे बाहुबली गुरूवर.........
भैतिकता की झलक नहीं हैं, सादगी गले देखे पहले संत
विनती करती 'सरिता' अपने जोड़ के दोनों कर।
ओ मेरे बाहुबली गुरूवर.........

'सरिता जैन' साहिल

गुरूदेवा

(तर्ज - परदेसी परदेसी......)

गुरूदेवा गुरूदेवा बाहुबली
दर्शन से खिलती है ज्ञान की कली
तेरा दर्शन प्यारा है हितकारा, मुक्ति के राही
हमें राह दिखाना ॥धुव॥

समयसार मय रूप दिगम्बर दिखता है
परमातम का आज भी दर्शन होता है
चलते फिरते तीर्थंकर सा रूप है
गुरूवर जैसे जिनवाणी का कूप है
तेरा दर्शन प्यारा है हितकारा मुक्ति के राही
हमें राह दिखाना

अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर लाये है
गुरू चरणों की आरती करने आये है
भक्ति के रंगो में रंगने आये है
सब कुछ हमने आ करके यहाँ पाये है
तेरा दर्शन प्यारा है हितकारा मुक्ति के राही
हमें राह दिखाना

सूरज के सम ज्ञान दिवाकर हो गुरूवर
चंदा से शीतल अतिशीतल हो गुरूवर
सारी उपमायें फीकी पड़ जाती है
मानों अपना शीश चरण में झुकाती है
तेरा दर्शन प्यारा है हितकारा मुक्ति के राही
हमें राह दिखाना

उत्तर से दक्षिण तक धर्म प्रचार किया
जन जन में जिनवाणी का संचार किया
प्रभु चरणों से नाता तुमने जोड लिया
देव शास्त्र गुरू के चरणों में निवास किया
तेरा दर्शन प्यारा है हितकारा मुक्ति के राही
हमें राह दिखाना

गुरू की अमृतवाणी मन को भाती है
नित आतम की हर क्षण याद दिलाती है
भव भव के दुखों को सहज मिटाती है
सिद्ध शिला के गुणगानों को गाती है
तेरा दर्शन प्यारा है हितकारा मुक्ति के राही
हमें राह दिखाना

महान संघ सहित गुरूवर जी आये है
दिल्ली नगर के वासी सब हर्षाये है
मन वच तन से स्वागत करने आये है
आशीष दे दो शरण तुम्हारी आये है
तेरा दर्शन प्यारा है हितकारा मुक्ति के राही
हमें राह दिखाना

आर्यिका सुज्ञानी माताजी

सुहानी घड़ी ये आई है

(तर्ज-ये मेरा प्रेमपत्र पढ़कर..........)

सुहानी घड़ी ये आई है, जय जय ध्वनि गुंजाई है।
त्याग की महिमा ये देखो, गुरूवर में समायी है ॥धृ॥

अठ्ठावीस मूलगुण धारी, तेरा यशगान हम गाये।
देख मुद्रा दिगंबर को, हम अपना शीश नवाये।
केशलोंच देखकर लगता, त्याग की मूरत तुम्ही हो ॥1॥
सुहानी घड़ी ये ....

धर्म नेता तुम्हे कहते, धर्म रक्षक तुम्हे कहते।
अनाथों के तुम्ही नाथ, दिगंबर राज तुम्हे कहते।
धर्म की महिमा है ऐसी, जहाँ शांति समायी है ॥2॥
सुहानी घड़ी ये ....

बेलगांव नगर है जगमगता, गुरूवर तेरी वाणी से।
सभी का मन है हर्षाता, वात्सल्य तेरा पाने से।
तेरा गुण को ये हम पाये, हमें आशीष दे दो तुम ॥3॥
सुहानी घड़ी ये ....

आर्यिका सुज्ञानी माताजी

आओ श्रावक कथा सुनाये

(तर्ज-आओ बच्चो तुम्हे ....)

आओ श्रावक कथा सुनाये, बाहुबली गुणवान की।
इस मुद्रा को नमन करो, ये मुद्रा है निर्वाण की।
वंदे गुरूवरम् वंदे ऋषीवरम् ॥धृ॥

रूकडी नगरी प्यारी नगरी, कोल्हपुरी जिले में ये।
आक्का माता बलवंता के सबसे राज दुलारे ये॥
जब गुरू ने जन्म लिया स्वयं बजी बधाई रे।
घर घर खुशियां छाई देखो आक्का माता जाई रे॥
आओ श्रावक .... ॥1॥

चार भाई और चार बहिन में रत्नों का श्रृंगार मिला।
बचपन से ही बाल संभव को मां का ये संस्कार मिला।
बाहुबली आश्रम में आकर उनने शिक्षण प्राप्त किया।
समंतभद्र गुरू की छाया में जीवन का उत्थान किया।
आओ श्रावक .... ॥2॥

देशभूषण गुरू के दर्शन से मनमें वैराग्य भाव उठे।
संयम की ये नांव बनाकर रत्नत्रय का यान धरे॥
बाईस परिषह सहने को भेष दिगंबर धार लिया।
जीवन की सुंदर बगिया में फिर स्वयं विश्राम किया।
आओ श्रावक .... ॥3॥

आचार्य श्री की अद्भुत वाणी सब को ही हितकारी है।
समता की लहरे बहती है दुःख की नहीं निशानी है।
ऐसे गुरूवर के जीवन की गाथा यही बताती है।
करो आतम कल्याण सभी तुम तीर्थंकर ये वाणी है।
आओ श्रावक .... ॥4॥

रचयिता-आर्यिका सुज्ञानी

धर्मनगर नेता

(तर्ज-रिमझिम के गीत सावन गाये)

गुरूवर है, धर्मनगर नेता - नेता
अहिंसा के ये पुजारी
इनकी मूरत सदा संदेश देती।
भव बंधन सदा दुःखकारी है।
इनसे बच जा तू भोले प्राणी-प्राणी।
संसार भ्रमण के कारण है।
गुरूवर है .... ‖1‖

सम्यक्‌दर्शन-ज्ञान-चारित्र की।
महिमा तुमने अभी नही जानी है।
धर्म प्रभु की शरण में आ जा, आ जा
संयम के ये पुजारी है।
गुरूवर है............... ‖2‖

वात्सल्यकारी है हितकारी है।
इनके दर्शन से विघ्न दूर होते है।
मंगलमय, वाणी सुन प्राणी-प्राणी
समता की ये मूरत है।
गुरूवर है .... ‖3‖

रचयिता-आर्यिका सुज्ञानी

सब मिल गुरू भक्ति

(तर्ज-धीरे धीरे ....)

सब मिल गुरू भक्ति गाना है, आतम ज्योत जगाना है।
भव सागर से तिर जाना है, आतम ज्योत जगाना है।।धृ।।

शुभ दिन ये आया है, गुरू दर्शन पाया है
आनंद छाया है आज मेरे नाथ
पाप को नशायेगें भक्ति को बढ़ायेंगे,
पुण्य को कमायेंगे आज मेरे नाथ
गुरू चरणों में झुक जाना है,
आतम ज्योत जगाना है।। सब मिल.....।।1।।

तेरे दर पे जो आये, ज्ञान की ज्योति पाये
वीतराग धन पाये भाग्य को बढ़ाये
रोग शोक मिट जाये, सुख शांति मिल जाए
भक्ति दीप जल जाये, पास तेरे नाथ
मुझे बस त्याग को बढ़ाना है
आतम ज्योत जगाना है।। सब मिल.....।।2।।

रात दिन मैं गाऊँ, गुणवान बन जाऊँ
आकर शरण मैं, मैं तेरे पास
मेरा मन करता है, पाप से भी डरता है,
तेरे जैसे बन जाऊँ पार कीजें आप
मुझे बस तेरा ही सहारा है,
आतम ज्योत जगाना है।। सब मिल......।।3।।

रचयिता-आर्यिका सुज्ञानी

सब गाओ

(तर्ज-सायो नारा सायो नारा ....)

सब गाओ सब गाओ बाहुबली के गुण गाओ,
बाहुबली गुरू की वाणी, कहती आतम गुण पाओ॥धृ॥

धर्मगुरू तुम कहलाये, धर्म चक्र को लहराये
धर्मनगर के पावन दर पर,
आत्म ज्योति को प्रगटाओ॥ सब गाओ......॥

पंच महाव्रत धारी हो, अष्ट अंग जुत धारे हो
वात्सल्य गुण के अधिनायक,
सदा विजय तुम्हारी हो॥ सब गाओ......॥

गुरू शरण बड़ा पावन है, स्वयं गुरू तरण तारण है।
पाके शाश्वत सुख दर्शन,
आत्म गुणों को प्रगटाओ॥ सब गाओ......॥

संसार दुःखहारी है, मोक्षमार्ग सुखकारी है
आचार्य श्री हमको कहते,
धर्मवीर तुम बन जाओ॥ सब गाओ......॥

रचयिता-आर्यिका सुज्ञानी माताजी

संयम को धारण करो

(तर्ज-फूलों सा........)

संयम को धारण करो
पावन गुरू चरणा
पाप सारे छोडकर व्रत सारे धारकर
जीवन सफल करना ॥ध्रुव॥

रूप तुम्हारा महा मनोहर, देता है ज्ञान सभी जन को
पंच महाव्रत रंग में तू रंग जा, कहता है हरदम सभी जन को
भक्ति को बढ़ायेंगे दिव्य ज्योति पायेंगे
स्वार्थ को नशायेंगे, आज प्रभु द्वार
दीप को जलायेंगे, धर्म को बढायेंगे
शांति गीत गायेंगे, आज प्रभु द्वार
महिमा है तेरी महान देती है जीवन को दान॥पाप सारे॥

अष्ट करम को तुमने है जीता, पाया है सुख का सरोवर अपार
संसारी बगियां में फंस करके प्राणी,
खोता है आत्मनिधि का ये सार
आरती सजायेंगे वीर को रिझायेंगे
शीश को झुकायेंगे वीतराग द्वार
छत्र को चढायेंगे, पूजा को रचायेंगे
त्याग को बढायेंगे वीतराग द्वार
महिमा है तेरी महान देती है जीवन को दान॥पाप सारे॥
संयम को धारण करो................

रचयिता-आर्यिका सुज्ञानी माताजी

गुरू हमारे

(तर्ज - देश हमारा ऽ ऽ ऽ राष्ट्रगीत...)
गुरू हमारे अहा² ऽ ऽ ऽ सबको प्यारे ओहो ² ऽ ऽ ऽ
गुरू हमारे सबको प्यारे
शत् शत् हो आयु ऽ ऽ ऽ
इनके गुणगान की महिमा दुनियाँ ने गाई ऽ ऽ ऽ ॥धृ॥

सन् 1932 आया, गुरू ने जन्म लिया
रूकड़ी नगरी अद्‌भुत है जहाँ, धर्म का दीप जला
बाल संभव ने आत्मयोगी बन संयम साध लिया
इनके गुणगान.......... ॥1॥

सौम्य मूर्ति गुरूवर तेरी है, अंतर ज्योति जलाये
तेरी दिव्य वाणी तो निशदिन ज्ञान रश्मि फैलाये
तीन लोक में गुरू की महिमा कैसी है न्यारी
इनके गुणगान.......... ॥2॥

देश देश में घूम घूम कर धर्म प्रचार किया
जिनवाणी का दीप जलाकर, मिथ्या दूर किया
वात्सल्य मूर्ति तेरी प्यारी, मन को हर्षाती
इनके गुणगान.......... ॥3॥

खुशियाँ लेकर शुभ दिन आया मंगल गीत सजाओ
योगीराज की जन्म जयंती सब मिल आज मनाओ
इस युग के तीर्थंकर हो तुम हर पल बढ़े आयु
इनके गुणगान.......... ॥4॥

रचयिता-आर्यिका सुज्ञानी

गुरूवर की जय बोलो

(तर्ज-धीरे धीरे बोल ....)

गुरूवर की सब जय बोलो जय बोलो सब जय बोलो
शुभ घड़ी कैसी आई है, मंगल ध्वनी हर्षायी है ॥धृ॥

सन् उन्नीस सौ बत्तीस है आया, रूकडी नगरी में मंगल छाया
सब जान लो पहचान लो रूप दिगम्बर है जहाँ
सम्यक् दर्शन है वहाँ॥ गुरूवर ....॥1॥

संत शिरोमणि कल्पतरू है समान, ज्ञान दिवाकर
आत्म शक्ति महान
सब जान लो पहचान लो रूप दिगम्बर है जहाँ
सम्यक् दर्शन है वहाँ॥ गुरूवर ....॥2॥

अमर अखंडित गुरूवर का हो नाम, ऐसी भक्ति करते बारम्बार
सब जान लो पहचान लो रूप दिगम्बर है जहाँ सम्यक्
दर्शन है वहाँ॥ गुरूवर ....॥3॥

मोक्षमार्ग की महिमा अपरम्पार, बाहुबली गुरू संयम की पतवार
सब जान लो पहचान लो रूप दिगम्बर है जहाँ
सम्यक् दर्शन है वहाँ॥ गुरूवर ....॥4॥

रचयिता-आर्यिका सुज्ञानी माताजी

मेरे गुरूवरजी आये है

(तर्ज-बहारों फुल बरसाओ..........)

बधाई आज मिल गाओ मेरे गुरूवर जी आये है
गुंजादो गीत मंगलमय मेरे गुरूवर जी आये है ॥धृ॥

बिछाओ चाँदनी चँदा सितारो नाचने आओ
सुनहला थाल भर उषा प्रभाकर आरती लाओ
सुस्वागत साज सजवाओ मेरे गुरूवर जी आये है ॥1॥

लताएँ तुम झुकाओ शीश गुरूवर जी के चरणों में
तितलियाँ रंग बरसाओ बहारों की बहारों से
गुरू भक्ति सभी गाओ मेरे गुरूवर जी आए है॥2॥

दौड़ कर गंगा जमुना तुम, चरण प्रक्षाल कर जाओ
कि धरती तू उगल सोना ये सम्यक् ज्ञान उर लाओ
इन्द्र आनंद बरसाओ मेरे गुरूवर जी आये है॥3॥

सफल हो आगमन इनका करे स्वागत मिलकर हम
सुखद गुरूवर के दर्शन से ये विघ्ने, नाश हो जाये
यह मंगल गान सुन जाओ मेरे गुरूवर जी आए है॥4॥
बधाई............

रचयिता-आर्यिका सुज्ञानी

देश देश में गूंजे गुरूवर

(तर्ज-जनम जनम का साथ है.....)
देश देश में गुंजे गुरूवर नाम तुम्हारा हो ऽ ऽ नाम तुम्हारा
पुण्य की वर्षा होती वहाँ जहाँ होता गमन तुम्हारा ॥धृ॥

रूकडी नगरी प्यारी जन्मभूमि कहलाती
माता पिता की गोदी हर्ष से भर भर जाती
अंधकार को दूर हटाने हुआ था जन्म तुम्हारा ॥1॥

बालपने में तुमने किया धर्म अभ्यास
तरूण समय में छाया दिल में था वैराग्य
गुरू शरण में आकर तुमने आतम ज्योति जगाया॥2॥

देश देश में किया धर्म प्रचार निराला
जन जन को था दिया जैन धर्म का नारा
भव्य जनों के मन मंदिर में धर्म का दीप जलाया॥3॥

संघ में साधु जितने सबको पार लगाया
अमृत ज्ञान का प्याला प्राशन तुमने कराया
आचार्य शिरोमणि बाहुबली का शत शत जय जयकारा ॥4॥

भव्य जनों के नायक तेरा यश हम गायें
गुरू भक्ति हम करके त्याग के दीप जलाये
तेरी अमृत वाणी करती भवसागर से पारा ॥5॥

देखो सन् 2000 खुशियाँ लेकर आया........
वर्षायोग का अवसर, हम सबने है पाया
संघ सहित गुरू बाहुबली को, वंदन बारम्बारा ॥6॥
देश............

रचयिता-आर्यिका सुज्ञानी माताजी

होता ज्ञान सवेरा

(तर्ज-जहाँ डाल डाल........)

श्री बाहुबली के चरण कमल से होता ज्ञान सवेरा
है वंदन गुरू को मेरा 2 ॥ध्रुव॥

जो बिना स्वार्थ की कठिन तपस्या करते पल पल पल है
जो आतम में ही रत रहते नहीं रखते कोई विकल्प है
जिनके तप को देख के भागा कर्मो का भी डेरा
है वंदन गुरू को मेरा 2 ॥1॥

महावीर से पिता है जिनके जिनवाणी सी माता
जिनके चरण कमल को पाकर काटे कर्म असाता
ऐसे मात पिता को पाया जिनका मुक्ति डेरा
है वंदन गुरू को मेरा ॥2॥

ये महाव्रती संयमधारी ये वीतराग अधिकारी
हमको भी गुरू पार लगाओ, यह विनय है तुमसे हमारी
अंधकार में पडे हुए हम, कर दो ज्ञान सवेरा
है वंदन गुरू को मेरा ॥3॥

श्री सुनील बाझल (जैन)
सिवनी (म.प्र.)

अमृत वाणी (भजन)

सुन ले प्राणी अमृतवाणी, बाहुबली की आज तू मन
में होना न उदास 2 ॥ध्रुव॥

पूर्व पुण्य का उदय है आया, ऐसा मुनिसंघ पाया
ऐसे गुरू को पाकर मैं भी फूला नहीं समाया ऽ ऽ ऽ
बाहुबली के दर्शन करके, खुल गये हमारे भाग्य
तू मन में होना न उदास....
सुन ले प्राणी........ ॥1॥

रागद्वेष सब झूठे जग में झूठी है सब माया
इनको तज दो तुम सब प्यारे, ऐसा गुरू ने बताया
मतलब के सब संगी साथी करता किसकी आस
तू मन में होना न उदास....
सुन ले प्राणी........ ॥2॥

आतम को तुम अपना समझो उसको करो श्रृंगार
इसमें ही तो सुख मिलता है इसमें ही है सार
पर में तुम मत भटको प्राणी तुझ में तेरा वास
तू मन में होना न उदास

जो भी गुरू की शरण में जाता, अपना शिष्य बनाते
सम्यक् की वर्षा से वे तो आतम शुद्ध कराते
इन चरणों में सुख मिलता है कर 'सुनील' विश्वास
तू मन में होना न उदास....
सुन ले प्राणी........ ॥4॥

श्री सुनील बाझल (जैन) सिवनी (म.प्र.)

आरती

(तर्ज-चिंतामणि पारसनाथ........)

नरनारी मिल करके आज गुरूवर की आरती उतारो
आरती उतारो मिल आरती उतारो ॥धुव॥

बाहुबली गुरू मूरत है प्यारी
दिव्य मनोहर गुण भंडारी
पावन चरणों की आज सब मिलकर आरती उतारो
आरती उतारो मिल आरती उतारो॥नरनारी॥ ॥1॥

कंचन कामिनी के तुम त्यागी
महाव्रतों के तुम हो धारी
महा तपस्वी की आज सब मिलकर आरती उतारो
आरती उतारो मिल आरती उतारो॥नरनारी॥ ॥2॥

भेद ज्ञान की ज्योति जलाए
ज्ञान दिवाकर तुम कहलाए
संयमधारी की आज सब मिलकर आरती उतारो
आरती उतारो मिल आरती उतारो॥नरनारी॥ ॥3॥

रचियता-आर्यिका सुज्ञानी

गुरू आरती

(तर्ज-चंदा कब दूर..........)

हम भक्ति करने आये, हम आरती करने आये
चरणों में तेरे आये, रत्नत्रय निधि को पाये

गुरूवर तुम मेरे महावीर हो
इस युग के तुम भगवन हो ॥ध्रुव॥

रूकडी नगरी सचमुच पावन ये कहाये
उन्नीस सौ बत्तीस में जन्मे, जन जग हर्ष मनाये 2

आक्का माता का प्यारा बन गया जगत का तारा
बलवंता का दुलारा, दु:खियों का तारणहारा
गुरूवर तुम.......... ॥1॥

देशभूषण गुरू की, मूरत मनमें बसाई
संयम को पाने की मन में प्रीत बढ़ाई 2

निशदिन गुरू को था ध्याया, शीतल छाया को पाया
संयम की डोली बनाया, आतम को उसमें बिठाया
गुरूवर तुम.......... ॥2॥

बाहुबली गुरू ने मिथ्या मार्ग हटाया
त्याग तपस्या शील का सबको पाठ पढ़ाया

गुरू की मूरत है प्यारी, करती है भव से न्यारी
चिंतामणि रत्न की खानी, है महाव्रतों की निशानी

गुरूवर तुम.......... ॥3॥

धर्मनगर सा क्षेत्र तुमने है बनाया
लाखों प्राणी को है मोक्ष मार्ग बतलाया
भगवान है धर्मनाथा हरते है दुःख असाता
देते है सुख और साता, भगवन से जोड़ो नाता
गुरूवर तुम......... ॥4॥

शत शत आयु लाभ हो, आशा सब है करते
सूरज और चंदा सम ही, आप का तेज है बिखरे
श्रद्धा के सुमन है लाये, भक्ति से चरण चढाये
निशदिन तेरे गुण गाये, आशीष दे दो हम आये
गुरूवर तुम.......... ॥5॥

हम भक्ति करने आये हम आरती करने आये
चरणों में तेरे आये रत्नत्रय निधि को पाये
गुरूवर तुम मेरे महावीर हो
इस युग के तुम भगवान हो॥

रचियता-आर्यिका सुज्ञानी माताजी

आचार्य गुरूदेव बाहुबली जी पूजा

(तर्ज-पंछी बनू..........)

स्थापना

पूजा करू भक्ति करूँ गुरू चरण में
मनुज भव सफल करूँ तेरी शरण में
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली आचार्य! अत्र अवतर अवतर! संवौषट् आव्हानन्म् ॐ ह्रीं श्री बाहुबली आचार्य! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॐ ह्रीं श्री बाहुबली आचार्य! अत्र मम सन्निहितों भव भव वषट सन्निधिकरणम्॥

शुचि निर्मल नीर को लाया
त्रय धारा चरण में चढाया
जन्म मृत्यु ने मुझको सताया
भव बंधन में मुझको फँसाया
शुद्ध भाव मन में धरूँ अपने जीवन में
मनुज भव सफल करूँ तेरी शरण में ॥1॥
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली आचार्येभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा

गुरू भव बंधन तुम ही हटाते
संसार संताप तुम्ही हटाते
बावन चंदन घिस करके लाते
हर कोई चरण में लगाते
गंध लेप आज करूँ गुरू चरण में
मनुज भव सफल करूँ तेरी शरण में ॥2॥
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली आचार्येभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा

ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा

पद अक्षय कभी नहीं पाया
व्यर्थ जीवन यूँ ही गँवाया
पुंज मोती समान बनाया
अर्पण गुरू चरण में कराया
गुण अनंत प्राप्त करूँ अपने जीवन में
मनुज भव सफल करूँ तेरी शरण में ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली आचार्येभ्यों अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा

पुष्प लाल कमल को मैं अर्पू
निज जीवन चरण में समर्पू
मम आतम को उज्जवल बनाऊँ
काम मत्सर से निज को बचाऊं
पुष्पगुच्छ आज धरूँ गुरू चरण में
मनुज भव सफल करूँ तेरी शरण में ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली आचार्येभ्यों कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा

पूरण पोली इमरती कचौड़ी
भूख वेदन अनादि से जुड़ी
पकवान मैं भी अनेकों चढ़ाऊँ
क्षुधा व्याधि को शीघ्र नशाऊँ
भव भव की भूख हरूँ इसी जनम में
मनुज भव सफल करूँ तेरी शरण में ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली आचार्येभ्यों क्षुधा रोग निवारणाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

कर दो जीवन में मेरे उजेला
जिससे भग जायेगा कर्म डेरा
ज्ञान दीप मिटाता अंधेरा
आत्म ज्योति का होता सबेरा
रत्न दीप आज धरूँ गुरू चरण में

मनुज भव सफल करूँ तेरी शरण में ॥6॥
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली आचार्येभ्यों केवलज्ञान प्रकाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा

लुट रहा है मेरा ये खजाना
फिर भी मैंने न खुद को पहचाना
गुरू मैं हूँ तुम्हारा दिवाना
मेरे कर्मों को दूर हटाना
अष्ट कर्म नष्ट करूँ अपने जीवन में
मनुज भव सफल करूँ तेरी शरण में ॥7॥
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली आचार्येभ्यों अष्ट कर्म दहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा

मुझे दे दो सुमति हे स्वामी
तुम्हें कहते हैं अंतर्यामी
शुद्धात्म परम फल पाऊँ
मैं जीवन सार्थक बनाऊँ
मोक्ष फल प्राप्त करूँ अपने जीवन में
मनुज भव सफल करूँ तेरी शरण में ॥8॥
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली आचार्येभ्यों मोक्ष महाफल प्राप्तये फलम् निर्वपामीति स्वाहा

शुद्ध निर्मल अर्घ्य बनाया
अष्ट द्रव्यों से उसको सजाया
मुक्ति पद की ही भावना भाया
इस हेतू चरण में मैं आया
पद अनर्घ्य प्राप्त करूँ गुरू चरण में [2]
मनुज भव सफल करूँ तेरी शरण में ॥9॥
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली आचार्येभ्यों अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

रचियता-आर्यिका सुज्ञानी

जयमाला

शत शत गुरू को करे हम वंदन।
निर्ग्रंथ मुद्रा को वंदन॥

आत्म तेज से ज्ञान ज्योति का।
पाया गौरव पद अभिनंदन॥
संयम का अन्तस् में वास।
सत्य समाया जिनके पास॥
रूकडी नगरी कहती हरपल।
वीर पुरूष जन्मा इस धर पर॥
आक्का माता बलवंता के।
धर्म धुरंधर वीर तुम्ही हो॥
देशभूषण के शिष्य तुम्ही हो।
प्रशम मूर्ति आचार्य तुम्ही हो॥
भूमंडल पर दीप्तवान हो।
यशकीर्ति के दीप तुम्ही हो॥
धर्मनगर के अधिनेता हो।
संत शिरोमणि नमन तुम्हीं हो॥
दोहा-कल्पतरू सम गुरू मिले अक्षय निधि को प्राप्त करो।
गुरू चरणों में आकर तुम तो जीवन का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली आचार्येभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाहुबली गुरू के चरणों में

(तर्ज-दिल लूटने वाले जादूगर)

बाहुबली गुरू के चरणों में
श्रद्धा के सुमन चढ़ाती हूं॥ध्रुव॥
कुछ ज्ञान नहीं कुछ ध्यान नहीं
चरणों में लगी है प्रीत मगर।
संयम में जीवन बीत सके
यह आश लिए मैं आयी हूं।
बाहुबली गुरू के .... ॥1॥

शुभ पुण्य उदय से ही गुरूवर
दर्शन हम सभी कर पाते हैं।
केवल दर्शन से ही गुरूवर
मेरे पाप सभी कट जाते हैं॥
बाहुबली गुरू के .... ॥2॥

चरणों में रहूं मैं तेरी सदा
शीतलता मुझको मिल जावे।
मुरझाई ज्ञान लता मेरी
अमृत वचनों से खिल जावे॥
बाहुबली गुरू के .... ॥3॥

मैं 'सरल' स्वभावी सदा ही रहूं
'स्नेह' सदा मुझ में ये रहे।
'समक्ष' तेरे रहकर मैं, सम्यग्पद को प्राप्त करूं॥
बाहुबली गुरू के .... ॥4॥

रचयिता-आर्यिका सुज्ञानी

गुरू जी हमारे

(तर्ज-आदमी मुसाफिर है.........)

बाहुबली सागर जी गुरूजी हमारे हो।
समता के सागर हो, चारित्र धारी हो॥
गुरू देशभूषण से दीक्षा है धारी।
आचार्य पदवी तुमने है पा ली॥
दर्शन कर मन हर्षाता है।
बाहुबली सागर जी ॥1॥

पिता बलवंत के राज दुलारे।
मां आक्काताई की आंखों के तारे॥
जिन दीक्षा ले जीवन सफल बनाये।
बाहुबली सागर जी ॥2॥

देखो ये कितने 'सरल' स्वभावी।
'स्नेह' इनमें कितना है भारी॥
'समक्ष' इनके रहकर तो देखो।
मोक्ष जाने के ये ही सहाई॥
बाहुबली सागर जी ॥3॥

गुरूजी ये तुमने सबको है तारा।
हमको भी तारों गुरू हम भी है आये॥
जिन दीक्षा ले हम मोक्ष ये पाये।
बाहुबली सागर जी ॥4॥

रचयिता-आर्यिका सुज्ञानी माताजी

श्री बाहुबली महाराज को वंदना हमेश

(तर्ज-श्री बाहुबली भगवान का मस्तकाभिषेक)

श्री बाहुबली महाराज को वंदना हमेश
महावीर के सम हो गुरुवर वीतराग उपदेश
वंदना हमेश ....

रागद्वेष को छोड़कर तुमने धरा दिगम्बर भेष।
मुक्ति पथ में परिषह आये मन में नहीं है क्लेश॥
साम्यभाव से सब कुछ सहते, पांच समिति पालन करते।

पंच भावना धारे हो गुरु, बनोगे आप जिनेश॥
वंदना हमेश .... ॥1॥

पंच महाव्रत पालन करके, देते अभय हो दान।
आदिनाथ सम बनके रहूंगा निश्चय उरमें महान।
जो भी तेरी शरण में आता, पाप ताप सब छोड़ के जाता।

हम भी आये शरण में तेरी बनने आदि जिनेश॥
वंदना हमेश .... ॥2॥

रुकड़ी नगरी पावन नगरी, जहाँ गुरु ने जन्म लिया।
जीवन की हर लहर में देखो, त्याग ही त्याग किया॥
त्याग ने गुरुवर तुम्हें उठाया, बाहुबली आचार्य बनाया।

देशभूषण के शिष्य हो गुरुवर, भारत गौरव बनो॥
वंदना हमेश .... ॥3॥

सरल स्वभावी तुम हो, गुरुवर मन में नहीं विकार।
बाल शिष्य को दीक्षा देकर, किया बड़ा उपकार॥

समता आपके मुख पर दिखती, क्रोध भाव को जो हर लेती।
दो आशीष गुरुवर हमको, हम भी बने जिनेश॥
वंदना हमेश .... ॥4॥

रचयिता-आर्यिका सुज्ञानी माताजी

पापों से छुटकारा

(तर्ज-एक तेरा साथ)

बाहुबली महाराज जिन रूप तुमने धारा है।
गुरुवर तेरा नाम करे पाप से छुटकारा है।
मंगलमय दुःख हारा है, बाहुबली महाराज ....॥
शुक्ल पंचमी को जन्म है लीना
मां आक्का हर्षायी है।
बाल काल की ये सभी लीला-
जो जन-जन के मन भायी है
बचपन से गुरु आप
करते थे सत्संग प्यारा है।
मंगलमय दुःखहारा है, बाहुबली महाराज.....॥ 1 ॥

छत्तीस मूलगुण, गुरु तुम हो पालते
दिगम्बर रूप धारी।
शिवराह पर चलके मार्ग बतलाते
हो निज पर के हितकारी॥
नैय्या मझधार नैय्या मझधार करे, तूही भव से पारा है।
मंगलमय दुःखहारा है, बाहुबली महाराज.....॥ 2 ॥

समता आपकी फूलों को बिखराकर
जिनरूप को दर्शाती है।
मोक्षमार्ग का उपदेश देकर
वो मोक्ष पद को दिलाती है॥
गुरु को नमस्कार गुरु को नमस्कार
मेरा होवे बारम्बारा है।
मंगलमय दुःखहारा है, बाहुबली महाराज.....॥ 3 ॥

रचयिता-ब्र० सुषमा दीदी (रायपुर)

गुरु द्वार पे

(तर्ज-तूने मुझे बुलाया शेरा वालिये)

दर्शन को हम आये गुरु द्वार पे
श्रद्धा जगी थी मन में ये अपार है।-2
हो-हो ऽ ऽ ऽ ॥ध्रुव॥
देशभूषण जी के तुम अनुगामी
धन्य हुये तुम बाहुबली स्वामी
दे दो ज्ञान हमें तुम स्वामी
राह दिखा दो करुणानिधानी
आशाओं से आये तेरे द्वार पे, श्रद्धा जगी थी मन में ये अपार है॥1॥
हो-हो ऽ ऽ ऽ
बाहुबली है करुणाधारी
शांति सागर की प्रतिमा है धारी
सत्य से तुमने जग को दिखाया
दिगम्बरत्व की महिमा निखारी
भक्ति जगाने आये तेरे द्वार पे, श्रद्धा जगी थी मन में ये अपार है॥2॥
हो-हो ऽ ऽ ऽ
पल में जीवन पल में ओझल
सारा जग है दुःखों से बोझल
सत्य अहिंसा प्रेम जगा दो
दया क्षमा का पाठ पढ़ा दो
भूले भटके आये तेरे द्वार पे, श्रद्धा जगी थी मन में ये अपार है॥3॥
हो-हो ऽ ऽ ऽ
आते बोलो जय, गुरुवर की
जाते बोलो जय गुरुवर की
प्रेम से बोलो जय गुरुवर की
हंस के बोलो जय गुरुवर की
बच्चे बोलो जय गुरुवर की
सारे बोलो जय गुरुवर की
भर दे झोली जय गुरुवर जी, जय गुरुवर जी, जय गुरुवर जी
दर्शन को .... ॥4॥

रचयिता-आर्यिका सुज्ञानी माताजी

बधाई गीत

(तर्ज-मेरा जूता है जापानी.....)

गाओ-2 गाओ-2 सब मिलकर गाओ।
बाहुबली की बधाई सब मिलकर गाओ-2
ला-लल-ला........ ॥ध्रुव॥

निकल पड़े हैं मोक्ष मार्ग पर
धन वैभव को छोड़ा-2
हाथ में लेकर पिछी कमंडल
भेष दिगम्बर धारा-2
इनके चरणों के गुण गाओ, इनके चरणों में झुक जाओ
गाओ-2 गाओ-2 ॥1॥

महावीर के सम बनने तुम
मोक्ष मार्ग पर आये-2
रागद्वेष को तजकर तुम तो
वीतराग कहलाये-2
इनके तप की महिमा गाओ, इनके गुण को तुम अपनाओ।
गाओ-2 गाओ-2 ॥2॥

जिनवाणी है जिनकी वाणी
जिनवाणी अपनायें
अमृतवाणी देकर गुरु तुम
मोक्षमार्ग बतलाये
इनके जैसा तुम बन जाओ, इनके गुण को तुम अपनाओ।
गाओ-2 गाओ-2 ॥3॥

रचयिता-आर्यिका सुज्ञानी

बाहुबली नाम पावन होगा

(तर्ज-झिलमिल सितारों का.....)

बाहुबली नाम पावन होगा, शान्तिसागर सा जीवन होगा।
ऐसा सुखमय जीवन उनका पावन होगा-2 ॥ध्रुव॥
ज्ञान ध्यान तप जिनकी चर्या है
पुष्प और कांटों की वर्षा सदा है
स्व और पर का भेद किया है
इसलिए तुमको वंदन सदा है
बाहुबली .... ॥1॥

करुणा शान्ति के तुम सदा धारी हो
रत्नत्रय पालन करते रत्नत्रय धारी हो
शान्ति से जीवन सुखमय होगा-2
बाहुबली नाम पावन होगा। ॥2॥

वीतरागता के अंश तुम्हीं हो
ज्ञान सरोवर के हंस तुम्हीं हो
दिया हमें उपदेश महान है
इसलिए गुरुवर कोटि प्रणाम
बाहुबली नाम पावन होगा। ॥3॥

देशभूषण के शिष्य तुम्हीं हो
बाहुबली प्रभु के नंदन तुम्हीं हो
आतम बल से जिनबल होगा
बाहुबली नाम पावन होगा
बाहुबली ...... ॥4॥

रचयिता-आर्यिका सुज्ञानी माताजी

महावीर के नंदन

(तर्ज-मेरे गम के सहारे.....)

महावीर के नंदन आ जा, गुरु बाहुबली तू आ जा
कोई मेरा न यहां मैं जाऊं अब कहां,
तू इतना मुझे समझा जा
महावीर के नंदन आ जा .... ॥ध्रुव॥

चार गतियां मिलीं, दुख अपार हो गया-2
कर्मों की लड़ियां जब झड़ी, अंधकार हो गया
मेरा कोई न यहां मैं जाऊ अब कहां
तू इतना मुझे बतला जा
सुना-सुना है जहां, दुख कितना यहां
महावीर .... ॥1॥

मुक्ति मार्ग के प्रवर्तक गुरु तुम हुये-2
जीवन में सुख और शान्ति को तुम दिये
मेरा जीवन है छोटा, गुरु शरण है मोठा
बस शान्ति ही शान्ति दिला जा
सूना-मूना है जहां ..... ॥2॥

बाहुबली गुरु ने मिथ्या तम मिटा दिया-2
ज्ञान का सूरज जग में तुम सदा ही जला दिया
तुम मोक्ष को पाओ और सिद्ध बन जाओ
यही करते है आशा हम सब
सूना-सूना है जहां दुख कितना यहां
महावीर.......... ॥3॥

रचयिता-आर्यिका सुज्ञानी माताजी

बाहुबली गुरु को वंदन

(तर्ज- सिवनी के बड़े बाबा)

बाहुबली गुरुवर को, वंदन करते हम सब।
जिन रूप धरा तुमने शत् शत् करते है नमन
जब गुरु ने जन्म लिया मां अक्का हर्षायी।
जीवन की हर कलियां जैसे है मुस्कायी।
मिथ्यात्व को हर कर तुम, सम्यकत्व को प्राप्त किया।
बाहुबली गुरुवर .... ॥1॥
बचपन में गुरु तुमने, संयम का मार्ग चुना।
सत्मार्ग में चलते ही, कलियों का फूल खिला॥
महावीर के पथ पर तो नन्हा सा दीप जला।
बाहुबली गुरूवर¨ ॥2॥
मिथ्यात्व रूपी तम का, गुरू तुमने नाश किया।
सम्यक्त्व रूपी सूरज इस जगमें चमका दिया।।
जन जन के मन में तो शान्ति का पाठ दिया।
बाहुबली गुरूवर¨ ॥3॥
तारंगा नगरी में गुरू तुमने दीक्षा ली।
क्रोधादि कषायों को तजने की शिक्षा दी॥
व्रत धार के मानव तू जीवन को सरल बना।
बाहुबली गुरूवर¨ ॥4॥
जब से तुमको देखा मन तो अकुलाया है
पाया तेरा चरणों में रत्नों का खजाना है॥
चरणों में रहूँ तेरी बस इतनी कृपा कर दो।
बाहुबली गुरूवर को¨ ॥5॥

रचयिता-आर्यिका सुज्ञानी माताजी

गुरुभक्ति

रचयिता-पू. श्री 105 आ. सुज्ञानी माताजी

मैं फूल बनकर तेरे चरणों में चढ़ जाऊं
मैं बाती बनकर तेरे दीपक में जल जाऊं ॥धृ॥

गुरुवर के चरणों में कोटि वंदन
आपकी शरण है सुरभित चंदन
मैं चंदन बनकर तेरे चरणों में लग जाऊं ॥1॥

हम दुखिया हैं तुम सुखिया हो
हम अंधे हैं तुम अखियां हो
मैं काजल बनकर तेरी आंखों में लग जाऊं ॥2॥

हम तारे हैं तुम इंदु हो
हम बिन्दु हैं तुम सिंधु हो
मैं लहर बनकर तुझमें विलीन हो जाऊं
मैं बाती बनकर तेरे दीपक में जल जाऊं ॥3॥

गुरुभक्ति

रचयिता-पू. श्री 105 आ. सुज्ञानी माताजी

(चाल : मेरा कर्मा तू ....)

मेरे गुरुवर तुम मेरे ऋषिवर तुम
आत्मज्ञानी तुम महायोगी तुम ओ ऽऽ ओ आ ऽऽ आ
शीश चरणों में धरेंगे मन में है जागी लगन
नमन किया है नमन करेंगे मन में हम होके मगन-2 ॥धृ॥

महावीर इस युग के ये हैं मोक्ष सुख के दाता ये हैं
संतों में है संत निराले बाहुबली है गुरु हमारे
शुभ कर्मों के योग से ही मिलता है गुरु का दर्शन
नमन किया है नमन करेंगे मन में हम होके मगन-2 ॥1॥

धन्य है गुरु भेष तुम्हारा भव सिन्धु से तारने वाला
उपदेशामृत देता सबको हरता, अविरत का अंधियारा
गुरु शरण ही शाश्वत जग में जहां पे हो जीवन चमन
नमन किया है नमन करेंगे मन में हम होके मगन-2 ॥2॥

संयम रथ पर आप पधारे रथ चालक हो आप हमारे
हर पल आयु लाभ हो गुरुवर चंदा सूरज कहते सारे
गुरु चरणों में कोटि वंदन श्रुतज्ञानी अर्पे सुमन
नमन किया है नमन करेंगे मन में हम होके मगन-2 ॥3॥

आरती

रचयिता : पू. श्री 105 आ. सुज्ञानी माताजी

(तर्ज : मेरे देश की धरती........)

गुरु बाहुबली की आरती कर लो सोया भाग्य जगा लो
गुरु बाहुबली की आ आ ऽ ऽ ऽ हो ऽ ऽ हो

तुम ज्ञानोदधि के हो मोती, देते सबको सम्यक् ज्योति
तुम महायोगी हो निर्विकार, सब भक्त करे तेरी भक्ति
गुरुवर की वाणी को सुनकर ऽ ऽ ऽ आध्यात्मिक सोना पालो
गुरु बाहुबली की आरती कर लो सोया भाग्य जगा लो ऽ ऽ ऽ

गुरु निराधार के है आधार, गुरु महामंत्र है णमोकार
गुरु ही गीता गुरु ही पुराण, गुरु वचनामृत आगम का सार
सच्चे मन से भक्ति करके ऽ ऽ ऽ परमात्म परम पद पा लो
गुरु बाहुबली की आरती ऽ ऽ ऽ

आचार्य श्री के चरण कमल में जो भी शीश झुकाता है
अद्भुत आनंद वो पाता है, स्वयमेव सुखी बन जाता है
ऐसे गुरुवर की छाया में ऽ ऽ ऽ जीवन को सफल बना लो
गुरु बाहुबली की आरती कर लो
सोया भाग्य जगा लो
गुरु बाहुबली की ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

जय जैनाचार्य

पंचम खण्ड

उद्‌बोधन

नरक यात्रा का पासपोर्ट

नरक यात्रा का 'पासपोर्ट' जिन्हें मिल जाता है, अहिंसा की महानता पर उनका भरोसा नहीं रहता है। भावना में, क्रिया में, सभी में हिंसा की प्रधानता उनके लिए अनिवार्य-सी हो उठती है और तब हिंसा में उन्हें आनन्द मिलने लगता है। रोजमर्रा की चीज बन जाने से-'हिंसा पाप है' इसकी कल्पना भी हृदय में पैदा नहीं होती। हृदय जो काला हो चुका होता।

महाराज अरविन्द भी नरकगामी तय-शुदा नरकगामी प्राणियों में से एक थे। मृत्यु के कुछ दिन शेष रहे तो उन्हें एक रोग हुआ। भयंकर रोग-दाह ज्वर! अजहद तकलीफ! दिनभर पलंग पर पड़े तड़पा करते, मारे वेदना के। दिन कट जाता तो रात कटना मुश्किल, उस पर मुसीबत यह की दवा कोई मर्ज का काट नहीं करती। वैद्य चौकड़ी भूले मृग की तरह स्तब्ध रह जाते। बड़े परिश्रम और सावधानी पूर्वक ग्रंथों का अध्ययन, विश्लेषण करते, नुस्खे निकालते, तैयार कराते और आशा लेकर उन्हें महाराज को देते। लेकिन यह देखकर दुःख और शर्म से गर्दन नीचे करनी पड़ती कि औषधि ने तिल भर भी लाभ नहीं पहुंचाया।

नामी गिरामी चिकित्सक थक गये। बहुमूल्य, दुर्लभ प्राप्त दवाएं कन्धा डाल गयीं, तो महाराज का दिल टूटने से न रह सका। यद्यपि जीवन का मोह उनका नहीं टूटा फिर भी इतना वह अवश्य समझ गये कि इस मर्ज से निजात पाना अब मुश्किल है। वे बचेंगे नहीं। यह सहज ही समझ जाता है कि ऐसी आशंका रोगी के लिए कितनी खतरनाक, कितनी तकलीफ देह और आवांचनीय होती है। वह जीवन की आशा को लेकर बड़ी से बड़ी पीड़ा सह सकता है लेकिन जहां जीवन से ना-उम्मीद हो जाता है, वहां उसे मामूली वेदना भी बर्दास्त नहीं होती। वेदना की भयानकता, अन्धकार में भविष्य की चिन्ता उसे ममहित किये बिना नहीं रहती। वह हर वैदय को, हर दवा को बड़े आशापूर्ण नजरों से देखता है, लेकिन नतीजा जब कुछ सामने नहीं आता, जरा भी विहवलता उन्नीस-बीस नहीं होती तो वह हताश हो, धैर्य खो बैठता है।

महाराज अरविन्द नरेश के पद पर समृद्धि और बाह्यप्रसादन सम्पन्न महल में लेटे हुए, नरक के दुखों का अनुभव कर रहे हैं। करीब-करीब जिन्दगी से ना-उम्मीद हो जाने पर आज उन्हें यह सोचने समझने का मौका मिला है कि-'पहला सुख निरोगी काया।' की कहावत गलत नहीं है शायद किसी भुक्त भोगी ने ही इसे महसूस कर दुनिया को दिया है।

मन उनका दुनिया में डूब रहा है। बहुत आरम्भ, बहुत परिग्रह के बोझ ने उन्हें नीचे गिरने के लिए मजबूर कर दिया है। अब, जबकि उनकी मृत्यु में लोगों को अधिक शक नहीं है, स्वयं उनके दिल में भी यकीन सा जम रहा है, वे गहरी माया ममता में फंसे हुए हैं। मौत से भयभत, आंखों में पानी आकर हर किसके आगे दीन बन जाते हैं। जीवन की भीख मांग उठते हैं। लेकिन निरीह मानव उनकी कामना को सफलता का रूप देने योग्य है ही कहां ? इलाज और तीमारदारी दोनों पैसे की मुहताज हैं और महाराज अरविन्द को इन दोनों की कमी नहीं है। वे राजा हैं दो कर्मा वरदार-आज्ञाकारी पुत्रों के पिता हैं और हैं एक लम्बे राज परिवार के संरक्षक। सैकड़ों की संख्या में चिकित्सक उनकी सहायता करते हैं। हजारों सेवक-सेविकायें उनकी परिचर्या सुश्रुषा में तत्पर मोरों की भांति आस-पास मंडराया करती हैं।

वे लेटे-लेटे वेदना की सांसें लिया करते हैं। आहें भरा करते हैं, नौकरों पर, ममतामयी आत्मीयों पर झल्लाया करते हैं। सोचा करते हैं-'काश'! मैं बच सकूं।

वे उस हर प्रयत्न को उद्यत हैं, जो उन्हें जीवन दान दे सके, भले ही इसके लिए अनेकों जीवन उन्हें होम देने पड़ें। जीवन की ममता ने उनके विवेक पर काबू पा लिया है।

आज दाह ज्वर की भयंकरता, असाध्यता प्रजा के बच्चे बच्चे की जीभ पर थूक की तरह कर रही है। राज परिवार का संकट अपनी सीमा पार करने की ताक में छल की अजमाईश कर रहा है।

हरिचन्द चुप रहा। पिता की वेदना ने उसकी धैर्य-शक्ति को पानी बना दिया था। हृदय दुखित था, गला बंध रहा था और पलक भीगे हुए थे।

देर तक वह देखता रहा, पिताजी की बेचैनी और अपनी अशक्यता स्तब्ध आंखें बन्द किये सोचने लगा-क्या उपाय किया जाये ? किसी की औषधि पिताजी की पीड़ा शान्त कर सकती है। कौन सी ऐसी बात बाकी है, जो नीरोगता के लिये लाभकर हो, अरोग्यता के लिये जरूरी हो ?

अरविन्द ने पुत्र की ओर देखा तो वेदना में और भी कसक पैदा हुई-मैं मरा, अब बचना मुश्किल! मेरा राज्य, मेरा वैभव, मेरे पुत्र, मेरा परिवार!....

दीनता से बेटे का हाथ पकड़कर बोले-'बेटा बेटा हरिचन्द! यह देखो मेरी बीमारी ने मेरे दाह ने मुझे मौत के घाट उतारना तय किया है। तुम मुझे बचाओ-मुझे मत मरने दो।

हरिचन्द दिल में रो रहा था-अब तक! लेकिन पिताजी ने उसकी आन्तरिकता को बाहर आने के लिए विवश कर दिया। वह फूट-फूट कर रोने लगा, बच्चों की तरह।

पर अरविन्द को उसका रोना बुरा न लगा। वे कहते गये-यह देखो शरीर की जलन ने ताजे कमल-पत्रों की क्या दशा कर रखी है ? दुनिया की शीतलता देने वाली वस्तुएं मेरी दाह को ठंडा नहीं कर पा रही। चंदन का लेप, रखते-रखते आग-सा दहक उठता है। बेटा! मेरी पीड़ा शान्त करने की कुछ और तरकीब करो।

क्या करूं, पिताजी! कोई प्रयत्न काम तो करता ही नहीं। जो आप कहें, वह मैं करने को तैयार हूं-हरिचन्द ने आंसू पोंछते हुये, रुद्ध कण्ठ से कहा।

तुम जानते हो हरिचन्द! कि मेरी विद्यायें, बुद्धि की भांति ही बेकार हो रही हैं। कुछ काम नहीं देतीं। अगर तुम मुझे अपनी आकाश गामिनी विद्या के द्वारा भोग भूमि पहुंचा सको, तो सम्भव है सीता नदी को छूकर आने वाली ठण्डी वायु मुझे चैतन्यता दे सके, मेरा दाह-ज्वर शान्त हो।

हरिचन्द को यह एक उपाय और सूझा, जो अरोग्यता की प्रबल आशा से पूर्ण था। वह बोला-ठीक! मैं ऐसी चेष्टा अवश्य करूंगा।

विधाता जिसे बिगाड़ने पर उतरा हो, इन्सान उसे बना नहीं सकता। भाग्य की अमिट रेखा को मिटाने का प्रयन्त कभी सफल नहीं हुआ। महाराज अरविन्द के भाग्य ने जो फैसला दिया था वह आखिरी और अकाट्य था। हरिचन्द की चेष्टायें व्यर्थ हुई। विद्याओं ने कर्म-भोग भोगने के लिये उसे भाग्य निर्णय पर छोड़ दिया। या दूसरे शब्दों में यह समझिए कि पाप-पुंज अरविन्द को वे इच्छित स्थान तक न पहुंचा सकीं, असमर्थ रहीं।

दिन बीतते गये। लेकिन दशा में जरा भी तब्दीली न हुई। राजसी चिकित्सा के बावजूद मर्ज बढ़ता चला गया। घोर संकट! अनेकों नरेशों को पराजित करने वाले अरविन्द आज स्वयं मृत्यु के आगे पराजय मान लेने की दशा में पड़े हैं। कुछ कम बात है यह ?

जी बहलाने, या पीड़ा की कठोरता को आसान बनाने-भुलाने के लिये नित्य नए-नए स्वांग-तमाशे महाराज अरविन्द के सामने हुआ करते हैं। कई बार ऐसा होता है, जब उनका पीड़ा-जनित आर्तनाद थम जाता है तो वह निश्चय ही मनोरंजन की एक सफलता कही जा सकती है।

उस दिन महाराज के पलंग के समीप ही दो परिन्दों का युद्ध हो रहा था। वह अधलेटे पलंग से देख रहे थे-रुचि के साथ। शायद सोचते भी जा रहे थे कि युद्ध, संघर्ष कितनी व्यापक चीज है कि पशु-पक्षियों तक में इसका समावेश है। सीधे साधे सैनिकों की तरह ही वह भी आक्रमण प्रत्याक्रमण जानते हैं। उनके भीतर भी वही रौद्रता काम करती दिखाई देती है, जो एक सैनिक के हृदय में होती है।

युद्ध चल रहा था। दोनों परिन्दों में काफी रोष और जोश मौजूद था। देर तक होने वाले युद्ध ने हालांकि दोनों को लहूलुहान कर दिया था लेकिन पराजय अभी एक ने भी न मानी थी। दोनों जमीन से तीन-तीन, चार-चार फीट ऊंचे उड़-उड़कर बचाते और वार करते थे।

दर्शक प्रसन्नता में डूब रहे थे कि इसी समय एक बूंद खून किसी परिन्दे की पूंछ के सहारे महाराज के तपते हुये शरीर पर जा पड़ा।

उपस्थित जन यह देखकर दंग रह गए कि मुद्दत पीछे महाराज के मुरझाये चेहरे पर आज प्रसन्नता की मृदु मुस्कान खेल रही है।

वह स्वस्थ व्यक्ति की तरह पलंग पर संभलकर बैठते हुये जोर से चिल्लाये-मिल गई, मेरे रोग की औषधि मुझे मिल गई, यह देखो। समीपस्थ चिकित्सकों ने पास जाकर देखा, महाराज की छाती पर रक्त की एक बूंद पड़ी है।

महाराज फिर बोले-स्वर में तीव्रता, खुशी और आशा थी-खश, चन्दन, कपूर-तुम्हारी किसी दवा ने मुझे इतनी तसल्ली नहीं दी, जितनी रक्त की एक बूंद से मुझे मिल रही है।

दूसरे दिन छोटा पुत्र कुरुविन्द पिता को देखने आया तो पिता को अपनी प्रतीक्षा में पाया। वे उसे बुलाने के लिये खबर भेजने वाले ही थे कि वह आ गया।

पूछा-पिताजी! आज्ञा ?

वह बोले-कुरुविन्द! यह तो अब साफ ही है कि मैं नित्यशः मृत्यु की ओर बढ़ रहा हूं। चूंकि दवाओं ने साबित कर दिया कि मर्ज पर फतह पाना उनके वश की बात नहीं। लेकिन कल अचानक एक चीज ऐसी मिली, जिसने मेरी जलन को काफी ठंडक प्रदान की है। मुझे विश्वास है कि अगर वह चीज काफी तादाद में इकट्ठी प्रयोग में लाई जाये तो निश्चय ही सेहत होगी।

कुरुविन्द को पिता के आरोग्य-लाभ की आशा भर ने प्रफुल्लित कर दिया है। वह सौत्सुक हो, उतावली के स्वर में बोला-वह क्या चीज है पिताजी ? क्या उसका प्राप्त होना कठिन है।

वह बोले-नहीं! वह चीज है खून। कुरुविन्द एकदम अचरज में बोला-खून ? खून का क्या होगा-पूज्यवर ?

खून मेरे रोग की दवा है, मेरे दाह को शान्त करने वाली वस्तु है, कल इसकी परीक्षा हो चुकी है। यही वह आखिरी औषधि है जो मुझे स्वस्थता दे सकती है। बाकी सभी दवायें परखी जा चुकी, किसी से कुछ लाभ नहीं। मेरे जीवन को आनन्दमय बनाने के लिए यही एक रास्ता शेष है। तुम एक वापिका में रक्त भरवा कर तैयार करो। मैं उसमें स्नान कर, क्रीड़ा कर निरोगता प्राप्त करूंगा। महाराज अरविन्द ने अपनी इच्छा सामने रखी।

इतना रक्त ? जिसमें आप क्रीड़ा कर सकें। वामी भर जाये ? उफ! कहां से आ सकता है-इतना खून ? कुरुविन्द ने व्यथित स्वर में कहा।

छिः! पिता की जिन्दगी की खातिर इतना खून भी तुमसे इकट्ठा नहीं हो सकता ? आंखें नटेरते हुए कड़े स्वर में अरविन्द ने कहा। कुरुविन्द चुप रहा।

अरविन्द फिर बोले, इस बार वाणी में जरा नरमाई थी-'वह तो खून है। आदमी कुछ करने पर जब उतरता है तो उससे कुछ बचता नहीं। आदमी सब कुछ करने की शक्ति रखता है' जानते हो कुरुविन्द ?

कुरुविन्द मौन!

अरविन्द थोड़ा हंसे, फिर कहने लगे आप ही आप। बेटे हो अभी। सुनों आस-पास के जंगलों में हिरन बहुत पाये जाते हैं। खून की समस्या उनके द्वारा सहज ही हल हो सकती है। एक बावड़ी तो क्या 100 बावड़ियां भी उनके रक्त से भरना मुश्किल नहीं है।

कुरुविन्द जेसे आसमान से गिरा, आहत स्वर में बोला-इतने हिरनों की हत्या ? बड़ी हिंसा होगी, बड़ा पाप लगेगा पिताजी।

लेकिन पिताजी को पुत्र की बातें न रुचि। वे अपने बचे खुचे विवेक को भी खो बैठे। क्रोध के मारे मुंह लाल हो आया। झल्लाकर बोले-हिंसा ? पाप ? .... दूर हो मेरी आंखों के आगे से नालायक लड़के। अहिंसा के मुकाबले में मरते हुए पिता की दशा पर दया नहीं आती तुझे ?

अरविन्द ने पुत्र की नैतिक कायरता को भाप लिया-विश्वास कर लिया कि अहिंसा के लिए हृदय में स्थान होते हए भी कुरुविन्द में इतना बल नहीं, इतना साहस नहीं कि मेरी आज्ञा को ठोकर मारकर जा सके। वह बोले-स्वर में तेज था-सत्ता मद से सृजित होने वाला दवंगमन याद रखो-कुरुविन्द! अगर मैं मर गया जिसकी कि अधिक सम्भावना है तो पिता की हत्या तुम्हारे सिर पड़ेगी और तुम इसके लिए जिन्दगी भर पछताओगे-समझे ?

वे क्षण भर रुके-

कुरुविन्द को कुछ कहने का अवसर देने के लिए। पर कुरविन्द का मन जैसे भीतर से उमड़ रहा था, वह एक शब्द भी न बोल सका।

वे फिर कहने लगे-'भाग्य से अचानक एक उपाय सामने आ गया है, जिससे जीवन की आशा बंधती है। जबकि सारी चेष्टायें निर्मूल प्रभावित हो चुकी हैं। अब तुम्हारे हाथों में है-बचालो, चाहे मार डालो। मैं स्वयं उठने-बैठने तक की शक्ति नहीं रखता, क्या कर सकता हूं ?'

पके फोड़े की तरह कुरुविन्द का मन दुःख रहा था। पिता की असाध्य बीमारी के सबब महीनों से वह पेट भर रोटी नहीं खा रहा, नींद भर सोना चिन्ताओं के सुपुर्द कर चुका है और आज वह अपनी खुली आंखों से देख रहा है-पिता की दीन दशा। जीवन के लिए मचलती हुई आंखें। सुन रहा है-वेदना से खण्ड-खण्ड दीनतामय वाणी।

हिचकी भर रोने लगा वह। अरविन्द ने जरा पलंग से उचक कर कुरुविन्द के सिर पर हाथ रखते हुए कहा-'रोओ मत बेटा! बोलो, क्या मुझे जीवन की भीख दोगे?'

कुरुविन्द ने आंसुओं से आरक्त आंखें पोंछते हुए उत्तर दिया-'जा रहा हूं पिताजी!'

दसियों घुड़सवारों के साथ, धनुष-बाण, बख्तर से सुसज्जित कुरुविन्द चला जा रहा था, बन बीहड़ों में, हिरनों की खोज में! पर, सच्चाई यह थी कि वह स्वयं खोया हुआ था। तनिक भी उसे मालूम हो रहा था कि वह कहां आ पहुंचा और कहां उसे जाना है। वह चल रहा था-बगैर अपनी इच्छा के।

सैनिक सभी राजकुमार का पदानुशरण कर रहे थे। किसमें इतना ताव था कि पूछ सकता-'कुमार कहा जा रहे हैं?' पैसे पर अपनी आत्मा बेचने वालों में इतना साहस हुआ भी कब है?

पिता की प्रेरणा पर, आज्ञा पर और अपनी आत्मिक दुर्बलता पर कुरुविन्द इतना बढ़ जरूर आया है, लेकिन अन्तरंग उसका अभी भी उसके किये का साथ नहीं दे रहा। वह बड़े असमंजस में पड़ा है। सोचता है-पुत्र का धर्म पिता की आज्ञा में पड़ा है। सोचता है-पुत्र का धर्म पिता की आज्ञा में चलना उनकी सेवा करना, उन्हें हर प्रकार सुख देना, वगैर तर्क के उनके इशारे पर दौड़ना भर हो सकता है। उस पर भी वे जैसी दशा में पड़े रह कर, जिस मांग को दीनता पूर्वक पेश कर रहे हैं, वह अविचारणीय नहीं है मृत्यु शैया पर लेटा हुआ व्यक्ति जीवन की महत्ता को जिस गहराई के साथ देखता है, चलते-फिरते मानव की नजर वहां तक नहीं पहुंचती। वह अपने जीवन के लिए संसार की सारी समृद्धि को लुटा सकता है; अगर उसके काबू में हो। फिर हिरनों के प्राणों की परवाह पिताजी को हो तो कैसे?

विचारों का काया-कल्प। वे अपने ध्येय पर दृढ़ हैं। उनका तजवीज किया हुआ रास्ता सही है-यह माना कि उनकी आज्ञा का पालन करना मेरा फर्ज है। लेकिन कर्ज की अदायगी के पहले यह सोचना भी तो मेरे विवेक का तकाजा है कि वह आज्ञा गलत तो नहीं है। पाप पूर्ण अकल्याणकारी तो नहीं है। मानव अपने स्वार्थवश कभी दूसरे का अहित करते नहीं झिझका। भले ही पुत्र पिता या दूसरा कोई प्यारा ही व्यक्ति क्यों न रहा हो। सम्भव है, उनके संचित पाप ने ही इस घोर पाप के लिए प्रेरित किया हो, उसी ने उनके भीतर खून की प्यास पैदा की हो। न मैं इस जघन्य कर्म को कभी तैयार नहीं। अनेकों दीन, निरपराध हिरनों के खून से हाथ रंग कर हत्यारा कहलाऊं-यह मेरी आत्मा में सिहरन पैदा कर देता है। मैं थर-थर कांप उठता हूं। न, हरगिज यह मुझे बर्दाश्त नहीं।

और तभी कुरुविन्द की मानसिक उत्तेजना जैसे जगा देती है। वह चौंक कर कह उठता है-'अरे मैं जा कहां रहा हूं, इस शिकारी के रूप में'?

विचारों के सजन-स्वप्नों से मुक्त होकर कुरुविन्द देखने लगता है, इधर-उधर और देखता है कि परम शान्त वैराग्य, विभूषित साधु समीपस्थ निर्मल-स्थल पर विराजे हुए हैं।

श्रद्धा से मस्तक नव जाता है। कल्याणमय योगीश्वर के पाद-पद्मों में बैठकर कुरुविन्द शान्ति लाभ लेता है, उद्वेलित हृदय में भक्ति की मन्दाकिनी प्रवाहित हो उठती है।

अवधिज्ञानी मुनिराज कहते हैं-'कुरुविन्द! क्यों व्यर्थ ही हिंसा के मार्ग पर अग्रसर होते हो? आत्म हिताभिलाषी के लिए हिंसा की प्रवृत्ति शुभ शकुन नहीं है। तुम्हारे पिता अरविन्द की आ पहुंची है। वे अल्पकाल में ही नरक जायेंगे, कोई शक्ति उनके रोकने में समर्थ नहीं होगी। दीनों के रक्त से अहिंसा की पावनता को भंग कर, अपनी आत्मा को रसताल मयी न बनाओ। कुरुविन्द! यह तुम्हारी उन्नति का दयोतक है।

और सच, तभी कुरुविन्द का निश्चय अनिश्चय की द्विविधा में पड़ा हुआ हृदय निर्णय की जंजीरों में कस गया।

लौट पड़ा वह! अहिंसा की पुनीत दृढ़ता के साथ। अब उसके सामने दूसरी समस्या थी-'मृत्यु शैया पर पड़े पिता को किस तरह सन्तोषित किया जाये ?' लेकिन थोड़े विचार-परिश्रम ने घोषित किया कि समस्या अधिक जटिल नहीं है। जरा सा छल, इसका हल निकाल सकता है।

कुरुविन्द ने समस्या सुलझा ली थी और वह इस पर प्रसन्न थे।

रक्त-वापी तैयार है। महाराज अरविन्द उसमें तैर रहे हैं। स्नान कर रहे हैं और कर रहे हैं मनमानी क्रीड़ा। खून की ग्लानि उन्हें नहीं है। कभी वह मुंह में भरकर कुल्ली करते हैं, कभी पी जाते हैं दो चार घूंट।

रक्त वापी के सीमित क्षेत्र में लहरा रहा है-कैसा घृणित, कैसा भयानक ? पर महाराज को बुरा नहीं लग रहा। वे अनुभव कर रहे हैं कि उनका रोग उनकी दाह क्रमशः कम होता जा रहा है। यकीन सा जमता जा रहा है-दिल पर कि वे मरेंगे नहीं, अवश्य अरोग्यता प्राप्त करेंगे।

हृदय में प्रसन्नता है कि पुत्र ने उनकी आज्ञा का पालन कर उन्हें बचा लिया, मरने में शक ही क्या था ? और आनन्द मग्न हो डुबकी लगा लेते हैं। अनेक प्रजानन वापी के समीप खड़े देखते रहे हैं अपने स्वामी की दाह शान्त लीला।-खून से लबालब वापिका ......!!!

और उसी समय सच्चाई प्रकट होने के लिए व्यग्र हो उठती है। छल की आयु अल्प जो होती है। वास्तविकता पर अधिक देर तक पर्दा डाल कौन सकता है दुनिया में आज तक।

न जाने कौन, उन्हीं दर्शकों में से एक कह उठता है, महाराज सुनते हैं-तुम रक्त की वापी समझ रहे हो इसे ? खून नहीं है, लाख का रंग तैयार कराकर भरवा दी है। खून इकट्ठा करने में जो भी हिंसा होती, राजकुमार कुरुविन्द ने इस छल के द्वारा घोर पाप से मुंह चुराया है। समझे ?

महाराज अरविन्द के भीतर का दाह भड़क उठा। वह मारे क्रोध के थर-थर कांप उठे। बड़बड़ाने लगे आप ही आप-रक्त नहीं है ? लाख का रंग है यह ? छल! धोखा!! मेरे साथ ? मेरी जिन्दगी के साथ ? दुष्ट! अहिंसा के मुकाबले में पिता के प्राणों की परवाह नहीं करता ? हत्यारा कहीं का! ठहर, मैं इस विश्वासघात का तुझे फल चखाता हूं।

और वह चले, क्रोध में तने आरक्त में लथपथ, छुरी लेकर अहिंसा पालक कुरुविन्द का खून करने दरबार की ओर।

लोग एक ओर हट गये-रास्ता देने के लिए। वापी से निकल कर वह बढ़े, चार-छः कदम कि ठोकर लगी, पैर फिसल गया-चिकना फर्श, लाख के रंग में भीगे पैर, न सधा बीमारी से डग-मग, दुर्बल शरीर। धड़ाम से गिरे औंधे मुंह, छुरी पंट में आर-पार।

खून का फुहारा चल पड़ा। दर्शक चकित, दुखित, स्तब्ध!! दुखान्त!!!

हरिचन्द और कुरुविन्द दोनों ने देखा-पिताजी निर्जीव पड़े हैं। मुंह पर रौद्रता है, आंखों में प्रतिहिंसा की भावना। चारों ओर उन्हीं के शरीर का खून फैला हुआ है, जो होठों तक जा लगा है। नहीं कहा जा सकता, इतना खून उनकी प्यास बुझा सका है या नहीं।

बारह वर्ष

धर्ममयी देशना समाप्त होते ही एक जिज्ञासा लिए भक्ति पूर्वक बलभद्र ने भगवान नेमिनाथ को नमस्कार किया और अपने मृदुलता की मूर्ति कोमलतम करों को मुकलित कमल सा किये ही उन्होंने पूछा-विश्ववंद्य! सुन्दरतम द्वारिका जिसकी सृष्टि कुबेर ने की, ऐसी ही सुसज्जित और सुन्दरतम कब तक बनी रहेगी ? धर्म ग्रन्थ तो केवल कृत्रिम मनुष्यों द्वारा निर्मित वस्तुओं के विनाश का उल्लेख करते हैं, क्या द्वारावती सचमुच ही शाश्वत और सनातन है ? प्रश्न पूछने के साथ ही बलभद्र की आंखों के आगे द्वारिका का अपार असीम वैभव आ गया।

यह कहकर वे कुछ रुके। फिर बोले-अथवा द्वारिका भी लोक के लोगों और क्षितिजचुम्बी भवनों की भांति, अवसर्पिणी काल की अवधि के अनन्तर प्रलयकालीन वारिधारा द्वारा पारावार में निमग्न हो जावेगी। कहकर बलभद्र ने अपने अनुज श्रीकृष्ण की ओर देखा, वे द्वारिका के अधिपति थे जो अवनत शिर होकर अपनी नगरी की कुशलतामयी कामना के लिये चिन्तित थे।

पूज्यपाद! जो जन्म लेते हैं वे नियम से मरते हैं। यह आपकी दिव्यध्वनि का संदेश समूचा संसार मानता है। मैं कृष्ण पर अत्यधिक अनुरक्त हूं और कृष्ण मुझ पर। क्या हम दोनों का मेल-मिलाप भी इसी भांति ही सर्वदा बना रहेगा ? क्या अपने इस दुर्लभ मानव-जीवन में मैं मोह के जाल को तोड़कर संयम को अंगीकार न कर सकूंगा ? यह कहकर बलभद्र अपने मानस में एक विशेष प्रकार की व्यथा और वेदना लिये चिन्तित और मौन हुये तथा उत्तर के उत्सुक।

भगवान नेमिनाथ दिव्यदृष्टा और दूरदर्शी थे वे केवलज्ञानी और सर्वज्ञ थे। वे समवशरण की सम्पूर्ण विभूतियों से सम्पन्न थे और अनन्त दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त सुख और अनन्त वीर्यवान थे। सुर और असुर, स्त्री और पुरुष, पशु और पक्षी आदि सभी उन्हें श्रद्धा संयुक्त प्रणाम करने में गौरव का अनुभव करते थे। यादव श्रेष्ठ भगवान नेमिनाथ बलभद्र के पूर्वोक्त प्रश्नों को सुनकर मन ही मन मुस्कराये और गम्भीर दिव्य ध्वनिमयी वाणी में बलभद्र के प्रश्नों का उत्तर देने के लिये बोले-बलभद्र आज से बारह वर्ष बाद-जब यादव कुमार मदिरा पान कर मुनि द्वैपायन के क्रोध की अग्नि प्रज्ज्वलित करेंगे तब उसके ही द्वारा द्वारिका का दहन होगा। कहकर तीर्थंकर नेमिनाथ ने बलभद्र और श्रीकृष्ण की ओर दृष्टि डाली। वे दोनों भाई मन ही मन कुछ विचार कर रहे थे। उनके मस्तक अब झुक गये थे।

द्वारिका दहन के बाद जब तुम महावन में कृष्ण को पीने के लिये पानी लेने जाओगे तब ही जरत्कुमार कृष्ण को सोता देख मृग के धोखे में बाण से प्राण लेगा। अपना अप्रिय अरुचिकर भविष्य सुनकर कृष्ण चिन्तित हुए और बलभद्र ने बीच में ही पूछा-फिर ?

कृष्ण की मृत्यु के बाद जब तुम अपने सारथी सिद्धार्थ के जीव देवात्मा द्वारा समुचित सम्बोधन पाओगे तो कृष्ण के शरीर का मोह छोड़कर मुनि हो जाओगे। केवल इतना ही नहीं बल्कि विषय वासनाओं से विरक्त होकर जितेन्द्रिय परमहंस सरीखे सम्पूर्ण संयमी और उच्चकोटि के योगीश्वर बनोगे।

यह सुनते ही कृष्ण और बलभद्र के साथ अनेक देवराजों और नरेशों, आचार्यों और उपाध्याओं गृहस्थों और गृहणियों ने श्रद्धा सहित अपने मस्तक झुका दिये। वे सभी अपने मन में जानते थे-तीर्थंकर की वाणी तीनों कालों और तीनों लोकों में कदापि असत्य नहीं होती।

कुमार द्वैपायन रोहिणी का भाई था और बलभद्र का मामा। ज्यों ही उसने अपने द्वारा द्वारिका की बात सुनी त्यों ही वह सांसारिक सुख साधनों से विरक्त हुआ और विविध विषय वासनाओं का परित्याग कर ब्रह्मचर्य के लिए उद्यत हुआ। उसने बाईसवें तीर्थंकर नेमिनाथ से दीक्षा ली व मुनियों के महाव्रतों की ओर प्रवृत्त हुआ। तीर्थंकर की अनुमति से वह सघन कान्तार की ओर चल दिया। अब उसने बारह वर्ष बाद ही द्वारिका में आने का निश्चय कर लिया था और 'न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी' वाली लोकोक्ति के आधार पर तीर्थंकर की दिव्य सत्य संयुक्त वाणी को भी असत्य सिद्ध करने का दुस्साहस और संकल्प भी उसने कर लिया था। वह वास्तविक स्थिति और व्यक्तिगत जीवन की परिस्थिति को भूलकर तपस्या करने लगा और अपने मत से प्रशंसा के लिये कषाय व काया का शोषण भी करने लगा।

नव में नारायण श्रीकृष्ण ने देखा-कुमार द्वैपायन मुनि हो गया। वह भगवान नेमिनाथ के शब्दों में आज से बारह वर्ष बाद अपने द्वारा द्वारिका के दहन की सूचना दे गया। वे मन ही मन अपनी द्वारिका और प्राणप्रिय प्रजा जनों की रक्षा के लिए चिन्तित हुये।

जरत्कुमार श्रीकृष्ण का अनन्य प्रेमी बन्धु था और कृष्ण भी जरत्कुमार को अपने प्राणों से किसी प्रकार कम नहीं चाहते थे।

युगधर्म प्रवर्तक तीर्थंकर की दिव्य देशना को सुनते ही जरत् ने कृष्ण की ओर देखा और अपने अन्तर में मूक जिज्ञासा लिए नयनों के संकेत में पूछा-कृष्ण! तुम्हें विश्वास है, तुम्हारा भाई जो तुम्हें प्राणों से बढ़कर चाहता है, अपने हाथों तुम्हें मारकर जीवित रहेगा? इस कथन के भाव के साथ ही जरत्कुमार की आंखों में अश्रुबिन्दु छलक आये जो उसकी अन्तर्वेदना को अभिव्यक्त किया।

जरत् के प्रश्न के प्रत्युत्तर में नयनों के संकेत से कृष्ण ने कहा-नहीं जरत्! मुझे तुमसे ऐसी आशा नहीं। जरत्कुमार हम तुम तो वंशज होकर भी सहोदर हैं। इस कथन के बाद ही उन्हें विचार आया-'भूल से मृग के धोखे में सम्भव है जरत् के द्वारा ही मेरी मृत्यु हो।' नारायण अपने प्राणों का मोह लिये जीवन के लिए चिन्तित हुए और कुछ विषण्ण भी।

जरत्कुमार ने श्रीकृष्ण के मानस की भावना को पहचान लिया। उसने बन्धु के कल्याण के लिए बन्धु का वियोग ही सहना स्वीकार किया। वह बिना कुछ किसी के कहे सुने उठा और महावन की ओर जाने लगा। जरत्कुमार की मुखमुद्रा को विलोक और उसे जाते देखकर कृष्ण ने पूछा-'कहां जाते हो?'

'वहां जहां मेरा कोई मुख न देख सके' जरत्कुमार ने जाते-जाते उत्तर दिया।

उस समय जरत् की आंखों से आंसुओं का निर्झर बह रहा था। उसके पैर भारी हो रहे थे और हृदय रो रहा था।

कृष्ण ने जरत् को न तो जाने से रोका और न जाने की अनुमति ही दी। नीरवता के आश्रय में मति और मन से विवेक लिए कृष्ण ने समझा-'जरत् गया और मेरी मृत्यु कह गया।'

'अब क्या किया जाय?' कृष्ण ने बलदेव से पूछा।

मेरी समझ से तो अब द्वारिका चलें। नारायण और नागरिक धर्म की आराधना करें। सम्भवतः इससे सन्तप्त आत्माओं को सुख, सन्तोष व शान्ति मिले। बलभद्र ने ये विचार सुझाव के रूप में श्रीकृष्ण से कहे। श्रीकृष्ण बलभद्र के विचारों से सहमत हुए। वे तीर्थंकर नेमिनाथ को नमस्कार करके अनुचरों और नागरिकों से घिरे हुए द्वारिका चले गये।

अपनी राजधानी द्वारिका में आते ही नारायण ने सन्तरी को आदेश दिया। सन्तरी की गुंजायमान ध्वनि द्वारिका के एक-एक भवनवासी ने सुनी-

'शराब पीकर मनुष्य अपने आप को भूल जाता है। अतएव नागरिक शराब पीना छोड़ दें और शराब के सभी साधन तथा पात्र कदम्बगिरि के कुण्ड में नष्ट-भ्रष्ट कर दें।

आज से बारह वर्ष बाद-

सम्भवतः निश्चित ही द्वारिका का दहन हो, अतएव नागरिक धर्म की आराधना में तीन हों तथा जो नागरिक दीक्षा लेना चाहें, उन्हें भी सहस्रा सहस्रा बार आदेश है।

यह राजकीय आदेश सुनते ही प्रद्युम्न और भानु, रुक्मिणी और सत्यभामा, राज्य पुरोहित और नगर के कितने सम्भ्रान्त श्रष्ठि, गणमान्य नागरिक विषय और वासनाओं से विरक्त होकर तपोवन की ओर चल दिये। वे लोक से आलोक में जाना चाहते थे।

मुझे भी भगवत् भजन के लिए, आत्म चिन्तन के लिए अवकाश दें। सिद्धार्थ ने अपने स्वामी बलभद्र से कहा। तुम्हें भी आज्ञा है सिद्धार्थ। बलभद्र ने अपने सारथी से कहा-जब देव बनो तब मुझे नहीं भूलना, कहकर उन्होंने एक दीर्घ गहरी निश्वास ली। उसमें उनके अनागत की चिन्ता झलकी। सिद्धार्थ ने अपने स्वामी का अभिप्राय समझा और प्रत्युत्तर में स्वीकृति सूचक सिर हिला दिया और अपनी स्वामि भक्ति का परिचय दिया फिर नमस्कार कर वह राज्य प्रकोष्ठ से बाहर हुआ।

बारह वर्ष व्यतीत होने के बाद-

मिथ्यादृष्टि, द्रव्यलिंगी मुनि द्वैपायन ने मन में विचारा-निश्चय ही बाईसवें तीर्थंकर की दिव्य ध्वनिमयी बारह वर्ष बाद द्वारिका दहन वाली वार्ता असत्य सिद्ध हुई है और उसके परिणाम स्वरूप मैं द्वारिकावती दोनों ही बारह वर्ष समाप्त होने के बाद भी सुरक्षित हैं। सम्भव है यह तीर्थंकर की दिव्य ध्वनि पर हुण्डावसर्पिणी काल का प्रभाव हो।

उस समय द्वैपायन कदम्ब कानन में प्रविष्ट हो चुका था जो द्वारिका से विशेष दूरी पर नहीं था। उसने वहीं पर आतापन योग धारण करने का निश्चय किया वह कार्योत्सर्ग संयुक्त साधना में लवलीन हुआ।

कृष्ण के तनय शम्भुकुमार और अन्य यादवगण जब तृषा को नहीं रोक सके तो उन्होंने कदम्बकुण्ड की कादम्बरी को जी भरकर पी लिया। उस समय उन सबके तनु स्वेद से गीले हो रहे थे। वे सब कानन की क्रीड़ा से थक गये थे। कादम्बरी कृतकृत्य हो गयी थी बारह वर्ष की उपेक्षिता ने आदर पाया। कण्ठों के नीचे उतरते ही यादवकुमारों पर अपना प्रभुत्व जमाना शुरू कर दिया। कादम्बरी आखिरकार आद्योपान्त सार्थक कादम्बरी ही थी। बारह वर्ष पुरानी होने से तो वह और भी अत्यधिक अवगुणमयी हो गयी थी।

अब यादवकुमार एक दूसरे की ओर अरुण नयनों से घूरने लगे थे। वे उन्मत्त सरीखे द्वैपायन की ओर बढ़े। उनके पृष्ठ भागों पर तुणीर सुशोभित हो रहे थे और कोमल निष्णात करों में धनुष थे। वे सब लक्ष्यों को बेधने में सिद्धहस्त हैं। उन्होंने कई वर्षों तक अनेक आचार्यों से लक्ष्यबेध की शिक्षा ली थी।

यह वही द्वैपायन मुनि हैं, जिनके द्वारा अनागत में द्वारिका का दहन होगा। कृष्ण के तनय शम्ब ने द्वैपायन की ओर संकेत करके कहा। उस समय उसे तीर्थंकर की देशना की स्मृति आ गयी थी। वह दिव्य ध्वनि की सत्यता को मुक्तकण्ठ से स्वीकार

करता था और अन्य यादव कुमार भी। कुमार ने आग्नेय नेत्रों से द्वैपायन को देखा, जैसे वे द्वारिका का दहन करने वाले जीवित ही दहन कर देंगे। अथवा जैसे समुचित समय पर साधनों के प्रयोग की बेला ही आ गयी है और अब अधिक समय तक होनहार का पलना दुर्निवार हो गया हो।

'हूं।' उनमें से कुछ ने कहा। हमारे धनुषों से छूटे बाण द्वारिका के दहनकर्ता का रुधिर पान करेंगे और उसे परलोक में पहुंचा देंगे। कहने के साथ ही कुछ कुमारों के बाण द्वैपायन का रुधिर पीने लगे। वे सब लक्ष्यबेध में अतीव निष्णात थे। उनके बाण व्यर्थ न हुए। वे अमोघ थे।

कुछ यादव कुमारों पर कादम्बरी ने अपना विशेष प्रभाव जमा लिया था। वे अपने दायित्व का आगा पीछा भूल गये। उन्होंने उन्मत्त जैसा अनर्गल प्रलाप करना प्रारम्भ किया। उनमें से कुछ ने द्वैपायन पर पत्थर भी फेंके और कुछ ने लात-घूंसे-मुक्के भी जमाये। वे सब द्वारिका के सम्भ्रान्त नागरिक थे। उन्होंने जी भरकर द्वारिका दहन करने वाले से बदला लिया।

शायद यह काल और कादम्बरी की कला की कसौटी थी। द्वैपायन मुनि अवश हो गये थे। परन्तु वे मनमार नहीं थे। वे यादव कुमार के अमोघ आघातों से विचलित हो गये और विचारने लगे-मैं तो मुनि होकर बारह वर्ष बाद अपनी मातृभूमि द्वारिका के दर्शन के लिए आया था और यहां आसीन होकर अपनी आत्मसाधना की अभिवृद्धि कर रहा था परन्तु इन दुष्ट लोगों ने तो मुझ मुनि को बिना प्रयोजन ही दुःख दिया, जो अब असह्य हो रहा है। मैं मुनि हूं तो क्या इसलिए कि इन नीचों के बाणों और प्रहारों का लक्ष्य बनूं? नमस्कार करना और श्रद्धांजलि चढ़ाना तो दूर रहा और उल्टा उपासना में विघ्न डाला। मैं इनसे प्रतिशोध लूंगा। विचारने के साथ ही द्वैपायन के नयन अरुण हो गये। उनके सुमुख ने ज्वालामुखी पर्वत का रूप धारण कर लिया। उनका कोप अब बाहर आकर अभिव्यक्त हुआ। वे सस्वर सत्वर बोले-इनको, इनके परिवार को, इनके राज्य को, इनकी नगरी को मैं निश्चय ही अब नष्ट-भ्रष्ट कर दूंगा, ये मुझे क्या समझते हैं? मैं क्या हूं? यह इन्हें समझा दूंगा।

एक यादव वंशी ने उनकी आन्तरिक अभिलाषा अच्छी तरह समझ ली। वह उनका रौद्र वेष देख और अस्फुट कोष मिश्रित वाणी सुन भयभीत हुआ। उस पर कादम्बरी का अभी विशेष स्वत्व न था। वह वायु सा वेग लिये द्वारिकाधीश की ओर दौड़ा। उसके मुख से सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनकर, श्रीकृष्ण और बलदेव सामान्य पुरुषों सरीखे पैदल दौड़े आये। वे अपनी नगरी की रक्षा के लिए चिंतातुर हो। जिस अनिष्ट की आशंका उन्हें तीर्थंकर नेमिनाथ की भविष्यवाणी से थी, उसका अंकुर उगता देखकर वे बड़े खेद खिन्न हो रहे थे। कृष्ण और बलभद्र ने द्वैपायन मुनि को समझाया परन्तु वे उन्हें पूर्णतया न समझा सके और न नगरी की रक्षा-वचन पा सके तथा न यादव कुकार्य के बदले में क्षमा ही पा सके। उन्होंने अपनी असफलता पर एक दीर्घ निश्वास ली और मन मारकर जीवित ही मृतपाय हुए।

हां, द्वैपायन ने उनके अत्यधिक अनुनय विनय पर रीझकर बदले में दो उंगलियां दिखा दीं और उन्हें अभयदान दिया जिसका अर्थ उन्होंने समझ लिया कि अब उन दोनों के सिवाय कोई भी तीसरा व्यक्ति द्वारिका में जीवित नहीं बचेगा। वे दोनों भाई द्रुतबुद्धि से होकर द्वारिका की ओर आये एक विवशता और विडम्बना लिए अन्तर्वेदना को छुपाये।

निशीथ के सन्नाटे में द्वारिका वासियों ने भयंकर अशुभ स्वप्न देखे। उनका रहस्य समझकर कुछ धर्म की आराधना में तत्पर हुए और कुछ कौशल से इधर उधर जा छिपे, इस आशा से कि शायद वे जीवन के लिए और बच जावें।

दूसरे ही दिन द्वैपायन ने अपने बाम स्कंध से अग्नि प्रज्ज्वलित की और द्वारिका का दहन करना प्रारंभ किया। वन्हि की ज्वाला वायु वेग सी बढ़ी, अविरक्त, अविरत, अनबरत। पशु-पक्षी, स्त्री-पुरुष, बालक, युवा, वृद्ध, मकान, मंदिर आदि सभी धू-धूकर जलने लगे।

यह आपत्ति देख जनता द्वारिकाधीश की शरण में पहुंची, परन्तु वे स्वयं निरुपाय थे। बलभद्र ने कोट तोड़ समुद्र का सलिल लेने का प्रयत्न किया और जलती द्वारिका को बचाना चाहा परन्तु दुर्भाग्य से समुद्र का सलिल भी मिट्टी के तेल का स्त्रोत सिद्ध हुआ तो वे और भी घबड़ाये। उन्होंने होनहार अमिट समझी।

कृष्ण और बलभद्र की अपनी जननी और जनक पर आशा से भी अधिक आस्था और श्रद्धा थी। उनकी रक्षा के लिए उन्होंने रथ में बैठा अनेक गज, अश्व जोत दिये परन्तु रथ टस से मस न हुआ। यह देख दोनों भाई स्वयं रथ को खींचने लगे। इनके बल से रथ तो चला परन्तु दुर्भाग्य से द्वारिका के द्वार बन्द हो गये। उसी समय द्वैपायन की कोपमयी तीव्र ध्वनि सुनाई दी।

'तुम दोनों ही बचोगे और कोई भी तीसरा नहीं, समझे!' यह सुन वे दोनों भाई अपने अंतर में विस्तृत विवशता और विशाल विडम्बना लिये अपने माता-पिता को आखिरी बार नमस्कार कर उनकी ही प्रेरणा से चले आये। उन्होंने उन्हें सहर्ष विदा दी और भावी जीवन के लिए शुभ कामना प्रकट की। द्वारिका जलती रही और उनके निवासी भी जलते मरते रहे। लगातार छः महीने तक द्वारिका जली। कुछ भी शेष नहीं बचा।

महावन में पहुंचने के उपरान्त-'भैय्या! मुझे बड़े जोर की प्यास लगी है।' कृष्ण ने आर्त्तस्वर से कहा-अब तो मैं एक कदम भी और आगे नहीं चल सकूंगा।

'तुम यहां बैठो!' कहकर बलदेव ने एक छायादार पादप की ओर संकेत किया और बोले-मैं अभी पानी लेकर आया। कृष्ण कुछ देर विश्राम करने को लेटे और बलभद्र धनुष से छूटे तीर की भांति पानी लेने चले। कृष्ण का पीताम्बर पवन ने उड़ाया तो इधर कृष्ण निद्रादेवी की गोद में सो गये और उधर दूरस्थ पारधी ने समझा, मृग कान हिला रहा है। यह सोचकर वह एक क्षणभर के लिए रुका फिर कृष्ण के पैर में पद्म के चिन्ह को जब उसने मृग के नयन जैसा ही समझ लिया तो अपने शिकार का निश्चय किया।

बाण ने कृष्ण का चरण बेध दिया। केशव ने पीड़ा से आकुल होकर चारों ओर देखा परन्तु वहां किसी को भी नहीं देखकर कुछ साहस को संचय करके आवाज लगाई-

'वन के गुप्त शत्रु! प्रकट हो और अपना नाम कुल, जाति बता। यह भी कह कि तूने मुझसे इस अवस्था में बदला क्यों लिया ?'

पारधी जरत्कुमार ने कृष्ण की आवाज पहचान ली। अब न उनके सम्मुख ही जाते बनता था और न उनसे दूर भागते ही बनता था। अपनी अर्द्ध इच्छा अनिच्छा के बीच जरत् कृष्ण की ओर चला और उनके चरणों पर गिरकर बोला-मुझे क्षमा करो भैया! मैं तुम्हारा वंशज जरत् हूं।

'जरत्।' कहकर कृष्ण ने लेटे लेटे ही उसे उठा लिया और अपनी छाती से लगा लिया। कृष्ण और जरत् दोनों ही रो रहे थे। आंखों के आंसू उनकी अपार वेदना अभिव्यक्त कर रहे थे। कुछ देर बाद संयत सुस्थिर हो कृष्ण जरत् से कहने लगे-द्वारिका जल गई, परिजन जल गया, मैं भी थोड़ी देर का मेहमान हूं। कौस्तुभमणि ले जाओ। पाण्डवों से मिलो। वे तुम्हें राज्य देंगे और गौरव भी। समझे जरत्! जो कुछ हुआ और हो गया, उसकी चिन्ता न करो। दादा के आने के पहले ही चले जाओ, नहीं तो हमारे वंश में कोई भी जीवित नहीं रहेगा।

कृष्ण के चरण से जरत् ने बाण खींचा तो कृष्ण की अपार वेदना 'आह' में अभिव्यक्त हुई। आदेश पाकर कृष्ण को नमस्कार कर जरत् तो चला गया। परन्तु कृष्ण अपने को नहीं संभाल सके। उन्होंने अपनी अंतिम बेला समझकर तीर्थंकर नेमिनाथ को नमस्कार किया और परम्परागत णमोकार मंत्र पढ़ा। उनकी ऐसी ही अवस्था अधिक देर तक नहीं रही वे वेदना लिए व्याकुल हुए तो मृत्यु ने आगे बढ़कर उनकी वेदना का विनाश कर दिया।

बलभद्र सरोवर में उतरे और कुछ जल अपनी अंजलि में भरकर पिया। कुछ जल कमल के दल से कृष्ण के लिये लेकर वापस आये। कृष्ण को सोता देख बोले-भैय्या! जागो!! मैं पानी ले आया हूं। यह कहकर बलभद्र ने श्रीकृष्ण को दो तीन बार जगाने की चेष्टा की परन्तु जब बलभद्र के कृष्ण सोते से नहीं जागे तो उन्होंने सचेत होकर पीताम्बर खींचा और कृष्ण का वह चरण देखा, जिसमें घाव था, अब उस पर मक्खियां भिन-भिना रहीं थीं।

बलभद्र ने सिंहनाद कर कहा- अनुज के अरि सामने आ मुझसे युद्ध कर तुझे चुनौती है। बलभद्र के इन शब्दों से कानन तो अवश्य गुंजित हुआ परन्तु उनके सम्मुख कोई नहीं आया। अब उस महावन में कौन था ? जो उनके सामने आता। अब तो बलभद्र ही एकाकी और निरुपाय सरीखे थे।

बलभद्र के मूक विलाप में वनश्री ने स्वर मिलाया परन्तु वह भी उन्हें सान्त्वना नहीं दे सकी। बलभद्र ने कृष्ण को खिलती सुषमा उजली धूप, गाते पक्षी, झूमते तरुवर दिखाना चाहे परन्तु कृष्ण ने आंख नहीं खोली।

जब भील के वेष में जरत्कुमार पाण्डवों से मिला तो वे उसे एक दम पहिचान ही न सके। उसके मुख से द्वारिका का दहन और कृष्ण की मृत्यु सुनकर वे मन ही मन रो पड़े। उनकी आंखों से आते हुए आंसू सूख गये। स्त्रियों के अवरुद्ध कण्ठ से रुदन फूट निकला। धर्मराज ने सुस्थिर होकर सबको सान्त्वना दी।

धर्मराज युधिष्ठिर ने जरत्कुमार से कहा-भील का वेष त्यागो और सद्गृहस्थ बनो। जरत्कुमर ने अपनी भूल स्वीकार की और पारधी के कर्मों को छोड़ देने का वचन दिया।

धर्मराज अपने भाइयों और मात कुन्ती के साथ महावन में पहुंचे तो बलभद्र कृष्ण को छाती से लगाए प्रेम कर रहे थे। पाण्डवों ने समझाया और उनकी मां ने तथा जरत्कुमार ने भी। परन्तु बलभद्र की समझ में कुछ न आया। उस समय उनकी मति और मन पर कृष्ण के शरीर से मोह का अनूठा आवरण पड़ा था। वे कृष्ण को अभी भी जीवित और सोता हुआ समझ रहे थे।

ग्रीष्म भी बीती और वापस आई, परन्तु बलभद्र का प्रेम नहीं बीता। उसकी इति श्री नहीं हुई।

सिद्धार्थ बलभद्र के सारथी और स्वर्गस्थ देवात्मा ने विचारा और अपनी स्वामिभक्ति का पुनः परिचय देने का निश्चय किया।

सिद्धार्थ को एक सूखा पेड़ सींचते देखा तो बलभद्र से बिना टोके नहीं रहा गया। उन्होंने सत्वर कहा-कहीं सूखे पेड़ भी सींचने से हरे होते हैं ?

सिद्धार्थ ने यह सुना और चट से बोला-''कहीं मरे मनुष्य भी जीवित होते देखे हैं ? यह सुनकर बलभद्र चुप हो गये। उन्होंने पुनः उत्तर नहीं दिया।

सिद्धार्थ समझा। बलदेव अभी बोधित नहीं हुए। उसने एक मायावी मृत वत्स बनाया और उसके मुंह में पानी डालने लगा। यह देख बलभद्र बोले-'अरे! मरा बछड़ा क्या पानी पियेगा?' सिद्धार्थ ने सुना और बोला-'यदि मरा बछड़ा पानी नहीं पियेगा तो आपका मरा भाई कैसे जियेगा?

'ठीक कहते हो भाई, अब तक मैं बड़े मोह में था। ओह! मैंने छः माह व्यर्थ ही खो दिये।' बलदेव ने कहा। बलभद्र को पूर्णतया बोधित कर सिद्धार्थ ने अपना परिचय दिया, जिसे सुन बलभद्र ने उसकी प्रशंसा की और बड़ा आभार माना। बाद में सिद्धार्थ अपने भवन की ओर चला गया।

जरत और पाण्डवों की सहायता से दाह संस्कार के लिए बलभद्र ने तुंगी गिरी नामक स्थान को चुना। बलभद्र ने जरत् को राज्य भार सौंप दिया और भो नेमिनाथ भगवान! नमस्कार! कहकर महाव्रती दिगम्बर कानन विहारी हो गये और आत्म साधना प्रवृत हुए।

पल्लव प्रांत में भगवान नेमिनाथ के समवशरण में पहुंचकर कहा-'भगवन्, होनहार अमिट होती है।' हां कुन्ती, लोग यह समझते हैं कि यदि उन्हें अपना अप्रिय भविष्य मालूम हो जावे तो उसे बदल देंगे। परन्तु जो होना है वह होकर ही रहता है। होनहार के आगे हमारी इच्छा अथवा अनिच्छा अपना काम नहीं कर पाती है। होनहार के हजारों द्वार हैं। इस विचित्र विश्व में एक क्षण में क्या से क्या हो जायेगा? यह निश्चय से नहीं कहा जा सकता। जो न हो वही कम है। द्वैपायन ने समझा बारह वर्ष बीत गए द्वारिका नहीं जली। मैं और द्वारिका दोनों ही जीवित और सुरक्षित हैं परन्तु अधिक महिना की गणना करना तो भूल ही गया। यादव कुमारों ने भूल से बारह वर्षों से त्यागी गयी मदिरा पी और द्वैपायन मुनि पर क्रोधित हुए तो उसने भी क्रोध करके द्वारिका जला दी और जरत्कुमार ने भी मृग के धोखे में अपने बाण से कृष्ण के प्राण लिये। यह होनहार जिन व्यक्तियों के संबंध में थी, प्रायः उन सबको ही विदित थी और बारह वर्ष का रहस्य भी, परन्तु कोई भी अपने प्रयत्न में सफल नहीं हुआ और प्रयत्न सबने सफल होने के लिए किया था। भगवान नेमिनाथ की दिव्यध्वनि विसर्जन हो गयी।

अकृत पुण्य

दस-ग्यारह वर्ष का बदबूदार चिथड़ों में लिपटा हुआ एक बच्चा रास्ते के रेत में खेल रहा है। शरीर में दुबला, घिनावना, बदसूरत। और भी दो-तीन बच्चे साथ हैं, ज्यादा सुन्दर वे भी नहीं हैं। लेकिन इतना अवश्य है कि वे इतने दुबले, घिनावने और दयनीय नहीं हैं, जितना अकृतपुण्य।

अकृतपुण्य वह है, जो दस-ग्यारह साल का होते हुए भी सात-आठ साल से अधिक का मालूम नहीं होता था। जबकि उसके संगी छोटे होते हुए भी सबल आनंदी और बड़े दिखाई देते हैं। वह खेल रहा है। दूसरों की तरह ही रेत उछालता है, मेंढ़ बनाता है, कुंए खोदता है, चिल्लाता है, हंसता है, सब कुछ है पर, पर एक बात ऐसी है जिसे वह भुलाए नहीं भूल रहा कि वह भूखा है।

दूसरे भिड़क देते हैं, और वह खड़ा रह जाता है। एक ओर अनुभव करता है। शायद कि मैं छोटा हूं-दीन हूं। मेरे भीतर वह तेज नहीं है। वह उल्लास नहीं है, जो मेरे संगी-साथियों में है। विवश, निरुपाय, दुखित!!!

और उस खंडहर में बैठी, मिष्टदाना सोच रही है-'कितना अभागा है यह अकृतपुण्य। गर्भ में आया कि धीरे-धीरे परिवार खत्म हुआ। सिर्फ दो ही बचे रहे-मैं और इसके पिता-कामवृष्टि! मैं अधिक दुःखित नहीं हुई-तब! खुश थी कि चलो 'यह तो हैं! और बरकरार हैं। इनके पास पूरे गांव का स्वामित्व।'

उस समय मेरा दिल चूर-चूर हो गया जब मैंने देखा कि मेरी गोद में दुधमुंहा बच्चा है, और मैं इतने बड़े संसार में निपट अकेली हूं। पास में एक सिक्का और रहने के लिए बालिस्त भर स्थान भी नहीं है। मेरा सुहाग पुछ चुका था। गांव का स्वामित्व मेरी ही रोटियों पर गुजर करने वाले सुकृतपुण्य के अधिकार में चला गया। इस दुःखद परिवर्तन ने तिलमिला दिया मुझे। मैं हताश, जीवन से विरक्त, क्रुद्ध।

चाहा कि आत्म-हत्या कर भविष्य के संकटों से निश्चित हो जाऊं। पर, न हो यह। सीने में मां का दिल धड़क रहा था। बच्चे के आर्तस्वर ने मन में ममता का दरिया उमड़ा दिया था।

और आज मैं इसी मगध देश के अंचल पर बसे हुए भोगवती गांव में कूट-पीस कर, मेहनत-मजदूरी कर पेट पाल रही हूं। जहां एक दिन मेरा स्वामित्व सिर झुकाकर माना जाता था।

आज भूखा-प्यासा, नंगा-धड़गा, गली-गली ठोकरें खाने वाला बच्चा बदनसीब न होता तो कौन कह सकता है। इन्हीं गलियों में उसके प्यार करने और गोद में उठाने के लिए लोग लालायित न होते?....... बच्चे का दुर्भाग्य।'

मिष्ठदाना की आंखें सावन-भादों-सी बरस रही हैं। भीतर का दुःख उमड़ रहा है। वह देख रही है। दूसरे बच्चे अकृतपुण्य को मार-मारकर दूर हटा रहे हैं और वह रो रहा है-दीन, गरीब।

मिष्टदाना दौड़कर आई पैर जो उधर बढ़ आए थे, अपने आप। शायद मन ने ललकारा था उन्हें।

'न मारो बच्चे को। इसका पिता नहीं है। दुखिया है-बेचारा।'

दासत्व से स्वामित्व मिला है-सुकृतपुण्य को। सुखी है वह, कि वह आज गांव पति है। जहां कुछ दिन पहले वह एक नौकर के रूप में बसा था, आज वह वहां का सर्वेसर्वा है। नीचे से ऊपर चढ़ा है। गरीबी के अनुभव, आज अमीरी में साक्षीदार बन रहे हैं। गरीबी की अभिलाषाएं, आज अमीरी के आंगन में पनपने के लिए मचल रही हैं।

लम्बा-चौड़ा कृषि-कर्म आज उसके आधीन है। पचासों व्यक्ति उसमें काम करते हैं।-आदमी, औरत, लड़के, लड़कियां।....

शाम का वक्त। श्रमिकों की छुट्टी का समय। सुकृतपुण्य आज की संचित अन्न राशि के समीप बैठा है। सामने श्रमिकों की भीड़ लगी है। बारी-बारी से वह चने-पारिश्रमिक-मेहनत-देकर विदाकर रहा है। लोग लौट रहे हैं खुशी-खुशी। संतोष और सफल मनोरथ की स्फूर्ति लेकर।

कौन? अकृतपुण्य! तू यहां कैसे आया-बेटा?

अकृतपुण्य पहले कुछ डरा। पर, यह देखकर कि सुकृतपुण्य की वाणी में कोमलता और चेहरे पर ममता है। अभय होकर बोला-'इन बच्चों के साथ मैं भी चला आया.....।

'क्यों?.... क्या काम किया हैं तूने?

'हां!'

सुकृतपुण्य मर्माहत सा रह गया, कुछ क्षण के लिए। मन में एक द्वन्द सा छिड़ गया था-उसके। सोचने लगा-उक्त! कैसी हैं। यह दुनिया जिसके बाप का में नौकर रहा वर्षों, वही आज मुट्ठी भर चनों के लिए मेरी गुलामी खरीद रहा है।

वह देखने लगा-करुणार्द्र दृष्टि से उसकी ओर। अकृतपुण्य कांप उठा। उसका छोटा-सा मन धक-धक करने लगा। सोचने लगा-सबको तत्काल चने मिलते हैं। मेरे लिए इतनी चिंता, सोच-फिक्र, विलम्ब? काम मैंने किसी से कुछ कम तो नहीं किया। अब तक देह दुःख रही है। नस-नस झनझना रही है। फिर सूखे ओंठ! दयनीय आकृति!!

वह बोला-'बहुत!'

सुकृतपुण्य ने दुलार से पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा-'इतनी मेहनत मत किया कर, बेटा! तू अभी छोटा है।'

शायद अकृतपुण्य ने अनुभव किया हो कि वह छोटा है। बड़प्पन भाग्य ने उसकी आंखों से ओझल कर रखा है।

असल में अकृतपुण्य की दशा ने सुकृतपुण्य की अमीरी पर हमला किया था। वह समृद्धि की नश्वरता पर अवाक् हो रहा था। अतीत के कई चित्र उसके मस्तक में तूफान उठा रहे थे और वह उन्हें संभाल नहीं पा रहा था। विह्वल था दीन था।

बटुए में से मुट्ठी भर सोने के सिक्के निकाल अकृतपुण्य के हाथों में देते हुए वह बोला-'इन्हें ले जाओ बेटा-लो।'

अकृत ने उन्हें लिया, कि वह चिल्लाया-'जला, जला! यह क्या दिया? मुझे अंगारे? आग?'

सुकृतपुण्य ने देखा तो चकित! सच, अकृत के हाथों में सोने के सिक्के नहीं, दहकते अंगारे थे। अत्याश्चर्य!!!

उसने सब सिक्के वापस ले लिये। सोचा-कितना पापी जीव है यह? कौन कर सकता है इसका उपकार। एक धर्म के सिवा।..... समर्थता का दावा करने वाला दीन, क्षुद्रमानव! किसे बना बिगाड़ सकता है? गलत.......।

अकृतपुण्य हथेलियों को फूंक रहा था। जलन पड़ रही थी-शायद सुख की ठंडक देने वाली दौलत ने आग उगली थी, न?

'जितने चने तू ले जा सके, भर कर ले जा। छुट्टी है-तुझे। और मैं कुछ नहीं कर सकता-बेटा!'

दुःखित चित्त और रुंधे कण्ठ से सुकृतपुण्य ने कहा।

फूटा बर्तन और फूटी किस्मत में बहुत कुछ समानता है। न इसके पास दुनिया का दुलार है, न आदर। कुछ ठहरता नहीं, लाख चेष्टायें की जायें। हिकारत की नजर और अभाव, यही दो चीजें इनके बांट में आई हों जैसे।

ढीली गांठ और फटे कपड़े के कारण रास्ते भर चने फैलते आए। घर जब आया, तो मिष्टदाना की फटकार पड़ी-उस पर। वह जो दिनभर उसका इंतजार करते-करते खोज उठी थी।

अभी सड़ी-घुनी चौखट पर पांव भी नहीं रखा था कि वह चिल्लाकर बोली-'कहां रहा रे आज अकृत? यह क्या बांध लाया-पोटली-सी?'

वह गुमसुम।

मां की आंखें जो सुर्ख हो रही थीं। पर क्षण भर में ही तब्दीली आई। उसे चेत हुआ-मां की गुस्सा तो वह अभी शांत कर सकता था। बेकार थोड़े ही घूमा है-आज। मेहनत कर अन्न लाया है। खाने के लिए-कुछ मजाक।

मजाक नहीं! और तब कुछ दबंगपन के साथ वह बोला। देखो तो मां पोटली में क्या है?

मां चुपचाप पोटली खोलने लगी। अकृत विजई की तरह खड़ा रहा। मुंह प्रसन्नता से चमक रहा था।

मां ने पोटली खोलकर अचरज से कहा-'चने! कहां से लाया, रे?'

अकृत का मुंह उतर गया। प्रसन्नता काफूर। अन्य मनस्कता के साथ वह बोला-'हां, चने हैं। पर, यह थोड़े क्यों हैं? लाया तो बहुत था मैं। सबसे ज्यादा। बात क्या हुई, ऐ.....?

मिष्टदाना पुत्र की विह्वलता से पसीज-सी गई थी। बोली-'ज्यादा लाया था? कहां गए फिर? कपड़ा तो नहीं फटा?'

अकृत मौन।

सच, कपड़ा फटा ही था। वह बोली-'रहने दे, दुःख क्यों करता है? जितने लाया है, वह कम नहीं! पर, लाया कहां से है, यह तो कह?

अकृत ने सब कह दिया।

मिष्टदाना सुनती रही। फिर बोली-'सुकृत पुण्य के यहां से लाया है यह? उसकी नौकरी की थी तूने? स्वर में वेदना थी, आत्मग्लानि थी और थी दीनता।

अकृत, निरुत्तर।

वह आप ही कहने लगी-'यही सुकृतपुण्य एक दिन मेरा सेवक था और आज तू उसका सेवक बना-छिः! विधि की विडम्बना?'

अकृत कुछ न समझ सका, न उसने समझने की कोशिश की कुछ। दिलचस्पी जो नहीं थी। वह सोच रहा था-कितने?

निस्तब्धता! मिष्ठदाना इधर बैठी चिन्ता मग्न है। अकृत उधर खड़ा सोच रहा है। बीच में चने रखे हैं। दोनों के बीच एक समस्या की तरह।...... देर तक चुप रहने के बाद वह बोली-'अकृत, अब हम इस गांव में नहीं रहेंगे। सुबह चलना तय किया है। बस! गुलाम की गुलामी करना मुझे नहीं सुहाता। कितना अभागा है तू।' काश! आज तेरे पिता जीवित होते?

और वह रोने लगी-अतीत की स्मृतियां जो उसे झंझोरे डालती थी।

बलभद्र सात लड़कों का पिता है। बहुत जमाना देखा है उसने। गरीबी-अमीरी की अनेक लीलाएं खेल चुका है। उम्र के साथ अनुभव भी पक चुका है उसका। और आज उसमें यह विशेषता है कि वह हर बात का गहरा अध्ययन करके आगे कदम धरता है और तब उसके प्रत्येक कार्य में बुद्धिमानी दृढ़ता और मानवता का पर्याप्त सम्मिश्रण दिखाई देता है।

वह गांव पति है। भाग्य ने उसे वह दोनों चीजें दी हैं। जिन्हें दुनिया वाले मरते दम तक चाहते हैं-वैभव और पुत्र।...नही, कुछ दिया है। तो सिर्फ आखिरी सांस तक साथ देने वाला गृहिणी सुख।...

घूमती फिरती पुत्र को साथ लिए मिष्टदाना यहां आई। बलभद्र ने देखा-दुखिया, गरीबी है। किस्मत की सताई। अवश्य ऊंचे कुल की है।

बोला-'बहिन कौन हो तुम? मिष्टदाना ने कहा-'दुखिया।'

'नहीं, ठीक परिचय दो-बहिन!' बलभद्र ने आग्रह किया।

मिष्टदाना फिर कुछ छिपा न सकी। आग्रहकर्ता में जो उसे आत्मीयता के दर्शन हो रहे थे।.....

और आज?

वर्ण के ऊपर होने आया, मिष्टदाना बलभद्र के घर रसोई बनाती है। अकृतपुण्य चरवाहे के तय में चैन की बंशी बजा रहा है।

हां! बलभद्र ने दोनों को पनाह दी है, दोनों उसकी गुलामी में बंधे हुए हैं। लेकिन गुलामी इतनी मीठी है कि बुरी नहीं लगती-किसी को। बात असल में यह है कि बलभद्र का व्यवहार मनुष्यतामय है। और इसकी वजह है कि वह दोनों के काम से बेहद खुश है। जहां तक बच्चों की परवरिश का संबंध है, मिष्टदाना ने कुछ उठा नही रखा और यों, बच्चों की बहुत फिक्र बलभद्र के सिर से उतर गई। हल्का हो गया-अपने को सुखी अनुभव करता है।

घर के पास ही एक झोपड़ी बनवा दी गई है। उसी में रहती है-दुखिनी मिष्टदाना और उसका बच्चा-अकृत।

मां की कड़ी हिदायत के बावजूद अकृत जब बलभद्र के घर पहुंच जाता है और वहां सुस्वाद भोजन बनते तथा दूसरे बच्चों को खाते देखता है तो मन उसका काबू में नहीं रहता। मुंह में पानी आ जाता है और वह मचल उठता है रोने लग जाता है।

पर, मां बहरी या वज्र रहती है। जरा भी पसीजती नहीं। कर्तव्य और ईमान जो सामने रहता है हर वक्त।

एक टुकड़ा भी वह उस खाने में से अकृत को देना पाप समझती है। वह रोता है। बलभद्र के लड़के शरारत से पेश आते हैं। चिढ़ाते हैं। बाज वक्त बात बतंगड़ बन जाता है और वे उसे मार तक बैठते हैं।

मिष्टदाना मन में कम मर्माहत नहीं होती उस समय। पर, चुप रहती है।-'भाग्य ने जब इसे ये पदार्थ नहीं दिए, तो जबर्दस्ती क्यों करता है खाने के लिए?'

समझाती है-'बेटा, ये बड़े लोगों के खाने की चीजें हैं। हम तुम इन्हें नहीं खा सकते-समझा? चल...! मैं काम से निपटकर अभी घर आती हूं। रसोई बनाऊंगी तब खाना-भला?'

अकृत आंसू पोंछ लेता है-अनाधिकार चेष्टा की सजा खाकर। लौटता है शायद यह सोचता हुआ कि -'बढ़िया खाने बड़े लोगों के लिए होते हैं, और मैं हूं छोटा।' बहुत छोटा!!! शायद जीवन में कभी 'बड़ा' न बन सकूंगा-ऐसा।

बलभद्र चौके में बैठा, खीर जीम रहा था। मिष्टदाना परोस रही थी कि बलभद्र की नजर अकृत पर जा पड़ी। बोला-'क्यों बहिन! अकृत दुबला-सा क्यों दिखाई देता है? क्या मेहनत ज्यादा पड़ती है?

मिष्टदाना चुप रही।

अधिक आग्रह देखा, तो कहना पड़ा-'खीर के लिए बहुत दिन से तरस रहा है।'

बलभद्र अवाक्।

सचमुच मिष्टदाना ने उसे एक महानता दी-त्याग की छाया दिखाई दी-आज। न जाने क्यों? अकृत पर भी उसकी ममता थी.....। वह बोला-हां।

और रसोई के बाद उसने जो पहला काम किया, वह यह कि चावल, दूध, घी, मिश्री मिष्टदाना को देते हुए कहा-जाओ, घर जाकर खीर पकाओ और बच्चों को दो। वाह नाहक नादान बच्चे का दिल दुखाया इतने दिनों।

मिष्टदाना नत-मस्तक हुई। उसने पहिचाना-'बलभद्र पूंजीपति होते हुए भी मनुष्य है।'

आज खीर बनेगी, भरपेट खाऊंगा मैं। यह मधुर सत्य अकृत को आज उन्नत बना रहा है। सचमुच आज वह इस वास्तविकता को भूले जा रहा है कि वह छोटा है। उसके छोटे से मन की छोटी सी दुनिया में महोत्सव हो रहे हों जैसे।

वह उल्लासमय, न जाने क्या सोचता-विचारता झोपड़ी के द्वार में उछल-कूद मचा रहा है। मन में जो खुशी हलचल मचाए हुए है।

डोल, रस्सी और घड़ा लिए मिष्टदाना बाहर आई। मुंह उसका भी आज प्रसन्न है। अपेक्षाकृत! बोली-देख, मैं कुएं से पानी लेने जा रही हूं। तू यहीं रहना बाहर जाना नहीं। आकर खीर खिलाऊंगी-अच्छा! जाना नहीं!

और वह बढ़ी-एक डग, दो डग।

फिर मुड़कर बोली-"और हां, हां, इस बीच में अगर कोई तेरे भाग्य से साधु आ जाए तो उन्हें ठहराना, मैं भी अभी आती हूं-वैसे। जानता है-वे साधु, जो एक धजीर तक नहीं पहनते-ओढ़ते। जो जमीन सोधते हुए चलते हैं। उन्हें खिलाने का बड़ा पुण्य-फल होता है। समझा....?"

अकृत ने प्रसन्नता पूर्वक कहा-'खूब!' बड़े-छोटे की व्याख्या अकृत अब समझने लगा।

नरक में स्वर्ग के दर्शन! सौभाग्य!!

कि कुछ ही समय उपरान्त अकृत को एक महामुनि आते हुए दिखाई दिए। उसका मुंह खिल उठा। वह जो हर बड़ी बात को अपनाने के लिए लालायित था।

मासोपवासी मुनिराज सुव्रत पारणार्थ शायद बलभद्र के घर जा रहे थे कि रास्ते में अकृत ने टोका वस्त्रों के अभाव ने उसे बता दिया था कि यही महासाधु हैं, इन्हीं के चरण-शरण से दुखियों के दुख मिटते हैं। 'बाबा, मां ने आज खीर पकाई है, तुम खीर खाकर जाना। वह कह गई है मुझसे-आती ही होगी....ठहरिए दया कर कुछ देर।'

योगीश्वर ने देखा-आहार की विधि नहीं है। वह चलने को हुए-कुछ आगे बढ़े भी, कि अकृत ने पांव पकड़ लिये। गिड़गिड़ाकर बोला-'जाने नहीं दूंगा बाबा! खीर....? बड़े लोगों के खाने की है खीर खाकर जाना-अपूर्व भोजन। नहीं, पांव नहीं छोडूंगा...हां।'

शाबास! भाग्यशाली अकृत! धन्य!!!

कि उसी वक्त मिष्टदाना आ गई। घड़ा उतार कर, उसने विधि पूर्वक पड़गाह किया-उन्हें।

निर्विघ्न-आहार!

स्वर्गदाता महादान!! महापुण्य!!!

अकृत देखता रहा विर्निमेष! और सोचता रहा-'मेरे घर महामुनि आहार ले रहे हैं-मुझसे बढ़कर भाग्यवान कौन? धन्य हूं मैं, और मेरा आज का दिन।'

महामुनिराज आहार लेकर, तपो-भूमि को लौट गए। पश्चात् मिष्टदाना ने दुलारपूर्वक अकृत को भोजन कराया, खुद खाया और सबके खा-पी चुकने पर देखा तो खीर-पात्र जैसे का तैसा, भरा हुआ।

अचरज!!!

लेकिन तत्काल ही मिष्टदाना को यह चेत हो गया कि ऋषिवर 'अक्षीणमहानसऋद्धि' के धारी थे। यह उनकी ऋद्धि का प्रभाव है, चकित होने की बात नहीं, इन्द्रजाल नहीं। आज के दिन अगर चक्रवर्ती का सारा कटक-सैनिक समुदाय भी निमंत्रित कर दिया जाय तब भी खीर पात्र रीता नहीं हो सकता।

और तब उसने इस संयोग से भरपूर लाभ उठाया। बलभद्र का सारा परिवार, गांव का बच्चा-बच्चा उसके घर निमंत्रित हुआ। लोग बर्तन भर-भर कर खीर अपने घर ले गए।

.... खुश, बहुत खुश और चकित।

एक सिरे से दूसरे सिरे तक प्रशंसा!!!

बलभद्र बोला-'बहिन, अकृत का अभाग्य अब साधु चरणों को छूकर 'सौभाग्य' में बदल गया है।

विषापहारिणी विशल्यादेवी

रे मूर्ख! इन्द्रजीत और कुम्भकर्ण को नागपाश में बांध लेने से ही तू महान पराक्रमी वीर न कहला सकेगा। जब तक ऊंट पहाड़ की तलहटी में नहीं पहुंचता, तब तक दुनिया में स्वयं को ही श्रेष्ठ समझ लेता है। क्या मुझसे लड़ने का साहस है तुझमें ?

लक्ष्मण क्षुभित होकर बोले-अरे नीच पापी! दुराचारी! तेरा पराक्रम तभी देख लिया, जब सती को अकेली निस्सहाय देखकर छल बल से हरण कर लाया। कायर! कहां चला गया था, उस समय तेरा अतुल पराक्रम ? नारी को हरण करते तुझे लज्जा नहीं आई, निर्लज्ज!

बस, बस चपल बालक! अपनी चपल जिह्वा को अब और अधिक मुखर न बना। मेरे भ्राता और पुत्र को बंधन-मुक्त कर अपने देश लौट जा। मैं तुझे अपना आधा राज्य भी दे दूंगा। व्यर्थ अपनी मां की गोद सूनी मत कर, जा आनन्द से रह।

रावण! मैं तुझ परस्त्री-लंपट का मुख भी नहीं देखना चाहता। तुझ पापी के राज्य की मुझे तनिक भी इच्छा नहीं, अधर्मी का राज्य साधु पुरुषों के द्वारा सदैव त्याज्य होता है।

रावण ने अपनी राज्य की महत्ता बतलाकर सोने की लंकापुरी की और आकर्षित करते हुये कहा-नादान बालक! धन वैभव से मैं तुझे मालामाल कर दूंगा। लोभ संवरण मत कर। मांग ले जो तुझे चाहिये। रावण के पास कुबेर का अक्षय भंडार है।

चल-चल बड़ा आया दानी कहीं का ? 'नौ सौ चूहे मारकर बिल्ली तप करे।' पराई स्त्री हरण कर ली। अब दान का ढोंग रच रहा है, बगुला भगत! ला हमारी सीता हमें दे दे और सुख से राज्य भोग।

हम पराये दुख को तृण के समान समझते है। मेरे बड़े स्वदार सन्तोषी श्री रामचन्द्र जी के दर्शन कर स्वयं को कृतकृत्य कर ले।

धृष्ट लक्ष्मण! प्रतीत होता है कि तेरे गुरुजनों ने तुझे विनय की शिक्षा नहीं दी। तभी तो ऐसा अविनयी बन गया है। क्रूर काल तुझे शीघ्रातिशीघ्र कवलित करने के लिए उतावला जान पड़ता है। अपने हाथों अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मत पटक बावले। तुझ पर शस्त्र प्रहार करते करुणा आती है। कहां मैं चक्रवर्ती विद्याधरों का ईश रावण और कहां तू भूमिगोचरी पशुतुल्य दीन निरीह नन्हा-सा बालक।

हम भूमिगोचरी दीन-निरीह कैसे भी हैं परन्तु अधार्मिक कुकृत्य नहीं करते। तू वीर था तो स्वयंवर में आकर सीता को क्यों नहीं व्याहा। अब चुराकर वीर बन रहा है ? चक्रवर्ती! वाह! क्या कहना ? हमारे यहां तो तुझ जैसे लाखों चक्रवर्ती हैं। वृद्ध होकर भी तूने घोर अज्ञानियों-सा दुष्कृत्य किया है। शठ! तुझे मधवी नरक में भी स्थान न मिलेगा। अपने विनाश को स्वयं ही निमंत्रण न दे। बेचारी रानियों को व्यर्थ ही विधवा न बना। उन्हें पति के वियोग में कर्मभेदी हृदय विदारक करुण विलाप करने के हेतु विवश मत कर दुर्बुद्धि!

मैं कहां तक सीमित रहूं लक्ष्मण! तू अपने कटु वचनों से मुझे अत्यन्त क्षुर्भित कर रहा है। अभी भी रण से विमुख हो, अपने कोमल प्राणों की रक्षा कर।

रण से कायर पीठ फेरते है। मैं तुझे आह्वान करता हूं। चला अपने शस्त्र, देखूं तेरी वीरता! रणक्षेत्र में छोटा बड़ा नहीं देखा जाता। प्रत्येक वीर-वीर से जूझता है।

रावण व्यंग वाणों से पीड़ित हो घायल सिंह की तरह रण में संलग्न हो गया। परस्पर द्वन्द्व युद्ध तीव्र गति से अविराम चलता रहा। दोनों एक दूसरे के वाण काटते रहे। विजय अभी दूर थी रावण ने देखा शत्रु अजेय है एवं साधारण बाण कार्यकारी न हो सकेंगे। सब दिव्योपन देवो पुनीत शक्ति का स्मरण किया। तत्क्षण शक्ति स्वामिभक्त दासी की तरह सेवा में उपस्थित हो गई। रावण ने दाहिने हाथ में ले वज्रमयी शक्ति लक्ष्मण के विशाल वक्ष-स्थल में मार दी। उसी समय लक्ष्मण पीड़ित हो कराहते हुए भूमि पर कटे की तरह बेसुध हो गिर पड़े।

अपने परम स्नेही योद्धा भाई को गिरते देखकर राम व्याकुल हो उठे। परन्तु रणक्षेत्र में शोक करना शूरों का धर्म नहीं। अतः सीने पर पाषाण रखकर रावण के साथ तत्परता से लड़े। लक्ष्मण की शक्ति मारकर नष्ट करने के अहंकार ने रावण को निर्बल कर दिया। वह राम के वाणों से व्याकुल हो उठा। कदाचित् अंशुमाली को अपने ही समान तेजस्वी रावण को पराजय देखना स्वीकार नहीं था। अस्तु वह अस्ताचल की ओर आग्नेय नेत्रों से जगत की ओर निहारता हुआ शीघ्र गमन कर गया। युद्ध स्थगित हो गया। नीलाम्बर में असंख्य दीप जल उठे। जगत का परिधान परिवर्तित हुआ। रजनी झिलमिलाती तारिका जड़ित श्याम चुनरिया फहराती अखिल विश्व पर छा गई। यद्यपि रावण आज की पराजय से अत्यन्त क्षुब्ध था। तथापि लक्ष्मण की शक्ति से मूर्छित करने के कारण वह कम प्रसन्न नहीं था। उसे संतोष था आज एक महान दुर्जयी वैरी को नष्ट कर उसके त्रास से मुक्त हो चुका हूं।

इधर दूसरी ओर रामचन्द्र जी के शिविर में हाहाकार मचा था। व्याकुल हो राम भाई की रक्षार्थ भयभीत हिरणी की तरह सम्मुख बैठे हुए उदास नरेशों की तरफ विह्वल नेत्रों से निहार रहे थे। काश कोई जीवन दान दे दे। मूक अन्तर्वेदना छलक रही थी। धीर वीर गम्भीरता की मूर्ति राम शोक संतप्त हो कभी रुदन करते, कभी लक्ष्मण को सम्बोधित कर वज्र भी मोम सा गल जाए ऐसा मर्मभेदी करुण वचन कहते, 'भैया लक्ष्मण! मुझे रणांगण में अकेला छोड़ तुम कहां चले गए? हाय भैया! तुम्हारे बिना संसार सूना लगने लगा। तुम मेरे साथ आए थे। अब अयोध्या कैसे लौटूंगा? माता सुमित्रा से क्या कहूंगा? जब वे पूछेंगी-वत्स लक्ष्मण कहां है? तब क्या जवाब दूंगा? मुझे वनवास मिला था; परन्तु मेरे प्यारे स्नेही लक्ष्मण! तुम भी मेरे साथ महलों के सुख त्याग बन बन भटके। मेरे लिए पर्णकुटी अपने सुकुमार हाथों से रच स्वयं प्रतिहारी बन रात आंखों में काट देते थे। ओ सीता के प्यारे देवर! तुम्हारी सीता शत्रु के गृह से मुक्ति पाने को तुम्हारी राह देख रही है। तुम्हारे बिना राज्य सुख-चैन-वैभव सीता सभी मेरे लिए त्याज्य है। उठो भैया! आंखें खोलो। देखो तुम्हारे उन्मीलित नयनों की एक क्षण झांकी पाने के लिए हम सभी टकटकी लगाए हुए हैं। मुझसे रूठ गए हो? अच्छा मुझसे न बोलना पर इनसे तो मैत्री है। ये हनुमान, विराधिता भामंडल तुमसे गोष्ठी करना चाहते हैं।

वे सबसे कहते, लक्ष्मण ने मौन धारण किया है, वह भी गहरी निद्रा में सोया है, अभी उठेगा और मन्द-मन्द व्यजन करने लगते। आंखों से अश्रु प्रवाह अविरल गति से चल रहा था। वे लक्ष्मण की रंगभूमि से लाकर शिविर में सुखपूर्वक शैया पर शयन करना चाहते। आगे बढ़े ही थे कि एकाएक विद्याधर जांबूनद ने राम को लक्ष्मण का शरीर स्पर्श करने से रोक दिया। उनका कहना था कि छूने से तुरंत ही प्राण विसर्जित हो जायेंगे। प्रातः होते-होते निश्चय से लक्ष्मण शक्ति मुक्त हो स्वस्थ हो जायेंगे। ऐसा सुन सचेष्ट राम दूर हट गये तथा अधीर हो पुनः विलाप करने लगे।

हनुमान! तुम तो वीर हो। क्या तुम कुछ उपाय नहीं कर सकते? लक्ष्मण को जीवन दान दे अपनी कीर्ति में चार चांद लगा लो। भामंडल! तुम भी चुपचाप हाथ पर हाथ धरे बैठे हो। मेरे भैया को न बचाओगे? विराधित! तुमने मेरी सहायता की है मैं तुम्हारा उपकार नहीं भूल सकता। मित्र! एक बार और कष्ट देता हूं मेरे लक्ष्मण को जीवित कर दो। मैं तुम्हारे चरणों का दास बना रहूंगा। क्या तुम समझते हो कि मैं झूठ बोल रहा हूं। नहीं, नहीं खगेश! जिनधर्मानुयायी असत्य संभाषण नहीं करते।

कृतकृत्य हो जाऊंगा भैया। बस एक बार.....एक बार मेरे लक्ष्मण को सचेत कर दो। यदि असमर्थ हो तो कम से कम यही करो कि मेरे लिए चिता ही रच दो। इस प्रकार राम मोह वश विषम भ्रांति में पड़े अर्धविक्षिप्त हो रहे थे।

राम के दयाद्र वचन सुन समीपस्थ वीर विद्याधर नरेश धरती में मस्तक गड़ा लेते। विवश वे कुछ कर सकने में असमर्थ मानो लाज के मारे गले सिमट कर बिन्दु बन जाना चाहते थे। सान्त्वनापूर्ण दो बोल भी न बोल पाते। जिह्वा मूक हो गई। ज्यों-त्यों धैर्य एकत्रित कर शब्द कंठ तक आते कि अन्तर्वेदना रोक देती। गला रुंध जाता। राम की व्यथा साकार हो उठती। उन्हें देखकर हृदय सागर बांध तोड़ लोचनों में लहराने लगता, क्या करें ? यह प्रश्न बार-बार मस्तिष्क पर टंकार कर उनका हृदय विदीर्ण कर देता।

मानव लक्ष्मण को अपने हाथों छूकर बचाने में असमर्थ हो जायेगा। अतः उसी रक्त स्नात रुंडमुंडों से वेष्टित वसुधा को साफ सुथरा कर विद्यामय कोट बना सब विद्याधरों ने रात्रिभर प्रतिहारी बन उसकी रक्षा की ताकि कोई शत्रु लक्ष्मण को छूकर उनका जीना असंभव न कर दे।

पुण्ययोग से कुछ समय पश्चात् आकाश मार्ग से आकर एक व्यक्ति ने प्रतिहारी भामंडल से जाकर राम से मिलने की अभिलाषा प्रकट की तथा कहा कि लक्ष्मण के जीने का उपाय बतलाना चाहता हूं। उसने राम का अभिवादन किया कहा-नरश्रेष्ठ! मैं आपके दर्शनार्थ एक माह से घूम रहा हूं। आज मेरी अभिलाषा पूर्ण हुई। आपके भाई लक्ष्मण चंद समय में ही सचेत होना असंभव नहीं। दुर्दैव से मैं भी शत्रु द्वारा भेजी गई शक्ति से मूर्च्छित हो गया था। भरत द्वारा गन्धोदक छिड़कने से स्वस्थ हुआ था। यह कोरी भ्रांति है कि शक्ति दुर्निवार है।

राम उद्विग्नता से बोले-वह गन्धोदक कहां मिलेगा? शीघ्र बताओ महामानव! मैं लक्ष्मण को शीघ्रातिशीघ्र जीवित देखना चाहता हूं।

देव! मुझे आज्ञा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि जल्दी से जल्दी आप अपने प्यारे भाई से वार्तालाप कर सकेंगे। अयोध्यापति भरत को यह रहस्य ज्ञात है। क्योंकि उन्होंने ही मुझे अच्छा किया है। साथ अपने नगर में फैली दूषित बीमारी भी उसी जल से शमन की।

क्षणिक राम विचार मग्न हो गये। भरत का नाम सुनते ही उन्हें अपने बहुत दिनों से बिछड़े हुए पुरजन-परिजनों का स्मरण हो आया। आंखों से दो बूंद टपक कपोलों पर लुड़क पड़ी। प्रायः देखा जाता है कि विपत्ति में दूसरों के द्वारा अपने का नाम सुनना-चिन्तामणि रत्न सा अमूल्य प्रतीत होता है जिस प्रकार मनुष्य सोते-सोते अनायास चौंककर उठ बैठता है, उसी प्रकार राम ने विचार श्रृंखला तोड़ विद्याधरों से अयोध्या जाकर वहीं से जल लाने का अनुरोध किया।

भामंडल, हनुमान शीघ्रगामी विमान द्वारा आकाश पथ से अयोध्या चल दिये। भरत से जाकर सब वृतान्त कहा। सीता हरण सुनकर भरत अत्यन्त दुःखी हुए। सब कुटुम्बी एकत्रित हो व्यथा से रुदन करने लगे। भरत ने क्षुभित हो राज्य में रणभेरी बजवा दी। आगन्तुक विद्याधरों ने शीतल वचनों से शोक संतप्त परिवार को सान्त्वना दे धैर्य बंधाया। उन्हें बतलाया कि आप घबराइये नहीं। श्री रामचन्द्र जी के सहयोगी हम जैसे अनेकों विद्याधर हैं। वहां भूमिगोचरियों का जाना नहीं हो सकता। आप निश्चिन्त हो यहीं रहिये। विजय माल निश्चयतः राम-लक्ष्मण के कंठ की शोभा बढ़ायेगी। हमें इस अवसर पर केवल वही जलौषधि दे कृतार्थ कर बिदा करें।

भरत शांत हुए, बोले-जल ले जाकर क्या करेंगे ? विशल्या को ही ले जाइये। मुनिराज के द्वारा यह जानकर कि इसका पति लक्ष्मण ही होगा। उसके पिता ने कन्यारत्न को लक्ष्मण को देने का संकल्प कर लिया है और सारा वृतान्त आद्योपान्त कह सुनाया। भरत ने आग्रह पूर्वक कहा-चलिये मेरे साथ, विशल्या को आपके साथ भिजवा दूं। सब विशल्या के पिता महाराजा द्रोण के कौतुक मंगल नगर में आये। अर्धरात्रि में सबको आया जान नृपति द्रोण प्रथम तो विस्मित हुए, पर उनके मुख से सब वृतान्त जान सर्वगुण सम्पन्न पुत्री विशल्या को जमाता लक्ष्मण के हितार्थ शुभकामना करते हुए भेज दिया। भरत ने सजल नयनों से सबकी विदाई की एवं स्वयं अयोध्यापुरी लौट आये।

ज्यों-ज्यों विशल्या सहित विद्याधरों का विमान रणक्षेत्र समीप आता जाता था, त्यों त्यों शक्ति भयभीत होती जाती थी। लक्ष्मण के मूर्च्छित वदन में कंपन होने लगी। वह जान गई अब मेरा यहां ठौर नहीं। न ही मैं लक्ष्मण को मारकर अपने स्वामी रावण के मनोरथ पूर्ण कर सकती हूं। लक्ष्मण के शरीर की चेष्टा अवलोकन कर राम व उनके साथियों को रोमांच हो आया। प्रसन्नता की लहर उमड़ पड़ी। टूटी हुई आशा बंध चली। जिस प्रकार निशीथनी के गहरे अंधकार में जुगनू की चमक निराश राही के लिए हृदयहारिणी जीवन प्रदायिनी बन जाती है और उसी के आश्रय भूले हुए राही अपने लक्ष्य तक पहुंचने का प्रयास करते हैं उसी प्रकार यहां भी आशा ने अपना मायामयी जाल बिछा चतुर्दिक स्वर्ण किरणें बिखेर दीं। संतोष तो यह था कि आशा का यह प्रकाश संध्याकालीन डूबते हुए सूर्य का नहीं, वरन् उदयाचल पर स्थित क्रमशः वृद्धिगत होने वाले बालरवि का उद्योत था।

विमान भी हवा से बातें करता हुआ बात की बात में शिविर में आ गया। विशल्या ज्यों ही लक्ष्मण के निकट आई कि शक्ति अपने प्राण ले सिर पर पैर रखकर भागी। उस समय ऐसा रमणीय दृश्य लगता था, मानों साक्षात् रवि ही कामदेव को सुखद निद्रा से जगा रही हो। स्त्री के वेश में जाते समय हनुमान ने उसे उसकी करनी का फल चखाने में कोई कसर न उठा रखी। बेचारी क्षमा मांगती हुई यह कहती चली गई कि स्वामी रावण के द्वारा भेजी गई मुझे विवश हो कर्तव्य निवाहना पड़ा।

शक्ति के जाते ही तत्काल लक्ष्मण 'कहां है रावण ?' की गर्जना करते हुए उठ बैठे। राम ने लक्ष्मण को अपने बहुपाश में ऐसा आबद्ध किया मानो अब कोई भाई से दूर नहीं कर सकता। लक्ष्मण भी भ्रातृ आलिंगन में ऐसे प्रेम विभोर हो गये, जैसे बहुत देर का बिछड़ा बच्चा गाय से आ मिला हो। समूचे कटक में जय-जयकार का हर्ष निनाद गूंज उठा। युगल भ्रातृ-प्रेम देख सबके नेत्रों से हर्षायु छलक पड़े। राजकुमारी विशल्या का आदर सत्कार किया । उसके कर कमलों का जल घायलों पर छिड़कते ही वे सब पुनः निरोग हो गये। विशल्या के प्रति लक्ष्मण के हृदय में अनायास ही अज्ञान रूप से पूर्व स्नेह के कारण प्रेम भाव जाग उठा। उन्होंने राम की ओर प्रश्न भरी मौन दृष्टि डाली। जिज्ञासु भैया का प्रश्न समझ राम ने तपःपूत विशल्या का जीवन जो कि उन्हें भामण्डल, हनुमान द्वारा ज्ञात हुआ था कहकर सबको आश्चर्य चकित कर दिया।

उन्होंने बतलाया कि विशल्या पूर्व जन्म में चक्रवर्ती की कन्या अनंगशरा (रत्नप्रभा) थी। उसे लक्ष्मण के जीव विद्याधर पुनर्वसु ने हरण कर लिया। कन्या के संरक्षक प्राप्त करने में असमर्थ हो रहे पुनर्वसु ने विद्या के सहारे कन्या को नीचे उतार दिया, तत्पश्चात् सबके चले जाने पर उसे अपने साथ ले जाने के लिए बहुत ढूंढ़ा, परन्तु न मिलने पर निराश हो गया एवं जैनेश्वरी दीक्षा धारण की। तपकर निदान किया, स्वर्ग के दिव्य भोग भोगे, वहां से आकर अब प्रतापी लक्ष्मण हुआ है।

पुनर्वसु के द्वारा भेजी गई अनंगशरा को विद्या ने बीहड़ जंगल में लाकर छोड़ दिया। बेचारी डरावने भयानक जंगल में बिल्कुल निस्सहाय हो करुण विलाप करने लगी। कर्मों की विचित्रता। कहां तो चक्रवर्ती की सुकोमलांगी सुन्दर कन्या और कहां वह दीन-हीन निरीह आश्रय हीन अबला। जिसकी सेवा में अनुचर सदैव हाथ बांधे आदेश की प्रतीक्षा में निरंतर खड़े रहते

थे, वही अनंगशरा भूखी प्यासी विपत्ति की सताई अकेली थी। नहीं था कोई उसके दुःख दर्द को पूछने वाला। मन हाहाकार कर उठा। चीत्कार करती हुई चतुर्दिक दौड़ी। अगम्य वनस्थली मानव का नाम निशान भी नहीं मिला, घबरा गई। प्रतीत होता था, जैसे वह अभी-अभी प्राण तज परलोक सिधारेगी। पर आयु लम्बी थी। उक्ति चरितार्थ है कि 'प्रकृति जब कठिनता देती है, तब उसे सहन करने के लिए अतुल ज्ञान का भंडार खोलकर उपस्थित कर देती है।'

अनंगशरा में आत्मा के नैसर्गिक सच्चे ज्ञान की जागृति हुई। सच्चिदानंद की अनुभूति होने लगी। दिशा बिल्कुल ही बदल गई। जब मानव को अपना संकट टलने की आशा शेष नहीं रहती, वह उसी दुख में मिलकर आने को अस्तित्वहीन कर तन्मय हो जाता है। अनंगशरा ने यही किया, वह धर्म का मर्म जानने वाली विदुषी थी। दुख का आना पाप नहीं, दुख में दुखी होना पाप है। अतएव एक देश चारित्र धारण कर शुभ भावों से निरतिचार पालन कर आध्यात्मिक वृत्ति को प्रोत्साहित करती। बल्कल वस्त्र पहनती हुई सूर्य किरणों से प्रासुक जलपान करती। खाद्य-अखाद्य के विचार पूर्वक भक्ष्य-फलों का सेवन करती। संध्याकाल से रात्रिपर्यंत मर्यादित भूमि शयन करती। इस तरह उसने तीस हजार वर्ष कठिन तप से आयु का अन्त जान समाधि मरण धारण किया। सौ हाथ भूमि में विचरण करती क्रमशः त्याग की ओर अग्रसर होती गई।

होनहार इतनी लम्बी अवधि बीत जाने पर एक दिन सहसा चक्रवर्ती के सेवक विद्याधर लब्धिदास को अनंगशरा दिखी। उसे घर ले जाना चाहा परन्तु घर की भावना भी अनंगशरा में शेष न थी। वह सल्लेखना में लीन सौ हाथ भूमि को अपना निवास स्थान बना चुकी थी। देह से ममत्व बुद्धि नष्ट हो गई थी। अतः उदासीन दृष्टि से उस तपेश्वरी ने घर जाने में अपनी असमर्थता प्रकट कर दी। लाचार हो लब्धिदास ने लौटकर चक्रवर्ती को शुभ संदेश सुनाया। दोनों उसी स्थान पर पहुंचे। पिता पुत्री से मिलने के लिए लालायित हो उठा।

चक्रवर्ती ने देखा-पुत्री, उसकी प्यारी पुत्री अनंगशरा को साक्षात् यमराज का रूप विशाल देहधारी अजगर निगल रहा है। धड़ अजगर के पेट में जा चुका था। मुख बाहर था। पिता ने शस्त्र संभाले। वह अजगर के प्राण नष्ट करे कि अनंगशरा ने पिता को वध करने से रोक दिया। वह अजगर को अभयदान जो दे चुकी थी। पुत्री दृढ़तर उदासीनता देख चक्री चित्रलिखित अवाक् रह गया। देखते देखते पुत्री काल कवलित हो गई। विधि की विडम्बना षट्खंडाधिपति सुरनर सेवित पिता अपनी पुत्री को बचाने में असमर्थ विह्वल हो रो पड़ा। लब्धिदास ने धैर्य बंधाया। पिता को वैराग्य हो आया। संसार की अनित्यता को देख मोह मदिरा में मस्त आत्मा को बारम्बार धिक्कारने लगा। यह वह क्षणिक विराग नहीं था जो श्मशान, दरिद्रता या संकट में प्राणियों को झकझोर कर शांत हो जाता है, अपितु इतना दृढ़ था कि संसार की कोई भी महानतम शक्ति विमुख नहीं कर सकती थी। अतः परिग्रह तज दीक्षा लेना ही श्रेयस्कर समझा।

अनंगशरा ने देव पदवी प्राप्त की एवं उसी तप के प्रभाव से देवगति से आकर विशल्या ने यह सर्व रोगहारिणी, जीवन प्रदायिनी अति सुन्दर काया पाई है। सब हर्षातिरेक से धन्य-धन्य कह उठे। जय घोष से आकाश मुखर हो उठा धर्म की महिमा जानकर जन-जन-मन ओत-प्रोत हो गये।

लक्ष्मण को जीवित सुन रावण आदि राजाओं का हृदय विषाद से व्याप्त हो गया। वे घोर निराशा में डूब गये। लक्ष्मण का जयकार श्रवण कर हृदय बैठा जा रहा था। क्रूर भाग्य की चेष्टाओं का परिपाक अकथनीय है। विचित्र विरोधी दृश्य उपस्थित था। लक्ष्मण रूपी सूर्य के सम्मुख रावण रूपी चन्द्र ठहरने में असमर्थ परलोक गमन की तैयारी में अपने दुर्भावों की सामग्री जुटाने में व्यस्त था। यह सोच रहा था-हाय! यह विषापहारिणी सुन्दर वसुधा पर अवतीर्ण हो मंदभागी को कैसे प्राप्त हो गई ?

मित्रता

महाबल और मणिकेतु में इतनी घनिष्ट मित्रता थी कि उसे दांत काटी रोटी जैसी संज्ञा सहज ही दी जा सकती थी। अधिक कहने से क्या लाभ? जल और शीतलता, अग्नि और ऊष्णता जैसा ही उन दोनों का समीप का सम्बन्ध था। अच्युत स्वर्ग के अन्य देवता उनकी आदर्श मित्रता के गीत गाते थे और उन्हें एक प्राण दो शरीर वाले कहते थे। महाबल और मणिकेतु से भी यह बात छिपी नहीं थी। उनकी मित्रता दिवस के अपरान्ह काल की छाया सी अपनी दिशा में बढ़ती जा रही थी। ये दोनों सही अर्थों में सज्जन थे।

इनकी मित्रता का मूलाधार था, समान शील और व्यसन, अत्यधिक सम्पर्क और प्रेरणास्पद विचार एवं व्यवहार। महाबल और मणिकेतु, दोनों ही विषय वासनाओं से जितने विरक्त थे, धार्मिक भावनाओं में उतने ही अनुरक्त थे। अर्हन्तदेव पर और उनके वीतराग धर्म पर उनकी अपार आस्था थी। इसलिए कभी-कभी वे तत्वचर्चा के स्थान में मन्दिर में दर्शन करने के लिए जाते थे और वीतरागी निर्ग्रंथ सौम्य छवि वाले मुनियों की वन्दना करने के लिए पृथ्वी पर भी आ जाते थे। उन दोनों की एक ही प्रबल इच्छा थी कि मनुष्य गति में जन्म लेकर, संयम को स्वीकार कर आत्मा का उद्धार कर पूर्ण स्वतन्त्र, पूर्ण सुखी, पूर्ण कृति सफल सिद्ध बनें।

एक दिन दोनों मित्र बैठे हुए थे। सहसा उन्होंने सुना-एक देव के कण्ठ की माला मुरझाने लगी। दूसरे शब्दों में दोनों ने समझा-उसकी मृत्यु समीप आने लगी। विचारधारा आगे बढ़ी। उसकी ही क्यों? इसी प्रकार हमारी भी मृत्यु पुकार सकती है यह विचार आते ही दोनों के शरीर सिहर गये। एक क्षण के लिए उनके जीवन बोध पर मृत्यु का भीना आवरण पड़ गया। अब वे कुछ चिन्तित थे, व्यथित थे।

अच्युत स्वर्ग का अपार वैभव, यह सर्वोत्कृष्ट सुन्दरतम शरीर और ये आमोद-प्रमोद के अतुलनीय साधन, सुखदायी शीतल स्थान सभी छूट जावेंगे और तब? तब क्या होगा? यह कहना कठिन है। तथापि फिर वही जन्म-जीवन-जरा-मरण की परम्परा बढ़ेगी। फिर वही पशु-नरक-देव मनुष्य गति का चक्र चलेगा ओर जीवात्मा योनियों में भटकेगा।

महाबल ने मणिकेतु की ओर देखा और मणिकेतु ने महाबल की ओर। दोनों ने एक दूसरे की थाली ली। माध्यम था, मित्रता का स्नेह जन्य सम्बल और उद्‌देश्य था आत्मा के उद्धार का प्रयास।

'मणिकेतु!' महाबल ने कहा-'तुम तो मेरे अनन्य मित्र हो ना।'

'आज आप यह कैसी बात कर रहे हैं?' मणिकेतु बोला-'क्या अपने बरसों के विश्वासी मित्र को पुनः स्मरण दिलाना होगा अथवा शपथ सौगन्ध खाकर कहना होगा।'

'नहीं! नहीं!! मणिकेतु' महाबल ने कुछ संभलकर भूल को सुधारते हुए कहा-'मैं कहना कुछ और चाहता था पर निकल कुछ और ही गया। तुम तो मेरे अनन्य अद्वितीय मित्र हो, गुरु और प्राण से भी बढ़कर पवित्र मित्र हो। इसलिए मेरा एक अनुरोध है, आशा है तुम उसे स्वीकार करोगे और मुझे निराश नहीं करोगे।

'वह क्या?' मणिकेतु ने जिज्ञासा लिये पूछा।

'सम्भव है मेरी आयु तुमसे पहले पूर्ण हो जाये' महाबल ने गम्भीरता पूर्वक रहस्य प्रकट करना शुरू किया। इसलिए मैं चाहता हूं कि मैं जिस किसी भी गति में जाऊं, 'वहां आकार विषय-वासनाओं में खो नहीं जाऊं।' बाला के बाल जाल में,

लक्ष्मी के माया जाल में, अहंकार और अधिकार के सुर-ताल में फंसकर आत्म स्वरूप को भूल नहीं जाऊं'। कभी ऐसी स्थिति हो तो तुम मेरी उतनी सहायता करना, जितनी भी तुमसे शक्य और सम्भव हो तथा अपनी मित्रता के पुनीत कर्तव्य का पालन करना।'

'यह कहकर तो आपने मेरे सुख की बात ही छीन ली।' मणिकेतु ने अतीव उल्लसित होकर कहा-'ऐसा ही अनुरोध मैं आपसे करना चाहता था पर अब तो आप बाजी मार ही ले गये।'

तो फिर तय रहा न ?

'हां हां' मणिकेतु ने समर्थन करते हुए कहा-'हम दोनों मित्र एक दूसरे की आवश्यकता पड़ने पर उतनी मदद करेंगे कि जितनी भी शक्य और संभव होगी ?'

मणिकेतु और महाबल दोनों ही अपने निर्णय से संतुष्ट थे। वे वचनबद्ध थे और मित्रता को अक्षय बनाने की योजना बना चुके थे।

साकेत नगर के समीप ही जो सिद्ध वन था, वह सार्थक संज्ञा वाला था। आम और पीपल, चन्दन और साल, नीबू और नीम, करील और कदम्ब जैसे अनेक छायाकार वृक्ष उसकी वनश्री की सुषमा बढ़ा रहे थे। वन विशाल और विस्तृत होने पर भी भयावह नहीं था और विशेषता यह थी कि वन में रहने वाले पशुओं तक में विरोधी भाव नहीं था। सांप और मोर, मृग और सिंह तक एक साथ रहते थे।

वृक्ष अंगनाओं जैसी अपनी शाखाओं को हिला रहे थे और शाखायें पुत्रों जैसी अपने पत्तों को हिला रही थीं। यह सब आयोजन इस उपलक्ष्य में था कि आज वन की विभूति प्रकृति-विहारी योगेश्वर चतुर्मुख ने अपनी वर्षों की साधना का फल प्राप्त कर लिया था। उन्होंने वह ज्ञान-मणि प्राप्त कर ली थी, जिसे पा लेने पर उन्हें अब और कुछ भी पाना शेष न था।

चतुर्मुख के केवलज्ञान की चतुर्मुखी किरणें ही संसार के संताप को दूर करने में समर्थ हैं। यह बात कहने के लिए वन की वायु वेग से बढ़ी। वह ऊपर-नीचे, आगे-पीछे, दायें-बायें दशो दिशाओं में बढ़ी।

धीरे-धीरे धर्म सभा में लोगों ने आना शुरू कर दिया। पशु भी आये और पक्षी सभी, मनुष्य भी आये और स्त्रियां भी, बच्चे भी आये और बूढ़े भी, सरागी भी आये और विरागी भी। साकेत के सुविख्यात चक्रवर्ती सागर भी और सोलहवें स्वर्ग निवासी देव तथा मणिकेतु भी। धीरे-धीरे सभी चतुर्मुख को घेरकर यथास्थान बैठ गये।

चतुर्मुख की ब्रह्मशक्ति-सी चार अनुयोगमयी दिव्य ध्वनि मुखरित हुई। उसे सुनने के लिए सभी प्राणी आतुर हुए। उनकी स्थिति उस पपीहा सी थी जो स्वांति नक्षत्र देखकर मेघ की ओर आशा भरी आंखें गड़ाये रहता है। सर्वत्र शान्ति का अखण्ड साम्राज्य छाया था। बाहर भीतर कहीं भी वैर-विरोध, ऊंच-नीच, सुख-दुःख, दिन-रात, भेद-भाव नहीं मालूम हो रहा था।

मेरा मित्र महाबल ...... न जाने कहां है ? मणिकेतु के मन में विचार आया। मुझे अपनी मित्रता का निर्वाह करना है और उसके उद्धार का उपाय भी, यह तो स्वर्ग अवसर है, अतएव कर्तव्य का पालन करना ही चाहिये।

साकेत का सुविख्यात चक्रवर्ती सागर ही उसका मित्र महाबल है। दूसरे ही क्षण मणिकेतु ने अपने अवधिज्ञान से जान लिया पर आज तो वह अपने वैभव और विलास में पूर्णतया डूबा है। इसके एक दो नहीं साठ हजार आज्ञाकारी पुत्र हैं। सहस्त्रों रानियां, सहस्त्रों नरेश उसके चरणों में है। न राज्य-कोष में सम्पत्ति का ठिकाना है, न महल में दास दासियों की कोई गणना है ?

मोह में उदधि के बल में डूबे हुए सगर का उद्धार करने में उसे काफी प्रयत्न करना पड़ेगा। मणिकेतु के मन में एक विचार आया।

सो तो है ही, जर-जोरू-जमीन का मोह छोड़ना दुस्साध्य भले न हो पर कम से कम साध्य तो है ही। यह दूसरा विचार था।

पर वह है आसन्न जीवन्मुक्त तब ही तो चतुर्मुख की देशना को मनोयोग पूर्वक सुन रहा है। यह तीसरा विचार था।

धर्म-सभा में आने वाले तो लाखों प्राणी होते हैं। पर तीर्थंकर या केवलज्ञानी के स्वर्णोपदेश से लाभ उठाने वाले विरले होते हैं। चौथा विचार आया पर कुछ भी क्यों न हो? मुझे तो अतीत के अपने मित्र महाबल का, आज के सागर चक्रवर्ती का उद्धार करना ही है। मणिकेतु के इस पांचवें विचार ने सभी विचारों पर विजय पा ली।

धर्म-देशना की इतिश्री होते ही सागर ने चलने का उपक्रम किया और मणिकेतु ने उसके समीप पहुंचना चाहा।

'मैं विशेषतया आपके लिए सोलहवें अच्युत स्वर्ग से आया हूं। मैं आपका वह मित्र मणिकेतु हूं, जिससे आपने कहा था कि यदि मैं कभी विषय वासनाओं में खो जाऊं तो तुम मुझे अपनी आत्मा के अभ्युत्थान का दिव्य सन्देश देने के लिए आना।' यह कहकर मणिकेतु ने संक्षेप में अपना परिचय दिया और आगमन का प्रयोजन भी बतलाया।

'यह सब अब मुझे कुछ भी स्मरण नहीं आता' सागर ने अत्यन्त उदासीनता पूर्वक अपनी नीरसता प्रकट करते हुए कहा-'खैर कभी कहा भी होगा। आत्मा के अभ्युत्थान का दिव्य संदेश तो श्री चतुर्मुखजीसे ही इतना अधिक सुन लिया कि अजीर्ण हो गया। अब तो आप अपना और मेरा समय नष्ट न करें। कष्ट के लिए क्षमा करें।'

यह कहकर सागर रथ की ओर बढ़ा मणिकेतु को सागर का यह व्यवहार बड़ा बुरा लगा पर वह मित्रता की रक्षा के लिए आगे बढ़ा। बोला-चक्रवर्ती सागर! तुम निश्चिन्त और निष्कण्टक होकर जाओ। मैं तुम्हें रोकूंगा नहीं पर स्मरण रखना, जिस राज्य और वैभव के लिए, जिस कंचन और कामिनी के लिये, जिस राजमहल और विषय विलास के लिए तुम इतने प्राण देने को आतुर रहे हो, उनमें से कोई वास्तव में तुम्हारा नहीं है। जब तक तुम्हारी आंखों में जीवन है, ज्योति है तब तक ही सब कुछ है पर आंखों के बन्द होते ही और जीवन दीप के बुझते ही कोई भी तुम्हारा नहीं है। शरीर तक भी तुम्हारा साथी नहीं है। आत्मा ही अपना है और वह अकेला ही आता-जाता है। इसलिए उसकी उन्नति के लिए विचार करो, आत्मा का अभ्युत्थान करो।'

मणिकेतु इतना ही कह पाया था कि सागर के हृदय में सरागी भावों का ज्वार-भाटा आ गया। उसने उबलते हुए कहा-'यह व्यर्थ की बकवास बंद करो। तुमअपने मार्ग पर जाओ और मुझे अपने मार्ग पर जाने दो।'

सागर का रथ बढ़ गया। मणिकेतु देखता रहा। सोचता रहा-आज मेरा मित्र इतना बदल गया कि मेरी बात भी नहीं सुनना चाहता। आह रे! मोहान्ध जीवात्मा तुझे आत्मा के मोक्ष की चिन्ता क्यों हो? तुझे अपने आगे पीछे का कुछ भी भान नहीं। तू तो अपने वर्तमान में ही पूर्णतया सुखी, स्वस्थ, सन्तुष्ट है और अपने भूत-भविष्य को भूला हुआ है।

रथ में जाते हुए चक्रवर्ती ने विचार किया-मैंने मणिकेतु के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया पर उसे भी तो उपयुक्त अवसर देखना था और 'मान न मान मैं तेरा मेहमान' नहीं बनना था। साकेत के राज-भवन में पहुंचते ही वे चतुर्मुख के रहे सहे स्वर्णोपदेश भी भूल गये और मणिकेतु जैसे मित्र का सुन्दरतम विचार भी। फिर वे राज्य-कार्य, भोग-विलास में ऐसे उलझे कि इस ओर सिर उठाने के लिए भी समय नहीं मिला।

पर एक दिन जब उन्होंने सुना। उनके द्वारा निर्मित जिनालय में एक चारण ऋद्धिधारी मुनीश्वर आये तो वे उनके दर्शन का लोभ संवरण नहीं कर सके। वे मन्दिर में गये। मुनि की वंदना की। उन्होंने देखा मुनि के चेहरे पर चन्द्रमा से भी अधिक चमक

है और तपस्या के तेज ने तो उनके सुमुख को सूर्य से भी कहीं अधिक सुन्दर बना दिया है। संयम और शील की आभा तो उनके अंग-अंग से फूट रही है। सारा ही शरीर ऐसा है जैसे सांचे ढला हो। यौवन और विराग मिलकर उन्हें जितेन्द्रिय बतला रहे हैं। जन्मजात बालक-सी निर्विकार सौम्य छवि तो निहारते ही बनती है, वर्णन करते नहीं। मुनिराज के समीप ही नर-नारियों का मेला लगा। मुनिश्री के मुख-गिरी से वचनों का निर्झर बह रहा। उन्होंने यह चक्रवर्ती को लक्ष्य कर कहा-

मानव जीवन की महानता वैभव जनित भोग विलासों में नहीं है। प्रत्यक्ष त्याग, तपस्या और वैराग्यमय जीवन व्यतीत करने में है। हमें भले ही अनुभव न हो पर सूक्ष्म रूप से प्रत्येक वस्तु और प्रत्येक व्यक्ति में प्रत्येक क्षण परिवर्तन होता ही रहता है। फलतः स्थूल रूप में बालक किशोर बन जाता है और किशोर युवा, युवा वृद्ध और वृद्ध मरणोन्मुख हो जाता है। यदि हम सब विचार लें कि अपना घर यहां नहीं है, अपना घर तो कहीं और है। अतएव यहां हम दीर्घकाल तक ठहर नहीं सकते हैं। कारण हम प्रवासी हैं, परदेशी हैं। जब शरीर तक अपना नहीं तो दूसरे अपने क्या होंगे ? यह विचार कर हम सरागी से विरागी सहज ही बन सकते हैं और आत्मिक जागृति कर सकते हैं।

आदरणीय गुरुवर्य! चक्रवर्ती सागर बोला-'आपने जो बातें कही वे बावन तोला पावरत्ती सही हैं। पर अभी हम लोगों की काल लब्धि शायद आई नहीं, अतएव परिवार और संसार में उलझे हैं।' यह कहकर चक्रवर्ती रुका। फिर बोला-'यदि आप बुरा न माने तो मैं कहूं कि जब आपका शरीर सौन्दर्य कामदेव को भी लज्जित कर रहा तब फिर इस युवावस्था में आपके विरागी बनने का क्या कारण है।'

'सागर! तुम जिस शरीर की सुन्दरता को इतना अधिक महत्व दे रहे, वह क्षणिक है, नश्वर है, शरीर को एक दिन भोजन न दो अथवा इस पर एकाध रोग का आक्रमण होने दो। फिर देखो शरीर में सुन्दरता अधिक है या क्षणिकता।' मुनि बोले-और वैराग्य के लिए तो उपायुक्त समय यौवन काल ही है, जब हमारी इन्द्रियां सजग हैं, सबल हैं। बुढ़ापे का वैराग्य कोई वैराग्य है, जब न आंखों से बराबर दिखाई देता है और न कानों से सुनाई देता है तब तो आत्मा के अभ्युत्थान की चर्चा करना ही फिजूल है।'

'आप अक्षरशः सत्य कह रहे हैं।' यह करने के साथ ही सागर चक्रवर्ती ने मुनिनाथ के सम्मुख हाथ जोड़े और श्रद्धा के साथ सिर झुका दिया। चक्रवर्ती का साथ सभी साकेत वालों ने दिया।

मुनिवेषी मणिकेतु मौन रहा। उसने अपना रहस्य प्रकट करना उचित नहीं समझा। वह सोचने लगा-जब मुझ जैसे मायावी मुनि का इतना प्रभाव है तब वास्तविक मुनि के अमोघ प्रभाव का क्या कहना ?

'पूज्यवर पिताश्री।' एक ने कहा-'हम लोगों ने आपसे कई बार निवेदन किया कि हमें कुछ काम करने की आज्ञा दीजिए, पर आपने आज तक हमें कोई काम नहीं बताया।'

दूसरे ने समर्थन किया। 'हम लोग तो आपके अत्यधिक सुख से बहुत पीड़ित हो गये'-तीसरे ने कहा-'सागर ने अपने आज्ञाकारी साठ हजार पुत्रों की ओर दृष्टि डाली। वे मन ही मन फूले नहीं समाये। उनके पितृत्व ने गौरव से सिर उठाया। वे चुप रहे। पिताश्री अपराध क्षमा करें। अब हम लोगों को बिना काम किये हराम का खाना बिल्कुल ही अच्छा नहीं लगता है।' चौथा बोला।

'पुत्रों! मैं तुम्हें क्या काम करने के लिए कहूं?' सागर बोला-'काम करने के लिए नौकर-चाकरों की कमी नहीं है। चक्ररत्न के माध्यम से मैने छह खण्ड भू-भाग जीत लिये हैं, इसलिए मेरे पास न वैभव-ऐश्वर्य की कमी है और न आमोद-प्रमोद के साधनों की। अपने पितृदाय या पिता की आज्ञा में तुम यही काम समझो कि खाओ पियो और मस्त रहो। मेरे परम पुरुषार्थ का फल तुम सब अच्छी तरह भोगो, यही मेरी इच्छा है।'

'नहीं, नहीं, पिताजी! यह कहने से अब काम नहीं चलेगा।'-पांचवें ने कहा। 'अब कुछ न कुछ काम बतलाना ही पड़ेगा।'-छठे ने अनुनय-विनय कर कहा।

'आखिर हम सब आपके पुत्र हैं।' सातवें ने बात को बढ़ाया।

'और हमारा भी आपके प्रति कुछ कर्तव्य है या नहीं ?' आठवें ने पूछा।

'क्यों नहीं ?' नववें ने कहा।

'आवश्यक है।' दसवां बोला।

'और वह हम करके ही रहेंगे।' ग्यारहवां बोला।

'अगर आप आज्ञा नहीं देंगे तो मैं आज से भोजन ही बन्द कर दूंगा।'

तेरहवें ने सत्याग्रही जैसी धमकी दी।

'अगर आप काम नहीं बतलायेंगे तो मैं अभी से ही बोलना बन्द कर दूंगा।' चौदहवें ने प्रेम मिश्रित वाणी संग रूठने का अभिनय किया। 'भाइयों! सबसे बढ़िया उपाय यही है' पन्द्रहवें ने कहा-'जब तक पिताजी कोई काम करने के लिए नहीं कहें तब तक सब भोजन नहीं करेंगे।'

'ठीक है बहुत अच्छा।' सभी ने स्वर में स्वर मिलाया। अब हम बोलेंगे नहीं।

'यह सुनकर चक्रवर्ती बड़े सोच-विचार में पड़ गये। उन्हें बड़ी प्रसन्नता थी कि उनके सभी पुत्र आज्ञाकारी हैं और कार्य करने के लिए अतीव उत्सुक हैं पर समस्या काम की थी, जिसे वे प्रयत्न करने पर भी सुलझा नहीं पा रहे थे।

थोड़ी देर बाद गम्भीरता पूर्वक मौन भंग कर चक्रवर्ती बोले-'पुत्रों! मैं तुम्हें कार्य बतलाता हूं। ध्यानपूर्वक सुनो और प्राण-प्रण से करो। कैलाश पर्वत के शिखर पर अनेक जिन मन्दिर हैं, जिनको चक्रवर्ती भरत ने बनवाया था, तुम सब कैलाश के चारों ओर परिखा खोदो और उसमें गंगा की धारा प्रवाहित करो ताकि कैलाश पर्वत कैलाश द्वीप के रूप में भी प्रसिद्ध हो। स्मरण रखना, यह कार्य कष्ट साध्य अवश्य है पर दुस्साह्य कदापि नहीं समझें, तुम्हारे हठ के ही कारण मुझे यह काम बतलाना पड़ रहा अन्यथा मेरी तो इच्छा........' 'ठीक है पिताजी!' एक ने कहा।

'हम कल से ही यह काम शुरू कर देंगे।' दूसरा बोला 'शुभस्य शीघ्रं' यह तीसरे का मत था। 'अभी ही काम शुरू कर दो।' चौथे ने आगा-पीछा विचार कर कहा। 'हम अभी ही कैलाश की ओर चल दें।' पांचवें ने प्रस्ताव रखा।

'हम सब सहमत हैं। छठे के साथी सभी थे। 'इतनी उतावली मत हो।' सगर ने कहा-'अपने साथ राज्य के कुछ अनुभव प्राप्त सुप्रतिष्ठित राज्य कर्मचारियों को भी ले लो। ये तुम्हारे काम में सहयोगी होंगे।'

सगर ने अर्थ भरी दृष्टि से कुछ मंत्रियों की ओर देखा। बोले-'मंत्रियों मैं अपने साठ हजार सुपुत्रों को तुम्हारे सुपुर्द कर रहा हूं। ये सभी सकुशल काम करेंगे और तुम लुक-छिप कर देखना। आवश्यक समझो तो मार्ग-दर्शन करना, सहायता देना। यह मैं तुम सबसे विशेषतया इसलिए कह रहा हूं कि ये सभी काम की दिशा में अभी अनुभवी हैं। पर आप लोगों ने तो अपने जीवन में कई बसन्त-हेमन्त देखें हैं और अनेक कार्य भी किये हैं .... और मैंने इन्हें भी जो काम बतलाया है, वह पूर्णतया निरापद नहीं है। आप लोग इनकी भूलों की ओर ध्यान नहीं देना। इनकी कुशलता का ख्याल रखना और इनके उत्साह को बढ़ाते रहना ...... और बच्चों! तुम इन मंत्रियों को मेरे समान ही समझना। संभव है आप लोगों के सहयोग से और राजकुमारों के उत्साह एवं परिश्रम से कैलाश पर्वत कैलाश द्वीप भी बन सके।

सगर चक्रवर्ती के साठ हजार पुत्रों ने सुदृढ़ संकल्प किया-वे कैलाश पर्वत को कैलाश द्वीप बनाकर ही रहेंगे। वे अपने पिताश्री की इच्छा को पूरा करने के लिए एक विशाल खाई खोदेंगे और उसमें गंगा की धारा को प्रवाहित करेंगे। फिर पिताश्री से आशीर्वाद प्राप्त करेंगे।

जो भी व्यक्ति इस बात को सुनता वह थोड़ी देर के लिए अचरज करता और बाद में चक्रवर्ती की सूझ की सराहना करता तथा उनके पुत्रों की पितृ-भक्ति की भी प्रशंसा करता था। उनके इस कार्य में कोई धार्मिक भावनायें देखता था और कोई शारीरिक क्षमताएं देखता था। धीरे-धीरे यह चर्चा पृथ्वी से स्वर्ग तक पहुंची।

सगर के पुत्रों ने बड़े जोर-शोर से खुदाई का काम शुरू किया। उनके अमित परिश्रम को देखकर मंत्रीगण भूलने लगे कि वे राजकुमार हैं और अनुभव करने लगे कि वे भी साहस और श्रम तथा शौर्य वाले सही अर्थों में पृथ्वी पुत्र हैं।

अपनी धुन में, पिता की अभिलाषा पूर्ण करने के लिए एक लाख बीस हजार हाथ पृथ्वी की छाती पर गहरे घाव किये जा रहे थे। राजकुमार न दिन देखते थे और न रात, न भोजन करते और न पानी, न सुख सुविधा और न अन्य दुविधा। उनका उद्‌देश्य एक ही था, शीघ्र ही परिखा समाप्त हो। उसमें कल-कल, छल-छल करती हुई गंगा बहे। यह शुभ संवाद शीघ्र पिताश्री तक पहुंचे और वे अमोघ आशीर्वाद देकर परिश्रम को सफल कर दें। वे सभी प्रणवीर इसी कामना के लिए जूझ रहे थे।

सहसा एक भयंकर विषधर की अतीव धीमी फुंसकार उन्हें सुनाई दी पर इसके पहले कि वे उसे खोज निकालते और उठाकर उसे अपने मार्ग से अलग कर देते, उस विषधर की दूसरी तीव्र फुंसकार से ऐसा विषाक्त वातावरण निर्मित हुआ कि उसमें सांस लेते ही साठ हजार के साठ हजार राजकुमार निश्चेष्ट मृतप्राय हो गये।

जब उनके गिरने के साथ ही कुदाल और फावड़े की आवाज भी बंद हो गई तब मन्त्रियों ने परिखा की ओर झांका। वहां सजीव राजकुमारों के स्थान पर अजीव से राजकुमारों को सोये हुए देखकर वे किंकर्तव्य विमूढ़ हो गये। उन्होंने परीक्षा के तौर पर दो चार को जगाया भी, सही पर जब कोई भी नहीं जगा तो वे बड़े पशोपेश में पड़ गये। तीव्र शोक के कारण उनकी आंखों में आते हुए आंसू भी सूख गये और वे भी जीवित होकर मर से गये।

और अब यह अतीव दुखप्रद समाचार सुनाने के लिए चक्रवर्ती के पास कौन जावे? इसके लिए भी वे सभी एक दूसरे का मुख देखने लगे। उनका साहस खो सा गया। उन्हें लगा कि बुढ़ापे में यह गहरा दाग लगा। विवश होकर उन्होंने यह संवाद नहीं ही सुनाने का निर्णय किया तथा वहीं रहने का भी निश्चय कर लिया। उन्हें रह-रहकर विचार उठ रहा था कि चक्रवर्ती क्या कहेंगे और क्या सोचेंगे।

उनके इस निर्णय को भी मणिकेतु ने पूर्णतया भाप लिया, जो विषधर का रूप धारण किये था। फलतः उसने स्वयं ही ब्राह्मण का वेष धारण कर लिया और यह अप्रिय समाचार चक्रवर्ती सगर को सुनाने का भी शीघ्र ही निर्णय कर लिया।

दुहाई, चक्रवर्ती के न्याय और बल की दुहाई, ब्राह्मण ने आंखों से आंसू बहाते हुए और अतीव दीनता बतलाते हुए गिड़गिड़ा कर कहा।

जो कुछ कहना है साफ साफ कहो। चक्रवर्ती ने कुछ रोषपूर्वक कहा।

सार्वभौमिक सम्राट! कहकर ब्राह्मण ने उत्तरीय से आंसू पोंछे। मेरे एकमात्र पुत्र को मृत्यु के देवता यमराज ने अपने आधीन कर लिया। कृपया उससे मेरा पुत्र दिलवा दीजिए अन्यथा मेरे प्राण पखेरू असमय में ही दूर दिशा में उड़ जायेंगे। चूंकि आप समर्थ हैं, इसलिए मैं आपसे प्रार्थना कर रहा हूं।' 'तुम बड़े अजीब आदमी हो।'

क्यों भला महाराज! क्या मैंने कोई बुरी बात कही? 'और नहीं तो क्या?' चक्रवर्ती ने उसे समझाते हुए कहा-'अरे भले आदमी! यमराज के चंगुल में फंसा हुआ भी कभी कोई आदमी बचा है? चाहे गरीब हो या अमीर, चाहे बच्चा हो या पक्षी, चाहे देवता हो या नारकी पर मरना संसार में सबके लिए है। जन्म के साथ मृत्यु जुड़ी है। सुख के साथ ही दुख लगा है।'

'यद्यपि ऐसा उपदेश दूसरों को तो तभी देते हैं पर जब अपने ऊपर बीतती है तब से सिद्धान्त आंखों के आंसुओं में न जाने कहां बह जाते हैं। फिर भी आपके श्रीमुख से यह सुनकर मुझे परम प्रसन्नता हो रही है।' यह कहने के साथ ही ब्राह्मण की आंखों में कुटिलता का भाव झलका। यह देखकर चक्रवर्ती चौकन्ने हुए। उन्होंने साहस बटोर कर कहा-'पहेली न बढ़ाओ, विप्रवर! जो कुछ भी कहना हो, सब शीघ्र और साफ कहो।'

'सम्राट! मेरी बात अग्नि से भी अधिक उष्ण है और तलवार की धार से भी अधिक तीक्ष्ण है। मेरी बात कालकूट हलाहल से भी अधिक विषमय और उसकी मार वज्रदण्ड से भी कहीं अधिक घातक तथा दारुण है।'

'तुम इसकी चिन्ता न करो। अपनी बात कहो और मेरी सहिष्णुता देखो।'

'महाराज! मेरा तो एक ही पुत्र था, इसलिए उसके वियोग को आपके वचनों की सान्त्वना से सह लिया पर आपके तो साठ हजार के साठ हजार पुत्रों को ही यमराज ने कुछ समय के लिए अपना अतिथि बना लिया है।'

ये कहने के साथ ही चक्रवर्ती के नयन ऊपर कुछ खोजने लगे। साठ हजार के साठ हजार राजकुमार अब नहीं रहे।' कहने के साथ ही चक्रवर्ती संज्ञाहीन हो गये।

सारी सभा में हाहाकार मच गया। अन्तःपुर की रमणियां दुख पर दुख पाकर आंसू बहाने लगीं। चिकित्सक बुलवाये गये। उनकी मंत्रणा से चंदन और खस के जल के प्रयोग किये गये। थोड़ी देर बाद जब चक्रवर्ती को होश आया, तब कुछ लोग समाचार लाने वाले ब्राह्मण को ही भला-बुरा कह रहे थे और वह किसी प्रकार दुर्गति लिए दुर्वाक्य सह रहा था।

जन्म के साथ मरण जुड़ा, फूल के साथ शूल लगा, सुख के साथ दुख बंधा। जीवात्मा के साथ आवागमन लगा। जीवन, एक विडम्बना है। प्रेम क्षणभंगुर है। यौवन, इन्द्रधनुष है। काया छाया है। संसार परिवर्तनशील है, अतएव अब मुझे अपनी स्थिति में भी परिवर्तन कर लेना चाहिये। मैंने व्यर्थ ही भोग विलास में इतना समय बरबाद कर दिया। खैर अब जब जागे तब ही सबेरा। बीती बातों को भुलाकर आगे के लिए सावधानी ही श्रेयस्कर है।'

'महाराज!' ब्राह्मण ने कहा-'आपके ये विचार अनुमोदन के योग्य हैं। स्मरण रखियेगा कि साधु बनने और संन्यास लेने के लिए इससे अच्छा स्वर्ण अवसर आगे आपके जीवन में नहीं आयेगा।

यह कहकर ब्राह्मण चला गया। अब चक्रवर्ती संसार में रहकर भी उदास थे। वे राजमहल में रहकर भी राजलक्ष्मी और राजधानी से दूर थे।

अतीव हर्ष और उल्लास के वातावरण में अनेक वाद्य-वादित्रों की ध्वनि के बीच सगर ने भागीरथ को राज सिंहासन पर बैठाया और मस्तक पर राजमुकुट रखते हुए कहा-'वत्स! मैंने अपने विशाल साम्राज्य का, समुद्रान्त भू-भाग वाली पृथ्वी का, लक्ष्मी का काफी उपभोग किया। अब अपने पुत्रों के अभाव में ..... मैं तुम्हें उत्तराधिकारी महाराज बनाये जा रहा हूं। प्रजा का पुत्र की तरह पालन करना और मंत्रियों को पिता के समान समझना, संयम और विवेक से काम लेते हुए सावधान रहना।'

'जैसी आज्ञा' कहकर भागीरथ ने सिर झुका दिया और चक्रवर्ती के संदेश की गंभीरता का अनुभव किया। जन समूह में शान्ति थी।'

'प्रजाजनों!' सगर ने कहा-'आप लोग मेरे जैसा ही भागीरथ को समझेंगे। उसे आदर और सम्मान देंगे। विशेषतया राज्य के छोटे बड़े सभी कर्मचारी भागीरथ की आज्ञा का पालन करते रहेंगे। यह कहकर चक्रवर्ती कुछ रुके। उनके सुमुख पर विराग के बादल छा गये। लोग पहले से ही अनुभव कर रहे थे कि इस नाटक का अगला दृश्य कौन सा है? और कुछ तो चक्रवर्ती के धैर्य की सराहना कर रहे थे, जो वे साठ हजार पुत्रों के वियोग को सहज जीवन-परिवर्तन से भूलने जा रहे थे। लोगों के हृदयों में विचारों का अन्तर्द्वन्द्व बढ़ता ही जा रहा था।

मैंने आप लोगों से कभी भी भूले भटके भी, जान-अनजान में कोई दुर्वचन कहा हो, दुर्व्यवहार किया हो तो उसके लिए मैं हृदय से क्षमा मांगता हूं और आप सभी से आशीर्वाद चाहता हूं कि जैसे मैं सरागी जीवन में सफल रहा, वैसे ही विरागी जीवन में सफल रहूं।'

यह सुनते ही कुछ लोगों की आंखें छलछला आईं और कुछ की आंखें बरस पड़ीं। अन्तपुर की रमणियों के कण्ठ से रुदन फूट निकला। उल्लास का स्थान विषाद ने ले लिया पर चक्रवर्ती अभी भी अविचल थे।

'हम आपके बिना कैसे रहेंगे?' कुछ ने रोते हुए कहा। चक्रवर्ती ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया प्रत्युत सामान्य नागरिकों को जैसा चलना शुरू कर दिया। यह देखकर लोगों ने भी उनके पीछे चलना शुरू कर दिया। साकेत का यह जुलूस सिद्धवन तक चला। वहां पहुंचकर कुछ तो थककर विश्राम करने लगे और कुछ गप्पे हांकने लगे।

दृढ़ धर्म जिनेन्द्र से चक्रवर्ती सगर ने जिन-दीक्षा ले ली। किरीट-कुण्डल केयूर-करधनी की तो कौन कहे? न शरीर पर वस्त्र रहे और न शिर पर केश। लोगों ने अनुभव किया-तब के चक्रवर्ती सगर में और अब के तपस्वी सगर में आकाश-पाताल का अंतर हो गया।

योग ने भोग के ऊपर विजय पाई। पास के पशु पक्षियों ने शिर हिलाकर समर्थन किया। पेड़ के पत्तों ने हर्षित होकर तालियां बजाईं। यह बात सभी से कहकर आने के लिए हवा भी चली।

भगवान भुवन-भास्कर अपने रथ में आगे बढ़े। पक्षियों ने उड़ान भरी। कृषकों ने खेतों में हल सम्हाले। जड़ तक जाग गये और चेतन से बन गये। ऊषा की सुषमा ने नये दिवस का नया संदेश दिया।

'राजकुमारों! आपके पिताजी से न जाने किसने जाकर कह दिया कि आप सब इस लोक से परलोक में पहुंच गये।' ब्राह्मण वेषधारी मणिकेतु बोला।

'बड़ा दुष्ट आदमी था वह' एक ने कहा।

'इतना बड़ा झूठ बोला' दूसरे ने अपना आश्चर्य प्रकट किया। 'बस सफेद झूठ इसे ही तो कहते हैं' तीसरे ने स्पष्टीकरण किया।

'दुनिया में ऐसे लाखों आदमी हैं' चौथे ने घृणा का भाव मुंह पर लाते हुए कहा।

'जो झूठ ही भोजन समझते हैं' पांचवें ने चौथे की बात का बढ़ाया।

'फिर क्या हुआ?' छठे ने बीच में ही बात काटते हुए पूछा। 'हां भाई! मतलब की बात कहो' सातवें ने छठे का समर्थन किया। 'पिताजी तो सकुशल हैं न?' आठवें ने कुछ चिंतित होकर पूछा।

'कुछ दिनों तक तो आपके पिताजी बड़े उद्विग्न रहे।' ब्राह्मण ने कुछ रुक कर कहा, फिर बाद में-संयत और स्वस्थ होकर आप लोगों के अभाव में वे भागीरथ को राज्य सौंपकर चले गये।'

'कहां चले गये?' नवमें ने अधीर होकर पूछा।

'वन में।'

'क्यों भला?' विस्मय प्रकट करते हुए दसवें ने पूछा। 'इसके सिवाय' अपने अमोघ दुख को भूलने की उनके पास दूसरी दवा ही नहीं थी।' ब्राह्मण ने उनकी विवशता और विडम्बना बतलाते हुए कहा।

'और फिर परिवर्तन से परिपूर्ण संसार के रहस्य को भी उन्होंने हृदयंगम कर लिया था। धर्ममीषी तो वे आरंभ से ही थे।'

'अब पिताजी कहां हैं?' ग्यारहवें ने जिज्ञासु बनकर पूछा 'सिद्धवन में।' ब्राह्मण ने नपा तुला उत्तर दिया। 'वहां क्या कर रहे?' ग्यारहवें ने बेचैनी से पूछा। उनके वन में जाने का प्रयोजन जानना चाहा। सभी राजकुमार अब थके से लग रहे थे।

'वे साधु हो गये और आत्म साधना कर रहे।'

'पिताजी को हम सभी से बड़ा प्रेम था।' एक बोला।

'इसमें क्या संदेह?' दूसरे ने समर्थन किया। 'भला यह भी कोई कहने की बात है।' तीसरे ने कहा। 'यह तो जग जाहिर है।' चौथे ने कहा। 'तब ही तो जीवन में कुछ भी काम करने के लिए नहीं कहा।' पांचवें ने कहा। 'और जब एक काम बतलाया।' छठे ने ठंडी सांस लेकर कहा।

'तो वह भी हम लोग पूरा नहीं कर सके।' सातवें ने पश्चाताप प्रकट करते हुए कहा।

'अब खाई खोदना व्यर्थ है।' आठवें ने विचारधारा को मोड़ दिया। 'हां अब यह निरुद्देश्य और निष्फल ही है।' नववें ने समर्थन किया। 'जिनसे आशीर्वाद पाने की लालसा लिये परिखा खोद रहे थे।' दसवें ने कहा। 'वह पिता ही जब पुत्रों का मोह छोड़कर विरागी हो गया।' ग्यारहवां बोला।

'तो अब सब व्यर्थ है। अब यह आयोजन भला किसलिये हो?' बारहवें ने विचार रखा।

'अब यह आयोजन किसलिये है?' प्रस्तुत प्रश्न का उत्तर जब राजकुमार नहीं खोज सके तो वे थोड़ी देर के लिए चुप हो गये। राजकुमारों को चुपचाप देखकर ब्राह्मण बोला-पुत्र वही है जो अपने पिता को प्रसन्न करे। उसके पद चिन्हों पर चलें। उसके लिए सर्वस्व समर्पण करने प्रस्तुत रहे।

ब्राह्मण देवता! तुम्हारे इस सामायिक मार्ग दर्शन के लिए हम सभी आभारी हैं।

'हम भी पिताजी के सही अर्थों में पुत्र बनेंगे।' एक ने प्रस्ताव रखते हुए कहा।

'और यह कार्य पूरा नहीं कर सके तो दूसरा तो करके ही रहेंगे।' दूसरा बोला। 'यानी?' तीसरे ने भाव की थाह लेने की नियत से पूछा।

'साधु बनेंगे।' चौथे ने उत्तर दिया।

'साधु नहीं समभाव के साधक बनेंगे।' पांचवें ने रहस्य खोला।

'तो हम सब आत्मा के आराधक बनेंगे।' छठवें ने स्पष्टतया कहा।

'अब हम आत्मा के लिए संसार में रहेंगे।' सातवें ने कहा।

'शरीर के लिए तो काफी दिनों तक संसार में रहे।' आठवें ने ध्यान दिलाया। 'हमारा लक्ष्य होगा पूर्ण आत्म-बोध।' नववें ने कहा। 'हमारा उद्‌देश्य होगा संयम और विवेक।' दसवां बोला। हमारा ध्येय होगा सम्यग् दर्शन, ज्ञान और चारित्र।' ग्यारहवें ने कहा।

'हम भी आपकी बातों से सहमत हैं और शीघ्र ही साधु बनने के लिए उत्सुक हैं।' बारहवें ने यह कहकर अपनी तथा अन्य भाइयों की विरक्ति की तीव्रता बतलाई।

राजकुमारों! ब्राह्मण बोला-मैं विचार नहीं पाता हूं कि आप लोगों को धन्य कहूं अथवा चक्रवर्ती सगर को।'

'हमारी समझ में तो वास्तव में धन्यवाद के पात्र आप हैं।' राजकुमारों में से किसी एक ने कहा। यह सुनकर ब्राह्मण मुस्करा दिया।

सिद्धवन में मुनियों का मेला लगा था। सिद्धवन फूला नहीं समा रहा था। साकेत के असीम वैभव के भोगी न केवल चक्रवर्ती सगर ही साधु के रूप में वहां थे बल्कि उनके साठ हजार पुत्र भी संयमी वृत्ति लिये जिन मुद्रा को स्वीकार कर चुके थे। एक ओर मुनियों का मंडल था और दूसरी ओर श्रावकों का। राजा भागीरथ तो आ गये थे पर आचार्य दृढ़धर्म अभी ध्यान मग्न ही थे।

सहसा ठंडी हवा चली। पेड़ों की पत्तियां झूमीं। सर-सर मर-मर ध्वनि हुई। वातावरण में उल्लास और उत्साह मुखरित हुआ। भूत, भविष्य और वर्तमान को प्रत्यक्ष दिखलाने वाले केवलज्ञान को पाने के लिए सगर चक्रवर्ती का मन आतुर हुआ। वे ज्ञान की साधना और आत्मा की आराधना के लिए सन्नद्ध हो ही रहे थे कि एक कमनीय कांति से परिपूर्ण चिरयौवन के प्रतीक देवता ने आकर कहा-मुनिवर! मुझे क्षमा करें।

'किसलिए?' सगर ने उत्सुक होकर पूछा। 'आपने शायद मुझे पहिचाना नहीं?' मणिकेतु ने स्मरण दिलाया।

'शायद कभी पहले तुम्हें देखा तो है पर अभी स्मरण नहीं आ रहा। कहकर मुनीन्द्र सगर कुछ सोच विचार में पड़ गये। अरे अहा मणिकेतु! तुम मुझे क्षमा करो। मैंने चक्रवर्ती सगर के रूप में एक बार तुम्हारी बड़ी अवहेलना और अवमानना की थी। शायद तुम भी भूले नहीं होगे। पहले तुम क्षमा कर दो। विशेषतया इसलिए कि हम साधु हो गये।

लोगों ने यह बात आश्चर्य पूर्वक सुनी। कुछ ने कानाफूसी करते हुए कहा-यह भी भाग्य का बढ़िया विधान है। जिस चक्रवर्ती की तिरछी भृकुटी देखकर ही महाराज अपने प्राण बचाना चाहते थे, आज वही चक्रवर्ती सगर इतना सरल और निर्मल परिणाम वाला हो गया कि इतने जन समूह के बीच में भी अपनी भूल के लिए क्षमा मांगने में कोई गौरव की हानि नहीं समझता।

कुछ लोग सभी बातें साफ-साफ सुनने के लिए आगे बढ़े। कुछ ने बातें बंद कर दीं। नहीं, नहीं! मुनि श्री, आप ऐसा नहीं कहें, मणिकेतु ने कहा-अनादर आपने नहीं, चक्रवर्ती के उस अहंकार और स्वामित्व ने किया था, जो आज वीतराग और समभाव के रूप में बदल गया। अब तो आप मेरी श्रद्धा के ही पात्र हैं।

जैसा भी तुम कहो या समझो। बात को बदलते हुए मुनीन्द्र ने कहा-पर मुझे कम से कम यह तो बतलाओ कि अपने किस अपराध को लिए तुम मुझसे क्षमा चाहते हो।

'यतिवर! मेरे एक नहीं, अनेक अपराध हैं।'

'भले आदमी, कुछ कहोये भी या यों ही बातों की भूल भुलैयों में फंसाये रखोगे?'

'एक तो चारण ऋद्धिधारी मुनि बनकर मैंने आपको आत्मबोध देने का दुस्साहस किया था और अपने प्रयत्न में आधा सफल और आधा असफल रहा।

चक्रवर्ती को स्मरण आया सुंदरतम चारण ऋद्धिधारी मुनि उनके ही जिनालय में उनकी ही नगरी-राजधानी साकेत में।

'अरे मणिकेतु! वह तुम थे।' सगर ने विस्मित होकर कहा।

'जी हां, दूसरे मैंने भयंकर विषधर बनकर खाई खोदते हुए आपके साठ हजार पुत्रों को अपने विषमय वातावरण से बेहोश कर दिया था।'

'अच्छा मणिकेतु! तुमने मेरे लिए यह भी किया।' सगर के स्वर में वेदना थी। 'जी हां, तीसरे उनके मरने की खबर सुनाकर आपकी और आपके परिवार को न केवल वेदना के समुद्र में ही डुबो दिया था, बल्कि संसार से पृथक कर दिया।' मणिकेतु बोला-'मैंने ब्राह्मण के रूप में अपने पुत्र के मरने की बात तो यों ही सहज भूमिका के लिए कह दी थी जो जड़ से ही झूठी थी।'

चक्रवर्ती का स्मरण आया। किस प्रकार ब्राह्मण के कहने से वे मर्माहित और विरक्त हुए और फिर साकेत को छोड़कर सिद्धवन में आ गये।

चौथे राजकुमारों से कहा-'तुम्हारे पिता से जो किसी ने जाकर कह दिया कि आप सभी स्वर्गवासी हो गये। फलतः आपके पिताश्री धर्म चक्रवर्ती बन गये। सभी राजकुमार भी आपके पद चिन्हों पर चले, कारण, वे सभी आपके पुत्र हैं और अभी यहां मुनि हैं। यह कहकर मणिकेतु ने सर्वप्रथम तो मुनीन्द्र सगर के समक्ष हाथ जोड़े फिर साठ हजार मुनियों के सम्मुख हाथ जोड़े, भूल के लिए क्षमा चाही।

'पर यह सब तुमने क्यों किया?' सगर ने पूछा। 'अपनी मित्रता का निर्वाह करने के लिए, दिये हुए वचन को पूरा करने के लिए' मणिकेतु ने संक्षेप में गंभीरता पूर्वक उत्तर दिया।

'हे मित्र! तुम्हारी माया बड़ी विचित्र है। तुमने मेरे लिए वह किया जो विरला मित्र ही अपने मित्र के लिए कर पाता है। तुमने न केवल मेरा ही लोक परलोक सुधार दिया बल्कि मेरे पुत्रों का भी जीवन सुधार दिया। इसलिए तुम मेरे अणुभर भी अपराधी नहीं हो बल्कि इतने उपकारी हो कि जितना भी शक्य और संभव है।' कहकर सगर मुनीन्द्र रुके। फिर उनके मानस में भावों का ज्वार आया तो बोले-'तुम्हारा अपराध नहीं, नहीं! उपकार भुलाने लायक नहीं बल्कि अनुकरणीय है, अभिनंदनीय है, गौरव और स्पर्धा के योग्य है। मैं तो देवाधिदेव जिनेन्द्र से यही प्रार्थना करूंगा कि घर घर मणिकेतु सरीखे मित्र हों ताकि मनुष्य पुत्रों सहित मेरी भांति जीवनमुक्त हो सके और आत्मा की आराधना करते हुए समग्र संसार को सुखी संतुष्ट कर सके।

सगर मुनीन्द्र इतना ही कह पाये थे कि एक श्रावक ने उठकर मणिकेतु के गले में हार डाल दिया। मुनियों ने मंद मुस्कान बिखेरकर हर्षमयी ध्वनि की और श्रावकों ने श्राविकाओं ने जी भरकर तालियां बजाईं। समूचे सिद्धवन का वातावरण मित्रतामय हो गया।

प.पू. सद्धर्म प्रवर्तक, चारित्र चूड़ामणि, वात्सल्य रत्नाकर, आचार्यरत्न श्री 108 बाहुबली महाराज जी के पूर्व चातुर्मास स्थलों के नाम

सन्	स्थान	अवस्था	
1. 1962	माणगांव	सप्तम ब्रह्मचर्य प्रतिमा के अवस्था में	प.पू. गुरुदेव देशभूषणाचार्यश्री के साथ
2. 1963	दिल्ली	,,	,,
3. 1964	जयपुर	,,	,,
4. 1965	दिल्ली	,,	,,
5. 1966	जयपुर	,,	,,
6. 1967	स्तवनिधी	क्षुल्लक अवस्था में	,,
7. 1968	बेलगांव	,,	,,
8. 1969	कोल्हापुर	,,	,,
9. 1970	भोज	,,	,,
10. 1971	जयपुर	,,	,,
11. 1972	दिल्ली	,,	,,
12. 1973	दिल्ली	,,	,,
13. 1974	दिल्ली	,,	,,
14. 1975	कोथली	दिगम्बर मुनि अवस्था में	,,
15. 1976	कोथली	,,	,,
16. 1977	कुरुंदवाड	,,	गुरुदेव की आज्ञा से
17. 1978	शिरढोण	,,	,,
18. 1979	बेलगांव	,,	,,

19. 1980	भोज	आचार्य अवस्था में	,,
20. 1981	बेलगांव	,,	,,
21. 1982	हुपरी	,,	,,
22. 1983	चिपरी	,,	,,
23. 1984	हुपरी	,,	,,
24. 1985	भोज	,,	,,
25. 1986	ललितपुर	,,	--
26. 1987	बॉम्बे	,,	--
27. 1988	कोथली	,,	--
28. 1989	कोथली	,,	--
29. 1990	फलटण	,,	--
30. 1991	शेन्द्री (सोलापुर)	,,	--
31. 1992	धर्मनगर	,,	--
32. 1993	बेलगांव	,,	--
33. 1994	कुरुंदवाड	,,	--
34. 1995	रूई	,,	--
35. 1996	सांगली	,,	--
36. 1997	अकलूज	,,	--
37. 1998	धर्मनगर	,,	--
38. 1999	गरग (धारवाड़)	,,	--
40. 2000	दिल्ली	,,	--

॥ आचार्य महाद्रुमं वन्दे॥

प.पू. आचार्यश्री के द्वारा दीक्षित त्यागीवृन्द

नाम

1. प.पू. मुनिश्री 108 उपाध्याय शांतिसिंधु जी
2. प.पू. मुनिश्री 108 प्रवचन परमेष्ठी अर्हदबली जी
3. प.पू. मुनिश्री 108 धर्मभूषण जी
4. प.पू. मुनिश्री 108 विद्याभूषण जी
5. प.पू. मुनिश्री 108 धर्मसेन जी
6. प.पू. मुनिश्री 108 चित्रगुप्त जी
7. प.पू. मुनिश्री 108 समाधिगुप्त जी
8. प.पू. मुनिश्री 108 पूर्णचन्द्र जी

प.पू. आचार्य श्री द्वारा दीक्षित आर्यिकाएं

1. पू. श्री 105 आर्यिका मुक्तिलक्ष्मी
2. पू. श्री 105 आर्यिका शान्तमती
3. पू. श्री 105 आर्यिका जिनदेवी
4. पू. श्री 105 आर्यिका श्रुतदेवी
5. पू. श्री 105 आर्यिका निर्वाणलक्ष्मी
6. पू. श्री 105 आर्यिका मुक्तिकान्ता
7. पू. श्री 105 आर्यिका धर्मेश्वरी
8. पू. श्री 105 आर्यिका सुज्ञानी
9. पू. श्री 105 आर्यिका निष्पापमती
10. पू. श्री 105 आर्यिका धर्ममती
11. पू. श्री 105 आर्यिका ऐरादेवी
12. पू. श्री 105 आर्यिका शिवदेवी
13. पू. श्री 105 आर्यिका सुमंगला

प.पू. आचार्य श्री के द्वारा दीक्षित क्षुल्लक जी

1. पू. क्षुल्लक श्री देवपुत्र
2. पू. क्षुल्लक श्री धर्मचन्द्र
3. पू. क्षुल्लक श्री धर्मध्वज
4. पू. क्षुल्लक श्री पार्श्वसेन
5. पू. क्षुल्लक श्री देवसेन
6. पू. क्षुल्लक श्री जिनेन्द्र
7. पू. क्षुल्लक श्री शान्तिसेन
8. पू. क्षुल्लक श्री जिनसेन
9. पू. क्षुल्लक श्री सिद्धसेन
10. पू. क्षुल्लक श्री धर्मानन्द

प.पू. आचार्य श्री के द्वारा धार्मिक विधी-विधान, पंचकल्याणक, नूतन जिनमंदिर निर्माण एवं जीर्णोद्धार आदि मांगलिक कार्य एवं मंगल आशीर्वाद

स्थान का नाम	प्रेरणा-अधिनेतृत्व	पंचकल्याण प्रतिष्ठा	सन्
अयोध्या (उ.प्र.)	भ. आदिनाथ मंदिर (सप्तम ब्रह्मचर्य अवस्था में) गुरु देशभूषणाचार्य श्री के साथ	,,	1965
कोथली (कर्नाटक)	गुरुकुल मंदिर, शांतिगिरी निर्माण (क्षु. अवस्था में) गुरु देशभूषणाचार्य श्री के साथ	,,	1968
औरवाड (महाराष्ट्र)	जिनमंदिर व शिखर जीर्णोद्धार (क्षुल्लक अवस्था में)	,,	1970
देवरूख (महाराष्ट्र)	जिनमंदिर (क्षुल्लक अवस्था में)	,,	1970
माणगांव (महाराष्ट्र)	शिखर जीर्णोद्धार (क्षुल्लक अवस्था में) गुरु देशभूषणाचार्य श्री के साथ	,,	1971
अर्जुनवाड (महाराष्ट्र)	जिनमंदिर जीर्णोद्धार	,,	
शमनेवाड़ी	मानस्तंभ निर्माण (क्षुल्लक अवस्था में) गुरु देशभूषणाचार्य श्री के साथ	,,	
जयपुर (राजस्थान)	चूलगिरी (क्षुल्लक अवस्था में) गुरु देशभूषणाचार्य श्री के साथ	,,	1971
संकनहट्टी (कर्नाटक)	जिनमंदिर	,,	
रूई (महाराष्ट्र)	मानस्तंभ (मुनि अवस्था में) गुरु देशभूषणाचार्य श्री के साथ	,,	1976
संकेश्वर (कर्नाटक)	जिनमंदिर निर्माण	,,	1976
कणबरगी (कर्नाटक)	जिनमंदिर	,,	1977
कुरूंदवाड (महाराष्ट्र)	जिनमंदिर जीर्णोद्धार	,,	1977
खारेपाटण (महाराष्ट्र)	जिनमंदिर जीर्णोद्धार	,,	1978

जयसिंगपुर	मंदिर, मानस्तंभ गुरु देशभूषणाचार्य के साथ	,,	
नृसिंहवाडी (महाराष्ट्र)	जिनमंदिर, शिखर निर्माण	,,	1978
पट्‌टनकुडी (कर्नाटक)	जिनमंदिर	,,	1980
अकलूज (महाराष्ट्र)	अनंतव्रत उद्यापन निमित्त श्री अनंतनाथ भ.	,,	1980
साजणी (महाराष्ट्र)	जिनमंदिर जीर्णोद्धार	,,	1981
शिरदवाड (महाराष्ट्र)	मंदिर जीर्णोद्धार, शिखर	,,	1981
गणेशवाडी माळभाग (महाराष्ट्र)	जिनमंदिर	,,	1981
उगार-खूर्द (कर्नाटक)	जिनमंदिर निर्माण	,,	1982
कबनूर (महाराष्ट्र)	जिनमंदिर, मानस्तंभ	,,	1982
अब्दुललाट (महाराष्ट्र)	नेमिनाथ मंदिर मानस्तंभ, पार्श्वनाथ मंदिर मानस्तंभ	,,	1982
चिंचवाड त.-शिरोल (महाराष्ट्र)	शिखर	,,	1982
शांतिनगर (कर्नाटक)	जिनमंदिर	,,	1982
बोरगांव (कर्नाटक)	निषिद्धिका जीर्णोद्धार	,,	1982
कूसनाल मला (कर्नाटक)	जिनमंदिर	,,	1982
चिप्री (महाराष्ट्र)	शिखर निर्माण	,,	1983
कारदगा (कर्नाटक)	वेदी प्रतिष्ठा	वेदी प्रतिष्ठा	1983
मजरेवाडी (महाराष्ट्र)	जिनमंदिर जीर्णोद्धार	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा	1983
सांगली नेमिनाथ नगर (महाराष्ट्र)	--	,,	1984
इचलकरंजी (महाराष्ट्र) (वर्धमान सोसायटी)	जिनमंदिर, प्रवचन हाल	,,	1985

इचलकरंजी (महाराष्ट्र) (कागवाडे मळा)	जिनमंदिर	आशीर्वाद	1985
तिलवणी (महाराष्ट्र)	शिखर, जिनमंदिर जीर्णोद्धार	पंचकल्याण प्रतिष्ठा	1985
अंकली (कर्नाटक)	--	,,	1985
कारदगा (कर्नाटक)	मानस्तंभ	,,	1985
हेरले (महाराष्ट्र)	--	,,	1985
ललितपुर (उ.प्र.)	चोविसी निर्माण	आशीर्वाद	1986
नरवर (म.प्र.)	चोविसी निर्माण	आशीर्वाद	1987
नांदणी (महाराष्ट्र)	--	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा	1987
चिंचवाड-करवीर (महाराष्ट्र)	मंदिर जीर्णोद्धार, मानस्तंभ, शिखर, त्यागी निवास	,,	1988
कसबेडिग्रज (महाराष्ट्र)	शिखर, मानस्तंभ	,,	1988
माणगांव (महाराष्ट्र)	शिखर, मानस्तंभ	,,	1988
हुपरी (महाराष्ट्र)	मंदिर जीर्णोद्धार	,,	1988
समडोली (महाराष्ट्र)	--	,,	1988
शिरटी-महावीर नगर (महाराष्ट्र)	जिनमंदिर, मानस्तंभ, मुनि निवास	,,	1988
वालवा (महाराष्ट्र)	जिनमंदिर	,,	1988
रामानंद नगर (महाराष्ट्र)	जिनमंदिर, शिखर	,,	1988
हेब्बाल (कर्नाटक)	जिनमंदिर	,,	1988
मजरेवाडी मला (महाराष्ट्र)	मंदिर	वेदी प्रतिष्ठा	1988
साजणी (महाराष्ट्र)	मानस्तंभ	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा	1989
भोज (कर्नाटक)	शांतिसागर स्मारक, मंदिर, मानस्तंभ शिखर	,,	1990

पट्टणकोडोली (महाराष्ट्र)	शिखर, मानस्तंभ	,,	1990
चिपरी (महाराष्ट्र)	मानस्तंभ	,,	1990
इस्लाम्पुर (महाराष्ट्र)	मानस्तंभ	पंचकल्याण प्रतिष्ठा	1990
धर्मनगर (महाराष्ट्र)	त्यागी तपोवन क्षेत्र निर्माण	--	1991
धर्मनगर (महाराष्ट्र)	देव-शास्त्र-गुरु निवास	पंचकल्याण प्रतिष्ठा	1993
फलटण (महाराष्ट्र)	समवशरण	,,	1993
जैनापुर मळा (महाराष्ट्र)	जिनमंदिर, मानस्तंभ	,,	1994
सांगली यशवंत नगर (महाराष्ट्र)	जिनमंदिर, मानस्तंभ	,,	1998
सरकुली (महाराष्ट्र)	जिनमंदिर	,,	1994
कलंबी (महाराष्ट्र)	मंदिर	वेदी प्रतिष्ठा	1994
सांगवडे (महाराष्ट्र)	मंदिर	पंचकल्याण प्रतिष्ठा	1994
हुपरी चांदीनगर (महाराष्ट्र)	मंदिर, मानस्तंभ, शिखर त्यागी निवास	,,	1995
माणगांववाडी (महाराष्ट्र)	मंदिर, शिखर, मानस्तंभ	,,	1995
तेवरट्टी (कर्नाटक)	मंदिर	वेदी प्रतिष्ठा	1995
तिलवणी (महाराष्ट्र)	मानस्तंभ, मुनि निवास	पंचकल्याण प्रतिष्ठा	1995
साडवली (महाराष्ट्र)	मंदिर	,,	1996
पाटकुली (महाराष्ट्र)	मानस्तंभ-निर्माणाधीन	--	1996
करकम (महाराष्ट्र)	मानस्तंभ-निर्माणाधीन	--	1996
अनगोल (कर्नाटक)	मंदिर, मानस्तंभ, शिखर	पंचकल्याण प्रतिष्ठा	1996
हातकणंगले (महाराष्ट्र)	--	,,	1996
निम शिरगांव (महाराष्ट्र)	--	,,	1996

करवीन कोप्प (कर्नाटक)	मंदिर	,,	1997
मांजरी (कर्नाटक)	--	,,	1997
शिरदवाड (कर्नाटक)	मंदिर, शिखर जीर्णोद्धार, मानस्तंभ	आशीर्वाद	
बांबवडे (महाराष्ट्र)	श्री धर्मनाथ क्षेत्र निर्माणाधीन	पंचकल्याण प्रतिष्ठा	1997
कागवाड (कर्नाटक)	--	,,	1997
मजरेवाडी (महाराष्ट्र)	शिखर जीर्णोद्धार, मानस्तंभ	,,	1997
मालगांव-लक्ष्मीनगर (महाराष्ट्र)	मंदिर, मानस्तंभ, शिखर	,,	1997
मालगांव-केरीमणी मळा (महाराष्ट्र)	मंदिर	वेदी प्रतिष्ठा	1997
पिरनवाडी (कर्नाटक)	मंदिर, शिखर, मानस्तंभ, त्यागी निवास निर्माणाधीन	--	1997
चांपगांव (कर्नाटक)	मंदिर जीर्णोद्धार	पंचकल्याण प्रतिष्ठा	1997
इचलकरंजी जैन बोर्डिंग (महाराष्ट्र)	मंदिर, शिखर, मानस्तंभ	,,	1999
मालशिरस (महाराष्ट्र)	जिनमंदिर निमार्णाधीन	--	1997
उदगांव (महाराष्ट्र)	जिनमंदिर जीर्णोद्धार निर्माणाधीन	--	1992
बेलगांव (कर्नाटक)	किल्ला मंदिर जीर्णोद्धार, त्यागी तपोवन निर्माणाधीन	--	1998
कुरूंदवाड (महाराष्ट्र)	सांस्कृतिक मंगल कार्यालय		1985
हसूर (महाराष्ट्र)	प्रवचन हाल, त्यागी निवास	--	1983
शिरटी (महाराष्ट्र)	प्रवचन हाल, त्यागी निवास	--	1983
शिरढोण (महाराष्ट्र)	प्रवचन हाल, त्यागी निवास, निर्माणाधीन	--	1994
चिंचवाड (महाराष्ट्र) त.-शिरोल	प्रवचन हाल, त्यागी निवास	--	1992

पट्टणकोडोली (महाराष्ट्र)	मंदिर जीर्णोद्धार प्रवचनहाल निर्माणाधीन	--	1998
चिपरी (महाराष्ट्र)	प्रवचन हाल, त्यागी निवास निर्माणाधीन	--	1993
हुपरी (महाराष्ट्र)	प्रवचन हाल, त्यागी निवास	--	1994
भोज (कर्नाटक)	प्रवचन हाल, त्यागी निवास	--	1980
गरग (कर्नाटक)	धार्मिक शिक्षण क्षेत्र निर्माणाधीन	--	1999
निमशिरगांव (महाराष्ट्र)	मानस्तंभ निर्माणाधीन	--	1996
अयोध्या (उ.प्र.)	51 फुट का मानस्तंभ निर्माणाधीन	--	2000
रत्नपुरी (उ.प्र.)	31 फुट का मानस्तंभ निर्माणाधीन	--	2000

प.पू. आचार्य श्री के द्वारा धार्मिक विधानादि मांगलिक कार्य एवं मंगल आशीर्वाद

स्थान का नाम	प्रेरणा-सान्निध्य	विधान	सन्
नृसिंहवाडी (महाराष्ट्र)	प.पू. आचार्यश्री	सिद्धचक्र	1980
हुपरी (महाराष्ट्र)	,,	सिद्धचक्र	1982
रूई (महाराष्ट्र)	,,	सिद्धचक्र, मौजी बंधन, यज्ञोपवीत संस्कार	1985
ललितपुर (उ.प्र.)	,,	त्रिलोक विधान	1986
फलटण (महाराष्ट्र)	,,	त्रिलोक विधान	1990
पंढरपुर (महाराष्ट्र)	,,	इन्द्रध्वज विधान	1991
धर्मनगर (महाराष्ट्र)	,,	सिद्धचक्र विधान	1992
धर्मनगर (महाराष्ट्र)	,,	सर्वतोभद्र विधान	1993
धर्मनगर (महाराष्ट्र)	,,	इन्द्रध्वज विधान	1993
बेलगांव (कर्नाटक)	,,	सर्वतोभद्र विधान	1993
धर्मनगर (महाराष्ट्र)	,,	सिद्धचक्र विधान	1994
रूई (महाराष्ट्र)	,,	कल्पद्रुप विधान	1994
चिंचवाड (महाराष्ट्र)	,,	इन्द्रध्वज विधान	1994
शिरढोण (महाराष्ट्र)	,,	सिद्धचक्र विधान	1994
धर्मनगर (महाराष्ट्र)	,,	विविध विधान एवं लक्ष्यदीपोत्सव	1995
कुरूंदवाड (महाराष्ट्र)	,,	शांतिविधान	1995
धर्मनगर (महाराष्ट्र)	,,	सिद्धचक्र विधान	1996
धर्मनगर (महाराष्ट्र)	,,	सिद्धचक्र विधान	1997
मजरेवाडी (महाराष्ट्र)	,,	सिद्धचक्र विधान	1997
अकलूज (महाराष्ट्र)	,,	सर्वतोभद्र विधान	1997

मालगांव (महाराष्ट्र)	,,	लक्ष्य दीपोत्सव	1997
धर्मनगर (महाराष्ट्र)	,,	सिद्धचक्र विधान	1998
धर्मनगर (महाराष्ट्र)	,,	अढ़ाई द्वीप विधान एवं त्रिलोक दीपोत्सव	1999
हसूर (महाराष्ट्र)	,,	विविध विधानादि	1999
गरग (कर्नाटक)	,,	धर्मचक्र विधान	1999
शिरटी (महाराष्ट्र)	,,	व्रत उद्यापन एवं विधान	1999
म्हैशा (महाराष्ट्र)	,,	व्रत उद्यापन एवं विधान	1999
धर्मनगर (महाराष्ट्र)	,,	विविध विधान	1999
सम्मेदशिखर जी (बिहार)	,,	विविध विधान एवं रत्न, सुवर्ण, रजत पुष्प वृष्टि तथा दीपोत्सव	2000
लालकिला मैदान, दिल्ली	,,	अढ़ाई द्वीप विधान	2000

प.पू. आचार्यश्री जी ने सैकड़ों गांव में विहार कर श्रावक-श्राविकाओं को भवतारक दशलक्षणिक व्रत, षोडशकारक व्रत, अनंतव्रत, पंचमेरु व्रत, रत्नत्रय व्रत आदि छोटे-बड़े व्रत देकर उन्हें सन्मार्ग में लगाया है और लगा रहे हैं।

प.पू. आचार्यरत्न श्री 108 बाहुबली महाराज जी के सान्निध्य में सल्लेखना पूर्वक समाधिमरण प्राप्त किये संयमीगण

नाम	स्थान	सन्
पू. ऐलकजी सिद्धसेन जी (चा.च. आचार्य श्री शांतिसागर जी से दीक्षित)	दिल्ली	
आर्यिका कृष्णमती जी (आचार्य श्री देशभूषण जी से दीक्षित)	दिल्ली	
आर्यिका श्री रत्नभूषण जी (आचार्य श्री देशभूषण जी से दीक्षित)	कोथली	
पू. श्री 108 नंदीमित्र जी (आचार्य श्री देशभूषण जी से क्षु. दीक्षा) (आचार्यरत्न श्री बाहुबली जी से मुनि दीक्षा)	कोथली	1977
आर्यिका श्री राजुलमती जी (आचार्य श्री देशभूषण जी से दीक्षित)	कुरुंदवाड	1978
प.पू. श्री 108 त्यागसिंधु जी (आचार्य श्री बाहुबली जी से दीक्षित)	जयसिंगपुर	1983
आर्यिका श्री विमलमती जी (आचार्य श्री पायसागर जी से दीक्षित)	हुपरी	1984
आर्यिका श्री कल्याणमती जी (आचार्य श्री बाहुबली जी से दीक्षित)	इंगली	1985
आर्यिका श्री जीवनमती जी (आचार्य श्री बाहुबली जी से दीक्षित)	बाम्बे	1987
आर्यिका श्री कैवल्यमती जी (आ. श्री देशभूषण जी से क्षुल्लिका दीक्षा) (आचार्यरत्न श्री बाहुबली जी से आर्यिका दीक्षा)	कोथली	1988
आर्यिका श्री मरुदेवी (आचार्य श्री देशभूषण जी से क्षुल्लिका दीक्षा) (आचार्यरत्न श्री बाहुबली जी से आर्यिका दीक्षा)	कोथली	1989
आर्यिका श्री अजितमती जी (चा.च. आचार्य श्री शांतिसागर जी से क्षुल्लिका दीक्षा) (आचार्यरत्न श्री बाहुबली जी से आर्यिका दीक्षा)	बारामती	1991
क्षुल्लक श्री जिनचन्द्र जी (आचार्यरत्न श्री बाहुबली जी से दीक्षित)	धर्मनगर	1992
प.पू. श्री 108 वृषभसेन जी (मुनिश्री वीरसागर जी से क्षुल्लक दीक्षा) (आचार्यरत्न श्री बाहुबली जी से मुनि दीक्षा)	धर्मनगर	1993
प.पू. श्री 108 वीरनंदी जी (आचार्यरत्न श्री बाहुबली जी से दीक्षित)	बेलगांव	1994
प.पू. श्री 108 अमृतचन्द्र जी (आचार्यरत्न श्री बाहुबली जी से दीक्षित)	बेलगांव	1994
प.पू. श्री 108 देवपाल जी (आचार्यरत्न श्री बाहुबली जी से दीक्षित)	धर्मनगर	1995
प.पू. श्री 108 विश्वनंदी जी (आचार्यरत्न श्री बाहुबली जी से दीक्षित)	कारकल	--
क्षुल्लिका श्री सरस्वती जी (आचार्यरत्न श्री बाहुबली जी से दीक्षित)	धर्मनगर	1996
क्षुल्लिका श्री सुनंदा माताजी (आचार्यरत्न श्री बाहुबली जी से दीक्षित)	मोगराले घाट	1999
मुनिश्री धर्मभूषण जी महाराज (आचार्यरत्न श्री बाहुबली जी से दीक्षित)	दिल्ली	2000

विशेष अर्थ सहयोगी

- श्री राम कुमार जैन, श्रीमती आशा जैन, ए-6, निर्माण विहार, विकास मार्ग, दिल्ली-92
  मेसर्स ज्योति रबड़ उद्योग, इंडिया, लिमिटेड, नोएडा, यू. पी.
- श्री कुलदीप जैन, दिनेश जैन, 57 मधुवन, विकास मार्ग, दिल्ली-92
  मेसर्स दिगम्बर गारमेन्ट्स, 36 पटपड़ गंज, इंडस्ट्रीयल स्टेट, दिल्ली-92
- श्री राकेश जैन, राजेश जैन, (लोट्स कोपी) ए-59, निर्माण विहार, दिल्ली-92
  मेसर्स सोहन लाल, नेम चन्द जैन, 90 चावड़ी बाजार, दिल्ली-6
- श्री महावीर प्रसाद जैन, दीपक जैन, (कागजी) 57, न्यू राजधानी एन्कलेव, दिल्ली-92
  मेसर्स दीपक सेल्स एजेन्सीज्, 4214 पहाड़ी धीरज, दिल्ली-6
- श्री नरेन्द्र कुमार जैन, संदीप जैन ई-356, निर्माण विहार, विकास मार्ग, दिल्ली-92
  मेसर्स जैनको डायल इंडस्ट्रीज़, कैलाश नगर, दिल्ली-31

सहयोगी

- श्री रविन्द्र कुमार जैन (खिलौना वाले), ऋषभ विहार, दिल्ली
- श्री मुकेश जैन, श्रीमती रीता जैन, दिल्ली
- श्रीमान् अजय कुमार जैन सराफ, ललितपुर
- श्रीमान् सुनील कुमार पाटनी, माणिकम्, इचलकरंजी
- श्री जिनपाल पारिसा चौगुले, सौ. मनीषा जिनपाल चौगुले, कोल्हापुर
- कमल जैन, धारवाड
- श्री रतनचंद जी पाटनी, इचलकरंजी
- श्री विकास जैन, लखनऊ
- डॉ. अनील कुमार दिवाकर, डॉ. सौ. ममता दिवाकर, आदित्य दिवाकर, सिवनी (म.प्र.)
- श्रीमती प्रभा जैन, सुपुत्री सीमा जैन, दिल्ली
- श्री भागचंद कासलीवाल, इचलकरंजी
- श्री प्रद्युम्न कुमार जैन, बरिवा, दिल्ली
- श्री नानकचन्द जैन, लक्ष्मी नगर, दिल्ली
- श्री राजेश जैन, पुनम जैन, दिल्ली
- श्री चक्रेश जैन, दिल्ली
- श्रीमती कुमकुम जैन, विनय जैन, दिल्ली
- श्रीमती बाला जैन, श्री रमेश जैन, दिल्ली
- श्रीमती जुगमनलाल पुरुषोत्तम कुमार जैन, दिल्ली
- श्रीमती त्रिशला जैन, कैलाश नगर, दिल्ली
- श्री संजय जैन, श्रीमती अनीता जैन, पार्श्वविहार, दिल्ली
- श्री आशीष जैन, धर्मपत्नी श्रीमती संगीता जैन, दिल्ली
- श्री अतुल जैन, धर्मपत्नी श्रीमती रितु जैन, दिल्ली